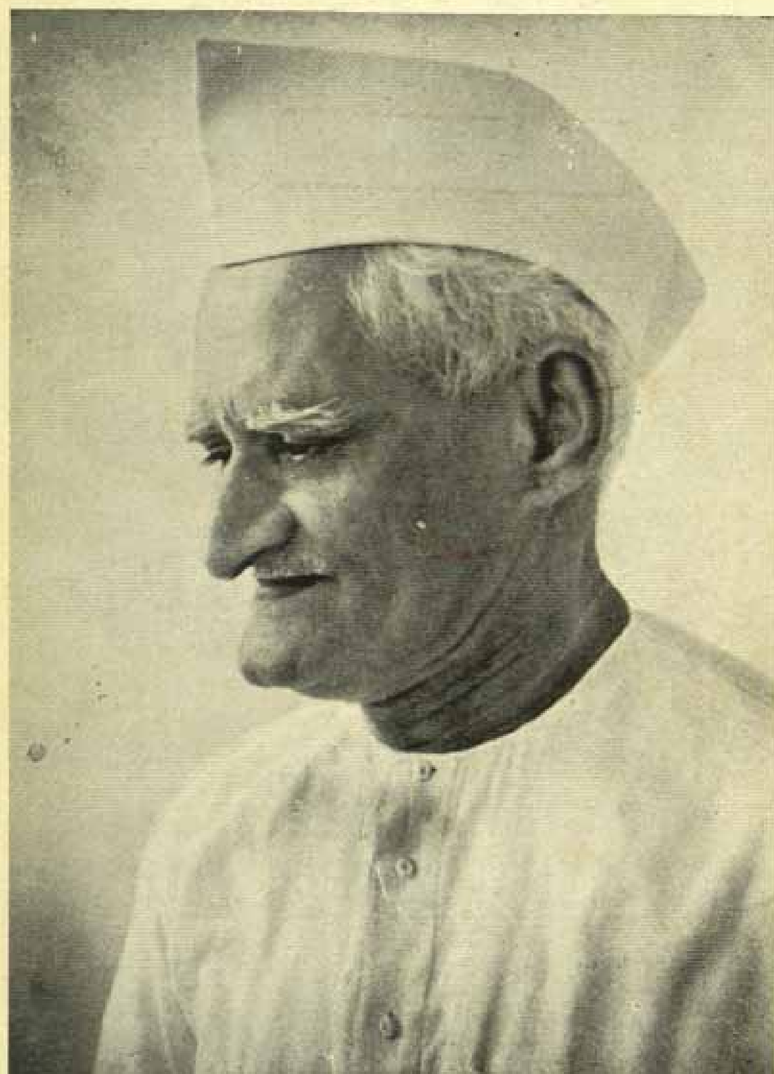


जन्म : ८-४-१८८७ अवसान : २१-८-१९५५

રામનારાયણ વિ. પાઠક

गुजराती साहित्य परिषद

बृहत् पिंगल

श्री हेमचंद्राचार्य ग्रंथमाला

रामनारायण विश्वनाथ पाठक





गुजराती साहित्य परिषद
मुंबई

प्रकाशक
जयंतकृष्ण ह. दवे
मंत्री, गुजराती साहित्य परिषद
भारतीय विद्याभवन, मुंबई–७

प्रथम आवृत्ति, सप्टेम्बर, १९५५

Bṛhat-pingala

Ramnarayan Vishvanath Pathak

पंदर रूपिया

मुद्रक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अमदावाद – १४

प्रकाशकना बे बोल

गुजराती साहित्य परिषद तरफथी स्व० श्री रामनारायणभाई विरचित 'बृहत् पिंगल'नो आकर ग्रंथ प्रसिद्ध करतां अमने घणो आनंद थाय छे; पण साथे दुःखनी वात ए छे के आ आखो ग्रंथ एमनी इच्छा प्रमाणे छपाईने तैयार थयो, एमनी प्रस्तावना पण लखाई, अने प्रसिद्ध थवानी तैयारीमां हतो ते दरम्यान ता० २१ ऑगस्ट १९५५ने दिवसे एमनुं हृद्रोगना हुमलाथी शोकजनक अने आकस्मिक अवसान थयुं; अने वर्षोनी अथाक महेनत बाद तेमनो आ प्रसिद्ध थतो ग्रंथ जोवाने तेओ पार्थिव देहे विद्यमान नथी. एमना शास्त्रीय परिशीलनना समृद्ध परिपाकरूपे लखायेलो आ ग्रंथ चिरंजीवी रहेवाने ज सर्जायो छे अने आ यशःकायने जरामरणज कशो भय नथी.

दलपतराम, रणछोडलालभाई, केशवलाल ध्रुव वगेरे विद्वानोए आ विषय छेड्यो छे पण जेम कर्ता प्रस्तावनामां लखे छे तेम कोईए पोतानी दृष्टिए सळंग पिंगळ लखवानो प्रयत्न कर्यो नथी. कर्ताए एमनुं पोतानुं सळंग शृंखलाबद्ध निरूपण प्रकरणोमां उतारेलुं छे अने विस्तृत चर्चाओ परिशिष्टमां आपेली छे. कर्ताए ऐतिहासिक दृष्टिए पण चर्चा करी छे; साथे वैदिक छन्दोथी मांडी मराठीना ओवी अभंगोनी पण चर्चा करी छे. प्रवाही छंदनी चर्चा माटे एक स्वतंत्र परिशिष्ट आप्युं छे.

आ ग्रन्थ मोटे भागे कर्ताए भारतीय विद्याभवनमां तेमनी नियुक्ति दरम्यान लख्यो छे. आ विषयमां जेटलां पुस्तको उपलब्ध हतां ते सघळां श्री रामनारायणभाईए जोयां छे, विचार्यां छे, अने अनेक प्रश्नो उपर पोतानो नवीन दृष्टिनो प्रकाश पाड्यो छे. हिन्दी अने मराठी ग्रंथकारोना मतनी पण आमां चर्चा छे. अन्य भाषाना विद्वानो आ ग्रंथनो पण उचित विचार करे ए उद्देशथी आखो ग्रंथ देवनागरीमां छपायो छे.

श्री रामनारायणभाई १९४६नी राजकोटनी सोळमी गुजराती साहित्य परिषदना प्रमुख हता. आजे साक्षरभूमि नडियादमां श्री गोवर्धनरामभाईना

शताब्दमहोत्सव प्रसंगे अने गुजराती साहित्य परिषदनां ५० वर्ष पूरां थतां होई तेना सुवर्णमहोत्सवप्रसंगे आ छन्दःशास्त्रनो महान अने आकर ग्रंथ जेमां पिंगळनी शास्त्रीय अने सर्वांगीण समीक्षा छे तेने प्रसिद्ध करी स्व० श्री रामनारायणभाईने श्रद्धांजलि आपतां आनंद थाय छे.

जयन्तकृष्ण हरिकृष्ण दवे
मंत्री, गुजराती साहित्य परिषद

आश्विन शुक्ल १० सं. २०११
ता० २६-१०-१९५५
भारतीय विद्याभवन
मुंबई

अर्पण

मारां मातापिताने —

પ્રસ્તાવના

१९३९ मां, सद्गत डॉ० आनन्दशंकर ध्रुवना मीठा आग्रहने वश थईने में 'प्राचीन गुजराती छंदो' पर पुस्तक लखवानुं काम स्वीकार्युं; त्यारे कामनो प्रारंभ करतां समजायुं के आ कामनी मोटामां मोटी मुश्केली ए छे के, पिंगलना भिन्नभिन्न छंदोने अंगे अने नवा प्रयोजायेला छंदोने अंगे, आपणा विद्वानोए पोतपोतानी दृष्टिए चर्चा करेली छे, पण ए बधी तूटक छे; कोईए पोतानी दृष्टिए सळंग पिंगल लखवानो प्रयत्न कर्यो नथी. आथी मारुं मन समग्र पिंगलना निरूपण तरफ दोरायुं अने मारा मनमां पिंगलनिरूपणना मुख्यमुख्य सिद्धान्तो अने नियमो नक्की थया ते पछी ज हुं स्वीकारेलुं काम करी शक्यो; जो के ए मात्र ऐतिहासिक समालोचना होवाथी त्यां आखा पिंगलना निरूपणने अवकाश न हतो. ए काम, ए पुस्तक पूरुं करी तरत हाथमां लेवानो में निश्चय कर्यो.

छतां आ काम बहु मोटुं छे, जेम जेम हुं करतो गयो तेम तेम मने तेना भिन्नभिन्न प्रदेशोना विस्तारो वधता जता ज देखाया छे. अने श्री क. मा. मुनशीए आ ज कामने माटे भारतीय विद्याभवनमां मारी नियुक्ति न करी होत तो ते आज सुधीमां पण हुं पूरुं करी शक्यो न होत. अत्यारे आ ग्रन्थ बहार पाडतां हजी, एवा अनेक मुद्दाओ अने प्रश्नो मने सूझे छे जेना पर महेनत करी दृष्टान्तो अेकठां करी, वस्तुनी व्यवस्था करी तेमां प्रवर्तता नियमो बताववा जोईए. पण आवा मोटा विषयमां, अने तेना नवी दृष्टिना निरूपणमां तो एम बन्या ज करवानुं, अने एवी संपूर्णतानो लोभ करवा जतां कदाच आ पुस्तक ज अधूरुं रही जाय एवो भय रहे छे. एटले ए काम भविष्यमां यथावकाश करवानुं राखी मूळ योजनानुं पुस्तक पूरुं करवा तरफ में लक्ष राखेलुं छे.

भारतीय विद्याभवननी सेवा दरमियान आ पुस्तकनां बार प्रकरणो लखायां. बाकीनां परिशिष्टो अने प्रकरणो ते पछी लख्यां छे. केटलांक लखाई गयेलां प्रकरणो, गुजरात विद्यासभामां जूनां पुस्तको उपलब्ध थतां फरी लख्यां छे.

विषयनिरूपणमां में मारुं सळंग शृंखलाबद्ध निरूपण प्रकरणोमां उतारेलुं छे. ए निरूपणने अंगे ऊभा थता प्रश्नो उपरनी, अथवा निरूपण साथे अनिकट संबंध धरावती बाबतोनी चर्चा ते ते दरेक प्रकरणने अंते आपेलां परि-

शिष्टोमां करेली छे. आखो एक विषय अमुक प्रकरणोमां चर्चाई जाय ते पछी ए आखा विषय विशे कंईक विशेष कहेवानुं होय तो ते पण परिशिष्टमां कहेलुं छे. जेम के मात्रामेळ छंदोनो विषय पूरो थतां ए दृष्टिए जोवानी केटलीक विशेष विगतो स्वतंत्र परिशिष्टोमां आपी छे. पुस्तकने अंते प्रवाही छंदनी चर्चा पण एक स्वतंत्र परिशिष्टमां आपेली छे.

आ पुस्तकमां विषयना नवीन निरूपणनुं साहस कर्युं छे तेथी हिंदी मराठी वगेरे भाषाना विद्वानो पण आने विचारमां ले एवा मनोरथथी आखुं पुस्तक देवनागरीमां छपाववानो निर्णय कर्यो छे. आशा छे के आ अतिमनोरथ नहीं नीवडे.

पुस्तकने देवनागरीमां छपाववानो निर्णय कर्यो तेथी अवतरणोनी जोडणी बाबत एक फेरफार कर्यो छे, ते गुजराती वाचको आगळ स्पष्ट करवो जोईए. गुजराती काव्यमां प्रचलित जोडणीमां छंदने अनुकूल लघुनो गुरु के गुरुनो लघु करवानी छूट छे. अत्यारनो आपणो गुजराती काव्यनो सुपरिचित वाचक आ जाणे छे अने जरा पण आयास विना प्रचलित जोडणीने पण छंदने अनुकूल करी वांची शके छे. पण हिंदी मराठी वाचक आम करी शके नहीं. तेथी बनी शके त्यां सुधी में काव्यनां अवतरणोमां छंदोनुकूल जोडणी करी छे. क्यांक ज एटलाथी न पते त्यां ह्रस्वनुं आवुं ⏑ अने दीर्घनुं आवुं – चिह्न करेलुं छे. तेम छतां सरतचूकथी क्यांक जोडणीना फेरफारमां स्खलन थयुं हशे; क्यांक चिह्नो ऊडी गयां हशे ते विद्वानो दरगुजर करशे एवी आशा छे.

आ काम दरमियान मने जे अनेक मित्रोए सहाय करी छे तेमनुं स्मरण करतां एक विशेष आनंद थाय छे. आ पुस्तकमां छंदोना मुख्य चार प्रकारो पैकी त्रण प्रकारो — मात्रामेळ, संख्यामेळ अने पद के देशी — ने संगीतना ताल साथे संबंध छे. अने छेल्लो पद के देशी तो छंद होवा साथे गेय पण छे, ए रीते आ विषयनो घणो मोटो प्रदेश, संगीत साथे संबंध धरावे छे, एटले घणा प्रश्नोमां मारे आपणा गुजरातना संगीतज्ञो साथे चर्चा करवी पडी छे. पंडित श्री ओमकारनाथ साथे में ठीक ठीक समय लई चर्चाओ करी छे. श्री मामावाळा, श्री ज्योतीन्द्र दवे, अने श्री रमणलाल महेताए बंने शास्त्रोना ज्ञानथी मारा विषयने परिष्कृत करवामां मदद करी छे. श्री उमाशंकर जोशी, प्रो. रा. ब. आठवले अने श्री जयशंकर (सुंदरी)ए आत्मीयताथी में मागेली वस्तु पूरी पाडी छे. श्री उमाशंकर जोशीए मारी मांदगीमां हाथप्रतनो केटलोक महत्त्वनो भाग जोई आपी मने असह्य थई पडे एवा आयासथी बचावी लीधो छे. श्री नगीनदास पारेखे, लेखक तरीकेनी तेमनी चोकसाई झीणवट अने पिंगलना अभ्यासनो मने बधो ज लाभ खूब निष्ठापूर्वक

આપેલો છે. પ્રો૦ ચીમનલાલ ત્રિવેદીએ શબ્દસૂચી વગેરેનું કામ લઈ મારા પરનો બોજો ઓછો કર્યો છે. શ્રી જીવણજી દેસાઈએ નવજીવન પ્રેસમાં આ ગ્રન્થ સારી રીતે છપાય તેને માટે કાળજી લીધી છે તે માટે તેમનો ઋણી છું, અને આ ગ્રન્થના છાપકામના ખાસ કર્મચારીઓ શ્રી બાલુભાઈ પારેખ, અને શ્રી બાલમુકુન્દ દવેએ જે મમત્વથી અને ઉત્સાહથી આ કામ કરેલું છે તેનું સ્મરણ કરતાં સંતોષ અને[1] [આનંદ થાય છે.]

ગુજરાતી સાહિત્ય પરિષદે આ મોટો ગ્રંથ પોતાના પ્રકાશન તરીકે પ્રસિદ્ધ કરીને ગ્રન્થને ગૌરવ આપ્યું છે. આના અનુસંધાનમાં એક બાબત તરફ વિદ્વાનોનું ધ્યાન ખેંચવાની જરૂર જણાય છે. પુસ્તકના અંતનાં પ્રકરણો અને પરિશિષ્ટોમાં દેશી કે પદોનું નિરૂપણ છે. એ આખો પ્રદેશ પિંગળમાં નવો લીધેલો છે. એનું મારું નિરૂપણ પિંગળની દૃષ્ટિનું જ છે, પણ એટલું બસ નથી. એ દેશીઓનું ખરું સ્વરૂપ એ ગવાય ત્યારે જ મૂર્ત થાય. એટલે આપણાં વિશ્વવિદ્યાલયો અને વિદ્યોપસેવી મહાન સંસ્થાઓએ એની રેકર્ડો ઉતરાવી એનું સ્વરાંકન કરાવી લેવું જોઈએ. એ આખું સાહિત્ય આ રીતે ઉતારાશે તો જ એ જીવશે, અને જીવશે તો જરૂર વિકસશે, પણ એમ નહીં થાય તો તે કદાચ લેભાગુ સાહસિકોના હાથમાં પડી બગડશે, અને એક અમૂલ્ય ખજાનો લુપ્ત થવા દેવાનું લાંછન ગુજરાતને શિરે રહેશે.

તા૦ ૨૫–૪–'૫૨[2] રામનારાયણ વિ૦ પાઠક
(જુલાઈ-ઑગસ્ટ, ૧૯૫૫)
મુંબઈ

---

૧. આ વાક્ય હસ્તલેખમાં અધૂરું છે.

૨. આ તારીખ, પુસ્તક લખાઈ પૂરું થયું કે તુરત લખાયેલી પ્રસ્તાવનાના મૂળ મુસદ્દાની છે. એની ઉપર એમણે એવી નોંધ લખી રાખી હતી કે આ પ્રસ્તાવના આખું પુસ્તક છપાઈ રહ્યા પછી જ છપાવવી, કારણ, પુસ્તક પૂરું થતાં સુધીમાં કદાચ એમાં કંઈક ફેરફાર પણ કરવો પડે. પુસ્તક પૂરું છપાઈ રહ્યા પછી એમણે પ્રસ્તાવનામાં કેટલાક ફેરફારો અને ઉમેરા કર્યા પણ ખરા. અહીં પ્રસ્તાવનાનો એ સુધારેલો પાઠ છાપ્યો છે. એટલે એની નીચે ૧૯૫૨ની સાથે ૧૯૫૫ની સાલ પણ મૂકી છે. અહીં એ પણ નોંધવું જોઈએ કે આ ગ્રંથમાં ન ચર્ચાયેલા એવા એક બે મુદ્દાનો નિર્દેશ લેખક સુધારેલી પ્રસ્તાવનામાં કરવા માગતા હતા, અને એટલા માટે જ એ પ્રેસને મોકલી નહોતી, પણ દુર્ભાગ્યે એ પૂરી થઈ શકી નહિ.

—હીરા પાઠક

संक्षेपोनी समज

आ. का. म. — आनंद काव्य महोदधि.
क. के. — कलापीनो केकारव.
का. द. — काव्यदर्पण.
का. मी. चौ. — काव्यमीमांसा चौखम्बा सिरीझ.
का. प्र. झ. — काव्यप्रकाश. झल्कीकर संपादित.
का. शा. र. — काव्यानुशासन रसिकलाल परीख संपादित.
का. सू. वृ. — काव्यालंकारसूत्रवृत्ति.
के. का. — केटलांक काव्यो.
के. कृ. — केशवकृति.
गा. वा. पा. — गायन वादन पाठशाळा.
छन्दोनु. — छन्दोनुशासन.
छ. प्र. — छन्दःप्रभाकर.
छ. मं. क. — छन्दोमंजरी — कलकत्ता सिरीझ.
—रा. — रामधन दत्त शास्त्री संपादित.
छ. र. — छन्दोरचना.
छ. शा. नि. — छन्दःशास्त्र. निर्णयसागर.
छ. सा. सं. — छन्दःसारसंग्रह.
द. का. — दलपत काव्य.
द. पिं. — दलपत पिंगल.
द. र. — दयाराम रससुधा.
न. का. — नरसिंह काव्य.
प. ऐ. आ. — पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना.
परा. स्मृ. — पराशर स्मृति.
पा. सू. — पाणिनि सूत्र.
पिं. सू. — पिंगल सूत्र.
प्र. पु. — प्रवास पुष्पांजलि.
प्रा. पैं. — प्राकृत पैंगल. Bibliotheca Indica.
प्रा. का. सी. — प्राचीन काव्यमाला सिरीझ.
बरुआ. — A book of prosody with Āgneya–chandahsār & Vṛttaratnākara by Anandoram Barooa.
बृ. का. दो. — बृहत् काव्यदोहन.
भ. ना. का. — भरत नाट्यशास्त्र काशी.
—गा. — गायकवाड ओरिएन्टल सिरीझ.
—चौ. — चौखंबा सिरीझ.
—नि. — निर्णयसागर प्रेस.
र. रू. गी. — रघुनाथ रूपक गीतांरो.
र. पिं. — रणपिंगल.
वृ. र. नि. — वृत्तरत्नाकर. निर्णयसागर;
—चौ. — चौखंबा सिरीझ.
वृ. वा. — वृत्तवार्तिक.
शि. व. — शिशुपालवध.
सा. द. — साहित्यदर्पण
—नि. — निर्णयसागर.
सं. र. — संगीत रत्नाकर.
सा. वि. — साहित्य अने विवेचन.
सु. ति. — सुवृत्ततिलक.
H. S. L. — History of Sanskrit Literature.

अनुक्रमणिका

शुद्धि

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२३	१५	संयोगपरम्	संयोगपरम्
६५	९	मन्यते	तन्मते
१२२	११	छंद तथा	छंदस्तथा
१७०	१९	लीलातणी	लीला — तणी
२१६	७	गागागालगा	गागालगा
३७४	१७	प्रमाणे	प्रमाण
५१३	छेल्ली २	अति	अनी

बृहत् पिंगल

यस्य मात्रां समालम्ब्य, जगत्यां जगतीव वै ।
प्रपंचितानि छंदांसि, तं कालं प्रणतोऽस्म्यहम् ।।



आलंवी जेनि मात्राने, जगमां जगनी सम,
प्रपंचित थया छंदो, प्रणमूं तेह कालने.

१
उपोद्घात

पिंगल के छन्दःशास्त्र ए छन्द के पद्यरचनाना बंधना स्वरूपनुं निरूपण करे छे. वाङ्मयनां बे स्वरूपो छे: गद्य अने पद्य. तेमां गद्य सामान्य व्यवहारमां बोलाती भाषानुं स्वरूप छे. तेमां भाषा केवळ अर्थने अनुकूल रीते, अर्थने अनुसरीने बोलवानी होय छे. पद्यनी रचना विशेष करीने काव्यने माटे योजायेली होय छे — जोके काव्य गद्यमां पण होई शके, होय छे, जेम के कादंबरी. पद्यनुं पठन पण अर्थने ध्यानमां राखीने करवानुं होय छे, पण ते उपरांत ते पद्यनी रचनाना बंधने अनुसरीने, ते बंधना संस्कार पडे एवी रीते करवानुं होय छे. वाणी ज्यारे काव्यनुं प्रयोजन सिद्ध करवा अमुक मेळवाळुं स्वरूप ले छे त्यारे ते पद्य कहेवाय छे. आ मेळ अमुक मापथी सधाय छे. वाणी शब्दोनी अने शब्दो अक्षरना बनेला छे. अक्षर ए वाणीना उच्चारनो एकम छे. पद्यरचनामां प्रयोजाता अक्षरोना उच्चार बे स्वरूपे थाय छे, जेने लीधे अक्षरो लघु के गुरु अने एक के बे मात्राना गणाय छे. कविओ पोतानी कृतिमां वाणीने प्रयोजतां तेना अक्षरोना मापथी अनेक जातनी हृद्य आकृतिओ रचे छे. आ आकृति के आकार ते छन्द अने छन्दोबद्ध वाणी ते पद्य. छन्दो अनेक होई शके. कविओए आवा अनेक छन्दो आज सुधीमां रच्या छे, अने हजी पोतानी प्रतिभाना बळथी नवा नवा रचता जाय छे. पिंगल आ छंदोना बंधनो अने तेना मेळनो अभ्यास करे छे.

बधी भाषाना अक्षरो एक ज रीते उच्चाराता नथी, अने बधी भाषानी पद्यरचनाओ अक्षरोच्चारना एक ज तत्त्वने अवलंबती होती नथी. आपणी गुजराती अने हिंदनी बीजी संस्कृतोद्भव भाषाओमां अक्षरना लघुत्व-गुरुत्व अने मात्राथी पद्यनां मापो रचाय छे. अंग्रेजी भाषामां शब्दना उच्चारणमां अमुक अक्षरमां उच्चाराता एक्सन्ट (accent) एटले स्वरभारना तत्त्वने अवलंबीने जुदी जुदी पद्यरचनाओ थाय छे. आपणा गवेषणनो प्रदेश गुजरातीमां थती पद्यरचनानो छे. अलबत गुजराती जेवी बीजी संस्कृतोद्भव भाषानी पद्यरचनाओमां कोई तात्त्विक भेद नथी, अने ए रीते एवी भाषानी पद्यरचनाना अभ्यासथी पण आपणी पद्यरचनाओ उपर प्रकाश पडे. वळी आ बधी

भाषाओना सीमाडा लगोलग अने सेळभेळ छे, अने तेमनी वच्चे वाङ्मय-व्यवहार पण छे, जे हवे तो वधतो जाय छे, तेने लीधे एक भाषाना पद्य उपर अन्य भाषाना पद्ये अनेकविध असर करी छे, अने ए असर वधती जवानी छे. ए दृष्टिए पण संस्कृतोद्भव बीजी भाषानां पिंगलो पण आपणा गवेषणने उपकारक थाय.

समग्र काव्यमां छंदने शुं स्थान छे, छन्द काव्यना कया अंशने अव-लंबे छे ते एक दृष्टांत लई स्पष्ट करवा प्रयत्न करीए. अमुक प्रयोजन माटे आ दृष्टान्त गुजराती कवितामांथी न लेतां तुलसीदासना रामायणमांथी करुं छुं:—

विकसे सरसिज नानारंगा
मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा।
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा
प्रभु बिलोकि जनु करत प्रशंसा॥

—अरण्यकांड, पृ० ६७६.

आ पंपा सरोवरना वर्णननी एक चोपाई छे. धारो के ए चोपाईने आपणे तुलसीदासनी चोपाईओ गवाय छे ते रीते गवाती सांभळी. तो ए चोपाई सांभळती वखते संगीतना जे स्वरो आपणे सांभळ्या ते स्वरो छंदनो विषय नथी. छन्द एनो ए रहे अने कोई बीजो संगीतकार तेने जुदा स्वरोमां गाई शके. एटलुं ज नहि, आपणे अंग्रेजी काव्यना परिचयथी जे संगीतथी स्वतंत्र पठन करवाना संस्कार मेळव्या छे ते संस्कारो प्रमाणे आपणे आ चोपाईने संगीतना स्वरोने प्रयोज्या विना पण पठी शकीए. अर्थात् छन्दने संगीतना स्वरो साथे संबंध नथी. तेम ज आ चोपाईमां जे शब्दोच्चारनुं माधुर्य छे तेने अने छंदने पण कशो संबंध नथी. आ काव्य उच्चारतां जे आ काव्यनो अर्थ नहीं समजतुं होय तेने पण आ काव्यना अक्षरोना उच्चारणमां एक प्रकारनुं माधुर्य जणायुं हशे. कह्युं छे के:

येऽपि शब्दविदो नैव नैव चार्थविचक्षणाः।
तेषामपि सतां पाठः सुष्ठु कर्णरसायनम्॥

—का० मी० चौ० १–७; पृ० १०७–०८.

जेओ शब्दने जाणता नथी, तेम ज अर्थ करवामां विचक्षण नथी तेमने पण सारा माणसोए करेलो (काव्यनो) पाठ सारी रीते कर्णरसायन बने छे.

आ प्रकारनुं उच्चारमाधुर्य चोपाईनी बीजी पंक्तिमां आवता 'मधुर मुखर' शब्दोना उच्चारथी, अने त्रीजी पंक्तिमां 'ल' अने 'क'ना उच्चारथी तेम ज अनुस्वारना रणकारथी अनुभवाय छे. पण आ माधुर्य (आने काव्यशास्त्रमां माधुर्य ज कहेलुं छे)ना तत्त्व साथे एटले अक्षरोनां स्थान साथे पण छन्दने संबंध नथी. काव्यनो अर्थ न समजायो होय एवो विकल्प आपणे माधुर्यने अंगे विचारी लीधो एटले काव्यनो अर्थ ए पण छन्दना अवलंबननुं प्रत्यक्ष तत्त्व नथी. ए प्रत्यक्ष तत्त्व ते अक्षरोनुं माप छे. उपरनी चोपाईनो अक्षरविन्यास एवो छे के तेमां दरेक पंक्तिमां चच्चार मात्राना अक्षरगुच्छोनां चार चार आवर्तनो थाय छे. गुरुनी बे मात्रा अने लघुनी एक मात्राना धोरणे दरेक अक्षर उपर तेनी संख्या मूकी हुं ए नीचे दर्शावुं छुं:

१ १ २ १ १ १ १ २ २ २ २
विकसे सरसिज नानारंगा

१ ११ १११ २११ ११ २ २
मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा।

२ ११ ११२ ११ ११२ २
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा

११ १२ १ ११ १११ १२ २
प्रभु बिलोकि जनु करत प्रशंसा ॥

अहीं 'विकसे', 'सरसिज', 'नाना', 'रंगा', ए दरेक शब्द चच्चार मात्रानो छे, ते पछी 'मधुरमु' एटलाथी एक चार मात्रानो अक्षरगुच्छ रचाय छे, पछी 'खरगुं, 'जत बहु', 'भृंगा' ए प्रमाणे, अने ते पछी 'बोलत', 'जलकु', 'क्कुटकल', 'हंसा', ए प्रमाणे गुच्छो रचाय छे. पण पछीनी पंक्तिमां अर्ध सुधी एवा गुच्छो रचाता नथी, अर्धे एक आठ मात्रानो गुच्छ पूरो थई पछी, पाछा 'करतप्र' अने 'शंसा' एवा चार मात्राना बे गुच्छो रचाय छे. आ अपवादनो खुलासो आगळ ए छन्दनी चर्चाना प्रसंग पर रहेवा दई आपणे एटलुं कही शकीशुं के आमां चच्चार मात्राना चार अक्षरगुच्छोथी एक एक पंक्ति के चरण थाय छे. अने एवी चार पंक्तिनो एक छन्द बने छे. अर्थात् छन्द वाणीना मापथी बने छे. अने ए माप ते अक्षरना उच्चारणनुं माप छे. अक्षरना उच्चारणने अमुक माप छे, अने कवि ए मापनो उपयोग करीने छन्द रचे छे. कवि एवी रीते अक्षरोने योजे छे के ए अक्षरोना उच्चारणना मापथी अमुक छन्द रचाय. अने अक्षरना मापथी छन्दो रचवानी पद्धतिओ पण जुदी जुदी होय छे. दाखला तरीके उपरनी चोपाईमां दरेक अक्षरगुच्छनी मात्रासंख्या नियत छे, अने दरेक पंक्तिमां एवा अक्षरगुच्छनी संख्या पण नियत छे. पण एक चरणना कुल

અક્ષરોનો નિયમ નથી. પહેલી પંક્તિમાં કુલ ૧૧ અક્ષરો છે, બીજીમાં ૧૩ છે, ત્રીજીમાં ૧૨ છે, અને ચોથીમાં વળી ૧૩ છે. આ જાતની રચનામાં અક્ષરની કુલ સંખ્યા સરખી હોતી નથી, હોઈ શકે પણ નહીં એ આપણે આગળ જોઈશું. પણ એક બીજા પ્રકારની રચના છે તેમાં એનો પણ નિયમ હોય છે. જેમ કે:—

શિખરિણી

હવે તો મેદાને વરતનુ દિસે છે વિચરતી,
વિલોકે સામે, ત્યાં ત્વરિત ચરણોની ગતિ થતી;
રહ્યાં વન્ને વાજૂ તરુવર, નહીં કાંઇ વચમાં,
વસેલૂ આવીને પણ સકલ સૌન્દર્ય કચમાં!
—'દેવયાની', પૂર્વાલાપ.

આ છન્દમાં જોઈશું તો દરેક પંક્તિમાં સત્તર અક્ષરો છે એટલું જ નહીં, પહેલી પંક્તિમાં પહેલો અક્ષર લઘુ છે, તો બધેય એ સ્થાને લઘુ જ આવવાનો, તે પછી પાંચ ગુરુ આવે છે, તે દરેક પંક્તિમાં એમ જ આવવાના. આ પ્રમાણે માપોની આકૃતિઓના પ્રકારો જુદા જુદા હોય છે. પણ માપ વિના છન્દ નથી થઈ શકતો, અને એ માપ અક્ષરના ઉચ્ચારણતત્ત્વનું માપ છે. આ માપથી એક પ્રકારનો વાણીનો મેળ અનુભવાય છે. એ મેળ એ માપબદ્ધ વાણીના ઉચ્ચારણમાંથી અનુભવાય છે,—પછી આપણે કાવ્ય જાતે પઠતા હોઈએ, કે કોઈને પઠતો સાંભળતા હોઈએ, કે કાવ્ય વાંચતાં કલ્પનાના કાને સાંભળતા હોઈએ. કાવ્ય શ્રાવ્ય છે, તો એ વાણીનો મેળ પણ શ્રાવ્ય છે. પદ્ય એટલે માપથી સિદ્ધ સુમેળવાળી વાણી. પદ્યની વિશિષ્ટ આકૃતિ કે આકાર તે છન્દ.

આપણે જોયું કે છન્દોનું અવલમ્બનતત્ત્વ વાણીનો અક્ષર છે, છન્દોનું માપ અક્ષરનાં લઘુત્વ-ગુરુત્વ અને માત્રાથી રચાય છે. પણ એનો અર્થ એ નથી કે કાવ્યમાં છન્દને અર્થ સાથે લેવાદેવા જ નથી. કાવ્યનું સૌન્દર્ય મુખ્યત્વે તેના અર્થથી નિષ્પન્ન થાય છે અને કાવ્યના ઉચ્ચારમાધુર્યની પેઠે જ કાવ્યનો છન્દ પણ અર્થને પોષવા જ, અર્થને સુન્દર કરવા જ આવે છે. ખરું તો એમ કહેવું જોઈએ કે કાવ્યના એ અર્થ માટે વાણીનો છન્દરૂપ આકાર આવશ્યક હતો. કોઈ કહે કે માત્ર છન્દમાં તે એટલું બધું એવું શું છે? પણ ઉપરની ચોપાઈ કે શિખરિણીનો પદ્યબંધ છોડી નાખી તેને ગદ્યમાં મૂકી જોઈશું તો જણાશે કે એ વાણી સુન્દર નથી રહેતી. કદાચ એમ પણ લાગે કે એ છન્દ વિના એ જ અર્થની વાણી પછી કહેવા જેવી પણ નથી રહી! ચોપાઈના લકાર અને કકારના અનુપ્રાસો છન્દમાં શોભે છે તે ગદ્યમાં નહીં શોભે, અસ્થાને લાગશે. માટે જ

काव्यसाहित्यनो प्रारंभ थयो त्यारथी ते छन्दमां ज वहेतुं आव्युं छे. अने जोके काव्य गद्यमां होय छे छतां हजी पण छन्द ज काव्यनुं स्वाभाविक वाहन गणाय छे. ते एटले सुधी के घणा तो छन्दमां आवे ते बधाने काव्य गणी काढे छे. पण एम नथी ए पण साथे साथे कहेवुं जोईए. काव्य मुख्य-त्वे तेना अर्थथी काव्य बने छे, अने छन्द ए तेनो बाह्य आकार छे, तेना उच्चारनो आकार छे. अने काव्यने उपकारक थवा सिवाय तेने कोई स्वतंत्र प्रयोजन नथी. अने माटे ज कुशळ कवि पोतानी प्रतिभाथी वस्तुने अनुकूल ज छन्द योजे छे.

आपणे जोयुं के अक्षरोना लघुत्व-गुरुत्व अने तेनी मात्राथी छन्दो रचाय छे. एटले पिंगलनो पहेलो प्रश्न ए छे के अक्षरनुं स्वरूप शुं अने तेना लघुत्व-गुरुत्व अने मात्रानुं स्वरूप शुं?

अक्षर ए बोलाती वाणीनो एकम छे. आ एकम माटे जुदा जुदा शब्दो योजाय छे. पण प्राचीन परंपरा[1] अने शास्त्रव्यवस्थानी सगवड बन्ने जोतां ए एकम माटे अक्षर शब्द योजवो ठीक छे. आपणे बोलाती वाणीना एकम-नी वात करीए छीए एटले फलित थाय छे के बधा स्वरो अक्षरो छे, स्वर विनाना व्यंजनने अक्षर गणी शकाय नहीं. कारण के स्वर ज स्वतंत्र उच्चारी शकाय छे, स्वर विना व्यंजन स्वतंत्र उच्चारी शकातो नथी. पण एक स्वर एकलो बोलाय तो अक्षर छे, ते साथे ए पण स्वीकारवुं जोईए के एक स्वरने आधारे जे व्यंजनो बोलाय ते पण ए अक्षरनुं ज अंग छे. अर्थात् दरेक स्वर, ते व्यंजन सिवाय बोलातो होय त्यारे ते एकलो स्वर, अने व्यंजनो साथे बोलातो होय त्यारे ते स्वरने आधारे जे व्यंजनो बोलाता होय ते साथेनो आखो उच्चारपिंड ते अक्षर छे. अर्थात् 'अक्षर' शब्दमां प्रथम आवतो एकलो 'अ' स्वर ए अक्षर छे, पछी आवता 'अ' अने तेना आधारे रहेला बन्ने व्यंजनो 'क्ष्' साथेनो आखो उच्चारपिंड 'क्ष' ए पण एक अक्षर छे, अने 'र' पण ए प्रमाणे एक अक्षर छे. एटलुं ज नहीं 'क्वचित्' शब्दमां 'क्व' ए पहेलो अक्षर छे, अने 'चित्' ए पण एक ज अक्षर छे, कारण के छेल्लो व्यंजन 'त्' आगला 'इ'ने आधारे ज बोलाय छे.

स्वरथी ज उच्चारण थाय छे एटले अक्षरोमां रहेला स्वरने ज लघुत्व-गुरुत्व अने मात्रानुं माप छे. व्याकरणमां आवता बधा दीर्घ स्वरो, ए गुरु

---

१. जुओ आ प्रकरणनुं परिशिष्ट १.

छे. एटले आ ई ऊ ए ऐ ओ औ बधा गुरु छे. 'अं' अने 'अः' एने पण आपणे दीर्घ स्वर गणीए छीए एटले ए पण गुरु छे. ह्रस्व स्वर लघु छे पण तेमां एवो अपवाद छे के ह्रस्व स्वर पछी संयुक्त व्यंजनो आवे अने तेनो थडकारो ए ह्रस्व स्वरने लागे तो ते गुरु थाय छे. तेम ज लघु स्वर पछवाडे कोई व्यंजन आवे तो पण ते गुरु बने छे. दाखला तरीके उपर आपेला 'क्वचित्' शब्दमां पहेलो आवतो 'क्व' लघु छे अने 'चित्'नो 'इ' लघु होवा छतां व्यंजनांत होवाथी गुरु छे. ते ज प्रमाणे 'दिक्' शब्द पण एक ज अक्षरनो छे अने ए पण गुरु छे. प्रो. ठाकोर, गुजराती अव्यय 'पण'-ना उच्चारणमां 'ण'नो 'अ' द्रुत बोलाय छे तेथी तेने 'पण्' जेवो गणी ते शब्दने बे लघु अक्षरनो नहीं पण एक गुरुनो गणे छे ते आ नियम प्रमाणे. आमां णकार खोडा 'ण्' जेवो छे के नहीं ते भाषाना उच्चारणनो प्रश्न छे, पण णकारने खोडो गणीए तो 'पण' एक गुरुनो ज गणाय ए बराबर छे. आ नियम गुजराती पिंगलोमां साधारण रीते आवतो नथी कारण के गुजरातीमां खोडा अक्षरो लगभग नहीं जेवा ज वपराय छे.

पण अक्षरने अंते आवतो आ खोडो व्यंजन, तेनी पछी कोई स्वर आवे तो तेनी साथे एक थई जाय अने त्यारे पूर्वनो स्वर ए व्यंजनथी अलग बनी जाय, एनो भार एना माथेथी ऊतरी जाय, अने त्यारे ए व्यंजनने लीधेनुं एनुं जे गुरुत्व हतुं ते बंध पडे; जेम के 'चित्' शब्दमां स्वर पछी व्यंजन होवाथी ते अक्षर गुरु छे पण तेमां 'आकाश' शब्द भळी 'चिदा-काश' शब्द बनतां 'चि' लघु बने छे. ते ज प्रमाणे 'दिक्' शब्दनो अक्षर पण व्यंजनांत होई गुरु छे ते पण 'दिगंबर' शब्दमां पाछो लघु बने छे. पण 'चित्तंत्र' के 'दिक्काल' शब्दोमां 'चि' अने 'दि' बन्ने पाछा तेमनी पछीना संयुक्त व्यंजनना थडकाराने लीधे गुरु बने छे.

अहीं सुधी आपणे परंपराथी चालती आवेली वर्णमालाना स्वरो संस्कृतमां जे रीते उच्चाराई लघु के गुरु गणाय छे तेनी वात करी. पण गुजरातीमां बधा उच्चारो संस्कृत प्रमाणे ज थता नथी. दाखला तरीके गुजरातीमां 'ए' 'ओ' ह्रस्व बोली शकाय छे. प्राकृतमां 'ए' 'ओ'ना ह्रस्व उच्चारो हता अने ते गुजरातीमां ऊतरी आव्या छे. बीजुं, आपणे जोयुं के लघु स्वरने पछीना संयुक्त व्यंजनोनो थडकारो लागे त्यारे ए लघु गुरु थाय छे. पण गुजरातीमां घणी वार संयुक्त व्यंजनोनो थडकारो आगला स्वरने लागतो नथी. ए संयोग एवो निर्बल रीते बोलाय छे के तेनो प्रयत्न आगला स्वरथी शरू थतो नथी. एने निर्बल संयोग कहे छे.

'कर्यु' 'नम्यो' वगेरेमां व्यंजनोनो आवो निर्बल संयोग छे. एक दाखलाथी आ तरत स्पष्ट थई शकशे. संस्कृत शब्द 'रहस्य'नुं बहुवचन गुजरातीमां 'रहस्यो' थाय. आमां स्पष्ट रीते 'र'नी एक मात्रा छे, पण 'ह्'नी, पछीना संयुक्त व्यंजनोना थडकाराने लीधे बे मात्रा छे, 'स्यो'नी बे मात्रा विशे प्रश्न नथी. हवे 'रहस्यो' ए तत्सम शब्दना उच्चारणमां 'ह्'नो उच्चार अने गुजराती क्रियापद 'हस्यो'ना उच्चारणमां 'ह्'नो उच्चार बन्नेने सरखावी जोतां तरत जणाशे के गुजराती क्रियापदना उच्चारणमां थडकारो नथी. गुजरातीमां 'लाव' अने 'लाव्य' एवा आज्ञार्थ एकवचन रूपना बन्ने उच्चारो छे. ते ज प्रमाणे 'कर' अने 'कर्य' (जेम के 'काम कर्य') एवां बन्ने उच्चारणो साचां छे. आ 'कर्य'ना उच्चारने संस्कृत 'सौकर्य'मांना 'कर्य'ना उच्चार साथे सरखावी जोतां जणाशे के गुजराती 'कर्य'ना उच्चारणमां व्यंजनसंयोग निर्बल छे, अने तेथी ते थडकाईने पूर्व लघुने गुरु करतो नथी.

आपणे आगळ 'अं' अने 'अः'ने दीर्घ अने तेथी गुरु स्वीकारी लीधा. पण ए स्वीकार पण परीक्षवा जेवो छे. संस्कृतमां अनुस्वारने पछी आवता व्यंजनना अनुनासिकनुं रूप आपी शकाय छे, जेम के 'संपत्ति' के 'सम्पत्ति'. एटले आ अनुस्वारनुं गुरुत्व एक रीते संयुक्त व्यंजनना नियमनो ज अमल छे. अलबत संस्कृत अनुस्वारो सर्वत्र अनुनासिकनुं रूप नथी पामी शकता, जेम के 'अंश' 'कंस' 'संवरण'. पण त्यां सर्वत्र अनुस्वारनी तीव्रता एकसरखी ज छे. गुजरातीमां जेम व्यंजनसंयोग निर्बल छे, तेम क्यारेक अनुस्वारनो रणको पण मंद होय छे, अनुस्वारो कोमल होय छे, अने एवा अनुस्वारो निर्बल व्यंजनसंयोगनी पेठे लघु स्वरने दीर्घ करी शके नहीं. दाखला तरीके गुजराती तद्भव 'पांच'ना उच्चारणमां अनुस्वार कोमल छे. ते, पछीना व्यंजननो अनुनासिक बनी शकशे नहीं, एटले के तेनो उच्चार 'पाञ्च' एवो करी शकाशे नहीं. संस्कृत 'पांचजन्य' शब्दना 'पांच' जेवो तेनो उच्चार नथी. 'बांधो' 'गांधी' ए बधा 'बान्धो' 'गान्धी' जेवा उच्चारो नथी. आ प्रमाणे गुजरातीमां अनुस्वार कोमल छे छतां वाणीपठनमां आवा अनुस्वारथी गुरुत्व निष्पन्न नथी थतुं, एवुं चेताववानी व्यावहारिक रीते जरूर पडती नथी, कारण के आ कोमल अनुस्वार लगभग नियम तरीके दीर्घ स्वर उपर ज आवे छे. बेत्रण ज तेना अपवादो छे, जेम के 'सुंवाळुं', 'कुंवारो'. हिन्दीमां ह्रस्व उपर पण कोमल अनुस्वार आवी शके छे, जेम के 'रँग'. हिंदीमां ते अहीं दर्शाव्युं ते प्रमाणे अर्धचंद्राकारथी दर्शावाय छे. पण व्यावहारिक जरूरनी जुदी वात छे. सिद्धान्त तरीके

आपणे स्वीकारवुं जोईए के गुजराती शब्दोना उच्चारणमां, ज्यां कोमल अनुस्वार आवे त्यां, आगळनो स्वर, ए अनुस्वारने कारणे, संस्कृतमां थाय छे तेम, गुरु थतो नथी.

गुजरातीमां तत्सम शब्दोना उच्चारणमां संयोगनो अने अनुस्वारनी तीव्रता जळवाई रहे छे एवो सामान्य नियम करी शकाय पण तेमां पण एक शब्दना प्रारंभमां आवता संयोगथी आगला शब्दनो अंत्य लघु गुरु थतो नथी. जेम के 'तेने एक कूतरा उपर प्रेम हतो' ए वाक्यमां 'प्र' ना संयोगनो थडकारो 'उपर'ना अंत्य 'र'ने आपी शकाय नहीं. एटलुं ज नहीं आगलो शब्द संस्कृत होय तोपण तेने थडकारो अपातो नथी. जेम के 'तेणे सकल द्रव्य दानमां आप्युं' एमां 'सकल'ना छेल्ला 'ल'ने थडकारो अपातो नथी. तत्सम समासमां थडकारो अपाय छे, जेम के 'रणक्षेत्र', 'लोकप्रिय', 'शस्त्रक्रिया'. आमां समासना बीजा शब्दना आद्यसंयोगने लीधे आगला शब्दना अंत्य स्वरने सामान्य रीते थडकारो अपाय छे. पण 'लोकप्रिय' शब्दना उच्चारणमां थडकारानो अभाव घणी वार देखाशे. केटलाक एना थडकाराने पांडित्य-प्रदर्शन पण कहेशे. घणी वार आ फरक संस्कृत शब्दना शुद्ध उच्चारणना पक्षपातने लईने थाय छे, अने छतां प्राकृत भाषाओनुं वलण थडकारो लुप्त करवा तरफ छे ए स्वीकारवुं जोईए. 'शंकरप्रसाद' नामना उच्चारणमां तो संस्कृत पक्षपाती पण 'र'ने थडकारो नहीं आपे. एम गुजराती भाषामां घणी जगाए जेम ह्रस्वदीर्घनो अनिर्णय छे तेम आ थडकारानो पण अनिर्णय प्रवर्ते छे.[२]

संस्कृत वर्णमालामां आवता 'ऋ' स्वरनो उच्चार चर्चा मागे छे. गुजरातीओ संस्कृत वांचतां पण 'ऋ'नो उच्चार 'रु' के 'र' जेवो करे छे. 'अमृत'नो उच्चार 'अम्रुत' के 'अम्रत' जेवो करे छे. त्यां संयोग नथी अने तेथी आगळनो स्वर गुरु न बोलाय एनी संभाळ राखवा आ 'म्रु' के 'म्र'नो संयोग निर्बल बोलाय छे. पण उच्चार तो रकारनो ज थाय छे. अने तेथी घणी वार आगळना स्वरने तेनो थडकारो पण लागे छे. संस्कृत तत्समनो उच्चार अणीशुद्ध राखनार कान्ते पण क्वांक रकारसंयोगनो उच्चार करी थडकारो आप्यो छे. जेम के

'सुगुप्त राजगृहनी दिशामां'

—'अतिज्ञान', पूर्वालाप.

---

२. जुओ आ प्रकरणनुं परिशिष्ट २.

अहीं 'गृ'ना थडकाराथी 'ज' गुरु बोलाय छे.' आने अनियमितता न गणवी जोईए कारण के भाषामां ए उच्चार रूढ थई गयो छे. खरुं तो 'ऋ'ना उच्चार विषे हिन्दनी तद्‌भव प्रांतीय भाषाओमां एकता नथी, एटलुं ज नहीं ठेठ वेदकालमां पण जुदा जुदा वेदो तेनो जुदो जुदो उच्चार करता हता एम जणाय छे.

एटलुं ज नहीं, वर्णमालामां जेनो उल्लेख नथी एवा स्वरो पण आपणे स्वीकारवा जोईए. अर्वाचीन भाषाउच्चारणनुं शास्त्र स्वरव्यवस्था जुदी रीते करे छे. ते बधा साथे आपणे अहीं संबंध नथी. पण तेमां जे संयुक्त स्वर (डिपथोंग dipthong) कहेवाय छे, तेनो थोडो पण निर्देश करवानी जरूर छे. केम के कोई कोई कविओए एवा प्रयोग कर्या छे. जेम के:

जोइए तेमां एक पण, ओछे नहीं निभाय;
पाया ईसो ऊपळां, मळी खाटलो थाय.
—द० का०, भा. २, पृ० ४२.

नहीं मारे जोइए तपफल, भले ए सहु जतुं.
—'वसन्तविजय', पूर्वालाप.

अहीं बन्ने जगाए 'जोइ'ना उच्चारमां संयुक्त स्वर छे, अने पिंगलदृष्टिए 'जोइ' एक गुरु थाय छे. तेवो ज बीजो दाखलो:

जूओ भाइ आ मोटां झाड, तेमां सौथी ऊंचो ताड.
द० का०, भा० २, पृ० २७७.

---

३. संस्कृतमां पण आवा दाखला मळे छे:

प्राप्ते संनिहिते मरणे
नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे।
—चर्पटपंजरिकास्तोत्र, बृ० स्तो० १०.

अहीं 'डुकृञ्'नो 'डु', पछी आवता 'कृ'ने लीधे गुरु थयो छे.

आपणा 'कीर्तिकौमुदी'ना गुजरातना प्रसिद्ध संस्कृत कवि सोमेश्वरना 'रामशतक'मां पण आवुं दृष्टान्त मळे छे:

प्राप प्रौढिं क्रमेण दृढयतु नितरां राघवः सः श्रियं वः।
—Journal of the Oriental Institute, Vol. 1, No. 1, p. 12. श्री भोगीलाल सांडेसरानो लेख, The Rāmas'ataka.

अहीं दृने लीधे आगलो ण गुरु थाय छे.

मारा वखतमां निशाळमां आ कविता पठतां 'जू' दीर्घ ज पठातो अने ए प्रमाणे पठतां 'भाई'ने एक गुरु अक्षरवाळो शब्द गणवो जोईए.

चार चार गाउ चालतां, लांबो पंथ कपाय॑

ए दोहरामां पण 'गाउ'ने एक गुरु अक्षरवाळो शब्द गणवो जोईए. कविओना प्रयोगमां आवता आवा उच्चारोने पण स्वीकारवा जोईए.

आ उपरांत लघुगुरुना निरूपणमां एवो नियम पण अपाय छे के पादान्ते लघु विकल्पे गुरु थाय छे. आने लघुगुरुना स्वरूपनो नियम न गणतां पिंगलनो पारिभाषिक नियम गणवो जोईए. एना उपर पिंगलोमां केटलीक चर्चा थाय छे पण ए चर्चामां न ऊतरतां आपणे एवो नियम करी शकीए के छन्दमां पादान्ते ज्यां गुरु आवश्यक होय त्यां लघु पण मूकी शकाय. 'गुरु आवश्यक होय त्यां' एम ज कहेवुं जोईए कारण के चरणने अंते लघु ज आवश्यक होय त्यां लघुने गुरु करवानो प्रश्न ज उपस्थित थतो नथी. एवो लघु पण जो गुरु थई जतो होय तो पछी एवा छन्दने कोई रीते निर्दोष करी ज न शकाय. एटले एवो ज नियम होई शके के गुरु आवश्यक होय त्यां लघु मूकी शकाय. आ नियम स्वाभाविक छे. कारण के घणी जगाए चरणने अंते अंत्य स्वरनुं विलंबन आवे छे, संस्कृत वृत्तोमां तो आवे ज छे (जोके संस्कृत पिंगलना नियम प्रमाणे अमुक वृत्तोमां श्लोकार्धे ज आवे, थोडामां ज दरेक चरणे आवे.) अने एटला माटे त्यां लघु होय तो ते पण विलंबनथी गुरु थई जाय.

गुजराती पिंगल आ लघुगुरुना उच्चारणनी छूटने घणी विस्तारी मूके छे. गुजराती पिंगलमां कविने छन्द साचववा गमे ते लघुने गुरु अने गुरुने लघु करवानी छूट छे. आ छूट बधी तद्‌भव प्रांतीय भाषाओमां हती. पण ते बधीमां धीमे धीमे ए छूट नाबूद करवानो प्रयत्न कविओए करेलो छे. अने आपणा कविओ पण एवो प्रयत्न करता जाय छे. आवी छूट लेवी होय, त्यां पण ए छूटथी शब्दनुं उच्चारण कर्णकटु न थाय एनी संभाळ लेवी जोईए, कारण के उच्चारणकटुत्व एक दोष छे. आवी छूट क्यां शोभे ने क्यां न शोभे तेना नियमो थोडाघणा करी शकाय, जेम के अंत्य इकार के उकारमां आवी छूट कर्णकटु बनती नथी. संस्कृत 'बहु' शब्द गुजरातीमां तत्समरूपे ज लखाय छे, पण तेनुं 'बहू' एवुं उच्चारण आपणने आघात आपतुं नथी. पण संस्कृत 'गूढ' शब्दनो उच्चार 'गुढ' करवा जतां ते कर्णकटु लागे छे. एनुं

४. होप वाचनमाळामां हुं आ पाठ भणेलो.

कारण एवुं जणाय छे के गुजरातीमां शब्दने अंते आवता 'इ' 'उ' लगभग दीर्घ जेवा उच्चाराय छे. पण आ विषयनी लांबी चर्चा हुं अहीं करवा इच्छतो नथी. आ, पिंगल करतां भाषाना उच्चारणनो प्रश्न छे. अलबत, पिंगलनी चर्चामां भाषा साथे जोडायेला प्रश्नोनी चर्चा न आवे एम मारुं कहेवुं नथी, एवा प्रश्नो आवे छे ते आपणे आगळ जोईशुं. पण पिंगलनी दृष्टिए आ घणो नानो प्रश्न छे. सामान्य कवि के कवितावाचक पोताना सामान्य अनुभवथी आनो सहेलाईथी निर्णय करी शके छे, अने तेना नियमो बांधवा जतां घणी बारीकाईमां ऊतरवुं पडे, जेने माटे अहीं अवकाश नथी.

पिंगलमां सामान्य रीते लघुनी एक मात्रा अने गुरुनी बे मात्रा गणाय छे. सामान्य रीते व्याकरणमां पण एम मनाय छे, अने लोकोमां पण एम मनाय छे के लघुथी गुरुनी बमणी मात्रा ए उच्चारणनुं साचुं प्रमाण छे. पण ए यथार्थ नथी. अत्यारे पश्चिममां उच्चारो मापवानुं यंत्र (kymograph) शोधायुं छे अने तेना उपर प्रो० टी० एन० दवेए अनेक अखतरा करीने तेने परिणामे बतावेलुं छे के आपणा कोई स्वरो उपर बतावेला प्रमाणवाळा कोई बे वर्गमां पडता नथी, तेम ज बधा दीर्घो अने ह्रस्वो पण पोताना वर्गमां पण एकसरखा नथी ('गुजराती भाषामां वर्णव्यवस्था', पृ० ३२-३३ उपरनो कोठो). तेमणे ऐ औ अं अः सिवायना स्वरोने बार प्रकारमां वहेंच्या छे अने दरेकना उच्चारणनी कालमात्रानो समय सेकन्डना हजारमा भागमां दर्शाविल छे. अलबत आ परिणामो अनेक व्यक्तिओना अखतरा पछी ज वधारे आधारभूत गणाय, पण तेमना प्रयोगो उपरथी एटलुं तरत कही शकाय के भाषाना स्वाभाविक उच्चारणमां कोई बे स्वरो एकसरखा नथी.

अर्थात्, आ लघुगुरुनुं नियत करेलुं प्रमाण पिंगलगत छे. अने पिंगलना प्रदेशमां ए साचुं छे. अर्थात् मात्रामेळ छन्दोमां ज्यां एक गुरुनी जगाए बे लघु अने बे लघुनी जगाए एक गुरु मूकी शकाय छे त्यां छन्दना उच्चारणमां खरेखर ज गुरु लघु ए प्रमाणनी कालमात्रामां बोलाय छे. पण अहीं एक बीजी हकीकत पण नोंधवी जोईए. पिंगलपरंपरा सर्व प्रकारना छन्दो माटे आ प्रमाण माने छे, ते यथार्थ नथी. आपणे जेने अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो कहीए छीए तेमां एक गुरुनी जगाए बे लघुओ के बे लघुओनी जगाए एक गुरु आवी शकतो नथी. जेम के

रह्यां बन्ने बाजू तरुवर, नहीं कांइ वचमां

—'देवयानी', पूर्वालाप.

ए पंक्तिमां 'तरुवर' चार लघुनो शब्द छे तेनी जगाए बे गुरुनो 'वृक्षो' शब्द मूकी नहीं शकाय :

रह्यां बन्ने बाजू वृक्षो नहीं कांइ वनमां

एम करवा जतां मूळ शिखरिणी वृत्तनो संवाद जरा पण रहेतो नथी. अने आ हकीकत ए आखा वृत्तप्रकार माटे साची छे. ज्यारे पहेलां आपेला चोपाईना दृष्टान्तमां

विकसे सरसिज नानारंगा

चार मात्राना 'सरसिज'ने बदले 'वारिज', 'कुसुमो', 'पद्मो' एम गमे ते चार मात्रानो शब्द मूकी शकाये. अर्थात् लघुगुरुनुं प्रमाण कह्युं छे ते मात्रामेळ छंदो माटे साचुं छे अने ए छन्दोना पठनमां अक्षरोनुं ए प्रमाणे पठन थाय पण छे. पण अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां लघुगुरुने परस्पर अप्रमेय अने भिन्न मापवाळा अक्षरो मानवा जोईए. अने एना पठनमां लघुगुरुनी, कोई पण प्रमाणने अनुसरी, परिवृत्ति के अदलाबदली थई शकती नथी.

पिंगलमां प्लुतनो स्वीकार करवामां आवतो नथी. आनो अर्थ एवो नथी के छन्दोना पठनमां प्लुत आवतो ज नथी. प्लुत आवे छे पण पिंगलकारोए तेनो गुरुमां समावेश कर्यो छे. तेमने प्लुतनो भिन्न स्वीकार करवानी जरूर जणाई नहोती. संस्कृत वृत्तोमां प्लुतने स्थाने गुरु ज आवी शकतो, एटले वृत्तनी परीक्षा करवामां लघुगुरुनां स्थान तपासी जोवाथी वृत्तनी परीक्षा थई शकती. तेम ज वृत्त रचनार शिखाउने माटे पण लघुगुरुनां स्थाननो उपदेश पर्याप्त हतो, कारण के प्लुतने स्थाने गुरु मूकवाथी छन्दोरचना निर्दोष थई जाय छे. पछी प्लुतो पठन द्वारा ज दर्शाववा रहे छे अने ए ज्ञान गुरु द्वारा अथवा परंपराना पठनमांथी मळी शके छे. छन्द विषे गमे तेटलुं निरूपण थाय तोपण तेनुं खरुं स्वरूप तो पठन द्वारा ज शीखी शकाय छे एटले छन्दःशास्त्रने प्लुतना अस्वीकारथी पोताना शासनकार्यमां क्यांय विघ्न आवतुं नहीं. पण शास्त्रनी पोतानी पूर्णता खातर प्लुतना स्वीकारनी जरूर छे. आपणे आगळ जोईशुं के प्लुतना स्वीकार विना केटलाक मात्रामेळ छन्दोनुं स्वरूप ज पूरुं निरूपी शकातुं नथी. अने शास्त्र मात्र छन्दने कसी जोतां शीखवे एटलुं आपणे बस मानता नथी. शास्त्रनो समग्र विषय अने तेनी सघळी विगतो, शास्त्रे व्यवस्थित करवी जोईए, तेना नियमो शोधवा जोईए, अने ए काम प्लुतना स्वीकार विना थई शकतुं नथी. माटे आ शास्त्रमां लघुगुरु साथे प्लुत पण स्वीकारवो जोईए. अने ते पण मात्र त्रण मात्रानो ज नहीं, पण तेथी

विशेष मात्रानो पण, ते जेटली मात्रानो आवतो होय तेटली मात्रानो स्वीकारवो जोईए. अने आपणे गुरु ज प्लुत थई शके एवो संस्कृत व्याकरण अने पिंगलनो नियम पण स्वीकारी शकता नथी, लघु पण प्लुत थई शके ए स्वीकारवुं जोईए. मात्रामेळ छंदोमां क्वचित् लघु, गुरु थाय छे एटलुं ज नहीं पण एक ज लघु क्यांक त्रण अने क्यांक तो सात मात्रानो बने छे. एटले गुरु तेम ज लघु बे मात्राथी वधारे लंबाय एटले प्लुत गणावो जोईए.

पण आथी पण एक विशेष तत्त्व पिंगले स्वीकारवुं जोईए. ते छे ध्वनिशून्य काल. चित्रकार चित्ररचनामां जेम अनेक रंगोनो उपयोग करे छे तेम ज ते चित्रनी भूमिका — भोंयना रंगनो पण उपयोग करे छे. ए रीते ध्वनिशून्यता ए ध्वनिनी भोंय छे. छन्दना पठनमां वच्चे आवतो ध्वनिशून्य अवकाश ए पण ए छन्दनो ज भाग छे. श्लोकार्धे विराम आववो ज जोईए. श्लोकान्ते विराम आववो ज जोईए. ए विराम ए श्लोकनुं ध्वनिशून्य अंग छे. मात्रामेळमां तो ज्यां विराम लेवानो आवे त्यां, छन्दना अक्षरोनी पेठे ज, ए विरामनुं पण माप छे. एटले छंदोनुं माप छन्दोनो बंध, अक्षरोनुं लघुत्वगुरुत्व, अक्षरोनी मात्रा, तेम ज छन्दना पठनमध्ये आवता ध्वनिशून्य अवकाश, अने तेनी मात्रा, ए बधाथी थाय छे.

आथी फलित थाय छे के छन्दमां थतुं भाषानुं उच्चारण कृत्रिम छे. आ खरुं छे, पण ए दोष नथी. मात्र उच्चारण शुं, गद्यनी अपेक्षाए काव्यनी भाषा पण कृत्रिम ज गणाय. एटलुं ज नहीं भाषा पोते पण मनुष्यकृत होई प्राणीओना रवोनी अपेक्षाए कृत्रिम छे. काव्यनी भाषा भले कृत्रिम होय, छन्दोगत भाषानुं उच्चारण भले कृत्रिम होय, ए जे अर्थे कृत्रिम बने छे ए अर्थ सिद्ध थाय एटले बस. छन्द काव्यनुं प्रयोजन सिद्ध करवा आवे छे अने छन्दथी काव्य सिद्ध थाय एटले उच्चारणनी कृत्रिमता दोषरूप रहेती नथी. कलामात्र मनुष्यकृत होई कृत्रिम छे.

आ प्रकरण पूरुं करतां पहेलां लघु गुरु प्लुतनी संज्ञा आपणे नियत करी लईए. ज्यां अक्षरसंज्ञानी जरूर पडे त्यां लघुने माटे सर्वत्र 'ल' राखीशुं; जे गुरुने में लघु प्रति अप्रमेय गण्यो तेने माटे 'गा' संज्ञा राखीशुं; अने जे गुरुने आपणे लघुथी बमणी कालमात्रानो गण्यो छे तेने माटे अक्षरसंज्ञा 'दा' राखीशुं. बीजी रीते कहीए तो दा एटले बे मात्रा जे एक गुरुथी अथवा बे लघुथी पूरी शकाय; ल एटले एक मात्रा. रेखात्मक चिह्नो लघु माटे ⌣ आवुं अर्धचन्द्राकार अने गुरु माटे — आवी आडी लीटी राखीशुं, जे

आपणे लिपिमां गुरु अक्षरने लघु दर्शाववा अने लघुने गुरु दर्शाववा अक्षर उपर मूकवाना चिह्न तरीके अत्यार सुधी वापरता आव्या छीए. प्लुतने माटे अक्षरनी पोतानी मात्रा उपरांतनी मात्रा आ रेखाचिह्नोथी ज हुं बतावीश. जेम के गुरु प्लुत थयो होय त्यारे गा ᵕ एटले त्रण मात्रानो प्लुत गुरु, गा — एटले चार मात्रानो प्लुत गुरु, गा ᵕ— अथवा गा —ᵕ एटले पांच मात्रानो प्लुत गुरु. अने लघु प्लुत थयो होय त्यारे ल ᵕ ᵕ के ल — बराबर त्रण मात्रानो प्लुत लघु. क्यारेक लघु गुरुने स्थाने होय तेनो निर्देश हुं लँथी करीश अने अक्षरनी उच्चारशून्य मात्रा बताववा रेखाचिह्नो उपर हुं पोलुं मींडुं मूकीश, जेम के ᵕ̊ के –̊.

परिशिष्ट १

अक्षर

आ प्रकरणमां भाषाना उच्चारणना एकमने माटे अक्षर शब्द वापरेलो छे ते अंग्रेजी सिलेबल (syllable)ना समानार्थ शब्द तरीके वापर्यो छे. आ अर्थमां पिंगलमां वर्ण शब्द पण वपरायो छे. अहीं जेने अक्षरमेळ कहेलो छे तेने घणा वर्णमेळ पण कहे छे. 'वृत्तरत्नाकर' पण छन्दोने मात्राछन्द अने वर्णछन्द एम विभेदे[1] छे. पण वर्ण ए स्वरव्यंजन बन्नेनो सामान्यवाचक शब्द छे. वर्णमालामां स्वरव्यंजन बन्नेनो समावेश थाय छे. एटले वर्ण शब्द उच्चारणना एकम माटे काम आवे एवो नथी. 'ऋक्प्रातिशाख्य' एने माटे अक्षर शब्द वापरे छे. अक्षर शब्दना अर्थमां अंग्रेजी सिलेबलनो अर्थ आवी जाय छे, पण शब्दोच्चारणमां एकमो छूटा पाडवानी प्रातिशाख्यनी पद्धति अंग्रेजी सिलेबलो छूटा पाडवानी पद्धतिथी जरा भिन्न छे. एटले प्रातिशाख्यनो मत तेनां सूत्रो टांकीने ज नीचे दर्शावुं छुं. पहेला पटलनां १६ सूत्रोमां वर्णमाला आप्या पछी कहे छे: "ओजा ह्रस्वाः सप्तमान्ताः स्वराणाम्" ॥१७॥ पहेला आठ समानाक्षरो अ आ ऋ ॠ इ ई उ ऊ मांथी ओज एटले एकी अक्षरो ह्रस्व छे. "अन्ये दीर्घाः" ॥१८॥ बाकीना दीर्घ छे. "उभये त्वक्षराणि" ॥१९॥ बन्ने अक्षरो कहेवाय छे. "गुरूणि दीर्घाणि" ॥२०॥ दीर्घ स्वरो गुरु

---

१. पिंगलादिभिराचार्यैर्यदुक्तं लौकिकं द्विधा ।
मात्रावर्णविभेदेन छन्दस्तदिह कथ्यते ॥
—वृ० र०, नि०, १, ४.

गणाय छे. "तयेतरेषां संयोगानुस्वारपराणि यानि" ॥ २१ ॥ दीर्घ सिवायना बीजा एटले ह्रस्वो, जेनी पछी संयोग के अनुस्वार आवतो होय ते पण गुरु कहेवाय छे. संयोग एटले व्यंजनोनो संयोग : अर्थात् संयुक्त व्यंजनो; अने अनुस्वार पहेलांनो ह्रस्व पण गुरु गणाय छे. "अनुस्वारो व्यंजनं चाक्षराङ्गम्" ॥ २२ ॥ अनुस्वार अने व्यंजन अक्षरनुं अंग छे. नीचे भाष्यकार उवट कहे छे, अक्षरनुं अंग एटले स्वरनुं अंग. जे व्यंजनो स्वरोनी वच्चे न आवता होय ते अहीं उदाहरण बने छे. जेम के 'प्र'मां 'प्' अने 'र्' 'अ'नुं अंग छे. 'वर्क्'मां 'व्' 'र्' अने 'क्' त्रणेय 'अ'नुं अंग छे.[२] "स्वरान्तरे व्यञ्जनान्युत्तरस्य" ॥ २३ ॥ बे स्वर वच्चे आवता व्यंजनो बेमांथी पाछळ आवता स्वरनुं अंग गणाय, आगळ आवता स्वरनुं नहीं. दृष्टान्त तरीके : 'देव' शब्दमां 'व्' व्यंजन 'ए' अने 'अ' स्वरोनी वच्चे आवे छे, ते 'व्' पाछळ आवता 'अ'नुं अंग गणाय. अर्थात् 'व' सव्यंजन एक आखो अक्षर थयो. २२ मा सूत्रमां 'वर्क्' मां 'अ' पछी आवता व्यंजनो पूर्वना 'अ'नुं अंग गणाता हता, माटे अहीं स्पष्ट कर्युं. "पूर्वस्यानुस्वारविसर्जनीयौ" ॥ २४ ॥ अनुस्वार अने विसर्ग बन्ने पूर्वस्वरनुं अंग गणाय. अनुस्वार माटे अलग सूत्र मूकवानुं कारण ए छे के आ 'प्रातिशाख्य' अनुस्वारने स्वर अने व्यंजन एम बन्ने वर्गमां मूके छे ('अनुस्वारो व्यंजनं वा स्वरो वा।' आ ज पटलनुं पांचमुं सूत्र). आथी अनुस्वार अने विसर्ग आगळना स्वरनुं अंग बने छे. आगळ २१मा सूत्रमां आवी गयुं के अनुस्वारनो आगळनो ह्रस्व गुरु गणाय. अहीं एटलुं उमेर्युं के अनुस्वार आगळना स्वरनुं अंग बने छे. अलबत, सूत्रमां कह्या प्रमाणे विसर्गनुं पण एम ज थाय छे. "संयोगादिर्वा" ॥२५॥ संयोगमां आदिव्यंजन विकल्पे आगला स्वरनो गणाय. एनो अर्थ ए थयो के संयुक्त व्यंजनोनो पहेलो व्यंजन आगला स्वरनो पण गणाय, पाछला स्वरनो पण गणाय. अर्थात् 'अग्ने' शब्दना अक्षरो बे रीते जुदा पाडी शकाय. अ + ग्ने ए रीते, तेम ज, आ सूत्र प्रमाणे, अग् + ने. अंग्रेजीमां सिलेबलो मात्र आ बीजी रीते ज छूटा पडे छे. दाखला तरीके **magnate** शब्दनां सिलेबलो **mag-nate** मॅग् + नेट् ए प्रमाणे ज पडी शके छे, **ma-gnate** मॅ-ग्नेट ए प्रमाणे पडतां नथी, ए नोंधवा जेवुं छे. आ उपरथी स्पष्ट थयुं हशे के

---

२. आ 'वर्क्' धातु परिचित नथी. तो दृष्टान्तनी खातर 'तर्क्' के एवो कोई बीजो लई शकाय. अहीं 'अ' पहेलां आवतो 'त्' अन 'अ' पछी आवतो 'र्' अने 'क्' त्रणेय व्यंजनो 'अ'नुं अंग छे.

'प्रातिशाख्ये' जेने अक्षर कह्यो छे तेमां 'सिलेबल'नो अर्थ संपूर्णपणे आवी जाय छे. हजी 'प्रातिशाख्य'ने संयुक्त व्यंजन संबंधी थोडुं कहेवानुं छे. "च परक्रमे द्वे"॥ २६ ॥ अने ज्यां क्रम होय त्यां बन्ने व्यंजनो पण पूर्वस्वरना अथवा उत्तरस्वरना अंगभूत थई शके. अहीं 'क्रम' शब्द पारिभाषिक छे. वेदमां घणी वार व्यंजनो बेवडाता. जेम के 'अग्नि'ने बदले 'अग्ग्नि' एम बोलातुं. आ बेवडा वर्णने 'क्रम' कहेलो छे. आवो 'क्रम' आवे त्यारे ते बेवडायेलो व्यंजन आगला अथवा पाछलानुं अंग विकल्पे बनी शके. एटले के अ + ग्ने एम अक्षरो जुदा कराय अथवा अग्ग् + ने एम पण कराय.

अक्षरो छूटा पाडवानी आ बे भिन्न पद्धतिथी अक्षरोना लघु-गुरु मापमां कशो फरक पडतो नथी. 'अग्नि'ने अ + ग्ने एम छूटो पाडीए के अग् + ने एम छूटो पाडीए तोय बन्ने रीते 'अ' गुरु ज रहे छे. पहेला विकल्पमां 'ग्ने'ना संयुक्त व्यंजनना थडकाराने लीधे 'अ' गुरु थाय छे, बीजा विकल्पमां 'अग्' व्यंजनांत होवाथी गुरु थाय छे. अहीं ए पण स्पष्ट थशे के जो संयुक्त व्यंजनना पहेलाने आगला स्वरनुं अंग ज एक नियम तरीके गणीए तो संयुक्त व्यंजनथी गुरु करवाना नियमनी जरूर न रहे. एक व्यंजनांतना नियमथी ज सर्व गुरुकरणनो खुलासो थई जाय. पण आखुं पिंगल आटली लांबी परंपराथी संयोगपरना नियम पर ज विशेष करीने चाल्युं छे. व्यंजनांतनो नियम तो घणाने अजाण्यो छे. अने गुजरातीमां तो एथी मुश्केली वधशे. कारण के 'कर्युं' शब्दमां 'र्युं'-नो संयोग मंद छे. तेथी 'क' थडकातो नथी अने तेथी 'क' गुरु थतो नथी एम कहेवुं सरल छे, पण 'कर्-।-युं' एम कर्या पछी 'कर्' गुरु नथी, एने माटे नवो खुलासो शोधवो पडशे. एनो खुलासो छे, अहीं 'कर्' अने अने 'युं' ए रीते पृथक्करण ज नथी थतुं एम कहेवुं जोईए. पण एम पिंगलना शासनने वधारे जटिल करवुं योग्य नथी. एटले व्यंजनांत अने संयोग बन्नेना नियमो तत्त्वतः एक होवा छतां बन्ने भिन्न रहे ते इष्ट छे.

लघु-गुरु विवेक : ऐतिहासिक दृष्टिए

आपणा पिंगलशास्त्रे लघुगुरुना स्वरूपनी चर्चा व्याकरणने अवलंबीने करी छे. अने ए स्वाभाविक छे. पिंगळनो विषय छंद ए वाणीनी आकृति छे, अने वाणीनुं स्वरूप ए व्याकरणनो विषय छे. माटे ज व्याकरण अने छन्दोविचिति प्रथम वेदांगो गणायां.

लघुगुरुनो विवेक प्राचीनमां प्राचीन पाणिनिना व्याकरणमां मळे छे. छतां लघुगुरु संबंधी नियमो धीमे धीमे ज विकास पामी स्पष्ट थया छे, अने एनो विकास जाणवा जेवो छे.

पाणिनिना व्याकरणमां ह्रस्व दीर्घ प्लुत उपरांत लघु गुरुनो स्वीकार छे. आ संबंधी त्रण सूत्रो छे. "ह्रस्वं लघु॥ संयोगे गुरु॥ दीर्घं च॥" अध्याय १, पा० ४, सूत्र १०–११–१२. 'ह्रस्व एटला लघु. पण तेनी पछी संयोग एटले संयुक्त व्यंजनो आवे तो लघु पण गुरु थाय. अने दीर्घ पण गुरु'. आटला प्राचीन समयमां संयोगना उच्चारणनी आ असर आपणा आर्योए पकडी ए एमनी बुद्धिनी सूक्ष्मता बतावे छे. तेम छतां आ बाबतमां पाणिनिना नियमोनी अपूर्णता पण ध्यान खेंचे एवी छे. पाणिनि अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ए ऐ ओ औ एटला स्वरो स्वीकारे छे. एमां अं अने अः आवता नथी. एटले गुरुमां तेनी गणना थवी रही जाय छे. पाणिनि अनुस्वारने 'म्'नो अने विसर्गने 'स्'नो आदेश गणे छे. एमां भाषानी दृष्टिए आपणे दोष दई शकीए नहीं. पण आ रीते स्वरोमांथी रही गयेला 'अं' अने 'अः'ने गुरु गणवाने बीजुं कोई सूत्र छे नहीं. विचित्र स्थिति तो एवी थाय छे के पाणिनि प्रमाणे 'संपत्' अने 'सम्पत्' एवां बन्ने रूपो खरां छे. आमांथी 'सम्पत्'मां 'म्प'ना संयोगने लीधे 'स' गुरु गणाशे अने 'संपत्'मां 'सं' गुरु नहीं गणाय. अलबत "स्थानिवद् आदेशः।" (१–१–५६) एवुं पाणिनिनुं सूत्र छे. एनो अर्थ एवो छे के आदेशने तेना मूळ स्थानमां जे होय तेना जेवो गणवो. ए नियम अहीं लगाडीए तो एनो अर्थ एवो थाय के अनुस्वारने अने विसर्गने एना मूळ स्थानी 'म्' अने 'स्' जेवो एटले के व्यंजन गणवो. पण ए रीते 'दुःख' शब्दमां 'विसर्ग' अने 'ख'नो संयोग आपणे नथी गणी शकता. ए सूत्रनो उपयोग पाणिनिए पोते आपेलां सूत्रो पूरतो ज थई शके. एटले

पाणिनि प्रमाणे 'संपत्' 'दुःख' वगेरेमां अनुस्वार अने विसर्गथी आगळनो ह्रस्व स्वर गुरु थई शकतो नथी.

आ वात आपणा विद्वानो जाणता पण हता. पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'ना पहेला अध्यायमां 'गन्ते।' एवुं दसमुं सूत्र छे. एनो अर्थ एवो छे के पादने अंते लघु आवे तो तेने पण गुरु गणवो. आनी टीकामां हलायुध पूर्वपक्ष करी समाधान करे छे, तेमां पाणिनिना आ नियमोने स्पर्शे छे. ते कहे छे: "अन्ये त्वाहुः–ननु पदान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य पाणिनिना गुरुसंज्ञा न कृता। तेनोक्तम् 'संयोगे गुरु' (पा० सू०, १–४–११), 'दीर्घं च' (पा० सू०, १–४–१२) इति। नायं संयोगादिर्न च दीर्घः। तस्मात् 'गन्ते' इति सूत्रमयुक्तम्। अत्रोच्यते–पाणिनिना स्वशास्त्रप्रयोजनार्थं गुरुसंज्ञा कृता। . . . पदान्ते वर्तमानस्य लघोर्गुरुत्वातिदेशे पाणिनेः प्रयोजनमेव नास्ति। किंचानुस्वारादिपूर्वस्य वर्णस्य बलं संपदित्यादौ स्थितस्य गुरुसंज्ञा पाणिनिना न कृता, किमेतावतान्यैरपि न कर्तव्या। तस्मात्सूत्रमिदं 'गन्ते' इति।" "बीजाओ वांधो ले छे के:— चरणने अंते आवेला ह्रस्वनी पाणिनिए गुरुसंज्ञा करी नथी. तेणे कह्युं छे: 'संयोगे गुरु', 'दीर्घं च'. चरणने अंते आवेलो लघु संयोगनी पहेलांनो नथी, तेम दीर्घ पण नथी. माटे 'गन्ते' एवुं सूत्र अयुक्त छे. हवे उत्तरमां कहीए छीए के पाणिनिए पोताना शास्त्र माटे गुरुसंज्ञा करी छे. . . . चरणने अंते आवता लघु उपर गुरुत्वनो अतिदेश करवा पाणिनिने प्रयोजन ज नहोतुं. तेम ज 'बलम्', 'संपत्' वगेरे शब्दोमां अनुस्वार वगेरेना पूर्वना वर्णनी पाणिनिए गुरुसंज्ञा करी नथी एटला माटे बीजाओए पण न करवी? माटे 'गन्ते' एवा सूत्रनी जरूर छे.' छ. श., नि., पृ. ४.

आ अपूर्णता सौथी पहेली 'भरतनाट्यशास्त्र'मां सुधरे छे. 'भरतनाट्यशास्त्र' जोके नाटकनो ग्रंथ छे, पण तेमां छन्दोनुं निरूपण पण आवे छे. ए ग्रन्थनो रचनाकाल नक्की नथी, अने वधारे मुश्केली तो ए छे के तेमां लांबा काल सुधी सुधारावधारा थया कर्या छे. छतां ए प्राचीन छे. तेनो चौदमो अध्याय वागभिनय एटले पात्रो जे भाषा बोले छे ते विषे छे. तेमां मोटो भाग छन्दोने पण विषय करे छे. त्यां गुरु विषे कहे छे: "गुरु दीर्घं प्लुतं चैव संयोगपरमेव च। सानुस्वारविसर्गं च तथान्त्यं च लघु क्वचित्॥" भ० ना० शा० १४,९०. वॉ. २, पृ. २४२. अहीं संयोगपरना उल्लेख साथे अनुस्वार अने विसर्गनो पण उल्लेख छे.

पण हजी आ लक्षण पण अपूर्ण छे. अनुस्वार अने विसर्गथी स्वर गुरु थाय छे. तो व्यंजनांत स्वरनुं शुं? अनुस्वार अने विसर्गने पाणिनि व्यंजन गणे छे ते निष्कारण नथी. अनुस्वार एक दृष्टिए 'म्' छे, विसर्ग 'स्' छे. अने जो 'यं' अने 'यः' एटले के 'यम्' अने 'यस्' बन्ने गुरु होय तो 'यत्' केम नहीं? अलबत, आपणे आगळ अनुस्वार अने विसर्गना संबंधमां जोयुं तेम आवा व्यंजन पछी स्वर आवे तो ए 'त्' ए स्वरमां भळी जाय एटले व्यंजनांतनो प्रश्न न रहे, 'त्' पछी व्यंजन आवे तो ए प्रसंग संयुक्त व्यंजननो थई जाय अने तेथी आगलो ह्रस्व स्वर गुरु बने. पण पाघडीनो वळ छेडे आवे तेम वाक्यने अंते व्यंजन आवे त्यां आ प्रश्न आवीने ऊभो रहे.

प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्तं मया यत्।

मेघदूत, उ. मे. ३१

यहीं 'यत्'ने गुरु गण्या विना छूटको नथी. अने आ अपूर्णताने सौथी पहेली हलायुधनी वृत्ति, पूरती होय एम जणाय छे. पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'नी टीका करतां प्रारंभमां ज मंगल पछी विषयना उपोद्‌घातमां ते कहे छे :

दीर्घं संयोगपरं तथा प्लुतं व्यञ्जनान्तमूष्मान्तम्।
सानुस्वारं च गुरुं क्वचिदवसानेऽपि लघ्वन्त्यम्॥[1]

---

१. निर्णयसागरनी 'छन्दःशास्त्र'नी आवृत्तिमां आ श्लोक हलायुधनी वृत्तिना प्रारंभमां आवे छे. तेमां मंगलना चार अनुष्टुपो पछी गणसंज्ञानी त्रण आर्या आवे छे. अने ते आर्या पछी आ लघुगुरुना स्वरूपनी आर्या आवे छे, एटले के त्यां थयेलो आ विषयनो निर्देश स्थाने छे. पण 'बिब्लियोथेका न्डिका' (Bibliotheca Indica)नी कलकत्ता शाखाथी प्रसिद्ध थयेल पिंगलना 'छन्दःसूत्र'मां मात्र मंगलना चार अनुष्टुपो ज आप्या छे. अने नीचेनी टीपमां आ उपरांत बीजी आर्याओ उतारीने जणाव्युं छे के आ आर्याओ मात्र एक ज प्रतिमां मंगलना श्लोकोनी पूर्वे मळे छे. पुस्तकमां आ पाठ विषे कशी चर्चा नथी. पण एक ज प्रतिमां आ पाठ छे ए कंईक शंकाजनक तो खरुं. वळी गुरुलघुना स्वरूप विशेनां पिंगलनां सूत्रो उपरनी टीकामां हलायुध क्यांय व्यंजनांतनो निर्देश करतो नथी. पिंगलनुं संयोगपरनुं सूत्र ते तेनुं पहेला अध्यायनुं ११ मुं सूत्र 'ग्लादिपरः।' छे. ते उपर मुंबई अने कलकत्ता बन्नेनां पुस्तकोमां टीका, मात्र एक स्थाने शब्दफेर छे ते सिवाय, एकसरखी छे. हुं मुंबई-निर्णयसागरनी आवृत्तिमांथी उतारुं छुं, "ग्ल इति व्यंजनसंयोगस्योपलक्षणार्थमेतत्। ग्ल आदिर्येषां ते ग्लादयः। आदिशब्देन विसर्जनी-

अहीं दीर्घ, प्लुत अने संयोगपर उपरांत व्यंजनांत स्वर, ऊष्मान्त स्वर अने सानुस्वार स्वरनी पण गुरुमां गणना करी छे; ऊष्मान्त शब्दनी नीचे संपादके टीप आपी छे के 'विसर्ग जिह्वामूलीय अने उपध्मानीय'नो ऊष्मान्त शब्दमां

सानुस्वारजिह्वामूलीयोपध्मानीयानां ग्रहणम् । घ्रादयः परे यस्मात् स घ्रादिपरः । ततश्चायं सूत्रार्थः— व्यंजनसंयोगात्पूर्वस्य ह्रस्वस्यानुस्वारविसर्जनीय जिह्वामूलीयोपध्मानीयेभ्यश्च पूर्वस्य गुरुसंज्ञातिदिश्यते ।" भावार्थ : 'घ्र' ए व्यंजनसंयोग बतावबा कहेलो छे. घ्र जेना आदिमां छे ते घ्रादि. आदि शब्दथी, विसर्ग अनुस्वार अने जिह्वामूलीय, उपध्मानीयनो समावेश थाय छे. घ्र वगेरे जेनी पछी आवे छे ते. तेथी सूत्रार्थ आ प्रमाणे थयो: व्यंजनसंयोगनी पहेलांना ह्रस्वनी, अने अनुस्वार, विसर्ग, जिह्वामूलीय अने उपध्मानीयनी पहेलांना ह्रस्वनी गुरुसंज्ञा पण अतिदेशथी समजवी.' अहीं व्यंजनांतना उल्लेखनी आपणे स्वाभाविक रीते अपेक्षा राखीए, पण तेनो उल्लेख नथी. नारायण भट्ट 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामां संयोगपरत्वना संदर्भमां आ ज चर्चा करतां हलायुधवाळी आर्या उतारे छे. त्यां नारायण आ आर्याने हलायुधनो गणतो होय एम जणाय छे. हलायुध पहेलां आ आर्या बीजे क्यांई मळती नथी. तेम अत्यार सुधी ए हलायुधनी गणाई छे, एटले कोई बीजानी साबित न थाय त्यां सुधी एने हलायुधनी गणवामां हुं वाध जोतो नथी.

२-२ जिह्वामूलीय ए 'क' पहेलांना विसर्गनुं अने उपध्मानीय ए 'प' पहेलांना विसर्गनुं नाम छे. सद्‌गत के० ह० ध्रुवे आ बे, आपणी वर्णमालाना अतिप्राचीन समयथी लुप्त थयेला कोई बे वर्णो छे एवी कल्पना करी छे (वाग्व्यापार, साहित्य अने विवेचन, भा. २, पृ. ३७-३९). पण ए अतितर्क जणाय छे. विसर्ग, 'च' वर्ग 'ट' वर्ग अने 'त' वर्ग पहेलां आवे त्यारे तो ते तेते वर्गनो ऊष्मा बने छे, एटले के 'च' वर्ग पहेलां 'श्', 'ट्' वर्ग पहेलां 'ष्' अने 'त' वर्ग पहेलां 'स्' बने छे. मात्र 'क', 'ख' अने 'प', 'फ' पहेलां ज ते संधि थया विना विसर्गने रूपे रहे छे. जेम के 'अंतःकरण', 'अंतःपुर'. 'च', 'ट', 'त' पहेलांनो विसर्ग, पछी आवता व्यंजनने अनुकूल ऊष्मा बने छे, ते बतावे छे के पछीना व्यंजनने अनुरूप थवानो विसर्गनो स्वभाव छे. ते प्रमाणे 'क' अने 'प' पहेलां आवतो विसर्ग, 'क' 'प'ने अनुरूप थवा बदलातो नथी तोपण ते, तेते व्यंजनना उच्चारनी नजीक जाय छे, अने तेथी 'क' पहेलांना विसर्गनुं उच्चारण जिह्वामूल सुधी, कंठ नजीक जाय छे, अने तेम ज 'प' पहेलांनो विसर्ग

समावेश थाय छे. ए रीते अहीं गुरुनुं पूर्ण स्वरूप आपवामां आव्युं छे. ते पछीनां लगभग बधां प्रमाणभूत पिंगलो आ बधानी गुरुमां गणना करे छे. 'वृत्तरत्नाकर' गुरुनी नीचे प्रमाणे व्याख्या आपे छे:—

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः ।
वा पादान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजुः ॥

—वृ. र., चौ. १, ९, पृ. ७

अहीं सानुस्वार, विसर्गान्त, दीर्घ अने युक्तपर एटलानी ज गणना थई छे. पण तेनो समर्थ टीकाकार नारायण भाष्यमां अनुक्तनुं कथन करे छे. ए कहे छे: "'युक्तपरश्च' इति व्यंजनोपध्मानीयजिह्वामूलीयपराणामुपलक्षणम्। तथा च 'तनुवाग्विभवोऽपि सन्' (रघु० १–९) 'मन्दः कवियशःप्रार्थी' (रघु० १–३) इत्येवमादिषु सकारस्य, जिह्वामूलीयोपध्मानीयपक्षे च दकार-शकारयोर्गुरुत्वं सिद्धं भवति। इतरथा नकारस्य पादान्तत्वात् सकारस्य न प्राप्नोति, जिह्वामूलीयोपध्मानीययोश्च संयोगत्वाभावाद्दकारशकारयोर्न प्राप्नोति। तदुक्तम —

दीर्घं संयोगपरं तथा प्लुतं व्यंजनान्तमूष्मान्तम्।
सानुस्वारं च गुरु क्वचिदवसानेऽपि लघ्वन्त्यम्॥

—वृ. र. चौ. पृ. ८

टीकाकार कहे छे के 'युक्तनी आगळनो' एम कहेवामां व्यंजननी उपध्मानीयनी अने जिह्वामूलीयनी आगळनो एम पण समजी लेवुं. ए रीते 'तनुवाग्विभवोऽपि सन्।' अने 'मन्दः कवियशःप्रार्थी' वगेरेमां पहेला दृष्टान्तमां 'सन्'ना 'स'नुं अने बीजा दृष्टान्तमां 'मन्दः'ना 'द'नुं अने 'यशः'ना 'श'नुं गुरुत्व सिद्ध थाय छे. नहीं तो पहेला दृष्टान्तमां पादने अंते 'न्' आवतो होवाथी 'पादान्ते लघु गुरु बने छे' ए नियमनुं गुरुत्व 'स' सुधी न पहोंचे अने 'मन्दः कवि' अने 'यशःप्रार्थी' ए प्रसंगोमां 'द' पछीना जिह्वामूलीय अने 'श' पछीना उपध्मानीयनो पछीना व्यंजन साथे संयोग न थतो होवाथी संयुक्त व्यंजननुं गुरुत्व 'द' अने 'श' सुधी न पहोंचे. माटे 'कह्युं छे के'

पण होठथी फूंक मारता होईए तेना जेवो बोलाय छे माटे तेमने अनुक्रमे 'जिह्वामूलीय' अने 'उपध्मानीय' कहेला छे. विसर्गना आ स्वरूपने प्राकृत भाषाना वाग्व्यापारथी पण समर्थन मळे छे. संस्कृत 'दुःख' शब्द प्राकृतमां 'दुक्ख' बने छे. अहीं विसर्ग जिह्वामूलथी आगळ जई पोते कंठ्य ज बनी जाय छे.

एम कहीने नारायण पण हलायुधनी ज आर्या उतारे छे. अर्थात् नारायणना समयमां हलायुधनी आर्या प्रमाणभूत परंपरामां पडी गई हती.

नारायणे उपर 'तनुवाग्विभवोऽपि सन्।' नुं दृष्टान्त आपी कह्युं छे के अहीं अंत्य 'सन्' व्यंजनांत छे माटे गुरु छे. ए मत यथार्थ छे. पण तेने माटे तेणे कहेली युक्ति मने अयुक्त जणाय छे. ए कहे छे के 'सन्'ने गुरु न गणो तो पादान्ते गुरु करवाना नियमथी एने गुरु नहीं करी शको, कारण के 'स' नहीं पण 'न्' पादान्ते छे. हवे लघुत्व के गुरुत्व ए स्वरने ज होय छे, व्यंजनने होतुं नथी, अने अक्षरसंख्या, व्यंजन साथे के व्यंजन विना आवेला स्वरोनी ज गणवानी होय छे. अनुष्टुप आठ अक्षरनो होय छे, ते रीते गणतां उपरनी पंक्तिमां आठमो अक्षर 'सन्' छे, 'न्' नथी. 'न्' ए अक्षर ज नथी. एटले 'सन्' ज अंत्य छे, अने ते पोते ज व्यंजनांत होई गुरु छे. 'न्'ने अंत्य गणवो ए अशास्त्रीय छे. अने नारायणनी अहीं एक बीजी पण सरतचूक थई छे. मारा मत प्रमाणे अनुष्टुपनो अंत्य अक्षर गुरु जोईए, पण 'वृत्तरत्नाकर'मां क्यांय पण, तेम तेना उपरनी टीकामां नारायणे क्यांय पण अनुष्टुपनो अंत्य अक्षर गुरु जोईए एम कह्युं नथी. परंपराथी ए अक्षर लघु के गुरु गमे ते होई शके एम मनातुं आव्युं छे, अने नारायणे पण एम ज मानेलुं छे. पण नारायणनी मूळ वात साची छे के 'सन्' गुरु छे. अने युक्तपरना नियममां व्यंजनांतनो ते समावेश करे छे ते पण तत्त्वतः खरुं छे.

हवे उच्चारण संबंधी एक प्रश्न अहीं ज विचारता जईए, अलबत गुजरातमां अत्यारे जे रीते उच्चारण थाय छे ए रीते.

आपणे जोयुं के चरणान्ते लघु आवे तो ते पण जरूर होय तो गुरु थाय. संस्कृत वृत्तोमां चरणान्ते आवतो गुरु प्लुत होय छे. त्यां उच्चारनुं विलंबन थाय छे. हवे चरणान्ते ह्रस्व इ के उ आवतो होय त्यारे उच्चारमां तेनुं प्लुतत्व साधवुं सरल छे. 'इ' के 'उ' ज लंबाववाथी दीर्घ अने गुरु बने छे, अने ए ज उच्चारण वधारे लंबाववाथी प्लुत बने छे. पण बीजा केटलाक उच्चारोमां शुं थाय छे ते विचारवा जेवुं छे. दाखला तरीके छेल्ले अनुस्वार आवे त्यां उच्चार केवा प्रकारनो थाय छे? आपणे नीचेनी पंक्ति लईए :

को लम्बयेदाहरणाय हस्तम्॥

— रघुवंश ६, ७५

अहीं अन्त्य 'अ'नं लघु उच्चारण थईने पछी तरत ज श्वास नासिकामांथी ज नीकळतो लंबावाय छे. आपणे 'वंदे मातरम्'नो छेल्लो अक्षर 'रम्' जेम नाकमांथी ज श्वास काढीने लंबावीए छीए तेम ज अहीं 'हस्तम्' नो छेल्लो अक्षर लंबावाय छे. 'इ' ह्रस्व पण ए ज प्रमाणे लंबावाय छे. जेम के

मृत्पात्रशेषामकरोद् विभूतिम् ।।

— रघुवंश ६, ७६

अहीं पण 'इ' ह्रस्व बोलाई पछी नासिक्यविधानथी प्रलंब स्वर नीकळे छे. 'अम्'नो नासिकामांथी नीकळतो स्वर अने 'इम्'नो नासिकामांथी नीकळतो स्वर एक ज छे. कारण के 'अ' अने 'इ' बोलाई रह्या पछी ज आ नासिक्य-विधान चालु थाय छे. अने ते उच्चारणमां बन्नेमां एक ज छे. दीर्घ स्वर पछी आवतुं अनुस्वार बे रीते बोलाय छे. तेमांनो पहेलो रीत ते उपरनी ज. जेम के :

निद्रां विहारार्धपथे गतानाम् ।

— रघुवंश, ६, ७५

अहीं 'ना'ने दीर्घ बोलीने पछी नासिकामांथी स्वर काढी उच्चार लंबावाय छे. अने त्यां पण ए नासिकामांथी उच्चारातो ध्वनि, 'रम्'मां थतो हतो तेवो ज थाय छे. पण अहीं बीजी पद्धतिए पण उच्चारण थाय छे. 'ना'-ने ज पूरतो लंबावी प्लुत करीने पछी अनुस्वारथी उच्चारनो उपसंहार पण थाय छे. आनी उपर आपेला दृष्टान्तमां 'विभूतिम्'मां पण 'ति'ने ज प्लुत करीए तो करी शकीए छीए, अने त्यारे 'इ' प्लुत थई उच्चारनो उपसंहार अनुस्वारथी थाय.

सविसर्ग स्वर प्लुत बोलाय त्यारे शुं थाय छे? आपणे नीचेनो दाखलो जोईए :

गंडस्थली: प्रोषितपत्रलेखा: ।।

— रघुवंश, ६, ७२

अहीं 'आ'नो उच्चार दीर्घ अने प्लुत थई पछी तेने विसर्गनो थडकारो लागे छे. उपर आवी गयेला दाखलामां 'गतानाम्'ना अनुस्वारनी पेठे ज. 'ई:'नुं पण एम ज थाय. तेने माटे दाखलो शोधीने मूकवानी हुं जरूर जोतो नथी. पण 'अ:'मां शुं थाय? नीचेनो दाखलो लईए :

कुलप्रदीपो नृपतिर्दिलीप: ।

— रघुवंश, ६, ७४

अहीं पहेला 'अ'ने विसर्गनो थडकारो लागे छे अने पछी 'अ' आगळ लंबाय छे. ए रीते ए प्लुत थाय छे. 'इः' अने 'उः'नुं पण एम ज थाय. अने 'उः'नो दाखलो सुलभ छे तेथी मूकुं छुंः

श्रवणकटु नृपाणामेकवाक्यं विवव्रुः ॥

—रघुवंश, ६, ८५

अहीं 'उ'ने विसर्गनो थडकारो पहेलो लागे छे, अने पछी 'उ' लंबाईने प्लुति साधे छे.

आपणे आ उच्चारणनी चर्चा करतां प्रारंभमां कह्युं के अंत्य 'इ' अने 'उ' मात्र प्रलंबनथी प्लुत बने, पण चरणान्ते 'अ' आवे त्यां शुं करवुं? जेम के

पुरप्रवेशाभिमुखो बभूव॥

—रघुवंश, ७, १

अंत्य 'अ'ने ज लंबावीने तेने दीर्घ अने प्लुत करी शकाय छे, ए देखीतुं छे. पण केटलाक विद्वानो अहीं आवता 'अ'नो उच्चार 'आ' करवो एने शास्त्रीय पद्धति गणे छे. ऋग्वेदना पठनमां ज्यां 'अ'ने प्लुत करवानो आवे छे त्यां ऋग्वेदपाठीओ 'आ' उच्चारीने तेने प्लुत करे छे. अने घणा संस्कृत पंडितो ए प्रमाणे संस्कृत छंदोमां पण 'अ'नो 'आ' करी प्लुत करे छे. उपरनी पंक्तिमां 'बभूव'ने तेओ 'बभूवा' करी प्लुत करे. मने पोताने आ पद्धति संस्कृत अने तद्भवभाषाओ माटे साची नथी लागती. व्याकरणमां आने 'अ'नुं दीर्घ रूप कह्युं छे ए खरुं छे, पण उच्चार करतां जणाय छे के बन्ने स्वतंत्र स्वरो छे. 'इ' ह्रस्वना विलंबथी जेम 'ई' दीर्घ थाय छे तेम 'अ'ना विलम्बनथी 'आ' थतो नथी. 'आ' ए 'अ'नुं वृद्धिथी साधेलुं रूप छे. उच्चारण प्रमाणे 'अ'ने गमे तेटली मात्रानो प्लुत करी शकाय छे. मात्रामेळमां तो केवळ 'अ'ने ज प्लुत करवानी पद्धति केटलाक जातिछन्दोमां होय छे. अने गुजरातीमां तो 'अ'नो 'आ' शोभतो ज नथी.

'गाळी नाखे हलावी, रसिक हृदयने, वृत्तिथी दाब जाय'

—'वसन्तविजय', पूर्वालाप

अहीं 'जाय'ने बदले 'जाया' एवो उच्चार जरा पण शोभतो नथी. एटले 'अ'ने ज प्लुत करवानुं स्वीकारवुं जोईए.

हजी एक प्रश्न रहे छे. वृत्तने अंते व्यंजनांत 'अ' आवे त्यां उच्चारमां प्लुति केवी रीते करवी?

प्रत्यक्षं ते निखिलमचिराद् भ्रातरुक्तं मया यत्।

—मेघदूत उ. मे. ३१

अहीं 'यत्'नो प्लुत उच्चार केवी रीते करवो? आगळ आपेला दृष्टान्तमां 'हस्तम्'मां 'अ' पछी तरत अनुस्वार बोली पछी नासिकामांथी ज श्वास काढी स्वर लंबावी शकातो हतो तेम अहीं 'य'ने ह्रस्व बोली तेनी पछी तरत 'त्' बोली नाखीए तो ते पछी स्वरने लंबावी शकातो नथी. माटे 'अ'ने ज प्लुत करवो पडे. एटले के 'य'ना 'अ'ने पूरतो लंबावी उच्चारण-नो उपसंहार 'त्'थी करवो पडे 'य. . . त्' आ प्रमाणे. अर्थात् अनुस्वार अने विसर्ग ज एवा छे जे उच्चारी लीधा पछी पण स्वरने आगळ लंबावी शकाय छे. बीजा व्यंजनोमां एम थई शकतुं नथी. आवा स्थाने 'य'ना 'अ'ने प्लुत न करवो होय तोपण 'यत्' नुं उच्चारण गुरु तो छे ज अने पछीनो विराम लंबावी श्लोकार्धनो अंत व्यक्त करी शकाय.

परिशिष्ट ३

अपवाद : शैथिल्य : छूट

आपणे आ प्रकरणमां जोई गया के संस्कृतमां संयोगपरत्वथी अने अनुस्वारथी स्वर गुरु थतो. गुजरातीमां निर्बल संयोगने लीधे आगळनो लघु गुरु नथी थतो, अने गुजरातीमां अनुस्वार पण कोमळ होय त्यां अनुस्वारने लीधे स्वर गुरु नथी बनतो. वळी गुजरातीमां तो छन्दनी खातर गमे ते लघुने गुरु अने गुरुने लघु करवानी छूट लेवाय छे. आ अपवादो, शैथिल्य अने छूट पिंगलमां पण स्वीकारायां छे. आमांना घणाखरा अपवादो तो प्राकृत अने तेमांथी नीकळती भाषाना उच्चारणनी खासियतना छे. पण गमे ते लघुने गुरु अने गुरुने लघु करी शकाय, ए, अने एना जेवी बीजी छूटो तो स्पष्ट रीते छूट ज छे. ए छूटो प्राकृत अने तज्जन्य भाषाओमां होय ए समजी शकाय छे. पण ए सर्व संस्कृतमां पण लई जवामां आवी छे, ए भाषाना आघात-प्रत्याघात जोवा जेवा छे माटे तेने बने तेटला व्यवस्थित करी नीचे मूकवानो प्रयत्न करुं छुं.

प्रथम, निरूपणनी सगवड खातर, पादान्त गुरुनो नियम लउं छुं. गया परिशिष्टमां आपणे जोयुं के एने माटे पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'मां 'गन्ते' एवुं सूत्र छे. एनो स्पष्ट अर्थ एवो छे के पादने अन्ते आवतो लघु गुरु थाय.

आनी सामे एवी दलील कराय के समानी (गाल गाल गाल गाल) जेवा छन्दोमां पादान्ते लघु ज कहेलो छे, त्यां आ सूत्र लागु कराय तो छन्दनुं स्वरूप बगडे. तेनो रदियो ए छे के 'गन्ते' सूत्र सामान्य छे, अने समानी वगेरेना निरूपणनां सूत्रो अपवाद छे — विशेष रूपनां छे. अने सामान्य सूत्रने हमेशां विशेष सूत्रनो बाध लागे छे. एटले 'गन्ते।' सूत्रथी समानी जेवा छन्दोने बाध थतो नथी.[1] आपणे आ विवाद साथे संबंध नथी. पण आ सूत्रना अर्थ विशे आपणने शंका रहेती नथी, के अहीं पादान्त लघु गुरु थई शके एटलो ज आ सूत्रनो अर्थ छे. पण पछीनां पिंगलो आ सूत्रने वधारे छूटवाळुं करे छे. पिंगलमां बहु ज प्रतिष्ठावाळो ग्रन्थ 'वृत्तरत्नाकर', पादान्त सूत्रने जुदी रीते आपे छे. आपणे ए सूत्र जरा जुदा संदर्भमां आगळ जोई गया छीए.

सानुस्वारो विसर्गान्तो दीर्घो युक्तपरश्च यः।
वा पादान्ते त्वसौ ग्वक्रो ज्ञेयोऽन्यो मात्रिको लृजुः॥
वृ. र., चौ., १, ९

अहीं 'वा पादान्ते' कहीने विकल्प मूक्यो छे. आनो अर्थ नारायण नीचे प्रमाणे करे छे: "पादान्ते श्लोकचरणान्ते वर्तमानो लघुर्गुरुर्वा भवति। लघुत्वेऽपेक्षिते लघुकार्यं, गुरावपेक्षिते गुरुकार्यं करोतीत्यर्थः।" "पादान्ते एटले श्लोकना चरणान्ते आवतो वर्ण लघु अथवा गुरु थाय. ज्यां लघुत्वनी अपेक्षा होय त्यां लघुनुं कार्य करे, गुरुनी अपेक्षा होय त्यां गुरुनुं कार्य करे." अहीं 'वृत्तरत्नाकर' हजी 'गन्ते' सूत्र सुधी ज गयो छे. अर्थात् आ सूत्रनो एटलो ज अर्थ थाय छे के पादने अंते आवेलो लघु, जो त्यां लघुनी ज जरूर होय तो लघु ज रहे, लघुनुं ज काम करे, पण जो त्यां गुरुनी जरूर होय तो गुरुनुं काम पण करी शके. भाष्यकार नारायण आना दृष्टान्तमां समानीने बदले उद्गतानुं दृष्टान्त आपे छे:

---

१. "ननु 'ग्लिति समानी' (पि. सू. ५,७) इत्यादीनां पादान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य गुरुत्वं न दृश्यते। नैष दोषः। सर्वत्र पादान्ते वर्तमानस्य ह्रस्वस्य गुरुत्वमुत्सर्गसिद्धम्। तच्च लकारश्रुत्यापवादेन बाध्यते। यथा — 'ग्लिति समानी' (पि. सू. ५, ७) 'गीत्यार्या लः' (पि. सू. ४-४८) इत्यादौ सामान्यस्य विशेषेण बाधः कस्य न संमतः. तस्मात् कुचोद्यमेतत्।" मारी निर्णयसागरनी १९२७ नी आवृत्तिनां पृ. ४ उपर 'सामान्येन विशेषस्य बाधः' एम छापेलुं छे ते देखीती रीते भूल होवाथी अहीं उपर प्रमाणे सुधारी लीधुं छे.

अथ वासवस्य वचनेन
रुचिरवदनस्त्रिलोचनम् ॥ वगेरे.

आ उद्गता वृत्त छे. तेमां पहेला पादने अन्ते छन्दमां लघु आवश्यक छे, अने ते प्रमाणे अहीं लघु छे, ते लघुनुं ज कार्य करशे. पादान्ते होवाथी ए गुरुनुं कार्य नहीं करे. पण

तस्याः खुरन्यासपवित्रपांसु-
मपांसुलानां धुरिकीर्तनीया ॥

एमां प्रथम चरणने अन्ते ह्रस्व छे, त्यां गुरुनी अपेक्षा छे माटे ते गुरुनुं कार्य करशे. आ प्रमाणे आ विकल्प छे पण ते व्यवस्थित छे. नारायण अने हलायुध अहीं एक ज वात करे छे. हलायुध जे वस्तु सामान्य विशेषनी दलीलथी कहे छे ते ज वात नारायण व्यवस्थित विकल्पथी कहे छे. अने नारायण आ पछी हलायुधनुं ज उपर आपेलुं अवतरण उतारीने तेने पण प्रमाण गणे छे. मारे मुख्य कहेवानुं ए छे के पादान्त नियमनो बन्ने एटलो ज अर्थ करे छे के पादने अन्ते लघु होय, तो, ते गुरुनी आवश्यकता होय तो गुरुनुं काम करी शके छे. बेमांथी कोईनो — खास करीने अहीं ध्यान दोरीने ए कहेवानुं छे के नारायणनो — अभिप्राय गुरु पण लघु थई शके एवो नथी. तेने माटे 'वृत्तरत्नाकर' आ पछी जुदो ज नियम मूके छे :

पादादाविह वर्णस्य संयोगः क्रमसंज्ञकः।
पुरः स्थितेन तेन स्याल्लघुताऽपि क्वचिद्गुरोः ॥ १० ॥
वृ. र. चौ. पृ. १७

'पादना आदिमां वर्णोनो क्रम नामनो संयोग होय, तो तेनी पहेलां आवतो गुरु कोई जगाए लघु थाय'. क्रम पारिभाषिक शब्द छे, अने तेनो अर्थ अहीं संयुक्त व्यंजन एवो करेलो छे. नारायण गया श्लोकमां आपेला पादान्तनियमथी आने भिन्न समजाववा कहे छे: "वा पादान्ते इत्यत्र पादान्ते लघोर्गुरुत्वं विकल्पितम्। इह तु गुरोर्लघुत्वमिति न पौनरुक्त्यमिति भावो वक्ष्यते।" आगळ आवी गयेला 'वा पादान्ते' सूत्रथी लघुना गुरुत्वनो विकल्प कह्यो, अहीं गुरुना लघुत्वनी वात कही तेथी पुनरुक्तिदोष नथी." आ उपरथी निःशंक जणाशे के 'वा पादान्ते'ना सूत्रथी मात्र लघु ज गुरु थई शकतो हतो अने आ ११ मा श्लोकथी हवे गुरु लघु थई शके छे. आपणे हजी 'रत्नाकर'मां ज आगळ चालीए:

गुरोर्लघुतायामुदाहरणं सप्रतिज्ञमाह। इदमस्योदाहरणम् —

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि।
अल्पव्ययेन सुंदरि! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति ॥ ११ ॥

ए ध्यानमां राखवानुं छे के आ उदाहरण भाष्यकार आपतो नथी पण मूळ 'रत्नाकर' ज आपे छे. आ श्लोक आर्यानो छे. आर्यामां बार मात्राए यति आवे छे. ते प्रमाणे 'अल्पव्ययेन सुन्दरि!' त्यां यति आवे छे. एटलामां चार चतुष्कलो आववां जोईए. ते प्रमाणे 'अल्प', 'व्ययेन', 'सुन्दरि', एम चतुष्कलो थाय. पण 'सुन्दरि' शब्द पछी 'ग्राम्य' शब्द आवे छे. तेना आदिमां 'ग्र' संयुक्तव्यंजनो छे. तेने लीधे आगला चतुष्कलनो 'रि' गुरु थाय. 'रि' ने गुरु करीए तो 'सुन्दरि' शब्दनी पांच मात्रा थई जाय, अने छंद खोटो पडे. माटे अहीं एवो नियम लगाडयो छे के 'ग्राम्य' शब्दथी नवुं पाद शरु थाय छे, अने नवा पादना प्रारंभमां जो क्रम — संयुक्त व्यंजनो आवे तो तेनी आगळना गुरुने पण लघु करी शकाय. आ नियमथी 'सुन्दरि'नो 'रि' लघु थाय — रहे, अने तेथी छन्दमां दोष न आवे. आ रीते पादने अंते आवता गुरुनी लघुता करी, पण ते एक ज प्रसंगे, के पछीना पादना प्रारंभमां संयुक्त व्यंजनो होय तो ज. अभिप्राय एवो जणाय छे के जुदा चरणमां आवेला संयोगनो थडकारो आगला चरण सुधी जई न शके अने तेथी ए लघु ते लघु ज रहे. क्रम सिवाय त्रीजा चतुष्कलमां गुरु आवी गयो होय तो? — तेने माटे अहीं नियम नथी.

आ बचाव अथवा अपवादमां एक मोटो बांधो आवे छे. आर्यामां बार मात्राए पाद थतुं नथी. एम गणतां आर्यानां चार पाद थाय, ज्यारे आर्या बे ज पादनी गणवी ए प्रामाणिक छे. 'रत्नाकर' पोते आर्याने बे पादनी गणे छे (वृ. र., २,१) छतां नारायण भट्ट 'श्रुतबोधे' चार पाद गण्यां छे एना प्रमाणथी उपरना नियमनो बचाव करे छे. पण 'वृत्तरत्नाकर'नुं पोतानुं लक्षण पोताने बाध करतुं होय, अने टीकाकारने बहारनुं प्रमाण लाववुं पडे, ते ज बतावे छे के तंत्रव्यवस्था खोटी छे.

आपणे पादान्ते गुरुनो नियम जोयो. 'रत्नाकर'मां एनो अर्थ एटलो ज थाय छे के पादान्ते लघु होय तोपण छन्दनी आवश्यकताथी ते गुरु थई शके छे. 'रत्नाकर'ने पगले जती 'छन्दोमंजरी' तेनाथी एक डगलुं आगळ जईने पादान्त लघुनुं गुरुत्व अने गुरुनुं लघुत्व बन्नेनो एकसाथे विकल्प करे छे. गुरुनी व्याख्या ते नीचे प्रमाणे करे छे: —

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरुर्भवेत्।
वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पादान्तगोऽपि वा॥

—छं. मं., क., १, ११

पादान्तगोऽपि वा' उपर वृत्ति छे: 'अत्र पादान्तगो लघुर्गुरुर्भवेद् वा। यथा—

तरुणं सर्षपशाकं नवौदनं पिच्छिलानि च दधीनि।
अल्पव्ययेन सुन्दरि! ग्राम्यजनो मिष्टमश्नाति॥

अत्र ग्राम्यशब्दे परे सुन्दरीत्यस्य विकल्पेन लघुत्वम्। तथा भट्टिः—

अथ लुलितपतत्रिमालं लुणासनबाणकेसरतमालम्।
स वनं विविक्तमालं सीतां द्रष्टुं जगामालम्॥

(१०, १४ श्लो०)

अत्र प्रथमपादान्तगुरोर्लघुत्वम्।'

वृत्ति आ प्रमाणे छे: 'अहीं चरणने अंते आवेलो वर्ण लघु अथवा गुरु थाय. जेम के तरुणं. अहीं ग्राम्य शब्द पछी आवे छे माटे सुन्दरि शब्द विकल्पना नियमथी लघु थाय छे. तेम ज भट्टिनुं अथ. अहीं प्रथम पादने अंते आवेलो गुरु लघु थाय छे.'

अहीं 'मंजरी'कार पादान्त गुरुना विकल्पनो बन्ने रीते ऊलटोसूलटो अर्थ करे छे. पादान्ते आवेलो लघु तो विकल्पे गुरु थाय, पण ए ज रीते पादान्ते आवेलो गुरु पण विकल्पे लघु थाय. अने तेना दृष्टान्त तरीके बे आर्या आपे छे, जेमांनी पहेली आपणे 'रत्नाकर'मां पण दृष्टान्त तरीके जोई. 'रत्नाकर' अने 'मंजरी' बन्ने पासे प्रश्न एक ज छे के 'सुन्दरि' मां छन्दनी दृष्टिए 'रि' ह्रस्व ज जोईए, अने तेनी पछी संयोग होवाथी ए गुरु थई जाय छे, ते गुरुत्व कई रीते टाळवुं. 'रत्नाकर', आपणे जोई गया के, एने माटे एवो नियम बतावे छे के पादान्त गुरु थवामां पछीना पादना प्रथम संयुक्त व्यंजनो जवाबदार होय तो त्यां गुरु विकल्पे लघु थाय. 'मंजरी'कार कहे छे के पादान्ते लघु गुरु थाय छे ते साथे ए विकल्पना बळे ज गुरु पण लघु थई शके. ते तरुणं' वाळी आर्या उपरांत भट्टिनी अथ'वाळी आर्या आपे छे. एमां पहेला पादमां बार मात्रा करवा छेल्लो गुरु लघु करवो पडशे. बार मात्राना आ खंडनां चतुष्कलो आ प्रमाणे पडे छे: 'अथलुलि', 'तपत', 'त्रिमालं'. एटले 'लं' ने लघु करवो पडे. पण उपर प्रमाणे 'त्रिमालं' ना छेल्ला अक्षरने लघु करवा सामे घणा वांधा छे. पण एक वांधो तो तरत ज देखाय एवो छे. आ श्लोकमां एक

शब्दालंकार बहु स्पष्ट रीते तरी आवे छे. ते ए छे के आर्याना चारेय यतिखंडोमां अंते कविए 'मालं' अक्षरो मूकेला छे. पहेला यतिखंड सिवायना त्रणेय यतिखंडोमां 'मालं' बन्ने गुरु छे. हवे जो पहेला यतिखंडमां 'मालं'मां बीजो लघु करीए तो ए आखो शब्दालंकार खंडित थाय.

पण ए सिवाय आर्याना बंधने लगता पण महत्त्वना वांधा छे. तरुणं" आर्याना संबंधमां में कह्युं हतुं के एटलाने आर्यानुं पद गणवुं ए अप्रामाणिक छे, ते अहीं पण लागु पडे छे. 'मंजरी'कार पण आर्याने बे ज दलनी गणे छे, (छं. मं. ६.१) अने एम गणतां बार मात्राना खंडने पाद न कही शकाय. पण अहीं एक बीजो वांधो पण आवे छे. 'लं'ने लघु गणतां ए चतुष्कल लगाल एटले ज-गण बने छे, जे आर्यामां त्रीजे स्थाने निषिद्ध छे. (एजन)

आ जगण संबंधी बाब, 'छन्दोमंजरी'ना विद्वान संपादक अने व्याख्याकार श्री रामचनदेव शर्माए चर्चेलो छे. हुं ते चर्चा ज नीचे उतारुं छुं: "एतच्छ्लोक-व्याख्यानावसरे भरतोऽप्यमुमेवार्थमधिकृत्य– यद्यपि छन्दःशास्त्रे सानुस्वारस्य-गुरुत्वमनुशिष्टं तथाऽपि 'तथा पादान्तगोऽपि वा' इति वचनात् तस्य लघुत्वात् प्रथमपादे द्वादशमात्रा भवन्ति, किन्तु 'भवति नेह विषमे जः' (छं. मं. रा., ६.१) इत्यार्यायां प्रायिकं, तृतीयगणस्यात्र मध्यगुरुत्वात्। 'सत्तगणा दीहंता जो णलहू छट्ठ णेहु जो विसमे'[1] (प्रा. पैं. B. मात्रावृ० सू० ५६) इत्यत्र नञः प्रशंसापरत्वमिति टीकाकृतोक्तम्, 'जा पढम तीअ पंचम सत्तम ठाणे ण होइ गुरुमज्झा। गुब्विणिए गुणरहिआ गाहा दोसं पआसेइ'। 'इत्यनेना-प्राशस्त्यस्योक्तत्वात्, न तु विषमस्य जगणे लक्षणबहिर्भूता गाथा भवतीति। वस्तुतः पत्रिमालमिति पाठः मध्ये तकारपाठो लेखकप्रमादात् इत्याहु। इति॥"

भावार्थ: 'आ श्लोकना व्याख्यानने प्रसंगे भरत (भट्टि काव्यनो टीकाकार) पण आ ज अर्थने विषय करीने लखे छे:—"जोके छन्दःशास्त्रमां सानुस्वार स्वरने गुरु गणेलो छे, तो पण 'तथा पादान्तगोऽपि वा' ('छन्दोमंजरी'नुं आगळ आवी गयेलुं ज अवतरण. अर्थ:पादने अंते आवेलो स्वर विकल्पे गुरु थाय) एवा वचनने लीधे ते लघु थाय छे, अने तेथी पहेला पादमां बार मात्रा थाय छे. पण 'भवति नेह विषमे जः (छन्दोमंजरी, ६,१.; अर्थ: आर्यामां विषम(एकी) स्थाने जगण आवतो नथी) ते, आर्यामां, घणे भागे एवुं थतुं

१. बन्ने प्राकृत अवतरणो 'प्राकृत पैंगल' प्रमाणे सुधारीने मूक्यां छे. बीजुं अवतरण 'प्राकृत पैंगल'नो ६५ मो श्लोक छे. मंजरीना मूळ अवतरणमां घणा पाठदोषो आवी गयेला छे.

नथी एवा अर्थमां लेवुं. कारण के अहीं त्रीजो गण मध्यगुरु एटले जगण छे. सत्तगणा॰ वगेरे (अर्थ: अंते दीर्घवाळा सात चतुष्कल संधिओ, तेमां छठ्ठो जगण अथवा चतुर्लघु, अने विषमस्थाने जगण नहीं) एमां 'नहीं'नो नकार प्रशंसाना अर्थमां समजवो[२] एम टीकाकारे कहेलुं छे, केम जे जा पढम॰ वगेरे (अर्थ: जेमां पहेला त्रीजा पांचमा स्थाने जगण होय ते गुणरहित गुर्विणी [बे अर्थ : (१) गर्भिणी (२) गुरुवाळी — जगणना अंतरमां गुरु छे माटे.]नी पेठे गाथानो दोष प्रकाशे छे.) एम कहीने प्रशस्यता कहेली छे, नहीं के विषमस्थाने जगणवाळो गाथा लक्षण बहारनी बनी जाय छे, एम. खरी रीते तो 'पत्रिमालं' एवो पाठ छे. लेखकना प्रमादथी तकार वधी गयेलो छे', एम भरते कहेलुं छे.

अहीं भरत पण 'त्रिमालं'मां अंत्य 'लं'ने लघु गणवाथी विषमस्थाने जगण आवे छे ए वांधो दर्शावे छे. अने एवो बचाव करे छे के जगणनिषेध ए प्रशस्यता अर्थे समजवो. विषमस्थाने जगण आववाथी गाथा लक्षणबहार जती नथी. पण बधुं कही रह्या पछी छेवटे तो पाठदोष बतावे छे: 'पतत्रि'-ने बदले 'पत्रि', बन्नेनो एक ज अर्थ थाय छे — पक्षी. पहेलाने बदले बीजो लेतां गुरुने लघु करवानी के जगणनो बचाव करवानी जरूर रहेती नथी. सद्‌गत के. ह. ध्रुवे पण आ पाठने स्वीकार्यो छे. (प. ऐ. आ., पृ० ५६) आ पाठ स्वीकारतां पादान्ते गुरुना विकल्पनी जरूर रहेती नथी.

पण आ पाठ हुं स्वीकारी शकतो नथी. 'भट्टिकाव्य'नां पानां उथलावी जोतां जणाय छे के ते वारंवार 'पतत्रि' शब्द वापरे छे. जेम के, ४,४४; ५,८०; ५,१०७; अने ज्यां टूंको शब्द वापरवो होय त्यां 'पक्षि' शब्द वापरे छे. जेम के २, २५ मां 'पक्षिगणैः', १, २७ मां 'पक्षिणः', ५,९६ मां 'पक्षीन्द्र'. 'पत्रि' अने 'पक्षि' बन्नेनुं अक्षरमाप एकसरखुं छे. तो आ स्थाने ते अनेक वार वापरेलो 'पक्षि' शब्द न वापरतां तेनी अपेक्षाए विरल-प्रयुक्त 'पत्रि' शब्द वापरे ए मने संभवित लागतुं नथी. भरते 'पत्रि' पाठान्तर छन्दना दोषमांथी मुक्त थवा योजेलुं होय एवुं जणाय छे, अने माटे ज ते छन्दनी चर्चा करीने योजे छे. पण ज्यां सुधी एवा पाठवाळी कोई प्रत मळे नहीं त्यां सुधी आ पाठांतर तर्कथी सुधारी शकाय नहीं. भट्टि उपरनी प्राचीनतम टीका 'जयमंगला' 'पतत्रि' पाठ स्वीकारे छे. अलबत 'जयमंगला' क्यांई छन्दना स्वरूपनी चर्चा करती नथी. पण एवी चर्चा करनार मल्लिनाथ पण 'पतत्रि' पाठ ज आपे छे, जोके आ

२. अर्थात् विषमस्थाने जगण न आवे ए रचना प्रशस्य गणाय.

श्लोकमां ए छन्दोदोषनी चर्चा करतो नथी. (जुओ **K. P. Trivedi** संपादित 'भट्टिकाव्य.' १०,१४. संपादके पण आ पाठनी चर्चा करी नथी.)

हुं मानुं छुं के आने भट्टिना पाठनुं शैथिल्य गणवुं जोईए. हुं एम मानवा ललचाउं छुं तेनुं कारण ए छे के अन्यत्र एवो दोष मने भट्टिमां जणायो छे. भट्टिकाव्यना सर्ग ११ नो ४२ मो श्लोक नीचे प्रमाणे छे:

निकृत्तमत्तद्विपकुंभमांसैः
संपृक्तमुक्तैर्हरयोऽग्रपादैः।
आनिन्यिरे श्रेणीकृतास्तथाऽन्यैः
परस्परं वालविसन्निबद्धाः॥

'भट्टिकाव्य', ११, ४२

अहीं त्रीजी पंक्तिमां 'श्रेणी'नो 'णी' दीर्घ छे, व्याकरण दृष्टिए ए च्वि रूप छे एटले त्यां दीर्घ ज जोईए पण छन्दनी दृष्टिए त्यां लघुनी जरूर छे. जयमंगला अहीं 'णी' दीर्घ ज आपे छे. दरेक स्थळे छन्दने ओळखावनार मल्लिनाथ पण अहीं 'णी' दीर्घ आपे छे, जोके छन्दोदोषनो उल्लेख टीकामां करतो नथी. प्रसिद्ध संपादक कमळाशंकर जेओ व्याकरणशास्त्री हता ते पण दीर्घ पाठ ज आपे छे. निर्णयसागर आवृत्तिना संपादक वि. ना. शास्त्री 'णि'नो ह्रस्व पाठ आपी नीचे टीप लखे छे: "अत्र छन्दोभंगपरिहारार्थं 'श्रेणिकृताः' इत्येव युक्तं प्रतिभाति। '२।२०। च्वौ च ७।४।२६' इति शास्त्रापेक्षया 'अपि माषं मषं कुर्याच्छन्दोभंगं न कारयेत्' इति छन्दःशास्त्रस्य प्रबलत्वात्।" अर्थात् शब्द तो 'श्रेणीकृत' ज जोईए पण छन्दनी खातर 'णि' ह्रस्व करवो जोईए. आम कहेवुं ए तो छन्दोदोष उपर महोर मारवा जेवुं छे. आ बधा उपरथी स्पष्ट थाय छे के 'णी' दीर्घ ज जोईए जोके तेथी छन्दोभंग थाय छे. पण आ प्रसंगे पण भरत 'णि' ह्रस्व पाठ आपे छे. कलकत्तामां १८७१ मां यदुनाथ तर्करत्नसंपादित भट्टिकाव्यमां भरत-मल्लिकनी मुग्धबोधिनी टीकामां 'श्रेणि' पाठ आपी टीकाकार कहे छे: अश्रेणयः श्रेणयः कृता अभिधानं नियामकं इति उक्तेः च्व्यर्थे श्रेण्यादेः कृतादिना समासः इति बोध्यम्। भरत कहे छे के अहीं 'श्रेणि' अने कृत शब्दनो समास च्विना अर्थमां थयो छे पण 'श्रेणि' शब्द वपराई गयो तो एने ज नियामक मानवो. एटले आ भरत घणो विद्वान होवा छतां पाठनी बाबतमां मनस्वी रीते छूट लेनारो जणाय छे, अने तेथी तेणे सूचवेला पाठो स्वीकारी शकाय नहीं एम हुं मानुं छुं.

भट्टिनो एक त्रीजो पण शिथिल प्रयोग मारा जोवामां आव्यो छे. ते नीचे उतारुं छुं:

मृषाऽसि त्वं हविर्याजी राघव! छद्मतापसः।
अन्यव्यासक्तघातित्वाद् ब्रह्मघ्नां पापसंमितः॥

एजन, ६–१२६

अहीं बीजुं चरण 'राघव' शब्दथी शरू थाय छे. अनुष्टुपमां कोई चरणनो बीजो अने त्रीजो बन्ने अक्षरो ह्रस्व न होई शके, ते अहीं छे, ए दोष छे. अलबत अनुष्टुपना स्वरूप संबंधी घणो गोटाळो छे, पण ए छन्दनी चर्चामां आपणे जोईशुं के आ नियम आवश्यक छे. आ बधा उपरथी हुं एम ज मानुं छुं के त्यां 'पतत्रि' शब्द ज हतो अने ते छन्दोदोष ज छे, अने उच्चार शैथिल्यने लीधे थवा पाम्यो छे.

आ आखी चर्चा उपरथी स्पष्ट थाय छे के पादान्त गुरुत्वनो मूळ नियम मात्र एटलो ज हतो के पादान्ते लघु आवतो होय, पण जो त्यां छन्दनी दृष्टिए गुरुनी अपेक्षा होय तो ए लघु गुरुनुं काम करी शके. आ तद्दन स्वाभाविक छे, कारण के संस्कृत वृत्तोमां पादान्ते विलंबन होय छे अने तेथी विलंबनथी लघु एनी मेळे गुरु थई जाय छे. पिंगलना छन्दःशास्त्र अने तेना टीकाकारनो आ ज नियम हतो. 'वृत्तरत्नाकर' उपरनो नियम स्वीकारे छे. पण तेनी पासे तरुणं° ए आर्या आवी, अने त्रीजा चतुष्कलना 'सुन्दरि'ना अंत्य 'रि'ने लघु राखवानी तेने जरूर जणाई ते तेणे क्रमना नियमथी कर्युं. पण ए नियम आर्याने लागु करी न शकाय ते आपणे जोयुं. तो 'मंजरी' तेथी पण आगळ जई नियम करे छे के पादान्ते लघु के गुरु गमे तेने गुरु के लघु करी शकाय. ते पण तरुणं°नुं ज दृष्टान्त आपे छे. अलंकारग्रन्थोनी पेठे पिंगलो पण एकना एक श्लोकोने चलणी दृष्टान्तो तरीके वापरे छे. भट्टिनांथी ते बीजुं दृष्टान्त आपे छे, पण ए दोष ज छे. तेने सुधारवा पादान्त गुरुने लघु करवो, ए कविना दोष खातर पिंगलमां दोष उमेरवा बराबर छे. लघुनुं गुरूकरण, पादान्तविलंबननुं जेवुं स्वाभाविक परिणाम छे, तेवुं, पादान्त गुरुना लघूकरण पक्षे कशुं ज नथी. जो पादान्ते गुरु लघु करी शकातो होय तो गमे त्यांय करी शकाय.

'रत्नाकर' 'सुन्दरि'ना 'रि'ने लघु राखवा क्रमनो नियम कहे छे, 'मंजरी'कार पादान्त विकल्पनो नियम कहे छे. पण 'रत्नाकर'ना टीकाकार नारायणने अने 'मंजरी'कारने आथी संतोष थतो नथी. नारायण आ क्रमना प्रकरणने अंते कहे छे: "इदं चोपलक्षणं प्रशब्दे ह्रशब्दे च परतोऽपादान्तस्य-

स्यापि लघुतायाः कविप्रयोगे दर्शनात्। तथा च कुमारसंभवे—'गृहीत-प्रत्युद्गमनीयवस्त्रा' (कु. ७-११) इति प्रशब्दे परतस्तस्य लघुता दृष्टा। माघे च—'प्राप्यनाभिह्रदमज्जनमाशु' (शि. व. १०-६०) इति। अन्यत्रापि—'तव ह्रियापह्रियो मम ह्रीरभूत्' इति ह्रशब्दे परतो लघुता दृष्टा। अन्ये तु संयोगमात्रे परभूते लघुत्वमतीवतीव्रप्रयत्नतयेत्याहुः। अत एव सरस्वतीकण्ठाभरण उक्तम्—

> यदा तीव्रप्रयत्नेन संयोगादेरगौरवम्।
> न च्छन्दोभंग इत्याहुस्तदा दोषाय सूरयः॥ (सर. १-१२३)

तथा च कविप्रयोगाः. . ."

नारायण कहे छे के उपर जे क्रमनो नियम आप्यो ते पादान्त न होय त्यां पण लागु करवो, कारण के कविओना प्रयोगोमां प्र अने ह्रसंयुक्ताक्षरोनी आगळनो अक्षर पादान्ते न होय तोपण लघु रहे एवा दाखला मळे छे. जेम के 'कुमारसंभव'मां गृहीत" ए श्लोकमां 'प्र'नी आगळनो अक्षर 'त' लघु ज रहे छे. माघमां तव" ए श्लोकमां 'ह्र'नी पहेलांनो 'भि' लघु रहे छे. बीजे पण तव" ए श्लोकमां 'ह्र' पहेलांना त्रणेय अक्षरो लघु रहे छे. बीजा केटलाक कहे छे के अत्यंत तीव्र प्रयत्नने लीधे थाय संयोगोमां आगळ आवेलो लघु लघु ज रहे. तेथी 'सरस्वतीकंठाभरण' कहे छे के "ज्यारे तीव्र प्रयत्नने लीधे संयोगनी पहेलांनो अक्षर गुरु न बने त्यारे सुज्ञो तेनाथी छंदोभंग थतो मानता नथी."

अहीं सौथी पहेली आवश्यकता तीव्र शब्दनो अर्थ करवानी छे. तेनी चर्चा न करतां एटलुं ज कहीश के 'छन्दोमंजरी' पण आ ज अपवादमां आ ज दृष्टान्तो अने 'कंठाभरण'नो आ ज श्लोक उतारे छे, अने त्यां रामचनदेव तीव्रनो अर्थ द्रुततर एवो करे छे: "यदा 'यदि तीव्रप्रयत्नेन द्रुततरपठनप्रयासेन संयोगस्य आदिः संयोगादिः तस्य, संयुक्तपूर्ववर्तिनो वर्णस्य इत्यर्थः अगौरवं लघुत्वं भवतीति शेषः, वस्तुतोऽलघुरपि लघुरिव प्रतीयेत चेद् इति भावः।'" छ. म. क. पृ. १५. अहीं अर्थ स्पष्ट छे के तीव्रनो अर्थ द्रुततर छे. गुजरातीमां तो आवुं घणी जगाए थाय छे अने तेने आपणे निर्बल संयोग कहीए छीए. तेने ज अहीं तीव्र कहेलो छे.

नारायणनो अभिप्राय स्पष्ट छे के प्र अने ह्र पहेलांनो लघु लघुरूपे ज रही शके छे. 'छन्दोमंजरी' वळी आने माटे पिंगलनुं नवुं सूत्र कल्पे छे: "प्रे ह्रे वा इति पुनः पिंगलमुनेर्विकल्पविधायकं सूत्रम्।" अने दृष्टान्तमां उपरनो

ज श्लोक आपे छे. पण संपादक पोते ज नीचे टीप मूके छे के पिंगलनां मुद्रित छन्दःशास्त्रनां पुस्तकोमां आ पाठ मळतो नथी. (छ. म. क. पृ. १३)

आ आखो प्रश्न पूरेपूरो छणवा योग्य छे. ते हुं आगळ हेमचन्द्रनो मत टांक्या पछी हाथमां लईश. पण ते पहेलां आ दृष्टान्तो जरा परीक्षवानी जरूर छे. 'कविओना प्रयोगोमां' अनेक जगाए 'कुमारसंभव'नो ७–११ मुकाय छे. आपणे ते जोईए :

सा मंगलस्नानविशुद्धगात्री
गृहीतप्रत्युद्गमनीयवस्त्रा।
निर्वृत्तपर्जन्यजलाभिषेका
प्रफुल्लकाशा वसुधेव रेजे॥

कुमारसंभव, ७, ११

हवे निर्णयसागरना मल्लिनाथनी टीकावाळा 'कुमारसंभव'मां 'गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा' एवो पाठ छे. तेमां आ पंक्तिनु एक ज पाठान्तर आपेलु छे अने ते 'शुद्धोद्गमनीय' एवु छे. पण गुजराती प्रेसना 'कुमारसंभव'मां मल्लिनाथ उपरांत चारित्रवर्धननी टीका आपेली छे तेमां उपरनो एटले 'प्र' वाळो पाठ छे, जोके तेनां टीकाकारे 'प्र' पाठथी आगळनो 'त' गुरु थई छन्दोभंग थाय ते संबंधी कशो खुलासो कर्यो नथी. हवे मल्लिनाथ, कीथ प्रमाणे, १४०० आसपास थयो (H.S.L., p. 87) अने चारित्रवर्धने 'कुमार' उपरनी टीका सं. ११९२ मां लखी. एटले चारित्रवर्धन मल्लिनाथ पहेलांनो छे. पण मल्लिनाथ 'उद्गमनीय' शब्दनो अर्थ आपतां 'अमरकोष'नु प्रमाण आपे छे : "तत्स्यादुद्गमनीयं यद्धौतयोर्वस्त्रयोर्युगम्। इत्यमरः। युगग्रहणं तु प्रायिकाभिप्रायम्। अत एवात्र क्षीरस्वामी—'युगं प्रायशो यल्लक्ष्यं तदेव' इति व्याख्याय 'गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा' इत्येतदेवोदाहृतवान्।" अमर प्रमाणे 'उद्गमनीय'नो अर्थ धोयेलां लूगडांनी जोड. पछी मल्लिनाथ कहे छे के युग (जोड)नो अर्थ 'घणे भागे जोड' एवो करवो. तेने माटे 'अमरकोष'ना टीकाकार क्षीरस्वामीनु प्रमाण आपे छे. अने कहे छे के क्षीरस्वामीए आ अर्थने माटे 'गृहीतपत्युद्गमनीयवस्त्रा' ए ज उदाहरण आपेलु छे. क्षीरस्वामी कीथ प्रमाणे ११मा सैकानो हतो (H. S. L. p. 414) अेटले क्षीरस्वामी चारित्रवर्धन पहेलांनो थयो. ए रीते समयदृष्टिए मल्लिनाथनो पाठ प्राचीनतर छे.

पण मने कोईनो पाठ संतोषकारक जणातो नथी. प्रथम चारित्रवर्धन लईए. ए पहेला चरणनो अर्थ आपी कहे छे: "तथा गृहीतं प्रत्युद्गमनीयं 'यद्धौत-

योर्वस्त्रयोर्युगम्' इति हैमः।" चारित्रवर्धन प्रत्युद्गमनीय शब्दना अर्थ माटे हेमाचार्यना 'अभिधानचिंतामणि'नुं प्रमाण आपे छे, जोके एना शब्दो अमरना छे. तेनुं कांई नहीं, कारण के हेमाचार्य पूर्वगामीना शब्दो श्लोको वगेरे स्वीकारे छे. पण खरो वांधो ए छे के चारित्रवर्धन प्रत्युद्गमनीय शब्द माटे प्रमाण आपतो होय एम देखाय छे, पण हेमाचार्यना 'चिंतामणि'मां 'प्रत्युद्गमनीय' शब्द ज नथी, 'उद्गमनीय' ज छे, अने आपेलो अर्थ 'उद्गमनीय'नो ज छे. एटले के 'प्रति'नो त्यां कशो अर्थ थतो नथी. तेम मल्लिनाथना 'पत्युः' पाठथी पण मने संतोष थतो नथी. 'पत्युः' पतिनुं वस्त्र एटले शुं? पतिए आपेलुं? पण पति वस्त्र मोकले एवो रिवाज कोई गृह्यसूत्रमां जणातो नथी. विवाहविधि वखतनुं वस्त्र तो पितानां घरनुं ज होय. पिता वस्त्राभूषणथी विभूषित कन्याने दानमां आपे छे ए मूळ भावना छे. मल्लिनाथने आ मुश्केली जाणे जणाती होय तेम ते 'पत्युः'नो फरी अर्थ करे छे. "गृहीतं पति प्रत्युद्गमनीयवस्त्रं यया सा। धौतवस्त्रमाच्छादितवतीत्यर्थः।" मल्लिनाथ 'पत्युः' (छठ्ठी विभक्ति)नो अर्थ पति प्रति एवो करे छे. कदाच 'प्रति'वाळो पाठ तेनी पासे छे अने तेथी 'प्रति'नो अर्थ पण 'पति'ना पाठमांथी नीकळे छे एम बताववानो तेनो अभिप्राय होय. पण तोपण शुं? पति प्रति धोयेलुं वस्त्र पहेर्युं एटले शुं? 'अमरकोष'नी (२-११२) टीकामां क्षीरस्वामी उद्गम्यते अभिलष्यते — उद्गमनीयम्। एटले उद्गमनीयनो अर्थ अभिलषणीय -- अभिलाषा करवा योग्य एवो आपे छे, पण तोपण 'पति तरफ अभिलाषा करवा योग्य' ए अर्थ पण बेसतो नथी. हुं मानुं छुं कोई जुदो ज पाठ छे अने ते लुप्त थतां के नहीं समजातां आ बे पाठो उपस्थित थया छे. कालिदास जेवानी कृतिओ पण आपणा देशमां हजी शास्त्रीय रीते संपादित थई नथी! आ श्लोक उपर वधारे कालक्षेप करवानो मने अवकाश नथी, पण हुं प्रति पाठ स्वीकारतो नथी, अने कालिदासना समयमां प्र विकल्पे पण थडकारा विनानो थयो हतो एम स्वीकारी शकतो नथी. एवुं वलण प्राकृतोमां हतुं पण कालिदास आवा वलणने संस्कृतमां लई जाय एम बाटला एक संदिग्ध दाखला परथी हुं मानी शकतो नथी.

ते पछी बीजुं दृष्टान्त माघमांथी नीचे प्रमाणेनुं अपाय छे:

प्राप्य नाभिह्रदमज्जनमाशु
प्रस्थितं निवसनग्रहणाय।
औपनीविकमरुन्ध किल स्त्री
वल्लभस्य करमात्मकराभ्याम्॥

शि० व०, १०-६०

हवे अहीं पण मल्लिनाथ 'नाभिह्रदने' बदले 'नाभिनद' पाठ आपे छे. पण नाभिने 'ह्रद'ने बदले 'नद' साथे सरखाववी ए मने अनुचित लागे छे तेम ज परंपरानी विरुद्ध छे. नाभिने कविओ ह्रद ज कहेता आव्या छे. माघे पोते पांचमा सर्गना २९ मा श्लोकमां "नाभिह्रदैः परिगृहीतरयाणि निम्नैः" करीने लख्युं छे. अने मल्लिनाथने पण नद नो अर्थ ह्रद ज करवो पडे छे, अने तेने माटे ते कोई कोशनुं प्रमाण आपी शकतो नथी. एटले त्यां हुं 'नाभिह्रद' पाठ साचो मानुं छुं. अर्थात् संस्कृतमां 'ह्र' अने 'प्र' पहेलांनो लघु नहीं थडकावानुं वलण कालिदासना समयमां होय तोपण कालिदासे तेने संस्कृतमां अपनाव्युं होय एम हुं मानतो नथी. माघमां ए वलण छे, ए स्पष्ट छे. नारायण बीजां पण दृष्टान्तो आपे छे तेमांनां घणाखरां हेमाचार्यमां आवे छे, जेने हवे हुं उतारुं छुं.

हेमाचार्य गणोनी संज्ञा कह्या पछी लघुगुरुनी चर्चामां प्रथम "ह्रस्वो ल्जु।" कहे छे. वधा ह्रस्वो ल संज्ञावाळा एटले के लघु छे. ते पछी "वांते ग्वकः।" सूत्र उपर टीका करे छे: "पादान्ते वर्तमानो ह्रस्वो ग्संज्ञो भवति।... वेति व्यवस्थित विभाषा, तेन यत्र 'जौंग्लौ समानी' त्यादावपवादस्तत्र ग्संज्ञो न भवति। वंशस्थादौ च पादान्ते लघोर्गुरुत्वं न भवति। यदाह 'वंशस्थकादि-चरणान्त निवेशितस्य, गत्वं लघोर्नहि तथा श्रुतिशर्मदायि। श्रोतुर्वसंततिलका-दिपदान्तवर्त्ति लोगत्वमत्र विहितं विवुर्वैर्यथा तत्।'"

सूत्रनो अर्थ करतां कहे छे के 'पादान्ते ह्रस्व होय ते गुरुसंज्ञानो व छे. अहीं 'वा'नो अर्थ व्यवस्थित विकल्प एवो छे. तेथी रगण जगण ग ल (गाल गाल गाल गाल) समानी छन्द वगेरेमां अपवाद होवाथी त्यां गुरु न थाय. आटला उपरथी जणाशे के हेमचन्द्र, सूत्रना शब्दोमां जरा फरक करतो होवा छतां पिंगलना मूळ सूत्रने ज अनुसरे छे, अने पादान्तनो लघु, गुरुनी आवश्यकता होय त्यां, गुरु थई शके छे एटलुं ज कहे छे. 'छन्दो-मंजरी'नी पेठे पादान्तगुरु लघु थई शके एवुं कहेतो नथी. ते पछी ते पादान्त लघु, गुरु क्यां थाय ते संबंधी कहे छे के 'वंशस्थ वगरे वृत्तोमां पादान्ते लघु गुरु न थाय, अने तेना प्रमाणमां प्रास्ताविक श्लोक उतारे छे तेनो अर्थ एवो छे के 'वसंततिलका वगेरेमां पादान्त लघु गुरु थाय ए जेवुं शोभे छे तेवुं वंशस्थ वगेरेमां शोभतुं नथी.' आ बाबत जरा स्फुट करवानी जरूर छे. श्लोकान्ते अने श्लोकार्धे, लघु गुरु थई शके एवो नियम सार्वत्रिक छे. पण एकी चरणने अंते एटले के पहेला अने त्रीजा चरणने अन्ते थोडा छंदोमां ज ए छूट छे. उपरना प्रास्ताविक प्रमाणमां 'वसन्ततिलका वगेरे'मां ज थई

शके छे एम कहेलुं छे. आ 'वगेरे'मां कोनो कोनो समावेश करवो ए संबंधी विधान घणां प्रसिद्ध पिंगलोमां पण नथी मळतुं. हलायुध आ संबंधी कशुं ज कहेतो नथी. 'वृत्तरत्नाकर' तेम ज तेनो टीकाकार नारायण भट्ट पण अहीं मूक रह्यो छे. 'छन्दोमंजरी' पादान्त लघु गुरु बनवानां बे दृष्टान्तो वसन्ततिलकानां ज आपे छे. तेमां पहेलामां, 'अत्र तृतीयचतुर्थपादान्तलघोर्गुरुत्वम्।' 'अहीं त्रीजा अने चोथा पादने अंते लघु गुरु थाय छे.' अने बीजामां 'अत्र प्रथमतृतीय-पादान्तस्यापि लघोर्गुरुत्वम्' 'अहीं पहेलो अने त्रीजो पादान्तलघु पण गुरु थाय छे,' एम कहे छे. (छ.म. क.पृ १२,१३) 'पहेलो अने त्रीजो पण' ए शब्दो उपरथी अनुमान थाय छे के साधारण रीते पहेला त्रीजामां तेम नहीं थतुं होय. पण क्यां थाय, क्यां न थाय, ए संबंधी कशुं कह्युं नथी. पण काव्यदोषमां छन्दो-दोष विशे कह्युं छे त्यांथी वधारे स्पष्ट विगत मळे छे. में जोया तेटला ग्रन्थोमां सौथी स्पष्ट विधान मने 'साहित्यदर्पण'मां जणाय छे. हतवृत्तनुं दृष्टान्त आपी ते कहे छे: "यत्पादान्ते लघोरपि गुरुभाव उक्तस्तत्सर्वत्र द्वितीयचतुर्थपादविषयम्। प्रथमतृतीयपादविषयं तु वसन्ततिलकादेरेव।" 'पादान्ते लघु पण गुरु थाय एम कह्युं छे ते बीजा अने चोथा पाद विषे छे. पहेला अने त्रीजा पादमां वसन्ततिलका वगेरेमां ज थाय.' अहीं पण वसन्त-तिलका उपरांत कया ए नथी कह्युं, पण नीचे टीप आपी छे: "आदिपदेनेन्द्र-वज्रोपेन्द्रवज्रयोः संग्रहः।" 'आदि पदमां इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रानो समावेश थाय छे.' सा. द. नि. पृ. ४०२–३. पिंगलोमां 'वृत्तवार्त्तिक'मां मने आनो स्पष्ट उल्लेख जणायो छे:

पादान्ते गुरुसंज्ञाया विभाषात्वं यदीरितम्।
व्यवस्थितविभाषात्वं त्वस्य स्यादिष्टसिद्धये॥ ५८॥

वृ० वा०, पृ० ३१

'पादान्ते गुरुसंज्ञानो जे विकल्प कह्यो छे, ते व्यवस्थित विकल्प समजवो.'

भवेदुपेन्द्रवज्रादेरोजान्तेषु विकल्पतः।
नियमेनेतरेषां तु गुरुत्वमविकल्पितम्॥ ५९॥

एजन

'ए गुरुसंज्ञा उपेन्द्रवज्रा वगेरे छन्दोना विषम पादने अंते विकल्पथी थाय. बीजा छन्दोनी बाबतमां गुरुत्वनो विकल्प न थाय. ते उपर टीका: "उपेन्द्र-वज्रादेरिति। अत्र परिगणनम् — 'उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजातयः,

बसन्ततिलकम्, इत्येतेषामेव तावत् प्रथमतृतीयपादान्तवर्णेषु [३]लघुत्वस्य विकल्पेन गुरुत्वं[३] न त्वन्येषामिति भाष्यादौ स्थितम्। द्वितीयचतुर्थपादान्तवर्णेषु विकल्पस्तु सर्वे ामपि वृत्तानां सर्वसम्मत एव।'" (एजन) 'उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजाति, वसन्ततिलका, ए छन्दोमां ज पहेला अने त्रीजा पादना अंते आवता वर्णने लघुना गुरुत्वनो विकल्प लागु पडे, बीजा छन्दोमां नहीं. बीजा अने चोथा पादना अंतवर्णनो विकल्प तो बधां वृत्तोमां थाय ए संबंधी सर्वसंमति छे.'

अर्थात्, हेमचन्द्र पादान्ते लघु गुरु बने एम कहे छे, अने त्यां परम्परा प्रमाणे इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति अने वसंततिलका सिवायनां बीजां बधां वृत्तोमां ए नियम बीजा अने चोथा पादने अंते आवता लघु अक्षर विशे छे. हेमचन्द्र आ बाबतमां पिंगल, हलायुध अने 'वृत्तरत्नाकर'ना मतनो ज छे, 'मंजरी'ना मतनो नथी.

आपणे अहीं संस्कृत वृत्तोनी वात करीए छीए. प्राकृत संबंधीनो नियम वधारे छूटवाळो छे. उपरना ज सूत्रने अंगे ए कहे छे: "ध्रुवासु विवक्षावशाद्गुरुत्वं लघुत्वं च।" 'ध्रुवाओमां विवक्षा प्रमाणे गुरु के लघु थाय.'

आ पछी हेमचन्द्र संयोगपरत्व वगेरेनो नियम आपे छे: "ᳵक ᳵप विसर्गानुस्वारव्यंजनाह्लादि संयोगे।" आ सूत्रनो अर्थ एवो छे के जिह्वामूलीय, उपध्मानीय, विसर्ग अने अनुस्वार तेम ज व्यंजनना संयोगथी आगळनो ह्रस्व गुरु थाय छे. 'व्यंजनसंयोगे' एम कहेतां वचमां 'अह्लादि' ह्ल सिवायना एवो अपवाद मूकी दीधो छे. हवे ते उपरनी टीका जोईए. "जिह्वामूलीये, उपध्मानीये विसर्जनीये, अनुस्वारे, व्यंजने, ह्लादिवर्जिते संयोगे च परे, ह्रस्वोऽपि गो भवति. . . । अह्लादीति समस्तव्यस्तसंग्रहात् ह्लसंयोगे हसंयोगे रसंयोगे च न गुरुः। आदिशब्दात् यथादर्शनम्।" 'अह्लादि मां ह्ल ने समस्त अने व्यस्त बन्ने रूपे समजवो; एटले के ह्ल ना संयोगे ह् ना संयोगे अने र् ना संयोगे गुरु न बने. अह्लादिमां आदि शब्द कह्यो छे तेनो अर्थ ज्यां ज्यां एवुं देखाय त्यां ए नियम समजवो.' आ पछी तेनां दृष्टान्तो आपेलां छे. दृष्टान्तोमां संस्कृत अने प्राकृत बधां भेगां आप्यां छे. पण हुं संस्कृत अने प्राकृत जुदां विचारी जोवा इच्छुं छुं.

स्पृष्टं त्वयेत्यपह्नियः खलु कीर्तयन्ति (१)
तव ह्रियापह्रियो मम ह्रीरभू (२)
च्छशिग्रहेऽपि द्रुतं न धृता ततः।
बहलभ्रामरमेचकतामसं

३-३. मूळमां—"गुरुत्वस्य विकल्पेन लघुत्व" एम छपायुं छे तेने बदले पाठ उपर प्रमाणे जोईए एम हुं मानुं छुं.

मम प्रिये क्व समेष्यति तत्पुनः॥
धनं प्रदानेन श्रुतेन कर्णौ। (३)
लीलासिताब्जमुत दर्पणमातपत्रं (४)
किं दंतपत्रमथ किंशुकमौलिरत्नं।
किं चामरं तिलकबिंदुरथेंदुबिंब-
मेतद्दिवो निह्नुतदीप्ति मुदे न कस्य॥

उपर ह्र एटले ह्, र् ना संयोगनां आ दृष्टान्तो कह्यां छे. पण दृष्टान्तोमां ए ज क्रम सचवायो जणातो नथी. पहेलुं दृष्टान्त स्पष्ट रीते ह्र ना संयोगनुं छे. बीजा दृष्टान्तमां पहेली पंक्तिमां ह्र त्रण जगाए आवे छे एटले एने पण ह्र नुं गणी शकाय. पण बीजी, त्रीजी, चोथी पंक्तिमां प्र, द्र, त्र, प्र आवे छे अने ह्र मां पण र् तो छे ज एटले ए आखा दृष्टान्तने र् ना संयोगनुं दृष्टान्त गणी शकाय. त्रीजुं तो स्पष्ट र् ना संयोगनुं ज छे. चोथा दृष्टान्तमां र् नो संयोग घणी जगाए आवे छे पण त्यां क्यांय थडकारनो लोप थतो नथी. एटले छेल्ली पंक्तिनुं 'निह्नुत' ए ज ह् संयोगनुं मात्र दृष्टान्त छे. त्यां संयोग छतां आगलो लघु गुरु थतो नथी.

अहीं एक वात तरत ध्यानमां आवशे. उपरनां दृष्टान्तमां ज्यां ज्यां ह् नो संयोग छे त्यां सर्वत्र, ह् संयोगनो पहेलो व्यंजन छे अने ज्यां ज्यां र् संयोग छे त्यां सर्वत्र र् संयोगनो बीजो व्यंजन छे. आने आपणे नियम गणवो जोईए जोके हेमचन्द्रे आना उपर ध्यान आप्युं नथी. प्राकृत दृष्टान्तो हजी अहीं न लेतां हेमचन्द्रनी टीका हुं आगळ चलावुं छुं: "ऐष्वतीव्रप्रयत्नत्वं संयोगस्य गुरुत्वाभावहेतुः। तीव्रप्रयत्ने तु भवत्येव गुरुः। यथा 'बर्हंभारेषु केशान्' इत्यादि।" आ दृष्टान्तोमां संयोग होवा छतां लघु गुरु बनतो नथी तेनुं कारण हवे हेमचन्द्र कहे छे: "अहीं संयोगनो प्रयत्न अतीव्र छे ए गुरु नहीं थवानुं कारण छे. तीव्र प्रयत्न होय तो अवश्य गुरु बने छे. जेम के 'बर्हंभारेषु केशान्'." 'र्हं' नो संयोग अहीं तीव्र छे तेथी 'ब' गुरु बने छे, एवो अभिप्राय छे.

अहीं प्रथम ए कहेवानुं के हेमाचार्यनो तीव्र प्रयत्ननो नियम साचो छे. आपणे निर्बल संयोगने लीधे थडकारो नथी थतो अने सबल संयोगने लीधे थाय छे एम गुजरातीमां कहीए छीए. ते आ सबळ संयोगने माटे ज तीव्र शब्द वापरेलो छे. आपणे अनुस्वारने कोमल अने तीव्र कहीए छीए, तेम अहीं संयोगने तीव्र कह्यो छे. अनुस्वार अने संयोग बन्नेने माटे तीव्र अने मंद शब्द राखी शकीए तो कंई खोटुं नथी. पण अहीं एक बीजी ज बाबत ध्यानमां लेवा जेवी आवे छे. 'कंठाभरण' 'रत्नाकर' अने 'मंजरी' ए त्रणेए

तीव्र शब्द लगभग आवी ऊलटी रीते वापर्यो छे. त्यां तीव्रनो अर्थ द्रुततर एवो करेलो छे. संयोगना व्यंजनो द्रुततर बोलवाथी आगळनो लघु गुरु न थाय तो तेने दोष न गणवो एवुं 'सरस्वतीकंठाभरण'नुं वचन 'वृत्तरत्नाकर' अने 'छन्दोमंजरी' बन्नेए उतार्युं छे ए आपणे आगळ (पृ० ३६) जोई गया. हेमचन्द्रथी ऊलटो ज अर्थ! परिभाषानो केटलो गोटाळो!

पण हजी एक वात कहेवानी रहे छे. आ धडकारानो अभाव हजी सुधीनां दृष्टान्तोमां क्यांय शब्दनी अंदर थयो नथी. 'तव ह्रिया।' (दृष्टान्त १ लुं) एमां तव शब्द स्वतंत्र छे अने पछी प्रारंभमां संयोगवाळो शब्द आवे छे, 'शशिग्रह'मां समास छे छतां शशि शब्द जुदो छे, अने तेनी पछी प्रारंभमां संयोगवाळो शब्द आवे छे. 'अपह्रिये (दृ० २) अने 'निह्नुत' मां अप अने नि बन्ने उपसर्ग छे, अर्थात् मूळ क्रियापदना अंगभूत नथी. आ बधां दृष्टान्तो, अने आपणी भाषाना शब्दोच्चारमां क्यां धडकारो नथी जतो ए जोतां, अहीं नियम एवो जणाय छे के शब्दनी अंदरनो धडकारो एम ने एम रहे छे पण एक शब्दना आदिमां आवता संयोगनो धडकारो तेनी आगळना शब्द सुधी नथी पहोंचतो. ए रीते आ अपवादो थाय छे.

उपर में कह्युं के 'निह्नुत' मां 'ह्नु' धातुना संयोगनो धडकारो तेना उपसर्ग 'नि' सुधी जतो नथी. आनो लाभ 'पतत्रि' शब्दने आपी शकाय? 'पतत्रि' मां मूळ 'पतत्र' शब्द छे. तेमां 'पत्' धातु छे, जेनो अर्थ 'ऊडवुं' एवो थाय छे. तेमांथी 'पतत्र' शब्द थाय छे जेनो अर्थ 'ऊडवानुं साधन', 'पांख' एवो थाय छे. तो ए 'त्र'नो धडकारो मूळ धातुना पिंड सुधी उपरनां दृष्टान्तोनी पेठे न ज पहोंचे एम कही शकाय? में उपरनां दृष्टान्तोमांथी 'र्' संयोग विशे जे नियम तारव्यो छे ते प्रमाणे ए समर्थन आ 'पतत्र' शब्दने मळे नहीं. कारण के अहीं प्रत्यय लाग्यो छे, अने प्रत्ययने उपसर्ग जेटलुं स्वतंत्र अस्तित्व नथी, ए शब्दनो ज भाग छे. एटले 'पतत्रि' शब्द ए छंदनुं शैथिल्य ज छे. तेम छतां हुं मानुं छुं के "अथ लुलितपतत्रिमालं" ए यतिखंडमां 'मालं'ना 'लं'ने लघु गणवा करतां 'पतत्रि'ना 'त'ने लघु गणवो ए वधारे निर्वाह्य छे. संस्कृतमां सानुस्वार अक्षरने लघु गणवो पडे ते करतां संयोगने मंद के कोमल करवो ए प्रयोगोनी वधारे नजीक छे.

हवे आपणे हेमचन्द्रनां ह्, र् संयोगनां प्राकृत दृष्टान्तो जोईए. "प्राकृतेऽपि यथा" 'प्राकृतमां जेम के :'—

जह ण्हाउं ओइण्णे अब्भुत्तमुल्हसि अमंसुअद्धं तं।
जहवं ण ण्हाओत्ति तुमं सच्छे गोलानईतूहे॥ (१)

"तथा" 'तेम ज':—

बोद्रहद्रहम्मि पडिआ (२)
कुवलय खित्त द्रहि (३)

पहेला दृष्टान्तमां 'ह्'ना संयोगवाळा 'ण्हाउ', 'ल्हसि', 'ण्हाओसि' ए शब्दोनी आगळना ह्रस्वो लघु ज रहे छे. अने बीजा त्रीजा दृष्टान्तमां 'द्रहम्मि' अने 'द्रहि' पहेलांना लघुओ लघुओ ज रहे छे. पण संस्कृत दृष्टान्तोमां आवतो संयोग अने आ संयोग ए बे वच्चेनो एक फरक नोंधवा योग्य छे. संस्कृतमां संयोगमां 'ह्' पहेलो आवतो, प्राकृतनां त्रणेय दृष्टान्तोमां 'ह्' बीजो आवे छे. अने प्राकृतमां एवो नियम ज छे.

प्राकृतमां आ नियम एक बीजी दृष्टिए जोवो जोईए. अहीं खरो प्रश्न ए छे के आने संयोग गणवो के केम? आपणे जाणीए छीए के 'प्'मां अने 'ब्'मां 'ह्' मळवाथी अनुक्रमे 'फ्' अने 'भ्' थाय छे. त्यां आपणे संयोग गणता नथी. अहीं आवता 'ल्ह्'मां अने गुजरातीमां बोलाता 'न्हावुं', 'र्‌हेवुं', 'व्हीवुं' ए बधामां पण 'ह्'नो एने मळतो संश्लेष गणवो जोईए. ए व्यंजनसंयोग नथी. उपर आपेला प्राकृतना दाखलामां 'ण्हाउं' वगेरे आ दृष्टिए संयोग ज नथी.

'र्'ना संयोगनी निर्बळतानुं कारण ए छे के तेनो संयोग पूर्ण स्पर्शव्यंजनो जेटलो सबळ के हेमचन्द्रनो शब्द वापरीए तो तीव्र होतो नथी. तेथी ए संयोगो निर्बळ थाय छे. तेनो थडकारो मंद होय छे, अने तेथी तेनो आगळनो व्यंजन लघु होय तो गुरु थई शकतो नथी. गुजरातीमां 'य्'नो संयोग पण एवो ज थई गयो छे. 'नम्यो', 'कर्युं', 'कर्य', 'आस्य' ए बधामां 'य्'नो संयोग निर्बळ छे. 'य्' अने 'र्' बन्ने अर्धस्वरो छे, पूर्णव्यंजनो नथी.

आ संयोगनी निर्बळतानो आखो इतिहास जोतां जणाय छे के ए, वैदिकथी मांडीने उत्तरोत्तर निर्बल ज थतो गयो छे. संस्कृतनो संयोग, जोके तेमां आगला लघुने गुरु करवा जेटलुं प्राबल्य हतुं, पण वैदिकनी अपेक्षाए ओछो बळवान हतो ज, अने तेथी वैदिक छन्दोना पठनमां क्रमनो एटले व्यंजनोने बेवडा उच्चारवानो विधि करवो पड्यो,—आपणे आगळ जोई गया तेम 'अग्ग्ने', 'अश्श्वः', 'सर्व्वः', वगेरे.

हवे स्वरोना उच्चारोमां फेर पड्यो,—संस्कृतमां गुरु गणाता लघु थया, ते लईए. अहीं एक वात ए ध्यानमां राखवा जेवी छे के हेमाचार्य, संयोगनी पेठे, आ फरकने संस्कृत प्राकृत बन्नेनो नथी गणता, मात्र प्राकृतनो गणे छे. आ संबंधीनुं सूत्र पण उपरनां सूत्रोनी नजीक ज संज्ञाप्रकरणमां आपे

छे : "एदोतौ पदान्ते प्राकृते ह्रस्वौ वा।" 'ए अने 'ओ' पदने अंते, प्राकृतमां विकल्पे ह्रस्व थाय छे.' आ स्पष्ट छे एटले एना उपरनी टीका उतारवानी जरूर नथी. पण टीकामां हेमचन्द्र उमेरे छे के "इं हिं इत्येतयोर्ह्रस्वत्वं शब्दानुशासने निर्णीतमिति नेहोच्यते।" 'इं अने हिं नुं ह्रस्वत्व शब्दानुशासनमां एटले व्याकरणमां निर्णीत करेलुं छे एटले अहीं कहेता नथी.' 'संगीतरत्नाकरे' आ बाबत प्रबन्धाध्यायमां लीधी छे. ते बधानो निचोड काढतो होय तेम लखे छे :

गुरुर्लघुरिति द्वेधा वर्णोऽनुस्वारसंयुतः ॥५३॥
सविसर्गो व्यंजनान्तो दीर्घो युक्तपरो गुरुः॥
वा पदान्ते त्वसौ वक्रो द्विमात्रो मात्रिको लघुः॥५४॥
ऋजुर्लिपौ भ्रे प्के प्पे च रहोर्योगे स वा लघुः॥
ए ओ इं हिं पदान्ते वा प्राकृते लघवो मताः॥५५॥
पदमध्येऽप्यपभ्रंशे हुं हे ए ओ इमित्यमी॥

सं. र., ४, पृ. २८०-८१.

'वर्ण गुरु अने लघु, एवा बे प्रकारनो छे. सानुस्वार, सविसर्ग, व्यंजनांत, दीर्घ अने संयोगनी आगळनो ए गुरु छे. चरणने अंते आवतो विकल्पे गुरु छे. गुरु वांको रेखाथी दर्शावाय छे. तेनी बे मात्रा गणाय छे. लघु लखवामां सीधी लीटीथी बतावाय छे. भ्र प्क प्प तथा र अने हना संयोगमां वर्ण विकल्पे लघु रहे छे. प्राकृतमां ए ओ इं हिं पदने अंते विकल्पे लघु रहे छे. अने ए वर्णो अपभ्रंशमां पदनी मध्ये होय तोपण विकल्पे लघु रहे छे. अने अपभ्रंशमां ते उपरांत हुं हे ए ओ अने इं पण विकल्पे लघु रहे छे.' एक नानी बाबत अहीं उमेरवानी जरूर छे. प्क अने प्प कहेल छे तेनो अर्थ जिह्वामूलीय अने उपध्मानीय छे अने तेने पण अहीं विकल्पे गुरु कहेलो छे. आवो मत हेमचन्द्र पण 'कोईक' एम कहीने नोंधे छे. "केचित्तु ᳵक ᳵपयोरपि परत स्थितयोः पूर्वस्य लघोर्गुरुत्वं नेच्छन्ति॥" 'संगीतरत्नाकरे' 'भ्रे' नो खास उल्लेख केम कर्यो छे ते समजातुं नथी. आ श्लोकथी स्पष्ट रीते जणाशे के उच्चारोमां शैथिल्य केवी रीते वधतुं जाय छे.

अहीं सुधी नहीं नोंधायेली एवी एक छूट 'प्राकृत पैंगल' नोंधे छे. प्राकृतनी खासियतो अने अपवादो नोंध्या पछी 'प्राकृत पैंगल' कहे छे :

जइ दीहो विअ वण्णो लहु जीहा पढइ होइ सो वि लहू।
वण्णो वि तुरिअ पढिओ दोतिण्णि वि एक्क जाणे हू॥ १, ८

प्रा. पैं. B. पृ. ११

'जो दीर्घ वर्ण जिह्वा वडे लघु पठाय, तो ते पण लघु थाय. वर्ण पण त्वरित पठाया होय तो बे त्रणने पण एक जाणवा.'

अलबत आ बधी खासियतो प्राकृत अने अपभ्रंशनी ज छे, अने ए तरीके ज नोंधायेली छे. पण 'प्राकृत पैंगल'नो एक टीकाकार प्राकृतमां 'ए' 'ओ' ह्रस्व होय छे एम कही आगळ कहे छे: "क्वचित् संस्कृतेऽपि 'तं प्रणमामि च बालगोॅपालं' एवं 'रौद्रायै नमोॅ नित्यायै'—इत्यादावोकारस्य लघुत्वम्।" (एजन पृ. ८) अर्थात् आ टीकाकार संस्कृतमां पण क्यांक ओ ह्रस्व मळे छे एम कही बे दृष्टान्तो आपे छे. पहेलामां 'गोॅपाल'मां 'गो' ह्रस्व छे, बीजामां 'नमोॅ' मां 'मो' ह्रस्व छे. बन्ने जगाए में ह्रस्वनी निशानी करी छे.

गुजरातीमां कविने लघुनो गुरु अने गुरुनो लघु करवानी जे हद विनानी छूट मनायेली छे, ते गुजरातीने प्राकृत अपभ्रंशना वारसामां मळेली छे. नवा उच्चारशुद्धिना आग्रहथी कविए एने अंकुशमां लेवानी छे अने कर्णकटुत्वना दोषथी तेने बचाववा सदा जागृति राखवानी छे.

२

छन्दोना प्रकारो

आ पुस्तकनो विषय, पिंगलकारो जेने लौकिक छन्दो कहे छे ते छे. छन्दःशास्त्रनो आद्य प्रणेता पिंगल छन्दने वैदिक अने लौकिक एवा बे मोटा वर्गोमां वहेंचे छे, अने बन्नेनां अलग अलग निरूपण करे छे. पछीनां घणाखरां पिंगलो वैदिक छन्दोना निरूपण विना ज लौकिक छन्दोनी चर्चा करे छे. आ रीते वैदिक छन्दोथी स्वतंत्र रीते लौकिक छन्दोनी चर्चा करवानी पद्धति परंपराथी चाली आवे छे. अने ते सकारण छे. वैदिक भाषा उदात्त, अनुदात्त अने स्वरित एवा स्वरोथी बोलाती जे घणा काळथी भाषामांथी अदृश्य थया छे, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश के देश्य भाषाना साहित्यमां ऊतर्या नथी. वेदकाळना छन्दोमांथी कोई छन्द ए ने ए रूपे पछीना साहित्यमां ऊतरी आव्यो नथी. एटले वैदिक छन्दोने आपणा निरूपणनो मुख्य विषय[1] कर्या विना, आपणे लौकिक छन्दोना आपणा निरूपणमां आगळ चालीए. अने तेमां प्रथम विषयव्यवस्था माटे छन्दोना प्रकारोनो निर्णय करीए.

---

१. वैदिक छन्दो उपर एक टूंकुं परिशिष्ट आ प्रकरणने अंते आपेलुं छे.

पिंगलनी वर्णोखरी चर्चामां प्रथम दृष्टांत लई, तेने दृष्टि आगळ राखी चर्चा करवी सुकर पडे छे. तेथी ए पद्धति हुं बने त्यां सुधी अखत्यार करीश. छन्दोना बे मुख्य प्रकारोनुं प्रथम अक्केक दृष्टान्त लउं छुं.

वसन्ततिलका

आकाशमांथि उडुमंडल संचर्यूं'तुं.
आतिथ्यअर्घ्य रवि एक ज अर्पतो'तो,
ते लेइ लेइ नमणूं उर नामतूं'तुं,
लीलाविमुग्ध पडतूं ढळि देवपादे.

'गिरनारने चरणे' के. का., भा. २, पृ. ९१

आनी साथे सरखाववा हुं नीचेनी दलपतरामनी एक चोपाई लउं छुं:

अरजुन पछि आगरे सिधाव्या
मारग ज्यारे सो गाउ आव्या
काबाए कामिनिओ लूंटी
नहि अरजुने खणाई खूंटी.

द. का., भा. २., पृ. ६०

निरूपणनी सरलता खातर पहेलां चोपाईनी पंक्तिओने लगात्मक न्यासमां नीचे उतारुं छुं.

लललल ललगा लगाल गागा
गालल गागा गागा गागा
गागा गागा ललगा गागा
लललल लगाल गागा गागा

में आगला प्रकरणमां कह्युं तेम 'गाउ' शब्दना बन्ने स्वरो संयुक्त होवाथी 'गाउ' एक ज गुरुनो शब्द अहीं थाय छे. अने अहीं ए रीते 'सोगाउ'नुं एक चतुष्क गागा बने छे. आ चोपाई चार चार मात्रानां चार चतुष्कोनुं एक चरण, एवां चार चरणोनी बनेली छे. आ चतुष्कोमां चार मात्रा अमुक ज संख्याना लघु के गुरुथी थवी जोईए एवो कोई नियम नथी. चार मात्राना जे कुल पांच पर्यायो थई शके छे ते बधाय अहीं पहेलां पांच चतुष्कोमां आवी जाय छे. अमुक स्थाने अमुक ज पर्याय जोईए एवो पण कोई नियम नथी —सिवाय के अंते सर्वत्र गागा चरणान्तने व्यक्त करवा आवे छे. आवां चतुष्को जाळवीने पंक्तिमां आपणे गमे तेवो फेरफार पण करी शकीए. जेम के

अरजुन पछि आगरे सिधाव्या

ने बदले

प्रयाग अर्जुन पछी सिवाव्या

आनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

लगाल गालल लगाल गागा

शामळनी चोपाईनी एक बीजी पंक्ति लईए :

सिवपुर नामे सुन्दर गाम

तेनो न्यास

लललल गागा गालल गाल

अहीं अंते गागाने बदले गाल आवे छे, छतां आनुं पण पठन उपरना दृष्टान्तना जेवुं ज लागशे. आटला फेर छतां आ बन्ने चोपाई केम कहेवाय छे, ते प्रश्न आपणे आ प्रकारना स्वरूपनी घटनानो विचार करीशुं त्यारे जोईशुं. पण ए सिवाय आ पंक्ति पण आगळ जेवी ज छे. आमां पण सिवपुर (लललल) ने बदले पूना (गागा) भरूच (लगाल) सूरत (गालल) पटणा (ललगा) एम गमे ते मूकी शकीए. अहीं अंत्य गालने चार मात्राना चतुष्क बराबर गणीए तो एक चरणमां चतुष्कोनां चार आवर्तनो जणाशे. अने ए चतुष्कनी अंदर एक गुरुना बे लघु, के बे लघुनो एक गुरु, करी शकीए छीए, एक चतुष्कना गुच्छनी अंदर लघुगुरुनां स्थानोनी अदलाबदली करी शकीए छीए, जेम के गाललने बदले ललगा के लगाल. अहीं मात्रानुं जे जूथ आवर्तन पामे छे, तेने आपणे संधि कहीशुं. अमुक मात्राना संधिओना आवर्तनथी आनो मेळ सधाय छे तेथी आने आवृत्तसंधि मात्रामेळ के एकलो मात्रामेळ छन्द कहीशुं. तेनुं टूंकुं नाम जाति छे.

आनी साथे उपर आपेल वसंततिलका सरखावशो तो तेना स्वरूपमां बहु फेर जणाशे. तेमां कोई एक संधिनां आवर्तनो नहीं जणाय. आपणे एनो प्रथम लगात्मक न्यास करीए.

वसंततिलका

गागालगा ललगा ललगा लगागा

आथी वधारे लखवानी जरूर नथी, कारण के पछी दरेक पंक्तिमां आ ज रूपो अदलोअदल आववानां. दरेकमां १४ ज अक्षरो आववाना अने दरेकमां लघुनी जगाए लघु अने गुरुनी जगाए गुरु ज आववानो. आमां, लखीने जुदा पाडी बताव्या प्रमाणे संधिओ छे, ते कोई एकसरखा नथी; अक्षरसंख्यामां सरखा नथी, मात्रासंख्यामां पण सरखा नथी. पण मात्रासंख्यामां सरखा छे के केम

ए प्रश्न ज उपस्थित थतो नथी, कारण के आमां मात्रासंख्या कायम राखीने एक गुरुना बे लघु के बे लघुनो एक गुरु करी शकाता नथी. अरे, एक ज संधिमां लघु-गुरुनो क्रम पण फेरवी शकातो नथी. 'आकाशमां' 'गागालगा' छे तेने बदले 'व्योमनांहीं' 'गालगागा' पण करी शकाशे नहीं. एम करतां पंक्तिमां मेळ रहेशे नहीं. आने आपणे अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ के टूंकमां दलपतराने आपेल अक्षरमेळ नामथी ओळखीशुं. संस्कृतमां आने वृत्त कहेलुं छे, ते नामने आपणे आ अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ माटे ज राखीशुं. 'माटे ज' एटला माटे के पिंगलशास्त्रनी परिभाषामां आवृत्तसंधिनो एक प्रकार अक्षरमेळमां गणाई गयो छे: तेनो सरल दाखलो तोटक छे:

तोटक

यदुनंदनने यदुनंदनने
नमुं प्रात समे यदुनंदनने

चार पंक्ति पूरी करवानी जरूर नथी. आनो न्यास

तोटक: ललगा ललगा ललगा ललगा

आमां पण संकेत एवो छे के गुरुलघुनी अदलाबदली के मात्रामेळी[2] परिवृत्ति करी शकाय नहीं. पण आ स्पष्ट रूपे चतुर्मात्रिक संधिनां चार आवर्तनोनो छंद छे. तेनो मेळ चोपाई जेवो ज छे, मात्र तेना संधिने ललगानुं स्थिर पासादार रूप आपेलुं छे. एना मेळनो सिद्धान्त मात्रामेळनो छे, एटले हुं आने मात्रामेळनो लगात्मक[3] जाति गणुं छुं.

अहीं एक विशेष बाबत मारे नोंधवानी जरूर छे. आवा लगात्मक मात्रामेळमां संधिनुं एक ज लगात्मक रूप वपराय अने तेना भिन्न पर्यायो न वपराय एवी कोई मर्यादा हुं स्वीकारतो नथी. दाखला तरीके तोटकमां ललगा चतुष्कलनां चार आवर्तनो छे. भ्रमरविलसितामां पण चतुष्कल संधिनां चार आवर्तनो छे. पण ते भिन्न भिन्न पर्यायोनां:

भ्रमरविलसिता: गागा गागा लललल ललगा। (छ. शा., ६, २१)

अहीं चतुष्कल संधिना त्रण पर्यायो गागा लललल अने ललगा वपराया छे. कोई एक ज लगात्मक संधिनां आवर्तनो नथी. छतां आनो मेळ मात्रामेळ

---

२. मात्रामेळी एटले मात्रामेळ छंदमां थाय छे तेवी, अर्थात् कुल मात्रा एटली ज राखीने करेली लघुगुरुनी परिवृत्ति.

३. लघु अने गुरुना स्थिर क्रमवाळुं ए अर्थमां में आ पारिभाषिक शब्द योज्यो छे.

संधिनां आवर्तनोनो बनेलो छे तेथी आ पण तोटक जेवी ज मात्रामेळी चोपाईनी जुदी लगात्मक रचना छे. आवी घणी रचनाओ छे अने ते सघळीनो मात्रामेळनी लगात्मक जातिमां समावेश थाय. एने मात्रामेळथी कोई जुदा वर्गनी गणवानी हुं जरूर जोतो नथी.

आपणा साहित्यना इतिहासमां एवुं देखाय छे के प्रथम अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो विकास पाम्यां छे, अने ते पछी आवृत्तसंधि मात्रामेळ छन्दो एटले जातिछंदो विकास पाम्या छे. एटले अहीं छन्दोनुं निरूपण ए क्रमे करीशुं. उपर वृत्त पहेलां जातिनी ओळखाण करावी ते मात्र निरूपणनी सगवड खातर. वृत्तो अने जातिओ ए बे प्रकार पछी आगळ जतां पहेलां आपणे मात्रागर्भ वृत्तोनी नोंध करवी जोईए. तेमां चरणनो अंतभाग, अक्षर-मेळ वृत्त जेवो, संधिना आवर्तन विनानो, अने स्थिर लगात्मक छे, अने चरणना प्रारंभनो भाग अमुक संख्यानी मात्रानो, एटले स्थिर लगात्मक नहीं पण पाछो मात्रासंधिवाळो पण नहीं एवो छे. आमां मुख्य वैतालीय वर्ग आवे छे. आ प्रकार तो जुदो छे, पण तेमां घणा ओछा छन्दो आवे छे, अने वळी ए वर्गना मुख्य छंदो लगात्मक रूप पामी संस्कृत वृत्तो बनी गया छे तेथी तेनुं निरूपण संस्कृत वृत्तो जोडे ज करवुं अनुकूल पडशे. अहीं आथी वधारे तेनी चर्चा आवश्यक नथी. आने के. ह. ध्रुवे मात्रागर्भ कहेल छे. ते नाम स्वीकारी आने मात्रागर्भ वृत्त कहीशुं.

हवे एक बीजो प्रकार लईए—संख्यामेळनो. तेनो प्रसिद्ध दाखलो मनहरनो छे.

मनहर के कवित

ऊंट कहे आ समानां वांका अंगवाळां भूंडां,
भूतळमां पक्षीओ ने पशुओ अपार छे;
बगलानी डोक वांकी पोपटनी चांच वांकी,
कूतरानी पूंछडीनो वांको विसतार छे;
वारणनी सूंढ वांकी वाघना छे नख वांका,
भेंसने तो शीर वांकां शींगडांनो भार छे;
सांभळी शियाळ बोल्यो दाखे दलपतराम,
अन्यनुं तो एक वांकुं आपनां अढार छे.

द. का., भा. २, पृ. ८९

आमां संधिओ छे, संधिओनां आवर्तनो पण छे. पण तेमां संधिओनुं माप अमुक मात्रा-संख्याथी नथी अपातुं पण अक्षरसंख्याथी अपाय छे. उपर आपेला मनहरमां

चारचार अक्षरोना संधिओ छे. आ कुल आठ पंक्तिओमां लखाय छे, पण खरी रीते ते ३१ अक्षरोनां चार चरणोनो छंद छे, अने दरेक चरणमां चतुरक्षर संधिनां सात आवर्तनो पछी एक ध्यक्षर संधि आवे छे. आम होवाथी ते स्थूल दृष्टिए वृत्त अने जाति बन्नेथी भिन्न देखाय छे, अने तेथी तेने एक अलग संख्यामेळ प्रकारमां आपणे गणीशुं.

आ पछी हुं जे प्रकार लेवा इच्छुं छुं. तेने हुं 'पद के देशी' एवुं अति व्यापक नाम आपुं छुं. तेनां ढाळ, गरबी, पद वगेरे सर्व गेय पद्यरचनानो समावेश करवा इच्छुं छुं. गुजराती प्राचीन अने मध्यकालीन, कहो के आखा प्रागर्वाचीन साहित्यमां आ प्रकार ज सौथी मातबर छे. अने अत्यारे पण ए बंध पड्यो नथी. कदाच पहेला जेटलो ज विपुल पण बने. आनुं एक दृष्टान्त प्रथम गरबीनुं आपुं.

चरण हरीनां रे शोभे,
जोई जोई मुनिमन मधुकर लोभे;
छबी अलौकिक रे न्यारी,
सोळे चिह्न तणी बलिहारी.

बृ. का. दो., भा. १, पृ. ८०३

'जोई' संयुक्त स्वर छे तेने एक गुरु गणवो. ए रीते नीचे प्रमाणे अहीं चतुष्कलो जणाशे: चरण ह, री नां, शोभे, जोई जोई, मुनिमन, मधुकर, लोभे, छबी अ, लौकिक, न्यारी, सोळे, चिह्न त, णी बलि, हारी. टूंकमां 'रे' आवे छे तेने बाद करतां सर्वत्र चतुष्कलो थई रहे छे. पठनमां पण आ आगळ आवी गयेली चोपाई जेवुं ज जणाशे. मात्र एमां संगीतनो अंश विशेष जणाशे अने ए संगीतना तत्त्वना प्रतीक रूपे 'रे' तरफ स्पष्ट ध्यान जशे. ए 'रे' नी मात्रा केटली अने केवी रीते गणवी, एने लीधे पिंगलनुं पिंगलत्व दूषित थयुं गणवुं के केम ए बधा प्रश्नो आ छंदप्रकारना छे. उपर करतां जराक ज वधारे अटपटी रचनानुं एक लग्नगीत लउं छुं:

एक झारा ऊपर झारी रे
ए तो कन्या थई अमारी रे

आनुं पठन पण चोपाई जेवुं जणाशे ज. आमां पण पठन करतां चतुष्कलो तरत छूटां पडतां जणाशे: झारा, ऊपर, झारी, कन्या, थई अ, मारी, ए प्रमाणे. पण बाकी रहेला 'एक' अने 'ए तो' अने 'रे'नुं शुं करवुं, एनी मात्राओ केवी रीते गणवी, वगेरे प्रश्नो आ प्रकारना छे. आ अहीं तो बहु

सादो प्रश्न छे, पण एवी घणा वधारे अटपटा प्रश्नो आनी चर्चामां आवशे. एटले मात्रामेळ रचनानी बहु नजीक होवा छतां, आ छन्दःप्रकारना प्रश्नो जुदा छे, तेनुं महत्त्व विशेष छे एटले आपणे एनो जुदो वर्ग गणीशुं.

आ उपरांत अर्वाचीन काळमां सळंग पद्यरचनाना जे जे प्रयोगो थया छे ते पण आ शास्त्रनी मर्यादामां आवे छे अने अर्वाचीन पिंगले तेनी आलोचना करवी जोईए ते आपणे यथास्थाने करीशुं.

आ प्रकरण पूरुं करवा पहेलां, पद के देशीने पिंगलनो विषय करवा सामेनी एक शंकानो निर्देश अने तेना खुलासानुं दिग्दर्शन अहीं ज करवुं योग्य छे. उपर आपेली देशीमां अमुक अमुक चतुष्को स्पष्ट जणायां, पण सळंग चतुष्को न जणायां, अने एनुं कारण तेमां संगीतनो अंश रहेलो छे एम में कह्युं. पहेला प्रकरणमां में कह्युं हतुं के पिंगल संगीतने विषय करतुं नथी. अहीं कोईने प्रश्न थाय के तो त्यारे आ छंदोनुं स्वरूप संगीतने लीधे नियत थयुं छे तेने पिंगलमां केवी रीते स्थान आपी शकाय. आनो जवाब तो पिंगळ अने संगीतनो अहीं शो संबंध छे ते संपूर्ण चर्चीए त्यारे आपी शकाय. ते यथास्थाने हुं करीश. पण अहीं एटलुं कही शकुं के पिंगलनो विषय मापने लीधे थयेली मेळबद्ध वाणी छे. ज्यां सुधी वाणीमां मेळसाधक माप होय त्यां सुधी ते पिंगलनो विषय छे. पदोमां संगीत छे अने ए संगीत पिंगलनो विषय नथी ए पण खरुं, पण मारुं एम कहेवुं छे के त्यां संगीत छतां वाणी मेळनिष्पादक मापवाळी ज छे, ए वाणी पण संधिनां आवर्तनोवाळी छे. मात्र संगीतने लीधे त्यां अक्षरोनुं माप लेवानी पद्धतिमां फेर पडे छे. एटला मात्रथी ए रचना पिंगल बहार जती रहेती नथी. एम तो में कहेलुं के अर्थ पण पिंगलनो विषय नथी, छतां अर्थनो असर पिंगल उपर छे, तेम ज संगीतनी असर पण पिंगल उपर छे. पिंगलनी दृष्टि वाणीना माप उपर ज रहेशे. पण ए प्रमाणे निरूपण करवुं जोईए.

परिशिष्ट १

वैदिक छन्दो

लौकिक छन्दोना निरूपण माटे वैदिक छन्दो निरूपवानी जरूर नथी. तो पण हमणां हमणां प्राचीन साहित्य तरफ विद्वानोनी अने कविओनी दृष्टि जाय छे, अने नवीन रीते तेनो अभ्यास थाय छे. आपणा साहित्यमां नवां योजातां वृत्तो के छन्दो उपर वैदिक छन्दोनी थोडीक पण असर छे. माटे ए

असर समजवाने उपयोगी होय तेटला पूरतुं तेनुं निरूपण अहीं टूंकमां करी जवुं हुं जरूरनुं मानुं छुं.

प्रारंभमां आपणे पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'मांथी ज वैदिक छन्दना मुख्य प्रकार दर्शावितां चार सूत्र लईए.

"गायत्र्या वसवः ।३।३।।

". . . . गायत्र्याः पादो वसवोऽष्टाक्षराणि भवन्ति। यत्र गायत्र्याः पादोऽभिधास्यते तत्राष्टाक्षरो ग्राह्यः।"

सूत्रनो अर्थ एवो छे के 'गायत्रीना पादना वसु एटले आठ अक्षरो छे.' हलायुध टीकामां ए ज कह्युं छे. 'गायत्रीनो पाद वसु एटले आठ अक्षरनो थाय छे. ज्यां गायत्रीनो पाद कहे त्यां आठ अक्षरनो समजवो.'

"जगत्या आदित्याः।३।४।।

". . . जगत्याः पादो द्वादशाक्षरो भवति। यत्र क्वचिज्जागतः पादस्तत्र द्वादशाक्षरो गृह्यते।"

'जगतीनो आदित्य एटले बार.' 'जगतीनो पाद बार अक्षरनो थाय छे. ज्यां जागत पाद एम कहेलुं होय त्यां बार अक्षरनो समजवो.'

विराजो दिशः।३।५।।

". . . यत्र क्वचिद्वैराजः पाद इत्युच्यते, तत्र दशाक्षरः प्रत्येतव्यः।

'विराजनो दिश एटले दश'. 'ज्यां वैराज्यपाद एम कह्युं होय त्यां दश अक्षरनो समजवो.'

"त्रिष्टुभो रुद्राः।३।६।।

"त्रैष्टुभपादः इत्युक्ते सर्वत्रैकादशाक्षरो गृह्यते।"

रुद्र एटले अगियार. 'त्रैष्टुभपाद एम कह्युं होय त्यारे सर्वत्र अगियार अक्षरनो पाद एम समजवुं.'

आ उपरथी जणायुं हशे के वैदिक छन्दोनां मापो मात्र अक्षरनी संख्याथी थतां. तेमां लघु-गुरुनो भेद नहोतो, तेम ज मात्रासंख्यानो नियम पण नहोतो. अमुक संख्याना अक्षरोथी अमुक पाद करवानुं, तेमां अक्षरो लघु केटला, गुरु केटला एनो नियम नहोतो.

आ अक्षरसंख्या उपर ज चालती वैदिक छन्दोनी गणना वधारे वधारे अटपटी थती जाय छे, अने ए गणना पछी मूळ छन्दोना स्वरूप उपर प्रकाश

पाडवा करतां, परिभाषाथी जाणे तेने ढांकी दे छे. अने ते मारा विषयने उपयोगी नथी. सद्‌गत के. ह. ध्रुवे आ आखा विषयने पिंगलदृष्टिए सारी रीते चर्च्यो छे अने तेनो निष्कर्ष ज अहीं आपणे प्रस्तुत छे.

के. ह. ध्रुव वैदिक छन्दोनी आलोचनामां वेदनां बीजभूत चरणो त्रण ज गणे छे. पांच अक्षरनुं, आठ अक्षरनुं अने अगियार अक्षरनुं. तेनां दृष्टान्तो जोवा पहेलां वैदिक ऋषिओना पठननी केटलीक छूट के विशेषताओ समजवी जोईए. एकाद अक्षर खूटतां पठनमां यकार अने वकारनुं संप्रसारण थई खोट पुराती. कोई प्रसंगे अंत्य आनी जगाए अआ उच्चारातो. पदान्त विरामना संकेतथी अंत्य ह्रस्व स्वर दीर्घ उच्चारातो. क्वचित् एकाद वधारे अक्षर निभावी लेवातो. (प. ऐ. आ. पृ. ७४)

हवे ध्रुवनुं ज विराजनुं दृष्टान्त लउं छुं:

एमिर्नो अर्कै-
र्भवा नो अर्वाङ्
स्वर्णज्योतिः
अग्ने विश्वेभिः
सुमना अनीकैः॥ प. ऐ. आ., पृ. ७५

अहीं पाठमां त्रीजी पंक्तिमां 'स्वर्ण' ने बदले 'सुवर्ण' उच्चार करी पंचाक्षर पूरा करवाना छे. छेल्ली पंक्तिमां एक अक्षर वधारे छे. अवतरणोमां में स्वर-चिह्नो राख्यां नथी.

आने ध्रुव केवला विराज एवुं नवुं नाम आपे छे. एनुं कारण ए छे के अति प्राचीन कालथी आ बीजभूत वैराज पदना सळंग पाठथी बननारां बे पदनो द्विपदा विराज नामे छन्द बने छे. पिंगलनां सूत्रोमां आपणे जोवुं के तेमां वैराज पदना दश अक्षरो कह्या छे. अने दृष्टान्तो पण एनां ज मळी आवे छे, जे आपणे आ पछी जोईशुं. पण बीजभूत विराज पांच अक्षरना पादनो ज हतो अने तेने द्विपदाथी जुदो पाडवा ध्रुव तेने केवला विराज कहे छे. ए केवला विराजनां दृष्टान्तो क्यांक ज टकी गयेलां छे. तेमांथी तेमणे उपरनुं दृष्टान्त आपेलुं छे. छान्दसो एने पचीस अक्षरनी पदपंक्ति गणे छे. (छ. शा. नि. ३, ४६) पण ए विराजना मूळभूत स्वरूपनी साक्षी आपतो मंत्र छे.

हवे नीचे ध्रुवे उतारेलां द्विपदा विराजनां दृष्टान्तो उतारुं छुं:

वनेम पूर्वीरर्यो मनीषा
अग्निः सुशोको विश्वान्यश्याः। १

आ दैव्यानि व्रता चिकित्वा–
ना मानुषस्य जनस्य जन्म। २
गर्भो यो अपां गर्भो वनानां
गर्भश्च स्थातां गर्भश्चरथाम्। ३
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे
विशां न विश्वो अमृतः स्वाधीः। ४
स हि क्षपावां अग्नीरयीणां
दाशद् यो अस्मा अरं सूक्तैः। ५
एता चिकित्वो भूमानि पाहि
देवानां जन्म मर्तांश्च विद्वान्। ६
वर्धान् यं पूर्वीः क्षपो विरूपाः।
स्थातुश्चरथ ममृतप्रवीतम्। ७
अराधि होता स्वर्निषत्तः
कृण्वन् विश्वान्यपांसि सत्या ८
गोषु प्रशस्तिं वनेषु धिषे
भरन्त विश्वे बलिं स्वर्णः ९
वित्वा नरः पुरुत्रा सपर्यन्
पितुर्न जिव्रे वि वेदो भरन्त। १०
साधुर्न गृध्नुरस्तेव शूरो
यातेव भीमस्त्वेषः समत्सु। ११

एजन, पृ. ७६

आ दृष्टान्तो आपी ध्रुव लखे छे: "ऊतारेलां दृष्टान्त विचारतां निष्कर्ष ए नीकळे छे के वैराज पद मूळे पांच वर्णनूं हशे; ते उपरथी द्विपदा विराजनूं दस वर्णनूं पद ऋक्कालमां ज उद्‌भव्यूं हशे, ते मुखपाठमां पाछळथी वीस वर्णनूं अंकायूं हशे." (प. ऐ. आ. ७६-७७) आगळ जोईशुं तेम वेदमां छन्दोनां मिश्रणो थतां. तेवो एक मिश्र छन्द ध्रुवे उतारेलो छे, जे पण पंचाक्षर केवला विराजनी साक्षी पूरे छे:

अग्ने तमद्या–
श्वं न स्तोमैः
क्रतुं न भद्रम्।
हृदिस्पृशं ऋध्या मा त ओहैः।

प. ऐ. आ., पृ. ७५

अहीं त्रण वैराज पदो साथे एक त्रैष्टुभनुं मिश्रण छे. 'ऋद्ध्या'मांना 'य'नुं संप्रसारण करवाथी अगियार अक्षरो थई रहेशे. 'ऋद्-धिया' ए प्रमाणे.

हवे गायत्रीनां उदाहरणो लईए:

अग्निमीळे पुरोहितं
यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्॥

एजन, पृ. ७९

बीजां केटलांक बरूआए आपेलां दृष्टान्तो उतारुं छुं:

वायवा याहि दर्शत
इमे सोमा अरंकृता।
तेषां पाहि श्रुधी हवम्॥
सदसस्पतिमद्भुतं
प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्।
सनिं मेधामयासिषम् ॥

बीजी ऋचामां 'काम्यम्' ने बदले 'कामियम्' उच्चार करवाथी आठ अक्षरो पूरा थई रहेशे. (बरुआ पृ. २४, २५) आपणी उपनयनदीक्षानी प्रसिद्ध गायत्रीमां पण आ प्रमाणे एक पादमां अक्षर उमेरवो पडे छे:

तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

'वरेण्यम्'नो उच्चार'वरेणियम्'करवानो होय छे. ते उपरांत एक गायत्री नीचे उतारुं छुं:

परा हि मे विमन्यव:
पतन्ति वस्य इष्टये।
वयो न वसती रुप॥

हवे अनुष्टुपनुं दृष्टान्त भ्रुवनुं ज उतारुं छुं:

यत् पर्जन्य कनिक्रदत्
स्तनयन् हंसि दुष्कृतः।
प्रतीदं विश्वं मोदते
यत् किंच पृथिव्यामधि।

प. ऐ. आ. पृ. ७९

बरूआनां थोडां दृष्टान्तो उमेरुं छुं:

विद्मा हि त्वा वृषंतमं, वाजेषु हवन श्रुतम्।
वृषंतमस्य हूमहे ऊर्ति सहस्रसातमाम्॥
एतु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि।
पराङ मित्र एषतु अर्वाची गौरुपेषतु॥

बरूआ पृ. ४१

हवे त्रिष्टुभनां दृष्टान्तो लईए:

चित्रं देवानामुदगादनीकं
चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं
सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च॥

प. ऐ. आ., पृ. ८०

बरूआनुं एक दृष्टान्त उमेरुं छुं:

पितुश्चिदूधर्जनुषा विवेद
वि अस्य धारा असृजद् वि धेनाः।
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिः।
दिवो यह्वीभिर्न गुहा बभूव॥

बरूआ पृ. ५७

त्रिष्टुभमां एक ज अक्षर उमेरवाथी जगती थाय छे. दृष्टान्त, के. ह. ध्रुवनुं ज लउं छुं:

यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं
नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्मना।
अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे
य एको वस्वो वरुणो न राजति॥

प. ऐ. आ., पृ ८१

वधारे लेवानी हुं जरूर जोतो नथी.

आना स्वरूप विशेनी ध्रुवनी चर्चा अने अभिप्रायो तथा निर्णयो आपणे जोई जईए. तेओ कहे छे के पदान्ते शब्द पूरो थवो जोईए ए वैदिक छन्दोमां सार्वत्रिक नियम छे, तेमां मात्र विराजना त्रण अपवादो मळे छे. ते विशे तेओ कहे छे के, "बीजा कोई पण आर्चिक छन्दमां नहि ने विराज्मां आ छूट लेवाती

जोवामां आवे छे; तेथी वैराज पद्यरचनानी, अर्थात् विराज छन्दनी उत्पत्ति विनअपवादे पदांते विराम स्वीकारनारा गायत्री आदि बीजा बधा छंदना पूर्वे थयेली संभवे छे." (प. ऐ. आ., परिच्छेद १४, पृ. ८२)

पदान्त अक्षरो विशे तेओ आगळ चर्चा करे छे : "गायत्री आदि छंदना चरणनी समाप्तिए आवेलो वर्ण ह्रस्व होय, तो पण ते स्वाभाविक रीते ज दीर्घ बोलाई विवर्धित थतो हतो; तेथी पदान्ते विरामना संकेत माटे विवर्धितनी योजना मूळे थई जणाय छे. पछीथी 'द्विर्बद्धं सुबद्धम्।' ए न्याये एक ज वर्णमां नहीं पण छेल्ला बे वर्णमां अने तेथी आगळ वधी त्रण वर्णमां ए संकेत रूढ थयो जोवामां आवे छे. सदर संकेत सूचवनार वर्णने हुं स्थिरवर्ण कहुं छुं." (एजन, परि० १५, पृ. ८२) तेओ आ रीते आगळ कहे छे के वैराज पदमां मात्र छेल्लो गुरु ज पदान्त सूचववा स्थिर थयो हतो; गायत्रीमां छेल्ला बे अक्षरो लघु अने गुरु ए रूपे अने ए क्रमे स्थिर थया हता, अनुष्टुपमां गायत्रीना ज बे अक्षरो लघुगुरु स्थिर थता हता, पण विषमपदो, लघुगुरु तरफथी बे गुरु तरफ ढळतां जाय छे. त्रिष्टभना छेल्ला त्रण अक्षरो एक लघु अने बे गुरु रूपे, अने जगतीमां गुरु-लघु-गुरु ए रूपे स्थिर थता जता जणाय छे. अने आ स्थिर अंश पदान्त व्यक्त करवा माटे योजातो. लघुगुरुना स्वरथी कोई विशिष्ट संवाद उपजाववाना प्रयोजनथी नहीं. (अेजन पृ. ८२-८३) अहीं गायत्रीमां तेमणे स्थिर भाग अंत्य बे अक्षरनो बताव्यो छे पण मने छेल्ला चार अक्षर जेटलो लागे छे. उपरना दाखलामां जोईशुं तो गायत्रीमां अंते लघु-गुरुना द्विकनां बे आवर्तनो स्थिर जणाशे : तत्सवितुर्वरेणियं, भर्गो देवस्य धीमहि, ।धियो यो नः प्रचोदयात्। एमां 'वरेणियं', 'स्य धीमहि', 'प्रचोदयात्' त्रणेय लघु-गुरु-लघु-गुरु ए क्रमे छे,—अलबत बचला चतुष्कनो अंत्य 'हि', पदान्त होई गरु गणवानो छ. अनुष्टुपना समपादनो अंत्य स्थिरभाग गायत्रीनो ज छे एटले त्यां पण आ ज चार लघु-गुरु-लघु-गुरु स्थिर थता जाय छे. अने अनुष्टुपना विषममां उपान्त्य गायत्रीनो मूळ लघु, गुरुना तरफ ढळतो जाय छे. एटले विषम पादनो स्थिर अंश लघु पछी त्रण गुरुओनो थाय छे, एम हुं मानुं छुं. ए रीते वेदकालथी ज अनुष्टुप शिष्ट अनुष्टुप तरफ ढळतो जाय छे एम हुं मानुं छुं.[1] त्रिष्टुपमां पदान्त त्रण अक्षरो लघु-गुरु-गुरुरूपे स्थिर थाय छे ए खरु. पण जगतीमां ए स्थिर अंशमां उपान्त्य लघु उमेराय छ एम हुं

१ आने Macdonell's 'A Vedic Grammar for Students' नो टेको छे. ते कहे छे: 'Thus the prevailing scheme of the whole verse is ⏓ – ⏓ – । ⏑ – ⏑ ⏓ ।' p. 438.

मानुं छुं एटले के जगतीमां छेल्ला चार अक्षरो स्थिर बने छे, अने ते लघु-गुरुना द्विकनां बे आवर्तनो रूपे. उपर आपेला जगतीना दृष्टान्तमां छेल्ला चार अक्षरो रूपे स्थिर जणाशे.

मूळ प्रकृतिभूत विराज, गायत्री अने त्रिष्टुभ शब्दोमां पण ध्रुव अमुक संबंध जुए छे. "वैराज पदमां त्रण अक्षरना वधाराथी गायत्र पद थयुं. तेनो जे नवो छन्द बन्यो ते सामगानने अनुकूळ नीवड्यो अने, गायत्री एटले सामना रूपमां गोठवाय एवी छंदोमयी वाणी, एवा अर्थवाहक नामथी ओळखायो. . . . . अनुष्टुभ् अने त्रिष्टुभ् शब्दनी घटनामां नजरे पडतो 'स्तुभ' शब्द छूटो वपरायेलो मळी आवतो नथी. परंतु ते स्तुतिवाचक स्तुभ् धातु उपरथी उत्पन्न थई एक काळे वपरातुं स्त्रीलिंग धातुनाम होवुं जोइए. . . . गायत्र त्रण पद पछी (अनु) जेमां एक पद (स्तुभ्) अधिक आवे, ते अनुष्टुभ्. आनाथी स्हेज जुदो त्रिष्टुभ्नो विग्रह छे. ए शब्दने हुं 'शाकपार्थिव'ना जेवो मध्यम-पदलोपी समास समजुं छुं. अष्टवर्ण गायत्र पदमां त्रण वर्ण जेमां वधित होय ते, अर्थात् एकादशवर्ण पदनो छंद, ते त्रिष्टुभ्." (प. ऐ. आ., पृ. ९२)

अहीं ध्यान खेंचे तेवी बे वात छे. एक ए के त्रिपदा गायत्रीमांथी चतुष्पद अनुष्टुप थयो. सामान्य पठनथी पण आ वात तरत स्वीकाराय एवी लागे छे. पण अनुष्टुपमांथी त्रिष्टुभ थयो ए वात पठनसंस्कारो जोतां स्वीकार्य जणाती नथी. अनुष्टुभ् अने त्रिष्टुभ शब्दोनो शब्दो तरीके संबंध छे, अने शब्दोना संबंध विशेना एमना तर्कनुं विद्वानो जे वत्तुंओछुं मूल्य आंके ते खरुं पण पठनना संस्कारो जोतां मने, त्रिष्टुभने द्विपदा विराज साथे वधारे संबंध जणाय छे. द्विपदा विराज, त्रिष्टुभ, अने इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा, एम मने विकासक्रम जणाय छे. मारो अभिप्राय दृष्टान्तोथी स्पष्ट करवा प्रयत्न करुं.

विराजना पंचाक्षर बीजनां आगळ आपेलां दृष्टान्तो अने बीजां दृष्टान्तोमां अनेक वार पाठ करतां मने ए पंचाक्षरनुं मध्यलघु पंचकमां परिणमवानुं वलण बहु स्पष्ट जणाय छे. मध्यलघु पंचक एटले गुरु-गुरु-लघु-गुरु-गुरु. आगळ आवी गयेलां दृष्टान्तोमांथी ज हुं दाखला लईश. पठनमां घटता अक्षरो पूरीने नीचे पाठ उतारुं छुं. पंचके पंचके अल्पविराम करुं छुं:

१	वनेम पूर्वी, र्या मनीषा,	२
३	अग्निः सुशोको, विश्वानियश्याः,।	४
५	आ दैवियानि, व्रता चिकित्वा –,	६
७	ना मानुषस्य, जनस्य जन्म॥	८

कुल आठ पंचकोमांथी २, ३, ४, ५, ७ ए संख्यावाळां पंचको मध्यलघु छे. बाकीनां बेमां एटलो ज फरक छे के पंचकनो प्रथमाक्षर गुरुने बदले लघु छे, तेम छतां पठनना संस्कारो स्पष्ट रीते मध्यलघु पंचकना आवर्तनो जेवा पडशे. आ रचना इन्द्रवज्रानी बहु ज निकट छे. इन्द्रवज्रामां आदिमां तो विराजन् पंचक ज आवे छे, अने ते पछी विराजना पंचकना पहेला गुरुनी जगाए बे लघु आवे छे. वेदमां कोई वार एकाद अक्षर वधारे आवतो, जेम के आगळ आवी गयेल 'सुमना अनीकैः।' आवु बे लघुवाळुं षट्क विराजना पंचकने लगाडो तो बरावर इन्द्रवज्रा थई रहे:

"अग्निः सुषोको" "सुमना अनीकैः"

अहीं बीजा पंचकना आद्य गुरुने स्थाने बे लघु आववाथी पंक्तिनो मेळ पण वधारे सुन्दर बने छे. एक तो तेथी बे आवर्तनोनी एकविधता टळे छे. बीजुं बन्ने पंचको भेगा करतां वचमां चार गुरुओ भेगा थई जाय; अनावृत्तसंधि अक्षरमेळने ए भारे पडे. आपणे आगळ जोईशु के आ वृत्तोमां चार गुरुओ भेगा थतां यति आव्या विना रहेती नथी. ए आपत्तिथी उपरना षट्कथी बची जवाय छे. विराजमां कोई कोई पंचकमां आद्य गुरु स्थाने लघु पण आवतो, जेम के उपर उतारेल 'बनेम पूर्वी', अने एवु पंचक आदिमां आवतां उपेन्द्रवज्रा बने. ए प्रमाणे बधी रीते विचार करतां इन्द्रवज्रा विराजना पंचकमांथी ज ऊतरी आवेल जणाय छे.

आ तर्कने एक बीजी रीते पण टेको मळे छे. वेदमां जे त्रिष्टुभोमांथी इन्द्रवज्रादि विकास पाम्यां तेमां पांच अक्षरे घणे भागे यति आवती. मेकडोनल कहे छे: 'Verses of eleven syllables . . . have caesura, which follows either the fourth or the fifth syllable.' ('A Vedic Grammar for Students', by A. A. Macdonell, p. 440.) अर्थात् अगियार अक्षरना छन्दमां यति होय छे जे चोथा के पांचमा अक्षर पछी आवे छे. आमां चोथा अक्षर पछी आवती यतिवाळा वैदिक छन्दोमांथी शालिनी विकास पाम्यो, अने पांचमा अक्षर पछी आवती यतिवाळा छन्दोमांथी इन्द्रवज्रा वगेरे. संस्कृत साहित्यमां पण बहु ज प्रसन्न पठनवाळा छन्दमां आ यति जणाय छे, जेम के:

कर्पूरगौरं　करुणावतारं
संसारसारं　भुजगेन्द्रहारं।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
भवं भवानीसहितं नमामि॥

पटवर्धन इन्द्रवज्रादि वृत्तोमां पांचमे यति जेवुं चिह्न मूके छे (जुओ 'छन्दोरचना' पृ० १११), अने वर्वे इन्द्रवज्रा वगेरेमां पांचमे यति कहे छे. (गायनवादन पाठमाळा, पु. १., वि. ३, पृ० ९), तेने हुं पठनमां रही गयेल विराजनुं अवशेष गणुं छुं.

अलबत्त मारो आ मात्र तर्क छे. पठनना संस्कारोना साम्य उपरथी आवो तर्क बांधवा हुं ललचायो छुं. वैदिक छंदो मारो मुख्य विषय न होवाथी मात्र तेनो उल्लेख करी हुं आगळ चालुं छुं.

के० ह० ध्रुव कहे छे के वैदिक छन्दो त्रण रूपे मळे छे. शुद्ध रूपे एटले के ज्यां बधी पंक्ति एक ज छन्दनी होय ते. आगळ आवी गयेलां एक (अग्ने०वाळुं) सिवाय बधां दृष्टान्तो शुद्ध रूपनां छे. बीजुं रूप ते मिश्ररूप जेमां बे जुदा जुदा छन्दोनां मिश्रणो होय छे. हुं एमनां ज दृष्टान्तो लउं छुं:

अग्ने वाजस्य गोमत –
ईशानः सहसो यहो।
अस्मे धेहि जातवेदो मही श्रवः॥

अहीं बे गायत्रीनां अने एक जगतीनुं पद छे.

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषज –
मपामुत प्रशस्तये।
देवा भवत वाजिनः॥

पहेलुं जगतीनुं, अने पछी बे गायत्रीनां पदो छे.

अबाहीन्द्र गिर्वण
उप त्वा कामान् महः संसृज्महे ।
उदेव यन्त उदभिः॥

पहेलुं अने त्रीजुं गायत्रीनुं पद छे, वचलुं जगतीनुं.

स नो नेदिष्ठं ददृशान आ भरा –
ग्ने देवेभिः सचनाः सुचेतना
महो रायः सुचेतुना
महि शविष्ठ नस्कृधि
संचक्षे भुजो अस्यै।
महि स्तोतृभ्यो मघवन्त्सुवी
र्यमथीरुग्रो न शवसा॥

અહીં પહેલું બીજું અને છઠ્ઠું જગતીનું પદ છે. બાકીનાં ગાયત્રીનાં છે. (પ. એ. આ., પૃ. ૮૬-૮૮) આ બધા મિશ્ર છંદોને વૈદિક પિંગલ જુદાં જુદાં નામો આપે છે.

શુદ્ધ અને મિશ્ર છન્દ પછી વિચારણીય ત્રીજો પ્રકાર પ્રગાથને નામે જાણીતા સંમિશ્ર છંદનો આવે છે. અહીં પણ ધ્રુવનાં જ દૃષ્ટાન્તો ઉતારું છું:

आ नो अश्वावदश्विना
वर्तिर्यासिष्टं मधुपातमा नरा।
गोमद् दस्रा हिरण्यवत्॥
सुप्रावर्गं सुवीर्यं सुष्ठु वार्य—
मनाधृष्टं रक्षस्विना॥
अस्मिन्नावामायाने वाजिनीवसू
विश्वा वामानि धीमहि॥

આમાં એકી પંક્તિ ગાયત્રીની છે, અને બેકી જગતીની છે. એક બીજું દૃષ્ટાન્ત:

द्युम्नी वां स्तोमो अश्विना
क्रिविर्न सेक आगतम्।
मध्वः सुतस्य स दिवि प्रियो नरा
पातं गौराविवेरिणे॥
पिबतं घर्मं मधुमन्तमश्विना
बर्हिः सीदतं नरा।
ता मन्दसाना मनुषो दुरोण आ
नि पातं वेदसा वयः॥

અહીં ૩, ૫, ૭ એ પદો જગતીનાં છે. બાકીનાં ગાયત્રીનાં છે. (પ. એ. આ., પૃ. ૮૮-૮૯) ધ્રુવ માને છે કે સામગાનમાં ગવાવાને લીધે આનું નામ પ્રગાથ પડેલું છે. (એજન, પૃ. ૯૩)

આ ઉપરથી વૈદિક ઋષિઓ છન્દોનાં મિશ્રણો કેવી રીતે કરતા તેનો ખ્યાલ આવશે. આ ઉપરાંત હવે એક જ વિશેષ વાત કહેવાની રહે છે. આપણે જોઈ ગયા કે વૈદિક ઋષિઓને અમુક નિયત સંખ્યાનાં ચરણોથી થતા શ્લોકના એકમનો બરાબર ખ્યાલ છે. પણ તે સાથે તેઓ ભિન્ન ભિન્ન છન્દના એક કે બે પાદનો પણ એકમ સ્વીકારતા. આવો સ્વીકાર મિશ્ર છન્દોની રચનામાં જ ગર્ભિત રીતે આવી જાય છે. કારણ કે તેમાં જુદા જુદા છન્દોનાં છૂટાં એક કે બે પાદો મળી આવે છે. પણ એવો સ્વીકાર પિંગલમાં સ્પષ્ટ રૂપે પણ મળે છે.

पिंगलना वैदिक विभागमां एवुं सूत्र छे: "एकद्वित्रिचतुष्पादुक्तपादम्। ३।७॥" तेना उपर हलायुधनी टीका: "एभिश्चतुर्भिर्लक्षणैरुक्तः पादो यस्य तत् 'उक्तपादम्' छन्दः। यस्य च्छन्दसो यादृशः पादः परिभाषितस्तच्छन्दसस्तेनैव पादेन क्वचिदेकपात् क्वचिद्द्विपात् क्वचित्त्रिपात् क्वचिच्चतुष्पाद् भवति।" 'परिभाषामां जे छन्दो गायत्री, जगती, विराज, त्रिष्टुभ कह्या ते छन्दना एक पाद वडे ते छन्द एकपाद, बे पाद वडे ते छन्द द्विपाद, त्रण पाद वडे ते छन्द त्रिपाद अने चार पाद वडे ते छन्द चतुष्पाद थाय छे.' बरूआ आ स्वीकारे छे अने दरेकना दाखला आपे छे: एकपदा गायत्रीनां बे दृष्टान्तो

(१) उर्वन्तरिक्षमन्विहि॥
(२) इन्द्रो विश्वस्य राजति॥

द्विपदा गायत्रीनां बे दृष्टान्तो:

(१) पवस्व सोम मन्दयन्
इन्द्राय मधुमत्तमः॥
(२) देवस्य सवितुः सवे
कर्म कृण्वन्ति वेधसे॥

बरूआ पृ. २७

बरूआ एकपदा त्रिष्टुभ अने द्विपदा त्रिष्टुभनां दृष्टान्तो पण आपे छे. (बरूआ पृ. ६०–६१)

सद्गत एम० कृष्णमाचारियारना संस्कृत साहित्यना इतिहासना **History of Classical Sanskrit Literature** ना पुस्तकमां २८ मा छन्दोविचितिना प्रकरणमां पृ० ९०० मे नीचेनुं अवतरण छे: "**The following passage from Mahabhasya is instructive:** 'तथा छन्दो ग्रन्थोऽप्युपयुज्यते छंदोविशेषाणां तत्र तत्र विहितत्वात्। तस्मात्सप्तचतुरुत्तराणि छंदांसि प्रातरनुवाकेऽनूच्यंत इतिह्याम्नातं। गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बृहतीपंक्तित्रिष्टुब्जगतीत्येतानि सप्तछंदांसि। चतुर्विंशत्व-(त्य)क्षरा गायत्री। ततोऽपि चतुर्भिरक्षरैरधिकाष्टाविंशत्यक्षरोष्टिक्। एवमुत्तरोत्तराधिका अनुष्टुबादयोऽवगंतव्याः। तथान्यत्रापि श्रूयते। गायत्रीभिर्ब्राह्मणस्यादध्यात् त्रिष्टुभीराजन्यस्य जगतीभिर्वैश्यस्येति। तत्र मगणयगणादिसाध्यो गायत्र्यादिविवेकच्छंदोग्रंथमंतरेण न सुविज्ञेयः। किं च यो ह वा अविदितार्षेयच्छंदोदैवत ब्राह्मणेन मंत्रेण याजयति वाध्यापयति वा स्थाणुं वर्छति-

गर्तं वा पद्यदि प्रवामीयते पापीयान् भवति। तस्मादेतानि मंत्रे मंत्रे विद्यादिति श्रूयते। तस्मात्तद्वेदनाय छंदोग्रन्थ उपयुज्यते।' "

आ अवतरण कया मुद्दा उपर आप्युं छे, ते समजातुं नथी. गायत्री वगेरे वैदिक छन्दो मगणयगण वगेरे गणोना लक्षणवाळा छे एवो अभिप्राय होय तो ते अयथार्थ छे. आने विशे विशेष अन्वेषण अवश्य छे. कारण के मने आ पंक्तिओ महाभाष्य जोतां मळी नथी. महाभाष्यना खास विद्वान श्री भागवत शास्त्री व्याकरणाचार्य जेमणे महाभाष्यनुं संपादन कर्युं छे तेओ जणावे छे के आ पंक्तिओ महाभाष्यमां छे नहीं. अमदावाद, ब्रह्मचारीनी वाडीना, पंडित सत्यदेव मिश्र व्याकरणाचार्य पण एम ज जणावे छे अने कहे छे के 'तत्र तत्र विहितत्वात्' ए शैली महाभाष्यना समयमां हती नहीं. कृष्णमाचारियारना पुत्र श्री एम. श्रीनिवासाचारियारने पुछावतां तेमणे कशो जवाब आप्यो नथी. एटले आ वात अहीं ज अटके छे.

परिशिष्ट २

छन्दोना प्रकार : पूर्वचर्चा

अत्यार सुधीनां पिंगलोए छन्दोना कया कया प्रकारो गण्या छे ते टूंकमां जोई जवा अस्थाने नथी.

पिंगले रचेला अने प्राचीन गणाता 'छन्दःशास्त्र'ना ग्रन्थमां आगळ बताव्युं तेम प्रथम वैदिक अने लौकिक एवा छन्दोना बे प्रकारो छे. लौकिकना प्रकारोनी चर्चा 'छन्दःशास्त्र'नी 'भूमिका'मांथी हुं उतारुं छुं.

"(१) तत्र पद्यजातं द्वेधा — वृत्तं जातिश्च। यत्र नियतवर्णव्यवस्थया छन्दःसिद्धिस्तद् वृत्तं। यत्र तु नियतमात्राव्यवस्थया छन्दःसिद्धिः सा जातिः। तथा चाह नारायण :—

पद्यं चतुष्पदी तच्च वृत्तं जातिरिति द्विधा।
वृत्तमक्षरसंख्यातं जातिर्मात्राकृता भवेत्॥"

'पद्य बे प्रकारनुं छे. वृत्त अने जाति. जेमां नियतवर्णनी व्यवस्थाथी छन्द सिद्ध थाय ते वृत्त. जेमां नियतमात्रानी व्यवस्थाथी छन्द सिद्ध थाय ते जाति. नारायणे एम कह्युं छे : 'पद्य चार पदनुं छे, ते वृत्त अने जाति एम बे प्रकारनुं छे. अक्षरनी नियत संख्यावाळुं ते वृत्त, अने जाति मात्राथी थाय."

"(२) परे तु वृत्तिर्जातिरिति द्वेधा विभज्य तयोरुभयोरेव वृत्तशब्देन छन्दःशब्देन च सामान्यतो व्यपदेशमिच्छन्ति। वर्णवृत्तं वर्णच्छन्दः, मात्रावृत्तं मात्राच्छन्द इति। तथा चैषां मते छन्दोवृत्तशब्दयोः च पर्यायवाचित्वम्।"

'बीजाओ वृत्त अने जाति एम बे विभागो करीने बन्नेने वृत्त अने छन्द शब्दनुं नाम आपवुं इष्ट गणे छे. जेम के वर्णवृत्त, वर्णछन्द, मात्रावृत्त, मात्राछन्द. तेमना मते छन्द अने वृत्त शब्द पर्यायी छे.'

"(३) छन्दःपरिमलकारस्तु तयोः पर्यायार्थत्वं प्रत्याख्याय—'मात्राक्षरसंख्यया नियता वाक् छन्दः, गलसमवेतस्वरूपेण नियता वाग् वृत्तम्।' इत्येवं व्यवस्थापयति। तथा च मन्यते :—

'उक्तात्युक्ता तथा मध्या प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठिका।
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् च बृहतीपंक्तित्रिष्टुभः॥
जगती चातिजगती शक्वरी चातिशक्वरी।
अष्टयत्यष्टी धृतिः सातिः कृतिः प्रकृतिराकृतिः॥
विकृतिः संकृतिश्चातिकृतिरुत्कृतिदण्डकाः।
एतानि वर्णच्छन्दांसि तद्भेदानां तु वृत्तता॥
एवमेव गणादीनां मात्राच्छन्दस्त्वमिष्यते।
तदवान्तरभेदानां जातित्वमिति सिद्ध्यति॥'"

'छन्दःपरिमल'नो कर्ता ए शब्दो पर्याय होवानो निषेध करे छे. मात्राक्षरनी संख्याथी नियत थयेली वाणी ते छन्द, अने गल (गुरुलघु) समवेत स्वरूपथी नियत थयेली ते वृत्त एम कहे छे. ए प्रमाणे व्यवस्था करे छे, अने माने छे' के वगेरे. आ श्लोकमां उक्तादि छव्वीस वर्गो गणाव्या छे. एवी बधारे अक्षरोनां वृत्तोने ते दंडको कहे छे. ए बधा वर्णछन्दो छे. ए प्रकारोना भेदोने ते वृत्तो कहे छे. अर्थ एवो छे के १२ अक्षरनो वर्णछन्द ते जगती. पछी तेना पेटामां आवता इन्द्रवंशा, वंशस्थ, द्रुतविलंबित ए बधां वृत्तो. ते ज प्रमाणे अमुक संख्यानी मात्राना छन्दो ते मात्राछन्दो, अने तेना अवान्तर भेदो ते जाति. वृत्तनो अने जातिनो आवो अर्थ पण छे ते नोंधवा जेवुं छे.

"(४) अपरे तु पुनरन्यथा विभज्य व्याचक्षते। तथा हि—पद्यच्छन्दस्तावत्त्रेधा—वैदिकं च लौकिकं च उभयसाधारणं च। तत्र लौकिकं पुनस्त्रेधा—गणच्छन्दः, मात्राच्छन्दः, अक्षरच्छन्दश्चेति। तथा चोक्तम—

'आदौ तावद्गणच्छन्दो मात्राच्छन्दस्ततः परम्।
तृतीयमक्षरच्छन्दश्छन्दस्त्रेधा तु लौकिकम्॥

आर्याद्युद्गीतिपर्यन्तं गणच्छन्दः समीरितम्।
मात्राच्छन्दश्चूलिकान्तमौपच्छन्दसिकादिकम्।
समान्याद्युत्कृति यावदक्षरच्छन्द एव च॥' इति"

'बीजाओ वळी बीजी रीते विभागो करे छे. आ प्रमाणे:

पद्यछन्दना त्रण प्रकारो (१) वैदिक, (२) लौकिक, अने (३) उभयसाधारण. तेमां लौकिकना वळी त्रण प्रकार (१) गणछन्द, (२) मात्राछन्द, (३) अक्षरछन्द. कह्युं छे के:— पहेलो गणछन्द. ते पछी मात्राछन्द. त्रीजो अक्षरछन्द. एम लौकिक त्रण प्रकारनो. आर्याथी उद्गीति सुधीना गणछन्दो कहेवाय छे. औपच्छन्दसिकथी चूलिका सुधीना मात्राछन्द. समानीथी उत्कृति सुधीना अक्षरछन्द.' अहीं गणछन्द कह्यो छे ते आपणा आवृत्तसंधिमात्रामेळ छे. गण शब्द संधिना अर्थनो अहीं छे. मात्राछन्द ते मात्रागर्भ छे. अने अक्षरछन्द ते वृत्तो छे. उपर कह्युं तेम लगात्मक जातिओ साथेनां.

"(५) परे तु पद्यच्छन्दश्चतुर्धा — अक्षरच्छन्दः, मात्राच्छन्दः, अक्षरगणच्छन्दः, मात्रागणच्छन्दश्चेति भेदात्। यत्र मात्राणां न्यूनातिरेकेऽप्यक्षरसंख्यानं तंत्रं तदक्षरच्छन्दः। यथा वेदे बहुलं प्रयुक्तं गायत्रीत्रिष्टुब्जगत्यादि। यत्राक्षराणां न्यूनातिरेकेऽपि मात्रासंख्यानं तंत्रं तन्मात्राछन्दः – यथौपच्छन्दसिकवैतालीयादिकम्। यत्र पुनरक्षरगणानां क्रमसंनिविष्टानां व्यवस्थया स्वरूपसिद्धिस्तत्राक्षराणां गुरुलघुस्थानानां च नियतत्वादक्षरगणच्छन्दस्त्वेन व्यवहारः। यथेन्द्रवज्रास्रग्धरावसन्ततिलकामन्दाक्रान्तादि। अथ यत्र मात्रागणानां क्रमसंनिविष्टानां व्यवस्थया छन्दःसिद्धिस्तत्राक्षरनियमाभावान्मात्रागणच्छन्दस्त्वेन व्यवहारः। यथा आर्यादोहाकुंडलिकादि — इत्येवं पश्यन्ति।"

छ. शा. नि. भूमिका पृ. ४७–४८

'बीजा केटलाक पद्यछन्दने चार प्रकारनो गणे छे: अक्षरछन्द, मात्राछन्द, अक्षरगणछन्द, अने मात्रागणछन्द. जेमां मात्रा न्यूनाधिक थाय तोपण अक्षरसंख्या एक ज रहे एवुं जे छन्दोनुं तंत्र छे ते अक्षरछन्द. जेम के वेदमां अनेक वार प्रयोजाता गायत्री, त्रिष्टुभ, जगती वगेरे. जेमां अक्षरो न्यूनाधिक थतां मात्रासंख्या एक ज रहे एवुं तंत्र छे ते मात्राछन्द, जेम के औपच्छन्दसिक, वैतालीय वगेरे. जे छन्दो, अमुक क्रममां आवता अक्षरगणोथी सिद्ध थाय छे ते गुरु-लघुस्थानना नियतपणाने लीधे अक्षरगणछन्दने नामे बोलावा जोईए. जेम के इन्द्रवज्रा, स्रग्धरा, वसन्ततिलका, मन्दाक्रान्ता वगेरे. जे छन्दो, अमुक क्रममां आवता मात्रागणोथी सिद्ध थाय छे, ते, तेमां अक्षरनियम न होवाथी मात्रागणछन्दने नामे बोलावा जोईए. जेम के आर्या, दुहो, कुंडळियो वगेरे. एम कहे छे.' आ विभागो ठीक ठीक स्पष्ट जणाय छे. आमां वैदिक छन्दोनुं

स्वरूप टूंकमां पण बहु स्पष्ट दर्शाविलुं छे. अने बाकीना विभागो पण कंईक सिद्धान्त उपर रचायेला छे. जोके एक बाबत अहीं स्पष्ट करवी जोईए के अहीं कहेलो अक्षरगण ते आपणो वृत्तोनो संघि नथी. तेम ज मात्रागण ते पण आपणो मात्रासंघि नथी. आनी चर्चा आगळ आवशे. पण एकंदरे आ विभागो सारा छे.

प्रसिद्ध पिंगल के छन्दःशास्त्र छन्दोना वैदिक अने लौकिक एवा बे विभागो करे छे. वैदिक पूरा थया पछी लौकिकमां प्रथम आर्या गीति वगेरे मात्राछन्दो आपे छे, अने वैतालीय जेवा मात्रागर्भ छन्दो पण तेनी साथे ज लई ले छे. पछी वृत्तो ले छे. तेमां सम, अर्धसम, विषम विभागो करी पाछला बे नाना छे तेने प्रथम उकेली नाखे छे. अने ते पछी समवृत्तो उक्तादि क्रमे ले छे. अने दंडकोथी ए प्रकरण पूरुं करे छे. अने छेवटे नहीं आवी गयेला (जमां नवा छंदो पण आवे) छन्दोनो गाथा नाम नीचे संग्रह करी विषय पूरो करे छे.

'वृत्तरत्नाकर' अने 'छन्दोमंजरी' पण आ ज प्रकारो स्वीकारे छे, जोके 'छन्दोमंजरी' लक्षण आपतां प्रकारोने जुदा क्रमे ले छे.

'प्राकृत पैंगल' बे ज प्रकारो स्वीकारे छे मात्राछन्द अने वर्णछन्द.

अर्वाचीन कालमां आवतां दलपतराम पण बे ज प्रकारो स्वीकारे छे मात्रामेळ अने अक्षरमेळ. संख्यामेळनो तेओ अक्षरमेळमां समावेश करे छे, अने मात्रागर्भवृत्तोने ए स्वरूपे चर्चता नथी.

सद्गत के. ह. ध्रुवे पिंगल उपर नवी दृष्टिए पुष्कळ चर्चा करी छे. पद्यरचना उपर ध्यान खेंचे एवो एमनो पहेलो निबंध 'पद्यरचनाना प्रकारो' (सा. वि. भा. २, २६२-३०८) १९०८ मां प्रसिद्ध थयेलो. ए विषयनुं वधारे लांबुं अने विस्तृत निरूपण पामेलो निबंध 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना' १९३२ मां प्रसिद्ध थयो. एटले पहेलानी अपेक्षाए बीजाने ज प्रामाणिक गणवो जोईए. तेमां तेओ पद्यरचनाना प्रथम बे विभागो करे छे: निबद्ध, अने अबद्ध. अबद्ध एटले में जेने सळंग पद्यरचना कही छे ते. निबद्ध पद्यरचनाना चार प्रकारो तेओ बतावे छे. वर्णात्मक, रूपात्मक, मात्रात्मक, लयात्मक. वर्णात्मकमां बे वर्गो. प्राचीन, तेमां गायत्री, त्रिष्टुभ वगेरेनो समावेश थाय छे. अर्वाचीनमां कवित, अभंग वगेरेनो, जेने में संख्यामेळ कह्या छे. रूपात्मक ते में जेने अक्षरमेळ कह्या छे ते. "वर्णनां बे रूप छे, लघु अने गुरु. मेळमां मेळवायेलां ए रूपना रूपबंध बने छे. रूपबंधमां चार ज चरण होय छे." ते पछी तेओ

तेना सम, अर्धसम, विषम ए विभागो दर्शावे छे. यतिदृष्टिए छंदो अयतिक के अखंड अने सयतिक के सखंड छे. फरी संधिनी दृष्टिथी तेओ रूपमेळ वृत्तोमां अनावृत्तसंधि अने आवृत्तसंधि एवा बे विभागो करे छे. आ विभागोनी शास्त्रीयता मने चिन्त्य जणाय छे. एटले ए विशेनी चर्चा अहीं करवानी तक लउं छुं.

तेओ कहे छे: "सखंड तेम ज अखंड चरणनो घटकावयव संधि छे. संधिमां एकथी वधारे अभिन्न के भिन्न रूप आवे छे. . . चरणनी घटनामां आवता संधिना त्रण प्रकार छे: एकल, अभ्यस्त अने आवृत्त. जे संधि चरणमां लागलागट यतिकृत विराम वगर बेथी वधारे वार वपरायो होय ते आवृत्त; लागट बे वार वपरायो होय ते अभ्यस्त; अने अणलागट वपरायो होय, ते एकल. छेल्ला बे संधिनो अनावृत्त संज्ञामां अंतर्भाव थाय छे." (प. ऐ. आ., पृ० २०) आ पछी तेओ आवृत्तसंधि रूपमेळना दृष्टान्त तरीके तोटक आपे छे. (एजन, पृ. २१) अलबत तोटकमां ललगा संधिनां चार आवर्तनो छे अने तेथी ते आवृत्तसंधि रूपमेळ बने छे. पण अहीं महत्त्वनी वात ए छे के ललगा ए मात्रामेळी चतुष्कल संधिनुं एक लगात्मक रूप छे. अने अे मात्रामेळी होवाथी तेनां आवर्तनोथी छंदनो मेळ सधाय छे. एने भले रूपात्मक के अक्षरमेळ कहो पण मेळनी दृष्टिए ए आवर्तनोथी सिद्ध थतो एक जातनो मात्रामेळ छन्द ज छे. आवृत्तसंधिनो मात्रामेळ साथेनो आ संबंध तेमणे स्पष्ट रूपे कह्यो नथी. अने तेथी छन्दना निरूपणमां अनेक जगाए संदेह अने विषमताओ ऊभी थाय छे जे शास्त्रने दूषित करे. दाखलाथी एक एवी विषमता तरत समजाशे. आपणे तोटक, दोधक अने भ्रमरविलासितानो न्यास पासे पासे मूकीए:

तोटक :	ललगा ललगा ललगा ललगा
दोधक :	गालल गालल गालल गागा
भ्रमरविलासिता :	गागा गागा लललल ललगा

आ त्रणेय छन्दो रूपमेळ के अक्षरमेळ तो छे ज, कारण के तेनां लघुगुरुस्थान नियत छे. त्रणेय, मात्रामेळी चतुष्कल संधिना भिन्नभिन्न लगात्मक पर्यायोनां आवर्तनोथी बनेला छे. तेमां पहेला बेमां एक ज लगात्मक पर्यायनां त्रण आवर्तनो छे, त्रीजामां नथी. त्यारे हवे के. ह. ध्रुव प्रमाणे त्रणेयने आवृत्तसंधि गणवा के पहेला बेने ज? जो मेळने ज छन्दमां प्रधान गणवो होय तो त्रणेयने एक ज वर्गमां — आवृत्तसंधि अक्षरमेळमां मूकवा जोईए अने संधिना आवर्तननुं कथन, आ दृष्टान्तनो समावेश थाय ए रीते करवुं जोईए. आ ज चर्चामां, भ्रमरविलासिता जेवो दाखलो आवृत्तसंधिमां आवी शके एवी

जातनी एक दलील पण तेमणे करी छे. आवृत्तसंधि अने अनावृत्तसंधि रूपमेळने सरखावतां तेओ कहे छे : "...अनावृत्त संधिना रूपबंध प्रत्ये पूर्वकाळना कविओने पक्षपात सकारण जणाय छे. रूपरचनाना समपद छंदोमां चरण अभिन्न मापनां छे, एटले के आवृत्त छे. तेने लीधे वैविध्य खातर संधि अनावृत्त होवानी अपेक्षा रहे छे. आवृत्त संधिमां अंतर्गत रूप ज्यां भिन्न होय छे, त्यां संधिनी आंतर घटनामां एक प्रकारनी विविधता रहे छे खरी. पण ते उक्त संधिना आगळ पडता आवर्तनथी दबाई जाय छे. ज्यां आवृत्त संधिमांनां रूप पण अभिन्न होय छे, त्यां तो वैविध्यनो भास सरखो ए रहेतो नथी." (एजन, पृ. २१-२२) 'संधिनी आंतर घटनामां एक प्रकारनी विविधता रहे छे खरी' एम कहे छे ते भ्रमरविलासिता जेवा रूपमेळोमां ज संभवे छे. 'ज्यां आवृत्त संधिओनां रूप पण अभिन्न होय' एम कहे छे ते तोटक जेवा छंदोने लागु पडे छे. अहीं एमना कथननो पूरेपूरो अर्थ करी तेने व्यवस्थित करीए तो मने इष्ट छे ए ज अर्थ नीकळे के भिन्न भिन्न लगात्मक रूपोथी पण एक ज मात्रामेळी संधिनां आवर्तनो थतां होय तो छन्द आवृत्तसंधि ज गणाय. पण दृष्टान्तोमां तेम ज निरूपणमां एवुं थयुं नथी. दाखला तरीके ध्रुव 'मध्यक्षामा'ने आवृत्तसंधि गणता नथी. तेओ एनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे, अने तेने सखंड अनावृत्तसंधि गणे छे; न्यास (बेवडी ऊभी लीटीओ यतिनी छे) :—

।   ।   ।   ।
गागा गागा ॥ लललललल गागा गागा

(सा. वि. भा. २, पृ. २८१)

ज्यारे खरी रीते ते मात्रामेळी छे, नीचे प्रमाणे —

गागा गागा ललLल ललगा गागा गा

अने आवी रीते मात्रामेळी आवृत्तसंधि लगात्मक छन्दो अनावृत्तसंधि गणावाथी यतिचर्चा दूषित थाय छे.

एटलुं ज नहीं, ऊलटी रीते जे छन्दो खरी रीते अनावृत्तसंधि छे ते, तेमना न्यासमां कोई जगाए एक संधिनां त्रण आवर्तनो आवतां आवृत्तसंधि गणाई जाय छे. तेओ प्रमदा अथवा कुररीरुता छंदने नर्दटकनी प्रकृति गणावे छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे :

।   ।   ।   ।   ।
लललल गाल गाल ललगा ललगा

नर्दटकना न्यासमां उपरना न्यास उपरांत अंतमां एक ललगा विशेष छे. हवे अहीं एक ललगा विशेष थवाथी त्रण ललगा भेगा थई जाय छे.

अने तेथी ए आवृत्तसंधि बनी जाय छे. आ वृत्त विशे तेओ पोते कहे छे: "वंशपत्रपतितना आरंभना गुरु बदल बे लघु अने अगियारमा तथा बारमा[1] रूपना बे लघु बदल एक गुरुनी योजनाथी आ छंद ऊपजी आवे छे. उक्त रूपांतरथी एकंदर उच्चारणमां कांई फेर पडतो नथी. अनावृत्तसंधिना वंशपत्रपतित उपरथी नीपजता नर्दटकनो उत्तर भाग ललगा ललगा ललगा एम आवृत्तसंधिनो बनेलो छे. 'वृत्तरत्नाकर'मां आ छंदना चरणना सातमा अक्षरे मध्ययति कही छे. परंतु 'मालतीमाधव'मांना बे नर्दटक पैकी एकेमां ए मध्ययति पळायेली जणाती नथी. वळी 'सुवृत्ततिलक' पण नर्दटकने यतिरहित लेखवे छे. 'रघुवंश'ना निशा वृत्तनी[2] पेठे 'मालतीमाधव'ना आ छंदना चरणमां अनावृत्त अने आवृत्त संधिनो मनोहर योग छे." (प. ऐ. आ., पृ. २५३). प्रथम वंशपत्रपतित अने नर्दटकनो न्यास जोईए. हुं न्यास मारी रीते संधि जुदा पाडी मूकुं छुं.

---

१. अहीं ध्रुवनी कंईक सरतचूक थई जणाय छे. वंशपत्रपतितना आरंभना गुरुनी जगाए नर्दटकमां बे लघु छे ए खरुं. पण वंशपत्रपतितना अगियारमा बारमा नहीं पण तेरमा चौदमा लघुओनी जगाए नर्दटकमां एक गुरु छे. आ मात्र सरतचूक ज छे.

२. आ निशा वृत्तने के. ह. ध्रुव अनावृत्तसंधि अने आवृत्तसंधिना मनोहर मेळना दाखला तरीके गणावे छे. पण में अन्यत्र ('अर्वाचीन गुजराती काव्यसाहित्य' पृ. ३३, ३४; टीप) कह्युं छे तेम ते दंडकनो एटले आवृत्तसंधिनो ज एक टूंको प्रयोग छे. संस्कृत पिंगलो प्रमाणे २६ अक्षरथी लांबां वृत्तो बधां दंडको गणाय छे. दंडकमां हमेशां पहेला छ अक्षरो लघु आवी पछी — गालगा के एवा बीजा कोई संधिनां आवर्तनो आवे छे. आ निशा के नाराच (प.ऐ. आ. पृ. २०६) वृत्तमां पण एम ज पहेला छ अक्षरो लघु आवी पछी गालगानां आवर्तनो ज थाय छे. मात्र २६ अक्षरथी वधारे लांबो ए छंद बनतो नथी माटे ज एने दंडक कह्यो नथी. बाकी मेळ अने चाल दंडकनी ज छे. 'रघुवंश'नो ए प्रसिद्ध श्लोक

रघुपतिरपि जातवेदो विशुद्धां प्रगृह्य प्रियां

रघुवंश, सर्ग १२, श्लोक १०४

निशा : ललललल गालगा गालगा गालगा गालगा

एटले ए दंडक जेवो आवृत्तसंधि छंद ज छे. तेने नर्दटक साथे जरा पण सरखावी शकाय नहीं.

वंशपत्रपतित : गाललगा लगा ललगा लललललगा
नर्दटक : लललगा लगा ललगा ललगा ललगा

हवे वंशपत्रपतित अने नर्दटकमां थोडो फेर होवा छतां के. ह. ध्रुव 'बन्नेनी उच्चारणामां कांई फेर पडतो नथी ' एम स्वीकारे छे. अर्थात् बन्नेनो मेळ एक ज रहे छे एम स्वीकारे छे. तो तेमांथी एक एटले वंशपत्रपतित अनावृत्तसंधि गणाय अने नर्दटक आवृत्तसंधि गणाय एम केम बने? बीजुं : तेओ प्रमदा अथवा कुररीरुताने नर्दटकनी मूळ प्रकृति गणे छे. तो मूळ प्रकृति अनावृत्तसंधि रहे अने तेनाथी निष्पन्न थती कृति केवळ भिन्न प्रकारनी बनी जाय एम केम बने? वळी तेओ कहे छे, नर्दटकमां 'अनावृत्त अने आवृत्त संधिनो मनोहर योग छे.' अस्तु. पण आ योग पछी आखुं वृत्त अनावृत्तसंधि गणाय के आवृत्तसंधि गणाय? छेवटना त्रण ललगा ए समसंधिओ छे, ते पहेलांना विषम संधिओ छे, तो ए समविषम भेगा थई एक मेळ सधातां, पछी बधा संधिओ एकंदर सम गणाय के विषम? मने तो संदेह नथी के विषममां सम भळे तो समग्र विषम ज गणाय. अने ए छन्दनो मेळ अनावृत्तसंधिनो ज गणाय. तेम ज बे संधिओ एक होय त्यां सुधी अनावृत्तसंधि गणाय अने बेथी वधी त्रण थाय एटले आवृत्तसंधि बनी जाय ए फेरफारनुं कारण समजातुं नथी.

बधी विषमतानुं कारण ए छे के तेमणे आवृत्तसंधि अक्षरमेळने मात्रामेळना संधिनां आवर्तनोवाळी मात्रामेळ रचना तरीके स्वीकार्यो नथी. तेथी मेळदृष्टिए मात्रामेळी घणी लगात्मक रचनाओ अनावृत्तसंधि वृत्तो साथे सेळभेळ थई गई छे. तेथी तेओ ए जोई शक्या नहीं के यति पूर्वे गुरु आवे ज छे. एटले यतिनुं स्वरूप दूषित थयुं. तेथी अनावृत्तसंधि अक्षरमेळनी यति अने मात्रामेळनी यतिनुं स्वरूप भिन्न छे ए एमने जोवुं नहीं. एम एक छिद्रमांथी अनर्थपरंपरा चाली छे.

आ अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो पछी तेमणे मात्रामेळी रचनाओ चर्ची छे. मात्रामेळी रचनाओनी तेमणे भिन्नभिन्न संधिओ अने ते उपरथी निष्पन्न थती भिन्नभिन्न रचनाओनो निर्देश कर्यो छे. अने ते पछी तेओ लयमेळनो प्रकार ले छे. लयमेळमां पद, गीत, गरबो, गरबी, मास, तिथि, वार, आरती प्रभातियां वगेरेनो समावेश थाय छे.

गुजरातीमां पिंगल विशे जे जे अत्यार सुधी लखायुं छे तेमां के. ह. ध्रुवे ज सौथी प्रथम पिंगलने शास्त्रीय निरूपणमां मूकवानो प्रयत्न कर्यो छे. खरं कहीए तो एमना सुधीनी आखी पिंगलपरंपरा मात्र नोंध जेवी हती, शास्त्रीय निरूपण जेवी नहीं. अलबत क्यांक क्यांक यतिनी चर्चा के

गीतिना स्वरूप जेवा निरूपणमां ए शास्त्रनी दिशामां जती अने ऊंडां रहस्यो पण आपती, पण ते सिवाय ते नोंध जेवी ज रही छे. जेम लेखांनी रीत साची होय छे, तेमांथी जवाब खरो आवे छे, पण ते गणितशास्त्र नथी, एम आज सुधीनुं पिंगल ए छन्दनी साची कूंचीओ होवा छतां ए शास्त्र नहोतुं. के. ह. ध्रुवे एनी चर्चाने शास्त्रीय पीठिका पूरी पाडी एम कही शकाय. ए रीते एमनो फाळो महत्त्वनो छे, पण एमणे पण पिंगळनुं सळंग निरूपण कर्युं नथी, अने तेथी तेमनी चर्चामां घणुं अविशद अने केटलाक विसंवादो रही जवा पाम्या छे.

आखा पिंगळनुं विस्तृत शास्त्रीय सळंग निरूपण सौथी प्रथम आपणने पटवर्धनना 'छंदोरचना' पुस्तकमां (प्रसिद्ध १९३७) मळे छे. तेमणे 'वृत्त', 'जाति' अने 'छंद' एम त्रण प्रकारोथी व्यवस्था करी छे. तेमणे मेळनां बे स्वरूप स्वीकार्यां छे, आवर्तनी अने अनावर्तनी, अने वृत्तोमां बन्ने प्रकारना मेळनां बताव्यां छे. अलबत आ दृष्टि मराठी छंदचर्चामां नवी ज छे अने मराठीमां आ नवीन दृष्टि सामे पुष्कळ ऊहापोह थयो छे, पण ते पहेलां घणां वरस पहेलां आपणने ए सुरेख रूपे के. ह. ध्रुवना लेखोमां जोवा मळे छे. एटले पटवर्धनने सळंग निरूपणनुं मान घटतुं होवा छतां मौलिकता के. ह. ध्रुवनी ज रहे छे.

३

अक्षरमेळ वृत्तो : तेमनुं परंपरागत स्वरूप

पिंगलनो मुख्य उद्देश छंदना स्वरूपनो अभ्यास छे. ए अभ्यासमां पिंगले छन्दना स्वरूपनुं पृथक्करण करी तेना मेळनुं तत्त्व शोधी काढवुं जोईए. आपणे आ विशे चर्चा शरू करीए ते पहेलां छन्दोनुं परंपरागत स्वरूप जोई जवुं जोईए. ए आपणी चर्चानी भूमिका बनशे.

आपणे आगळ जोयुं तेम आ वृत्तोमां मात्र अनावृत्तसंधि अक्षरमेळनो ज समावेश थाय छे, तोटक जेवां आवृत्तसंधिवृत्तो जे आज सुधी अक्षरमेळ गणातां पण वास्तविक रीते अमुक जातिछन्दोनां मात्र लगात्मक रूपो हतां तेने शास्त्रीय दृष्टिए वृत्तोमां स्थान आपी शकाय नहीं.

वृत्तोनुं लक्षण ए छे के वृत्तो बधां श्लोकबद्ध होय छे. श्लोक ए वृत्तबद्ध साहित्यनो एकम छे. साधारण रीते श्लोक चार चरणनो के पादनो गणाय छे. (जोके वेदमां त्रिपदा गायत्री हती.) हलायुध तो पादना संयोगने

लीधे ज पद्य थतुं माने छे,[1] अने संस्कृत साहित्यमां पाद ज पद्यने गद्यथी व्यावृत्त करतुं लक्षण मनाय छे.[2] आ श्लोक चतुष्पाद हतो अने श्लोकार्ध अने दरेक श्लोकार्धना बब्बे पादो ए श्लोकना स्वाभाविक अवयवो हता. दलपतरामे पण श्लोकनुं आ स्वरूप स्वीकारेलुं छे, जो के एमणे श्लोकार्धनी जुदी गणना करी नथी. ए मात्र श्लोकनां चार चरणो ज स्वीकारे छे.

दरेक चरणने अंते यति होवी जोईए एवो पिंगळनो नियम छे. यतिनो सामान्य अर्थ विराम कराय छे, अर्थात् श्लोकना पठनमां चरणने अंते विराम लेवाय छे. आ विरामना स्थान पहेलां शब्द पूरो थवो जोईए एवो नियम छे. एम न करीए तो विरामने लीधे ए शब्द पठनमां भांगे अने तेथी सहृदयना मनने क्लेश थाय. एवी रीते शब्द भांगे तेने यतिभंगनो दोष कहे छे. अलबत अहीं एटलुं नोंधवुं जोईए के दलपतराम वगेरे पिंगलकारो श्लोकार्ध यति, अने एकी चरणने अंते आवती यतिनो भेद करता नथी. पण पठनमां स्वाभाविक रीते ज एकी चरणने अंते आवती यति करतां श्लोकार्ध यति लांबी होय छे.

कोई कोई वृत्तोमां आ चरणान्त यति उपरांत चरणनी अंदर पण यति आवे छे. तेने मध्ययति कहे छे. आ यति चरणान्त यतिथी टूंकी होय ए स्वाभाविक छे. चरणान्त यति तो वृत्तोमां सार्वत्रिक छे[3], एटले श्लोकना स्वरूपना निरूपणमां एनो उल्लेख करवामां आवतो नथी, मात्र मध्ययतिनो उल्लेख करवामां आवे छे. आथी घणी जगाए यति शब्द मात्र मध्ययतिनो ज वाचक बने छे. आ मध्ययतिने अवलंबीने श्लोकना सयतिक अने अयतिक एवा बे विभागो पडे छे. आपणे दरेकनुं एक एक दृष्टान्त लईए. प्रथम एक अयतिक छन्द लईए, इन्द्रवज्रा.

इन्द्रवज्रा

मोजां विकासी मुख शां तडे छे!
चोपास शी पंक्ति तमिस्रनी छे!
तो ये न कम्पे खडके पनोती
ना झंखवाये शुचि स्नेहज्योति!

'डिटेल्स लाईट', प्र० पु०

---

१. पादेन संयोगात्पद्यम्। छं. शा. नि., पृ. ५२

२. अपादः पदसंतानो गद्यम्। का. द., १, २३. पाद विनानुं पदोनुं संतान ते गद्य.

३. मात्र उद्गता आनो एक अपवाद छे, तेनी योग्य स्थळे चर्चा करीशुं.

आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

इन्द्रवज्रा: गागालगागा ललगा लगागा

हवे आपणे एक सयतिक वृत्तनु दृष्टान्त लईए:

मन्दाक्रान्ता

छूपी ऊंघे घनपड महीं तारला व्योम अंके,
निद्रा मीठी गिरि नद अने विश्व आखुंय ले छे.
ने रूपेरी श्रमित दिसती वीजळी एक स्थाने,
सूती सूती हसति मधुरूं स्वप्न मांहीं दिसे छे.

बिल्वमंगल: केकारव

आ छन्दमां चरणान्त यति उपरांत प्रथम चार अक्षर पछी, अने तेनी पछी पांच अक्षर पछी, एम बे मध्ययतिओ आवे छे. आ मध्ययतिने वृत्तना न्यासमां आपणे दंडथी दर्शावीशुं. ए रीते आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

मन्दाक्रान्ता: गागागागा । ललललगा । गालगा गालगागा

चरणान्त यति सर्वत्र छे एटले आपणे बेमांथी कोई न्यासमां एने दर्शावी नथी.

आपणां पिंगलोमां छन्दोना निरूपणमां आ अयतिक अने सयतिक वृत्तनी चर्चा भिन्न भिन्न थती नथी. संस्कृत पिंगलो वृत्तोने प्रथम सम, अर्धसम अने विषम एवा विभागोमां वहेंचे छे. जेनां चारेय चरणो सरखां होय ते समवृत्तो, जेनां विषम एटले एकी अने सम एटले बेकी सरखां होय, एटले पहेलुं त्रीजुं अने बीजुं चोथुं सरखां होय, ते अर्धसम, अने जेनां चारेय चरणो अणसरखां होय ते विषम. समवृत्तोनी संख्या ज मोटी छे अने एनुं निरूपण ज पिंगलोनो मोटो भाग रोके छे. पिंगलो आ समवृत्तोने तेना अक्षरोनी संख्याना क्रमे विभाजे छे अने पछी दरेक विभागना जुदा जुदा छंदोना चरणमां आवता लघु गुरुनां स्थानो जुदी जुदी तंत्रयुक्तिथी दर्शावे छे. ए रीते एक अक्षरथी मांडीने छव्वीस अक्षरो सुधीनां वृत्तोना नीचे प्रमाणे छव्वीस विभागो करवामां आवे छे:

अक्षरसंख्या	वृत्तनुं नाम	अक्षरसंख्या	वृत्तनुं नाम
१	उक्था	४	प्रतिष्ठा
२	अत्युक्था	५	सुप्रतिष्ठा
३	मध्या	६	गायत्री

७	उष्णिक्	१७	अत्यष्टि
८	अनुष्टुप्	१८	धृति
९	बृहती	१९	अतिधृति
१०	पंक्ति	२०	कृति
११	त्रिष्टुभ्	२१	प्रकृति
१२	जगती	२२	आकृति
१३	अतिजगती	२३	विकृति
१४	शक्वरी	२४	संकृति
१५	अतिशक्वरी	२५	अतिकृति
१६	अष्टि	२६	उत्कृति

एक बे अने पचीसमा वर्गना अनुक्रमे उक्ता, अत्युक्ता अने अधिकृति एवां नामो पण मळे छे. वेदमां अक्षरसंख्या उपरथी ज छन्दोना प्रकारो करेला छे. ते प्रकारोनां नामो ज अहीं क्यांक अर्थविस्तार करी प्रयोजेलां छे. आ छब्बीस अक्षरोथी वधारे लांबां वृत्तोने दंडको कहेला छे. अने जे छंदोनो नामथी निर्देश न करेलो होय तेने संस्कृत पिंगलो गाथा कहेतां.

आ वृत्तमां लघु गुरु अक्षरोनां स्थानो दर्शाववानी अनेक तंत्रयुक्तिओ जुदां जुदां पिंगलोए अखत्यार करी छे. पण तेमांनी बेनो ज अहीं निर्देश करीशुं.[४] एक पद्धति लघु के गुरुना स्थाननी संख्या आपवी ए हती. घणे भागे गुरुओ ओछा होय छे एटले गुरुनां ज स्थानो अपातां. आ पद्धति प्राचीन हशे एम हुं मानुं छुं. 'भरतनाट्यशास्त्र'मां आ पद्धति प्रमाणे छन्दोनां लक्षणो आपेलां मळी आवे छे. (जोके क्यांक क्यांक गणपद्धतिथी पण लक्षण आपेलुं छे जेने हुं पछीथी उमेरायेलुं गणुं छुं.) दाखला तरीके :

नवमं सप्तमं षष्ठं तृतीयं च भवेल्लघु।
एकादशाक्षरे पाद इन्द्रवज्रेति सा यथा॥

भ. ना. गा., २, पृ. २५८

नवमे, सातमे, छठ्ठे, त्रीजे लघु आवतां अगियार अक्षरोनो पाद ते इन्द्रवज्रा. आपणे आगळ आनो न्यास आपेलो.

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
गा गा ल गा गा ल ल गा ल गा गा

---

४. बाकीनी मुख्य मुख्य पद्धतिओ आ प्रकरणना परिशिष्टमां आपेली छे.

आमां उपर कहेल स्थाने लघु आवे छे. बाकीना गुरु एम समजी लेवानुं. छन्द गुरुबहुल होवाथी अहीं लघुनां स्थानो आपेलां छे. पण रथोद्धता स्वागतामां गुरुनां आपेलां छे.

आद्यं तृतीयमन्त्यं च सप्तमं नवमं तथा।
गुरूण्येकादशे पादे यत्र सा तु रथोद्धता॥

एजन, पृ. २५९

अगियार अक्षरना पादमां पहेलो, त्रीजो, छेल्लो, सातमो, नवमो गुरु ते रथोद्धता: जेम के

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
गालगा लललगा लगा ल गा

ते ज प्रमाणे स्वागतानुं लक्षण

आद्यं तृतीयमन्त्यं च सप्तमं दशमं गुरु।
यस्यास्तु त्रैष्टुभे पादे विज्ञेया स्वागता हि सा॥

एजन

त्रैष्टुभ एटले अगियार अक्षरना पादमां पहेलो, त्रीजो, छेल्लो, सातमो, दशमो, गुरु ते स्वागता

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११
गालगा लललगा लल गा गा

कालिदास कविने नामे चडेला नाना पण सुघड 'श्रुतबोध'मां आ ज पद्धतिथी लक्षणो आपेलां छे. 'भरतनाट्यशास्त्र' मां आ प्रमाणे अनुष्टुपमां लक्षणो आप्या पछी ते छन्दनुं दृष्टान्त आपेलुं छे. अने दरेक दृष्टान्तमां ते छन्दनुं नाम गूंथेलुं छे. एटले के दृष्टान्त चालु साहित्यमांथी न लेतां पिंगलकारे पोते नाम गूंथीने रचेलुं छे. 'श्रुतबोध' मां तो लक्षण ज नाम साथे ते छन्दमां ज आपेलुं छे. आमां अभ्यासीने याद राखवानी सगवड छे, पण दृष्टान्त चालु साहित्यमांथी न लेवामां पिंगलनो मुख्य विषय कविओए प्रयोजेला छन्दो छे, ए तरफ कंईक दुर्लक्ष थाय छे. पण ते विशे आगळ विचार करीशुं.

बीजी प्रसिद्ध अने लगभग सर्वमान्य नीवडेली पद्धति ते गणपद्धति छे. आमां लघु-गुरुने जुदे जुदे स्थाने मूकीने त्रण त्रण अक्षरोना आठ गणो करेला छे, अने दरेकने एकएक अक्षरनी टूंकी संज्ञा आपी छे. (१) सर्व गुरु गागागा मगण, (२) आदिलघु लगागा यगण, (३) मध्यलघु गालगा रगण, (४) अन्तगुरु ललगा सगण, (५) अन्तलघु गागाल तगण, (६) मध्यगुरु लगाल

जगण, (७) आद्यगुरु गालल भगण, (८) सर्वलघु ललल, नगण. आ संज्ञाओ याद राखवानी एक बीजी टूंकी अने चतुराईवाळी युक्ति छे ते पण नोंधवा योग्य छे. यमाताराजभानसलगं एटलामां उपरनी बधी संज्ञाओ आवी जाय छे. जे गणाक्षरनुं स्वरूप जोवुं होय ते आ सूत्रमांथी जोई लेवो. ए अने एनी पछीना बे अक्षरो ए ज एनुं लगात्मक स्वरूप. यगण जाणवो होय तो यमाता=लगागा ए यगण. रगण जाणवो होय तो राजभा=गालगा ए रगण. जभान=लगाल ए जगण. सलगं=ललगा ए सगण. छेवटे ल=लघु अने ग=गुरु.

आ गणपद्धति ते मात्र स्मरणनी सगवड खातर ज करी होय एम जणाय छे. बे अक्षरोनो गण करवा जतां एक चरणमां गणनी संख्या घणी वधी जाय. ए करतां तो प्राचीन मात्र लघु के गुरुनां स्थानोनी संख्या आपवानी पद्धति वधारे टूंकी अने सहेली पडे. चार अक्षरोनो गण करवा जतां गणोनी संख्या घणी वधी जाय, सोळ थई जाय, अने गणो आपतां शेष अक्षरो त्रण वधी जाय त्यां ए त्रगनो पाछो निर्देश करवो पडे. एम सगवड करतां अगवड वधी जाय. त्रणना गणो मात्र आठ थया ते याद राखवा सहेला पडे, अने एक के बे अक्षरो शेष वधे त्यां लघुनी ल अने गुरुनी ग संज्ञाथी तेनो सहेली रीते निर्देश करी शकाय. एटले आ गणपद्धतिनो ज विशेष उपयोग थयो छे. आ पद्धतिनो मुख्य फायदो ए के तेथी छन्दनां लक्षणो सूत्रोथी आपी शकाय छे. पिंगलना गणाता छन्दःशास्त्रनुं माहात्म्य तेना प्राचीनत्व करतां पण तेना सूत्रनिरूपणनुं छे एम हुं मानुं छुं.

आ बन्ने पद्धतिमां अमुक अमुक लाभो रह्या छे. आमां वर्गीकरण मुख्यत्वे छन्दोना चरणनी अक्षरसंख्याने अवलंबे छे. एटले ए वर्गीकरण सहेलुं पडे, ते अवश्य निःशेष होय, अने तेमां नवा छन्दो समाववामां कशो प्रश्न उपस्थित न थाय. वळी तेनो एक बीजो लाभ ए छे के आ वृत्तोमां प्राचीनतम अनुष्टुभ, त्रिष्टुभ अने जगती ए वेदमांथी संस्काराई संस्काराईने संस्कृत साहित्यमां ऊतरी आव्यां छे, अने संभव छे के बीजां घणां, ए रीते ऊतरी आव्यां हशे. तेनी निरूपणपद्धति साथे एक नामनो पण संबंध रहे छे. अने गणपद्धति याददास्तने माटे सहेली छे अने तेमां निश्चितता पूरेपूरी संपादित करी शकाय छे. तेथी आज सुधी आ पद्धति चालु रहेली छे. विशेष शुं, आ छन्दोने ज केटलाक अक्षरगणछन्दनुं नाम आपे छे. पण आ पद्धति शास्त्रीय नथी ज. वृत्तोना चरणमां त्रण त्रण अक्षरोना स्वाभाविक अवयवो पडता नथी ज. अने बीजुं ए के तेथी वृत्तोना बंधनो अंदरअंदरनो संबंध स्पष्ट करी शकातो नथी. दाखला तरीके आपणे उपर रथोद्धता अने स्वागतानां लक्षणो जोई गया

तेनो गणात्मक न्यास जोईए. वधां पिंगलोनी पेठे दलपतराम आ प्रमाणे आपे छे:

रथोद्धता

रे नरो लगि थसे अशुद्धता
तो नरोनि थिक छे रथोद्धता

प्रथम आवता रे न रो लगि ए तंत्रयुक्ति प्रमाणे रगण नगण रगण लघु गुरु बतावे छे. अर्थात् एनु लक्षण र न र लग थयुं. स्वागतानुं

स्वागता

रे नभागि गढनाथ जुओ छो
स्वागता थिद समृद्धि खुओ छो.

उपरनी रीते ज अहीं स्वागतानु लक्षण र न भ ग ग थयुं. बन्नेने सरखावतां एम जणाय के आमां र अने न समान छे, पछी कशुं समान नथी. अने बन्नेना आखा बंधनी समानतानो तो ख्याल ज न आवे. हवे अहीं हुं जे सन्धिन्यासनी पद्धति अखत्यार करुं छुं अने जेनुं संपूर्ण निरूपण हुं आगळ उपर करवानो छुं ते प्रमाणे सन्धिन्यास मूकतां ए बे वृत्तोनी समानता अने भेद बन्ने एकदम व्यक्त थई जशे.

रथोद्धता: गालगा लललगा लगालगा
स्वागता: गालगा लललगा ललगागा

पहेला बे संधिओ एकना एक छे, अने छेल्ला संधिओ जुदा छे. अने तेमां शो भेद छे, ते सर्व अहीं मात्र संधिन्यास उपर एक ज नजर नांखतां प्रत्यक्ष थाय छे.

गणपद्धतिनी अपूर्णता दर्शाववा आवो ज एक दाखलो बे सयतिक छन्दोनो लउं.

शालिनी: गागागागा । गालगा गालगागा
मालिनी: ललललललगागा । गालगा गालगागा

बन्नेने आ संधिन्यासोथी सरखावतां तरत समझाशे के बन्नेमां मध्ययति पछीना आखा यतिखंडो सरखा छे. ए यतिखंडोमां बन्ने संधिओ एना ए ज छे. हवे तेनां अक्षरगण लक्षणो जोईए:

शालिनी: म त त ग ग
मालिनी: न न म य य

आ लक्षण उपरथी बन्ने छन्दोमां क्यांय पण समान संधिओ हशे एवी लेश पण सूचना मळशे नहीं.

अने ज्यां मात्रामेळनां लगात्मक रूपोने आ अक्षरगणोथी बतावेलां छे त्यां क्यांक क्यांक तो छन्दनुं आखुं स्वरूप ढंकाई जाय छे. दाखला तरीके 'छन्दःशास्त्र' मां वरसुन्दरी वृत्त आपेलुं छे तेनो मेळ दालदानां आवर्तनोनो छे. दालदानं त्यां गाललल एवुं लगात्मक रूप आपेलुं छे. अने ए गाललनां त्यां त्रण आवर्तनो थई अंते गागा आवे छे. संस्कृत पंक्ति पण समजाय एवी छे.

स्वादु शिशिरोज्ज्वलसुगन्धिजलपूर्णम्

मात्रामेळ छन्द तरीकेनां तेनां आवर्तनो ध्यानमां राखीने तेनो संधिन्यास नीचे प्रमाणे थाय.

वरसुन्दरी : गाललल गाललल गाललल गागा

आमां तेनां आवर्तनो स्पष्ट देखाई आवे छे. 'छन्दःशास्त्र'मां तेनो अक्षरगण-न्यास नीचे प्रमाणे थाय छे.

वरसुन्दरी : भ ज स न ग ग (छ. शा., नि. ८, ९)

आ न्यास उपरथी जरा पण नहीं समजाय के आमां क्यांई आवर्तनो छे. एक पण अक्षरगणनुं अहीं आवर्तन नथी देखातुं, ज्यारे वास्तविक रीते छन्द आवर्त-नात्मक छे.

छन्दोनो मेळ व्यक्त थाय, तेना स्वाभाविक संधिओ स्पष्ट देखाय, अने छन्दोनो परस्पर संबंध देखाय ए रीते तेनां लक्षणो आपवां जोईए. सन्धिओनी संपूर्ण चर्चा तो आगळ आवशे, पण वृत्तनुं स्वरूप अने वृत्तोना संबंध, तेना समविषम अंशो प्रगट करवाने आ गण-पद्धति असमर्थ छे एटलुं तो आटलां दृष्टान्तो उपरथी समजायुं हशे.

हवे छन्दोनां लक्षणो आपवानुं शरू करवा पहेलां एक गूंचवणवाळा प्रश्ननी चोखवट करी लेवी जोईए. आपणां पिंगलोए आपेला छन्दो जोतां घणा छन्दो कविओए न वापर्या होय एवा मळी आवे छे. आ स्वच्छन्द बे दिशाए प्रवर्तेलो छे. आपणे उपर जोई गया तेम पिंगलकारोए उक्तादि वर्गो पादनी अक्षरसंख्या उपरथी नक्की कर्या छे. हवे कंई एक एक के बब्बे अक्षरना छन्दो प्रचलित काव्योमां मळी आवता नथी. पण छव्वीस सुधी संख्या लई गया तो एक पण संख्या, वृत्त विनानी शा माटे रही जाय एवा आग्रहथी छव्वीस सुधीनी बधी संख्यानां वृत्तो आप्यां छे. वृत्त माटे पिंगलकारोने प्रसिद्ध काव्योमांथी दृष्टान्तो

आपवानां नहोतां, पण जाते बनावीने छन्दनुं नाम अंदर गूथीने ते मूकवानां हतां, एटले आवां कल्पित वृत्तो मूकवामां तेमने वस्तुस्थितिनो बाध न आव्यो. आ रीते अनुपयुक्त छन्दो पण पिंगलमां पेसी गया. आ अनिष्ट वलणने एक बीजी दिशाथी अवकाश अने कदाच उत्तेजन मळ्युं.

संस्कृत वृत्तो, उपर जोयुं तेम, एक चरणमां आवती अक्षरसंख्या उपरथी जुदा जुदा वर्गोमां पडे छे. तो ते उपरथी पिंगलकारोए हिसाब करवा मांड्यो के अमुक अक्षरसंख्यामां गुरुलघुनी शक्य एटली बधी गोठवणीथी कुल केटलां वृत्तो थई शके? दाखला तरीके उक्ता एकाक्षरी छन्द छे, तेमां बे छन्दो थई शके, पहेलो एक लघुनो, बीजो एक गुरुनो. बे अक्षरना छन्दो चार रीते थई शके: गागा, गाल, लगा, लल. त्रण अक्षरना छन्दो आठ थई शके, आपणे ए निर्णय करेलो ज छे — मगण वगेरे आठ गणो छे. चार अक्षरोना एवा सोळ छन्दो थाय छे. 'वृत्तरत्नाकर' आनो आखो हिसाब आपे छे. सहेज जाणवा लखुं छुं के अगियार अक्षरना त्रिष्टुभनां आ रीते २०४८ वृत्तो थाय छे. 'रणपिंगल' तो आथी पण आगळ जईने अमुक वृत्त आ गणतरीए गणतां केटलामुं आवे तेनो पण आंकडो आपे छे. दाखला तरीके इन्द्रवज्रा 'रणपिंगल' प्रमाणे ३५७ मुं आवे छे. आ गणतरी नक्कामी छे एटलुं ज नहीं भ्रामक छे. नक्कामी एटला माटे के कोई वृत्त समजवामां, एटले के तेनो मेळ समजवामां आ गणतरी कशा पण उपयोगनी नथी. संगीतना रागनो मेळ समजवामां तेना स्वरोनां आंदोलनोनी संख्या गणवा बेसीए तेना जेवी ज आ नकामी छे. पण ए भ्रामक पण छे. एथी जाणे एवी गेरसमजण ऊभी थाय छे के नवां वृत्तो आवी कोई गाणितिक पद्धतिए शोधातां हशे. अने आटली बधी शक्य संख्या, अने तेने मुकाबले वपरायेलां वृत्तोनी संख्या आटली बधी ओछी जोतां, पिंगलकारो खाली पडेली संख्या पूरवा जाणे के नवां नवां वृत्तो करवा ललचाया. परिणाम ए आव्युं के पिंगलमां आवता छंदोमांथी कविओए वापरेला केटला अने पिंगलकारोना उपजावेला केटला ते अत्यारे कहेवुं मुश्केल छे. अलंकारोनी पेठे छन्दोनी संख्या वधती ज गई छे. दंडक बाद करतां 'रणपिंगल' लगात्मक (एटले एमां आवृत्तसंधि आवी जाय) अक्षरमेळनी संख्या १४२३ आपे छे. मराठी छन्दोरचना ८९६ आपे छे.

आ केवळ स्वच्छन्द, पिंगलकारोनी नजरमां नथी आव्यो एम पण नथी. क्षेमेन्द्र पोताना 'सुवृत्ततिलक'मां कहे छे के "न षट्सप्ताक्षरे वृत्ते विश्राम्यति सरस्वती। (सु. ति. २, २) 'छ के सात अक्षरनां वृत्तोमां सरस्वतीने विसामो मळतो नथी.' अने 'वृत्तरत्नाकर'ने पगले चालनार 'छन्दोमंजरी' प्रस्तारनी बाबतमां मतभेद नोंधे छे:

व्यवहारोचितं प्रायो मयाच्छन्दोऽत्र कीर्तितम् ।
प्रस्तारादि पुनर्नोक्तं केवलं कौतुकं हि तत् ॥
(छं. मं. क. ६.५)

'में व्यवहारोचित छन्द अहीं कहेलो छे. प्रस्तार वगेरे कह्यो नथी, कारण के ते केवल कौतुक छे.'

आ उपरांत पिंगलोमां एक बीजो पण जबरो गोटाळो छे. एक ज छन्दनां अनेक नामो मळी आवे छे अने एक ज नामना अनेक छन्दो छे. आपणे आ बधी भुलभुलामणी छोडी बने तेटला सीधा अने सरल मार्गे चालीशुं.

त्यारे छन्दोनी लक्षणचर्चा करवामां आपणी पहेली प्रतिज्ञा ए छे के आपणे वपरायेलां वृत्तो ज लईशुं. आम करवामां मने 'दलपतपिंगल' पाया तरीके लेवुं ठीक लागे छे. एम करवाथी आपणी भाषाना प्रथम पिंगल साथे आपणे अनुसंधान रहेशे. अने दलपतराममां जे एक ठावकाई हती ते एमना पिंगलमां पण जणाय छे. तेओ पण प्राचीन पिंगलपरंपराने ज अनुसर्या छे, पण तेमना अक्षरमेळ वृत्तोमां, अनावृत्तसंधि अक्षरमेळवृत्त मात्र २५ ज छे. छन्दोरचनाना प्रसिद्ध मराठी पुस्तकमां सद्‌गत पटवर्धने वीस ज वपरायेलां गणाव्यां छे, तेमांनां अढार 'दलपतपिंगल'मां आवी जाय छे. मात्र बे रही जाय छे प्रहर्षिणी अने सुवदना, ते बन्ने पण लईशुं अने ते उपरांत निरूपणना प्रयोजन माटे हुं नर्दटक लईश. आटली स्पष्टता पछी हवे छंदोनुं निरूपण हाथमां लउं छुं. अने तेमां प्रथम अयतिक वृत्तो लउं छुं.

में 'दलपतपिंगल'नां वृत्तो स्वीकार्यां छे पण आगळ कही गयो तेम हुं पद्धति तो मारी ज राखीश. हुं वृत्तोने गोत्रवार लईश, तेमना अंदर अंदरना संबंधो ध्यानमां राखी तेमने भेगा के पासे पासे निरूपीश, अने लक्षणो पण संधिन्यासथी आपीश, गणपद्धतिए नहीं. एम करवामां संख्यावलंबी उक्तादि वर्गीकरण सचवातो नहीं ए कहेवानी जरूर नथी, जोके एक माहिती तरीके न्यास साथे अक्षरोनी संख्यानो आंकडो मूकीश.

अहीं वेदमांथी ऊतरी आवेला त्रिष्टुभोथी आपणे प्रारंभ करीशुं. प्रथम न्यास आपीश अने पछी तेना दृष्टान्त तरीके बने त्यां सुधी प्रचलित साहित्यमांथी एक एक दृष्टान्त आपीश.

इन्द्रवज्रा : गागालगागा ललगा लगागा ११

आनुं दृष्टान्त आ ज प्रकरणमां आवी गयुं छे एटले अहीं जुदुं उतारतो नथी.

उपेन्द्रवज्रा : लगा लगागा ललगा लगागा ११

दृष्टान्त : अपाद छो तोय गती करो छो,
करो नथी तोय करे ग्रहो छो,
अचक्षु छो तोय तमे जुओ छो,
अकर्ण छो तोय तमे सुणो छो.

'ईश्वर प्रार्थनामाळा'

आ बन्नेनी पंक्तिओना मिश्रणथी उपजाति छन्द बने छे. उपरना बेनी अपेक्षाए आ छन्द ज वधारे व्यापक रीते संस्कृत तेम ज गुजराती साहित्यमां वपरायो छे. ते साथे नोंधवु जोईए के गुजरातीमां उपजातिमां आ बे उपरांत बीजा घणा छन्दोनां मिश्रणो करवामां आवे छे, जेनी आपणे आगळ चर्चा करीशुं. दृष्टान्त :—

आयुष्यना ऊंबरमां उभेलो
जुवान झंखे क्षितिजो वळोटी,
ने पेखि ले प्राण प्रयाणघेलो
भविष्यनी कूच तणी रजोटी.

'मोखरे', गंगोत्री

आमां १ ली अने ३ जी इन्द्रवज्रानी छे, २ जी अने ४ थी उपेन्द्रवज्रानी छे. आ बे छन्दनी पंक्तिओ अमुक क्रममां ज आववी जोईए के सरखी संख्यानी ज आववी जोईए एवो कोई नियम नथी. गमे तेटली ओछीवत्ती आवे, गमे ते क्रममां आवे. अने आमां एकी पंक्तिओनो अने बेकीनो प्रास मेळव्यो छे ते पण शोभा अर्थे मेळव्यो छे, छन्दने ए आवश्यक नथी. वृत्तोमां कोई प्रकारनो प्रास आवश्यक होतो नथी. गुजरातीमां प्रारंभमां कविओ वृत्तोमां पण प्रास मेळवता, पण थोडा ज समयमां तेनो त्याग थयो छे, अने अत्यारे कोई नियम तरीके प्रास राखता नथी, शोभा तरीके राखे ते जुदो प्रश्न छे.

इन्द्रवंशा : गागालगागा ललगा लगालगा १२
वंशस्थ : लगा लगागा ललगा लगालगा १२

आ बन्नेमां, उपर आवी गयेला इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रामां उपान्त्य स्थाने एक लघु वधारे छे. पण तेथी तेना संधिओना विभागो फरी गया छे. आने दृष्टान्तोनी जरूर ' मानतो नथी. हलायुध आना मिश्रणनो उपजाति स्वीकारे छे. गुजरातीमां त्रैष्टुभना उपजाति साथे आ जगतीना उपजातिनुं पण मिश्रण थाय छे. दृष्टान्त :—

हती गढी चारतणी ज टोचे
चोपास नागा नग ऊपरे चर्णा;
गया हठी शत्रु, पडी ज सांझ,
दिवाल ठेकी निकळ्यो गढीधणी.

'शेरदोरो', भणकार, पृ. २२७

अहीं पहेली अने त्रीजी उपेन्द्रवज्रानी छे. बीजी इंद्रवंशानी अने चोथी वंशस्थनी छे.

आ पछी वसन्ततिलका लईए: तेनो लगात्मक न्यास:—

वसंततिलका: गागालगा लललगा ललगा लगागा १४

पहेलां दृष्टान्त आवी गयुं छे छतां एक बीजुं लईए:

छे एक जो! सबळ निर्बळनो ज त्राता;
व्हाली! हवे स्थिर थई धर्य चित्त शाता.—
जो! देखुं आ असि प्हणे चमके अनन्त,
ने चित्त आ चमकिने बन्युं वेगवन्त.

'उत्तरा अने अभिमन्यु'. हृदयवीणा, पृ. ७३

आवृत्तना लक्षणमां घणांखरां संस्कृत पिंगळो यतिनो उल्लेख करतां नथी पण 'श्रुतबोध' आठमे अक्षरे यति कहे छे. भास कालिदासे आ यति मानी नथी. गुजराती कविओए पण पाळी नथी. उपरना दृष्टान्तमां ज प्रथम चरणमां आठमे अक्षरे शब्द पूरो थतो नथी. दलपतरामे पण आ यतिनो निर्देश करेलो नथी. एटले सर्व रीते आ वृत्त अयतिक वृत्तोमां पडे छे.

आ पछी हुं चपला लउं छुं. ए वपराशमां भाग्ये ज आवे छे. पण दलपतराम आपे छे माटे लउं छुं. अने आपणने एक दृष्टान्त तरीके ए आगळ काममां आवशे.

चपला: गागालगा लललगा ललगा ११

दृष्टान्त: तें भाजि लागविज हाथ लई,
कां खाचि खूब चपळा ज थई;
ते ठाममां न धरि तें ठरवा.
पस्ताव छोड पछिथी करवा.

द. पिं. अक्षरमेळ छंद ४९, पृ. ४१

आ पछी हुं रथोद्धता लउं छुं.

रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा ११

कालिदासे रघुकुमारना केटलाक सर्गोमां आ छन्दनो व्यापक रीते उपयोग कर्यो छे. अर्वाचीन युगमां कविओए आ बहु वापर्यो नथी. जोके मध्यकालीन युगमां कविओए एनो प्रयोग ठीकठीक कर्यो छे (वृत्तरचना, पृ. ५५) कान्ते अप्रसिद्ध राखेलां पूर्व काव्योमांथी एक दृष्टान्त नीचे उतारुं छुं:

सज्ज ए झडपथी थई रही,
नीकळ्यां सुखदता मने वही,
मंद मंद प्रिय साथ जाउं छुं,
वाटमां सरस कांइ गाउं छुं.

'सृष्टिसौंदर्यथी मन उपर थती असर', पूर्वालाप

आधुनिक समयमां पाछो आ वपरावा मांडयो छे. आ पछी आने मळतो स्वागता लईए.

स्वागता : गालगा लललगा ललगागा ११

आ पण रथोद्धतानी पेठे मध्यकालीन गुजरातीमां वपरायो छे. (वृत्तरचना, पृ. ५५) आनुं दृष्टान्त पण कान्तनां पूर्व काव्योमांथी लउं छुं:

वार तो बहु गई न हती ज्यां
ए प्रदेश थकि मुक्त थयां त्यां.
अंधकार टळतां अजवाळुं,
ए सुशोभित बहू ज निहाळुं.

एजन

अने मध्यकालीन साहित्यमां रथोद्धता-स्वागतानो उपजाति पण थयो छे:

देवि द्रूपदिय राडि सांभली,
हाथि लेइ हथियार आंबिली;
भीमु भीरु इम कीचक कूटइ
तेह आगलि न कोइ बिछूटइ.

वृत्तरचना, पृ. १३

पहेली बे पंक्तिओ रथोद्धतानी छे. बीजी बे स्वागतानी छे. अहीं प्रासमां आवतो 'टइ' संयुक्तस्वरनो होई तेने एक गुरु गणवानो छे.

आ पछी हुं मंजुभाषिणी लउं छुं. तेना दृष्टान्त तरीके दलपतरामनो लक्षणछंद ज उतारुं छुं:

मंजुभाषिणी : ललगा लगा लललगा लगालगा १३

सज साज गोखि गुणनो सुवासिनी,
वळि था भली ज विध मंजुभाषिणी;
जश तो जरूर जग मध्य जामशे,
परिपूर्ण सूख पण तो तुं पामशे.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ७५, पृ. ४९

आ छन्द गुजरातीमां बहु वपरायो नथी, जोके सुन्दर छे. माघे 'शिशुपालवध'ना तेरमा सर्गमां आनो व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. हुं के. ह. ध्रुवना चित्रदर्शनना भाषान्तरमांथी एक दृष्टान्त नीचे उतारुं छुं:

उर जाणुं आज वरते सुलग्न ते,
जव गौतमे घटित युक्त कंकणे,
तव पाणि उत्सव समान पामिने,
प्रमदे! प्रमोद प्रसर्यो रुंवे रुंवे.

सा. वि. भा. १, पृ. ३४

आ पछी कलहंस. ते पण गुजरातीमां वपरायो नथी:—

कलहंस: ललगा लगा लललगा ललगागा १३

सजशे सगाथि शुभ स्नेह रहीने
कलहंस कंठ करि वाणि कहीने;
सुख साज आज धरि लाज वधारे,
शुभ काज ते ज जन सर्व सुधारे.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ७७, पृ. ४९

आनुं मूळ नाम कुटज छे. माघे 'शिशुपालवध'मां ते पहेली वार वापर्यो अने तेमां कुटज शब्द आवे छे तेथी ए नवा छंदनुं नाम 'कुटज' पड्युं. पटवर्धन नोंध करे छे के ए श्लोकमां 'भ्रमर' शब्द पण आवे छे तेथी ए छंदने कोई भ्रमर पण कहे छे. ('छन्दोरचना' पृ. १०१) तेनुं मुक्त समश्लोकी भाषान्तर नीचे मूकुं छुं:

वनमां प्रमत्त भ्रमरो कुटजोमां
निरखी, वळी गगनमां जलभारे
ळळता घनो, शिखरिनी सहुपाथी
टहुकी रहे मयुर गीत लहेके.

आ पछी प्रमिताक्षरा लउं छुं.

प्रमिताक्षरा : ललगा लगा ललगा ललगा १२

शठ थूं करे तुं तरणी तरणी,
धरणी विकार, मलनी भरणी;
मनुष्यावतार करनी करणी,
हरिभक्ति मुक्तिपदनी सरणी.

वृत्तरचना, पृ. ५५

अर्वाचीन साहित्यमां बहु वपरायो नथी पण छन्द सुन्दर छे, अने माघे आखो नवमो सर्ग आ छन्दमां लख्यो छे.

आ पछी चन्द्रवर्त्म लईए.

चन्द्रवर्त्म : गालगा ललगा लललगा १२

आ छन्द संस्कृत साहित्यमां पण वपरायेलो जोयानुं स्मरण नथी. दलपतरामे लीधो छे तेथी, अने आ ज कुटुंबनो होवाथी अहीं आपुं छुं. तेनुं दृष्टान्त दलपतराममांथी लउं छुं:

रान भासकि भयानक सरखुं,
चन्द्रवर्त्म नजरे नहि निरखुं,
झाडझुंड झुकियां बहु झरणां,
हाथि वाघ वरु ने वळि हरणां.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ६०, पृ. ४३

अने प्रियंवदा :

प्रियंवदा : ललगा ललगा लगालगा १२

न भजरे प्रभुजि केम तूं कदा,
परम मित्र प्रभु छे प्रियंवदा;
सरस शांति प्रभुथी पमाय छे,
प्रभु विना दुख खरां खमाय छे.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ६७ पृ. ४७

आ पण संस्कृत के गुजराती साहित्यमां बहु वपरायेलो जोयो नथी. 'राईना पर्वत' मांथी एक दृष्टान्त मळी आवे छे:

प्रणयना मयूर रंगनी पिछी
हृदयना पटपरे फरंति ज्यां,

सळगतो प्रबळ अग्नि कष्टनो
निकट ए पट पुठे अदृष्ट त्यां.
'राईनो पर्वत' अंक ७, प्रवेश १, पृ. १३२.

आ पछी द्रुतविलंबित लईए :

द्रुतविलंबित : लललगा ललगा ललगा लगा १२

वहि जतां झरणां श्रमने हरे,
निरखतां रचना नयनो ठरे;
मधुर शब्द विहंग बधां करे,
रसिकनां हृदयो रसथी भरे.
'वसन्तविजय', पूर्वालाप

आ संधिओमां ललगा अक्षरोनां आवर्तनो थाय छे तेथी कविओ यमक-चमत्कृति लाववा आ छन्दनो पुष्कळ उपयोग करे छे. गुजरातीमां तेवो एक दाखलो पंडित गट्टुलालना श्लोकनो नीचे उतारुं छुं :

नवि करी वकरी मति हाथमां
अमर हेम रहे नहि साथमां
नर सदा रसदायक देवने
निरख मूरख मूरति सेवने.
सुभाषित रत्नभांडागार (गुजराती भाषांतर साथे)
पृ. ५९७

हवे हुं अर्धसमवृत्तो लउं छुं, अलबत अहीं लीधेलां आ वृत्तो लगात्मक ज छे, अने तेथी तेमने विषे एटलुं कहेवानी जरूर छे के ते बधां मूळ मात्रा-गर्भ छन्दो छे अने तेमनो मात्राखंड संस्कृत साहित्यकारोने हाथे स्थिरलगत्व पामवाथी ते संपूर्ण लगात्मक वृत्तो बन्यां छे, एटले एने हुं अहीं स्थान आपुं छुं. दलपतरामे आवा बे छन्दो आपेल छे तेमां पहेलाने वैतालीय कहेल छे. पण ए नाम भ्रामक छे, कारण के एक अर्थमां ते मात्रागर्भ छन्दोना आखा वर्गनुं वाचक छे. आ वर्गमां बे अवान्तर वर्गो आवे छे: (१) वैतालीय (विशेष अर्थमां), (२) औपच्छन्दसिक. बन्नेना अनुक्रमे दाखला लईए. पहेलामां प्रथम वियोगिनी के सुन्दरी: (जेने दलपतरामे वैतालीय कहेल छे) :

वियोगिनी के सुंदरी : ललगा ललगा लगालगा १०
ललगागा ललगा लगालगा ११

गगने घुमराइ बादळी
विरहीनां हृइयां दई दळी;
रहि हा महि रेलि वृष्टिए!
न पडे पंथि रवींदु दृष्टिए.

'छायाघटकर्पर', सा. वि. १, पृ. १०

आ छन्दमां द्रुतविलंबितनी पेठे ललगानां आवर्तनो छे अने तेथी आ छंद पण यमकरचनाने अनुकूळ छे. जेम के

करवा कर बावरो मने,
सुखियारो सुखिया भजूं तने;
वणसे वणसेवना थकी
नरधारी नरधारणा नकी.

'द. पिं.', पृ. ६६

आ ज पेटावर्गनो बीजो छंद अपरवक्त्र:

ललललललगा लगालगा ११
लललगा ललगा लगालगा १२
मनवि उपरनां ज मीठडां
वगरस जे करिये मनामणां,
न चतुर उर ते हरी शके;
ज्यम मणि कृत्रिम रागना, सखे!

'पराक्रमनी प्रसादी' २–२१ (१९१८)

आ बन्ने वैतालीय पेटावर्गनां लगात्मक रूपो थयां. हवे वैतालीयना बीजा प्रकार औपच्छन्दसिकनां लगात्मक रूपो जोईए:

माल्यभारा अथवा माल्यभारिणी: ललगा ललगा लगा लगागा ११
ललगागा ललगा लगा लगागा १२

जळ दड्दड आभथी दड्डे,
भरवेगे गिरिगह्वरे हड्डे;
घडुडे घन; वीजळी झबूके,
अहि ते जोइ डरे दरे डबूके.

'छायाघटकर्पर', सा. वि. १, ११

पुष्पिताग्रा : ललललललगा लगा लगागा १२
ललललगा ललगा लगा लगागा १३

प्रमुदित थइने सुणी रहे ए,
अनुभवतो कंइ भाव ए नवीन;
अविदित गतिथी सरे य देवी
अकल कला कविए रहे निहाळी.

'दर्शन', स्मृति

आ बन्ने छन्दो, वैतालीयना औपच्छन्दसिक विभागना छे, पण ए नामे पण ए वर्गनुं एक लगात्मक रूप बनेलुं छे. आपणे ते जोईए :

औपच्छन्दसिक : ललललललगा लगा लगागा १२
ललगागा ललगा लगा लगागा १२

जळ झरमर मेहुलो झरंतां,
रसमां मग्न कदंब पांगरंतां;
नवल अवल फूलनो कळी ए
निरखंतां खटके कुंळी कुंळी ए.

'छायाघटकर्पर', सा. वि. १, पृ. १५

जरा ज पृथक्करणथी जणाशे के अहीं पहेली पंक्ति पुष्पिताग्रानी छे अने बीजी माल्यभारानी बीजी छे. वळी पुष्पिताग्राने पण कोई औपच्छन्दसिक कहे छे. (वृ. र., चौ. ४, ११, पृ. ११२)

मध्ययति विनानां लांबां वृत्तो बहु थोडां छे. तेमांथी हुं प्रथम पृथ्वी लईश. न्यास : —

पृथ्वी : लगा ललगा लगा ललगा लगा गालगा १७

दृष्टान्त : विहंग, उड ! जो लसे अखुट व्योम आशाभर्यां !
चडे नयन जे दिशा नभ नवीन ते दाखवे :
चहे हृदय रंग जे सुरकमान ते खीलवे :
विहंग उड ऊड रे ! उडण धन्य हो ताहरां.

'उड्डयोन्मुख नौजुवानने', भणकार पृ. १५३

पिंगलनुं 'छन्दःशास्त्र', 'वृत्तरत्नाकर', 'छन्दोमंजरी' वगेरे सर्व संस्कृत पिंगलो आ वृत्तमां आठमे अक्षरे यति माने छे. के. ह. ध्रुव कहे छे तेम "प्राचीन

साहित्यमां महाकवि कालिदास, भवभूति आदिए ते स्वीकारी नथी.''[५] ('सत्यवाद अने पक्षवाद,' सा. वि. भा. १., पृ. ११५-६) एटले आनुं स्थान अयतिक वृत्तोमां ज छे.

आ पछी हुं नर्दटक लउं छुं. तेनो न्यास:—

नर्दटक: लललगा लगा लललगा ललगा ललगा १७

दृष्टान्त: अगणित वर्ष ने युग अनेक व्यतीत थयां
खरतर मंत्रथी बधिर केवळ कर्ण बन्या;
नहि बलिदाननो पळ पळे पण पार रह्यो,
कलुषित भस्मथी अखिल कुंड भराइ गयो.
'नरमेध', स्रोतस्विनी

आ वृत्त गुजरातीमां नहीं जेवुं ज वपरायुं छे. बोटादकर सिवाय कोईए वापर्यानुं मने स्मरण नथी. भागवतमां आवती वेदस्तुति आ वृत्तमां छे अने तेथी ते पुराणीओने प्रिय छे. आने पिंगले अवितथ कह्युं छे (छ. शा. नि. ८, १४) अने अयतिक गण्युं छे, त्यारे 'वृत्तरत्नाकर' अवितथमां दशमे मध्ययति मूके छे (वृ. र. चौ., पृ. १२५) अने सातमे यति मूकी तेने नर्कुटक कहे छे. (एजन, पृ. ९८) आम अवितथ संबंधी पिंगलोमां मतभेद होवाथी हुं ए नाम नथी स्वीकारतो. वळी ए नाम गुजरातीमां कदी वपरायुं नथी. गुजरातीमां बे नामो कंईक परिचित छे. बोटादकरे उपरना काव्य उपर वृत्तनुं नाम नर्दटक अथवा नरकूटक कहेलुं छे. पण नरकूटकमां 'वृत्तरत्नाकर' यति मूके छे, एटले ए नाम न स्वीकारतां हुं बीजुं नर्दटक स्वीकारुं छुं, जेने 'छन्दोमंजरी' अयतिक गणे छे (छ. मं. क. द्वितीय स्तबक. अत्यष्टिमां वृत्त ६, पृ. १२८). बहु ओछुं वपरायेलुं होवा छतां लेवानुं कारण ए के अयतिक लांबां वृत्तोनी चर्चामां ए उपयोगी छे.

हवे हुं सयतिक वृत्तो लउं छुं. तेमां शालिनी गोत्र सौथी मोटुं छे ते प्रथम लउं छुं. अयतिक वृत्तोमां प्रथम आवतुं इन्द्रवज्रा जेम त्रिष्टुभ एटले अगियार अक्षरनुं छे तेम आ शालिनी पण अगियार अक्षरनुं छे, अने

---

५. भर्तृहरिशतकना प्रसिद्ध नीचेना श्लोकमां पण आठमे अक्षरे यति नथी.
लभेत सिकतासु तैलमपि यत्नतः पीडयन्
पिबेच्च मृगतृष्णिकासु सलिलं पिपासार्दितः।
कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादये-
न्न तु प्रतिनिविष्टमूर्खजनचित्तमाराधयेत्॥

उपनिषदोमां पुष्कळ वपरायेलुं छे. आगळ कही गया प्रमाणे मध्ययतिनुं स्थान बताववा हुं दंड मूकीश.

शालिनी : गागागागा। गालगा गालगागा ११

मृत्यु आजे आव बेसी घडीक
के द्हाडानी वात पूरी करीए;
तारेमारे नांहि संबंध जूज,
जे झाझो तो केळव्यो तें ज भाई!

'मृत्युने', निशीथ

अहीं चोथे अक्षरे यति आवे छे. अने ए यतिथी वृत्तना बे खंडो पडे छे, जेने आपणे यतिखंडो कहीशुं. अहीं पहेलो यतिखंड चार अक्षरनो छे, बीजो सातनो. आ दृष्टिए अयतिक वृत्तने आपणे अखंड अने सयतिकने सखंड कही शकीए.

शालिनी पछी आपणे वैश्वदेवी लईए :

वैश्वदेवी : गागागागागा। गालगा गालगागा १२

दृष्टान्त : ए ते संपातीपुत्र शूं कामनो छे?
के अश्वत्थामा कुंति ने रामनो छे?
के शुं रावानो रावणी शौर्यसेतु?
पंडे पांडूनो के शूं छे श्वेतकेतु?

'मृच्छकटिक'नो अनुवाद सा. वि. भा. १, पृ. ५४

अहीं तरत समजायुं हशे के शालिनीना पहेला खंडमां एक गुरु भळवाथी वैश्वदेवी वृत्त थयुं छे.

ए गोत्रनुं हवे जरा लांबुं—सत्तर अक्षरनुं बीजुं वृत्त लउं.

मंदाक्रान्ता : गागागागा । ललललगा । गालगा गालगागा १७

दृष्टान्त : छूपी ऊंचे घनपड महीं तारला व्योमअंके
निद्रा मीठी गिरि नदि अने विश्व आखुंय ले छे;
ने रूपेरी भ्रमित दिसती बीजळी एक स्थाने,
सूती सूती हसति मधुरूं स्वप्न मांहीं दिसे छे.

'बिल्वमंगल' : केकारव, पृ. ५५

आमां बे मध्ययतिओ छे. आने शालिनी साथे सरखाववाथी बन्नेना समान संधिओ एक ज पठनथी छता थई जशे. ए गोत्रनुं बीजुं वृत्त स्रग्धरा :

स्रग्धरा : गागागागा लगागा। लललललगा। गालगा गालगागा २१

घू घ्वू घू घू घुघव्ती! गहनगिरि, गुफा, कानने गाजि ऊठे!
प्हाडोए त्रा'ड तोडी गगन घुमि जती, आभना गाभ छूटे!
ऊभी छे पिंगळा वी चटपटित सटा! पुच्छ शूं वीज वींझे;
स्वारी ए केसरीनी! त्रिभुवनजयिनी चंडिका एथि रीझे!
'विकराळ वीर केसरी', प्रवास पुष्पांजलि पृ. ४२

आमां पण बे मध्ययतिओ छे. आ पछी हुं मालिनी लउं छुं.

मालिनी : लललललगागा। गालगा गालगागा १५

दृष्टान्त : सरस सरल वाक्ये, चोरती चित्त प्यारी,
चरण सुवरणेथी सोनुणी कान्ति धारी;
सुगुणवति सुरूपा, सूरितीवान शाणी,
नव त्रिय? नहि, भाळी कान्तनी शान्त वाणी!
'साक्षरसप्तक.', नथुराम सुन्दरजी

आनी पछी हरिणी लईए:

हरिणी : लललललगा। गागागागा। लगा ललगा लगा १७

दृष्टान्त : हृदयवनना मीठाबोला मुसाफर हंसला!
विपुल जलना वासी! भोळा! न मानस होय आ!
श्रमित दिसतो त्होये जा जा जहीं तुज स्थान छे!
उजड वनमां शानो, बापू! कशोय विराम छे?
'नूतन सखा प्रति', केकारव, पृ. २९२

आ पछी हुं सुवदना लउं छुं. गुजरातीमां ते बहु वपरायो नथी. तेनुं दृष्टान्त के. ह. ध्रुवना 'मुद्राराक्षस'ना समश्लोकी अनुवादमांथी लउं छुं.

सुवदना : गागागागा लगागा। लललललगा। गागा ललगा २०

दृष्टान्त : गर्जंता, भेखडोने बळ करि बळता, काळा तन छतां,
सिंदूरे शोण, प्रौढा मुज गज मदनूं वारी वहवता;
प्रौढो जे शोण नामे नद, घन वनथी काळो, तट बळे,
मोडे ने नीर रेले गरजि, पि ज जचो तेनूं सहु जळे.
'मुद्राराक्षस', ४, १६ के. ह. ध्रुव

अहीं शालिनी गोत्र पूरुं थाय छे. ए पछी एक नानूं गोत्र लउं छुं. प्रहर्षिणी अने रुचिरानूं. प्रथम प्रहर्षिणीनो न्यास आपुं छुं.

प्रहर्षिणी : गागागा। लललगा लगा लगागा १३

दृष्टान्त : क्रोधाग्नी तणि निज झाळ मध्य जेणे
नंदोने झडपि प्रजाळिया नयेने
ते चंद्रग्रहणनि गाय हेरि ह्रावे
घेरावो नरपति चंद्र शंकि आवे.

'मुद्राराक्षस', प्रस्तावना, ७ के. ह. ध्रुव

गुजरातीमां आ वृत्त बहु नथी वपरायुं, पण संस्कृत महाकाव्योमां ए घणुं प्रचलित छे अने सुन्दर पण छे. आ पछी रुचिरा.[६]

रुचिरा : लगालगा। लललगा लगालगा १३

दृष्टान्त : गजेन्द्र शा मदभर मंत्रिमुख्य बे
महीतळे बळ अतुळे बढी मरे;
तहीं व्हिली करिणि शि राजलक्ष्मि ते
अनिश्चये अति अटवाय छे खरे!

एजन, २, ४

---

६. 'भरतनाट्यशास्त्र'मां आ वृत्तने प्रभावती कहेल छे (भ. ना. चौ. १६, ५८ पृ. १८६)

के. ह. ध्रुवे 'दलपतपिंगळ'नी २२ मी आवृत्ति सुधारी त्यारे दलपतरामना मूळ प्रभावती नीचे नीचे प्रमाणे टिप्पण मूक्युं : "प्रभावतीमां चोथा अक्षर पछी यति छे. संस्कृत ग्रंथो प्रमाणे रुचिरा किंवा प्रभावतीनुं लक्षण नीचे मुजब छे.

जिभे सजी गृह जगमां वधावती,
प्रभाव तुं, श्रुति रुचिरा प्रभावती;
सदैव हुं भजुं तुजने ज, भारती,
रखे मने कविजननी! विसारती."

द. पिं. अक्षरमेळ छंद ७९. पृ. ५०

अहीं स्पष्ट रीते रुचिरा अने प्रभावती एक छे, अने तेनुं लक्षण उपर आप्या प्रमाणे छे एवो ध्रुवनो अभिप्राय छे. आ आवृत्ति १९२२ नी छे. एटले आने ज हुं, तेमनो छेवटनो अभिप्राय गणुं छुं. ते पहेलांना १९०८ना 'पद्यरचनाना प्रकार'ना लेखमां तेमणे प्रभावतीनुं दलपतरामे आपेलुं स्वरूप स्वीकार्युं हतुं. (सा. वि. २, २७५) ते नीचे प्रमाणे हतुं.

तूं भासि जे, गुण गणना शिखावती,
स्नेही सदा, मुज पण तुं प्रभावती;

आ पछी हुं शिखरिणी लउं छुं, जे संस्कृत गुजराती बन्ने साहित्यमां पुष्कळ वपरायो छे. एने बीजा कोई प्रचलित छन्दो साथे कुटुंबसंबंध जणातो नथी.

शिखरिणी : लगा गागागागा। ललललगागा ललगा १७

दृष्टान्त :

क्वचिद् रंगे घेरे सरवर लहेरे ठमकती,
क्वचित् ज्योत्स्नामांही स्वरणमयि कान्ती समकती,
क्वचित् प्राचीनांही चिरमणि धरीने रिझवती;
क्वचिद् अंधारामां प्रणतलय खेले खिजवती.

'क्लांत कवि', क्लान्त कवि

आ पछी प्रसिद्ध शार्दूलविक्रीडित लईए.

शार्दूलविक्रीडित : गागागा ललगा लगा ललगा। गागालगा गालगा १९

दृष्टान्त :

आवे शान्त समे शि खळखळ वही, झर्णो, नदीओ, लळी —
संगीत-ध्वनि विस्तरे! अनिलनी ल्हेरो विलासे ढळी!
तारामंडळ साथ रास रचिने बाळा तरंगोज्ज्वळा
शी आदर्शसमे सरोवर-जळे नाचे शशीनी कळा! ?

'रात्रिवर्णन अने मधुराकाशदर्शन', कुंजविहार

आ वृत्तोने केवळ उपलक नजरे जोतां पण केटलाक सामान्य विचारो आवे छे. अयतिक अने सयतिक बन्ने प्रकारनां वृत्तोमां प्राचीनतम त्रिष्टुभ अगियार अक्षरनो नीकळे छे. अने ए मूळभूत वृत्तनां गोत्रो ज सौथी वधारे विस्तरे छे. अयतिक वृत्तोमां लांबामां लांबु पृथ्वी अने नर्दटक सत्तर अक्षरनु छे. सयतिकमां लांबामां लांबु स्रग्धरा एकवीस अक्षरनु छे. तेनाथी टूंकु सुवदना २० नुं, शार्दूलविक्रीडित १९ नु अने[*] मंदाक्रान्ता अने शिखरिणी १७ नुं छे. अयतिकमां अगियार अने बार अक्षरनां अने चौद अक्षरनु वसन्ततिलका एमना

तारो ज छूं, जन भगवंति भारती,
देवी रखे, दिल मुजने विसारती.

द. पि., अक्षरमेळ छंद ७९

आनो न्यास, गागालगा। ललललगा लगालगा (१३) आ प्रमाणे थाय. रुचिरा साथे सरखावतां तेनां फेर मात्र एटलो ज छे के रुचिराना पहेला लघुनी जगाए आमां पहेलो गुरु छे. संस्कृत साहित्यमां आ छन्द सारी रीते वपरायो हुं जाणतो नथी. तेथी आपणा मुख्य छन्दोमां तेने स्थान आपतो नथी.

वपराश सौथी वधारे छे, पृथ्वीनो हमणां च वध्यो छे; सयतिकमां सत्तर अक्षरना मंदाक्रान्ता शिखरिणीनो वपराश सौथी वधारे छे, अने तेथी ऊतरतो ओगणीस अक्षरना शार्दूलविक्रीडितनो, अने एकवीस अक्षरना स्रग्धरानो. सुवदना बहु ओछुं वपराय छे. यतिखंडोमां टूंकामां टूंको पूर्व यतिखंड प्रहर्षिणीनो त्रण गुरुनो छे, लांबामां लांबो शार्दूलविक्रीडितनो बार अक्षरनो छे. प्रारंभमां ज यतिना विराम पहेलां एटली लांबी फाळ भरवी पडे छे माटे कदाच तेनें शार्दूलविक्रीडित—सिंहनी फाळ—कहेल हशे.[७] मालिनीनो आठ अक्षरनो, ते पछी तेथी टूंको स्रग्धरानो सात अक्षरनो, तेथी टूंको शिखरिणीनो छनो, वैश्वदेवीनो पांचनो, मंदाक्रान्ता–शालिनीनो चारनो. अंत्य यतिखंड शार्दूलविक्रीडितनो सातनो, शालिनी कुटुंबनो सातनो पण सौथी लांबो शिखरिणीनो अगियार अक्षरनो. आ केटलीक सामान्य हकीकत छे, जोके ते पण संवाद समजवामां कंईक उपयोगी थाय छे एम आपणे आगळ जोईशुं.

परिशिष्ट १

संस्कृत पिंगलोमां यतिचर्चा

वृत्तो एटले अनावृत्तसंधिवृत्तो लगभग बधां ज संस्कृत साहित्यमां खेडायां छे. अर्वाचीन युगमां आपणे नवेसरथी तेनुं खेडाण मांडयुं छे, जेने हुं बहु आशाजनक मानुं छुं, पण एटला माटे ज आपणे संस्कृत साहित्यकालमां जे खेडाण थयुं तेनो निचोड काढी लेवो जोईए.

संस्कृत वृत्तोना स्वरूपनो लगभग बधो ज ख्याल आपणने तेनी यतिचर्चामां मळे छे. ए यतिचर्चा आपणे बराबर समजी शकीए माटे संस्कृत भाषानी एक प्रसिद्ध खासियत, ए सर्वविदित होवा छतां, अहीं जोई जवानी जरूर छे. ते खासियत ते संस्कृतमां नजीक आवता स्वरव्यंजननी संधि थाय छे ते छे. आ स्वरव्यंजननुं नजीकपणुं एटले के संधि थवा माटेनी तेमनी

७. 'छन्दःशास्त्र' (निर्णयसागर प्रेस, सने १९३८) नी प्रस्तावनामां लेखक पृ. ७ मे वृत्तोनां नामोनी सार्थता विचारतां कहे छे के व्याघ्रस्य प्लुतिर्द्वादशहस्तेति प्रसिद्धेर्द्वादशाक्षरेषु यतिमच्छार्दूलविक्रीडितम् । वाघनी (सिंहनी कहेवी जोईए) फलंग बार हाथनी होय छे तेथी बार अक्षरे यति-वाळा छंदने शार्दूलविक्रीडित कह्यो.

संनिधि, एने माटे पारिभाषिक शब्द संहिता छे. संहिता क्यां अवश्य थाय, क्यां विकल्पे थाय, ते संबंधी प्रसिद्ध नियम नीचे प्रमाणे छे:

संहितैकपदे नित्या नित्याधातूपसर्गयोः।
नित्या समासे वाक्ये तु सा विवक्षामपेक्षते ॥

आनो भावार्थ ए छे के एक ज शब्दनी अंदर पासे पासे आवता वर्णोनी संधि आवश्यक छे. धातु अने उपसर्गनी संधि आवश्यक छे. एक ज समासमां आवता शब्दोनी संधि आवश्यक छे. पण वाक्यमां पासे पासे आवता शब्दोनी संधि बोलनारनी इच्छा उपर आधार राखे छे, वैकल्पिक छे. वाक्यमां आवता शब्दो एम कह्युं एनो अर्थ साथे साथे ए थयो के वाक्यनी बहार, वाक्यो वाक्यो वच्चे संधि होई शके नहीं. संस्कृत साहित्यलेखनमां अंग्रेजी लेखनपद्धति जेवां अल्पविराम, अर्धविराम, पूर्णविरामनां चिह्नो नथी पण संस्कृतलेखनमां वाक्य पूरूं थये दंड मुकाय छे, अने ए दंड बहार संधि थई शकती नथी. आ नियमोने बदले काव्यशास्त्र पोतानो नवो ज नियम मूके छे. तेमां प्रथम नोंधवा जेवुं ए छे के वाक्यमां आवता शब्दोनी संधिनो विकल्प काव्यशास्त्रने लागु पडतो नथी. गद्यमां आपणे कही शकीए के "न असतः विद्यते भावः। न अभावः विद्यते सतः।" पण पद्यमां तो ए संधि करीने ज बोलवुं पडे छे: "नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।" अहीं एक वाक्यनी अंदर आवता शब्दोमां तो संधि थई ज छे, पण बे वाक्योमां पण पासे पासे आवता शब्दोमां संधि थई छे. आ नियम कविओ चुस्तपणे पाळे छे, अने तेथी पद्यपंक्तिमां श्लेष सचाय छे एम काव्यशास्त्रकारो कहे छे. श्लेष एटले पंक्तिमां आवता शब्दोनो दृढ बंध, घन वणाट. जेम कपडामां जुदा जुदा दोरा देखाय ते वणाटनो दोष छे, तेम पद्यपंक्तिमां शब्दो छूटा वेरायेला देखाय ते दोष छे. आ नियमनो आग्रह एटले सुधी जाय छे के संस्कृत संधिनियम प्रमाणे जे अेकबे स्थाने पासे पासे आवेला स्वरोनी संधि नथी थई शकती,—एटले के ए संधि तो पद्यमां पण न थई शके—एवा प्रसंगो पण पद्यनी एक पंक्तिमां एकसाथे बे न आववा जोईए. दाखला तरीके:

मानेर्ष्ये इह शीर्यते स्त्रीणां हिमऋतौ प्रिये।
आसु रात्रिष्विति प्राज्ञैराम्नातं व्यस्तमीदृशं ॥

का. द. भा. ३, १६१

अहीं 'मानेर्ष्ये' अने 'इह' ए बे शब्दोमां स्वरो पासे पासे आव्या छे छतां त्यां संधि नथी थई शकती, अने तेथी अहीं पण नथी थई एमां दोष नथी. पण एवां बे के वधारे स्थानो आवे—जेम के

पण एवां बे के वधारे स्थानो आवे — जेम के

कमले इव लोचने इमे अनुबध्नाति विलासपद्धतिः

का. द. भा. ३, १५९ उपरनी टीका.

आमां 'कमले' अने 'इव', 'लोचने' अने 'इमे', 'इमे' अने 'अनु'० एम त्रण स्थान संधि विनानां आवे छे, तो तेने दोष गणे छे. पंक्तिमां श्लेषने माटे संस्कृत कविओने केटलो बधो आग्रह छे ते आ उपरथी जोई शकाशे.

संस्कृत काव्यशास्त्रमां जेम संधिनी आवश्यकतानो नियम छे तेम तेमां संधिना निषेधनो पण नियम छे. आ संबंधी चर्चा यतिने अंगे करवामां आवे छे. ते हवे आपणे लईए. नीचेना श्लोको 'छन्दःशास्त्र'ना भाष्यमां हलायुध टांके छे. ए ज श्लोको 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामां नारायण उतारे छे. अने ए ज हेमचन्द्र 'छन्दोनुशासन'मां उतारे छे. हलायुधने आपणे लगभग प्रथम टीकाकार गणीए तो आ श्लोक एनी पण घणा समय पूर्वेना गणवा जोईए. ए एने 'उपदेशोपनिषद्' कही, प्राचीन समयथी चाल्या आवता तरीके उतारे छे.

यतिः सर्वत्र पादान्ते श्लोकार्धे तु विशेषतः।
समुद्रादिपदान्ते च व्यक्ताव्यक्तविभक्तिके॥

चरणने अंते सर्वत्र यति आवे छे. श्लोकार्धे विशेष करीने आवे छे. अने समुद्र' वगेरे शब्दोथी अक्षरसंख्या कही होय त्यां आवे छे. अने त्यां ए शब्द

१. सूत्रोमां मध्ययति, समुद्र वगेरे संख्यावाचक शब्दोथी बतावबामां आवे छे. जेम के "शालिनी म्तौ त्गौ ग् समुद्रऋषयः।" (छ. शा. ६, १९.) अहीं समुद्र एटले चार (समुद्रो चार मनाय छे माटे) अक्षरे यति अने पछी ऋषि एटले सात अक्षरे यति एवो अर्थ छे. आ संकेतशब्दो प्राचीन कालथी चाल्या आवे छे एटले संस्कृत पिंगलो ते आपतां नथी. 'वृत्तरत्नाकर'ना टीकाकारो थोडा नीचे प्रमाणे आपे छे. वेद, अब्धि ४, भूत ५, रस ६, ऋषि, स्वर ७, वसु ८, ग्रह ९, दिशा १०, रुद्र ११, आदित्य १२, वगेरे. दलपतराम आ विशे नीचेना श्लोको आपे छे:

अंकसंज्ञा

(शिखरिणी)

शशी भूमी एके, भुज नयन बे युग्म ज भणो,
वळी वह्नी नाडी, भुवन गुण ते तो त्रण गणो;
लहो वेदो मुक्ती, जुग बरण ते चार सजनो,
शरो भूतो पांचे, खट ज ऋतु चक्रो दरशनो. १०

विभक्तिवाळो होय के (समासमां आवी जवाथी) विभक्ति विनानो होय, पण ते पूरो थवो जोईए एवो आनो अर्थ छे. एनुं उदाहरण

(१) नमोस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा।
तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनाम् ॥

आ अनुष्टुप छे. श्लोकार्ध दंडथी बताव्यो छे, अने एकी चरण अल्पविरामथी बतावेलुं छे ते चार स्थाने विभक्तिप्रत्यय साथे शब्द पूरो थाय छे. तेथी विरुद्धनो दाखलो :—

(२) नमस्तस्मै महादेवा,–य शशांकार्द्धधारिणे।

अहीं 'महादेवाय' ए शब्दनो विभक्तिप्रत्यय चरणान्तयतिथी कपाय छे, एटले यतिभंग थाय छे. अहीं चरणान्तयति पहेलांना शब्दो सविभक्तिक हता. नीचेना दृष्टान्तमां

(३) केनचिन्नवतमालकोमल –
श्यामलेन पुरुषेण नीयते॥

पहेला चरणान्ते 'कोमल' शब्द पूरो थाय छे, ते समासमां आवेलो होवाथी तेने प्रत्यय लागेलो नथी, एटले के यति सचवाय छे.

यति पादान्ते सर्वत्र होय छे, श्लोकार्धे विशेष करीने होय छे एम कहयुं एनो अर्थ ए थाय छे के श्लोकार्धे आवेला शब्दनी, तेनी पछी आवता शब्द साथे संधि न थई शके. अने संधि न थाय एटले श्लोकार्ध पछी समास पण आगळ सळंग न चाली शके. जेम के

(भुंजगी छंद)

मुनी सिन्धु साते, वसू सिद्धि आठे,
नवे खंड भक्ती, दशो दीश पाठे.
कहो रुद्र एकादशे, भानु बारे.
पछी यक्ष छे, रत्न चौदे विचारे. ११
तिथी ते पछी, सोळ शृंगार जाणो,
पछी अंकनी तो गती वाम आणो.
मुनी भूमि ते सत्तरे जेम मानो,
अढारे पुराणो कह्याथी पिछानो. १२

द. पि. संज्ञाविचार

संस्कृत पिंगलोमां समुद्रनो अर्थ ४ छे, गुजराती पिंगलोमां ७ छे ते नोंधवा जेवुं छे.

(४) नमस्यामि सदोद्भूत, मिन्धनीकृतमन्मथम्।
ईश्वराख्यं परं ज्योति, रज्ञानतिमिरापहम्॥

अहीं पूर्वार्धमां 'उद्भूतम्' अने 'इन्धनी'नी संधि थई छे. उत्तरार्धमां 'ज्योतिः' अने 'अज्ञान'नी संधि थई छे. पण श्लोकार्धे आवता 'मन्मथम्'नी ते पछी आवता 'ईश्वर' शब्द साथे संधि थई नथी. पण

(५) मन्दानिलेन चलता अंगनागंडमंडले

का. द. भा. ३, १६०

अहीं 'चलता' अने 'अंगना'नी संधि करवी जोईए, पण एम करवा जतां बीजा चरणमां एक अक्षर खूटे. एटले संधि थई शकती नथी. श्लोकार्ध सुधी संधि आवश्यक छे. पण अहीं थई नथी ए विसन्धि दोष छे. श्लोकार्ध पछी संधि न जोईए तेम, समास पण न चालवो जोईए. नीचे

(६) सुरासुरशिरोरत्नस्फुरत्किरणमंजरी –
पिंजरीकृतपादाब्जद्वंद्वं वंदामहे शिवम्॥

आ श्लोकमां श्लोकार्ध पछी समास आगळ चाले छे ते दोष छे. आ ज नियमो यथायोग्य मध्ययतिने पण लागु पडे छे. जेम के,

(७) तस्मिन्नद्रौ कतिचिदबलाविप्रयुक्तः स कामी।

अहीं पहेली मध्ययति चार अक्षरे आवे छे तेनी पहेलां 'अद्रौ' शब्द पूरो थाय छे ते विभक्तिवाळो छे, बीजी मध्ययति पहेलां 'अबला' शब्द पूरो थाय छे ते समासमां होवाथी अविभक्तिक छे. आपणे आगळ चालीए

क्वचित्तु पदमध्येऽपि समुद्रादौ यतिर्भवेत्।
यदि पूर्वापरौ भागौ न स्यातामेकवर्णकौ॥

भावार्थ एवो छे के क्यांक समुद्र वगेरेथी दर्शावाती मध्ययति शब्दनी वच्चे पण आवे, जो तेनाथी वहेंचाई जतो पूर्वापर भाग एक वर्णनो न थई जतो होय तो. आ वात सामान्य रीते गुजराती पिंगलोमां जाणीती नथी. अने महत्त्वनी छे. आपणे आना दाखला जोईए.

(८) स्रग्धरा: पर्याप्तं तप्तचामी, – करकटकतटे श्लिष्टशीतेतरांशौ।

(९) स्रग्धरा: कूजत्कोयष्टिकोला – हलमुखरभुवः प्रान्तकान्तारदेशाः।

(१०) स्रग्धरा: ह्रासो हस्ताग्रसंवा, – हनमपि तुलिता, द्रीन्द्रसारद्विषोऽसौ।

(११) स्रग्धरा: वैरिंचानां तथोच्चा, – रितरुचिरऋचां चाननानां चतुर्णाम्।

(१२) स्रग्धरा : खड्गे पानीयमाह्‌ला,– दयति च महिषं पक्षपाती पृथक्कः।
अहीं ज्यां ज्यां शब्दमध्ये यति आवी छे त्यां अल्पविरामथी ते बतावी छे, अने शब्द चालु रह्यो छे एम बताववा – आवुं संबंधक चिह्न करेलुं छे. आ बधा दाखलामां यतिथी तूटेला शब्दोना जे टुकडा थया छे, तेमां एक पण टुकडो मात्र एकवर्णनो नथी. चामी-कर, कोला-हल, संवा-हन, उच्चा-रित आ बधामां शब्दोना बब्बे अक्षरोना टुकडा पडे छे. अने छेल्ला दृष्टान्तमां वाह्‌ला-दयति एमां पहेलो टुकडो बे अक्षरनो अने बीजो त्रण अक्षरनो छे. आ दृष्टान्तोमां यतिभंग दोषरूप गणातो नथी पण आ प्रमाणे यतिथी थतो शब्दनो कोई टुकडो एक ज अक्षरनो थई जाय तो ते दोष गणाय छे. जेम के :

(१३) मंदाक्रान्ता : एतस्या गं,– डतलममलं गाहते चन्द्रकक्षाम्।

(१४) मंदाक्रान्ता : एतासां रा,– जति सुमनसां दामकंठावलंबि।

(१५) प्रहर्षिणी : स्वीकुर्व,– न्ति हि सुधियः प्रकुर्वते च।

अहीं यतिथी थता शब्दना टुकडामां क्यांक पहेलो क्यांक बीजो एकाक्षर बने छे अने तेथी अहीं पदमध्ययति दोषरूप छे. अने आ पदमध्ययति पण मात्र मध्ययति होय तो ज चाले, चरणान्त यतिमां शब्दनो टुकडो न ज थई शके. जेम के

(१६) मालिनी : प्रणमत भवबन्धक्लेशनाशाय नारा–
यणचरणसरोजद्वन्द्वमानन्दहेतुम्॥

अहीं 'नारा-यण' शब्दनो एक्केय टुकडो एकवर्ण नथी छतां आ दोष छे कारण के चरणान्त यतिमां एम शब्द भांगी शकातो नथी.

पण यतिस्थानो पर संधि करतां बे अक्षरोनी संधिथी एक ज अक्षर निष्पन्न थतो होय त्यां ए एक अक्षर यतिनी बीजी बाजु चाल्यो जाय, यतिनी आगळ के पाछळ चाल्यो जाय ए दोष गणातो नथी, पण एम अक्षर यति पार चाल्यो गया पछी बाकी रहेलो शब्दनो टुकडो एकाक्षर थई जवो जोईए नहीं. दृष्टान्तोथी आ स्पष्ट थशे.

(१७) अनुष्टुप : दिक्कालाद्यनवच्छिन्ना,– नन्तचिन्मात्रमूर्तये।

(१८) मालिनी : विततघनतुषारक्षोदशुभ्रांशुपूर्वा–
स्वविरलपदमालां श्यामलामुल्लिखन्तः॥

पहेला दृष्टान्तमां 'अनवच्छिन्न' अने 'अनन्त' ए बे शब्दोनी संधि थाय छे तेमां बे 'अ'नी जगाए एक 'आ' आवे छे, आ 'आ' पहेला चरणमां

स्थिर थाय छे, अने तेथी 'अनन्त' शब्द खंडित थाय छे, पण ते दोष नथी, कारण के संधिने लीधे एम थाय छे अने तेथी बाकी रहेलो टुकडो 'नन्त' एकाक्षर बनतो नथी; तेम ज 'पूर्वासु' अने 'अविरल'नी संधि थतां 'सु+अ'नी जगाए 'स्व' अक्षर आवे छे, अने ए यतिनी पछी चाल्यो जाय छे, पण एथी 'पूर्वासु' शब्दनो बाकीनो टुकडो 'पूर्वा' एकाक्षर थई जतो नथी, माटे दोष नथी.[२] पण ज्यां आवी संधिथी टुकडो एकाक्षर थई जाय त्यां ए दोष गणाय ज. जेम के

(१९) मंदाक्रान्ता : अस्यावक्रा – ब्जमवजितपू – र्णेन्दुशोभं विभाति।

अहीं 'वक्र' अने 'अब्ज'नी संधि थतां यति पछवाडे 'अब्ज'मांथी मात्र 'ब्ज' रह्यो, ते एकाक्षर छे, माटे दोष छे. ते ज प्रमाणे 'पूर्ण' अने 'इन्दु'नी संधि थतां यति पूर्वे मात्र 'पू' एकाक्षर रह्यो ए पण दोष छे.

बीजा संस्कृत भाषानी खासियतने ज लगता नियमो लेतो नथी. पण एक बाबत हजी कहेवा जेवी छे. 'च' (=अने) जे बे शब्दोने जोडतो होय, तेनी साथे तेनो नित्यसंबंध छे तेथी यतिथी तेने ते शब्दोथी छूटो पडवा देवो जोईए नहीं. जेम के

(२०) मंदाक्रान्ता : स्वादु स्वच्छं, च हिमसलिलं प्रीतये कस्य न स्यात्।

अर्थ एवो छे के स्वादु अने स्वच्छ हिमसलिल कोने न गमे? संस्कृत वाक्यरचना प्रमाणे 'स्वादु' अने 'स्वच्छ' ए बे शब्दोथी, ए बन्नेने जोडनार 'च'ने

---

२. भरतनाट्यशास्त्रनो टीकाकार अभिनवगुप्त तो आवी रीते प्रत्ययसंधिने लीधे चरणान्तयति बहार चाल्यो जाय एने पण दोष गणे छे.

यत्रार्थस्य समाप्तिः स्यात्स विराम इति स्मृतः।
पादश्च पचते धातोश्चतुर्भागः प्रकीर्तितः॥ १०४

भ. ना. शा. वॉ. २, पृ. २४४-४५

आना उपर टीका करतां अभिनवगुप्त लखे छे: "चतुर्भाग इति पादान्ते छेदः कर्तव्यः, न तु 'तांबूलवल्लीपरिणद्धपूगास्वेला'। इति।" आ प्रतीक 'रघुवंश'ना छठ्ठा सर्गना ६४ मा श्लोकनुं छे. ते श्लोकनो पूर्वार्ध नीचे प्रमाणे छे:

ताम्बूलवल्लीपरिणद्धपूगा–
स्वेलालतालिंगितचन्दनासु।

अहीं 'पूगासु'नी एनी पछीना 'एला' शब्द साथे संधि थतां तेनो 'सु' चरणान्त यति बहार चाल्यो जाय तेने ते यतिदोष गणे छे. हुं मानुं छुं के नाट्यमां अर्थ प्रमाणे पाठ करवा जतां आवी संधि विघ्नकर नीवडे माटे अभिनवगुप्त आटली सख्ताई करे छे. काव्यशास्त्रकारोए आवो बांधो लीधो नथी.

दूर करी शकाय नहीं. एटले के आ नियम तो यति संबंधी जे सामान्य नियम, के यति आगळ शब्द पूरो थवो जोईए, एथी पण एक डगलुं आगळ गयो. यति आगळ 'स्वच्छ' शब्द पूरो थाय छे छतां 'च' छूटो पडी जाय छे एने दोष गण्यो छे.

आ चर्चा अने दृष्टान्तो मुख्यत्वे 'छन्दःशास्त्र' (६-१)उपरनी हलायुधनी टीकामांथी, 'वृत्तरत्नाकर' (१, १२)उपरनी नारायणनी टीकामांथी अने 'छन्दोनुशासन' (अध्याय १) उपरनी स्वोपज्ञ टीकामांथी लीधां छे.

यति संबंधी मुख्यत्वे आ चर्चा छे. ते उपरथी ओछामां ओछुं एटलुं जणाशे के आपणा पिंगलकारोए यतिनी बाबतमां बहु सूक्ष्मबुद्धिथी विचार कर्यो छे. पदमध्ये यति क्यारे आवे अने क्यारे न आवे एना विचारमां शब्दना उच्चारणनी झीणी स्पष्ट समज रहेली छे. पदमध्ये यतिना दाखलानुं पठन करतां जणाशे के त्यां शब्द तूटवा छतां क्लेश थतो नथी, अने तेना दोषना दाखला वांचतां, खास करीने दृष्टान्त १९मुं वांचतां, स्पष्ट क्लेश थाय छे. यति संबंधी नारायण छेवटे तो ए ज कहे छे के

एवं यथा यथोद्वेगः सुधियां नोपजायते ।
तथा तथा मधुरतानिमित्तं यतिरिष्यते ।

भावार्थ के सहृदयने उद्वेग न थाय अने काव्यमां मधुरता आवे एटला माटे यतिने इष्ट गणी छे.

आ चर्चा बंध करतां पहेलां ए पण नोंधवुं जोईए के मध्ययतिने न स्वीकारनारा पिंगलकारोनो उल्लेख पण आवे छे. नारायण भट्ट उपरना श्लोकथी यतिचर्चा समेटी लईने कहे छेः "शुक्लांबरादयस्तु पादान्त एव यतिमाहुः । भरतादयस्तु यतिमेव नेच्छन्ति ।" शुक्लांबर वगेरे मात्र पादान्ते यति कहे छे. भरत वगेरेने यति इष्ट ज नथी. आ मतनां वधारे नामो स्वयंभूए आपेलां छे.

जयदेवपिंगला सक्कयंमि दुच्चिय जइं समिच्छन्ति।
मंडव्वभरहकासवसेयवपमुहा न इच्छन्ति॥

"जयदेव अने पिंगल ए बे संस्कृतमां यति इच्छे छे. मांडव्य भरत काश्यप अने सैतव वगेरे नथी इच्छता." नारायण तो एक डगलुं आगळ जईने कहे छे के भरत तो पादान्त यति पण इच्छतो नथी. आ बधानी परीक्षाने अहीं अवकाश नथी. पण एक बे वात स्पष्ट छे ते नोंधवी जोईए. पहेलुं ए के मांडव्य वगेरे

जे गणाव्या ते बधा प्राचीन छे. अर्वाचीन काळ तरफ आवता जईए तेम तेम यतिस्वीकार ज नजरे पडे छे. पिंगलनी मांडीने नारायण अने 'छंदोमंजरी'कार गंगादास तेम ज आपणी भाषानां पिंगलो पण यति स्वीकारे छे. बीजुं ए के कोई पिंगलकारे लक्षणमां यतिनो उल्लेख न कर्यो होय छतां जो दृष्टान्तो बधां यतिवाळां होय तो त्यां पिंगलकारनो सिद्धान्त अयतिनो छे एम न गणतां एनुं शास्त्रनिरूपण अपूर्ण गणवुं, अने सिद्धान्तमां तेने यतिवादी ज गणवो जोईए एम हुं मानुं छुं. दाखला तरीके भरतनाट्यशास्त्रमां छन्दोनां लक्षण आपतां भरत सयतिक वृत्तोमां क्यांक मध्ययतिनो उल्लेख करे छे, क्यांक नथी करतो, पण त्यां पण दृष्टांत तो सयतिक ज आपे छे. ते रुचिरा अथवा प्रभावतीनुं लक्षण आ प्रमाणे छे:

द्वितीयं च चतुर्थं च नवमैकादशे गुरु।
विच्छेदोऽतिजगत्यां च चतुर्भिः सा प्रभावती॥

भ. ना. का. १५, ५४

अहीं 'चतुर्भिः विच्छेदः' एम कही चार अक्षरे यति बतावी छे. ते ज प्रमाणे प्रहर्षिणीमां त्रण अक्षरे यति बतावी छे. (एजन १५, ५६) पण शालिनीना लक्षणमां यतिनो उल्लेख नथी:—

षष्ठं च नवमं चैव लघूनि त्रैष्टुभे यदि।
गुरूण्यन्यानि पादेषु सा ज्ञेया शालिनी यथा॥

एजन, १५-३२

पण तेना दृष्टान्तमां यति छे.

दुःशीलं स्यादल्पकं वा सुशीलं
लोके धैर्यादप्रियं न ब्रवीति।
तस्माच्छीलं साधुहेतोः सुवृत्तं
माधुर्यार्थं सर्वथा शालिनीव॥

एजन, १५, ३३

तेवी ज रीते शिखरिणीमां पण यति कहेली नथी पण दृष्टान्तमां पाळी छे. आवां दृष्टान्तो प्राकृत पिंगलमां पुष्कळ छे. शालिनी शार्दूलविक्रीडित वगेरे वृत्तोमां ए पिंगले यति क्यांय कही नथी पण दृष्टान्तो ते ते जगाए यतिवाळां छे. आने हुं मात्र निरूपणनी अपूर्णता, आ ग्रंथमां तो मात्र खासियत ज गणुं छुं. एटला उपरथी आनो अज्ञात कर्ता अयतिवादी हतो एम मानवुं मने मुनासिब लागतुं नथी.

बरूआ यतिभंगना खराब दाखला तरीके नीचेना बे श्लोको उतारे छे:

संतुष्टे तिसृणां पुरामपिरिपौ कंडूलदोर्मंडली –
लीलालूनपुनःप्ररूढशिरसो वीरस्य लिप्सोर्वरम्।
याच्ञादैन्यपराञ्चि यस्य कलहायन्ते मिथस्त्वं वृणु,
त्वं वृण्वित्यभितो मुखानि स दशग्रीवः कथं कथ्यताम्॥

अने

साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवतः शर्करे कर्कशासि,
द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृत मृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते।
माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्ति यावत्,
भावं शृंगारसारस्वतमिह जयदेवस्य विश्वग् वचांसि।

पृ. २११–१२

पहेला श्लोकमां 'कलहायन्ते'नी वच्चे यति आवी शब्दना बे टुकडा थाय छे पण पहेलामां त्रण अक्षरो आवे छे अने बीजामां बे अक्षरो बाकी रहे छे एटले एने यतिदोष कही शकाय नहीं. 'दशग्रीव'मां तो 'दश' आगळ यति आवे छे एटले त्यां समासनो एक शब्द पूरो थाय छे एटले जरा पण दोष रहेतो नथी. बीजा श्लोकमां 'जयदेवस्य'मां यतिनो खराब रीते भंग थाय छे, एम कहे छे पण अहीं पण एक बाजु त्रण अने बीजी बाजु बे अक्षरो रहे छे एटले एने आगळ कहेला अपवादोमां केम न गणी शकाय ते मने समजातुं नथी.

पण बीजा दृष्टान्तमां एक बीजी दृष्टिए पण विचार करवानो रहे छे. त्यां वृत्त स्रग्धरा छे. कविए 'गीतगोविन्द'मां सर्वत्र अमुक अमुक स्थाने पोतानुं नाम छन्दमां वणेलुं छे ज. अने तेने अहीं ए मूकवुं छे. हवे स्रग्धरामां आ स्थान सिवाय 'जयदेवस्य' शब्द बीजे क्यांय मूकी शकाय एम छे ज नहीं. जुओ

गागागागा लगागा ललललललगा गालगा गालगागा

ललगा गाल

जय दे वस्य

यतिभंग विशे विचार करतां आ पण ध्यानमां राखवुं जोईए.

यतिनी चर्चा करतां आपणे एक बीजी बाबत पण आनी साथे ज जोई लेवी जोईए. ते ए छे के संस्कृत साहित्यमां घणे भागे एक श्लोकमां वाक्य पूरुं थतुं. प्रबन्धोमां पण घणे भागे एम ज थतुं. प्रबन्धोना श्लोको जोईशुं तो दरेक श्लोकमां घणे भागे एक आखुं वाक्य जणाशे. मुक्तकनुं तो ए लक्षण ज छे के एक वाक्य एक श्लोकमां समाप्त थवुं जोईए. "एकेन च्छन्दसा वाक्यार्थ-

समाप्तौ मुक्तकम् ।" (का. शा. र. १ पृ. ४६६). प्रबन्धोमां ज्यां लांबां वर्णनो आवे छे त्यां बे श्लोकनां के तेथी वधारे श्लोकनां लांबां वाक्यो आवे छे, पण ते विरल जगाए ज. अने त्यां पण घणे भागे दरेक श्लोके अर्धविराम के अल्पविराम आवे छे ज. अने त्यां पण दरेक श्लोकमां एक प्रकारनी एकता देखाया विना नहीं रहे. 'रघुवंश'मां पहेला ज सर्गमां कालिदास ५ थी ९ श्लोकोमां रघुओनुं सामान्य वर्णन सुन्दर गौरवयुक्त भाषामां करे छे, त्यां पांचेय श्लोकमां एक सळंग वाक्य छे, पण तेमां दरेक श्लोके अर्धविराम जेवुं जणाया विना नहीं रहे.

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् ॥ ५ ॥

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम् ।
यथापराधदंडानां यथाकालप्रबोधिनाम् ॥ ६ ॥

त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम् ।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥ ७ ॥

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥ ८ ॥

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन् ।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रणोदितः ॥ ९ ॥

पांच श्लोकनुं एक वाक्य होवा छतां दरेक श्लोक पाछो तेना शब्दन्यासथी ज जुदो पडी आवशे. आ रीते संस्कृत साहित्य बधुं श्लोकबद्ध थयुं छे.

घणे भागे एक श्लोकमां एक ज वाक्य होय छे. पण कोई वार एक ज श्लोकमां बे वाक्यो आवे छे. अने त्यारे घणे भागे एक वाक्य श्लोकार्धमां पूरुं थवुं जोईए एवो नियम छे. पहेला वाक्यनो एकाद शब्द वधी पडे अने तेने श्लोकार्ध बहार लई जवो पडे तो ते दोष गणाय छे. 'काव्यप्रकाश'कार तेने अर्धान्तरैकवाचक (का. प्र. ऊ. ७, ७५) ए नामनो दोष गणे छे. अने वामन स्पष्ट कहे छे के 'नार्धे किंचित्समाप्तं वाक्यं ।' (का. सू. वृ. ५, १, ६.) श्लोकार्धे थोडा सारु समाप्त न होय एवुं वाक्य न प्रयोजवुं. जेम के नीचेनुं वाक्य दोषयुक्त गणाय.

इन्दुर्विभाति कर्पूरगौरैर्धवलयन् करैः ।
जगन्मा कुरु तन्वंगि ! मानं पादानते प्रिये ॥

बरूआ यतिभंगना खराब दाखला तरीके नीचेना बे श्लोको उतारे छे:

संतुष्टे तिसृणां पुरामपिरिपौ कंडूलदोर्मंडली –
लीलालूनपुनःप्ररूढशिरसो वीरस्य लिप्सोर्वरम्।
याच्ञादैन्यपराञ्चि यस्य कलहायन्ते मिथस्त्वं वृणु,
त्वं वृण्वित्यभितो मुखानि स दशग्रीवः कथं कथ्यताम्॥

अने

साध्वी माध्वीक चिन्ता न भवति भवतः शर्करे कर्कशासि,
द्राक्षे द्रक्ष्यन्ति के त्वाममृत मृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते।
माकन्द क्रन्द कान्ताधर धरणितलं गच्छ यच्छन्ति यावत्,
भावं शृंगारसारस्वतमिह जयदेवस्य विश्वग् वचांसि।

पृ. २११–१२

पहेला श्लोकमां 'कलहायन्ते'नी वच्चे यति आवी शब्दना बे टुकडा थाय छे पण पहेलामां त्रण अक्षरो आवे छे अने बीजामां बे अक्षरो बाकी रहे छे एटले एने यतिदोष कही शकाय नहीं. 'दशग्रीव'मां तो 'दश' आगळ यति आवे छे एटले त्यां समासनो एक शब्द पूरो थाय छे एटले जरा पण दोष रहेतो नथी. बीजा श्लोकमां 'जयदेवस्य'मां यतिनो खराब रीते भंग थाय छे, एम कहे छे पण अहीं पण एक बाजु त्रण अने बीजी बाजु बे अक्षरो रहे छे एटले एने आगळ कहेला अपवादोमां केम न गणी शकाय ते मने समजातुं नथी.

पण बीजा दृष्टान्तमां एक बीजी दृष्टिए पण विचार करवानो रहे छे. त्यां वृत्त स्रग्धरा छे. कविए 'गीतगोविन्द'मां सर्वत्र अमुक अमुक स्थाने पोतानुं नाम छन्दमां वणेलुं छे ज. अने तेने अहीं ए मूकवुं छे. हवे स्रग्धरामां आ स्थान सिवाय 'जयदेवस्य' शब्द बीजे क्यांय मूकी शकाय एम छे ज नहीं. जुओ

गागागागा लगागा ललललललगा गालगा गालगागा

ललगा गाल
जय दे वस्य

यतिभंग विषे विचार करतां आ पण ध्यानमां राखवुं जोईए.

यतिनी चर्चा करतां आपणे एक बीजी बाबत पण आनी साथे ज जोई लेवी जोईए. ते ए छे के संस्कृत साहित्यमां घणे भागे एक श्लोकमां वाक्य पूरुं थतुं. प्रबन्धोमां पण घणे भागे एम ज थतुं. प्रबन्धोना श्लोको जोईशुं तो दरेक श्लोकमां घणे भागे एक आखुं वाक्य जणाशे. मुक्तकनुं तो ए लक्षण ज छे के एक वाक्य एक श्लोकमां समाप्त थवुं जोईए. "एकेन च्छन्दसा वाक्यार्थ-

समाप्तौ मुक्तकम् ।" (का. शा. र. १ पृ. ४६६). प्रबन्धोमां ज्यां लांबां वर्णनो आवे छे त्यां बे श्लोकनां के तेथी वधारे श्लोकनां लांबां वाक्यो आवे छे, पण ते विरल जगाए ज. अने त्यां पण घणे भागे दरेक श्लोके अर्धविराम के अल्पविराम आवे छे ज. अने त्यां पण दरेक श्लोकमां एक प्रकारनी एकता देखाया विना नहीं रहे. 'रघुवंश'मां पहेला ज सर्गमां कालिदास ५ थी ९ श्लोकोमां रघुओनुं सामान्य वर्णन सुन्दर गौरवयुक्त भाषामां करे छे, त्यां पांचेय श्लोकमां एक सळंग वाक्य छे, पण तेमां दरेक श्लोके अर्धविराम जेवुं जणाया विना नहीं रहे.

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम् ।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम् ॥ ५ ॥

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम् ।
यथापराधदंडानां यथाकालप्रबोधिनाम् ॥ ६ ॥

त्यागाय संभृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम् ।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम् ॥ ७ ॥

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम् ।
वार्द्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम् ॥ ८ ॥

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन् ।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रणोदितः ॥ ९ ॥

पांच श्लोकनुं एक वाक्य होवा छतां दरेक श्लोक पाछो तेना शब्दन्यासथी ज जुदो पडी आवशे. आ रीते संस्कृत साहित्य बधुं श्लोकबद्ध थयुं छे.

घणे भागे एक श्लोकमां एक ज वाक्य होय छे. पण कोई वार एक ज श्लोकमां बे वाक्यो आवे छे. अने त्यारे घणे भागे एक वाक्य श्लोकार्धमां पूरुं थवुं जोईए एवो नियम छे. पहेला वाक्यनो एकाद शब्द बची पडे अने तेने श्लोकार्ध बहार लई जवो पडे तो ते दोष गणाय छे. 'काव्यप्रकाश'कार तेने अर्धान्तरैकवाचक (का. प्र. ऋ. ७, ७५) ए नामनो दोष गणे छे. अने वामन स्पष्ट कहे छे के 'नार्धे किंचित्समाप्तं वाक्यं।' (का. सू. वृ. ५, १, ६.) श्लोकार्धे थोडा सारु समाप्त न होय एवुं वाक्य न प्रयोजवुं. जेम के नीचेनुं वाक्य दोषयुक्त गणाय.

इन्दुर्विभाति कर्पूरगौरैर्धवलयन् करैः ।
जगन्मा कुरु तन्वंगि ! मानं पादानते प्रिये ॥

अर्थ: 'इन्दु कर्पूरगौर किरणथी जगतने धोळतो सोहे छे. हे तन्वंगी! पाये लागता प्रिय तरफ रीस न कर.' 'सोहे छे' सुधीनुं एक वाक्य छे, तेमां आवतो एक ज शब्द 'जगतने' ए द्वितीयार्धमां चाल्यो जाय छे माटे दोष छे. एवो ज बीजो दाखलो:

जगत्प्रकाशयन्निन्दुः करैः शुभ्रैर्विभाति मा।
मानमायतनेत्रान्ते! कुरु पादानते प्रिये॥

अर्थ: 'जगतने शुभ्र किरणथी प्रकाशतो इन्दु सोहे छे. हे दीर्घनेत्रवाळी पाये लागता प्रिय तरफ मान मा कर.' अहीं पण बे वाक्यो छे. बीजा वाक्यनो 'मा' शब्द पहेला श्लोकार्धमां चाल्यो गयो छे ए दोष छे.

एटले श्लोकार्धथी आगळ संधि नथी लई जवाती, तो त्यां वाक्य पण पूरुं करवानो आम्नाय छे. ए यति आगळ मात्र शब्द नहीं पण वाक्य पण पूरुं थवुं जोईए. पण उपर कह्युं तेम वाक्यनो घणो भाग शेष रही जतो होय तो एने दोष गण्यो नथी. वाक्यबोधनी झीणी समज उपर आ नियमो थया छे ए स्पष्ट थशे. उपरनानो अर्थ ए छे के श्लोकार्धे वाक्य पूरुं थवानी अपेक्षा थती होय तो त्यां एक शब्द वधी जवो ए दोष छे, एवी अपेक्षा न थती होय तो ए दोष नथी.

आ रीते संस्कृत छन्दशास्त्र यतिओनो विवेक करे छे. बधी यतिने ते एक सरखी गणतुं नथी. अने यतिना महत्त्व प्रमाणे संस्कृत भाषाना संधि-नियमो उपर असर थाय छे. मध्ययति पदमध्ये पण आवी शके, मात्र एनाथी शब्द एवी रीते न तूटवो जोईए के एकाद अक्षर कपाईने नोखो पडी जाय. पादान्त यतिए शब्द पूरो थवो ज जोईए. पण संधिने लीधे शब्दनो छेवटनो भाग यतिथी विच्छेदाई जाय तो वांधो नहीं. पण श्लोकार्धे तो संधि पण अटकी जवी जोईए. वाक्य पण ए रीते न तूटवुं जोईए के तेनो एकाद शब्द बीजा श्लोकार्धमां चाल्यो जाय. श्लोकान्ते वाक्य पूरुं थवुं जोईए. एम एक श्लोक बधी रीते अर्थदृष्टिए पण बराबर बेसी जवो जोईए. एक ज वाक्य एकथी वधारे श्लोकोमां विस्तरेलुं होय त्यां पण दरेक श्लोक एना शब्द-विन्यासथी तेना विभक्तिप्रत्ययोथी, जुदो तरी आवे एवो तो होवो ज जोईए, एवो आम्नाय छे. अने आखा पाठमां दृढबन्ध होवो जोईए. संस्कृतमां संधि थती होवाने लीधे संस्कृत पद्यसाहित्य जेवो दृढबन्ध बीजी कोई पण भाषामां भाग्ये ज शक्य होय!

परिशिष्ट २

निरूपणपद्धतिओ

वृत्तोना स्वरूपनिरूपणमां में बे मुख्य पद्धतिओ बतावी छे. पहेली वृत्तमां आवता लघु के गुरुओनां — मुख्यत्वे गुरुओनां कारण के वृत्तोमां गुरुओनी संख्या ज ओछी होय छे — स्थानो संख्याथी बताववां. आ पद्धति भरतमां छे, अने अर्वाचीनोमां 'श्रुतबोध'मां पण छे. पण वधारे शास्त्रीय मनाती पद्धति म य र स त ज भ न ए अक्षरगणोनी छे. पिंगलना 'छन्दःशास्त्रमां' टूंकां टूंकां सूत्रोमां आ अक्षरगणोथी अने लघुगुरुथी वृत्तनो अक्षरविन्यास, अने समुद्र वगेरे संख्यावाचक प्रतीकोथी यतिस्थान दर्शाववानी पद्धति आवे छे. 'वृत्तरत्नाकरे' पण अक्षरगणोथी ज स्वरूप दर्शाव्युं छे पण त्यां विशेषमां दरेक सूत्र ते ते छन्दमां आपेलुं छे. ते उपरांत बीजां दृष्टान्तो पण आपेलां छे. 'छन्दोमंजरी'मां पण आ ज पद्धति छे. पण 'प्राकृतपैंगल'मां पद्धति बदलाय छे.

'प्राकृतपैंगल' मुख्य मात्रामेळवृत्तो माटे छे. तेनो अर्ध उपरनो भाग मात्रावृत्तो रोके छे. ते पछी ते वर्णवृत्तो आपे छे, जेमां अनावृत्तसंधि साथे आवृत्तसंधि पण आपे छे. एमां वृत्तोनी निरूपणपद्धति जुदी छे. प्रथम तो ते मध्ययतिनो क्यांय उल्लेख नथी करतुं, ओके सयतिक वृत्तोना लक्षणछन्दोमां अने दृष्टान्तोमां यति आपे छे. तेथी तेने हुं अयतिवादी नथी गणतो. आ पिंगल मुख्यत्वे मात्रामेळ माटे होवाथी तेणे मात्रागणो कर्या छे. अने ए गणो नीचे प्रमाणे छे. ते ६ मात्राना गण माटे छ अने ट एवी बे संज्ञाओ स्वीकारे छे. ते ज प्रमाणे ५ मात्रा माटे प अने ठ, ४ मात्रा माटे च अने ड, ३ माटे त अने ढ, २ माटे द अने ण. आ पछी प्रस्तारथी दरेक गणमां लघु गुरु न्यासथी थता जुदा जुदा पर्यायोने ते पारिभाषिक नामो आपे छे, ते नीचे प्रमाणे:

छ के ट गणना तेर पर्यायो:

हर = गागागा, शशी = ललगागा, सूर्य = लगालगा, शक्र = गाललगा,
शेष = ललललगा, अहि = लगागाल, कमल = गालगाल, ब्रह्मा = लललगाल,
कलि = गागालल, चंद्र = ललगालल, ध्रुव = लगाललल, धर्म = गाललल,
शालिकर = लललललल.

प के ठ एटले पांचकलना कुल आठ पर्यायो थाय ते नीचे प्रमाणे:

इन्द्रासन = लगागा, सूर = गालगा, चाप = ललगा, हीर = गागाल,
शेखर = ललगाल, कुसुम = लगालल, अहिगण = गाललल, पापगण = ललललल.

च के ड एटले चतुष्कल गणना कुल पांच पर्यायो :—

कर्ण = गागा, करतल = ललगा, पयोधर = लगाल, चरण = गालल, विप्र = लललल.

त के ढ एटले त्रिकल गणना कुल त्रण पर्यायो थाय. तेमां पहेला लगा ने माटे ध्वज, चिह्न, चिर, चिरालय, तोमर, तुंबुरु, पत्र, चूतमाला, रस, रास, पवन, वलय, एटलां नामो छे. बीजा पर्याय गाल ने माटे सुरपति, पटह, ताल, करताल, (आ) नंद, छंद, समुद्र, तूर्य; अने ललल माटे भाव, रस, तांडव, नारी, कुलभाविनी.

द के ण एटले द्विकल गणना बे पर्यायो तेमां गा एटले गुरुनां नामो : नूपुर, रसनाभरण, चामर, फणी, मुग्ध, कनक, कुंडल, वक्र, मानस, वलय, हारावलि, अने लल गणनां नामो : निजप्रिय, परम, सुप्रिय.

आ उपरांत आ पिंगल चतुर्मात्रिक गणनां बीजां अनेक नामो आपे छे तेमांथी दृष्टांत तरीके मात्र जगण लगाल नां ज जोईए; भूपति, अश्वपति, गजपति, वसुधाधिप, रज्जु, गोपाल, उन्नायक, चक्रवर्त्ती, पयोधर, स्तन, अने नरेन्द्र.

आ जोतां सहेजे जणाशे के परिभाषा सगवड खातर वधारता होय ते करतां मात्र आडंबर खातर वधारे छे. आ निरर्थक भुलभुलामणीमां आगळ न जतां आपणे एक लक्षण जोईशुं. टूंको शालिनी ज लउं छुं:

कण्णो दुण्णो हार एक्को विसज्जे
सल्ला कण्णा गंध कण्णा सुणिज्जे।
बीसा रेहा पाअ पाए गणिज्जे
सप्पा राए सालिणी सा मुणिज्जे ॥ १०६ ॥

प्रा. पैं. B. पृ. ४१८.

आनो अर्थ : बे कर्ण (गागा), एक हार (गा) मूकवो. ते पछी शल्य (ल) कर्ण (गागा) गंध (ल), कर्ण (गागा) पादे पादे संभळाय छे. वीस मात्रा गणाय छे. तेने सर्पराज (पिंगल) शालिनी माने छे.

अहीं अक्षरसंख्या न आपतां मात्रानी कुलसंख्या वीस आपेली छे, जे अशास्त्रीय छे. अने गुरु लघुना क्रमथी शालिनी सिद्ध थाय छे ए खरुं पण क्यांक एक अक्षरनो क्यांक बे अक्षरनो गण गणेलो छे ते केवळ मनस्वी छे. शार्दूलविक्रीडितनुं आखुं लक्षण उतारतो नथी. एना लक्षणना बे श्लोको आपेला छे. पहेलामां अक्षरगणोथी लक्षण आप्युं छे, बीजामां पोतानी मात्रागण संज्ञाथी

आपेलुं छे. (एजन, श्लोक १८६-१८८. पृ. ५२५, ५२९) अने पहेला लक्षणमां अक्षरगणो आपी रह्या पछी कह्युं छे के तेमां अक्षर १९ छे, पाद चार छे, कुल ७६ वर्ण छे, तेमां ३२ मात्राना लघुओ छे, अने ८८ मात्राना, एटले ४४ गुरु छे. केवळ गणतरी करवा खातर गणतरी करी छे.

आ प्रकारनी कोई बीजी परिभाषाना ग्रन्थोनी आगळ नोंध करवानी जरूर जोतो नथी.

अर्वाचीन कालमां 'रणपिंगल' अक्षरगणोथी न्यासो आपे छे. दलपतराम अक्षरगणोथी आपे छे. विशेष एटलुं छे के ते अनावृत्तसंधि वृत्तोमां पण ताल दर्शावे छे जेनी चर्चा आपणे आगळ करीशुं.

'छन्दोरचना' वृत्तोनो न्यास लघु माटे ⏑ आवी अने गुरु माटे — आवी निशानीथी आपे छे. अने यति आश्चर्यचिह्न ! थी बतावे छे. ते संधिओनो उल्लेख करतुं नथी पण अयतिक छन्दोना चरणना पण विभागो पाडे छे अने तेने । आवा चिह्नथी बतावे छे. जेम के

इन्द्रवज्रा: (——⏑——।⏑⏑—⏑——) (छ. र. पृ. १११)

शालिनी: (————! —⏑——⏑——) (एजन, पृ. ११७)

शालिनीमां ! आ चिह्नथी यति बतावेली छे. पण इन्द्रवज्रामां यति नथी. छतां पहेला पांच अक्षरे चरणनो एक विभाग पूरो थाय छे एम बताववा एक दंड करेलो छे. आ दंडनी जगाए जरा टूंकी एवी यति पण ते माने छे. (एजन पृ. ६५)

परिशिष्ट ३

आवृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो

में आगळ कह्युं तेम आवृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोने प्राचीन पिंगलकारो अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ साथे ज गणता, जे अशास्त्रीय छे. एमनो मेळ मात्रामेळ ज छे. आपणे वृत्तोना प्रकरणमां तेमनो समावेश नथी कर्यो. छतां बधां पिंगलो ते आपे छे, 'दलपतपिंगळे' पण ते आपेल छे, एटले 'दलपतपिंगळ'नां अने बीजां केटलांक महत्त्वनां रूपकोनो न्यास अहीं परिशिष्टमां आपुं छुं. एथी एनुं आवृत्तसंधि स्वरूप पण स्पष्ट थशे. आठ अक्षरथी नाना बनावटी छंदो घणाखरा आवृत्तसंधि ज छे. छंदनो अंक 'दलपतपिंगळ'नो

मूक्यो छे. ने ताल पण बताव्यो छे. ताल बने त्यां सुधी 'दलपतपिंगळ'नो ज राख्यो छे, पण क्यांक छापभूल जणाई त्यां सुधारी लीधुं छे.

		अक्षरसंख्या
१ श्री :	गा	१
२ कामा अथवा स्त्री :	गागा	२
३ मंदर :	गालल	३
४ मधु :	ललगा	४
५ वार अथवा वारि :	गाल गाल	४
६ समुही :	गालल गा	४
७ हंसा :	गालल गागा	५
८ विलास :	लगाल गागा	५
९ प्रिय :	ललगा लगा	५
१० हारी :	गागाल गागा	५
११ संमोहा :	गागा गागा गा	५
१२ चतुरंसा अथवा शशिवदना :	लललल गागा	६
१३ शेषा :	गागागा गागागा	६
१४ विमोहा :	गालगा गालगा	६
१५ सोमराजी :	लगागा लगागा	६
१६ तिलका :	ललगा ललगा	६
१७ मालती :	ल गालल गाल	६
१८ समानिका :	गाल गाल गाल गा	७
१९ कलिता :	गालल गालल गा	७
२० कुमार ललिता :	लगाल ललगा गा	७

२१	मदलेखा :	गागा गालल गागा	७
२२	शीर्षा :	गागा गागा गागा गा	७
२३	चित्रपदा :	गालल गालल गागा	८
२४	केतुमाळ :	गागाल गागाल गागा	८
२५	तुंगा :	लल लललल गागा	८
२६	कमळ :	ललललल गालगा	८
२७	विद्युन्माळा :	गागा गागा गागा गागा	८
२८	खंजा :	गागा गागा ललगा गा	८
२९	मल्लिका :	गाल गाल गाल गाल	८
३०	नगस्वरूपिणी अथवा प्रमाणिका :	लगा लगा लगा लगा	८
३१	माणवकाक्रीड :	गालल गागा ललगा	८
३३	रत्नकरा :	गागा गालल गालल गा	९
३४	तोमर :	ललगालगा ललगाल	९
३५	सारंग :	लल ललगा गालल गा	९
३६	बिंबा अथवा ललिततिलका :	लललल लगाल गागा	९
३७	मणिबंध :	गालल गागा गालल गा	९
३८	महालक्ष्मी :	गालगा गालगा गालगा	९
३९	पवित्रा :	गागा गागा ललल गा	९
४०	रूपमाळा :	गा गागा गागा गागा गागा	९
४१	पावक :	गालल गागा गागा ललगा	१०
४२	चंपकमाळा :	गालल गागा गालल गागा	१०
४३	बिंदु :	गालल गालल गागा गागा	१०

४४ संजुक्ता अथवा संगतिका :	ललगालगा ललगालगा	१०
४५ दोधक :	गालल गालल गालल गागा	११
५० सुमुखी :	लललल गालल गालल गा	११
५१ ग्राही :	गागाल गागाल गागाल गागा	११
५२ अनुकूला :	गालल गागा लललल गागा	११
५६ सेनिका :	गाल गाल गाल गाल गाल गा	११
५७ ललित :	ललल गाल गा। गाल गाल गा	११
५८ मोदक :	गालल गालल गालल गालल	१२
६१ तोटक :	ललगा ललगा ललगा ललगा	१२
६२ मोतीदाम :	ल गालल गालल गालल गाल	१२
६३ स्रग्विणी :	गालगा गालगा गालगा गालगा	१२
६४ भुजंगी :	लगागा लगागा लगागा लगागा	१२
६५ कुसुमविचित्रा :	लललल गागा लललल गागा	१२
६६ तामरस :	लललल गालल गालल गागा	१२
६९ शैल :	लगागा लगागा लगागा लगाल	१२
७० तरलनयन :	लललल लललल लललल	१२
७१ दलछंद :	गाललल गाललल गालगा गा	१२
७६ तारक :	लल गालल गालल गालल गागा	१३
७८ मत्तमयूर अथवा माया :	गागा गागा। गालल गागा ललगा गा	१३
८० कंद :	लगागा लगागा लगागा लगागा ल	१३
८२ लीला :	गागाल गाल लल। गागाल गालगा ल	१४
८३ पडवमी :	ललगा। ललगा। ललगा। गागा	१४

८४ चामर :	गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा	१५
८५ निशिपाळ :	गाललल गाललल गाललल गालगा	१५
८७ माळा अथवा सृणि :	लललल लललल लललल ललगा	१५
८८ सारंगी :	गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा गा	१५
८९ नलिनी अथवा भ्रमरावळी :	ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा	१५
९० हंस :	ललगालगा ललगालगा ललगालगा	१५
९१ चंचळा :	गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल	१६
९२ विशेष अथवा नील :	गालल गालल गालल गालल गालल गा	१६
९३ नाराच :	लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा	१६
९४ रूपमाळी :	गालगालल गालगालल गालगालल गाल	१७
९९ चर्चरी अथवा विबुधप्रिया :	गालगालल गालगालल गालगालल गालगा	१८
१०० चंद्रक्रीडा :	लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा	१८
१०१ झूलणा :	लल गालगालल गालगालल गालगालल गाल	१९
१०३ शंभु :	ललगा गागा ललगा गागा ललगा गागा गागा गागा	१९
१०४ गीतक अथवा मुनिशेखर :	लल गालगालल गालगालल गालगालल गालगा	२०
१०६ मदिरा :	गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गा	२२
१०७ हंसी :	गागा गागा गागा गागा लललल लललल लललल गागा	२२
१०८ केकिनीशारदा :	गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा गाल	२३

१०९ सर्वगामी अथवा
नग्रछंद : गागाल गागाल गागाल गागाल गागाल
गागाल गागाल गागा २३

११० वर्णवागीश्वरी : लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा
लगागा लगागा लगा २३

१११ इन्द्रविजय
अथवा गालल गालल गालल गालल गालल
मत्तगयंद : गालल गालल गागा २३

११२ मल्लिका : ल गालल गालल गालल गालल
गालल गालल गालल गा २३

११३ किरीट : गालल गालल गालल गालल गालल
गालल गालल गालल २४

११४ देवछंद : लगागा लगागा लगागा लगागा लगागा
लगागा लगागा लगागा २४

११५ वैकुंठधामा : गालगा गालगा गालगा गालगा गालगा
गालगा गालगा गालगा २४

११६ दुमिला : ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा
ललगा ललगा ललगा २४

११७ सुखदा, विष्णु
अथवा ल गालल गालल गालल गालल
सुरेश्वर : गालल गालल गालल गागा २४

११८ कळाकुशळ
अथवा ल गालल गालल गालल गालल गालल
लवंगलता : गालल गालल गालल २५

११९ अरविंदमुखी: ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा
ललगा ललगा ल २५

१२० किशोर: लल गालल गालल गालल गालल
गालल गालल गालल गालल २६

आ पछी हुं दलपतपिंगलमां वणे भागे नहीं आवेला अने छन्दःशास्त्रमां आवता केटलाक महत्त्वना मात्रामेळी लगात्मक छन्दो नीचे आपुं छुं. दरेक छन्दना नामनी साथे सूत्र जणावतो जईश.

समानी (५, ६)	गाल गाल गाल गाल
प्रमाणी (५, ७)	लगा लगा लगा लगा
द्रुतमध्या (५, ३३)	गालल गालल गालल गागा
	ललल गालल गालल गागा
	अर्धसम छे.
वेगवती (५, ३४)	ललगा ललगा ललगा गा
	गालल गालल गालल गागा
	अर्धसम छे.
केतुमती (५, ३६):	ललगा लगाल ललगा गा
	गालल गालगालल गागा
	अर्धसम छे.
यवमती (५, ४२):	गाल गाल गाल गाल गाल गाल
	लगा लगा लगा लगा लगा लगा गा
	अर्धसम छे.
तनुमध्या (६, २):	गागा ललगा गा
भुजगशिशुसृता (६, ७):	ललल ललगा गागा
हलमुखी (६, ८):	गालगालल ललगा

अहीं सप्तकल संधिनां बे आवर्तनो छे. बीजा आवर्तनना छेल्लो गुरु खंडित थयेलो छे.

पणव (६, १०):	गागा गालल ललगा गागा
रुक्मवती (६, ११):	गालगालगा लगाल गागा
मयूरसारिणी (६, १२):	गालगालगा लगाल गागा
मत्ता (६, १३):	गागा गागा ललल गागा

उपस्थिता (६, १४):	गागा ललगा ललगा लगा
भ्रमरविलसिता (६, २१):	गागा गागा लललल ललगा
वृन्ता (६, २४):	लललल लललल गागा गा
श्येनी (६, २५):	गाल गाल गाल गाल गाल गा
विलासिनी (६, २६):	लगा लगा लगा लगा लगा गा
तोटक (६, ३१):	ललगा ललगा ललगा ललगा
जलोद्धतगति (६, ३३):	लगाल ललगा। लगाल ललगा
तत (६, ३४):	ललललल लगागा गागाल गा
चंचलाक्षिका (६, ३६):	ललल ललगा लगागालगा
कान्तोत्पीडा (६, ४०):	गालल गागा गालल गागा गागा
नवमालिनी (६, ४३):	ललल गालगालल गागा
मत्तमयूर (७, ३):	गागा गागा। गालल गागा ललगा गा
गौरी (७, ४):	ललललल ललललल लगागा
असंबाधा (७, ५):	गागा गागा गा।लल ललल गागा गा
प्रहरणकलिता (७, ७):	ललल ललगा ललल ललगा
चन्द्रावर्ता (७, ११):	ललल ललल ललल ललगा
माला (७, १२):	ललल लल।लल ललल ललगा
मणिगुणनिकर (७, १३):	ललल ललल । ललल ललगा
वृत्त (७, २४):	गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल
मत्ताक्रीडा (७, २८):	गागा गागा गागा गागा। ललल ललल ललल ललगा
तन्वी (७, २९):	गालल गागा। ललल ललगा।गालल गालल ललल गागा
क्रौंचपदा (७, ३०):	गालल गागा। गालल गागा। ललल ललल। ललल ललगा
अपवाहक (७, ३२):	गागा गालल ललल। ललल लल।लल ललल। ललगा गागा
कुड्मलदन्ती (८, २):	गालल गागा। ललल गागा
जलधरमाला (८, ४):	गागा गागा। ललल गागा गागा
गौरी (८, ५):	ललल ललगा लगागालगा
ललना (८, ६):	गालल गागा। ललल ललगा
वरसुन्दरी (८, ९):	गाललल गाललल गाललल गागा

कुटिला (८, १०): गागागागा। ललल लल।गा गागा गा
विबुधप्रिया (८, १६): गालगालल गालगा।लल गालगालल गालगा।
नाराचक (८, १७): लललललल गालगा गालगा गालगा गालगा

हुं आने टूंकावेलो दंडक गणुं छुं 'माटे अहीं लीधो छे. सूत्रमां यति नथी पण हलायुध दशमे यति दर्शावे छे ते आवश्यक नथी कारण के माघना 'शिशुपालवध'मां आ छंद छे तेमां त्यां यति नथी.

कृतसकलजगद्विबोधोऽत्रधूतान्धकारोदयः
क्षयितकुमुदतारकश्रीर्वियोगं नयन् कामिनः।
बहुतरगुणदर्शनादभ्युपेताल्पदोषः कृती
तव वरद करोतु सुप्रातमह्नामयं नायकः॥
शिशुपालवध, ११, ६७

श्री अंबालाल पटेले तेनुं भावान्तर करेलुं छे ते जोईए:

अखिल जगत जागतां, भागतां तामसी तो तमो,
सकल कुमुद तारको रोळतो, बाळतो कामिने;
जग बहु ज गुणाढ्यमां अल्पदोषे लहे दोष ना,
वरद तव दिनेश आजे प्रभाते भरो सार्थता.

'शिशुपालवध'नी टीकामां आ छंदने मल्लिनाथे महामालिका कहेलो छे.

परिशिष्ट ४

वृत्तोनुं परंपरागत पठन

आपणे गया प्रकरणमां वृत्तोनुं परंपरासिद्ध स्वरूप जोयुं. पण ए स्वरूप पिंगलसंज्ञानिर्दिष्ट ज जोयुं. कोई पण पद्यरचनानुं एटले श्लोकोनुं पण पूर्ण स्वरूप तेना पठनमां ज व्यक्त थाय छे. एटले खरेखरा पठनमां ए केवुं हतुं ते आपणे विचारी जोवुं जोईए.

पठन शब्द वापरतां एक वात समजवी जोईए. पठन अनेक प्रकारनां होई शके. एक ब्राह्मण शतचंडीमां होम करतां वसंततिलका वृत्त अमुक रीते लांबा रागे गाय, ते ज ब्राह्मण एक साथे सो वार चंडीपाठ करवा बेसाड्यो होय

१. जुओ अर्वाचीन गुजराती काव्यसाहित्य पृ. ३३, पादटीप ६.

त्यारे, बहु ज स्वराथी जुदी ज रीते पाठ करे. अने वळी कोई विद्यार्थी ए श्लोको मोढे करवा गोखे त्यारे जुदी रीते पाठ करे. आवां उतावळां अवैधिक पठनो ते खरां पठनो नथी. पण सामो माणस सांभळे अने भाषा समजतो होय तो समजे एवा उद्देशथी, अने ते गद्य नथी पण पद्य छे एवा माननथी करेलुं पठन तेने ज खरुं विधिपूर्वकनुं पठन कहेवाय, अने एवुं पठन ज पद्यरचनानुं खरुं स्वरूप प्रगट करी शके. आपणे एवा पठननो विचार करवानो छे.

आवा पठन संबंधी सौथी पहेलुं ए कहेवानुं के आपणां सघळां संस्कृत वृत्तो परंपराथी संगीतना स्वरो साथे पठातां. अत्यारे लग्नसमयनां मंगलाष्टको सांभळो, के चंडीपाठमां होम समये ब्राह्मणोने लांबे स्वरे वसंततिलका वृत्तो ललकारता सांभळो, के ब्राह्मणोनी नातोमां श्लोको बोलाता सांभळो के पुराणीओने कथा कहेतां श्लोको ललकारता सांभळो तो सर्वत्र तेमना पठनमां संगीतना स्वरोनो प्रयोग जणाशे. अलबत्त तेमां संगीतनो अमुक राग छे एम नहीं कही शकाय. रागनी सिद्धिने माटे जे पांच के वधारे स्वरो आवश्यक होय छे तेटला आवां पठनोमां नहीं मळे. (जो के केटलाक संगीतशास्त्रीओ संगीतना अमुक रागमां आपणां वृत्तो गाई बतावे छे.) पण संगीतना स्वरो तो पठनमां जणाशे ज. अने ए ज रूढ पठनपद्धति छे. कारण के लग्नसमयनां मंगलाष्टको, चंडीपाठना होम समयना श्लोको, के पुराणीओना श्लोको एक ज रीते गवाता संभळाय छे. तेनुं स्वरांकन करी शकाय[1]. पटवर्धने 'छन्दोरचना'मां पण आ परंपराने हकीकत तरीके स्वीकारी छे. ते कहे छे: पहेला अने त्रीजा चरणोनो

---

१. पुराणीओ वगेरेनी रूढ पठनपद्धतिने शास्त्रशुद्ध गणवी के केम ए प्रश्न छे. हुं 'रघुवंश' मारी नातना परंपरा प्रमाणे अभ्यास करेला एक विद्वान पासे भण्यो छुं. तेमां रघुवंशमां नीचेनो स्वागता छंद आवे छे.

कुंभपूरणभवः पटुरुच्चै
रुच्चचार निनदोंऽभसि तस्याः ।
तत्र स द्विरदबृंहितशंकी
शब्दपातिनमिषुं विससर्ज ॥ ९, ७३

ते तेमणे जे रीते गायो तेमां लघुगुरु नीचे प्रमाणे उच्चाराता हता

ललललललगा. . ललगा . गा. . .

टपकां कर्यां छे ते विलंबन दर्शावे छे. आमां विलंबनने जवा दईए पण प्रथमना छ वर्णो बधा लघु थई जाय छे ते तो अशास्त्रीय ज गणवुं जोईए. वळी जैन साधुओ अनुष्टुपोनो पाठ करे छे तेमां बधा अक्षरोने एक सरखा गुरु करी उच्चारे छे तेने पण अशास्त्रीय गणवुं जोईए. जेम के में

न्यास घणांखरां वृत्तोमां ऋषभ स्वर पर थाय छे त्यारे बीजा अने चोथा चरणोनो न्यास षड्ज उपर थाय छे. उदाहरणार्थ इन्द्रवज्रा बोलतां पहेला चरणमां सा सा रे ग म प म ग रे सा रे एवो स्वरक्रम होय छे, त्यारे बीजा चरणमां ग ग रे सा नि नि रे ग रे सा सा एवो स्वरक्रम होय छे. (छन्दोरचना पृ ९. पाद टीप) बर्वे पण श्लोको गावानी साधारण परंपरा छे एम स्वीकारी ते परंपरा प्रमाणेनुं स्वरांकन आपे छे, जो के उपरना पटवर्धनना स्वरांकनथी ते जुदुं पडे छे. पटवर्धन विषम अने सम पंक्तिना स्वरो भिन्न कहे छे. पण विषमना अने समना अंदर अंदर सरखा कहे छे, त्यारे बर्वे चारेयना जुदा आपे छे. सहेज सरखाववा इन्द्रवज्राना स्वरो उपरनी ज रीते हुं बर्वेमांथी आपी जाउं: री ग रि गरि ग रि ग म प म ग ए रीते पहेली पंक्तिना स्वरो. दरेक अक्षर माटेनो स्वर जुदो लख्यो छे. गरि अर्धचंद्र साथे कर्युं छे तेनो अर्थ एवो छे के ए स्थानना अक्षरनी बे मात्राओ ए बे भिन्न स्वरोथी बोलवानी छे. बीजी पंक्ति: रिग री स री ग म ग री ग री सा. त्रीजी पंक्ति: म प प प प म प प ध म ग अने चोथी: रिग री स री ग म ग री ग री सा. बर्वे पहेला पांच अक्षरो पछी यति माने छे एटले पहेला पांच अक्षरे ते यतिनो दंड मूके छे. अहीं बर्वे भिन्न स्वरो दर्शावे छे पण ते पण आ स्वरोने परंपराना ज गणे छे. आ स्वरांकननुं शीर्षक छे: "व्यवहारमां बोलाती श्लोकनी सादी ढब." (गायन वादन पाठमाळा पु. १. वि. ३. छंदोगान विनोद खंड. १. पृ. ९)

प्राचीन समयमां पण पद्यरचनाओ गवाती अेवां प्रमाणो मळे छे. मंत्रपुष्पांजलिमां बोलाय छे: "तदप्येषः श्लोकोऽभिगीतः। मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति।" अहीं अनुष्टुप श्लोक अभिगीत एटले गवायानो उल्लेख छे. अने आद्यकवि वाल्मीकिनो प्रसिद्ध श्लोक 'मा निषाद०' पण 'तन्त्रीलयसमन्वितः' तंत्रीना लयमां गाई शकाय एवो, के. ह. ध्रुवना शब्दोमां "वीणा साथे मेळ खाय एवो" हतो. अने रामायणमां वर्णन छे के लवकुशे रामायणनो अमुक भाग मार्गसंपदा

सांभळेला पाठमां

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो।
देवावि तं नमस्सन्ति जस्स धम्मे सयामणो॥

आनुं उच्चारण नीचे प्रमाणे हतुं.

गागा गागागा गागागा गागागा गागागा गागा।
गागा गागा गागागागा गागा गागा गागागागा॥

गायो. मार्ग शब्दनो अर्थ करतां टीकाकार कहे छे: "गानं द्विविधं मार्गो देशी चेति। तत्र प्राकृतावलंबि गानं देशी। संस्कृतावलंबि तु गानं मार्गः।" 'गान बे प्रकारनुं छे, मार्ग अने देशी. तेमां प्राकृतने अवलंबीने करेलुं देशी अने संस्कृतने अवलंबीने करेलुं मार्ग.' अहीं आखा सर्गमां (रामायण, बालकांड सर्ग ४) लवकुशे रामायण गायानुं ज वर्णन छे. आ सर्ग प्रक्षिप्त छे छतां प्राचीन छे, कालिदास पहेलांनो छे एटले अत्यारे जे अनुष्टुपने आपणे वधारेमां वधारे अगेय मानीए छीए ते पण गवातो.

खरी रीते, संगीतस्वरोना जरा पण आरोहअवरोह विनानुं सादुं पठन ए ख्याल आधुनिक छे, अंग्रेजी साहित्यना पठनना परिचय उपरथी आवेलो छे. कलाओनो विकासक्रम जोतां संगीतस्वरो काव्यने आवश्यक न गणवा जोईए, जो के ए बन्ने कलानुं सख्य योग्य स्थाने बहु ज सुभग नीवडे छे. अने ए आधुनिक दृष्टि स्वीकारवा साथे स्वीकारवुं जोईए के अंग्रेजी साहित्यना परिचय पहेलां बधुं पद्य संगीतना स्वरोथी एक रीते गवातुं. अत्यारे काव्यनुं गान अने पठन बे भिन्न प्रक्रियाओ छे.

आ उपरथी प्राचीन समयमां बधां पद्यो एक सरखी रीते ज गवातां के पठन गान वच्चे कंई भेद हतो ए प्रश्न ऊभो थाय छे. भरतनाट्यशास्त्रमां गान अने पठन बन्नेनो उल्लेख आवे छे. एटले ए प्रश्न बहु ज जिज्ञासाप्रेरक बने छे. भरतनाट्यशास्त्रना पाठनो अर्थ करवो बहु ज कठिन छे, एनी परंपरा तूटी गई छे, तेमां क्षेपक भागो पुष्कळ छे, हजी एना परनी अभिनवगुप्त-पादनी टीका आखी छपाई नथी, अने ए टीका पण दुर्बोध छे, ए बधी मुश्केलीओ छतां ते विषे विचार करतां हुं जे कंई समज्यो छुं ते विद्वानोनी विचारणा माटे अहीं रजू करुं छुं.

एक मुश्केली प्रारंभमां ज आवे छे. भरतनाट्यशास्त्रना प्रारंभना अध्यायमां ज नीचेनो श्लोक आवे छे:

> जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
> यजुर्वेदादभिनयान् रसानाथर्वणादपि॥ १७॥

पितामहे नाट्यात्मक पांचमो वेद केवी रीते रच्यो तेनुं आमां वर्णन छे. "ऋग्वेदमांथी पाठ्य लीधुं, साममांथी गीत लीधुं, यजुर्वेदमांथी अभिनयो लीधा अने अथर्वमांथी रसो लीधा." अहीं पाठ्य अने गीत बंने भिन्न कह्यां छे ए उपरथी अत्यारे आपणे काव्यने माटे इष्ट मानीए छीए तेवुं संगीतरहित काव्यपठन ते समये पण थतुं हतुं एवो आनो अर्थ केटलाक करे छे. पण एटलो बधो अर्थ

श्लोकमां अभिप्रेत जणातो नथी. अहीं नाटचनो वेद साथेनो संबंध केवळ तेनुं माहात्म्य बताववा कल्पेलो छे. नहितर यजुर्वेद कंई अभिनय माटे प्रसिद्ध नथी अने मरणादि अभिचारप्रयोगोवाळो अथर्ववेद कंई रसोनुं उत्पत्तिस्थान न घटी शके. छतां आ श्लोकनो गंभीर रीते आ संदर्भमां विचार करवो होय तो कहेवुं जोईए के आमां कहेलां चार तत्त्वो एकबीजाथी अवश्यव्यावृत्त नथी. रस जेम पाठ्य अभिनय अने गीत साथे होई शके तेम गीत पण पाठ्य साथे होई शके. पण खरुं तो अहीं पाठ्यनो अर्थ ज उपर कल्पेलो छे ते करतां जुदो छे. अहीं पाठ्यनो अर्थ वागभिनय, नाटकमां प्रयोजाती वाणीसमग्र, गद्य पद्य गीत सर्व एवो थाय छे. वाणीने नाटकमां मुख्य गणी छे माटे तेनो पहेलो उल्लेख कर्यो छे, अने तेना प्रमाणमां अभिनवगुप्त नीचेनो श्लोक उतारे छे.

वाचि यत्नस्तु कर्तव्यो नाटचस्यैषा तनूः स्मृता ।
अंगनैपथ्यसत्त्वानि वाक्यार्थं व्यंजयन्ति हि[2]॥ १४, २.

भ. ना. गा. वॉ. १ पृ. १४.

'संगीतरत्नाकर'ना नर्तनाध्यायमां पण नाटच विशे ए ज अर्थनो श्लोक छे.

ऋग्यजुःसामवेदेभ्यो वेदाच्चाथर्वणः क्रमात् ।
पाठ्यं चाभिनयान्गीतं रसान्संगृह्य पद्मभूः ॥

'संगीतरत्नाकर' ७, ९.

अहीं पण नाटचसामग्री वेदोमांथी उपर प्रमाणे लीधानुं ज कह्युं छे अने तेनी टीका करतां कल्लिनाथ कहे छे: "पाठ्यं नाम वाचिकाभिनयः ।" अर्थात् पाठ्य एटले वाचिकाभिनय, नाटकमां उपयुक्त वाङ्मय समस्त. एटले मात्र आ शब्द उपर आधार राखी पाठ्यगेयनो आपणा हालना अर्थमां भेद करी शकाय नहीं. एटलुं ज नहीं, आ "जग्राह पाठ्यं ऋग्वेदात्" एमांथी अभिनवगुप्त पोतानी विलक्षण रीते स्वरसहित पठननो अर्थ काढे छे. ते कहे छे, "तद् (पाठ्यं) ऋग्वेदात् गृहीतम् । तस्य त्रैस्वर्यप्रधानस्य स्तोत्रद्वारेण यागोपकारित्वात् पाठ्यमपि च त्रैस्वर्यपितम् ।" ऋग्वेदना पठनमां त्रण स्वरो प्रयोजाता, अने आ नाटकनुं पाठ्य पण त्रैस्वर्यवाळुं छे एम अभिनवगुप्त कहे छे. आपणे आगळ जोईशुं के अभिनवगुप्त पाठ स्थायिस्वरोमां करवानुं कहे छे. षड्ज पंचम अने उपरनो षड्ज ए स्थायी स्वरो कहेवाय छे. (भ. ना. गा. वॉ. १. पृ. १४.)

२. अर्थ: वाणी माटे यत्न करवो कारण के ते नाटकनुं शरीर छे; अंगनो अभिनय वस्त्रादिनो अभिनय अने सात्त्विक अभिनय वाक्यार्थने ज व्यक्त करे छे.

भरतनाटयशास्त्रमां आ वागभिनयनुं लक्षण चौदमा अध्यायमां विस्तारपूर्वक आपेलुं छे. त्यां स्वरव्यंजन अने पदच्छेदथी मांडीने व्याकरणना नियमो पण आपेला छे, जे बतावे छे के अहीं आखा वाणीना प्रयोगनो अर्थ छे. "द्विविधं हि स्मृतं पाठ्यं संस्कृतं प्राकृतं तथा॥" (एजन. वॉ. २. अध्याय १४, ५. पृ २२५) संस्कृत अने प्राकृत एवा बे पाठ्यना प्रकारो छे. अहीं पण पाठ्यशब्द वाणीमात्रनो वाचक छे. आ अध्यायमां समासनुं लक्षण आप्या पछी कहे छे के शब्दोथी बे प्रकारना पदबन्धो थाय छे, निबद्ध अने अनिबद्ध: —

विभक्त्यन्तं पदं ज्ञेयं निबद्धं चूर्णमेव च।
तत्र चूर्णपदस्येह संविबोधत लक्षणम्॥ ३९:

'अनिबद्धपदं छन्दं' तथाचानियताक्षरम्।
अर्थापेक्ष्यक्षरस्यूतं ज्ञेयं चूर्णपदं बुधैः॥ ४०॥

निबद्धाक्षरसंयुक्तं यतिच्छेदसमन्वितम्।
निबद्धं तु पदं ज्ञेयं प्रमाणनियतात्मकम्॥ ४१॥

एजन पृ. २३४

भावार्थ के पदोना ग्रंथो बे प्रकारना: निबद्ध अने चूर्ण. तेमां चूर्णनां पदो अनिबद्ध होय छे, तेमां छन्दोनो पादबंध होतो नथी, तेना अक्षरो अनियत होय छे अने तेना अक्षरो अर्थनी अपेक्षाथी गूंथायेला होय छे. ते चूर्ण. निबद्ध अक्षरोवाळुं, यति अने छेद वाळुं, अने प्रमाणथी नियत थयेलुं ते निबद्ध. आमां चूर्ण एटले गद्य, अने निबद्ध एटले पद्य. ए ज वात अभिनवगुप्त पण कहे छे. "यति विरामः च्छन्दोऽक्षरसंख्यानियमः अक्षरनियमो गुरुलघुनिवेशनियमः एतद्विहीनं चूर्णपदमर्थशृंगारवीराद्यपेक्ष्यक्षराणि परिमितानी भूयांसि वा यत्रेति असमासंघट्टनात्मकमुक्तकमिति।' इदं तु केवलं पठनकर्मत्वाद्गद्यमित्युच्यते।" (एजन. पृ. २३४-२३५.) अहीं उपर मूळ श्लोकमां आवेली वात ज फरी कही छे. (थोडुं गांठनुं उमेरेलुं छे ते मारे अप्रस्तुत छे) महत्त्वनुं ए छे के आपणे जेने गद्य कहीए छीए तेने अभिनवे पण गद्य ज कह्युं छे अने गद्यने 'केवळ

२–२. आनी जगाए काशी संस्कृत सीरीझनो 'अनिबद्धं पदवृन्दम्' (भ. ना. चौ. अ. १५, ३५, पृ. १७२) पाठ हुं वधारे सारो गणुं छुं.

३. मूळमां 'मुक्तमिति' छे ते में सुधारीने 'मुक्तकमिति' एम करेलुं छे. अहीं सादा गद्यने माटे ज चूर्ण शब्द वापर्यो छे तेनुं पारिभाषिक नाम मुक्तक छे. जुओ "वृत्तगन्धोज्झितं गद्यं मुक्तकम्" साहित्यदर्पण ६–३३०

पाठ्य' कह्युं छे. अहीं पाठ्य शब्द आपणने इष्ट पाठ्यना अर्थमां वापरेलो छे. काव्य पाठ्य छे पण गद्य जेवुं 'केवळ पाठ्य' नथी एवो आनो फलितार्थ छे.

गद्य विशे आटलुं कह्या पछी (अने आ पछी गद्य विशे विशेष आवतुं नथी) पद्य विशे विवरण आवे छे. चौदमा अध्यायना बाकीना भागमां एकथी छव्वीश अक्षर सुधीनां वृत्तोनां नामो अने तेमनी प्रस्तारसंख्या आपेली छे. अक्षरगणो अने लघुगुरुनां स्वरूपो, यतिनुं स्वरूप वगेरे पिंगलनी चर्चा करेली छे. पंदरमा अध्यायमां अक्षरमेळ वृत्तो अने आर्यानुं स्वरूप आपेलुं छे. सोळमा अध्यायमां काव्यना अलंकारो आपेला छे. सत्तरमा अध्यायमां प्राकृत पाठ्यनां लक्षणो कह्यां छे, अने त्यां पण संस्कृतनी पेठे ज वर्णथी शरू करी व्याकरण आपेलुं छे, जे बतावे छे के पाठ्य अहीं पण भाषाना अर्थमां वापरेलुं छे. छेवटे लखे छे:

"एवं भाषाविधानं तु ज्ञात्वा कर्माण्यशेषतः ॥ १०२॥
ततः पाठ्यं प्रयुंजीत षडलंकारसंयुतम्॥ (एजन पृ. ३८५)

अहीं सुधी वाणीनी वात करी हवे ए पाठ्यनो प्रयोग केम करवो, नाटकमां ए केवी रीते उच्चारवुं ते कहे छे. अहीं एक वात कहेवी जोईए के पाठ्यमां जोके गद्यनो समावेश थाय एवी आपणे अपेक्षा राखीए पण अहींथी जे चर्चा चाले छे ते सर्व छन्दोना पठननी ज छे. चर्चामां जेटलां दृष्टान्तो आवे छे ते सघळां श्लोकोनां ज छे. आखो संदर्भ जोतां तेनी खातरी थशे.

हवे आपणे जोईए के भरत पाठ्य विशे शुं कहे छे. उपर षडलंकारसंयुत पाठ्य कह्या पछीनी चर्चा गद्यमां आवे छे. "पाठ्यगुणानिदानीं वक्ष्यामः। तद्यथा सप्तस्वराः, त्रीणि स्थानानि, चत्वारो वर्णाः, द्विविधा काकुः, षडलंकाराः, षडंगानीति।" 'पाठ्यमां आटला गुणो जोईए. (१) सप्त स्वरो (२) त्रण स्थानो (३) चार वर्ण (४) बे प्रकारना काकु (५) छ अलंकारो (६) छ अंगो.' "एषामिदानीं लक्षणमभिव्याख्यास्यामः तत्र सप्त स्वरा नाम–षड्जर्षभगान्धारमध्यमपञ्चमधैवतनिषादाः। त एते रसेषूपपाद्याः। यथा—

हास्यशृंगारयोः कार्यौ स्वरौ मध्यमपंचमौ। १०३॥
षड्जर्षभौ तथा चैव वीररौद्राद्भुतेष्वथ।
गान्धारश्च निषादश्च कर्तव्यौ करुणे रसे॥
धैवतश्चैव कर्तव्यो बीभत्से सभयानके।" एजन पृ. ३८७

'सात स्वरो छे तेमां हास्यमां अने शृंगारमां मध्यम अने पंचम, वीर रौद्र अने अद्‌भुतमां षड्‌ज अने ऋषभ, करुणमां गान्धार अने निषाद[४], बीभत्स अने भयानकमां धैवत प्रयोजवो।'

अहीं एक प्रश्न थाय छे. भरतनाटचशास्त्रमां गेय उपर स्वतंत्र अध्यायो छे. वळी संस्कृत नाटकोमां अमुक जगाए पात्र गाय छे एवो निर्देश होय छे अने सामान्य रीते घणांखरां पद्यो उपर एवी सूचना होती नथी. एटले प्रश्न थाय छे के सामान्य पद्योना पठनमां अने नाटचसूचना प्रमाणे गवाता गीतमां फरक शो? आ ज प्रश्न टीकाकार अभिनवगुप्त लई तेनो खुलासो करे छे. "स्वरगतं वितत्य गेयाधिकारे प्रकटयिष्यामः। . . . . उदात्तानुदात्त-स्वरितकंपितरूपतया स्वराणां यद्रक्तिप्रधानत्वमनुरणनमयं तत्यागेन उच्च-नीचमध्यमस्थानस्पर्शित्वमात्रं पाठ्योपयोगीति दर्शितम्। यदि हि स्वरगता रक्तिः पाठ्ये प्राधान्येन अवलंब्येत तदा गानक्रियासौ स्यात्, न पाठः।" (एजन पृ. ३८५) भावार्थ के स्वर संबंधी विस्तार करीने गेयना प्रकरणमां कह्युं छे. कहेवानुं ए छे के 'स्वरो उदात्त अनुदात्त स्वरित अने कंपित थतां तेनुं रणकार जेवुं जे रक्तिप्रधानत्व थाय तेनो त्याग करीने स्वरो उच्च नीच मध्यम स्थाननो मात्र स्पर्श करे एटलुं ज पाठ माटे उपयोगी छे. जो स्वरनी रक्ति—अनु-रणन—लांबो रणकार पाठ्यमां पण थाय तो ते पछी गान थयुं. पाठ्य न थयुं.' आगळ जतां ए ज वात जुदी रीते कहे छे. "प्राणभूतं तावद् ध्रुवागानं प्रयोगस्य, तत्र जात्यंशकविनियोगो भविष्यति तदिदानीं पाठावसरे किं सर्वथैव त्यक्तव्यमित्याशंकाशमनाय तत्स्थायिस्वराश्रयणं प्रमुखीकृत्य पाठः कर्तव्य इत्येतत्स्वराभिधानस्येह प्रयोजनम्।" (एजन पृ. ३८६) भावार्थ के "ध्रुवागान (जेने विशे आगळ अध्याय आवे छे) ए प्रयोगनो प्राण छे, तेमां जाति अने अंशकनो विनियोग थशे, ते आ पाठ करती वखते सर्वथा छोड़ी देवां? एवी शंकाना समाधान माटे 'स्थायी स्वरोना आश्रयने मुख्य राखीने पाठ करवो' एम आ स्वरोना उल्लेखनुं अहीं प्रयोजन छे." अहीं आवता घणा पारिभाषिक शब्दोनो अर्थ अज्ञात रहेतां पण एटलुं निष्पन्न थाय छे के गानमां अने आ पाठमां मुख्य भेद ए हतो के गानमां लांबुं अनुरणन —रणकार—आलाप प्रधान हतो तेने आ पाठमां स्थान नथी, पण नाटच-शास्त्रने अभिमत पाठमां छन्दोना पठनमां स्वरोनुं अवलंबन थतुं. अने आ समजी शकाय एवुं छे. लांबे स्वरे–रणकार साथे गातां शब्दोनुं उच्चारण

४. तोडी राग करुण रसने अनुकूळ गणाय छे अने तेमां गान्धार प्रधान होय छे.

गीतमां ढंकाई जाय, अने तेनो अर्थ स्फुट न थई शके. त्रण स्वरोथी अनुरणन विना पठतां अर्थ स्फुट थई शके.

अभिनव गुप्तनी टीका १८ मा अध्याय सुधीनी गायकवाड ओरियेन्टल सिरीझमां बहार पडी छे. ते पछीना अध्याय माटे चौखंबानी अने निर्णयसागरनी टीका विनानी आवृत्तिओ उपर आधार राखवानो रहे छे. ते उपरथी जणाय छे के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो पण ध्रुवा बनी शकतां अने त्यारे ध्रुवा तरीके गवातां. ३२मा ध्रुवाध्यायमां आवां अनेक विधानो मळी रहे छे.

यान्यंगानि कलाश्चैव गीतकान्तर्गतानि तु।
तानि छन्दोगतैर्वृत्तैर्विभाष्यन्ते ध्रुवास्तया।
भ. ना. चौ. ३२, ११ पृ. ३८४

भावार्थ के गीतनी अंदरनां अंगो अने कला छन्दोगत वृत्तमां आवे त्यारे ते छन्दो पण ध्रुवा कहेवाय. आ अध्यायमां ध्रुवा तरीके केटलीक पद्यरचनानां स्वरूप आपेलां छे तेमां केटलीक जातिरचनाओ आवे छे, अने ते साथे रथोद्धता वंशपत्रकम् प्रमिताक्षरा जेवां अक्षरमेळवृत्तो पण आवे छे. (एजन ३२, ३०६ पृ. ४१४) तेम ज पुट (एजन ३२, ४१२ पृ. ४२३) अपरवक्त्र (एजन ३२, ४१५) जेवां पण आवे छे. अपरवक्त्रनो प्रयोग गीत तरीकेनो शाकुन्तलमां पण मळी आवे छे. पांचमा अंकना प्रारंभमां ज अपरवक्त्र आवे छे अने ते गवाय छे एवुं नाटचसूचन छे. तेनी टीकामां राघव भट्ट एना गाननां लक्षणो रक्ति ग्राम राग आलाप वगेरेनो उल्लेख करे छे.

निर्णयसागरनी आवृत्तिमां एक बीजो भेद कह्यो छे ते पण जाणवा जेवो छे.

प्रायेण तु स्वभावात् स्त्रीणां गानं नृणां च पाठ्यविधिः।
भ. ना. नि. ३३, ५ पृ. ६०४

आने ज मळता अर्थनुं वाक्य चौखंबानी आवृत्ति (३२, ४६८ पृ. ४२७) मां आवे छे. आ उपरथी मने लागे छे के गान घणे भागे स्त्रीओने भागे ज आवतुं हशे अने पुरुषो त्रिस्वरथी पाठ करता हशे.

आ साथे एक बीजी बाबत पण नोंधवा जेवी छे. 'संगीतरत्नाकर'ना चोथा प्रबन्धाध्यायमां गद्य गावानी पद्धति छे. तेमां ताल साथे तेम ज ताल विना गावानुं आवे छे. एटले गद्यप्रबन्धो गवाता हशे एम जणाय छ. ('संगीत-रत्नाकर,' ४, १८४–१९७.) तेना उपरनी कल्लिनाथनी टीका जोतां पण ए

ज वक्तव्य जणाय छे. पण आ, प्रबन्धोने ज लगतुं हशे, नाटकना गद्यभागने लगतुं नहीं होय एम हुं मानुं छुं.

अत्यारे पण गद्य गवाय छे. लूंटारा संबंधी गद्य पवाडाओ में गवाता सांभळ्या छे. कोईएआनो संग्रह करी लेवो जोईए. ते सिवाय आपणामां आज सुधी गद्यने आरोहअवरोहथी बोलवानी पद्धति चालती आवेली छे. कोसियो कोस चलावतां कूवा कांठे ऊभो रही लांबा रागे रामैयो बोले छे ते गद्य छे. जूनी ढबे स्त्रीओ ओरडामां बेसीने मों वाळे छे त्यारे आरोहअवरोहथी गद्य बोलती होय छे. डाकलांवाळा डाकलां वगाडतां लांबे स्वरे आरोह-अवरोहथी गद्य बोले छे. धूणती स्त्रीने गद्य गाती एक जग्याये श्री पन्नालाल पटेले वर्णवी छे. हरिकीर्तनकारो उपदेश करतां गद्यने स्वरोनो आरोहअवरोह आपे छे. वार्ता करनारो मीर घणीवार गद्य पण आरोहअवरोहमां बोले छे. जूनी पद्धतिए कथा करता महाराजो पण ए ज आरोहअवरोहनो उपयोग करे छे. नवी रीते नहीं भणेलाओने आरोहअवरोहथी वार्ता वांचता सांभळ्या छे. स्त्रीओ अने छोकरीओ एकबीजीने गाळो देतां के शाप आपतां लांबे रागे स्वरो वापरती घणाए सांभळी हशे. हुं मानुं छुं के बधुं लागणी-वाळुं गद्य आज सुधी आपणे त्यां स्वरोना आरोहअवरोहथी बोलातुं. गद्य, वातचीत करता होईए एम बोलवुं — वांचवुं, ए पण आधुनिक पद्धति ज हुं गणुं छुं. जो के हवे शिक्षितोमां ए एटली व्यापक थई गई छे के एथी अन्यथा हशे, अने समाजना खूणेखांचरे अत्यारे पण छे एवुं घणा जाणता नथी.

४

मात्रागर्भ वृत्तो अने अनुष्टुप

संस्कृतवृत्तोना संधिओ विशे अने तेना पादना स्वरूप विशे आगळ चर्चा करीए ते पहेलां मात्रागर्भ वृत्तो अने अनुष्टुपने गया प्रकरणनी दृष्टिए ज जोई लेवां ठीक पडशे. मात्रागर्भ वृत्तो आगळ कह्यु तेम अर्धां मात्रामेळी छे, अर्धां लगात्मक छे, पण ए संस्कृत साहित्यकारोने हाथे केळवाई केळवाई छेवटे जुदां जुदां स्वरूपोमां सळंग लगात्मक बनेलां छे. ए रूपोने आपणे वियोगिनी वगेरे अर्धसम वृत्तोमां गया प्रकरणमां जोयां. ए रीते आ मात्रागर्भ वृत्तोने संस्कृत वृत्तो साथे मार्मिक संबंध छे. विषमवृत्तो संपूर्ण लगात्मक गणाय छे पण गया प्रकरणमां ते में लीधां नथी. तेने पण वृत्तोना मेळनी चर्चा पहेलां लई लेवां जोईए. तेने आ प्रकरणमां लई आववानुं एक कारण ए छे के हुं एक दृष्टिए तेमने मात्रागर्भ गणुं छुं. एटले आ प्रकरणमां ए विषमवृत्तो आवी जशे.

अनुष्टुपने पण आ ज प्रकरणमां हुं लईश. ते लगात्मक वृत्त नथी, तेम तेमां मात्रामेळ जातिनां लक्षणो पण स्पष्ट नथी. तेने कया वर्गमां मूकवो ए पण चर्चानो विषय छे. संस्कृत शिष्ट साहित्यमां वपरातां बधां वृत्तोमां ते सौथी वधारे वपरायेलो छे. ए जूनामां जूनो छे, अने वेदकालनां वृत्तो साथे ए सौथी वधारे गाढ संबंध राखे छे, ए रीते एनुं स्थान जातिछन्दोमां नथी, पण संस्कृत वृत्तोमां छे तेथी तेना परंपरागत स्वरूपनुं दर्शन पण आपणे अहीं ज करीशुं.

मात्रागर्भ वृत्तोमां वैतालीयने नामे ओळखातो वर्ग ज महत्त्वनो छे. वैतालीयनुं लक्षण एवुं अपाय छे के तेना विषम पादमां १४ मात्रा होय छे अने सम पादमां १६ मात्रा होय छे. आ पादोना अंत तरफनी आठ मात्राओ स्थिर लघु-गुरु क्रमवाळी छे. तेनुं स्वरूप छे गालगालगा. अर्थात् वैतालीयनां चारेय चरणोमां अंते गालगालगा आवे छे. ओ लगात्मक भाग बाद करतां विषम चरणमां छ मात्रा अने सम चरणमां आठ मात्रा लगात्मक नथी. पण एटलो नियम छे के बेकी स्थाननी मात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे भळवा देवी नहीं. एटले के बन्ने चरणोमां बीजी त्रीजी साथे, चोथी पांचमी साथे उपरांत सम चरणोमां छठ्ठी सातमी साथे, भळवा देवी नहीं. अर्थात् ए बे

मात्राओ मळीने त्यां गुरु थई शके नहीं. आ नियम विषम चरणमां दा संज्ञाथी बतावी शकाशे. ए नियमनो उपयोग करतां विषम चरण नीचे प्रमाण थाय :—

दादादागा लगालगा

दा मूकवाथी कोई बेकी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे भळी शकशे नहीं. दा एटले गा अथवा लल. गा मां बीजी मात्रा बंधाई गई छे ते छूटी पडी शकशे नहीं, अने लल मां बेकीमात्रा छूटी स्वतंत्र छे, ते पछीनी मात्रा साथे भळी शकशे नहीं. आ नियम प्रमाणेनां निषिद्ध स्वरूपो लगागाल लगालदा, दालगाल थाय. ए बाद करतां उपादेय रूपोनो प्रस्तार नारायण भट्ट 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामां आ प्रमाणे आपे छे: गागागा, ललगागा, गाललगा, ललललगा, गागा लल, ललगालल, गालललल, लललललल. आपणे जोई गया ते वियोगिनीमां आमांनु ललगालल रूप आवे छे.

गगने घुमराइ वादळी
ललगा ललगा लगालगा

अने अपरवक्त्रमां सर्व लघु रूप लललललल वपरायुं छे.

मनवि उपरनां ज मीठडां
ललललललगा लगालगा

विषमपाद माटे आपणे दादादागा लगालगा न्यास स्वीकार्यो तेम समपाद माटे आपणे दादादादा नहीं मूकी शकीए. तेनुं एक ज कारण ए छे के समचरण विशे एक एवो विशेष नियम छे के तेमां कोई जगाए छ मात्राओ निरंतर एटले अव्यवहित, सळंग लघुओथी न भरी शकाय. दादादादा करीए तो छ लघुओ वाळा पर्यायो अंदर आवी जाय. आ निषिद्ध पर्यायो बाद करतां समचरणमां नीचेनां स्वरूपो आवी शके एम नारायण गणी बतावे छे. : गागागागा, ललगागागा, गाललगागा, ललललगागा, गागाललगा, ललगाललगा, गालललगा, गागागालल, ललगागालल, गाललगालल, ललललगालल, गागाललल, ललगालललल. (वृ. र. २, १२ अने तेना पर नारायणनी टीका)

आ वैतालीयनां चरणोमां अंते एक गुरु उमेरवाथी औपच्छन्दसिक नामनो वैतालीयनो पेटाविभाग थाय छे.[1] (छं. शा. ४, ३३)

---

१. छन्दःशास्त्र आने औपच्छन्दसक कहे छे. बीजां पिंगलो अने काव्योमां औपच्छन्दसिक नाम मळी आवे छे.

अहीं प्रारंभनी मात्राओ विशे आपेला नियमो स्वाभाविक छे. बेकी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे मळी न जवी जोईए ए नियम तो आगळ मात्रामेळ रचनामां वारंवार आवतो जणाशे. छ मात्रा भेगी न थवा देवी ए नियम पण एकविधता अने लघुबाहुल्यथी थती शिथिलता टाळवा छे ए स्पष्ट छे. पण ए नियमो कर्या पछीनां बधां रूपो पण मने सुन्दर नथी लागतां. नारायणे बधा शक्य पर्यायो आप्या छे अने अलबत्त ते परंपरागत पिंगल-नियत छे. पण ए बधां रूपो वपरायेलां मळी आवतां नथी. पटवर्धन 'छन्दोरचना'मां (पृ० १०७–०८) कहे छे के 'सूत्रकृतांग'मां आ वृत्तनो पुष्कळ वपराट थयो छे अने तेमां मात्र गागागागा रूप ज घणुंखरूं वपरायुं छे. अने सममां क्यांक ज गालगालगा वपरायुं छे. पण वैतालीयनुं स्वरूप मात्र 'सूत्रकृतांग' उपरथी निर्णीत न करी शकाय. ए सूत्रकाल तेम ज पुराणोनो आख्यानकाल ए बन्नेने हुं छन्दोनो प्रयोगकाल मानुं छुं, तेमां छन्दोनां अंतिम स्वरूपो आवतां नथी, अने तेथी ए स्वरूपोने हुं कलाशुद्ध गणतो नथी, — जोके तेमांथी कलानां भिन्नभिन्न स्वरूपोनां सूचनो मळे ए शक्य छे. एटले वैतालीयनुं स्वरूप निर्णीत करवा माटे आपणे शिष्ट साहित्यमांथी दृष्टान्तो लई तेनो अभ्यास करवो जोईए. पण शिष्ट साहित्य जोतां जणाय छे के आ छन्द बहु ओछो वपरायो छे. कालिदासे क्यांय — तेनां नाटकोमां पण — ते वापर्यो नथी. तेथी ऊलटुं, एनां लगात्मक रूपोनो शिष्ट साहित्यमां पुष्कळ प्रयोग थयो छे. ए बतावे छे के शिष्ट साहित्यकारोने आ मात्रागर्भ स्वरूप सुन्दर जणायुं नथी. एटले शिष्ट साहित्यमांथी आपणे जे दृष्टान्तो लईशुं तेना अभ्यासमां ए पण जोवानुं के आ छन्दो धीमे धीमे केवी रीते लगात्मक रूप लेता जाय छे.

आपणां नाटकोमां मने मात्र भासना एक नाटकमां, अने 'मृच्छकटिक'मां ज मात्रागर्भ रूपो मळ्यां छे. तेमां हुं पिंगलनां दृष्टान्तो उमेरीने आ प्रश्ननी पर्येषणा करीश. मूळ श्लोकनी साथे तेनुं लगात्मक रूप पण सामे आपीश.

(१)	णेवच्छविसेसमंडिदा।	गागा ललगा लगालगा
	पीदि उवदेदुं उवट्ठिआ॥	गागालल गागा लगालगा
	ळाअगिहे दिण्णमुळ्ळि आ।	गालल गागा लगालगा
	काळवसेण मुहुत्तदुब्बळा॥	गाललगा ललगा लगालगा
	प्रतिज्ञायौगन्धरायण, अंक ३, १	
(२)	सुअणेहु भिच्चाणुकंपके।	ललLल गागा लगालगा
	शामिएँ णिद्धणके वि शोहदि॥	गाललगा ललगा लगालगा
	पिशुणे उण दव्वगव्विदे।	ललगा ललगा लगालगा

दुक्कले क्खु पलिणामदालुणे॥ गालगाल ललगा लगालगा

मृच्छकटिक, अंक ३, १

(३) पंचज्जण जेण मालिदा। गागा ललगा लगालगा
इत्थिअ मालिअ गाम लक्खिदे॥ गालगा ललगा लगालगा
अबले अ चंडाल मालिदे। ललल गागा लगालगा
अवशं शे णल शग्ग गाहृदि॥ ललगागा ललगा लगालगा

एजन ८, १

(४) शिल मुंडिदे तुंड मुंडिदे। ललगा ललगा लगालगा
चित्तण मुंडिदे कीश मुंडिदे॥ गालगा ललगा लगालगा
जाह् उण अ चित्त मुंडिदे। गालल ललगा लगालगा
शाहु शुश्टु शिल ताह् मुंडिदे॥ गालगाल ललगा लगालगा

एजन ८, २

(५) लज्जाए भीलुदाएँ वा। गागा गागा लगालगा
चालित्तं अलिए णिगूहिदुम्॥ गागागा ललगा लगालगा
शर्वं मालिअ अत्थकालणा। ललगा ललगा लगालगा
दाणिं गूहदि ण तं हि भश्टके॥ गालगाल ललगा लगालगा

एजन ९, १७

(६) सच्चेण सुहं क्खु लब्भइ। गागा ललगा लगालगा
सच्चालावि ण होइ पावअं॥ गागागा ललगा लगालगा
सच्चं त्ति दुवेवि अक्खरा। गागा ललगा लगालगा
मा सच्चं अलिएण गूहेहि॥ गागागा ललगा लगालगा

एजन ९, ३५

अहीं (२), (३), (४) अने (६) श्लोको श्री गोडबोले संपादित 'मृच्छकटिक'नी पहेली आवृत्तिमांथी उतार्या छे. (५) निर्णयसागरनी ७मी आवृत्तिमांथी छे. (६)नी बीजी पंक्तिना छेल्ला शब्दनो पाठ खोटो जणायाथी टीकामां आपेला 'पापकम्' शब्दनो आधार लइ सुधार्यो छे.

आ पछी हुं पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'नां दृष्टान्तो उतारुं छुं:

(७) क्षुत्क्षीणशरीरसंचया गागा ललगा लगालगा
व्यक्तीभूतशिरास्थिपंजरा। गागागा ललगा लगालगा
केशैः परुषैस्तवारयो गागा ललगा लगालगा
वैतालीयतनुं वितन्वते॥ गागागा ललगा लगालगा।

(८) तव तन्वि कटाक्षवीक्षितैः ललगा ललगा लगालगा
प्रसरद्भिः श्रवणान्तगोचरैः। ललगागा ललगा लगालगा

विशिखैरिव तीक्ष्णकोटिभिः — ललगा ललगा लगालगा
प्रहृतः प्राणिति दुष्करं नरः ॥ — ललगागा ललगा लगालगा

आ पछी बे दृष्टान्तो औपच्छन्दसिकनां लउं छुं:

(९) वाक्यैर्मधुरैः प्रतार्य पूर्वं — गागा ललगा लगा लगागा
यः पश्चादतिसंदधाति मित्रम्। — गागागा ललगा लगा लगागा
तं दुष्टमतिं विशिष्टगोष्ठ्या — गागा ललगा लगा लगागा
मौपच्छन्दसकं वदन्ति बाह्यम् ॥ — गागागा ललगा लगा लगागा

(१०) परमर्मनिरीक्षणानुरक्तं — ललगा ललगा लगा लगागा
स्वयमत्यन्तनिगूढचित्तवृत्तिम्। — ललगागा ललगा लगा लगागा
अनवस्थितमर्थलुब्धमारा — ललगा ललगा लगा लगागा
दौपच्छन्दसकं जहीहि मित्रम् ॥ — गागागा ललगा लगा लगागा

आपणे वैतालीयना लक्षणमां आगळ जोयुं के तेनी चारेय पंक्तिमां अंते गालगालगा आवे छे. आपणां दसेय दृष्टान्तो जोतां जणाशे के आमां लगालगा ए अंत्यसंधि छे. अने तेनी आगळनो गा ए मात्रात्मक खंडना संधिनो अंत्य गुरु छे. आवता प्रकरणमां जोईशुं तेम दरेक संधिने अंते गुरु होय छे, अने ए रीते आ गुरु पण पोताना संधिनो अंत्य गुरु छे. हवे आ दसेय दृष्टान्तो जोतां जणाशे के आ गुरुवाळो संधि धीमे धीमे ललगानुं रूप ले छे. आ दस श्लोकोनां चालीस चरणोमां पांच ज स्थाने मात्र गागा रूप मळे छे. अने पहेला ज 'प्रतिज्ञायौगंधरायण'ना दृष्टान्तमां एक ज श्लोकमां बे वार गागा आवे छे; बाकी पछीनां दृष्टान्तोमां जे गागा मळे छे ते आखा श्लोकमां एक ज होय छे. अर्थात् आ रूप धीमे धीमे ललगा रूप करतां ओछुं सुन्दर जणायुं. अने पिंगलनां दृष्टान्तोमां पण ललगा ज छे, जो के त्यां गागा थई शकतुं हतुं, ए बतावे छे के ललगा वधारे सुन्दर छे, ते ज धीमे धीमे स्थिर थतुं जाय छे अने अंते वियोगिनीमां ते ज स्थिर थाय छे.

आ गागा के ललगा रूपनी पहेलां हवे विषम चरणमां चार मात्राओ रही. आवां विषम चरणो आ दस श्लोकमां वीस आवे. ते वीसमांथी मात्र बे ज चरणोमां लललल रूप वपरायुं छे. अर्थात् ए रूप सुंदर नथी. ए रूप एक ज श्लोकमां बे वार क्यांई वपरायुं नथी. ए पण बतावे छे के ए सुनिर्वाह्य नथी. तेम ज गालल रूप पण वीस चरणमां मात्र बे वार वपरायुं छे. ए रूप धीमे धीमे अदृश्य थतुं थतुं गुर्वन्त ललगाने स्थान आपे छे. अने ए रीते वियोगिनीना प्रारंभमां ललगा बे वार स्थान प्राप्त करे छे. ते पछी विचारवा जेवुं रूप गागा रहे छे. वृत्तोमां गागा संधि तरीके आवी शके छे.

તે ગુર્વન્ત છે જ. એટલે એ રૂપ શક્ય છે. એ વીસ ચરણોમાં નવ વાર વપરાયું છે. અને એ સ્વરૂપ વૃત્તમાં પણ સ્વીકારાયું છે. જો કે એ કવિઓને પ્રિય બન્યું નથી. એ ન બન્યું એનું કારણ એ છે કે આ લઘુબહુલ વૃત્તનું પઠન લલિત-ભાવોને અનુકૂલ છે, તેમાં પ્રારંભમાં જ બે ગુરુઓ શોભતા નથી. એ બે ગુરુવાળો વૈતાલીય છન્દ રણપિંગલ આપે છે. તેનું નામ છે વૈસારી.

વૈસારી: ગાગા લલગા લગાલગા
ગાગાગા લલગા લગાલગા
રણપિંગલ પૃ. ૪૭૨

બીજા કોઈ પિંગલમાંથી મને આ છન્દ મળ્યો નથી. પણ આનું જ ઔપચ્છન્દસિક સ્વરૂપ, એટલે અંતે એક ગુરુ ઉમેરેલું સ્વરૂપ બીજાં પિંગલોમાં પણ પ્રસિદ્ધ છે. તેનું નામ છે ભદ્રવિરાટ.

ભદ્રવિરાટ: ગાગા લલગા લગા લગાગા
ગાગાગા લલગા લગા લગાગા
રણપિંગલ પૃ. ૪૭૩, તેમ જ છં. શા. ૫, ૩૫

આ રીતે વિચાર કરતાં માત્રાગર્ભ વૈતાલીયના સ્વરૂપમાં વિષમ ચરણનો ન્યાસ નીચે પ્રમાણે આપી શકાય.

લલગા લલગા લગાલગા
ગાગા ગા

અલબત્ત આમાં ગુરુપક્ષના બધા વિકલ્પો ભેગા કરીએ તો પંક્તિના પ્રારંભમાં એક સાથે ચાર ગુરુઓ આવે છે પણ પ્રયોગમાં કોઈ કવિ એવું ભાગ્યે જ કરે. ઉપર આપેલા વૈસારી અને ભદ્રવિરાટ બન્ને દૃષ્ટાન્તો બતાવે છે કે ગુરુ-ઓની એવડી લાંબી કતાર ટાળવાની છે.

હવે સમ ચરણનો વિચાર કરીએ. આ પ્રશ્નનો વિચાર જરા જુદી રીતે કરવાની જરૂર છે. વૈતાલીય સમૂહનાં વિષમ અને સમ ચરણોની માત્રામાં જે ફરક છે તે માત્ર બે માત્રાનો છે. હવે વૈતાલીયનાં બધાં લગાત્મક રૂપો જોતાં જણાશે કે આ વધારાની બે માત્રાનું ન્યાસમાં ચોકસ સ્થાન છે:

વિયોગિની: લલગા લલગા લગાલગા
લલગાગા લલગા લગાલગા
અપરવક્ત્ર: લલલલલલગા લગા લગા
લલલલગા લલગા લગાલગા

बन्नेमां ए बे मात्रा, गुरु रूप लई चरणना न्यासमां पांचमी छठ्ठी मात्रानुं स्थान ले छे. में उपरना न्यासमां ए गुरुने दर्शाववा तेनी नीचे रेखा करी छे. वैतालीयनां बधां लगात्मक रूपोमां अेक सरखी रीते प्रतीत थतुं आ लक्षण हवे मात्रागर्भमां छे के नहीं ते जोईए.

आगळ आपेलां दृष्टान्तोमां आ पांचमी छठ्ठी मात्रा शोधवा जतां जणाशे के दृष्टान्त २, ४ अने ५ नुं चोथुं चरण गालगाल छे. आमां चोथी अने पांचमी मात्रानो गुरु छे, अर्थात् अहीं पांचमी छठ्ठी मात्रा छूटी ज नथी. हवे आ रूप ए रीते वैतालीयना सामान्य नियमोनी विरुद्धनुं छे. वैतालीयमां कोई बेकी मात्रा तेनी पछीनी मात्रा साथे भळी शके नहीं. अहीं चोथी मात्रा पांचमी साथे भळी छे. पिंगलनां सूत्रो जोतां जणाय छे के आ एक अपवादरूप वैतालीय छे जेने प्राच्यवृत्ति कह्यो छे. तेमां चोथी मात्रा पांचमी साथे जोडाई शके छे. (छं. शा. ४, ३७) आ अपवादना त्रण दाखलानां त्रण चरणो बाद करतां बाकीना दाखलानां सत्तर सम चरणोमां मात्र दृष्टान्त १ मां ज पांचमी छठ्ठी मात्रा बन्ने लघु छे, एक गुरुरूपे बंधायेली नथी, बाकी बधां दृष्टान्तोमां ए मात्राओ गुरुरूपे ज उपस्थित थाय छे. एटले आपणे एक नियम करी शकीए के सम चरणोमां पांचमी छठ्ठी मात्राओ मळीने गुरु थवो जोईए. आम करीशुं एटले वैतालीयना सम चरणनो बीजो नियम के तेमां प्रारंभमां क्यांय पण छ लघुओ निरंतर — अव्यवहित आववा न जोईए ए एनी मेळे पळाई जशे. सम चरणमां मात्रागर्भ विभागमां कुल आठ मात्राओ छे, तेमां पांचमी छठ्ठी गुरु बनतां ए गुरुनी आगळ के पाछळ क्यांय पण छ लघु मात्राने आववाने अवकाश रहशे नहीं. एटले एवो नियम करी शकाय के सम चरणमां पांचमी छठ्ठी मात्रा गुरु तरीके आववी जोईए. एम करीशुं एटले सम चरणमां पण विषमनी पेठे, पहेली चार मात्राओ मात्र मात्रागर्भ रहेशे. आपेलां दृष्टान्तोमां चार मात्राओ कोई पण जगाए सर्वलघु (लललल) रूपे आवती नथी. मात्र चार ज जगाए १, २, ३, ४ श्लोकोमां गालल रूपे आवे छे. एटले ए लघ्वन्त रूपने आपणे सहेलाईथी सौष्ठवने माटे अनुचित गणी शकीए. बाकी गागा रूपे नव जेटलां मळी आवे छे एटले अहीं पण आपणे गुर्वन्त गागा अने ललगानो ज विकल्प राखी शकीए. ए रीते सम चरणनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

$\frac{\text{ललगा}}{\text{गागा}}$ गा $\frac{\text{लल}}{\text{गा}}$ गा लगालगा

बन्ने चरणो भेगां मूकतां:

विषम: $\frac{\text{ललगा}}{\text{गागा}}$ $\frac{\text{लल}}{\text{गा}}$ गा लगालगा

सम: $\frac{\text{ललगा}}{\text{गागा}}$ गा $\frac{\text{लल}}{\text{गा}}$ गा लगालगा

अहीं एटलुं उमेरवुं जोईए के उपरना न्यासमां विषम पादमां चार गुरुओ अने सम पादमां पांच गुरुओ सळंग आववानी शक्यता छे, पण एटला बधा गुरुओ आवा ललित वृत्तमां सुन्दर लागता नथी. हलायुधे आपेलां दृष्टान्तोमां क्यांय विषममां बेथी अने सममां त्रणथी वधारे गुरुओ भेगा आवता नथी. औपच्छन्दसिक विशे कंई विशेष कहेवानी जरूर नथी, कारण के तेनो मात्रागर्भ भाग वैतालीयनो ज छे.

मात्रागर्भमां आ वैतालीय समूह ज मुख्यत्वे आवे छे. उपर आप्यां ते सिवाय वैतालीय समूहमां पिंगलो थोडा बीजा छन्दो गणावे छे. पण ते महत्त्वना नथी. साहित्यमां ते वपराया नथी. पण पिंगलनां वृत्तो जोतां एक बीजो मोटो समूह एक जुदा ज मात्रागर्भ छंदमांथी ऊतरी आव्यो जणाय छे. आ समूहनुं प्रकृतिभूत मात्रागर्भस्वरूप कोई पिंगल आपतुं नथी, पण अमुक अमुक लगात्मक वृत्तो, अने बीजां हेमचंद्रे आपेलां त्रण मात्रावृत्तो भेगां मूकी अभ्यास करतां, ए बधांना मूळमां कोई मात्रागर्भ छंद होवो जोईए एम जणाय छे. एटले ए वर्गनुं निरूपण पण हुं अहीं करवा इच्छुं छुं. आ वर्गने हुं नर्दटक-समूह कहुं. आ नर्दटक ते आगला प्रकरणमां आवी गयेलुं ज नर्दटकवृत्त छे. वैतालीयनुं सुंदर लगात्मक स्वरूप जेम वियोगिनी छे, तेम आ समूहनुं सौथी सुंदर स्वरूप नर्दटक छे. तेथी वृत्तोना न्यासो आपतां हुं सौथी पहेलुं नर्दटक हवे मूकीश. आने ज हलायुध अवितथ कहे छे अने 'वृत्तरत्नाकर' अवितथमां यति मूके छे ते हुं आगळ कही गयो. हवे न्यासो लईए.

(१) नर्दटक :	ललललगा	लगा	लललगा	ललगा	ललगा
(२) कोकिलक :	ललललगा	लगा	ल। ललगा	लल। गा	ललगा
(३) मणिकल्पलता :	ललललगा	लगा	लगागा	ललगा	ललगा
(४) उन्माल्या :	गागागा	लगा	लललगा।	ललगा	ललगा
(५) शैलशिखा :	गाललगा	लगा	लललगा	ललगा	ललगा
(६) वरयुवती :	गाललगा	लगा	लगागा	ललगल	ललगा
(७) वंशदल अथवा वंशपत्रपतित	गाललगा	लगा	लललगा।	ललगल	ललगा

(८)	उडुपथ :	लललगा	लगा	लललगा	लललल	ललगा
(९)	भ्रमरपद :	गाललगा	लगा	लललललल	लललल	ललगा
(१०)	वीरललिता :	गाललगा	लगा	लललगा	लगाल	ललगा
(११)	समदाविलासिनी :	लललगा	लगा	लललगा	लगाल	ललगा
(१२)	गरुडरुत	लललगा	लगा	लललगा	लगागालगा	
(१३)	मागधनर्कुटी	६+	ल+२+	ल+४+	२+गा+	गागा
(१४)	नर्कुटक :	६+	ल+२+	ल+४+	२+गा+	ललगा
[२](१५)	समनर्कुटक	६+	लगा+	ल+ललगा+	ललगा+	ललगा

कोकिलक तो नर्दटकमां बे यति मूकीने ज नवुं करेलुं वृत्त छे, जे यति मात्र शोभानी छे. आपणे आ पछीना प्रकरणमां जोईशुं तेम ए यति आवश्यक नथी. ए ज रीते उन्माल्या, वंशदल अने वीरललितानी यतिओ पण आवश्यक नथी. एटले ए यतिओ उपर ध्यान आप्या सिवाय आपणे आ समूहनो विचार करीशुं.

आ बधा छन्दोमां देखीती रीते छेल्ला त्रण मात्रागर्भ छे. आमां आंकडाथी लखेला मात्रासमूहो लगत्वहीन समजवाना छे. पण पूरुं स्वरूप समजवा माटे त्रणेयनां दृष्टान्तो जोवानी जरूर छे.

मागधनर्कुटी : नवमयरंदपाणपायडमयउत्ताला
भमरा रणरणन्ति कायलिकयसद्दाला।
पंचममुग्गिरंति एआ अवि दिट्ठीओ
चूअंकुरकसायकंठा कलयंठीओ॥

नर्कुटक : परिमलद्धलोलअलिणिअसणवकुडयं
जाव न जग्गवेइ विसमत्थमहाभडयं।
माणं मोत्तुआण माणंसिणि सप्पणयं
पेम्मभरेण ताव अणुसर सहि वल्लहयं॥

समनर्कुटक : सयलसुरासुरिंदपरिवंदिअपायतलो
निरुवमझाणनाणवसनासिअकम्ममलो।
निवसउ मे मणम्मि भवयं सिरिवीरजिणो
विलयं जंति कामपमुहा जह ते अरिणो॥
छंदोनु० पृ. ३२ ब

२. कोकिलक माटे जुओ छं. शा. ८. १५. छंदो ३ थी १२ माटे जुओ छं. र. पृ. १६०. १३-१५ माटे छंदोनु० पृ. ३२ ब

आनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

(१३) मागधनकुंटी: लललगा लगा लगा लललगा गागा
ललगा लललगा लगा लललगा गागा
गालल गा लगा लगागा ललगा गागा
गागालल लगा लगागा ललगा गागा

(१४) नकुंटक : लललगा लगा लललगा ललगा ललगा
गाललगा लगा लललगा ललगा ललगा
गागागा लगा लगागा ललगा ललगा
गाललगा लगा ललललल ललगा ललगा

(१५) समनकुंटक : लललगा लगा लललगा ललगा ललगा
लललगा लगा लललगा ललगा ललगा
लललगा लगा लललगा ललगा ललगा
ललगागा लगा लललगा ललगा ललगा

छेल्लां त्रणेय मात्रागर्भ वृत्तोमां हेमचन्द्रना न्यासमां पहेली छ मात्रा पछी स्थिर रूप मात्र एक लघुनुं ज आप्युं छे, अने तेनी पछी बे मात्रा दर्शावेल छे, पण पंदरेय वृत्तो जोवाथी जणाशे के पहेली छ मात्रा पछी लगा संधि स्थिर छे. पहेलां मूकेलां बार लगात्मक रूपोमां तो में पहेली छ मात्रा पछी लगा जुदुं लखेल छे, जेथी तरत जणाई आवशे, पण त्रण मात्रागर्भमां पण ए जुदुं तरी आवे माटे में तेनी नीचे रेखा दोरी छे. आ लगा पछी ल+४ आवे छे. बधां वृत्तो जोतां आ पांच मात्रानो एक भिन्न संधि ज छे जेनुं सौथी सुंदर रूप लललगा जणाशे, जे नर्दटक वगेरेमां स्थिर थयेलुं छे. आ पछी १३, १४ मां बे मात्रा अने गा कह्युं छे, जेनुं सुन्दर रूप ललगा जणाशे, अने अंत्य ललगा तो १४, १५ मां सिद्ध रूपे ज छे. ६ थी १२ वृत्तो जोतां अंत्य आठ मात्रानो खंड पण मात्रागर्भ जणाशे कारण के तेमां ए मात्राओ एक ज लगात्मक स्वरूपमां आवती नथी. पण आमां पण अंत्य गुरु तो स्थिर छे, आगळनी छ मात्राओ प्रवाही स्वरूपे छे. पण आ खंड पण वैतालीयना पूर्व मात्रागर्भ खंडनी पेठे ललगा ललगा स्वरूप पामे छे, कारण के ए ज सुन्दर छे.

उपर आपेलां वृत्तोमां क्यांक छये मात्राओ लघुथी पूरी छे, जेम के (६) वरयुवती, (२) वंशदल अने (८) उडुपथमां, पण त्यां लघुबहुलत्वथी

देखीती रीते ज शैथिल्य आवे छे. अने उपान्त्य छ अने तेनी पहेलांनी पांच एम अगियारेय मात्राओ ज्यां लघुथी पुराय छे, ए (९) भ्रमरपद तो केवळ कनिष्ठ छे. आ बधां वृत्तोनुं मूळ मात्रागर्भ रूप केवुं हशे तेने विशे तर्क करवो होय तो नीचे प्रमाणे मूकी शकाय.

६ + लगा + ५ + ६ + गा

पण दरेक संधि, आपणे आ पछीना प्रकरणमां जोईशुं तेम, गुर्वन्त होय छे एटले पहेली छ मात्राना संधिमां अंते गुरु जोईए. उपरना न्यासोमां जोईशुं तो आ छ कलनो संधि गुर्वन्त थवानुं ज वलण धरावे छे. उपरना बधा न्यासोमां मागधनर्कुटीनी बीजी पंक्तिमां ज ललगालल आवे छे ते लघ्वन्त षट्क छे, ते सिवाय बधां ज षट्को गुर्वन्त छे. एटले ए छ मात्रा पण ४ + गा नुं रूप पामे छे. पछी ए पहेली चार मात्राओ ज मात्रामेळी रही. अने एनुं सुंदरतम संधिरूप ललललगा एवुं थयुं. ते पछी आवता स्थिर संधि लगा पछी पंचमात्रक संधि आवे छे. ते पण मुख्यत्वे गुर्वन्त ज छे. मात्र भ्रमरपदमां त्यां सर्वलघु पंचक छे. मागधनर्कुटीनी पहेली बे पंक्तिओमां ते लगालल छे, अने नर्कुटक (१४)मां छेल्ली पंक्तिमां ज ते सर्वलघु छे. बाकी बधे गुर्वन्त छे. ए पछी आठ मात्राओ आवे छे. जेमांनी छेल्ली बे गुरु होय छे. एटले छ मात्रा छूटी छे. ते उपर कही गयो तेम ललगा ललगा रूप ले छे. मात्र १०, ११मां ते लगाल ललगा अने १२मां लगागालगा रूप ले छे. अने मागधनर्कुटीमां ललगा गागा एवुं स्थिर रूप ले छे. एटले अहीं पण वैतालीयना प्रारंभनी पेठे ललगा ललगा रूपो स्थिर थाय छे. ए रीते आ नवो समूह पण मूळ मात्रागर्भ हशे, अने तेनां लगात्मक रूपो आपणे उपर जोयां तेवां थयां, पण तेमां सौथी सुन्दर नर्दटक थयुं छे.

हवे आपणे विषम वृत्तो लईए. तेमां सौथी महत्त्वनुं उद्गता छे. तेना चरणोनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे छे.

ललगा लगा ललगा ल	१०
लललललगा लगालगा	१०
गालल लललल गालल गा	११
ललगा लगा ललगा लगालगा	१३

आ छन्द गुजरातीमां ऊतर्यो नथी. एटले एना उदाहरण तरीके 'छन्दः-शास्त्र'नुं उदाहरण लउं छुं:

मृगलोचना शशिमुखी च
रुचिरदशना नितम्बिनी।

हंसललितगमना ललना
परिणीयते यदि भवेत्कुलोद्गता ॥

आना त्रीजा पादमां गालगाललल गालल गा मूकीए तो आ छंद सौरभक कहेवाय. एम करवाथी ए पादमां एक अक्षर घटे छे. एटले के ए श्लोक १०, १०, १०, १३ अक्षरोनो थयो. आनुं पण दृष्टान्त 'छन्दःशास्त्र'मांथी ज आपुं छुं.

विनिवारितोऽपि नयनेन १०
तदपि किमिहागतो भवान्। १०
एतदेव तव सौरभकम् १०
यदुदीरितार्थमपिनावबुध्यते ॥ १३

एना त्रीजा पादमां लललल ललल गालल गा करीए तो एनुं नाम ललित. आ पाद १२ अक्षरनुं थाय. दृष्टान्त अहीं पण 'छन्दःशास्त्र'नुं ज उतारुं छुं.

सततं प्रियंवदमनून १०
ममलहृदयं गुणोत्तरम्। १०
सुललितमतिकमनीयतनुं १२
पुरुषं त्यजन्ति न तु जातु योषितः ॥ १३

आ त्रण लगात्मक वृत्तोमां मात्र त्रीजा पादमां फरक छे. पण ए नोंधवा जेवुं छे के ए त्रणेयमां त्रीजा पादनी मात्राओ कुल १४ थाय छे एटलुं ज नहीं दरेकमां त्रण चतुष्कल संधिओ अने पछी अंते गुरु आवे छे. अर्थात् आ वृत्त पण मात्रागर्भ छे. एमां दरेक पंक्तिनो अमुक भाग मात्रानो होवाने बदले आखुं त्रीजुं पाद मात्रामेळी छे. एटले आ वृत्तने मात्रागर्भ गणवामां कशी सिद्धान्तहानि थती नथी.

आ उद्गता वृत्त अनेक रीते विचित्र छे. आ वृत्तना पहेला पादने अंते लघु आवे छे अने वळी 'छन्दःशास्त्र'नुं खास सूत्र छे के त्यां यति नथी. 'छन्दःशास्त्र'मां उद्गताना सूत्रना प्रारंभमां ज 'उद्गतामेकतः' एम कह्युं छे. तेनो अर्थ वृत्तिकार एवो करे छे के "एकतः इति प्रथमं पादं द्वितीयेन सहाविलंबेन पठेदित्यर्थः।" सूत्रमां 'एकतः' कहेलुं छे तेनो अर्थ एवो छे के पहेलुं पाद बीजा पादनी साथे विलंब विना पठवुं.' अर्थात् पाद पूरुं थया छतां अहीं यति एटले विराम के विलंब करवानो नथी. आ बन्ने लक्षणो

३. 'वृत्तरत्नाकर'मां "चरणमेकतः पठेत्" (वृ. र. ५, ६) एम ज कहेलुं छे अने नारायण भट्ट तेनो ए ज अर्थ करे छे.

असाधारण छे, बीजां कोई वृत्तोमां नथी. मारी दृष्टिए यतिना स्वरूप उपर एथी पुष्कळ प्रकाश पडे छे. आपणे ते हवे पछीना प्रकरणमां विचारीशुं.

आ छन्द विलक्षण छे ते साथे मने सुसंवादवाळो लागतो नथी. महाकाव्योमां कविओए तेनो उपयोग कर्यो छे. माघे 'शिशुपालवध'मां पंदरमा सर्गमां आ वृत्तनो व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. तेनी पहेलां भारविए 'किरातार्जुनीय'मां अने अश्वघोषे 'सौन्दरनन्द'मां पण तेनो सर्गना व्यापक तरीके उपयोग कर्यो छे. पण कालिदासे तेनो नाटकमां के प्रबन्धोमां क्यांय उपयोग नथी कर्यो. नहितर कालिदासने आ वृत्त अज्ञात होय ए संभवित नथी. अश्वघोष अने कालिदासना पौर्वापर्य विशे मतभेद छे; कीथ अने घणा हिन्दना पुरातत्त्वविदो अश्वघोषने कालिदासनो पुरोगामी गणे छे. ए ज साचुं होय तो तो कालिदास पहेलां उद्‌गता वृत्त पूरेपूरुं प्रचलित हतुं एमां संदेह रहेतो नथी. पण सद्‌गत के० ह० ध्रुव अने बीजा कोई कोई विद्वानो कालिदासने अश्वघोषनो पुरोगामी गणे छे. पण तेमां पण के० ह० ध्रुव बन्ने वच्चे पोणो सो वरसथी वधारे लांबो गाळो गणता नथी. एटले कालिदास पुरोगामी होय तो पण, तेना समयमां उद्‌गता जाणीतुं होय ज कारण के अश्वघोष कोई पण वृत्तने सर्गमां व्यापक तरीके प्रयोजे ते पहेलां ते एटला समयथी तो प्रसिद्ध होय ज. नवा ज वृत्तनो कोई व्यापक तरीके एकदम उपयोग न करे. अने कालिदासने हुं बहु ऊंची कोटिनो संवादपरीक्षक गणुं छुं. उद्‌गता जाणीतुं होय छतां तेणे एनो उपयोग न कर्यो ए वातने हुं उद्‌गताना हीन संवादनुं प्रमाण गणुं छुं. बीजुं: उद्‌गता नाटकमां क्यांय वपरायानुं मने स्मरण नथी. अलबत्त उद्‌गता अने ललितानां लक्षणो अत्यारना भरतनाटयशास्त्रमां मळे छे, पण ते अक्षरगणोमां आपेलां छे, जेने हुं क्षेपक गणुं छुं (भ. ना. गा. ऑ. २, १५, श्लो. १८८-९१ पृ. २८६). एवी बाबतमां नाटकना प्रयोगने ज प्रमाणभूत गणवो जोईए. अने नाटकोमां एनो प्रयोग नथी अने पण हुं तेना पठनसंवादनी निर्बळतानुं समर्थन गणुं छुं. नाटक तो जाहेरमां भजववानुं छे एटले त्यां निर्बळ संवाद चाले नहीं. महाकाव्यकारोए एने प्रयोज्यो ए वृत्तवैचित्र्यना प्रदर्शनना शोखथी, एम हुं मानुं छुं.

अने तेम छतां आ वृत्तना संवादने घटाववा प्रयत्न करवो जोईए. आपणे जोयुं के एना प्रथम पादने अंते लघु आवे छे, अने ए पादनो पाठ पछीना पादनी साथे अविलंबथी करवानो छे. एनो अर्थ ए थयो के पहेलां बे पादोनो पाठ सळंग करवानो छे. तो आपणे ए बे पंक्तिने सळंग मानीने ज तेनो विचार करी जोईए. पहेला पादनो अंत बताववा आपणे त्यां यतिसूचक दंड

नहीं करीए पण मात्र शब्दान्त सूचववा एकवडुं अवतरण चिह्न करीशुं. अने ज्यारे पहेलां बे चरणोने एक मानीए छीए त्यारे बीजां बेने पण एक मानवानी आवश्यकता ऊभी थाय छे, कारण के नहितर आ वृत्तने त्रण चरणनुं गणवुं पडे, जेने माटे वृत्तोमां कोई दाखलो नथी. बे चरणो के द्विदल छंदो पण थोडा छे, पण आर्यानो प्रसिद्ध वर्ग द्विदल छे एटले ए एटलुं बधुं विलक्षण नथी. त्यारे हवे आपणे एने द्विदल गणी तेनो न्यास मूकीए:

ललगा लगा लललगा ल'लललललगा लगालगा ।
गालल ललल गालल गा' ललगा लगा ललगा लगालगा ।

एक लक्षण तरत नजरे चडे छे. मूळनुं चोथुं चरण ललगा लगा ललगा लगालगा ए अखंड मंजुभाषिणीनुं चरण छे. अने ए एक वार दृष्टिमां आव्या पछी ए पण देखाय छे के प्रथम चरणना प्रथम त्रण संधिओ ललगा लगा ललगा ए पण मंजुभाषिणीना ज छे. पण ए वृत्त त्यां ज अटकी जाय छे. अने पछी आपणे बधा लघुओने भेगा करी प्रथमना दलना अंत सुधी सळंग पाठ करी जोतां जणाशे के ए अपरवक्त्रनुं चरण छे. लललललगा लगालगा ए प्रमाणे. वळी अपरवक्त्र अने मंजुभाषिणी बन्नेनो अंत्यसंधि एक ज लगालगा छे. बीजी रीते कहीए तो उपान्त्य लललललगानो लांबो संधि काढी नांखीए तो सळंग मंजुभाषिणी बनी रहे छे. मंजुभाषिणीनो प्रवाह त्रण संधिओ सुधी चाली, पछी अपरवक्त्रमां भळीने बन्ने छन्दो समान अंत्य संधि लगालगामां उपसंहार पामे छे. अने अपरवक्त्रना लांबा लघुबहुल संधिने मंजुभाषिणीना पूर्वंग संधिनी साथे जोडवाने माटे ए लघुबहुल संधिना पहेला लघुए शब्द पूरो कर्यो, जेथी अर्थ दृष्टिए ए आगळना भाग साथे जोडाई रहे. पहेला दलनुं पृथक्करण करतां संवादने माटे आटली सामग्री मळे छे.

पण बीजा दलमां मने आवी संवादनी कोई सामग्री जणाती नथी. मूळ उद्गतानुं चोथुं चरण मंजुभाषिणीनुं छे ए आपणे जोयुं. पण आगळ मूकेला १४ मात्राना मात्रामेळ साथे जोडाईने ए केवी रीते संवादी रचना करी शके ते मने समजातुं नथी. अनेक वार पाठ कर्या छतां मने ए वृत्तनां उपांगोमां कोई स्वाभाविक मेळ देखातो नथी. पहेला दलमां पण मंजुभाषिणी अपरवक्त्र साथे जे रीते जोडाय छे ते रीत मने संवादवाळी जणाती नथी. विशेष नहीं तो आपणे आगळ जोईशुं तेम, छंदो जोडवानी आ रीत माटे बीजां दृष्टान्तो नथी. एटले आटला पृथक्करण पछी आ वृत्त मने सुंदर जणातुं नथी, एटलुं ज कहेवानुं रहे छे. ए वृत्त गुजरातीमां ऊतर्युं पण नथी. एटली नोंध लई एने आपणे अहीं ज बंध करीए.

आ पछी हुं हवे अनुष्टुप लउं छुं, अने तेनुं परंपराप्राप्त स्वरूप टूंकमां मारी दृष्टिए रजू करुं छुं. तेना उपर प्राचीन संस्कृत पिंगलोए पुष्कळ लखेल छे ते सर्व अहीं न लेतां आ प्रकरणना परिशिष्टमां आपुं छुं. अहीं तो मात्र मारी पद्धतिए ए रजू करुं छुं:

दलपतराम अनुष्टुप श्लोकनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे आपे छे:

"पांचमे लघुता तोळो, गुरु छठ्ठो लख्यो गमे;
बीजे चोथे पदे बोलो, श्लोकमां लघु सातमे."

आनो अर्थ एवो थाय के अनुष्टुपनां चारेय चरणोमां पांचमो अक्षर लघु आवे अने छठ्ठो गुरु आवे. अने बीजा अने चोथा पादमां सातमो लघु आवे. स्फूट कह्युं नथी, पण बीजा चोथा पादमां सातमो लघु कह्यो ए उपरथी पहेला त्रीजा पादमां सातमो गुरु छे एम समजी लेवानुं छे. दलपतरामे घणांखरां लक्षणो माटे 'श्रुतबोध'नो आधार लीधो छे अने तेमां विषममां सातमो गुरु एम स्पष्ट कहेलुं छे[४] अने दलपतरामनां दृष्टान्तोमां सर्वत्र एम छे एटले ए प्रमाणे ज समजवुं जोईए. एम करतां विषम अने सम चरणोना आठ आठ अक्षरो पैकी नीचेना नियत थया:

१	२	३	४	५	६	७	८	।	१	२	३	४	५	६	७	८
				ल	गा	गा							ल	गा	ल	

बाकीनां स्थानोमां लघुगुरु गमे तेम मूकी शकाय एवो आनो अर्थ थाय. पण 'श्रुतबोध'नां केटलांक लक्षणो अपूर्ण अने स्थूल छे. पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'मां जे अनुष्टुपनुं लक्षण आपेलुं छे तेमां चरणना प्रारंभना पहेला अक्षर पछी कया कया गणो न आवी शके ते जणावेलुं छे, ते उपरथी स्पष्ट थाय छे के अनुष्टुपनां चरणोमां बीजो अने त्रीजो बन्ने अक्षरो लघु न होई शके. एने अनुष्टुपनुं एक आवश्यक लक्षण गणवुं जोईए. आ लक्षण ठेठ वेदकालथी चालतुं आवेलुं जणाय छे.[५] ए ज रीते पिंगलशास्त्रे बीजा पादमां जे गणोनो निषेध कर्यो छे ते उपरथी कही शकाय के बीजा पादमां बीजो अने त्रीजो अक्षर गाल थई न शके. गाल थई न शके एनुं कारण समजाय एवुं छे. त्यां गाल आवे तो ए चरण कोई वार लगालगा लगालगा बनी जवानो प्रसंग

४. जुओ आ प्रकरणने जोडेलुं अनुष्टुप उपरनुं परिशिष्ट.

५. In the opening the first and third syllable are indifferent, while the second and fourth are preferabbly long. When the second is short, the third is almost invariably long. —'Macdonell's Vedic Grammar for Students', p. 438.

आवे, अने एम थाय तो एमां अनुष्टुपनो संवाद न रहे. ए 'छन्दःशास्त्र'नो प्रमाणी एटले दलपतरामनो प्रमाणिका बनी जाय.

'श्रुतबोध'ना लक्षणमां आपणे जोयुं के विषम पादना ५-६-७ अक्षरो लगागा जोईए. आ साचुं छे. एने अनुष्टुपनुं एक प्रकृतिभूत लक्षण गणवुं जोईए. पण महाकविओमां ए लगागानी अनेक विकृतिओ मळी आवे छे. खरी रीते एक लगाल सिवायना बधा ज गणो त्यां आवी शके छे.' आ विकृतिओ वैविध्य खातर आवे छे, एम हुं मानुं छुं. आ विकृतिओमां लगाल नथी आवी शकतो तेनुं कारण स्पष्ट छे. ए स्थाननो लगाल गण सम पादनुं विशिष्ट लक्षण छे. आ उपरथी एम कही शकाय के अनुष्टुपनां गमे ते छूट लेवाय तो पण तेना विषम पादना ५-६-७ अक्षरो लगाल न ज थई शके, अने बीजा गमे ते फेरफारो करो तो पण सम पादना ५-६-७ अक्षरो लगाल कायम रहेवा जोईए. आ ज तेना समविषम पादनुं व्यावर्तक लक्षण छे. अनुष्टुपमां समपाद ज नियत छे ए दृष्टिए एने अर्धसम कही शकाय.

आ आपणे प्राचीन परंपराथी नियत थयेलुं अनुष्टुपनुं स्वरूप जोयुं. पण तेमां अनुष्टुपनो मेळ छतो थतो नथी. प्राचीनो जे अक्षरगणपद्धतिने वळगी रह्या हता ते पद्धति घणी वार साचुं स्वरूप समजवामां अंतराय रूप बने छे. आनुं खरुं स्वरूप अने एनो मेळ समजवा माटे आपणे अनुष्टुपना लांबा सळंग परिच्छेदो जोवा जोईए अने तेमां आवता श्लोकोना सळंग न्यासो उपरथी तेना स्वरूपनी चर्चा करवी जोईए. ते आपणे हवे आवतां प्रकरणोमां करीशुं. आ अने आगलुं प्रकरण तो मात्र परंपराप्राप्त स्वरूपनुं मारी रीते निरूपण करवा ज छे.

परिशिष्ट १

अनुष्टुप

आ परिशिष्टमां अनुष्टुपना स्वरूपनुं मोटां प्रमाणभूत पिंगलो केवी रीते निरूपण करे छे ते तथा ते विषे छूटा मतो अहीं तहीं मळी आवे छे ते एकत्र करी आपवानो उद्देश छे.

प्राचीन अने प्रमाणभूत मोटां पिंगलो अनुष्टुपनुं स्वतंत्र लक्षण न आपतां तेनुं वक्त्रना एक प्रकार तरीके निरूपण करे छे. एटले ए पद्धतिए पहेलां वक्त्रनुं लक्षण 'छन्दःशास्त्र' प्रमाणे जोईए.

"न प्रथमात् स्नौ।" ५-१०

---

६. जुओ आ प्रकरणनुं अनुष्टुप उपरनुं परिशिष्ट.

पहेला अक्षर पछी सगण नगण न आवी शके, अर्थात् पहेलो अक्षर लघु के गुरु गमे ते होई शके, अने तेनी पछी ललगा अने ललल ए अक्षरगणो न आवी शके. आनो अर्थ ए थयो के बीजो अने त्रीजो अक्षर बन्ने लघु न होई शके. आनो अर्थ ए थयो के बीजो अने त्रीजो अक्षर बंने लघु न होई शके.

"द्वितीयचतुर्थयो रश्च ।" ५-११

बीजा अने चोथा पादमां पहेला अक्षर पछी रगण (गालगा) न आवी शके.

"वान्यत्।" ५-१२

उपरना गणो सिवाय गमे ते गणो आवी शके.

"य चतुर्थात्।" ५-१३

पादना पहेला चार अक्षरो पछी यगण (लगागा) मूकवो.

आ उपरथी बधा विकल्पो भेगा करतां नीचे प्रमाणे वक्त्रनुं स्वरूप थाय.

विषम पाद					सम पाद		
	गागाल				गागाल		
	गागागा				गागागा		
गा / ल	लगागा	लगागा	गा / ल ।	गा / ल	लगागा	लगागा	गा / ल
	गालगा				लगाल		
	लगाल				गालल		
	गालल						

मूळमांथी मात्र एक ज दृष्टान्त आपुं छुं.

नवधारांबुसंसिक्त वसुधागन्धिनिःश्वासम्।
किंचिदुन्नतघोणाग्रं मही कामयते वक्त्रम्॥
लल गागा लगा गाल ललगागा लगागागा।
गाल गा लल गागागा लगा गाललगा गागा॥

आ वक्त्रनो पाठ करतां जणाशे के आनां चारे पादो अनुष्टुपनां विषमपादो छे. अहीं ए विषम पादनां ज चार आवर्तनो थयां छे.

"पथ्या युजो ज्।" ५-१४

वक्त्रना सम एटले बीजा चोथा पादमां चार अक्षर पछी जगण (लगाल) मूकवाथी पथ्या नामनुं वक्त्र बने छे.

में आगळ कह्युं के अनुष्टुपनुं विषम पाद वक्त्रमां आवे छे, हवे एनुं सम पाद बतावे छे. वक्त्रमां सम पादमां पहेला चार अक्षर पछी लगागा छे तेने बदले पथ्यामां लगाल आवे. आ पथ्या ए ज अनुष्टुप छे. हवे आपणे छेल्ला सूत्र प्रमाणे अनुष्टुपनो न्यास करीए.

	गागाल					गागाल		
	गागागा					गागागा		
गा	लगागा	लगागा	गा	।	गा	लगागा	लगाल	गा
ल	गालगा		ल		ल	लगाल		ल
	लगाल					गालल		
	गालल							

गुजरातीमांथी अनेक दृष्टान्तो आपी शकाशे :

व्योमथी जलनी धारा जोरमां पडती हती;
ढळी पलंगने पाये सुंदरी रडती हती.

'रमा,' पूर्वालाप पृ. ८

न्यास: गालगा ललगा गागा, गालगा ललगा लगा
लगा लगाल गागागा, गालगा ललगा लगा

नहीं नाथ! नहीं नाथ! न जाणो के सवार छे!
आ बधुं घोर अंधारुं हजी तो बहु वार छे.

'वसंतविजय', पूर्वालाप, पृ. २०

न्यास : लगा गाल लगा गाल लगागागा लगाल गा
गालगा गाल गागागा लगागा ललगा लगा

बीजा अनेक दाखला आपी शकाय. क्यांक गुजराती अनुष्टुपोमां भूल पण जणाशे, पण ए प्रश्न अहीं प्रस्तुत नथी. अहीं तो आपणे पिंगलगत स्वरूपनो ज विचार करीए छीए. आवता प्रकरणमां वृत्तोना संवादनी चर्चा करीशुं त्यार पछी अनुष्टुपना विकारोमां विसंवाद क्यारे गणाय तेनो विचार करी शकीशुं. हवे आगळ चालीए.

आ पछी "विपरीतैकीयम्।" ५–१५। एवुं सूत्र छे. तेनो अर्थ ए छे के उपरना लक्षणथी विपरीत एटले ऊलटा क्रमना पादोवाळी होय ते पथ्या कहेवाय एवो एक मत छे. आनी साथे आपणे संबंध नथी. शिष्ट साहित्यमां आ प्रकार आवतो नथी एटले आपणे एने छोडी दईशुं. आनी पछीनुं सूत्र:

"चपला युजो न्।" ५।१६

विषम एटले पहेला अने त्रीजा पादमां प्रथम चार अक्षरो पछी नगण एटले ललल आवे तो ए चपला अनुष्टुप गणाय. आ ज आगळ आवती न-विपुला छे.

"विपुला युग्लः सप्तमः।" ५–१७

सम चरणमां सातमो अक्षर लघु होय तो तेने विपुला अनुष्टुप जाणवो. खरी रीते पथ्यामां आ प्रमाणे सातमो लघु छे ज एटले दृष्टान्त आपवानी जरूर नथी. सूत्रनी सगवड खातर आ सूत्र मूकेलुं छे एम हुं अर्थ करुं छुं.

"सर्वतः सैतवस्य।" ५–१८

चारे पादमां सातमो अक्षर लघु जोईए एवो सैतवनो मत छे. दृष्टान्त:

सैतवेन पयार्णवं तीर्णो दशरथात्मजः।
रक्षः क्षयकरीं पुनः प्रतिज्ञां स्वेन बाहुना ॥
गालगाल लगालगा गागा ललगा लगा
गागालल लगालगा लगागागा लगालगा

आगळ ५–१३मा सूत्रथी सिद्ध थता वक्त्रना दृष्टान्त संबंधी में कहेलुं के एमां चारेय चरणोमां अनुष्टुपनो विषम पाद चार वार आवे छे. अहीं सैतवनी विपुलामां अनुष्टुपनां सम चरणो चारेय वार आवे छे. विशेष ए पण कहेवुं जोईए के आ अनुष्टुप वैदिक अनुष्टुपनी अने गायत्रीना पादोनी वधारे नजीक छे. अने सैतव वधारे प्राचीन पण छे. आपणे ए उपयोगी नथी. पण आ पछीनां सूत्रो पाछां अनुष्टुपना स्वरूप संबंधी छे.

"भ्रौ न्तौ च।" ५–१९

वक्त्रना अने पथ्याना विषम पादमां एटले पहेला अने त्रीजा पादमां पहेला चार अक्षरो पछी यगण एटले लगागा आवे छे. तेनी जगाए केटलाक बीजा गणो विकल्पे आवी शके छे ते बतावे छे. तेमां भगण (गालल) रगण (गालगा) नगण (ललल) तगण (गागाल) आ सूत्रमां जणावे छे. आ गण प्रमाणे ए अनुष्टुप भ-विपुला र-विपुला न-विपुला त-विपुला गणाय छे. आगळना जे सूत्रमां बीजा त्रीजा चोथा अक्षरोना गणोना विकल्पो गणाव्या तेनी साथे ज आ विकल्पो न गणाव्या तेनो अर्थ हुं एवो समजुं छुं के आ विकल्पोनो उपयोग विरल होय छे. हवे हलायुधे आपेलां दृष्टान्तो जोईए. बधां दृष्टान्तोनो आखो न्यास आपवाने बदले प्रस्तुत गणनी नीचे रेखा करी हुं ते ते गण बतावीश.

भ–विपुला :– इयं सखे चन्द्रमुखी स्मितज्योत्स्ना च मानिनी।
भ = गालल इन्दीवराक्षी हृदयं दन्दहीति तथापि मे ॥
वटे वटे वैश्रवणः चत्वरे चत्वरे शिवः।
पर्वते पर्वते रामः सर्वत्र मधुसूदनः॥

र–विपुला :– लक्ष्मीपतिं लोकनाथं रथांगधरमच्युतम्।
र = गालगा यज्ञेश्वरं शार्ङ्गपाणिं प्रणमामि त्रयीतनुम्॥
महाकविं कालिदासं वन्दे वाग्देवतां गुरुम्।
यज्ज्ञाने विश्वमाभाति दर्पणे प्रतिबिंबवत्॥

न–विपुला :– युयुत्सुनेव कवचं किमामुक्तमिदं त्वया।
न = ललल तपस्विनो हि वसने केवलाजिनवल्कले॥
किरातार्जुनीय ११–१५
अनाकृष्टस्य विषयैर्विद्यानां पारदृश्वनः।
तस्य धर्मरतेरासीद् वृद्धत्वं जरसा विना॥
रघुवंश १–२३
तव मन्त्रकृतो मन्त्रैर्दूरात्संशमितारिभिः।
प्रत्यादिश्यन्त इव मे दृष्टलक्ष्यभिदः शराः॥
एजन १–६१

त–विपुला :– वन्दे देवं सोमेश्वरं जटामुकुटमंडितम्।
त = गागाल खट्वांगधरं चन्द्रमः शिखामणिविभूषितम्॥
लोकवत्प्रतिपत्तव्यो लौकिकोऽर्थः परीक्षकैः।
लोकव्यवहारं प्रति सदृशौ बालपंडितौ॥

सूत्रमां च (=अने) छे तेनो घणे भागे वृत्तिकारो 'वगेरे' एवो अर्थ करी बीजा एवा विकल्पो उमेरे छे. अहीं हलायुध ए रीते म–विपुला उमेरे छे.

म–विपुला :– सर्वातिरिक्तं लावण्यं बिभ्रती चारुविभ्रमा।
म = गागागा स्त्रीलोकसृष्टिस्त्वन्यैव निःसामान्यस्य वेधसः॥
मनोभिरामाः शृण्वन्तौ रथनेमिस्वनोन्मुखैः।
षड्जसंवादिनीः केका द्विधा भिन्नाः शिखंडिभिः॥
। रघुवंश १–३९

कोई स–विपुलानो दाखलो पण मळे छे एम कही हलायुध 'पराशरस्मृति'मांथी एक श्लोक टांके छे.

स–विपुला :– जिते तु लभते लक्ष्मीं मृतेनापि सुरांगनाः।
स = ललगा क्षणविध्वंसिनि काये का चिन्ता मरणे रणे॥

परा. स्मृ. ३–३८

आ बधा प्रकारोना मिश्र दाखला तरीके भारविनुं एक दृष्टान्त आपे छे.

क्वचित्काले प्रसरता क्वचिदापत्य विघ्नता।
शुनेव सारंगकुलं त्वया भिन्नं द्विषां बलम्॥

आमां पहेलुं पाद न–विपुलानुं छे, अने त्रीजुं भ–विपुलानुं छे.

विपुला अनुष्टुपमां पहेला चार अक्षर पछीना त्रण एटले ५–६–७मा स्थानना अक्षरोना विकल्पो कुल सात नीचे प्रमाणे थया. तेमांय (लगागा)-ने हुं प्रकृतिभूत गणुं छुं. ते सिवायना सूत्रमां नीचेना आवी गया : गालल, गालगा, ललल, गागाल, अने वृत्तिकारे तेमां गागागा अने ललगा उमेर्या. अर्थात् जगण (लगाल) सिवायना बधा ज गणो आवी गया. आ एक गण न आवी शक्यो तेनुं कारण स्पष्ट छे के अनुष्टुपमां लगालनुं स्थान सम पादोमां नियत छे, फरी शके एवुं नथी, अने ते जगणने विषममां मूकतां विषम समनो भेद न रहे. आ उपरथी एटलुं सिद्ध थाय छे के समपादमां जगण ए अनुष्टुपनुं अफर लक्षण छे.

अहीं अनुष्टुपनुं प्रकरण पूरुं थाय छे. एना उपरनी वृत्ति पूरी करतां हलायुध कहे छे : "सर्वासां विपुलानां चतुर्थो वर्णः प्रायेण गुरुर्भवतीत्याम्नायः।" सर्व विपुलाओनो चोथो वर्ण घणोखरो गुरु होय छे एवो आम्नाय छे.

मारी दृष्टिए आ बधानो समन्वय हुं आ प्रमाणे करुं छुं. वक्त्रने हुं कालग्रस्त छन्द गणुं छुं. पथ्याने हुं प्रकृतिभूत अनुष्टुप गणुं छुं. अने तेमां विरल अपवादो जुदी जुदी विपुलाओमां संग्राहाया छे एम हुं मानुं छुं.

उपरनां बधां दृष्टान्तो में पिंगल सूत्र अने तेना परनी हलायुधनी वृत्तिमांथी लीधां छे. 'वृत्तरत्नाकर' अने तेना टीकाकार नारायण तेम ज हेमचन्द्र उपरनाने ज अनुसरे छे. पछीनां पिंगलो आ झीणवटमां ऊतरतां नथी. 'छन्दोमंजरी'(छ. म. क.)नुं वक्त्र प्रकरण नानुं ज छे, अने तेमां अनुष्टुपने ते टूंकमां पतावे छे.

भवत्यर्धसमं वक्त्रं विषमं च कदाचन।
तेयोर्द्वयोरुपान्तेऽत्र च्छन्दस्तदघुनोच्यते॥ ५–१

वक्त्र कोई वार अर्धसम अने कोई वार विषम होय छे. ते वक्त्रेना उपान्त्य एटले सातमा अक्षरना लघुगुरु नियमथी जे छन्द थाय छे ते हवे कहेवाय छे.

"वक्त्रं युग्म्यां मगौ स्यातामब्धेर्योऽनुष्टुभि ख्यातम्।" ५-२

वक्त्रमां सम पादोमां मगण (गागागा) अने गुरु आवे. अने वक्त्रमां चार अक्षर पछी यगण (लगागा) आवे. छेल्ला आठमा अक्षर विशे कशुं न कह्युं एनो अर्थ ए के लघु के गुरु गमे ते चाले. दृष्टान्त:

वक्त्रांभोजं सदास्मेरं चक्षुर्नीलोत्पलं फुल्लम्।
वल्लवीनां मुरारातेश्चेतोभृंगं जहारोच्चैः॥

न्यास: गागागागा लगागागा गागागागा लगागागा
गालगागा लगागागा गागागागा लगागागा

चार गुरुनो नियम सम पादो माटे ज छे, विषम माटे नथी. चार गुरु अने यगणना नियमोथी सम पादोना सात अक्षरो नियत थई जाय छे. विषम पादोना पहेला चार अनियत रहे छे. छतां दृष्टान्तमां विषम पादमां मुख्यत्वे गुरुओ ज आव्या छे ते ध्यान खेंचे तेवुं छे.

"युजोश्चतुर्थतो जेन 'पथ्यावक्त्रं' प्रकीर्तितम्।" ५-३

सम पादमां चार अक्षर पछी जगण (लगाल) लाववाथी पथ्यावक्त्र थाय छे. वक्त्रमां चार अक्षर पछी यगण आवतो हतो, तेमांथी समपादमां यगणने बदले जगण, लगागाने बदले लगाल, एवो अर्थ थयो. विषम पाद विषे कशुं कह्युं नथी एटले विषम पादनो यगण कायम रह्यो. पण ए रीते वक्त्रमां सम पादमां पहेला चार अक्षरो गुरु कह्या हता ते पण आ लक्षण प्रमाणे कायम रहेवा जोईए, पण दृष्टान्त जोतां एवो अभिप्राय जणातो नथी. एने हुं लक्षणनी अपूर्णता अथवा अवैशद्य अथवा तन्त्रयुक्तिनी शिथिलता समजुं छुं. दृष्टान्त:

रासकेलिसतृष्णस्य कृष्णस्य मधुवासरे।
आसीद् गोपमृगाक्षीणां पथ्यावक्त्रमधुस्रुतिः॥

न्यास: गालगाल लगागाल गागालल लगालगा
गागागाल लगागागा गागागाल लगालगा

अहीं सम पादमां पहेला चार अक्षरो गुरु नथी. आपणे आगळ चालिए.

पंचमं लघु सर्वत्र सप्तमं द्विचतुर्थयोः।
गुरु षष्ठं च जानीयात् शेषेष्वनियमो मतः॥ ५-४

सर्वत्र एटले सर्व पादोमां पांचमो लघु, बीजा चोथा पादोमां सातमो लघु, अर्थात् पहेला त्रीजा पादोमां सातमो गुरु; अने छठ्ठो गुरु जाणवो, अर्थात् सर्व पादोमां छठ्ठो गुरु; अने बाकीनामां अनियम एटले लघु के गुरु गमे ते चाले. आ उपरथी नियत थयेला अक्षरो हुं नीचे नोंधुं छुं:

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ । १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८
ल गा गा ल गा ल

आने टूंकमां कहेवुं होय तो एम कहेवाय के ५–६–७ विषम पादमां लगागा आवे अने सम पादोमां लगाल आवे. अने सम विषम पादनो फरक ए के विषममां सातमो गुरु आवे अने सममां सातमो लघु आवे. पण आम कही रह्या पछी 'छन्दोमंजरी' उमेरे छे:

प्रयोगे प्रायिकं प्राहुः केऽप्येतद्वक्त्रलक्षणम्।
लोकेऽनुष्टुबिति ख्यातं तस्याष्टाक्षरता मता॥

आ वक्त्रलक्षणने केटलाक प्रायिक एटले प्रयोगबहुल कहे छे. अर्थात् प्रयोगमां आ लक्षणमां घणो फेरफार करवामां आवे छे. लोकमां आने अनुष्टुप कहे छे. अने एने आठ अक्षर होय छे. छन्दःसूत्रमां हलायुधे केटलीय महेनत करीने जे विकल्पो अने अपवादो बताव्या ते बधानो सार पाछळनाए आ रूपे कह्यो. आ ज लक्षण 'श्रुतबोधे' कहेलुं छे:

श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः॥

श्रुतबोध १०

श्लोकमां चारेय पादमां छठ्ठो गुरु अने पांचमो लघु जाणवो. बीजा अने चोथा पादमां सातमो ह्रस्व, अने पहेला त्रीजामां सातमो दीर्घ. अनुष्टुपने ज सामान्य रीते श्लोक कहे छे ते अहीं जोई शकाय छे. आ वात एटली बधी धोरणरूप थई गई छे के लहियाओ अक्षरगणतरीमां सोळ अक्षरनो श्लोक गणे छे—पछी पुस्तक भले गद्यमां लख्युं होय. हवे आ साथे हुं मात्र 'वृत्तवार्तिक'नुं अनुष्टुपनुं लक्षण लईश. मने ए लेखक बहु ज विचक्षण अने समबुद्धिनो जणायो छे. तेनुं लक्षण:

ओजे मो रो गुरुद्वन्द्वं युग्मे मो रो लगावपि।
पथ्यावक्त्रं त्विदं वृत्तं भेदो भूयाननुष्टुभि॥

वृत्तवार्त्तिक ९

विषम पादमां मगण (गागागा) रगण (गालगा) अने बे गुरुओ, अने सम पादमां मगण रगण अने लघुगुरु ते पथ्यावक्त्र. अनुष्टुपना भेदो घणा छे.

अत्यार सुधीनां लक्षणोमां आ एक ज लक्षण आठेय अक्षरोनो नियम आपे छे. तेनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

गागागागा लगागागा गागागागा लगालगा
गागागागा लगागागा गागागागा लगालगा

उपरनो लक्षणश्लोक आ ज न्यासनो छे. छतां वृत्तिकारे नीचेनुं दृष्टान्त आप्युं छे ते जोईए.

वेदा वाचः प्रसन्नानां दृष्टेर्दानं त्वनुग्रहः।
येषां वासः पदं मुक्तेरीडे तानेव भूसुरान्॥

आ रूप पथ्यामां अशक्य नथी. पण पथ्याए आ उपरांत घणा विकल्पो स्वीकार्या छे त्यारे आणे तेमांना एकने ज प्रकृतिभूत गण्यो छे. अने जेने प्रकृतिभूत गण्यो छे ते आकार पथ्यानो बहुत्तम गुरुओनो छे. पथ्यामां आथी वधारे गुरुओ मूकी न शकाय अने ओछामां ओछा आटला लघुओ जोईए ज. एटले के विषममां एक लघु अने सममां बे लघु ओछामां ओछा जोईए ज.

अलबत आ उपरांत अनुष्टुपना स्वरूप विशे एक छुट्टो विचार नारायणे नोंधेलो छे ते पण अहीं लईए. नारायणे व्यंजनान्त स्वरने गुरु गणवा माटे दृष्टान्त ए आपेलुं छे के व्यंजनान्तने गुरु न गणीए तो 'तनुवाग्विभवोऽपिसन्।' एमां 'सन्' गुरु न थई शके (वृ. र. १, ९ उपर नारायणनी टीका. जुओ गत पृ. २३). अर्थात् ओछामां ओछुं एटलुं कही शकाय के नारायण सम पादने अंते तो गुरु आवश्यक गणे छे.

५

वृत्तोनो मेळ : यति, यतिभंग

आ अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो जेने हुं वृत्तो कहुं छुं, तेना संवाद के मेळनो कोई सिद्धान्त, तेनुं कोई धोरण छे खरुं? आवृत्तसंधि अक्षरमेळ छन्दो जेम के तोटक तेनो मेळ समजवो सहेलो छे. तोटकनो न्यास नीचे प्रमाणे छे:

ललगा ललगा ललगा ललगा

आपणे न्यास जोईने तरत कही शकीए के आनो मेळ ललगानां चार आवर्तनोथी रचायो छे. आगळ आवता जातिछंदोना मेळना सिद्धान्तनो उपयोग अहीं करीए तो एम पण कही शकीए के आ मेळ लावणी तालनी कालमात्रा साथे छन्दनी अक्षरमात्रा जोडवाथी निष्पन्न थाय छे. पण वृत्तो तो स्वरूपे ज आवर्तन विनानां छे. तेमना मेळनुं धोरण शुं? तेमां आवर्तन नथी एटले तेने कोई संगीतना ताल साथे स्वभावथी संबंध न होई शके. त्यारे एना मेळनो शो खुलासो?

एटलुं तो आपणा पठनना संस्कारो उपरथी तरत कही शकीए के वृत्तोनो मेळ पंक्तिमां अमुक अमुक नियत स्थाने आवता लघु अने गुरुथी थाय छे. ए लघुओ गुरुओ एवी रीते गोठवाया छे के तेना शुद्ध उच्चारणथी ज मेळ रचाई जाय छे. एना उच्चारणथी ज पंक्तिनो उद्गम विस्तार अने उपसंहार बराबर थई जाय छे. ए लघुगुरुनां निश्चित स्थान उपर आधार राखे छे माटे ज तेमां एक गुरुने बदले बे लघु के बे लघुने बदले एक गुरु के लघुगुरुनी परस्पर परिवृत्ति के फेरफार करी शकातो नथी. वृत्तोमां आवता लघुगुरुओने तेना स्थानेथी जरा पण च्युत करतां एनो ए छन्द रहेतो नथी. ए छन्द भांगे छे, अने करेला फेरफार पछी पण जो मेळ अनुभवातो होय तो ए एनो ए मेळ नथी रहेतो, नवो मेळ थाय छे—नवो छंद थाय छे. इन्द्रवज्राना प्रथम गुरुने स्थाने लघु मूकवाथी छन्द बदलाय छे, ए उपेन्द्रवज्रा बने छे. बन्नेनो मेळ सरखा जेवो देखाय छे ए खरुं, पण छन्द तो बदलाय ज छे, अने मेळ सरखा जेवो देखाय एवा दाखला विरल छे. रथोद्धतानो नवमो दसमो अक्षर लगा छे, तेनो क्रम फेरवीने गाल करतां स्वागता थाय छे, अने एनो मेळ बदलायेलो स्पष्ट मालूम पडे छे. जोके त्यां पण छन्दोना मेळ वच्चे थोडी समानता

रहे छे. एटले एम ज कहेवुं प्राप्त थाय छे के वृत्तोनो मेळ पंक्तिमां नियत स्थाने आवता लघुगुरुक्रमथी सधाय छे. आ क्रम कलानी कोई गूढ आवश्यकताथी नियत थाय छे. ए आवश्यकताथी अन्यथा करेला फेरफारोथी छन्दनो मेळ भांगे छे. जेम के आगळ आपेलो दाखलो फरी लेतां:

रह्यां बन्ने बाजू तरुवर नहीं कांइ वचमां

आ शिखरिणीनी पंक्ति छे. तेमां 'तरुवर'नी जगाए 'वृक्षो' मूकतां शिखरिणीनो मेळ रहेतो नथी, अने बीजो कोई मेळ आवतो नथी. अनेक छन्दोना संस्कारथी सिद्ध थयेली आपणी छन्दोबुद्धि कही आपे छे के फेरफार करेली पंक्तिमां कोई जातनो मेळ छे नहीं, एटले ए लघुगुरुक्रममां ज कोई कलानी आवश्यकता रहेली छे. ए आवश्यकतानी आपणे व्याख्या न करी शकीए तो पण एने स्वीकारवी जोईए.

आ आवश्यकताने स्वीकारीने मेळनो प्रश्न छोडी दईए तो तेमां कशी हानि नथी. पण खरी शास्त्रीय पद्धति ए के चर्चाथी ज्यां सुधी जई शकाय त्यां सुधी जवुं जोईए. चर्चा पछी पण छेवटे कोई आवी ज आवश्यकता आवे छे के आववानी छे एम करी शास्त्रीय रीते चर्चा आगळ जती होय तो तेने अटकाववी न जोईए. अने तेथी आ प्रकरणमां हुं ए प्रयत्न करवा इच्छुं छुं.

शास्त्रीय अन्वेषणनुं एक महान साधन पृथक्करण छे. हुं पण वृत्तनो मेळ शोधवा एनो ज उपयोग करीश. खरी रीते ए पृथक्करणनो थोडो उपयोग तो थई गयो छे. प्राचीन परंपरा प्रमाणे छन्दनुं एकम श्लोक छे. श्लोकनुं पृथक्करण करी आपणे सौथी प्रथम श्लोकार्ध पर आव्या. संस्कृत पिंगलो प्रमाणे श्लोकार्ध संबंधी एवो नियम करे छे के ए अर्धनी सीमानी पार संधिना नियमो व्यापार करी शकता नथी. श्लोकार्धे शब्द पूरो थवो जोईए, अने संधि पण अटकवी जोईए.[1] एथी आगळ जई पृथक्करण करतां दरेक श्लोकार्धनां बब्बे चरणो आवे छे. दरेक चरणने अंते शब्द पूरो थवो जोईए पण पहेला अने बीजा चरणना शब्दो वच्चे, अने त्रीजा अने चोथा चरणना शब्दो वच्चे संधि अवश्य थवी जोईए. एक रीते आ पृथक्करण अहीं अटके छे, एनाथी जे एक चरण प्राप्त थाय छे, एने ज प्राचीन छन्दःशास्त्रीओए मेळनुं बीज गण्युं. अने एनां चार आवर्तनोथी श्लोक थाय छे एम कही संतोष मान्यो, अने श्लोकने छन्दनुं एकम गण्यो. पण अत्यारनी पिंगलनी चर्चामां आथी आगळ पृथक्करण थयेलुं छे, अने आपणे ए मार्गे जवानुं छे.

---

१. विशेष माटे जुओ प्रकरण ३ उपरनुं परिशिष्ट १. पृ. ९५, ९६

अत्यारनी पिंगलचर्चा उपरना सिद्धान्तोमांथी ज जरा आगळ जई नवो सिद्धान्त फलित करे छे. श्लोकमां साधारण रीते एक ज चरणनां चार आवर्तनो आवे छे. आमां आवर्तनक्रिया पोते छन्दना संवादनुं तत्त्व न होई शके. गमे ते लघुगुरुक्रमवाळा खंडने आवर्तित करवाथी छन्द बनतो नथी. ए आवर्तन तो ए चरणना संस्कार दृढ करवा आवे छे, तेम ज श्लोको गवाता हता ते गावानी अनुकूलता माटे, तेना गानना संस्कारो पण दृढ करवा आवे छे. एटले अर्वाचीन पिंगल चार पंक्तिना श्लोकने श्लोक गणवा उपरांत श्लोकनी एक पंक्तिने ज संवादनुं एकम गणे छे. श्लोकनी एक पंक्तिमां एवो संवाद रहेलो छे के ते एकली स्वतंत्र आवी शके. आ मान्यता प्राचीन पिंगलने पण तद्दन नवी नथी. वैदिक छंदोमां श्लोक उपरांत पादनो पण स्वीकार छे. एक अष्टाक्षर पाद गायत्र्य पाद कहेवाय छे. वेदमां एकपदा तेम ज द्विपदा गायत्री मळी आवे छे (गत पृ. ६२-६३). अत्यारे आपणे पण ए रीते वृत्तना पादनो स्वीकार कर्यो छे. आपणा कविओ वृत्तोनां मिश्रणोमां एक वृत्तनी एक ज पंक्तिनो पण उपयोग करे छे, तेम ज एक ज पादनो पण एक मुक्तक तरीके उपयोग करे छे. जेमके

शार्दूलविक्रीडित : सृष्टीनो परिताप ए ज वहवो, जेने जुवानी वरी.
उन्मेष. पृ. १८३

वसन्ततिलका : अक्लान्त जेह सहपान्थ कलाप्रवासे.
पारकां जण्यां

शिखरिणी : रवो हैये मारे सतत तव सौजन्यसुरभि
अर्पणपंक्ति, 'आराधना'

शार्दूलविक्रीडित : हैयानेय कहुं शुं? एक रटणा एणे धरी ताहरी.
'अभिसार'ना मुखपृष्ठ पर

स्रग्धरा : वेणीमां गूंथवांतां कुसुम तहिं रह्यां अर्पवां अंजलीथी.
अर्पण, 'शेषनां काव्यो'

वंशस्थ : कथा कही जाय शि रीत स्नेहनी?
'ध्रुवसेर'नी अर्पणपंक्ति

एक पंक्तिने संवादी गणतां हवे श्लोक पण चार ज पंक्तिनो थवो जोईए एवो मत रह्यो नथी. अलबत चार पंक्तिना श्लोको लखाय छे अने लखाशे पण ते साथे बे पंक्तिना, त्रण पंक्तिना, पांच पंक्तिना, छ पंक्तिना पण लखाय छे अने लखाशे. 'प्राचीना'ना मुखपृष्ठ परनो श्लोक तेम ज तेनो

અર્પણશ્લોક બબ્બે પંક્તિઓના છે. 'આરાધના'નું "સજી દઈશ?" કાવ્ય ત્રણ પંક્તિના એક જ શ્લોકનું છે. પણ એવાં છૂટાં મુક્તકો જ થયાં છે એમ નથી, પતીલે ત્રણ ત્રણ પંક્તિના શ્લોકોવાળાં કાવ્યો લખ્યાં છે. આ પ્રકાર ઓછો પરિચિત છે તેથી દૃષ્ટાન્તો આપું છું:

(પૃથ્વી)

પ્રથા જગતકેરી સાથ મુજને ન સંબંધ હો
મ્હને વખત થોભવા જગતમાંહિ આ કેટલો?
પતંગવત જિંદગી, નિકટ મૃત્યુ દીવો ખડો!

હું જાણું નહિ હાલ કાલ મુજ શા થશે; કો કહે,
કદાચ સરિતા વિશાળ મુજ આ વહેતી રહે,
અને હૃદય બંધ થાય, જડતા સદાની ગ્રહે!

અને

(હરિણી)

કબુલ તું શકે મ્હારી પ્રીતિ નિખાલસ જો કરી
સહન કરવા લાખો લાંબાં કલંક બિજાં ફરી
સજ સમજિ લે સાચે મૂને કિશોર કૃશોદરી!

મુજ કબરમાં ત્હારાં સ્વપ્નો અહોનિશ આપજે
મુજ શબ પરે ત્હારું હૈયું અશોષ વહાવજે
મુજ નિધનમાં હંમેશાં તૂ સુવાપદ સ્થાપજે.

પાંચ પંક્તિનાં મુક્તકો મળે છે. 'પાંખડી'માં 'મહાજનોનો મોહ' (પાંખડી પૃ. ૨૯) 'ઊંચાઈનો ગર્વ' (એજન પૃ. ૫૨) એ બંને વસંતતિલકાની પાંચ પંક્તિનાં મુક્તકો છે, અને 'ઘણું મોડું' (એજન પૃ. ૭૧) શિખરિણીની પાંચ પંક્તિનો શ્લોક છે. શ્લોક એકથી સાત પંક્તિનો થઈ શકે છે. અને આને પિંગલનો નવીન વિકાસ ગણવો જોઈએ કારણ કે પ્રાચીન પિંગલ પ્રમાણે છ ચરણનો અનુષ્ટુપ તે અનુષ્ટુપ નહીં પણ ગાથા ગણાય છે. પિંગલનું 'છન્દઃશાસ્ત્ર' અને તેને અનુસરનારાં બધાં જ પિંગલો ચાર ચરણોનાં વૃત્તો કહી રહ્યા પછી સૂત્રોમાં નહીં આવી ગયેલ વૃત્તોને માટે સૂત્ર મૂકે છે: "અત્રાનુક્તં ગાથા।" (છં. શા. ૮, સૂ. ૧) "અહીં નહીં કહેલું તે ગાથા ગણાય." બધાં પિંગલો લગભગ આ અર્થનાં સૂત્રો આપે છે અને તેના દૃષ્ટાન્તમાં લગભગ દરેક જગાએ મહાભારતનો નીચેનો શ્લોક ગાથાના દૃષ્ટાન્ત તરીકે આપે છે.

दश धर्मं न जानन्ति धृतराष्ट्र निबोध तान्।
मत्तः प्रमत्त उन्मत्तः श्रान्तः क्रुद्धो बुभुक्षितः ॥
त्वरमाणश्च भीरुश्च लुब्धः कामी च ते दश॥

आ अनुष्टुपनां चरणोमां स्वरूपनी दृष्टिए कशुं ज नवुं नथी, फेर मात्र चारने बदले छ चरणो छे एटलो ज छे. पण ए, शास्त्रना नियमोनी बहार जाय छे, शास्त्रमां अनुक्त छे, अने तेथी ए अनुष्टुप नथीः खरूं तो में आगळ कह्युं तेम आख्यानकालमां केटलाक छंदोनुं तेम ज श्लोकनुं स्वरूप नियत थयुं नहोतुं अने तेथी आवा प्रयोगो मळे छे. पछीना संस्कृत कालमां साहित्य चतुष्पाद श्लोकबंधमां ज वहे छे अने पिंगल एने ज शास्त्रीय माने छे. अर्वाचीन कालमां आपणे एक तरफथी नवा श्लोकबंधो रच्या, जेना थोडा दाखला उपर लख्या अने बीजा हवे आवशे, अने बीजी तरफथी श्लोकबंध तोडी यथेच्छ अनियत संख्यानी पंक्तिओना परिच्छेदोमां काव्यने वहेवडाव्युं. एमां कवि केवळ अर्थने अनुसरीने यथेच्छ रीते गमे तेटली पंक्तिए, एकी संख्यानी पंक्तिए पण, परिच्छेद पाडे छे. आने प्रो. ठाकोर श्लोकभंग कहे छे.

आ श्लोकभंग मुख्यत्वे शक्य बने छे,—काव्यमांथी गेयतानुं विश्लेषण करवाथी. आगळ (गत पृ. ११९–२०) कही गयो तेम आपणी परंपरा बधां ज वृत्तो गावानी छे. अनुष्टुप पण गवातो. गावाने माटे चार चरणो आवश्यक हतां. अंग्रेजी काव्यना परिचयथी आपणने समजायुं के काव्यने गावानी जरूर नथी. अंग्रेजी काव्यनुं गीतरहित पठन[२] थाय छे, तेथी आपणे पण तेवा पठननो उपयोग कर्यो. अने संस्कृत वृत्तोमां ए एकदम शक्य बन्युं कारण के संस्कृत वृत्तो, संगीतना ताल साथे संबंध धरावता संधिओनां आवर्तनोनां बनेलां नथी. एटले अगेय काव्यनी भावनाना उदय साथे ज एने माटे उपयोगी वृत्तोनो आखो एक भंडार कविओने जडी गयो! गुजराती काव्यमां एथी एकदम अगेय काव्यनो फाल आव्यो. आ रीते पिंगलमां एक नवी विचारदृष्टि प्रवेश पामी, अने पिंगले नवी दिशाए विकास साधवा मांड्यो.

काव्यमांथी गेयता नीकळी जाय एटले पछी काव्यो मात्र अर्थने अनुसरीने पठवानां रह्यां.[३] छन्दना विराम उपरांत अहीं अर्थविरामनी दृष्टि सामेल थाय छे. ए दृष्टिने लीध छन्दनी यतिओ विशे पण आपणे फरी

२. recitation

३. आ प्रकारनुं पठन संस्कृत नाटकोमां परिचित हतुं. एनुं कंईक सूचन मने भरतनाट्यशास्त्रमांथी मळे छे. भरतनाट्यशास्त्र वागभिनयने अंगे, छन्दथी स्वतंत्र रीते, छन्दना पठनमां अर्थ प्रमाणे पठन करवानुं कहे छे. भरत-

विचार करवो प्राप्त थाय छे. अने हवे आपणे आपणा पृथक्करणव्यापारमां चरण पछी यति आगळ ज आवीने ऊभा रहीए छीए.

आपणे आगळ जोई गया के वृत्तोना दरेक चरणे यति होय छे (एक उद्गता सिवाय). ते उपरांत केटलांक वृत्तोमां एक अने केटलांक वृत्तोमां बे मध्ययति होय छे. आ यतिओमां कंई भेद छे के नहीं ए संबंधी प्रास्ताविक श्लोकोमां थोडुं चर्चेलुं मळी आवे छे,* पण ए सिवाय आ यतिओ संबंधी एक बीजी बहु महत्त्वनी वात पिंगलोमांथी ज मळी आवे छे. ते ए के श्लोक पूर्ण थया पछी तेम ज श्लोकार्ध पछी संधिव्यापार चालतो नथी पण श्लोकार्धनी

नाट्यशास्त्रना सत्तरमा अध्यायमां नीचे प्रमाणे छे:

"अथ विरामः अर्थसमाप्तौ कार्यवशान्न छन्दोवशात्। कस्मात्, दृश्यन्ते ह्येकद्वित्रिचतुराक्षरा विरामाः। यथा

किं, गच्छ, मा विश, सुदुर्जन! वारितोऽसि,
कार्यं त्वया न मम, सर्वजनोपभुक्तम्॥"

भ. ना. गा. वॉ. २, पृ. ३९९

अहीं स्पष्ट जणावेलुं छे के छन्दने लीधे नहीं पण अर्थसमाप्तिने लीधे विराम करवानो छे. अने तेनुं दृष्टान्त वसन्ततिलकानी बे पंक्तिओमां आपेलुं छे, तेमां एक, बे, त्रण, चार एम अक्षरोए विरामो आवे छे, ज्यां में विरामचिन्ह मूकेलां छे. तेना उपरनी टीकामां अभिनवगुप्त आज दृष्टिबिन्दु वधारे स्पष्ट करे छे: "तत्रेति विच्छेदे, अर्थसमाप्तिनिमित्तं विरामो वास्य कार्यः। अर्थोऽवान्तरवाक्यार्थः। न छन्दोवशादित्यनेन कविना प्रयोगपरतन्त्रेण तदा स तदवसरोचितविरामवति वृत्ते ग्रहणप्रयत्नः कार्यः। प्रयोक्त्रापि कविपरतन्त्रेण न भाव्यमित्यत्रापि तेनार्थवशाद्विरामः कार्य इत्याख्यातम्।" ए कहे छे के अर्थसमाप्तिने कारणे विराम करवो. अर्थ एटले वाक्यनो अवान्तर अर्थ. (मुख्य अर्थ तो आखा श्लोकमां के काव्यमां पूरो थाय. तेनी अहीं वात नथी.) अभिनवगुप्त एटला माटे आगळ जईने कहे छे के कविए पण अर्थ प्रमाणे विराम मूकी शकाय एवुं वृत्त पसंद करवानो प्रयत्न करवो. अने प्रयोजके (भजवनाराए) पण कविने वश न बनी जतां वृत्तमां न होय त्यां पण अर्थ प्रमाणे विराम करवो.

४. निर्णय सागरनी 'छन्दःशास्त्र'नी भूमिकामां आवी चर्चा छे. त्यां नीचे प्रमाणे श्लोक मळे छे:

श्लोकेऽर्धमात्रा तु यतौ विरतौ मात्रयान्तरम्।
विच्छेदे त्वत्र मात्रे द्वे अवसाये ततोऽधिकम्॥

छ. शा. भूमिका पृ. ६२

अंदरनी एकी अने बेकी पंक्ति वच्चे संधि आवश्यक छे, जो के त्यां शब्द विभक्ति-प्रत्यय साथे पूरो थवो जोईए, (–संधिने लीधे थता थोडा अपवादो बाद करतां). मध्य यतिए पण संधि आवश्यक छे पण त्यां शब्दोना पण विभाग थई शके छे, मात्र एटलुं के एम यतिथी थतो कोई पण एक विभाग बे अक्षरथी नानो न होवो जोईए.' (जुओ गत पृ. ९९)

प्राचीन पिंगलो आ बधी यतिओनो अर्थ विराम एवो करे छे. पण मने ए अर्थ चिन्त्य जणाय छे. मध्य यति अने विषम सम पंक्तिओ वच्चे जो विराम ज आवश्यक होय तो संधि थई शके? संस्कृत संधिनियमो प्रमाणे वाक्य पछी संधि थती ज नथी. एनुं कारण स्पष्ट छे के वाक्य पूरुं थये विराम आवे, अने तेथी वाक्यान्ते आवता शब्दनो, पछी आवता वाक्यना आद्य शब्द साथे संपर्क ज अशक्य बने. संपर्क विना संधि अशक्य छे. संधि-योग्य स्थितिने संहिता–निकटपणुं ज कहेल छे. तेवी ज रीते वाक्यनी अंदरना शब्दोनी संधि बोलनारनी इच्छा उपर आधार राखे छे. तेनुं कारण पण ए ज छे के बोलनार पोतानी इच्छा प्रमाणे शब्दो छूटा पाडीने बोले, तो शब्दोनो परस्पर संपर्क न रहे एटले संधिनी जरूरत न रहे. काव्यमां तो छन्द प्रमाणे शब्दो भेगा बोलवाना छे ज तेथी पंक्तिनी अंदर, वाक्य एक होय के अनेक होय तो पण, संधि आवश्यक गणी छे. श्लोकार्धे विराम आवे छे माटे संपर्क अशक्य बनतां संधि निषिद्ध करी छे. एथी ऊलटी रीते दलील करतां, एम ज मानवुं पडे, के ज्यां ज्यां संधि आवश्यक मानी छे त्यां त्यां वचमां विराम न होई शके. माटे हुं मानुं छुं के मध्ययति आगळ अने विषम-सम पंक्तिओ वच्चे, जे यति छे ते विरामात्मक नथी, पण मात्र विलंबनात्मक छे. अत्यारनी परंपराप्राप्त श्लोकपठन पद्धतिमां पण श्लोकान्ते अने श्लोकार्धे विराम पहेलां विलंबन आवे ज छे. हुं मानुं छुं के ए सिवायनी विषम-सम चरण वच्चेनी यति अने मध्ययति मात्र विलंबनात्मक ज छे. मध्ययति आगळ तो शब्द पण तोडी शकाय छे, तो त्यां पाठविच्छेदात्मक विराम आवी ज न शके. पदमध्ययतिना दृष्टान्त तरीके नीचेनी पंक्ति अपाय छे.

पर्याप्तं तप्तचामी — करकटकतटे श्लिष्टशीतेतरांशौ।

अहीं 'चामीकर' (=सोनुं) एक शब्द छे तेना उच्चारणमां 'चामी'–पछी अटकी जईने 'कर' एम बोलवानुं होई शके ज नहीं. एटले हुं मानुं छुं के मध्ययतिमां मात्र विलंबन ज इष्ट छे. विराम उपरांत पाठविच्छेद

५. पिंगलनी चर्चामां आम शब्दभंगनो तद्दन निषेध नथी कर्यो पण कोई पण शिष्ट कविना काव्यमां एवो शब्दभंग मळतो नथी.

नहीं. अने विषमसम पंक्तिनुं पण हुं एम ज समजुं छुं. संधि थयेला शब्दोनी वच्चे विराम अत्यंत क्लेशकर थाय. जेमके

तांबूलवल्लीपरिणद्धपुगा-
स्वेलालतालिंगितचन्दानासु ॥

रघुवंश ६, ६४.

अर्थ समजीने पाठ करनार अहीं 'पूगा' आगळ विराम लई शकशे ज नहीं कारणके तेनो विभक्ति प्रत्यय 'सु', आगळ आवता 'स्वे' मां संधि पामेलो छे. एटले हुं मानुं छुं के श्लोकार्ध अने श्लोकान्त सिवायनी यतिओ मात्र विलंबनात्मक छे. एटले विवक्षाए कोई त्यां विराम करे तो तेने हुं दोष कहेतो नथी पण त्यां आवश्यक छे ते मात्र विलंबन, विराम नहीं.'

---

६. विरामनो शब्दार्थ अटकी जवुं एवो थाय छे, छतां विराम शब्द विलंबनना अर्थमां वपरातो हवो एवुं सूचन मने भरतनाटचशास्त्रना अमुक श्लोको उपरथी मळे छे:

विषादे च वितर्के च प्रश्नेऽथामर्ष एव च।
कलाकालप्रमाणेन पाठ्यं कार्यं प्रयोक्तृभिः ॥ १४१
शेषाणामर्थयोगेन विरामे विरमेदिह्।
एकद्वित्रिचतुःपंचषट्कलं च विलंबितम् ॥ १४२
विलंबिते विरामे हि सदा गुर्वक्षरं भवेत्।
षण्णां कलानां परतो विलंबो न विधीयते ॥ १४३

एनो अर्थ हुं एम समजुं छुं के विषाद वितर्क वगेरे भावोना नाटचनिरूपणमां प्रयोक्ताए पाठमां विराम करवो. आवो विराम एकथी छ मात्रा सुधीनो होई शके. विलंबित विराममां हमेशां गुरु अक्षर जोईए. आना उपरनी टीकामां अभिनवगुप्त कहे छे: "कललक्षणो यः कालः तत्प्रमाणेन विलंबितेन कार्यमिति विच्छेदस्यैव प्रमाणं दर्शितम्। . . . अर्थयोगेनेति यथा स्फुटा प्रतीतिर्भवति तथा विच्छेदः कार्यो न त्वतिविलंबितं पठेदित्यर्थः। (भ. ना. शा. वॉ. २. पृ. ४०२.) अहीं १४२ मा श्लोकमां आवता 'अर्थयोगेन. . . विरमेत्' ए शब्दो उपर टीका करतां अर्थप्रतीति अस्फुट थई जाय एटलो बधो विलंबित पाठ न करवो एम कहेलुं छे. एटले विराम, विच्छेद, विलंबन ए बधा शब्दो आ संदर्भमां लगभग एक ज अर्थमां वापरेला होय एम जणाय छे. छतां भरतनाटचशास्त्रनी शुद्ध प्रतो झाझी मळती नथी, वधारे टीकाओ मळती नथी, एटले पूरी खातरीथी आ अर्थ उपर हुं आधार राखी शकतो नथी.

पण आटला विलंबनने आवश्यक गणवुं ज जोईए. एने न स्वीकारीए तो श्लोकमां पछी एक चरणने बीजाथी भिन्न करवा बीजुं कयुं तत्त्व रहेतुं नथी. अलबत्त आ बधां ज अक्षरमेळ वृत्तोमां अक्षरनी संख्या नियत छे. पण छन्दोबद्ध काव्यना श्रवणमां श्रोता कंई अक्षरो गणीने पंक्तिनुं आकलन करतो नथी. श्रवणमां तो पंक्तिना उपसंहारनो संस्कार चरणने अंते आवता विलंबन के विलंबनपूर्वक थता विरामथी ज थाय छे. ए विलंबनने माटे ज बधां वृत्तोमां (एक उद्‌गताना दृष्टान्त सिवाय) चरणने अंते गुरु आवे छे. संस्कृतमां गुरुने ज लंबावी शकाय छे, अने तेथी चरणान्ते हमेशां गुरु आवे छे. ए विलंबनने लीधे ज चरणान्त लघुने पण पिंगल गुरु गणे छे—गुरु करे छे. अलबत आनो अर्थ एवो नथी ज के चरणान्ते गुरु मूकी विलंबन करीए एटलाथी ज चरणनो मेळ सधाई जाय छे. मेळनी दृष्टिए एम कहेवुं जोईए के संस्कृत वृत्तोमां आवता चरणनो मेळ तेमां आवता लघुगुरुना न्यासमां अने अंते आवता गुरु अने तेना विलंबनमां रहेलो छे. वृत्तना चरणमां लघुगुरुन्यास एवी रीते करेलो होय छे के ए चरण पोते ज अंते गुरु अने तेनुं विलंबन मागी ले. आ प्रमाणे विलंबन ए मेळनो भाग होवाथी संस्कृत वृत्तोमां चरणांत बतावबा प्रास के एवी बीजी कशी छन्दोभंगीनी जरूर पडती नथी. तेथी संस्कृत पिंगले प्रास के यमकने हमेशां आगन्तुक गणेल छे, कदी तेने छंदनुं आवश्यक अंग गणेलुं नथी, तेनी कदी चर्चा करी नथी. संस्कृत पिंगल हमेशां प्रासथी मुक्त रहेलुं छे. आ सर्व उपरथी जणाय छे के चरणान्त विलंबन के विलंबनपूर्वक थता विरामने छन्दनुं ज अंग गणवुं जोईए.

आ विरामने बदले विलंबनने आवश्यक गणवाथी अर्थानुसारी गीतरहित पठनने बहु लाभ थई जाय छे. अर्थप्रवाह जाळववा माटे वे पंक्ति वच्चे आवती यति मात्र टूंका विलंबनथी ओळंगी शकाय छे अने मध्ययति तो ए करतां पण टूंका विलंबनथी ओळंगी शकाय. श्लोकभंग थाय त्यां तो श्लोकार्ध के श्लोकान्तनो पण प्रश्न रहे नहीं. एटले अमुक पंक्तिए श्लोकार्ध थई त्यां विलंबनपूर्वक विच्छेद आवश्यक बने नहीं. अर्थात् कवि, अर्थविवक्षाए कोई पण एक चरणनो अंत मात्र विलंबनवाळो अथवा विलंबन अने विच्छेदवाळो करी शकशे. पण साथे साथे हुं एम पण मानुं छुं के, श्लोकमां वधारेमां वधारे बे ज चरणो विच्छेद विना विलंबनात्मक यतिथी संधाई शकतां हतां, वधारे नहीं, ए अहीं श्लोकभंग थया पछी पण याद राखवुं जोईए. अर्थात् पद्यप्रवाहमां, भले कोई चरणे विच्छेदवाळी अने कोई चरणे मात्र विलंबनवाळी यति आवे, पण बेथी वधारे पंक्तिओ विच्छेद विनाना

खंडमां न आवे ए इष्ट गणवुं जोईए. अंतरे अंतरे ए विच्छेद आवे ए वृत्तरचनाना बंधारणनुं अंग छे, अने माटे ते लांबा अंतर सुधी लुप्त थवा देवुं जोईए नहीं.

चरणान्त यतिने आपणे छन्दनुं आवश्यक अंग गणी. आ पछी मारे ए कहेवानुं छे के मध्ययति पण छंदनुं आवश्यक अंग छे. अलबत्त वृत्तने माटे चरण, अने चरणने माटे चरणान्तव्यंजक विलंबन आवश्यक छे ए दृष्टि मध्ययतिना अस्तित्वने समर्थित करी शके नहीं. पण सयतिक छन्दोनो एक साथे अभ्यास करी जोतां जणाय छे के ए पण एक छन्दनुं ज अंग छे.

हवे हुं ए विषय लउं छुं अने एना प्रारंभमां हुं आगळ आवी गयेल बधां सयतिक वृत्तोना लगात्मक न्यास एक साथे मूकुं छुं जेथी बधां वृत्तो एक नजरे जोई शकाय.

शालिनी: गागागागा । गालगा गालगागा
वैश्वदेवी: गागागागागा । गालगा गालगागा
मंदाक्रान्ता: गागागागा । ललललगा । गालगा गालगागा
स्रग्धरा: गागागागा लगागा । ललललललगा । गालगा गालगागा
मालिनी: ललललललगागा । गालगा गालगागा
हरिणी: ललललगा । गागागागा । लगा ललगा लगा
सुवदना: गागागागा लगागा । ललललललगा । गागा ललगा
प्रहर्षिणी: गागागा । ललललगा लगा लगागा
रुचिरा: लगालगा । ललललगा लगालगा
शिखरिणी: लगा गागागागा । ललललगागा ललगा
शार्दूलविक्रीडित: गागागा ललगा लगा ललगा । गागालगा गालगा

हवे आपणे आ सयतिक छंदोनो वधारे सूक्ष्मताथी अभ्यास करीए. आपणे आ छंदोनुं पृथक्करण करता जईए अने कई परिस्थिति यतिने आवश्यक बनावे छे ते जोईए.

आ छंदोनो मोटो भाग एवो छे जेमां पहेलो यतिखंड गुरुबहुल छे. ए जोतां कही शकाय के चार के वधारे गुरुओ भेगा थतां ते पछी यति आवश्यक बने छे. जाणे एक साथे आवता गुरुओनो आरोह एटलो विकट बने छे के त्यां पहोंच्या पछी विलंबनथी स्थिति करवी पड़े छे. ए आरोह पछी अवरोह आवे छे अने तेनो ढोळाव ओछो विकट होय छे. चढाव के ढोळाव गुरुओथी विकट बने छे तो लघुओथी ते वधारे राहतवाळो बने छे. शालिनीनो

પહેલો યતિખંડ ચાર ગુરુએ પૂરો થાય છે, પણ પછી અવરોહમાં લઘુઓનું મિશ્રણ થવાથી અવરોહ સાત અક્ષરો સુધી લંબાય છે. શિખરિણીનો આરોહ એક લઘુ ઉપરાંત પાંચ ગુરુઓથી થાય છે તો તેનો અવરોહ વધારે લઘુમિશ્રણથી અગિયાર અક્ષર સુધી જાય છે. ત્રણ જ ગુરુઓ પછી યતિ આવતી હોય એવો એક જ દાખલો પ્રહર્ષિણીનો છે. તેના ગુરુઓ ઉચ્ચારણમાં વધારે જોરદાર છે તેથી યતિ શક્ય બને છે. તેનો અવરોહ પણ લઘુમિશ્ર હોઈ દસ અક્ષર સુધી લંબાય છે. એથી ઊલટો દાખલો શાર્દૂલવિક્રીડિતનો છે, જેમાં પહેલો યતિખંડ લઘુમિશ્ર હોઈ બાર અક્ષર સુધી લંબાય છે અને બીજો યતિખંડ ગુરુબહુલ હોઈ સાત અક્ષરમાં પૂરો થાય છે. વળી કેટલાક આવા દાખલામાં એમ પણ જણાય છે કે જાણે ગુરુઓના ભરાવાની સામે સમતુલા જાળવવા યતિ પછી તરત એક લઘુબહુલ ખંડ આવે છે. મંદાક્રાન્તામાં પહેલા ચાર ગુરુઓના યતિખંડ પછી પાંચ લઘુ અને એક ગુરુનો મધ્યયતિખંડ આવે છે. શિખરિણીમાં પણ યતિ પછી પાંચ લઘુ આવે છે. સ્રગ્ધરાના પહેલા યતિખંડમાં છ ગુરુઓ આવે છે, તો તે પછીના યતિખંડમાં છ લઘુ અને એક ગુરુનો યતિખંડ આવે છે. પ્રહર્ષિણીના પહેલા યતિખંડમાં ત્રણ ગુરુ છે તો તેની પછી ચાર લઘુ આવે છે. વળી એમ પણ જણાય છે કે ચારથી વધારે ગુરુઓ લઘુની મદદ વિના ભેગા થઈ શકતા નથી. શિખરિણીમાં પાંચ ગુરુ ભેગા કરવા છે તો આદિમાં એક લઘુ આવે છે. સ્રગ્ધરામાં છ ગુરુ ભેગા કરવા છે, તો વચમાં પાંચમો લઘુ આવે છે. આ રીતે જાણે વૃત્તરચના એક સાથે આવતા બહુ ગુરુઓને સહન કરી શકતી નથી તેથી યતિ આવશ્યક બને છે.

એવી જ રીતે અમુકથી વધારે લઘુઓ ભેગા થવાથી યતિ આવશ્યક બને છે પણ ત્યાં પણ લઘુઓને અંતે ગુરુ આવે જ છે. યતિમાં વિલંબન આવશ્યક છે અને તે ગુરુ વિના શક્ય નથી, તેથી યતિ પૂર્વે હમેશાં ગુરુ આવે છે.[૭] એટલે લઘુપરંપરાને અંતે પણ ગુરુ આવ્યા પછી જ યતિ આવી શકે. જેમ ગુરુઓ માટે કહ્યું છે કે ચાર ગુરુઓ પછી યતિ આવશ્યક બને છે તેમ કહી શકીએ કે પાંચ કે વધારે લઘુ પછી ગુરુ આવી યતિ આવશ્યક બને છે. આનો પ્રસિદ્ધ દાખલો હરિણી છે. તેના પહેલા બે યતિખંડ તે મંદાક્રાન્તાના ઉલટાવેલા પહેલા બે યતિખંડો બરાબર છે, એટલે એનો પહેલો યતિખંડ લઘુબહુલ છે. તેમાં પાંચ લઘુઓ પછી ગુરુ આવી યતિ આવે છે. આ સાથે સ્રગ્ધરાનો મધ્યયતિખંડ પણ ગણાવી શકાય કારણ કે તેમાં પણ છ લઘુ પછી ગુરુ આવી યતિ આવે છે. કદાચ સૌથી પ્રબલ દાખલો માલિનીનો છે. તેમાં છ લઘુ પછી બે

---

૭. પિંગલનાં કેટલાંક વૃત્તોમાં લઘુ પછી યતિ જણાય છે તેનું નિરાકરણ આ પ્રકરણને અંતે આપેલ પરિશિષ્ટમાં કરેલું છે.

गुरु आवीने पछी यति आवे छे. शालिनी अने मालिनी बन्नेना उत्तर यति-खंडो एक ज छे. शालिनीमां चार गुरुओथी यतियोग्य आरोह थाय छे. मालिनीमां छ लघु अन बे गुरुओथी यतियोग्य आरोह थाय छे. आ उपरथी जणाशे के यतियोग्य आरोह माटे गुरुओ थोड़ा जोईए छे, लघुओ वधारे जोईए छे, जो के बंने वच्चे कोई जातनु गणितप्रमाण नथी.

आथी ऊलटी रीते जे वृत्तोमां उपर बताव्या प्रमाणे चार के वधारे गुरुओ, के, अंते एक के बे गुरुओवाळा पांच के वधारे लघुओ आवता नथी, ते वृत्तो सयतिक नथी. आगळ आवी गयेला कोई पण अयतिक वृत्तमां चार जेटलु गुरुसंपतन के पांच जेटलु लघुसंपतन आवतु नथी. आ कसोटीथी आपणे कही शकीए के पृथ्वी अयतिक वृत्त छे, पृथ्वीने घणां पिंगलो सयतिक माने छे ('रणपिंगल' पृ० ३६३) अने आपणे जेने नर्दटक कह्युं तेने पण केटलांक पिंगलो सयतिक माने छे (एजन पृ ३६५) पण आमांनी एक पण यति आवश्यक नथी. वसन्ततिलकामां पण केटलांक पिंगलो भिन्न भिन्न स्थाने यति माने छे (एजन पृ. ३३६) पण एमां यति आवश्यक नथी. आपणे ए त्रणेय वृत्तोनो न्यास फरी जोईए.

वसन्ततिलका : गागालगा ललगा ललगा लगागा
पृथ्वी : लगा ललगा लगा ललगा लगा गालगा
नर्दटक : लललगा लगा ललगा ललगा ललगा

अहीं कोई पण जगाए बेथी वधारे गुरु भेगा थता नथी, घणी जगाए तो गुरु एकलो ज आवे छे, तेम ज कोई पण जगाए चारथी वधारे लघुओ भेगा थता नथी, घणीखरी जगाए तो बे के त्रण ज लघुओ भेगा थाय छे. एटले आमां यति आवश्यक नथी. के.ह. ध्रुवे आ स्थानोनी यतिने शोभानी कही छे ते यथार्थ छे. (सा. वि. भा. १, ११५) आ ज रीते आपणे जोयु के शार्दूल-विक्रीडितमां चार जेटला गुरुओ के पांच जेटला लघुओ क्यांय सळंग आवता नथी तेथी बार अक्षर सुधीना खंडमां यति आवती नथी. बार अक्षरे यति आवे छे ते पंक्तिना लंबाण के विस्तारनी यति छे, जेने आपणे यतिनी आवश्यकतानु गौण कारण मानवु जोईए. आवी लंबाणथी आवश्यक थयेली आ एक ज यति छे. पण उपर जणावेला वसंततिलका, पृथ्वी, नर्दटकमां जे शोभानी यति आवे छे त्यां पण कारण आ लंबाणनु छे. सामान्य रीते संस्कृतमां टूकामां टूको श्लोक अनुष्टुप छे, एटले कोईने आठ अक्षरे यतिनी अपेक्षा ऊभी थाय, अने उपरनां वृत्तोमां वसंततिलका अने पृथ्वीमां आठमे ज यति छे ए सूचक छे. नर्दटकमां सातमे यति छे, तेनु कारण ए छे के यतिने माटे गुरु

आवश्यक छे, अने आठमा स्थाननी नजीकमां नजीक गुरु सातमे स्थाने छे. पण आ लंबाण अनिर्वाह्य नथी एटले त्यां यतिने आपणे आवश्यक गणता नथी. अनुष्टुपना श्लोकार्धने एकम लई आपणे सतत पठी शकीए छीए ए जोतां सोळ अक्षर सुधी अयतिक छंदो जई शके एम कही शकीए, अने आपणे जोईए छीए के अयतिक छंदो वधारेमां वधारे सत्तर अक्षरो सुधी जाय छे. साधारण पठवानी पद्धतिमां आ लंबाण क्लेशकर लागतुं नथी, सुभग लागे छे, एटले वसंततिलका पृथ्वी नर्दटकमां यति नथी ए अभिप्राय ज शास्त्रीय गणवो जोईए.

आ उपरथी आपणे कही शकीए के अनावृत्तसंधि वृत्तोमां ज्यां यति होय छे त्यां ते वृत्तना संवादनुं अविश्लेष्य अंग छे अने तेनुं स्थान स्थिर होय छे. वृत्तोमां लघुगुरुना जे क्रमथी अने चरणान्ते आवता गुरु अने पछीनी यतिथी संवाद सिद्ध थाय छे, ते ज लघु के गुरुना अमुक संख्याना संपातनथी ए संवादना एक अंग तरीके मध्ययति आवश्यक बने छे. ए ज्यां होय त्यां स्थिर होय छे. एटले केटलाक छान्दसिको जे एम माने छे के वृत्तमां जुदे जुदे स्थाने यति मूकवाथी नवा नवा छन्दो थाय छे ते छन्दना संवादना स्वरूप साथे असंगत छे. आपणे आगळ जोई गया के नर्दटकमां जुदे जुदे स्थाने यतिओ मूकीने पिंगलकारो तेना अवितथ कोकिलक वगेरे नवा छन्दो बनाववानो के निरूपवानो दावो (जुओ छ. र. पृ. ६४) करे छे ते अनाधार छे.

आपणे उपर जे चर्चा करी अने यतिने आवश्यक बनावनारी जे परि-स्थिति नक्की करी तेमां प्रथम दृष्टिए केटलाक अपवादो जेवुं देखाय छे ते हवे जोईए. आपणे जोयुं के पांच के छ लघु सळंग आवतां पछी गुरु आवी यति आवश्यक बने छे. अहीं अपरवक्त्र वृत्त एक दृष्टिए अपवाद जेवुं जणाशे. तेनी विषम पंक्तिमां एक साथे छ लघु आवे छे, छतां एना चरणमां यति आवती नथी. पण आ वृत्त अर्धसम वृत्त छे, अने एना मूळ स्वरूपमां तेनो आद्यभाग मात्रामेळी हतो तेमांथी आ परिणाम आव्युं छे एटले आ दृष्टान्त आपणा सिद्धान्तोने हानिकारक नथी. आनाथी ऊलटा प्रकारना अपवाद जेवुं रुचिरा वृत्त जणाय छे. तेमां प्रथम लगालगा आवे छे, तेमां गुरु तो बे ज छे छतां त्यां यति आवे छे. पण ए यति खरी तो प्रहर्षिणीमांथी ऊतरी आवेली यति छे. रुचिरा ए प्रहर्षिणीनी ज विकृति छे:

प्रहर्षिणी : गागागा । ललललगा लगा लगागा
रुचिरा : लगालगा । ललललगा लगालगा

प्रहर्षिणीमां त्रण गुरुओ हता तेनी मात्रा सचवाई लगालगा एवुं रूपान्तर थयुं छे अने तेथी मूळनी यति पण त्यां ऊतरी आवी छे. नहितर

रुचिरामां स्वतंत्र रीते मने यतिनी आवश्यकता जणाती नथी. रुचिरामां लगालगाथी प्रारंभ थाय छे, उपेन्द्रवज्रामां लगालगागा थी प्रारंभ थाय छे अने छतां त्यां यति नथी. तो रुचिरामां पण यति आवश्यक न होई शके. पठनमां पण मने एम ज जणाय् छे, अने तेना दृष्टान्त माटे हुं नीचेनी पंक्तिओ रजू करुं छुं:

नदी प्रवाह मलिन मेघथी थये,
विकार वारि महि न थाय सिन्धुना.

शिशुपाल वधनो १७ मो सर्ग रुचिरामां छे. तेना १८ मा श्लोकनो उत्तरार्ध:

घनांबुभिर्बहुलितनिम्नगाजलं
र्जलं न हि व्रजति विकारमंबुधेः ॥[८]

शिशुपालवध १७,१८

प्रमाणे छे. तेना अर्थने अवलंबीने उपरनी पंक्तिओ लखी छे. अहीं अर्थ-दृष्टिए भाषान्तर करवानो प्रयत्न नथी, पण उपरनी पंक्तिओमां चार अक्षर पछी यति आवती नथी तेने लीधे पठनमां विक्षेप के क्षति जणाय छे के नहीं ते परीक्षवा आ पंक्तिओ लखी छे. पहेली पंक्तिमां यतिस्थानथी प्रवा,ह एवा अने बीजी पंक्तिमां वा,रि एवा विभागो ते ते शब्दना पडे छे. मारो नम्र मत छे के यति विना छन्दप्रवाह् यथायोग्य चाले छे.

रुचिराथी जरा जुदी रीते शिखरिणी पण अपवादनुं दृष्टान्त छे. आपणे आगळ जोयु के पांच के छ लघुओ पछी गुरु आवे छे त्यारे यति आवश्यक बने छे. शिखरिणी तेमां ए रीते अपवाद छे के तेमां मध्य यति पछी पांच लघुओ अने पछी बे गुरुओ आववा छतां त्यां बीजी मध्य यति आवती नथी.

शिखरिणी: लगा गागागागा । लललललगागा ललगा

अलबत शिखरिणीना पहेला छ अक्षरो पछीना भागमां कोई पिंगल मध्य यति आपतुं नथी पण गुजरातमां जे रीते शिखरिणीनुं गान साथे पठन थाय छे तेमां यति जेवुं विलंबन स्पष्ट होय छे. आ विलंबन एक के बे रीते आवे छे. केटलाक मध्य यति पछी आवता पांच लघु पछीना बे गुरुओ पछी ए विलंबन करे छे. केटलाक ए लघुपरंपरा पछीना पहेला गुरु पछी करे छे, केटलाक विषम चरणमां पहेला गुरु पछी, अने सम चरणमां बीजा गुरु

८. अर्थ: नदीनां जळोने काळां कर्यां छे एवां मेघनां जळो वडे जलधिनुं जल विकार पामतुं नथी.

पछी करे छे, केटलाक दरेक गुरु पछी करे छे. पण आ बेमांथी एक गुरु पछी पठनमां अवश्य यति जेवूं विलंबन आवे छे एमां शंका नथी. अने अमुक अमुक सयतिक वृत्तोना बंधारण तरफ नजर करतां, पहेला के बीजा गुरु पछी यति आववाने कारण छे एम स्वीकारवुं पडे एम छे. मंदाक्रान्तामां प्रथम यति पछी पांच लघु अने एक गुरुना संधि पछी यति आवे छे. ए उपमान[१] लईए तो शिखरिणीमां ललललल्गा पछी यति आवी शके. मालिनीमां लघुपरंपरा पछी बे गुरु आवी यति आवे छे, तो ए उपमान उपरथी शिखरिणीमां पांच लघु पछीना बे गुरु पछी एटले के लललललगागा पछी यति आवी शके.

हवे आ यति संभवित होय तो शिखरिणीना प्रयोगमां पहेला गुरुए के बीजा गुरुए शब्दांत आवे छे के केम ए गवेषणनी एक प्रस्तुत दिशा गणाय. आ दृष्टिए हुं कालिदासनुं 'विक्रमोर्वशीय' अने 'अभिज्ञानशाकुन्तल' ए बे नाटको तथा भवभूतिनां 'उत्तररामचरित' तथा 'मालतीमाधव', तथा जेमां लांबे प्रवाहे शिखरिणी वहे छे एवां बे स्तोत्रो, जगन्नाथनी 'गंगालहरी', तथा 'महिम्नःस्तव' जोई गयो. तेम ज बीजां प्रास्ताविक मुक्तकोमां शिखरिणीना प्रयोगो आ दृष्टिबिंदुए जोई गयो. कालिदास शिखरिणी बहु वापरतो नथी. 'विक्रमोर्वशीय'मां मात्र बे ज शिखरिणी छे अने 'शाकुन्तल'मां आठ छे. शिखरिणी माटे भवभूति प्रसिद्ध छे. क्षेमेन्द्र सुवृत्ततिलकमां "भवभूतेः शिखरिणी निरर्गलतरंगिणी" अनर्गल तरंगवाळी भवभूतिनी शिखरिणीनो उल्लेख करे छे. (सु. ति. ३, ३३) अने कालिदासनी मंदाक्रान्ता वखाणे छे. भवभूति 'मालतीमाधव'मां २२ अने 'उत्तररामचरित'मां २९ शिखरिणी प्रयोजे छे. 'मालतीमाधव'मां २२ शिखरिणीओमां थईने कुल १४ चरणो एवां नीकळे छे जेमां बेमांथी एक्केय गुरु पछी शब्दान्त आवतो नथी. ३१ चरणोमां पहेला गुरुए शब्दान्त आवे छे, अने ४७ चरणोमां बीजा गुरुए आवे छे. एटले के बीजा गुरुए शब्दान्त आववानुं वलण प्रबल छे. 'उत्तररामचरित'मां २९ श्लोकमांथी १७ चरणोमां बेमांथी एक्केय गुरुए शब्दान्त आवतो नथी, ३६ चरणोमां पहेला गुरुए आवे छे, अने ६४ चरणोमां बीजा गुरुए आवे छे. अहीं बीजा गुरुए शब्दान्त आववानुं वलण प्रबलतर छे. पण ए करतां वधारे महत्त्वनी वस्तु ए छे के 'उत्तररामचरित'मां एवा आखा ने आखा श्लोको छे जेमां सळंग चारेय चरणोमां बीजा गुरु पछी शब्दान्त आवे छे. ४, १२; ५, १६; ५,२६ ('उत्तररामचरित', निर्णयसागर) ए एवा श्लोको छे, त्यारे बीजी तरफ चारेय चरणोमां पहेला गुरुए शब्दान्त आवतो होय एवा श्लोको

१. Analogy.

नथी. वळी जेमां छंदोरचना अने अर्थ बन्ने प्रसन्न होय एवां घणांखरां चरणोमां मने बीजा गुरुए शब्दान्त जणायो छे.

गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः।
एजन ४, ११

पुरंध्रीणां चित्तं कुसुमसुकुमारं हि भवति।
एजन ४, १२

किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरहः ।
एजन १, ३८

'शिवमहिम्नःस्तोत्र 'मां पण

न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।
शिवमहिम्नःस्तोत्र ८

एवी पंक्ति मळे छे जेमां बीजा गुरुए शब्द पूरो थाय छे. 'गंगालहरी'मां पण पहेला गुरुए अने बीजा गुरुए शब्द पूरो थयाना दाखला छे. पण पंडित जगन्नाथनो सुप्रसिद्ध श्लोकः

दिगन्ते श्रूयन्ते मदमलिनगंडाः करटिनः
करिण्यः कारुण्यास्पदमसमशीलाः खलु मृगाः॥
इदानीं लोकेऽस्मिन्ननुपमशिखानां पुनरयं
नखानां पांडित्यं प्रकटयतु कस्मिन् मृगपतिः॥
भामिनीविलास १

आखोय श्लोक बे गुरुए आवता शब्दान्तनो छे. प्रास्ताविक श्लोकोमां

जटा नेयं वेणीकृतकचकलापो न गरलं
गले कस्तूरीयं शिरसि शशिलेखा न कुसुमम् ।
इयं भूतिर्नांगे प्रियविरहजन्मा धवलिमा
पुरारातिभ्रान्त्या कुसुमशर किं मां प्रहरसि॥

श्लोक पण एवा ज शब्दान्तनो दाखलो छे. पण हुं वधारे दाखला भेगा करवा इच्छतो नथी. गुजरातीमां पण आवा दाखला छे. गया प्रकरणमां शिखरिणीना दृष्टान्तनो बलान्त कविनो श्लोक आखो उपरना ज बंधारणवाळो छे. (गत पृ. ९४) प्रो. ठाकोर साधारण रीते यतिभंगनी छूटना हिमायती छे पण तेमना शिखरिणीओमां पण मने उपरनं बन्ने स्थाने शब्दान्त आवतो मळ्यो छे. 'अर्वाक्ति' काव्यमां पहेली चार पंक्तिओमां बीजा गुरुए शब्द पूरो थाय छे,

અને તે પછીની ચાર પંક્તિઓમાં પહેલા ગુરુએ શબ્દ પૂરો થાય છે. આમાંની આઠમી પંક્તિમાં તો પિંગલમાન્ય છઠ્ઠા અક્ષર પછીની યતિ પાળી નથી, પણ લલલલલગા-એ શબ્દાન્ત આવે છે. (ભણકાર (१९१७) પૃ० ९०). શ્રી ઉમાશંકરના શિખરિણીઓમાં પણ મને આ જ દેખાય છે. તેમની 'ગંગોત્રી'ના પહેલા કાવ્ય 'બાંકા'માં પ્રથમ ચાર પંક્તિઓમાં પહેલા ગુરુએ, અને પછીની ચાર પંક્તિઓમાં બીજા ગુરુએ શબ્દાન્ત આવે છે, જો કે એકંદરે એમના જે શિખરિણીઓ મેં જોયા તેમાં પહેલા ગુરુએ શબ્દાન્ત આવવાનું વલણ મને પ્રબલતર જણાયું છે.

પણ આથી વધારે હું દાખલા લેવા ઇચ્છતો નથી. તેનું એક કારણ એ કે આ દિશા પ્રસ્તુત હોવા છતાં ગણિતથી બહુ પ્રબલ નિગમન નીકળી શકે તેમ નથી. ઉપરના ગણિતની વિરુદ્ધ એક એવી દલીલ કરાય કે એમ તો પંક્તિમાં અનેક જગાએ શબ્દાન્ત આવે છે તેમ અહીં પણ પહેલા કે બીજા ગુરુ પછી આવે, તેટલા ઉપરથી યતિને સમર્થન મળ્યું ન ગણાય. આ દલીલ સાચી છે અને એને સ્વીકારતાં એનું ગણિત એટલું બધું અટપટું થઈ જાય કે કોઈ ગણિતશાસ્ત્રી જ તેને પહોંચી શકે. પ્રશ્નના મહત્ત્વના પ્રમાણમાં એ મેહનત હું વધારે પડતી ગણું છું. પણ આટલે આવ્યા પછી આખો પ્રશ્ન વિચારી જોતાં એટલે સુધી જવાની મને જરૂર પણ લાગતી નથી.

આપણો પ્રશ્ન એ છે કે અમુક સંખ્યાના ગુરુનાં યૂથો યતિને આવશ્યક કરે છે. તેમ જ અમુક સંખ્યાના લઘુનાં ગુર્વન્ત યૂથો યતિને આવશ્યક કરે છે. મન્દાક્રાન્તામાં પહેલી મધ્ય યતિ પછી આવતું લલલલલગા યૂથ પછી યતિ આવે છે. એવું જ ગુર્વન્ત લઘુનું યૂથ શિખરિણીમાં આવે છે, છતાં યતિ કેમ નથી? આના ખુલાસામાં ઉપરની લાંબી ચર્ચા કરી છે. મારું વક્તવ્ય એ છે કે શિખરિણીના પિંગલમાન્ય મધ્ય યતિ પછી લલલલલગાગાલલલગા એવડો યતિખંડ રહે છે. આ ખંડમાં જો મંદાક્રાન્તાના ધોરણે ચાલીએ તો લલલલલગા પછી યતિ અપેક્ષિત થાય, જો માલિનીના ધોરણે ચાલીએ તો લલલ-લલગાગા પછી યતિ અપેક્ષિત થાય. બન્ને અપેક્ષાઓ બળવાન છે, એ ગુજરાતીઓ જે રીતે પઠનગાન કરે છે તે ઉપરથી સ્પષ્ટ જણાય છે. મારો ખુલાસો એ કે યતિ માટેનાં આ બે ગુરુઓની સ્પર્ધામાં ઠામુકી યતિ જ આવી ન શકી. અલબત્ત ગુજરાતી કવિતામાં પણ ઘણી પંક્તિઓમાં આ બેમાંથી એક પણ સ્થાને શબ્દાન્ત આવતો નથી. પણ એ પ્રસ્તુત નથી. એક વાર શાસ્ત્રીય પદ્ધતિએ યતિ અશક્ય ગણાયા પછી એ જ પરિણામ આવે. પણ યતિની અપેક્ષા છતાં યતિ ન આવી શકે તેના કારણ તરીકે, ગુજરાતી પઠનગાન અને બન્ને ગુરુ પછી શબ્દાન્ત આવવાના સંખ્યાબંધ દાખલાથી આપણે એ ગુરુ સ્પર્ધાને યતિના અભાવના ખુલાસા તરીકે

स्वीकारी शकीए के नहीं एटलो ज प्रश्न छे. ए दृष्टिए जोता हुं मानुं छुं आ खुलासो पूरो नहीं तो अपूर्ण पण प्रतीतिकर थशे. अलबत्त महाराष्ट्रीओ शिखरिणीओनुं ए रीते पठन नथी करता, पण खुलासानुं सूचन तो ज्यां मळे त्यांथी लेवुं जोईए, ए रीते गुजरातना पठनने यतिना अभावना खुलासा तरीके स्वीकारी शकीजे.

एक बीजी बाबत पण यतिना अभावनी विचारणामां प्रस्तुत छे. शिखरिणीमां यति पछीनी लघुपरंपरा पछी पहेले गुरुए यति मूकीए तो बाकीनो यतिखंड पांच अक्षरनो रहे, बीजे गुरुए मूकीए तो चार ज अक्षरनो रहे. स्वतंत्र यतिखंड बनवाने आ बहु टूंकी अक्षरावली छे. अत्यार सुधी जोयेला सयतिक वृत्तोमां अंत्य यतिखंड टूंकामां टूंको सात अक्षरनो छे. यति न आववामां आ वात पण कारणभूत होय.

आ प्रमाणे यतिने आवश्यक बनावतां जे कारणो कह्यां तेनुं संपूर्ण समर्थन जुदां जुदां वृत्तोनां दृष्टान्तोमां मळी रहे छे. पण ए कारणोने, कयां छे तेथी वधारे चोकस करी शकतां नथी. दाखला तरीके चार ज गुरुए यति शा माटे आवे छे, अथवा गुर्वन्त पंचलघुगुच्छ पछी ज यति शा माटे आवे छे, तेनो खुलासो करी शकता नथी. तेम ज गुरु लघु बच्चे कोई गाणितिक प्रमाण आपी शकता नथी. तेम ज मंदाक्रान्तामां मध्य यतिखंडमां पांच लघु पछी एक ज गुरुए यति आवे छे, अने मालिनीमां छ लघु पछी बे गुरुए शा माटे यति आवे छे, तेनो खुलासो करी शकता नथी. तेम ज शार्दूलविक्रीडित ओगणीश अक्षरनो केम छे अने शालिनी अगियार अक्षरनो केम तेनो खुलासो पण करी शकता नथी. तेम ज मंदाक्रान्ताना यतिखंडो ऊलटसूलट थई हरिणी वृत्त बन्युं तेम बीजा कोई वृत्तमां केम न थई शक्युं तेनो पण खुलासो करी शकता नथी. टूंकमां आपणो खुलासो कह्युं छे तेथी जरा पण आगळ जई शकतो नथी. ए खुलासानी आगळ जवा जे जे प्रश्नो आपणे करीए तेनो एक ज जवाब छे के, ए छे ते रीते ज संवाद थई शके छे, —अन्यथा नहीं. कोई प्रश्न करे, के तो आवा अधूरे अटकी जता खुलासाथी शो लाभ? तो कहेवानुं के चार गुरु अथवा पांच के वधारे लघुनुं गुर्वन्त गुच्छ यतिने आवश्यक करे छे, तेटलाथी पण, यति ए छन्दनुं अंग छे, अने ते होय त्यां स्थायी होय अने तेथी यतिखंडने वृत्तनुं एक उपांग गणवुं जोईए एटलुं चोकस थई शके छे, अने उपर गणाव्यां ते अयतिक वृत्तोमां मध्य यति आवश्यक नथी एटलुं समजाय छे. दरेक शास्त्रमां क्यांक पण अटकवुं तो पडे ज छे, तेम आ प्रश्नमां मारे अहीं अटकवुं पडे छे.

अर्वाचीन समयमां, काव्य, ललकारने अने गानने छोडी, अर्थानुसारी पठन तरफ वळे छे अने तेथी तेने आ यतिनुं बंधन खूंचे छे. घणा कविओए आ यतिने अमान्य करी काव्यो लख्यां छे. आ नवा प्रयोगने हुं स्वच्छन्द नथी गणतो. अने तेथी में कहेला यतिना स्वरूपनी साथे ए प्रयोगोने घटाववा रहे छे.

अहीं सौथी प्रथम ए कहेवानुं के चरणान्त यति तो पळाय ए ज इष्ट छे. चरणान्त यतिस्थान आगळ शब्दनो कोई भाग, शब्दनो प्रत्यय पण कपाय ए शोभतुं नथी. छतां चरणान्त यतिथी पण प्रत्ययो कपायाना दाखला छे. आपणे ए दाखला जोईए. स्वाभाविक रीते ज तेमां सौथी प्रथम यतिभंगना प्रथम शास्त्रीय हिमायती[१०] गणाता प्रो. ठाकोरना ज दाखला आवे.

जरठ शिष्टता हिंदनी
फरी नवजुवान थाय, मुज देखनी आर्यता
तणूं स्वपन ए अमोल :
'राज्याभिषेकनी रातनुं रेखाचित्र', भणकार पृ. १९७

ए ज काव्यमां पृ. २०३ अने २०९ उपर 'तणी' अने 'तणां' मूळ शब्दथी कपाई पछीनी पंक्तिमां प्रारंभमां आवे छे. अलबत्त 'तणुं' 'केरुं' ए प्रत्ययो छूटा शब्दो जेवा छे, एटले ए कपातां अर्थने एटलो बधो आघात न लागे छतां आने हुं इष्ट गणतो नथी. 'आर्यता' आगळ चरणान्ते, गमे तेटला टूंका विलंबनथी पण, त्यां शब्द पूरो थवानी प्रतीति थाय छे, अने पछी प्रत्यय

१०. प्रो. ठाकोर यतिभंगना प्रथम शास्त्रीय हिमायती गणाय छे, पण तेमना ज समकालीन भट्ट राजाराम रामशंकरे श्री हर्षदेवप्रणीत 'नागानन्द' नाटकनुं गुजराती भाषान्तर कर्युं छे तेमां यतिभंगना हक्कनो दावो नीचेना शब्दोमां कर्यो छे: "पद्यभागमां बहुधा अनुप्रासनो नियम राख्यो ज नथी. तेम ज नथी गण्यो यतिभंग के प्रक्रमभंगनो पण लेश बाध. अर्थनो अपहार करी एवी मिथ्या वस्तुनो आग्रह धरवो ए केवल विवेकशून्यनुं काम. 'कवि' अथवा एथी पण उच्च उपनामथी संज्ञात पुरुषोए अनुप्रास अने बीजी एवी ज व्यर्थ शोभाना लोभथी नवा अर्थशून्य शब्दो उत्पन्न करवा — समस्त अर्थने दूषित करवो — ए सघळुं जोईने कियो भाषाभक्त गुजराती गृहस्थ खिन्न थया विना रहेशे? वळी एक प्रसिद्ध ग्रंथकार लखे छे के 'यतिप्रक्रमभंगांश्च काव्ये न गणयेत्कविः।' रांदेर, माघ शुद्ध १५. संवत १९४६." (उपरना संस्कृत श्लोकनुं मूळ मने हजी मळ्युं नथी.) पुस्तक दुर्लभ होवाथी लांबुं अवतरण मूक्युं छे.

आवतां अन्वयव्यापार उपर अनपेक्षित ताण आवे छे, छतां आ यतिभंगने क्षम्य गणी शकाय. आवा दाखला स्नेहरश्मिना 'पनघट' संग्रहमां मळे छे ('वरदान,' पनघट. पृ. १२३), त्यां पण वृत्त पृथ्वी छे अने कपायेलो प्रत्यय 'तणो' छे. 'केरुं' प्रत्यय पृथ्वीमां ए स्थाने आववो शक्य नथी, ते तेमना 'पूर्णिमा' काव्यमां मंदाक्रान्तामां आवे छे (एजन पृ. ५९). सुन्दरम्मां पण आवा प्रयोगो जणाय छे (काव्यमंगला पृ. २५, २६). पण श्री उमाशंकरमां आ प्रकारनो यतिभंग मने मळ्यो नथी. अने ए पण सावे कहेवुं जोईए के आवा यतिभंगो वृत्तना प्रवाही प्रयोग करतां श्लोकबद्ध रचनामां ओछा क्षम्य थाय.

आवा यतिभंगोना अनुष्टुपमां थता प्रयोगो विशे मारे एटलुं विशेष कहेवानुं के ए श्लोकार्धनी अंदर क्षम्य गणाय पण श्लोकार्ध बहार क्षम्य न गणी शकाय. हुं आगळ (गत पृ. १४२) कही गयो तेम अनुष्टुप विलक्षण होवा छतां एक रीते ए अर्धसम वृत्तने खास मळतो छे. एनी अर्धनी यति वधारे दृढ छे, अने त्यां आ प्रमाणे प्रत्यय कपाय ए निर्वाह्य नथी. श्लोकार्धनी अंदर थयेला यतिभंगनुं दृष्टान्त प्रो. ठाकोरनुं:—

प्रथमे ऋतुवैचित्र्य–तणूं विज्ञान छे लुलूं,

'दुष्काळ', भणकार पृ. १३०

एवुं ज दृष्टान्त प्रो. डोलरराय मांकडनुं—

परंतु वात ए लीलातणी ना कें'बी कोईने

भगवाननी लीला. पृ. ११

पण एमनो ज श्लोकार्ध बहार जता प्रत्ययनो दाखलो—

संसारे नहीं क्यांये भगवान तणी लिला
तणां ज्ञान समुं ज्ञान." तो ए लीला हवे लिबी
जोईने में खरेखरी?

एजन पृ. ५१

पठनमां 'लिला' अने 'तणां'नुं अनुसंधान दुष्कर बने छे. आथी पण वधारे खराब दृष्टान्त हुं प्रो. ठाकोरना नीचेना दाखलाने गणुं छुं:

थाय ते करि लेजे तूं दैव, त्हारी मजा कजा
—थी अस्पर्श्य जनेतानी सुवासर्गक्षमा दृग.

'श्री पूजालालने : कविमातानो दृग', भणकार पृ. ३१२

आने वधारे खराब गणुं छुं, कारण के हजीये 'केरुं' 'तणुं', प्रत्ययो होवा छतां, शब्दथी छूटा रहे छे, हिंदीमां तो छठ्ठीनो प्रत्यय जुदो लखाय पण छे, पण 'थी' जेवो प्रत्यय तो शब्दथी आटलो दूर छूटो न ज पडी शके, एमां जुदा शब्दनो आभास पण नथी, अने वळी अहीं तो छूटो पडीने जुदा श्लोकार्धमां चाल्यो जाय छे. आने हुं अनिर्वाह्य यतिभंग गणुं छुं, जो के उमेरवुं जोईए के पठनवेग वधतां, विशेष पठनवेगनी टेव पडतां, आवा प्रयोगो पण निर्वाह्य बनता जाय.

हवे हुं मध्य यतिना स्थाने थता यतिभंगनो विषय लउं छुं. यतिनी घणीखरी चर्चा मध्य यति विशेनी ज होय छे. आ चर्चाने अंगे अनेक प्रश्नो उपस्थित थाय छे. तेमां प्रथम हुं एटलो ज प्रश्न लउं के यतिथी, एटले मध्ययतिथी, शब्दनो प्रत्यय जुदो पडी जाय तो ए दोष गणाय? खरी रीते आ प्रश्ननी लांबी चर्चा करवानी जरूर रहेती नथी, कारण के चरणान्त यतिथी छूटा शब्दो जेवा प्रत्ययो कपाय तेने आपणे क्षम्य गण्युं छे, अनुष्टुपना एक ज अर्धमां चरणान्त यतिथी स्वतंत्र शब्द न होय एवो प्रत्यय कपाय ते पण हुं पोते निर्वाह्य गणवा तैयार छुं, तो आ मध्ययति तो चरणान्त करतां टूंकी अने निर्बल छे. अने आनो एक दाखलो दलपतराममांथी मळे छे, जेमणे यतिचर्चा करी नथी, पण जेमनी छन्दःशुद्धिनी बुद्धि आपणे सारी गणी शकीए. दृष्टान्त :

तरुण जुवति जोडे, डोशि विस्तारवाळी,
परम हरख पामे, पुत्रपौत्रादि भाळी
तरुण सुभट टोळी—मां मळी एक ठामे
रणविजयि शुरो ते,[11] केम संकोच पामे?

द० का० भा० २, पृ० १३५

अर्वाचीन युगमां आ प्रत्ययविश्लेषनुं आटलुं जूनुं दृष्टान्त मळवाथी आथी वधारे चर्चा करतो नथी. अने छतां हजो आ नियमने अजमायशी ज गणवो. यतिभंगना बधा दाखला जोई गया पछी आपणे छेवटना नियमो करी शकीए.

बीजो प्रश्न ए छे के आ मध्ययतिओना बलमां कंई तारतम्य छे के केम? प्रो. ठाकोर, यतिओमां केटलीक वधारे दृढ अने केटलीक अछडती ज माने छे. (भणकार. आ. १. पृ. २२) अहीं हुं स्वीकारेली यतिओनी ज

११. छंदनी दृष्टिए अहीं एक गुरु खूटतो हतो तेथी पाठमां में 'ते' उमेर्यो छे. छापनी भूल हशे एम मानुं छुं.

वात करुं छुं. केटलाक अहीं स्वीकारेली यतिओ सिवाय बीजी यतिओ माने छे, जेमांनी पृथ्वी, नर्दटक, वसंततिलकानी यतिओ विशे हमणां ज हुं कही गयो; पटवर्धन इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा बन्नेमां पांचमे अक्षरे यति जेवुं माने छे. (छं. र. पृ. १११) ए यतिओनी वात अहीं नथी. अहीं तो सर्वमान्य गणायेली में सयतिक वृत्तोमां गणावेली यतिओनी ज वात छे. आ यतिओमां प्रथम दर्शने एटलुं तो लागे छे के केटलीक यतिओमां यतिभंग आघातकारक नथी लागतो, निर्वाह्य लागे छे. जेम के स्नेहरश्मिए 'पूर्णिमा' काव्यना मंदाक्रान्ता वृत्तमां मात्र एक ज जगाए प्रथम यतिनो भंग करेलो छे:

मंदाक्रान्ता : आछुं कं अ–न्तर पट चिरा–ई जतां हैत केरुं.

'पूर्णिमा', पनघट पृ. ६३

पण ए २२१ पंक्तिना काव्यनां बीजा यतिस्थाने १८ यतिभंगो करेला छे, जेमांनो एक उपरनी पंक्तिमां पण छे. एटले यतिओमां कांई तारतम्य तो मानवुं पडे एम छे. पण आ उपरथी एनो खुलासो शो करवो? के पहेली करतां बीजी यति वधारे निर्बल छे, के गुरु अक्षरो पछीनी यति, लघुअक्षरो पछीनी यति करतां वधारे दृढ छे, के कंई बीजुं? बे यतिवाळां वृत्तो विशे एम कहो तो पछी एक ज यतिवाळां वृत्तो विशे शुं कहेवुं? एटले आ संबंधी पण विशेष चर्चानी जरूर छे.

हजी एक बीजी दृष्टिए आ प्रश्न विचारवा जेवो छे. संस्कृत यतिचर्चामां कहेलुं छे के मध्ययति आगळ शब्दने तोडी शकाय पण ते एवी रीते के शब्दनो यतिभग्न थयेलो कोई पण टुकडो बे अक्षरथी टूंको न होवो जोईए. संस्कृत दृष्टान्तमां आ रीते 'चामीकर' शब्द वचमांथी तूटतो हतो. आ यतिभंग अनिर्वाह्य नथी थतो ए खरुं पण गुजरातीमां यतिभंगथी एक ज अक्षर कपायो होय एवां अनेक दृष्टान्तो छे, अने त्यां त्यां सर्वत्र यतिभंग दोषरूप नथी लागतो. एटले यतिभंगने निर्दोष करनारां कारणो हजी शोधवां रहे छे. तेने माटे यतिभंगनां विविध दृष्टान्तो भेगां करी तेनो अभ्यास करवो जोईए. अने उपरनी चर्चामां यतिभंगना जे जे अजमायशी नियमो आपणे जोया अने दृष्टिमां राखीने दृष्टान्तो पसंद करवां जोईए. आ नीचे हुं जेने लाक्षणिक गणी शकाय एवां अनेक दृष्टान्तो भेगां करुं छुं. दाखलामां दरेक स्थळे छंदनुं नाम आपुं छुं. अभग्न यति, पूर्व पेठे दंडथी दर्शावुं छुं अने यतिभंग, शब्दमां टूंकी आडी लीटीथी बतावुं छुं:

(१) शार्दूल० : नादो घोर चडे नभे, गडगडा–टे विश्व मूर्छा लहे,

'सत्यं शिवं सुन्दरम्', काव्यमंगला पृ. २८

(२) मन्दाक्रान्ता : धीमा मीठा । करथी सड पं-पाळनारा समीरे
'हुं तो बाबा, . .' आलबेल पृ. ९५

(३) स्रग्धरा : वीणानां गान थंभे । निजनिज व्यवहा–रो तर्जी विश्व देखे
'साफल्यटाणुं', काव्यमंगला, पृ० २७

(४) स्रग्धरा : कूदी अद्री अहींथी । तहिं जति वणझा-रो दिठी, ने कतारो
'वणझार', निशीथ पृ० १३०

(५) स्रग्धरा : आत्माने एक मारा । जिवन भर वफा-दार नित्ये रहीने,
'मागुं', अभिसार पृ० ३

(६) स्रग्धरा : जाते ओछी ज ? ए तो । प्रतिजन उर अं-कायलूं वावलूं छे!
'प्राणवंता पूर्वजन,' वसुधा पृ० ११०

(७) मंदाक्रान्ता : हांक्ये राखू । वदन पर गं–भीरता धारी गाणुं
'केदी अने कवन', आलबेल पृ० ८३

(८) शार्दूल० : पाये छे मदिरा मने कंइ अटक्–चाळी भली गोरियो
'सौंदर्य,' क्लान्त कवि पृ० ८२

(९) मंदाक्रान्ता : आभासोथी । थतुं युगल उन्-मत्त ए स्नेहवाल
'चक्रवाक मिथुन', पूर्वालाप, पृ० ३३

(१०) मंदाक्रान्ता : खोवावानूं । नव जननि उत्-संगमां क्यांय स्थान !
'हुं तो, बाबा . . .', आलबेल पृ० ९५

(११) मंदाक्रान्ता : आदर्शोमां । अपरिचित सौं–दर्यना सरूवसोने
'क्षमायाचना – खमासणुं', एजन पृ० ७७

(१२) मंदाक्रान्ता : क्यांथी ये को । जिवतर कटो– री लईने पधारी
'आरजू,' निशीथ पृ० ३६

(१३) शिखरिणी : अने आप्यूं त्यां अं–जलि जलमहींथी न उंचकी
'एक तरतुं फूल' एजन पृ० १६२

(१४) शिखरिणी : कलेजां भूख्या दा–नवतणि क्षुधाने शमववा
'लढे', वसुधा पृ० ७४

(१५) स्रग्धरा : ओ त्यां बेठूं लपी चं–डुल गुल पर जो । वाणि मीठी लवन्तुं ;
'वनमां एक प्रभात', क. के. पृ० २

(१६) मंदाक्रान्ता : जोतां आजे । कंइ कंइ प्रसं–गो फरीने रसाळा

. . . . . .

लेखे मोटा । तदपि नव हैं–ये वसे लेश भीती
'प्रीतिना स्वातन्त्र्यहेला ।' भणकार पृ. २९९

(१७) स्रग्धरा: गद्यात्मा गुर्जरीनो । प्रथम प्रवर रू–पे ज आविष्कार्यो तें,
'प्राणवंता पूर्वजने' वसुधा पृ० ११०

(१८) शार्दूल०: ते श्यामा अलकावली सघन कुं–जे रम्य गुंजारवे
'सौंदर्य', क्लान्त कवि, पृ० ८१

(१९) मंदाक्रान्ता: त्यां सूतेलो । लवूं नवल अ–र्था अनायास छंद
'झणकारा', झणकार (१९१७) पृ० २

(२०) मंदाक्रान्ता: पुष्पे पाने । विनलहिममो–ती सरे तेम छानी
एजन

(२१) स्रग्धरा: आळोटी आयखूं आ–खुं रुदनपड्घा। सांभळी म्हालवानुं
'जलसो जोया पछी', धरित्री, पृ० ५७

(२२) हरिणी: प्रहर पण आ–जे वीते ते । ज एक ज अंतनो
'रतिने प्रार्थना', पूर्वालाप, पृ० ४९

(२३) शिखरिणी: शको प्होंची क्यारे । य नहि, तम साची जरुर त्यां.
'शाने ?' आराधना पृ० ४१

(२४) मंदाक्रान्ता: जे बुद्धीनी । सकळदरशी–तानि राखी खुमारी
'समर्पण' आलबेल पृ० ८५

(२५) मंदाक्रान्ता: व्याघोमां आ–श्रमहरिणि शी । एक त्यारे कळाचो
'एक पळ', आलबेल पृ० ७९

(२६) शालिनी: पी जाणे हा–लाहलो होठथी जे
हैये तेणे। अन्नतो छे पिवानां
उमाशंकर. 'संस्कृति' नवेम्बर १९४८ पृ० ४११

(२७) शालिनी: वाणीना मा–हात्म्यथी ना अजाण
. . . .
ने तो ये हैं–यां तणो एक बन्ध
सुंदरजी गो. बेटाई. 'संस्कृति.' नवेंबर १९४८ पृ० ४३२

(२८) हरिणी: शशिमणिशिला । भासे आ, ते । ज जे पर बेसिने,
मुखधवल निः–श्वासोथी वा–म हस्त विषे मुकी,
कुपित थइने । रीसावी, में । विलंब कर्या थकी,
रडति रिस छां–डीने, में जो–इ स्वप्न विषे प्रिया.
नागानन्द नाटकनुं गुजराती भाषांतर पृ० २९

(२९) हरिणी : दिनकरकर । स्पर्शे जेनी । द्युती परिपाटला,
दशनकिरणो । शोभे जाणे । सुवासित केशर,
वदन तव भा–से कान्ते, प–द्म जेवुं बधी रिते,
अलि न रत दे–खूं एके के–म तद्रसपानमां ?
एजन पृ० ४६

(३०) मंदाक्रान्ता : घेर्युं आका–श सकल विमा–नो तणां वृंदथी आ,
वर्षाकाले। ज्यम दिन दिसे,। श्याम छे सूर्य तेम.
युद्धार्थे सि–द्ध सकल जुए । वाट आज्ञा तणी आ,
मानो नक्की। क्षय रिपुतणो। क्षेमना स्वीय राज्ये.
एजन पृ० ४७

चर्चा शरु करतां पहेलां जरा पुनरुक्तिनो दोष वहोरीने पण एटलुं कहुं के यतिभंग दोष क्यारे न गणाय के ज्यारे यतिभग्न शब्दना टुकडानुं समग्रताए आकलन करवामां यति विघ्नरूप न थाय त्यारे. बधा यतिभंगोमां आपणे ए जोवानुं के यति क्यारे विघ्नरूप थाय छे अने क्यारे नथी थती.

प्राचीन छान्दसिको कहे छे के तूटेला शब्दनो दरेक टुकडो बे अक्षरथी नानो न होय त्यारे यतिभंग क्लेशकर लागतो नथी, अने ए खरुं छे. पण उपरनां यतिभंगनां दृष्टान्तोमां दरेक जगाए यतिभग्न टुकडा बे के वधारे अक्षरना नथी. खरी रीते जोतां बब्बे के वधारे अक्षरोना टुकडा बहु विरल छे. (५) मां 'वफा – दार', (८) मां 'अटक् — चाळी' अने (२४) मां 'सकळदरशी – तानि' एटला ज छे. बाकी घणां दृष्टान्तोमां चार के वधारे अक्षरोना शब्दो यतिभग्न थया छे त्यां पण एक ज अक्षर कपायानां दृष्टान्तो छे. (१) मां 'गडगडा – टे', (२) मां 'धं – पाळनारा' '(३) मां 'व्यवहा – रो', (४) मां 'वणज्ञा – रो' (६) मां 'अं – कायलूं' वगेरे. अने आमांनुं कोई दृष्टान्त दोषवाळुं नथी. आ उपरथी कदाच एम लागे के यति उपरनो शब्द जेम लांबो तेम यतिभंग ओछो क्लेशकर नीवडे, पण एम पण नथी. (९) (१२) (१३) (१५) (१६) वगेरेमां यतिभग्न शब्द त्रण अक्षरनो छे, अने (१६) (१७) (१८) (१९) वगेरे दृष्टान्तो तो बे ज अक्षरना शब्दभंगनां छे, एटले यतिभंगना क्लेशकरत्वने यति उपरना शब्दना अक्षरोनी संख्या साथे संबंध नथी. त्यारे हवे आपणे क्लेशकर यतिभंगनुं कोई दृष्टान्त आ दृष्टिथी परीक्षा करवा माटे लई जोईए. (२१)मुं दृष्टान्त एवुं छे.

स्रग्धरा : आळोटीं आयखूं आ–खुं रुदन पडघा । सांभळी म्हालवानुं.

अहीं 'आखु' शब्दनो 'खु' यतिथी कपाई बीजा यतिखंडमां चाल्यो जाय छे अने त्यां 'आखु' शब्दना आकलनमां यति विघ्नरूप थाय छे. आनुं कारण वारंवार पठन करी जोतां जणाशे के यति पछी बाकी रहेलो लघु अक्षर 'खु' बीजा यतिखंडना प्रवाहमां एटला वेगथी तणाई जाय छे के पूर्वना अक्षर साथे तेनुं अनुसंधान नथी थई शकतुं, 'खु रुदन पडघा' एम एक अक्षरपिंड संभळाय छे; अलबत ए अक्षरपिंडमां 'खु रुदन'थी कोई शब्द बनतो नथी एटले आपणे पछी 'खु'नुं अनुसंधान आगला अक्षर साथे करी जोई, 'आखु' शब्द घटावी लईए छीए, पण ए व्यापार सरल रहेतो नथी, आकलनव्यापार आगळ जई विघ्न साथे अथडाईने प्रतिघात पामेलो होई क्लेशकर नीवडे छे. आ क्लेश 'आखु' शब्द बे ज अक्षरनो छे माटे थाय छे एम नथी. हुं नीचे एक दृष्टान्त बनावी मूकुं छुं:

मंदाक्रान्ता: ऊभो प्राका — र उपर पछी। राजवी शस्त्रहीन

अहीं 'प्राका–र' शब्द त्रण अक्षरनो छे, छतां आगळना दृष्टान्तनी पेठे ज यतिथी कपायेलो लघु अक्षर 'र' छन्दना उत्तरवेगमां तणाई, पूर्वाक्षरो साथे अनुसंधान पामी शकतो नथी. हजु एक वधारे दृष्टान्त वधारे अक्षरोना शब्दनुं लई जोईए:

मंदाक्रान्ता: साहित्याका–श महिं न लसे। आवुं नक्षत्र बीजुं.

अहीं पण कपाईने जुदो पडेलो एकलो लघु अक्षर 'श' पूर्वाक्षरो साथे सरल अने अनायास अनुसंधान पामी शकतो नथी.

अहीं एम लागे के मंदाक्रान्तामां बीजा यतिखंडना प्रारंभमां लांबी लघुधारा छे तेथी प्रवाहनो वेग वधारे त्वरित होवाथी छूटो पडेलो लघु तेमां तणाई जाय छे. पण एटली लांबी लघुपरम्परा न होय त्यां पण एकलो लघु टकी शकतो नथी. आपणे लीधेलां दृष्टान्तोमां (२८) नी बीजी चोथी पंक्ति अहीं लउं छुं:

हरिणी: मुखचल निः–श्वासोथी वा–म हस्त विषे मुकी
रडति रिस छां–डीने मैं जो–इ स्वप्न विषे प्रिया.

दरेक लीटीमां बन्ने यतिस्थानोमां यतिभंग करेलो छे. तेमां पहेले यतिस्थाने थयेला यतिभंगो सुनिर्वाह्य छे, पण आपणे अहीं तेनी साथे संबंध नथी. पछीना यतिस्थाने यति परना शब्दनो अंत्य लघु यतिथी कपाई छूटो पडचो छे. अने ए पण अनायास अनुसंधान मेळवी शकतो नथी, जो के हरिणीना ए यतिखंडमां लघुपरंपरा नथी. ए यतिखंडनो न्यास छे लगा ललगा लगा. क्यांय

लघुनी लांबी परंपरा नथी. एकेक बब्बे अक्षरे गुरु आवे छे, अने छतां लघु अक्षर यति पूर्वना अक्षर साथे सहेलाईथी अनुसंधान मेळवी शकतो नथी. एटले अहीं एक ज वात देखाय छे के यतिथी कपायेला लघु अक्षरमां पूर्वाक्षर साथे अनुसंधान मेळववानी शक्ति रहेती नथी. पण 'चामी–कर' वाळुं दृष्टान्त जोतां आपणे कहेवुं जोईए के जे सामर्थ्य एक लघुमां नथी, ते बेमां छे. अने उपर लीधेलां दृष्टान्तोमां ज्यां ज्यां यति पछी लघुनुं स्थान आवे छे त्यां त्यां बे लघुओ ज नजरे पडे छे. (१५) स्रग्धरा छे तेमां 'चं–डुल' पहेला यतिस्थाने भग्न थाय छे, अने यति पछी शब्दना बे लघुओ आववाथी अक्षरोनुं अनुसंधान अनायास थाय छे. मंदाक्रान्ता अने स्रग्धरानी पेठे ज शिखरिणीमां पण यति पछी लघुपरंपरा आवे छे, त्यां पण दृष्टान्त (१३) (१४) मां 'अं–जलि' अने 'दा – नव' बन्नेमां यति पछी बे लघु आववाथी यतिभंग निर्वाह्य बने छे. अने तेथी ऊलटी रीते दृष्टान्त (२८)ना हरिणीमां अने (३०)ना मंदाक्रान्तामां अनेक जगाए यतिथी एकलो एक लघु अक्षर कपाय छे अने त्यां यतिभंग क्लेशकर बने छे.

हवे यतिभंगना बीजा स्वरूपनो विचार करीए. यति पछी गुरु अक्षरनुं स्थान आवतुं होय त्यां शुं? जवाब सहेलो छे, के यति पछी गुरु आवे तो यतिभंग कदी क्लेशकर बनतो नथी. मंदाक्रान्ता अने स्रग्धरामां त्रीजा यतिखंडना आदिमां प्रथम स्थान गुरुनुं छे एटले ए स्थाने यतिभंग कदी क्लेशकर थतो नथी. आपणे यतिभंगनी प्राथमिक चर्चामां जोयुं हतुं के मंदाक्रान्तामां घणे भागे बीजा यतिस्थाने ज यतिभंगो थाय छे, (२) (३) (४) (५) (६) (७) ए बधां एनां ज दृष्टान्तो छे; अने हवे तेनुं कारण आपणे आपी शकीए के ए स्थाने उत्तर यतिखंडमां प्रथम गुरु छे एटले यतिभंग निर्वाह्य बने छे. बे ज अक्षरनो शब्द पण त्यां यतिभग्न थतां क्लेशकर थतो नथी. (१६)मां 'है–ये' (१७)मां 'रू–पे' बब्बे ज अक्षरोना शब्दो छे, प्राचीन पिंगलकारोना बब्बे अक्षरोना टुकडानी आवश्यकताने अहीं जरा पण समर्थन मळतुं नथी अने छतां यतिभंग क्लेशकर थतो नथी. आ रीते आपणे कही शकीए के शालिनी मालिनी अने शार्दूलविक्रीडितमां यतिभंग थाय ज नहीं, कारण के ए छंदोनी यति पछी तरत गुरु आवे छे. (१८) ए शार्दूलविक्रीडितनुं अने (२७) शालिनीनुं दृष्टान्त छे. आपणे आगळ जोयुं के स्रग्धरा : 'आळोटी आयखूं आ – खुं रुदन पडघा । सांभळी म्हालवानुं' । आमां 'आ – खुं' नो 'खुं' लघु कपातां यतिभंग सदोष प्रतीत थाय छे, ए ज 'खुं'ने गुरु करी यतिभग्न करतां यतिभंग क्लेशकर जणाशे नहीं : शालिनी : 'सेवामां आ – खूं

समर्प्यूं ज आयू.' अहीं यतिभंग नथी शके छे. आ उपरथी प्राचीन पिंगलकारोना नियममां फेरफार करी आपणे कही शकीए के यति पछी शब्दनो ओछामां ओछी बे मात्रा — बे लघुरूपे के एक गुरुरूपे — आवे तो यतिभंग क्लेशकर थतो नथी.

हजी एक प्रश्न रहे छे : प्राचीन पिंगलकारोए कह्यु छे के यतिनी पूर्वनो अने पछीनो एम बन्ने टुकडा ओछामां ओछा बे अक्षरना जोईए. आपणे अत्यार सुधी पूर्वना टुकडा विशे कशु कह्यु नथी; अने एने विशे झाझु कहेवानी जरूर पण नथी. कारण के एवां अनेक दृष्टान्तो आपणे यतिभंगनिर्वाहनां जोयां जेमां यति पूर्वे एक ज अक्षर हतो. तो बीजो प्रश्न थाय छे: यति पूर्वनो ए एक ज अक्षर गुरु जोईए के लघु चाले? जवाब ए छे के वृत्तोमां एटले अनावृत्त संधिवृत्तोमां यति हमेशां गुरु अक्षर पछी ज आवे छे. एटले लघुनो प्रश्न ज उपस्थित थतो नथी, उपरनो नियम कायम रहे छे. यतिभंगनी प्रास्ताविक चर्चामां में एक अजमायशी नियम तरीके कह्यु छे के गुजरातीमां शब्दनो विभक्ति प्रत्यय यतिथी कपाय तो दुष्ट प्रयोग थतो नथी, अने ते माटे दलपतरामना श्लोकनु दृष्टान्त आप्युं. पण आ प्रत्यय संबंधी नियम पण में उपर आप्यो ते बे मात्राना नियमनी मर्यादामां ज साचो छे. गुजराती नामने लागता प्रत्यय — ए, ने, थी, नुं,[१२] मां बधा ज गुरु छे एटले एना कपावाथी यतिभंग क्लेशकर थाय नहीं. पण आमांना ज 'नु' 'नी' 'थी' काव्यनी छूटथी लघु पण थई शके अने त्यारे यतिभंग क्लेशकर थाय ज. एवां दृष्टान्तो मारा ध्यानमां नथी; पण आपणे एवु एक दृष्टान्त रचवा प्रयत्न करीए. कलापीनी एक पंक्ति नीचे प्रमाणे छे:

शिखरिणी : झुलन्तां वृक्षोथी । अमर रसनां बिन्दु झरशे

आपणे 'थी'ने यतिनी पेले पार लई जईए.

झुलन्तां आ वृक्षो – थि मधु रसनां बिंदु झरशे.

यति पार गयेलो लघु प्रत्यय शोभतो नथी. कान उपर 'थिमधु' एक पिंड संभळाय छे अने 'थि' नु अनुसंधान निर्विघ्न थतु नथी. एटले प्रत्ययो यति पार जवानो नियम पण जुदो करवानी जरूर रहेती नथी.

संस्कृतमां यति पूर्वे सप्रत्यय शब्द पूरो थवो जोईए एवो नियम हतो, एटले के (संधिनी अमुक आवश्यकता सिवाय) प्रत्यय कपावाथी पण यतिभंगनो प्रसंग ऊभो थतो हतो, तेवो ज अन्य शब्द साथे नित्य संबंधथी

१२. 'नुं' लखाय छे ह्रस्व पण उच्चारमां ए गुरु ज छे.

जोडायेलो बीजो शब्द पण यतिथी छूटो पाडी शकातो नहीं, जेवो के 'च'. (जुओ गत पृ. १०१) गुजरातीमां 'च' ना अर्थनो कोई शब्द एवी रीते बीजा शब्दने वळगेलो होतो नथी पण 'य' अने 'ज' अन्य शब्दने वळगेला होय छे, अने ते लघु होई यतिथी जुदा पडे त्यारे यतिभंग थाय छे. उपरनां दृष्टान्तोमां (२३) अने (२२) ए प्रकारनां छे.

शिखरिणी : शको प्होंची क्यारे। य नहि, तम साची जरुर त्यां.

अर्थ एवो छे के 'तमारी साची जरूर होय त्यां तमे क्यारेय पहोंची शकता नथी'. 'क्यारे' स्वतंत्र शब्द छे ए खरुं, पण अहीं 'य' तेनी साथे वळगेलो छे. अने 'य' पोताना संबंधी शब्द साथे एटलो बधो दृढबद्ध थाय छे के अमुक अमुक प्रसंगे तो शब्दनो प्रत्यय पण आ 'य' पछी लागे छे, जेम के "घणायने आम लागतुं हवे" तेमां 'घणायने'. दृष्टान्त (२२)मां ए ज रीते 'ज' कपाय छे, अने यतिभंग थाय छे.

हरिणी : प्रहर पण आ–जे बीते ते । ज एक ज अंतनो

अर्थ एवो छे के 'आजे अंतनो प्रहर बीते ते ज बलवन्तना जन्मनो पण छे.' 'ते ज' मां 'ज' 'ते' साथे अविश्लेष्य संबंध राखनारो छे अने ओ 'ज', 'ते'थी कपातां, यतिभंगनो दोष थाय छे — अलबत लघु छे माटे. आ पंक्ति कान्तनी छे अने कान्तनी छन्दोबुद्धि बहु ज सूक्ष्म अने अवाच्य छे, छतां अहीं एमणे आवी क्लिष्ट पंक्ति लखी छे. आ पंक्तिमां पहेला यतिस्थाने आवतो 'आ–जे' शब्द पण यतिभग्न छे. पण उपर कहेला नियम प्रमाणे, कपायेलो 'जे' गुरु छे एटले ए रीते ए भंग दोषपात्र नथी. छतां एटलुं कहेवुं जोईए के अहीं यतिथी छूटा पडता अक्षरो 'आ' अने 'जे' बन्ने स्वतंत्र शब्दोनी भ्रान्ति करावे छे, अने ओ पण यतिभंगमां ध्यानमां राखवा जेवुं छे. आपणे कही शकीए के शब्द यतिभग्न थतां एना टुकडाओथी अन्य शब्द के शब्दोनी भ्रांति न थाय ए इष्ट छे. दृष्टान्त (२०)मां "विमल हिममो–ती सरे तेम छानी" ए खंडोमां त्रीजा यतिखंडमां 'तीसरे' जेवुं उच्चारण कानने अथडाय छे अने ए विलक्षण लागे छे. सद्‌गत ठाकोरे एमनां नवां संस्करणोमां आ पंक्ति बदली छे, जो के उपरना कारणे ज के कोई बीजा, ए हुं जाणतो नथी. अने आनी ज साथे कहेवा जेवुं बीजुं ए छे के यतिभंगथी कर्णकठोर उच्चारण न थवुं जोईए.

दृष्टान्त (३०) : 'युद्धार्थे सि–द्ध सकल जुए। वाट आज्ञातणी आ' उपरनी पंक्तिमां 'द्धसकल' साथे बोलाय छे ते कर्णकटु लागे छे. एवा

प्रयोगो टाळवा जोईए. अने छेवटे ए कहेवुं जोईए के यतिभंग गमे तेम तोय निर्वाह्य वस्तु छे, ए हकनी नथी, एटले एक ज पंक्तिमां बने त्यां सुधी वधारे यतिभंगो न आवे, एक ज श्लोकमां पण घणा यतिभंगो न आवे तो सारुं.

ते सिवाय ए पण ध्यानमां राखवा जेवुं छे के यतिभंगमां शब्दना पूर्व टुकडाने उत्तर टुकडा साथे यतिना विलंबनथी सांधवानो छे. एटले यति पूर्वनो अक्षर अुच्चारणमां गुरु होवा साथे विलंबित होय तो सारुं. उपर आपेला दृष्टांतमां

युद्धार्थे सि – द्ध सकल जुए

एमां 'सि' प्रकृतिथी गुरु नथी, तेनुं गुरुत्व, पछी आवता संयुक्तव्यंजन उपर आधार राखे छे, अने ए संयोग यतिथी दूर पडी गयो छे, एटले ए दूर पडेला संयोगनी अपेक्षाए 'सि'ने लंबाववो पडे छे ते उच्चारमां कद्रूप लागे छे. यतिना विलंबनने माटे यति पहेलांनो अक्षर उच्चारमां विलंबित होय ते इष्ट छे[१३] उच्चारणमां जेम वधारे दीर्घ होय तेम सारुं. पहेला

---

१३. भरतनाट्यशास्त्रमां विराम आवश्यक होय त्यां दीर्घ अक्षरो वापरवा कह्युं छे, ते मारा मतने टेको आपे छे:

कार्यो विरामः पादान्ते तथा प्राणवशेन वा॥ १३९
शेषमर्थवशेनैव विरामं संप्रयोजयेत्।

अत्र च भावगतानि रसगतानि च कृष्याक्षराणि बोद्धव्यानि, तद्यथा :—

आकारैकारसंयुक्तमैकारौकारसंयुतम्।
व्यंजनं यद्भवेद्दीर्घं कृष्यं तत्तु विधीयते॥ १४०

भ. ना. शा. वॉ. २, १७. पृ० ४०१–२

आनो अर्थ हुं एवो समजुं छुं के पादान्तने लीधे, प्राणने लीधे तथा अर्थने लीधे विराम करवो पडे छे. तेवे स्थाने कृष्य एटले खेंची–लंबावी शकाय एवा दीर्घ स्वरो वापरवा जेवा के आ ऐ ए औ वगेरे. आना उपरनी टीकामां अभिनवगुप्त कहे छे: "कृष्याक्षराणीति, कृषतीति कृषो विलंबितो लयः तत्र साधूनि कृष्याणि, सन्ध्यक्षराणि यथा आ ई ऊ इति दीर्घाः।" एथी उपरना ज अर्थने समर्थन मळे छे. उपर श्लोकमां प्राण शब्द आवे छे, तेनो अर्थ श्वास—श्वास लेवानो जरूर, एवो सामान्य रीते जणाय, पण ए अर्थनो निषेध करीने अभिनवगुप्त तेनो अर्थ रसभावादि एवो करे छे. (एजन, पृ० ४०१)

प्रकरणमां (गत पृ १३) आपणे जोयुं के दीर्घ गणाता बधा स्वरो एक सरखा दीर्घ बोलाता नथी. दाखला तरीके 'आ' घणो दीर्घ छे. एवा ज संयुक्त स्वरो 'ऐ' अने 'औ' पण घणा दीर्घ छे. यति पूर्वे 'आ' 'ऐ' 'औ' आवे ते इष्ट छे. तीव्र अनुस्वारनुं पण एवुं ज छे कारण के अनुस्वार लंबातां तेनो रणको मधुर लागे छे. उपर आपेलां दृष्टान्तोमां घणी जगाए यति पूर्वे एवा ज स्वरो आवेला जणाशे. दृष्टान्तो (१) (३) (४) (५) (१४) (२१) (२२) (२५) (२६) (२७) (२८) (२९) (३०)मां यतिभंग पूर्वे 'आ' छे, (२) (६) (७) (१३) (१५) (१६) (१८) मां तीव्र अनुस्वार छे, (११) (१६) (२७) मां आवता 'सौ – न्दर्य' अने 'है – या' मां संयुक्त स्वरो छे. 'हैनुं' शब्दनां भिन्न भिन्न रूपोमां तो में अनेक जगाए यतिभंग जोयेलो छे. पण हवे वधारे दाखला आपतो नथी.

अने छेवटे तो काव्यमां जे हमेश सामान्य रूपे कहेवानुं होय छे के सहृदयने क्लेश न थवो जोईए ए ज यतिभंग विशे पण कहेवानुं रहे छे.

एवं यथा यथोद्वेगः सुधियां नोपजायते।
तथा तथा मधुरतानिमित्तं यतिरिष्यते॥[१४]

सुधीओने उद्वेग न थाय ए रीते मधुरतानिमित्ते यति मूकवी.

आ प्रमाणे यतिभंगो मध्ययतिने स्थाने निर्वाह्य बने छे, छतां उपर कह्युं तेम मध्ययति वृत्तना बंधनो स्वाभाविक अंश छे. तेमांथी ए फलित थाय छे के जेम चरण श्लोकोनुं अंग छे, तेम यतिखंड चरणनुं उपांग छे. एक उपांग तरीके ए यतिखंड व्यापारमय बनतो जोई शकाय छे. खरी रीते व्यापारमयता ए ज कोई पण अंगनो एकतानुं निर्णायक प्रमाण छे. आ व्यापारमयता आपणे नवा छंदोनी रचनानी प्रक्रियामां जोई शकीए छीए, पण ते बाबत आ पछीना प्रकरणनो विषय छे. पण नवा श्लोकबंधनी रचनामां पण ए दृष्टिगोचर थाय छे. अने हुं हवे ए विषय लईश.

नवो श्लोकबंध हुं कोने कहुं छुं तेनी चर्चा, दृष्टान्तो आपी वधारे सारी अने टूंकी रीते थई शकशे. वृत्तचर्चामां ए ज पद्धति वधारे चोकस अने फलदायी जणाई छे. एनुं पहेलुं दृष्टान्त कान्तमांथी मळे छे, तेमना 'उद्गार' काव्यमांथी.

---

१४. 'छन्दोमंजरी' उपरनी श्री रामधन भट्टाचार्यनी संस्कृत टीकामांथी पृ० १७.

खंड शिखरिणी

बस्यो हुंये तारे ।
रह्यो ए आधारे ।
प्रिये तेमां मारे । प्रणय दुनियार्थी नव थयो
नवा संबंधोनो । समय रसभीनो पण गयो. १
। नहि तदपि उद्वेग मुजने
। नयन निरखे मात्र तुजने
हरे दृष्टि, व्हाली । सदय मृदु तारी ज रुजने. २
सदा रहेशे एवी ।
सुधावर्षा जेवी ।
कृती मानुं, देवी । क्षण सकलने जीवन तणी
प्रमत्तावस्थामां । नझर पण नांखू जग भणी. ३

'उद्गार,' पूर्वालाप पृ० ४२

मारुं वक्तव्य यथार्थ सहेलाईथी स्फुट थाय माटे, साधारण रीते छपाय छे ते करतां जरा जुदी रीते में अहीं पंक्तिओ मूकी छे अने श्लोकसंख्या आपी छे.

अहीं पहेली बे पंक्तिओ ते शिखरिणीनी आखी पंक्तिओ नथी, पण मात्र तेना पहेला यतिखंडो छे. ते पछी बे शिखरिणीनी अखंड पंक्तिओ आवे छे पण त्यां विशेष एटलुं ज छे के पहेला बे स्वतंत्र आवता यतिखंडोने कविए पछीनी पंक्तिना पहेला यतिखंड साथे प्रासथी सांध्या छे. ए बे अखंड पंक्तिओए एक श्लोक हुं पूरो थयो गणुं छुं. पछी जे बीजो श्लोक आवे छे, तेमां उपरनी रचनानुं पुनरावर्तन नथी पण यतिखंडोनी जरा जुदी ज रचना छे. त्यां पहेली बे पंक्तिओ शिखरिणीना उत्तर यतिखंडनी छे अने तेनी पछी वळी शिखरिणीनी एक आखी अखंड पंक्ति आवी बीजो श्लोक पूरो थाय छे. आ त्रणेय पंक्तिओमां त्रणेय उत्तरखंडो पाछा प्रासथी सांधेला छे. आ पछी त्रीजो श्लोक आवे छे, जे पहेला श्लोकनी रचनानुं पुनरावर्तन छे. एवी रीते आ काव्य पूरुं थाय छे.

अहीं एक एक यतिखंडनी एक एक स्वतंत्र श्लोकपंक्ति बने छे. हवे, आपणे आगळ श्लोकनी चर्चामां कह्युं हतुं के अर्वाचीन कवितामां एक चरण पण वृत्तसंवादनो स्वतंत्र एकम बन्युं छे. तो प्रश्न थाय छे के उपरनी रचनामां मात्र यतिखंडनी पंक्ति बने छे ते उपरथी यतिखंडने पण संवादनो स्वतंत्र एकम गणवो? हुं मानुं छुं के उपरनी रचनामां आखी पंक्तिमां आवतो एक

ज यतिखंड संवादमां स्वतंत्र एकम बनतो नथी. अखंड पंक्तिमां ए यतिखंडनो संवाद सापेक्ष हतो, तेने तेनी पछी आवता यतिखंडनी अपेक्षा हती, ते स्थिति कायम रहे छे. बीजा यतिखंडनी अपेक्षा कायम राखीने ज ते अहीं त्रेवडाय छे. अखंड पंक्तिमां पहेलो यतिखंड जे रीते पठाय छे, ते ज रीते अहीं पहेली बे पंक्तिओना यतिखंडो पठाय छे. आपणे साधारण रीते शिखरिणीना पठनमां धारो के पहेलो यतिखंड पठी, त्यां अटकी जईने, पछी जे ज पहेला यतिखंडथी आखी पंक्तिनुं सळंग पठन करीए, त्यां पहेला यतिखंडनुं जेवुं पठन थाय तेवुं ज पठन आ खंडशिखरिणीमां थाय छे. आ अने आवी रचनामां शिखरिणीना ज यतिखंडोथी नवी रचना थाय छे. दरेक यतिखंडनुं पठन मूळ जेवुं ज रहे छे, संवाद जरा चित्रमय बनवा छतां एनो ए ज रहे छे, तेथी आने हुं नवो छन्द न गणतां शिखरिणीनो नवो श्लोकबंध गणुं छुं. आ रचना माटे खंडशिखरिणी नाम चाल्युं आव्युं छे ते भले चाले, पण शास्त्रदृष्टिए खंडशिखरिणी कोई नवो छन्द नथी, छन्दनो विकार नथी, पण शिखरिणीनो नवो श्लोकबंध छे.[१५]

आना खंडशिखरिणी नाम संबंधी पण थोडी चर्चा थई छे. सद्‌गत नरसिंहराव अभ्यस्त शिखरिणी अने खंडशिखरिणी एवो भेद करवा इच्छे छे. तेमने मते उपरना काव्यमां जेने हुं पहेलो श्लोक कहुं छुं ते अभ्यस्तशिखरिणी छे, अने जेने हुं बीजो श्लोक कहुं छुं ते खंडशिखरिणी छे. (Gujarati Language and Literature Vol. II, pp. 288-9) तेमनो

---

१५. अलबत, अहीं मारे कहेवुं जोईए के जूनी पिंगल प्रणालिका आने नवो छंद गणी छन्दनुं नवुं नाम आपे. शालिनीनी आवी एक चित्र रचनाने हेमचन्द्र चित्रा नाम आपे छे: "मियौं चित्रा॥ मिरिति मगणत्रयं यगणद्वयं च जैरिति वर्त्तते। यथा —

शत्रौ मित्रे हर्म्येऽरण्ये संमदे वा गदे वा
राज्ये भैक्षे रत्ने लोष्ठे कांचने वा तृणे वा।
स्रोतस्विन्यां कामिन्यां वा निंदने वा स्तुतौ वा
चित्रां चित्तादस्यां हित्वा संश्रयेथाः समाधिं॥

छन्दोनु० पृ. १०ब

उपर टीकामां जैः करीने आठमे यति कहेली छे पण उपरनो लक्षणश्लोक जोतां जणाय के शालिनीना खंडे खंडे यति छे, पहेला चारे पछी फरी बीजा चारे. एटले आ बधी रीते अभ्यस्त शालिनी ज छे अने ए नवो ज छन्द होय एम एने नवुं नाम आपेलुं छे.

खंडशिखरिणीनो दाखलो नानालालना 'मणिमय सेंथी' काव्यनो नीचेनो श्लोक छे:

जग गजवजे घोर गितडां,
घडि नचवजे कान्त चितडां,
नमेरी छायानो विकट तुज घेरो वट थशे
चळाती ज्योत्स्नानो मणिमय प्रिती पंथ दिपशे.
'मणिमय सेंथी', केटलांक काव्यो भा. १, पृ. ६२-३

दृष्टान्तो उपरथी स्पष्ट थाय छे के जेमां शिखरिणीनो पूर्वखंड बेवडायो होय तेने तेओ अभ्यस्त कहेवा इच्छे छे. 'अभ्यस्त'नो अहीं प्रस्तुत अर्थ आप्टे reduplicated आपे छे ते छे. व्याकरणमां धातुनां केटलांक रूपोमां धातुनुं द्वित्व थाय छे, तेमां धातुनो आगलो अक्षर बेवडाय छे, जेम के 'नम्'नुं रूप 'ननाम' थाय छे. ए धोरणे अहीं पण पंक्तिनो आद्य भाग बेवडाय छे तेने अभ्यस्त कहेल छे. प्रो. ठाकोरे पण आ अभ्यस्त शब्द पोतानी रचनामां स्वीकार्यो छे (भणकार पृ. ६४). पण आवी रीते वृत्तनो पूर्व खंड बेवडाय, के अुत्तर खंड बेवडाय एमां नामनो भेद करवा जेवुं कशुं महत्त्व मने नथी लागतुं. बन्ने खंडो छे, बन्ने अेकबीजाना सापेक्ष छे ए दृष्टिए अभ्यस्त-शिखरिणी पण खंडशिखरिणीनो एक प्रकार ज छे जेने भिन्न करवानी जरूर नथी. खंडशिखरिणी एटले जेमां अखंड चरणने बदले तेनो यतिखंड ज एक के वधारे पंक्तिमां आवतो होय एवो छंद. नरसिंहरावनो भेद तेमनी पछी कोई कविए के विवेचके स्वीकार्यो जणातो नथी, एटले आनी हुं विशेष चर्चा करतो नथी. मारुं वक्तव्य ए छे के आ रचनाने नवो श्लोकबंध गणवो जोईए. एक ने एक वृत्तना आवा नवा श्लोकबंधो अनेक थई शके जेम के सुन्दरम्नो

खंड शिखरिणी

अहा! मारी आशा,
हवे छेल्ली आशा
क्षुधित जननिद्रा शुं सरशे?
डुबेलां व्हाजो पे जळसम निरांवा शुं तरशे?
उदधि अळखायो गरजशे?
भरीने गोझारूं धनिक जन शूं पेट हसशे?
'छेल्ली आशा', काव्यमंगला पृ. १०

आ पछीना काव्यमां ज (एजन, पृ. १२) सुन्दरमे यतिखंडोनी रचनामां थोडो फेरफार करी वळी एक नवो श्लोकबन्ध आपेलो छे. आवा श्लोकबंधो अनेक

वृत्तोमां थई शके, अलबत, सयतिक वृत्तोमां. नानालाले मंदाक्रान्तानो एक नवो श्लोकबंध आपेलो छे:

धीरां धीरां, ऊंडां घेरां,
सुख सुहवला वर्षनां दुःख वीत्यां
ना को आव्यूं, ना कैं व्हाव्यूं
गतप्रियजने, आर्द्रता शूं नथी त्यां?
केटलांक काव्यो भा. १, पृ. ११

प्रो. ठाकोरनो अभ्यस्त मन्दाक्रान्ता आवो ज छे:

झूलो पोपट्, झूले सृष्टी
जननि झुलवे चंद्रिकापारणामां, वगेरे.
'पोढो पोपट', भणकार पृ. ६४

हमणां 'संस्कृति'मां श्री उमाशंकरे एक नवी ज रचना आ ज वृत्तनी आपी छे:

लाठी स्टेशन पर

दैवे शापी
तें आलापी

द्वय हृदयनी स्नेहगीता, कलापी!

दूरेऽदूरे
हैयां शूरे

क्षितिज हसती नव्य को आत्मनूरे.

ते आ भूमि
स्नेहे झूमी

सदय दृगथी आज में धन्य चूमी.
'संस्कृति', नवेम्बर, '४८, पृ. ४३१

ध्यानमां आव्युं हशे के आवा श्लोकबंधोमां कवि अनेक रीते पंक्तिओने प्रासथी सांधे छे—अने शणगारे छे.

आ श्लोकभंगी जुदी जुदी रीते वापरी शकाय. जेम के
पादपूर्तिने बुखें एक प्रशस्ति
जीत्यो स्मद्स ध्रुजावियो मकडुनाल्दा'थो ज ज्यू ठेलियो,
नाझीनेय अहिंसको बनववा हामी भणी विश्वने;

ह्यां न्हेरूद्वय दास वल्लभ कर्या चेलाय राजाजि शा,
अंसारी, द्वय अल्लि, खां, वश कर्या, तामील म्हारो'द्धर्या,
जीत्युं केळव्युं फेंकि शासन दिघूं, ए सर्वने झांखवे
बाकी शुं एवूं हवे?
भणकार पृ. २८१

'बाकी शुं एवूं हवे?' एवी पादपूर्तिने निमित्ते उपरनो श्लोक रचेलो छे. सामान्य रीते पादपूर्तिमां आपेली पंक्ति के खंड अंत्य पंक्तिमां वणीं लेवानी होय छे, तेने बदले अहीं एक आखो श्लोक स्वतंत्र रच्यो छे, पादपूर्तिनो उत्तरयतिखंड अंते लटकतो मूक्यो छे. आ पण एक नवो श्लोकबंध ज थयो. आवी ज रीते अनुष्टुपमां एकाद चरण वधारानुं मूकी देवाय छे:

इक्ष्वाकुकुलसंभूत मदध्यापित सत्त्ववान्
तुं तो छो; तेवि हे वत्स, आटली सूचना तने
मेधावीने घणी थाशे.

साम्राज्यसर्जनो, तात, संयमे सिद्ध थाय ने
विलासोथी हणाय छे.
संतोषे संयमे धर्मे रहीने रत सर्वदा
पामजे पद शाश्वत.
भगवाननी लीला पृ. ४०

अहीं चालु अनुष्टुपना प्रवाहमां 'मेधावीने घणी थाशे', 'विलासोथी हणाय छे' अने 'पामजे पद शाश्वत' एवां त्रण पादो उमेरी दीधां छे. आमांनां छेल्लां बे पादो उत्तर पादो छे, अने पहेलुं पूर्व पाद छे. अनुष्टुपनां समविषम पादोने पण यतिखंडो जेवी परस्पर अपेक्षा होय छे एटले आ पण सयतिक वृत्तना नवा श्लोकबंध जेवा ज दाखला थाय छे.

आवी वैचित्र्यमय श्लोकरचना में आगळ कह्युं तेम सयतिक वृत्तोमां ज शक्य छे. पण हुं आ प्रकरणमां आगळ कही गयो तेम केटलांक वृत्तोमां यतिना जेवुं विलंबन वचमां आवे छे, जेने केटलाक पिंगलकारोए यति तरीके स्वीकारी पण छे, एवा स्थाने थता खंडो पण यतिखंडो होय ए रीते तेनी नवी रचनाओ थई छे. दाखला तरीके पृथ्वीमां मध्ययति नथी एम माननार प्रो. ठाकोरे ज, ए मध्ययति होय ए रीते एना खंडोनी रचना करी छे:

अभ्यस्त पृथ्वी

पड्यूं श्रवण नाम, गर्व भरि डोक ऊंची करे,
त्यहां झट थई सवार हसि फेरवी घोडली
करी तिलक भाल, वर माल कंठ आरोपि ते,
स्विकारि वरि नाचती,
सखीनयन राचती,
वियोग न कळावती थइ अलोप ए घोडली.

'एक तोडेली डाळ', भणकार पृ. ११६

अहीं चोथी पांचमी पंक्तिओ मात्र पृथ्वीना पूर्व यतिखंडो ज छे. आवो ज प्रयोग उपजातिमां थाय छे ज्यां हुं आगळ कही गयो तेम पहेला पांच अक्षर पछी हळवी यति जेवुं छे.

प्हेलां लिखेली
तें, में दिखेली
वव्वे डबीना नथी दाम आपवा,
नवी डबीना वळी कोड राखवा.

'मोची', गंगोत्री पृ. १३९

में आगळ कह्युं के आपणे समवृत्तना एक चरणने संवादनुं एकम स्वीकार्युं छे अने तेथी एक ज पंक्तिनुं मुक्तक पण थाय छे अने तेनां दृष्टान्तो पण आ प्रकरणमां आवी गयां. हवे विशेष ए कहेवानुं के यतिखंड पण संवादनी सापेक्षता कायम राखीने स्वतंत्र पंक्ति बनी, अखंड पंक्तिओ जोडे आवे छे त्यारे, कोई पण वृत्तना एक चरणने बदले चरण उपरांत एक वधाराना यतिखंड साथेनां मुक्तको पण बने छे. जेम के:

तने में झंखी छे
युगोथी धीखेला प्रखर सहरानी तरसथी.

वसुधा पृ. ५६

आवा श्लोकबंधोमां ज्यां यतिखंडोनी स्वतंत्र पंक्तिओ थाय त्यां ए नोंधवा जेवुं छे के पूर्व यतिखंडो स्वतंत्र अध्धर रही शकता नथी, तेमनी पाछळ उत्तर यतिखंडो आवे ज छे. कारण के पूर्व यतिखंडमां उपसंहारनुं सामर्थ्य नथी, तेथी ऊलटुं उत्तर यतिखंड स्वतंत्र पंक्ति तरीके ऊभो रहेवा समर्थ छे. आगळ जे प्रो. ठाकोरनी पादपूर्ति उतारी छे तेमां शार्दूलविक्रीडितनो उत्तरखंड स्वतंत्र रीते त्यां ऊभेलो छे. तेने बाकी पंक्तिनी के पूर्वखंडनी

अपेक्षा रही नथी. एथी ऊलटी रीते श्लोकने अंते पूर्वखंड एम अध्धर रही शके नहीं. छेवटे, में अनेक दृष्टान्तोमां एवुं क्यांई जोयुं नथी.

आ प्रमाणे प्राचीन पिंगलकारोए श्लोकने संवादनुं एकम मानेलो तेथी आगळ जई आपणे जोयुं के श्लोकनुं एक चरण पण स्वतंत्र एकम थई शके छे; वळी जोयुं के यति ए श्लोकना बंधनो स्वाभाविक भाग छे; वळी ए पण जोयुं के मध्य यति पण चरणनुं अंग छे, एनुं स्थान ए पण श्लोकना बंधनो अंश छे, अने तेनाथी थता यतिखंडो पण चरणनां उपांगो छे तेमने सापेक्ष पण एक प्रकारनी समग्रता छे, अने ए एक आखा उपांग तरीके व्यापारमय थई अनेक प्रकारना श्लोकबंधो रची शके छे. यतिखंडोनी व्यापारमयता आपणे हजी नवा छंदोना प्रकरणमां आगळ जोईशुं.

परिशिष्ट १

यतिपूर्व अक्षरनुं गुरुत्व

वृत्तोमां यति पूर्वनो अक्षर हमेशां गुरु होय छे, अने तेनुं कारण ए के यतिना उच्चारणमां आगला स्वरनुं विलंबन थाय छे अने संस्कृतमां विलंबन हमेशां गुरुनुं ज थई शके छे एम में आ प्रकरणमां कह्युं. पण पिंगलोमां आवतां केटलांक वृत्तोमां यतिपूर्वनो अक्षर लघु होय छे तेनो खुलासो करवानुं रहे छे ते अहीं करुं छुं.

हुं पिंगलना 'छन्दःशास्त्र'मां ज्यांज्यां लघु पछी यतिनो उल्लेख छे ते दरेक छंदने अहीं एना ज क्रममां लईश. न्यास मारी रीते आपीश.

कुमारललिता : लगाल ललगा गा छ. शा. ६–३

सूत्रमां यति कही नथी. हलायुध प्रथम त्रणे अने पछी चारे एम यति बतावे छे. पण आगळ जतां कहे छे के कोई बेअे अने पांचे यति बतावे छे. आ विकल्प ज आपणे आगळ जोयुं तेम यतिनी अनावश्यकतानुं चिह्न छे. अने छन्द अनावृत्तसंधिनो नथी पण चतुष्कल आवृत्त संधिनो छे. अर्थात् खरा अर्थमां ए वृत्त नथी.

पणव : गागा गालल ललगा गागा ६–१०

सूत्रमां यति कही नथी पण हलायुध पांचमे पांचमे यति होवानो आम्नाय कहे छे. छंद स्पष्ट रीते चतुष्कल संधिनां आवर्तनोवाळो मात्रामेळ छे.

वृन्ता : लललल लललल गागा गा ६–२३

सूत्रमां यतिनो उल्लेख नथी, पण हलायुध आगळनां १९-२० सूत्रोना शब्दोने मंडूकप्लुतिन्यायथी अहीं लगाडी चारे अने साते यति कहे छे. पण छन्द स्पष्ट रीते चतुष्कलनां आवर्तनोनो छे.

नवमालिनी : ललल गालगालल गागा ६–४३

सूत्रमां यतिनो निर्देश नथी. हलायुध आम्नायथी आठमे अने चोथे यति कहे छे. पण छंद चतुष्कल संधिनां आवर्तनोवाळो छे. पहेलो अने छेल्लो संधि चतुष्कल छे ज, अने वचमां बे चतुष्कल संधिओना पर्याय दालगालदानुं लगात्मक रूप छे.

चन्द्रावर्ता : ललल ललल ललल ललगा ७–११

सूत्रमां यतिनो उल्लेख नथी. हलायुध सातमे अने आठमे यति कहे छे. अने ते पछीना सूत्रमां उपरना ज न्यासमां छठ्ठे अने नवमे यति आवे तो वृत्तनुं नाम माला कहे छे. अने तेनी पछीना सूत्रमां आठमे अने सातमे यति होय तो नाम मणिगुणनिकर कहे छे. आ यतिनुं फरवुं ए ज ए यति आवश्यक नथी एम बतावे छे. खरी रीते आ चतुष्कल संधिनां आवर्तनोवाळो मात्रामेळ छन्द छे.

ऋषभगजविलसित : गालल गालगालल ललल ललगा ७–१५

आमां सूत्रमां ज सातमे अने नवमे यति कहेली छे. पण उपर आवी गयेल नवमालिनीनी पेठे आमां चतुष्कल संधिनां आवर्तनो छे.

क्रौंचपदा। गालल गागा गालल गागा ललल ललल ललल ललगा ७–२९

आमां सूत्रमां पांच पछी पांच पछी आठ पछी सात एम यति कही छे. पहेली बे यतिओ गुरु पछी आवे छे. ते पछी आठ अक्षरे आवती यति लघु पछी आवे छे. पण आ छंद स्पष्ट रीते चतुष्कलनां आवर्तनोनो छे — मात्रामेळ छे.

अपवाहक : गागा गालल ललल ललल ललल ललल ललगा गागा ७–३१

आमां नवमे पछी छठ्ठे पछी छठ्ठे पछी पांचमे एम चार यति कही छे. पहेली त्रणेय लघु पछी आवे छे. छंद चतुष्कल मात्रामेळी छे.

वरतनु : ललल गालल गालगालगा ८–३

आमां छठ्ठे छठ्ठे अक्षरे यति कही छे तेमांनी पहेली यति लघु पछी आवे छे. पण दृष्टान्तना चोथा चरणमां ज ए यति पळाई नथी. चोथुं चरण :—

अरुणकरोद्‌गम एव वर्तते

अहीं 'द्‌ग' ए छठ्ठो अक्षर छे, अने त्यां 'उद्‌गम' शब्द पूरो थतो नथी. ए ज बतावे छे के आ यति आवश्यक नथी. पण एथी विशेष कहेवानुं तो ए छे के आ छन्द अपरवक्त्रना बीजा पादनो बनावेलो छे.

अपरवक्त्र : ललललललगा लगालगा
ललललगा ललगा लगालगा

अपरवक्त्रना बीजा पादमां जो यति नथी, तो अहीं मूकेली यति आगन्तुक छे, वृत्तना बंधनी नथी.

कुटिला : गागा गागा ललल ललगा गागा गा ८–१०

आना सूत्रमां ज चोथे छठ्ठे अने पछी चोथे यति कही छे. वचली यति लघु पछी आवे. पण आ चतुष्कल संधिनां आवर्तनोनो बनेल मात्रामेळ छे.

शैलशिखा : गाललगा लगा लललगा ललगा ललगा ८–११

आमां सूत्रमां पांचमे छठ्ठे अने पांचमे यति कही छे. पण आ नर्दटकनो ज विकार छे (जुओ गत पृ. १३४). सरखावो :

नर्दटक : लललगा लगा लललगा ललगा ललगा
शैलशिखा : गाललगा लगा लललगा ललगा ललगा

नर्दटकमां यति नथी (जुओ गत पृ. १६३) तो आमां पण ते आवश्यक नथी. कोकिलक (सूत्र ८–१५) ए ती नर्दटकमां ज आठमे पांचमे अने चोथे यति मूकवाथी थयो छे एटले एनी यति आवश्यक होई शके नहीं.

एटले पिंगलनां सूत्रोमां जे जे वृत्तमां लघु पछी यति कहेली छे, ते बधां वृत्तो घणेभागे कोई कोई मात्रामेळी छंदोनां लगात्मक रूपो छे, अने वरतनु शैलशिखा कोकिलक जेवा दाखलामां ए यति आवश्यक नथी.

बीजां पिंगलोमां आ सिवायना लघु पछी यतिवाळा दाखला जोवानी हुं जरूर जोतो नथी. हुं आखी 'छन्दोरचना' जोई गयो छुं अने तेमां क्यांई अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तमां यति पूर्वे लघु आवतो में जोयो नथी.

आ बधामां एक अपवाद छे, अने ते तरफ अहीं सुधी प्रसंगे प्रसंगे हुं ध्यान दोरतो आव्यो छुं. उद्‌गता विषम वृत्त छे, अने तेना पहेला चरणने अंते लघु आवे छे.

उद्‌गता : ललगा लगा ललगा ल
ललललगा लगालगा
गालल ललल गालल गा
ललगा लगा ललगा लगालगा

पण आ दृष्टान्त तो ऊलटुं मारा अभिप्रायने समर्थित करे छे. आगळ (गत पृ. १३८) जोई गया तेम दरेक पिंगलकार पहेला चरणने बीजानी साथे पठवानुं कहे छे. एटले आ तो मारा मतनो व्यतिरेकी दाखलो थयो. अनावृत्तसंधि अक्षरमेळमां चरणान्त यति तेम ज मध्य यति गुरु पछी ज आवे छे, पण जे एक ज दाखलामां चरणान्ते लघु आवे छे त्यां पठनमां यति आवती ज नथी. एटले आ प्रकरणमां में जे एक वस्तुने मूलभूत मानी छे, के यति गुरु पछी ज आवे छे, तेने वृत्तोनुं प्रकृतिभूत तत्त्व गणवुं जोईए.

परिशिष्ट २

यति संबंधी अर्वाचीन विवेचकोनी चर्चा

हजी सुधी अर्वाचीन युगमां यतिस्वरूपनी कंईक पण शास्त्रीय चर्चा बे ज विद्वानोए करी छे. पहेली सद्‌गत केशव हर्षद ध्रुवे, एमना 'पद्यरचनाना प्रकार' नामना लेखमां. आ लेख एमणे १९०८ मां साहित्य परिषद माटे लखेलो, अने अत्यारे 'साहित्य अने विवेचन' भा. २ पृ. २६२–३०८ मां ते फरी छपायेलो मळी आवे छे. अने बीजी प्रो. ब. क. ठाकोरनी, तेमना 'शुद्ध (अगेय) पद्य'ना निबंधमां, जे निबंध तेमणे 'भणकार'नी पहेली आवृत्ति (सने १९१७)मां, पोताना काव्यसंग्रहमां छन्दना पोते जे नवा प्रयोगो कर्या हता तेना समर्थन तरीके लख्यो हतो.

के. ह. ध्रुवनो लेख यतिना व्यापक विषयने ध्यानमां राखी लखायो छे एम कही शकाय, पण तेमां मुश्केली ए छे के ए पछी एमणे 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'नां व्याख्यानो (प्रसिद्ध १९३२) आप्यां, एमां फरी व्यापक रूपे ते चर्चायो नथी. एथी १९०८ मां निरूपेला बधा सिद्धान्तो अने अभिप्रायो तेमने १९३२मां मान्य रह्या छे के केम एवो संशय ऊठे छे. 'आलोचना'मां तेमणे पोताना आगला विचारो घणी जगाए जूना लेखनो उल्लेख कर्या विना फेरव्या छे. पण आ विषयमां — एटले के यतिनी चर्चामां तेमणे एवो फेरफार कर्यो होय एवुं जणातुं नथी. मात्र एटलुं

के पहेलांना लेखना बधा अभिप्रायो बीजा लेखमां उतार्या जणाता नथी. पण ए गमे तेम होय. स्थलसंकोचने लीधे, तेमणे एम कर्युं होय, के जूना अभिप्रायो तेमने पोताने चिन्त्य जणायाथी एम कर्युं होय, पण हुं बन्नेना अभिप्रायोनी चर्चा आमां करीश, अने तेथी तेमना अंगत अभिप्रायनो फरक कंई होय तो पण मारा निरूपणने असर करशे नहीं.

'पद्यरचनाना प्रकारो'मां अयतिक के अखंड वृत्तोनुं निरूपण पूरुं करी तेओ सयतिक वृत्तो हाथमां लेतां प्रथम यतिने आवश्यक बनावनारां कारणो आपे छे. हुं आखो फकरो नीचे शब्दशः उतारुं छुं, मात्र तेमां गणावेलां कारणो आगळ, मारी चर्चानी सरलता खातर संख्यांक उमेरुं छुं:—

"अखंड रूपबंध मूकी हवे सखंड रूपबंध तरफ वळिये. आ पद्यरचनामां चरणना बे के त्रण खंड पडेला जोवामां आवे छे. ज्यां एक खंड पूरो थई बीजो शरू थाय छे, त्यां यति मूकाय छे. चरणने अंते तो यति सर्व प्रकारना छंदमां होय ज; तेने अंहि लेखामां नथी लीधी. आ यति मूकवी अनेक कारणथी आवश्यक बने छे. (१) कोई वखत खंड लांबो थई जवाथी यतिनी जरूर पडे छे. (२) कोई प्रसंगे समान संधिने नोंखा पाडवा यति इष्ट छे. (३) कोई समये भिन्न रचनाना खंडोने जोडवाने यतिनी अपेक्षा रहे छे. (४) क्यारेक उत्तर खंड पूर्व खंड साथे सळंग वांचतां पाठ विसंवादी थाय छे, त्यां संवाद जाळववाने यति प्राप्त थाय छे. छंदोनां उदाहरणो उपरथी यतिनां स्थान स्पष्ट समजाशे." (सा. वि. २, पृ. २७९)

अलबत्त आ सिद्धान्तोना दाखला जोवाथी एनुं स्वरूप वधारे स्पष्ट थाय. पण केटलीक चर्चा तो आ सिद्धान्तो जोतां प्राथमिक दृष्टिए ज उपस्थित थाय छे. तेओ कहे छे: "ज्यां एक खंड पूरो थई बीजो शरू थाय छे, त्यां यति मूकाय छे." हुं पूछुं छुं: खंडने लीधे यति आवी, के यतिने लीधे खंडो पड्या? यतिनी आवश्यकता जो खंडथी थती होय तो खंडने घडनार तत्त्व कयुं? सळंग चरणमां अमुक जगाए खंड शाथी पड्यो? अने ज्यां खंडो पड्या नथी त्यां केम नथी पड्या? आनो जवाब आप्या विना खंडोने स्वीकारी लई खंडो जुदा पाडवा यति आवे छे एम कहेवुं, ए तो यति अने खंडने बन्नेने स्वीकारी लेवा बरावर छे. एवी बेमांथी एकेयनो खुलासो मळतो नथी. वळी समान खंडोने जुदा करवा पण यति आवश्यक बने, अने असमान खंडोने जुदा करवा पण यति आवश्यक बने ए विधान तो कशुं ज नवुं कहेतुं नथी. यतिथी जे खंडो जुदा पडे ते कां तो समान होय कां तो असमान होय. एटले एमां कशी माहिती मळती नथी. जो समान तेम ज

असमान बन्ने प्रकारना खंडोने यतिथी जुदा पाडवा पडता होय, तो यतिनी आवश्यकतानुं तत्त्व क्यांक बीजे ज रह्युं छे एम समजवुं जोईए. वळी ज्यां ज्यां समान खंडो होय त्यां सर्वत्र यति जणाती नथी. आपणे पूछी शकीए के पृथ्वीमां, तेमना ज कहेवा प्रमाणे (सा. वि. २, २७८) लगा लललगा एवा बे खंडो करी शकाय छे, छतां त्यां यति केम नथी? द्रुतविलंबितमां लललगा ललगा ललगा लगा मां बे ललगा छे, तेनी वच्चे यति केम नथी? अने भिन्न खंडो तो वृत्तोमां पार विनाना मळे छे, डगले ने पगले मळे छे त्यां सर्वत्र यति केम नथी? एटले आ खुलासो प्रथम दृष्टिए मने अग्राह्य जणाय छे. चोथा कारण तरीके एमणे जणाव्युं छे के क्यारेक उत्तरखंड पूर्वखंड साथे सळंग वांचतां पाठ विसंवादी थाय छे, त्यां संवाद जाळववाने यति प्राप्त थाय छे. आ तो यतिना स्वरूपनुं मात्र व्यतिरेकी कथन छे! खरुं तो एम कहेवुं जोईए के चरणमां ज्यां यति होय छे त्यां ते चरणना संवादमां आवश्यक होय छे. तेमणे चरणान्त यति माटे कह्युं छे के "चरणने अंते तो यति सर्व प्रकारना छंदमां होय ज". मारुं कहेवुं के जेम चरणान्त यति ए चरणना संवादनो अविश्लेष्य अंश छे तेम मध्य यति पण जे जे वृत्तना चरणमां छे ते ते वृत्तना चरणना संवादनो अविश्लेष्य अंश छे. ए यतिने लीधे चरणना खंडो पडे छे एम कहेवुं जोईए.

सयतिक वृत्तोमां के. ह. ध्रुव सौथी प्रथम शालिनी आपे छे. अने यतिनुं कारण एवुं बतावे छे के "पूर्वखंड अने उत्तरखंड सळंग वांची शकाता नथी, माटे वच्चे यतिनो गाळो मेलवो पड्यो छे." आगळ कह्युं तेम आनो एटलो ज अर्थ के यति ए चरणना मेळनो आवश्यक अंश छे. मूळ प्रकरणमां में कह्युं तेम मारो अभिप्राय ए छे के ए चार गुरुओथी आवश्यक बनी छे.

बीजो छंद तेमणे जलोद्धतगति लीधो छे. तेना चरणनो न्यास:—

जलोद्धतगति: लगाल ललगा । लगाल ललगा

अहीं बन्ने खंडो समान होवाथी वच्चे यति आवश्यक बनी छे एम एमनुं कहेवुं छे. मारी दृष्टिए आ रचना आवृत्तसंधिनी अने मात्रामेळी छे. तेमां चतुष्कल संधिनां चार आवर्तनो छे. हुं आगळ कही चूक्यो तेम वृत्तोनी यति अने मात्रामेळी जातिनी यति ए बे, स्वरूपथी तद्दन भिन्न छे, अने तेथी वृत्तोनी यतिनी चर्चामां आने स्थान ज न होवुं जोईए. में आगळ कह्युं तेम (गत पृ. ६८, ६९) ध्रुव, एक ज मात्रामेळी संधिना जुदा जुदा पर्यायोनां आवर्तनोथी थयेला छंदोने आवृत्तसंधि गणता नथी, तेथी आने अनावृत्तसंधि

वृत्त गणवुं पडशुं छे, अने तेनी यति संबंधी आवो खुलासो योजवो पडशो छे, पण आ रचनाने अहीं स्थान नथी.

आ पछी ध्रुवे क्षमानुं दृष्टान्त आपेलुं छे.

क्षमा : ललल ललगा । गालगा गालगा

अलबत, आ छन्द किरातार्जुनीय (५–१८)मां मळे छे, पण ते मात्र कोई नवो छन्द करवाना कौतुकथी ज रचायो जणाय छे. ए आखो पांचमो सर्ग नवा नवा छन्दोना प्रयोगोनो बनेलो छे. मने आ रचना संवादी जणाती नथी. आ छन्द कविओए अपनावी तेनो बहोळो प्रयोग कर्यो होय एवुं जणातुं नथी — न्यास जोतां ए स्रग्धराना छेल्ला बे यतिखंडोने बहु ज मळतो आवे छे. छेवटनो गुरु एक काढी नाख्यो छे एटलो ज फरक छे. आ दृष्टान्तने स्रग्धरा के मालिनीथी भिन्न गणवुं न जोईए.

आ पछी प्रहर्षिणी लीधुं छे.

प्रहर्षिणी : गागागा । लललगा लगा लगागा

आमां यतिनुं कारण एवुं बताव्युं छे के प्रथम खंडने छेडे अने बीजा खंडने आरंभे पण जोरदार रूप छे. जोरदार रूप सळंग बोलवानी अगवड दूर करवाने यति विवक्षित छे. आमां जोरनुं नवुं तत्त्व प्रवेश पामे छे जेनी चर्चा हुं आगळ करवानो छुं. पण ए भारवाळां रूपो शा माटे भेगां न बोलाय ए ज प्रश्न छे. अर्थात् खुलासो कल्पित छे.

आ पछी मध्यक्षामा आवे छे. एमना प्रमाणे :

मध्यक्षामा : गागा गागा । ललललल गागा गागा

अहीं यतिनुं कारण ए जणाव्युं छे के केवळ गुरुथी बनेला पूर्वखंडने पछीना केवळ लघुगय संधिथी नोखो पाडवानी जरूर छे. मारी दृष्टिए, आ छंद पण आगळ आवी गयेल जलोद्धतगतिनी पेठे चतुष्कल संधिनां आवर्तनोनो बनेलो मात्रामेळ छन्द छे. एटले वृत्तनी यतिचर्चामां तेने स्थान नथी. मारी दृष्टिए तेनो चतुष्कल न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

गागा गागा ललल ललगा गागा गा

दरेक संधि चतुष्कल छे.

आ पछी मंदाक्रान्ता शिखरिणी अने हरिणी आवे छे. अलबत एमां भिन्न प्रकारना यति खंडो छे, पण यतिनो ए खुलासो बनतो नथी. में चर्चानी

प्रस्तावनामां सामान्य रूपे कह्युं तेम यति मेळनो अंश छे तो तेनो खुलासो मेळनिष्पादक न्यासथी करवो जोईए. आगळ सुवदना अने स्रग्धरा (एजन पृ. २८४–८५) आवे छे ते दृष्टान्त पण उपरना जेवां ज छे. मात्र शार्दूलविक्रीडितमां प्रथम खंड मोटो थई गयो छे तेथी यति अपेक्षित थाय छे एम कह्युं छे ए खरो खुलासो छे. आ उपरांत एक धृतश्री के पंचकावली के सरसी लीधो छे ते जोवो रहे छे.

धृतश्री : लललल गाल गाल ललगा । ललगा ललगा लगा लगा

अहीं अगियारमे अक्षरे जे यति छे, ते, तेओ कहे छे, के आवृत्त थता संधिओने छूटा पाडवा आवे छे. आ संधिओने छूटा पाडवानी जरूर केम ऊभी थाय छे तेनुं कारण ध्रुवनी आवृत्तसंधि अक्षरमेळनी तेमणे आपेली व्याख्या छे. तेओ "जे संधि चरणमां लागलागट यतिकृत विराम वगर बेथी वधारे वार वपरायो होय", तेने आवृत्त कहे छे. एवा संधिवाळा वृत्तने आवृत्तसंधि कहे छे. (प. अं. आ. पृ. २०) तेमणे बतावेला संधिओ प्रमाणे उपरना वृत्तमां जो यति न आवे तो त्रण ललगा संधिओ एकठा थई जाय, अने वृत्त आवृत्तसंधि बनी जाय. में आगळ कह्युं तेम मारे मते जेमां मात्रामेळी संधिनां सळंग आवर्तनो होय ते ज आवृत्तसंधि छे. उपरना वृत्तमां एवुं नथी एटले त्रण आवर्तन मात्रथी ते आवृत्तसंधि बनी न जाय. मारे मते तो आ वृत्त ज सुन्दर संवादवाळुं नथी. नवा नवा छन्दोना प्रयोगो करवाना शोखीन माघे 'शिशुपालवध'ना त्रीजा सर्गना अंत्य श्लोकमां तेने प्रयोज्यो छे, अने तेमां आवता धृतश्री शब्द उपरथी ज तेनुं ए नाम पड्युं छे. आ वृत्तना संधिओ मारी दृष्टिए जुदी रीते पडे छे :

धृतश्री : ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा लगालगा

आ रीते त्रण ललगा एकठा थवानो प्रसंग ज अहीं नथी. अलबत उपरना संधिविन्यासनुं प्रामाण्य हुं आगळ जतां मेळना छेल्ला (छठ्ठा) प्रकरणमां बतावीश. अहीं तो एटलुं ज कही शकीश के अहीं यति शार्दूलविक्रीडितनी पेठे लंबाणने लीधे आवश्यक बनी छे. शार्दूलविक्रीडित ओगणीस अक्षरनो छे अने तेमां बारमे यति छे, आ एकवीस अक्षरनो छे, अने तेमां अगियारमे यति छे.

आ रीते के० ह० ध्रुवनी यतिचर्चा बे कारणोथी दूषित थई छे. पहेलुं में कह्युं तेम खरां आवृत्तसंधि वृत्तोने तेमणे मेळनी दृष्टिए मात्रामेळी गण्यां नथी, तेथी केटलाक मात्रामेळी छन्दो, अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो साथे सेळभेळ थई गया. अने तेथी मात्रामेळी वृत्तोनी यतिओने तेमणे वृत्तोनी

यति जेवी गणी काढी. आथी संधिनां बे के त्रण आवर्तनो अशास्त्रीय महत्त्व पाम्यां. आनुं एक बीजुं परिणाम ए आव्युं के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां यति पहेलां हमेशां गुरु आवे छे ते तरफ तेमनुं ध्यान ज न गयुं. अने यति पूर्वे लघु आवे एवी यतिओने तेमणे शुद्ध वृत्तोमां स्थान आप्युं. आ नियमोनो अतिदेश वळी मात्रामेळी रचनामां तेमणे कर्यो त्यारे मात्रामेळी रचनानी यति पण विशेष भ्रान्तिकारक थई. ए खास करीने काव्य के रोळा अने प्लवंगमनी चर्चामां देखाय छे. तेओ आ बन्ने छन्दोने मात्रामेळी रचना तरीके स्वीकारे छे. पण ते बन्नेमां अगियारमी मात्राए यति आवे त्यारे तेने तेओ भिन्न प्रकारना छन्दो गणे छे, अने भेद देखाडवा तेमने उपकाव्य उप-प्लवंगम कही तेमनी यतिनी चर्चा करे छे अने वृत्तोनी यतिनी पेठे यतिनी उपपत्ति भिन्न संधिओथी बतावे छेः—

```
                              ।        ।        ।
उपप्लवंगम :  बावा  बावा  बाह् । हवाबा  बाहगा
उपकाव्य   :   "      "      "      "     बावा  बागा
```

तेओ कहे छेः "पहेला छंदमां पांच अने बीजामां छ मात्रासंधि छे. ते पैकी चोथो जे हवाबा संधि, तेमां बीजी मात्रा उपर भार पडे छे, अने बीजा बधामां पहेली मात्रा भारयुक्त छे. एमां पूर्वापर बाह् अने हवाबानूं स्वतंत्र व्यक्तित्व टकावी राखवाने माटे मध्य यति ऐकान्तिक उपपत्ति धरावे छे, अर्थात् ते आवश्यक छे. मध्य यति दूर थतां संधिनूं अनावृत्तत्व नाश पामी गूजराती भाषाना उपप्लवंगम तथा उपकाव्य अपभ्रंशना अनुक्रमे प्लवंगम अने काव्य बनी जाय छे." (एजन पृ. ३७)

अहीं करेलुं दरेक विधान मारी दृष्टिए चिन्त्य छे. आ मात्रामेळ रचनानी यतिने अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तनी यति साथे सरखावीने उपपत्ति करी छे एने ज हुं अशास्त्रीय गणुं छुं. पण आनी चर्चा हुं मात्रामेळना प्रकरणमां ज करी शकुं. हाल तो मतभेदनी मारी आटली नोंध बस थशे.

प्रो. ठाकोरनी यति विशेनी चर्चा कंईक आनुषंगिक छे, अने ते साथे बहु मर्यादित छे. तेमनो विषय 'शुद्ध (अगेय) पद्य' छे. तेमना वक्तव्यना मुद्दाओ टूंकमां आम मुकायः काव्यने माटे संगीत आवश्यक नथी. पण पद्य आवश्यक छे. गान माटे ताल, ताल माटे पुनरावर्तन आवश्यक छे. माटे अगेय रचना माटे पुनरावर्तनी रचना काम न आवे. पुनरावर्तन विनानी रचनाओ ते अक्षरमेळ रचनाओ छे. पण एमांनी पण केटलीकने तेओ शुद्ध पद्य माटे नालायक गणे छे. तेओ कहे छेः

"त्यारे रही मात्र अक्षरमेळ रचनाओ. आ रचनाओमांनी हाल आपणामां वधारे वपराय छे ते पैकी पण केटलीकनुं बंधारण एवुं छे के तेमने गेय रचनाओ ज गणवी पडे. शालिनी, मालिनी, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, शिखरिणी अने स्रग्धरानां रूप (बंधारण) विचारो. एवां वृत्तोमां गुरु स्वरो के लघु स्वरो के बंने, एटली संख्यामां साथे साथे खडकायेला छे, के तेमनामां यतिओ (विरामो)नां स्थानो निश्चित होवां लगभग आवश्यक बने छे; अने निश्चित लघुगुरु अनुक्रम अने निश्चित यतिस्थानो साथे मळतां, ए वृत्तो तालबंध पण कुदरती रीते बनी जाय छे. आवां वृत्तो गेय तो शुं पण सुगेय छे, एटले ए पण 'पदो' ज छे. संगीतमाधुर्यथी भिन्न एवा पदलालित्य के स्वरमाधुर्यनी लालसावाळो कोई एवां वृत्तने अगेय रीते वांचवा जशे तो ते पण वारंवार गेयतामां लपशी पडशे.

"हवे पृथ्वी वृत्तनुं माप तपासो. ए पंक्ति सुगेय नथी; गेय छे, तथापि अवश्यमेव गावी पडे एवी नथी; संगीतमां चालता ताली जोतां, कहे छे के,[1] एने कोई पण जाणीतो तालबंध गणी शकाय एवी ए नथी. एमां गुरु स्वरो लघु स्वरोना सामेलागा खडकला नथी. आवी एमां आवश्यक गणवुं पडे एवुं यतिस्थान पण नथी. बेशक सत्तर श्रुति के रूप के उच्चारणना एकम (syllable)नी बनेली पंक्तिनुं उच्चारण दृढ के शिथिल विराम वगर सरल नथी, अने एना लक्षणमां आठमी श्रुतिए यतिस्थान कह्युं छे:—

जसौ जसलया वसु । ग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः"

भणकार (आवृत्ति १ली) पृ० १२–१४

---

१. जुओ रा. रा. गणपतराव गोपाळराव बर्वे कृत गायन वादन पाठमाळा — छंदोगीत विनोद विभाग : पृ. ३४–"आ (पृथ्वी) वृत्त पण गायनने बराबर अनुकूल नथी. आखा वृत्तमां ८–८ मात्राना ३ विभाग पडे छे, परंतु ते ३+५ मळीने पडे छे. दीपचंदी चालमां ७ मात्रानो दरेक खंडक होय छे, ते ३+४ नो होय छे, अने झपतालमां ५ मात्रानो दरेक विभाग होय छे, ते २+३ नो होय छे; तेम पृथ्वी वृत्तमां नियमित विभाग जोतां ए एक नवीन ताल गणीने तेनो व्यवहारमां योग्य उपयोग करी शकाय तेवो छे." आ वात खरी होय तो तेथी म्हारी दलीलने सारो टेको मळे छे; पण म्हारी दलील आ एक ज वात पर अवलंबित नथी.

पृथ्वीमां दृढ यति नथी ए वात रा. रा. केशवलाल हर्षदराय ध्रुव ए वृत्तने अखंड रूपबन्धमां गणीने स्वीकारे छे.

अहीं एमणे शालिनी वगेरे वृत्तोमां गुरु अने लघुना खडकलाने लीधे यति आवश्यक बने छे एम कह्युं, ते मारा सिद्धान्तने मळतुं छे. पण ते पछी ए "निश्चित लघुगुरु अनुक्रम अने निश्चित यतिस्थानो साथे मळतां, ए वृत्तो तालबन्ध पण कुदरती रीते बनी जाय छे" एम कह्युं ते अप्रामाणिक छे. उपर एमणे पृथ्वी विशेनी पादटीपमां सद्‌गत बर्वेनो मत दर्शाव्यो के पृथ्वीमां आठ आठ मात्राना त्रण खंडको पडे छे, पण ते एकसरखा न होवाथी आ वृत्त "गायनने बराबर अनुकूल नथी." पण शालिनी मालिनी, मंदाक्रान्ता, हरिणी, शिखरिणी अने स्रग्धरामां तो एवा एकसरखी संख्यानी मात्राना खंडको पण नथी. एटले ए वृत्तोने तालबंधमां पडतां गणाव्यां छे ते अशास्त्रीय छे. अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्त पण गवातां ए साचुं पण ए तालबंध गवातां नहीं, अत्यारे पण गवाय छे त्यारे तालबंध गवातां नथी, अने स्वच्छन्दे मात्राओ उमेर्या विना तालबन्ध गाई शकाय पण नहीं. आवृत्तसन्धि अक्षरमेळ के मात्रामेळ, अने अनावृत्तसंधि अक्षरमेळनुं ए एक महत्त्वनुं व्यावर्तक लक्षण छे, ते हुं आगळ कही गयो छुं (जुओ गत पृ. १५१). एटले सयतिक छंदोमां यति आवश्यक छे ए साचुं, हुं आ प्रकरणमां कही गयो तेम ते एक साथे आवता गुरु अने लघुथी आवश्यक बने छे ए साचुं, पण ए आवश्यकताने संगीत साथे कशो संबंध नथी.

आ आखो निबंध मुख्य एक ज वात कहे छे के पृथ्वीमां मध्य यति आवश्यक नथी. ए वखते ए वस्तु विस्तारथी समजाववानी जरूर हती एटले विस्तार कर्यो छे ते भले, पण एम करतां बीजां आवश्यक यतिवाळां जे वृत्तो बताव्यां तेनी चर्चाने स्थान ज मळ्युं नथी. प्रश्न ए थाय छे के ए वृत्तोमां जो यति आवश्यक छे तो तेमणे पोते ए वृत्तोमां यतिभंग कया सिद्धान्तथी कर्यो के कई दृष्टिए कर्यो? ए वृत्तो सळंग काव्यने माटे तेओ नालायक गणे छे छतां तेमनुं एक 'तोडेली डाळ' शिखरिणीमां चाले छे, अने शिखरिणीनी आशरे ४० पंक्तिओमां चार जगाए यतिभंग छे. आ ज यतिभंगो खरो खुलासो मागे छे, अने ते एमना लेखमां मळतो नथी. एमणे यतिभंगवाळां काव्यो रच्यां ए आनुषंगिक रीते पिंगलने नवी दिशामां विस्तारनार छे, पण तेमनो पोतानो पिंगल विषयनो ए लेख यतिभंग उपर पूरतो प्रकाश नाखतो नथी.

६

वृत्तोनो मेळ: संधि

गया प्रकरणमां वृत्तनुं पृथक्करण करता करता यतिखंड सुधी आव्या. ए यतिखंडोनुं कंई आगळ पृथक्करण करी शकाय छे खरुं? वळी यतिखंडो तो सयतिक वृत्तोमां ज होय, तो अयतिक वृत्तोनुं पृथक्करण थाय छे के नहीं? आनो जवाब ए छे के अर्वाचीन पिंगल चर्चाए आ पृथक्करणना अखतरा कर्या छे, अने तेमांथी निष्पन्न थता विभागोनुं संधि नाम आप्युं छे.

आ संधि संबंधी पहेलो उल्लेख करनार, सद्गत के. ह. ध्रुव छे. १९०८ मां प्रसिद्ध थयेला 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमां वृत्तोना सखंड एटले सयतिक अने अखंड एटले अयतिक एवा बे विभागो करीने तेओ अयतिक वृत्तो आपवां शरू करे छे त्यां सौथी प्रथम उपेन्द्रवज्राना स्वरूपनी चर्चामां तेओ ए वृत्तना संधिओ पाडे छे, अने पछी जे बीजां वृत्तोना स्वरूपनी चर्चा करे छे त्यां घणीखरी जगाए तेओ वृत्तनो न्यास संधिओमां आपे छे. (सा. वि. २, २६२ – ३०८)ते पछी तेमना १९१९ ना 'सत्यवाद अने पक्षवाद'-ना निबंधमां आवती चर्चामां पण तेओ संधिनुं अवलंबन ले छे. (सा. वि. १,११३ – १२१) छेवट १९३२ मां आपेलां युनिवर्सिटी व्याख्यानो ('पद्य-रचनानी ऐतिहासिक आलोचना')मां तेओ संधिनो उल्लेख पण करे छे अने तेना स्वरूपनी चर्चा पण करे छे.

तेमनी आ संधिनी पद्धतिने सद्गत नरसिंहरावे आवकारी छे. तेओ कहे छे के छन्दोनां मकारादि गणोथी माप आपवानी पद्धति सगवडवाळी होवा छतां, ते ते छन्दना मेळनुं निरूपण करती नथी, जे मेळनो आधार तेना घटको उपर रह्यो छे. आ घटकोने के. ह. ध्रुवे संधि कह्या छे ते बराबर छे. आ वात तेओ दाखलाथी दर्शावे छे:

त्वां कामिनो मदनदूतिमुदाहरन्ति।

आ वसन्ततिलकानी पंक्तिने मकारादि गणोमां बताववा तेना नीचे प्रमाणे विभागो करवा पडे छे:

त्वां कामि । नोमद । नदूति । मुदाह । र । न्ति।
त भ ज ज ग ग

अने एम करीने तेना स्वरूपना गणो उपरनी रीते बतावी शकाय. पण तेना मेळनी दृष्टिए तेना नीचे प्रमाणेना संधिओ बताववा जोईए.

त्वां कामिनो । मदनदू । तिमुदा । हरन्ति ।[1]

पण आ संधिओ विशे तेमणे क्यांई विशेष चर्चा करी नथी.

आ ज रीते श्री चूनीलाल वर्धमान शाहे आ पद्धति स्वीकारी छे. तेओ पिंगलनी चर्चामां संधिओनो उल्लेख करे छे. पण तेमणे पण संधिना स्वरूप विशे शास्त्रीय चर्चा करी नथी. आ सिवाय सद्‌गत बर्वेए पोतानी 'गायन वादन पाठमाळा'मां घणी जगाए संधिओनो उल्लेख करेलो छे. तेओ घणी जगाए के. ह. ध्रुवना मतोने ज अनुसर्या छे. ए सघळुं जोतां के. ह. ध्रुवना निरूपणने ज पीठिका तरीके लई चर्चा करवी ए योग्य तेम ज फळदायी जणाय छे.

'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमां तेम ज 'सत्यवाद अने पक्षवाद'ना लेखमां के. ह. ध्रुवे संधिनी चर्चा करी छे पण तेनी व्याख्या करी नथी. तेनी व्याख्या पहेलवहेली तेमनां युनिवर्सिटी व्याख्यानोमां मळे छे. तेमांथी प्रस्तुत फकरा हुं नीचे उतारुं छुं. रूपबंध छंदोना सम, अर्धसम अने विषम एवा विभागो करी तेओ कहे छे:

"प्रत्येक चरणनी समाप्ति यतिकृत विरामथी जणावाय छे. चरणनी अंदर यति आवीने तेना जे भाग पडे छे, तेने में खंड नाम आप्युं छे. सखंड तेम ज अखंड चरणनो घटकावयव संधि छे. संधिमां एकथी वधारे अभिन्न के भिन्न रूप आवे छे. आ रीते आखो ए छन्द मेळबद्ध रूपोनो बने छे. ते कारणथी में तेनूं रूपबंध नाम कल्प्युं छे. चरणनी घटनामां आवता संधिना त्रण प्रकार छे. एकल अभ्यस्त अने आवृत्त. जे संधि चरणमां लागलागट यतिकृत विराम वगर बेथी वधारे वार वपरायो होय, ते आवृत्त; लागट बे वार वपरायो होय, ते अभ्यस्त; अने अणलागट वपरायो होय, ते एकल. छेल्ला बे संधिनो अनावृत्त संज्ञामां अंतर्भाव थाय छे. खंड यतिकृत विराम मागी ले छे, ज्यारे संधिने तेवा विरामनी जरूर नथी रहेती." (प. ऐ. आ. पृ. २०)

1. This system being only one of convenience is not true to rhythmic formation of metres concerned, which depends on the components happily termed sandhis by Keshavlal H. Dhruva. thus :-etc.

— Gujarati Language and Literature vol. II. p. 284.

आ पछी तेओ एक मंदाक्रान्ता वृत्तनो दाखलो आपे छे. अने तेना खंडो अने संधिओ दर्शावे छे. सरलता खातर, पहेली पंक्तिमां यतिने मारी रीते दंडथी दर्शावी, अने दरेक संधि अल्पविरामथी दर्शावी हुं तेने नीचे उतारुं छुं:

ज्यां जो,उं त्यां, । दिश वि,दिशमां, । व्योम,मां भोम,मां ते,
ज्यां होउं त्यां घर नगरमां वाटमां घाटमां ते
मीचूं नेनो पलक भर के आ रही भीतरे ते
ते ते ते ते कवण प्रगट्यूं आज अद्वैत ए ते.

वधारे स्पष्टतानी खातर नीचे तेनो लगात्मक न्यास आपी तेमां यति अने संधि उपरनी ज रीते फरी बतावुं छुं:

मंदाक्रान्ता : गागा, गागा, । ललल, ललगा । गाल, गागाल, गागा

वधारे स्पष्टता खातर तेमनुं ज कथन उतारुं छुं:

"पहेला खंडमां बे बे रूपना, बीजामां त्रण त्रणना अने त्रीजामां बे त्रण तथा बे रूपना संधि छे; ते पैकी पहेला खंडना संधि अभ्यस्त अने बीजा त्रीजामां एकल छे. अर्थात् ए दृष्टान्त अनावृत्त संधिनो छे."
(एजन पृ. २०–२१)

ते पछी आवृत्त संधिना दृष्टान्त तरीके तेओ एक तोटक उतारे छे.

आगळ जतां तेओ कहे छे के आ संधिओमां अमुक अक्षर उपर भार होय छे. काव्यकालना व्याख्यानमां फरी वार रूपबंधो विशे बोलवानो प्रसंग आवतां तेओ उपरना ज मतने फरी उच्चारी संधिमां आवता भारनो उल्लेख करे छे. तेओ कहे छे:

"चरण अखंड होय तो चरणना अने सखंड होय तो खंडना घटकावयव ते संधि कहेवाय छे. संधि बे करतां वधारे वार लागलागट वपरायो होय, तो ते आवृत्त लेखाय; बाकी अनावृत्त. प्रत्येक संधिना अक्षरोमां अमुक एक ज अक्षर भारयुक्त अने बीजा बधा भारमुक्त होय छे."
(एजन पृ. २०४)

अने आ पद्यभार ते गद्यमां आवता भारथी भिन्न छे.

"गद्यात्मक रचनामां अन्वयने अनुसरीने वाक्यना विविध भाग पडे छे. प्रत्येक भागमां आद्य अक्षर भार मूकीने बोलाय छे. ए भारने आपणे गद्यभार संज्ञा आपीशुं. एने लीधे वाक्यना भाग जुदा जुदा परखाय छे. आ

गद्यभारवाळा भाग बहुधा वर्ण, रूप, मात्रा के लयनी चोकस व्यवस्था वगरना होय छे. पद्यात्मक रचनामां चोकस उच्चारणना जूथनो एक एक भाग बने छे. तेनी घटना वर्ण रूप मात्रा के लयनी चोकस व्यवस्थासर होय छे; अने घणूं करीने तेना आद्य अक्षर उपर भार पडे छे, जेने पद्य-भार नामथी ओळखावीशूं." (एजन पृ. ७)

ज्यां एक ज पंक्ति बे छंदोमां बेसी शकती होय त्यां ए बन्ने छंदोने भिन्न करी आपनार पण पद्यभार ज छे. तेना दृष्टान्त तरीके तेओ नीचेनी पंक्ति उतारे छे:

जे निराश न थई मच्यो रहे
ते ज इष्ट सुखनी घडी जुए

आ पंक्ति रथोद्धतामां बेसे छे, पण ते साथे ते अगियार अक्षरना कवितमां पण गोठवी शकाय छे. पण ए बन्ने छंदो भारने लीधे भिन्न पडी रहे छे. "रूपबंध तरीके पद्यभार पहेला पांचमा तथा आठमा अक्षर उपर अने वर्णबंध तरीके पहेला, पांचमा तथा नवमा उपर पडे छे." एमनो मत वधारे स्पष्ट करवा हुं बन्नेना भिन्न न्यासो, पद्यभार बतावता अक्षर पर ऊभी लीटी करी बतावुं छुं:

रथोद्धता : जे निराश न थई मच्यो रहे

कवित : जे निराश न थई मच्यो रहे

"ए रीते पद्यभारनी व्हेंचणी भिन्न होवाथी, स्थूल दृष्टिए एक जेवा जणाता पद्यबंध सूक्ष्म दृष्टिए भिन्न ठरे छे." एथी ऊलटी रीते बे जुदा नामना छंदोमां पण पद्यभार एक ज होय तो ते छंदोने स्वरूपतः एक ज गणवा जोईए. (एजन पृ. ५२)

आ प्रमाणे संधिना स्वरूपनी चर्चा सामान्य रूपे पूरेपूरी करेली होवा छतां, व्याख्याताए, पिंगलना बधा छंदोना संधिओ अने पद्यभारो दर्शाव्या नथी. अलबत मात्राबंधो विशे बोलतां तेओ मात्रामेळ छंदोना बधा संधिओनो निर्देश करे छे, अने ते ते संधिनां आवर्तनो उपरथी कया कया मात्रामेळ छंदो थया ते बतावे छे, एटले तेमना मत प्रमाणे मात्रामेळ छंदोना संधिओ कया कया ते तरत मळी आवे छे (एजन पृ. २९–३०). पण मात्रामेळ छंदनो संधि तेनां आवर्तनोमांथी शोधी काढवो हमेशां सहेलो छे. फारसी गजलोनुं पिंगल आ संधिओनां आवर्तनोथी बतावाय छे, अने ते

प्रमाणे गुजराती मात्रामेळ संधिओ पण सहेलाईथी बतावी शकाय. खरी मुश्केली अनावृत्तसंधि अक्षरमेळनी ज छे. तेना संधिओ, आगळ जोयुं तेम, अक्षरसंख्यामां के अक्षरना लघुगुरु स्वरूपमां एक सरखा नथी, तेम ज एक पंक्तिमां केटला संधिओ छे एनो पण नियम नथी. खरी रीते के. ह. ध्रुवनी नवीनता आ वृत्तोने अंगे संधिओ दर्शाववामां ज रहेली छे. अने ते तेमणे आ व्याख्यानोमां सळंग के आडुंअवळुं पण करेलुं नथी. अलबत १९०८ ना 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना निबंधमां तेमणे केटलांक मुख्य वृत्तोना न्यासो आप्या छे, पण ते विशेनो मत तेमणे बदलाव्यो छे के नहीं ते जाणवानुं कशुं साधन नथी. एकाद जगाए ज्यां कंई फेरफार कर्यो छे त्यां पण ते तरफ ध्यान दोरी कर्यो नथी पण वाचके सूक्ष्म रीते बन्ने व्याख्यानोने सरखावीने शोधी काढवानो रहे छे. दाखला तरीके आगला पद्यरचनाना लेखमां स्वागता रथोद्धताना निरूपणमां तेओ प्रथम स्वागतानुं दृष्टान्त आपे छे, अने पछी बन्नेना फरकनी चर्चा करे छे. चर्चा समजवी सहेली पडे माटे हुं प्रथम बन्नेना न्यासो आपुं छुं. अलबत अहीं संधिओ मारी रीते पाडीने आपुं छुं. कारण के ए निबंधमां संधिओ दर्शाव्या नथी.

स्वागता : गालगा लललगा ललगागा
रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा

तेओ लखे छे: "बन्नेमां पहेलां आठ रूप अने अगियारमुं एक ज छे[2] मात्र नवमूं अने दसमूं रूप एकमां लगा छे ते बीजामां गाल छे".[2] मुद्रणमां लगा उपरनुं भारचिह्न बन्ने अक्षरो वच्चे छपायेलुं छे पण हुं मानुं छुं के ते गा उपर ज हशे. ए गमे ते होय गाल उपरनुं भारचिन्ह बराबर गा उपर ज छे. अने ते ज मारे प्रस्तुत छे,—महत्त्वनुं छे. ए रीते रथोद्धताना नवमा अक्षर उपर भार आव्यो. त्यारे आपणे हमणां ज जोई गया के 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'ना व्याख्यानमां तेमणे रथोद्धतामां आठमा अक्षर उपर भार दर्शाव्यो अने ए भारने ज कवितना पद्यभारनुं भेदक लक्षण गण्युं.

२–२. मूळना वाक्यमां फेरफार करीने आ वाक्य में लख्युं छे. मूळमां "मात्र नवमूं रूप एकमां लगा गाल छे." आ प्रमाणे छे. त्यां विवक्षितार्थ मारा वाक्य प्रमाणेनो ज होई शके एमां शंका नथी, अने ए अर्थ तेओ आवा अधूरा अने संदिग्धार्थ वाक्यथी न दर्शावे. हुं मानुं छुं के अहीं कंईक छापवानी भूल छे, अथवा नकलमां स्खलन छे.

बीजी मुश्केली ए छे के संधि अने पद्यभारनो संबंध तेमणे स्पष्ट कर्यो नथी. आपणे आगळ जोयुं के तेमना मत प्रमाणे बधा प्रकारोमां संधिओ होय छे, पण तेमां भार कई जगाए होय छे ते संबंधी तेमां कशुं ज कहेता नथी. "पद्यात्मक रचनामां चोकस उच्चारणनां जूथनो एक एक भाग बने छे. तेनी घटना वर्ण रूप मात्रा के लयनी चोकस व्यवस्थासर होय छे; अने घणुं करीने तेमां आद्य अक्षर पर भार पडे छे, जेने पद्यभार नामथी,

| |
ओळखीशुं." (एजन पृ. ७) अहीं कदाच कोईने एम लागे के दादालदा जेवा मात्रामेळ संधिओमां पद्यभार प्रथम अक्षर के मात्रा उपर आवतो नथी तेनो अपवाद करवा 'घणुं करीने आद्य अक्षर उपर भार पडे छे' एम कह्युं छे. पण एमणे पोते आ ज विधान पाछुं मात्र अनावृत्त संधिओना विवेचनमां पण कर्युं छे. "चरण अखंड होय तो चरणना अने सखंड होय तो खंडना घटकावयव ते संधि कहेवाय छे. संधि एक करतां वधारे वार लागलागट वपराया होय, तो ते आवृत्त लेखाय; बाकी अनावृत्त. प्रत्येक संधिना अक्षरोमां अमुक एक ज अक्षर भारयुक्त अने बीजा बधा भारमुक्त होय छे." (एजन पृ. २०४) अहीं तो अक्षरमेळनी ज वात करे छे. अने छतां 'संधिना अक्षरोमां अमुक एक अक्षर भारयुक्त' होवानुं कहे छे—नहीं के संधिनो पहेलो अक्षर ज. अने 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमां आपेला न्यासोमां एवा संधिओ छे जेमां आद्य अक्षर उपर नहीं पण अनादि अक्षर उपर भार दर्शावेलो छे. जेमके

| | || | |
जलोद्धतगति : लगाल ललगा लगाल ललगा

| || | |
क्षमा : लललल ललगा गालगा गालगा

(सा. वि. २, पृ. २८०)

अने आम करवाथी मुश्केली ए ऊभी थाय छे के जो संधिना पहेला अक्षर उपर ज के अमुक स्थानना अक्षर उपर ज पद्यभार आवे एवी व्यवस्था न होय, तो पछी एक संधिने बीजाथी जुदो पाडनार तत्त्व कयुं? अलबत मात्रामेळ छंदोना केटलाक संधिओमां पहेली मात्रा उपर भार आवतो नथी. पण त्यां तो संधिनां आवर्तनो होय छे अने आवर्तनोमांथी संधि तरत शोधी शकाय छे. पण ज्यां आवर्तनो नथी ज, त्यां जो भारथी संधिओ छूटा न पाडवा होय तो बीजा शेनाथी पाडवा ते दर्शाववुं जोईए. ए न दर्शावीए तो संधिओ पाडवामां केवळ मनस्विता ज प्रवर्ते.

में उपर जणाव्युं के सद्‌गत बर्वेए पण संधिओनो उल्लेख कर्यो छे. अलबत तेओ मुख्यत्वे के. ह. ध्रुवने अनुसर्या छे, पण संधिओनी बाबतमां

तेओ कहे छे के दरेक संधि आ भारथी शरू थाय छे: बवें, अनावृत्तसंधि वृत्तोमां वपराता भिन्न भिन्न स्वरूपना अने अक्षरसंख्याना संधिओ अने तेनी टूंकी संज्ञानी रीत आपी पछी कहे छे:

"आवां लक्षणोमां जे जे संधि आवे ते संधिना आरंभे जे लघु के गुरु होय तेना उपर ज ताल[3] आववो जोईए. एटले के, आ रूपसंधिओ ते, वृत्तोना वर्ण बोलती वखते तेना पडता स्वाभाविक जथा सूचवे छे, तालनी जगाओ सूचवे छे, अने ते प्रमाणे वृत्तनी बोलवानी चाल (राह) केवी होय छे ते पण सूचवे छे." ('गायन वादन पाठमाळा' पुस्तक १लुं, विभाग ३ जो, पृ. १०९)

अने दरेक संधि भारथी शरू थाय छे एम कहेवाथी एक प्रकारनी उपपत्ति तो आवे छे. शास्त्रनो ए विभाग सुसंगत बने छे. अने जाणे आ शास्त्रीय आवश्यकता ध्रुवना मन पर अज्ञात असर करती होय तेम

---

३. बवें अहीं ताल शब्द वापरे छे पण ते उपरथी पद्यभार समजवानो छे. बवें संगीतनो ताल, मात्रामेळ आवृत्तसंधि छन्दोनो पिंगलगत ताल, अने अनावृत्तसंधि वृत्तोमां के. ह. ध्रुव जेने पद्यभार कहे छे तेनो भेद समजे छे. तेणे पोते उपरना ज संदर्भमां आगळ जतां कह्युं छे:

"आ संधिओ जणाव्या, तेमांथी कोई पण एक ज संधिनी बे अथवा ते करतां घणी आवृत्तिओथी जो वृत्त बनाववामां आवे तो ते वृत्त गेय एटले गायनने अनुकूळ थशे. पण जो जुदा जुदा अनुवादी संधिओ लई तेनुं वृत्त बनावीए तो ते पाठ्य, एटले के श्लोकनी माफक बोलातुं वृत्त थशे; केमके एक ज संधि पुनः पुनः अनेक वार आवे तो, गायन पक्षे तालना सरखी मात्राना समूहो थता होवाथी कोई पण चोक्कस तालमां गाई शकवानी अनुकूळता थशे. परंतु पाठ्य वृत्तमां एक ज संधि, बे करतां वधारे वार आवर्तन पामतो नहीं होवाथी गायन पक्षे कोई एक मुकरर ताल थतो न होवाथी पाठ्य वृत्त ते मात्र पाठ(पठन) करवानी रीत प्रमाणे बोलाशे." वगेरे. (एजन पृ. ११०)

(अहीं अनुवाद शब्द संवादना अर्थमां वापर्यो जणाय छे.)

खरूं तो के. ह. ध्रुवे 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मां ज सौथी पहेलो पद्यभार शब्द वापर्यो. अने बवेंनुं पुस्तक ते पहेलां बहार पडेलुं छे. बवें के. ह. ध्रुवना 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखने अनुसर्या छे, अने तेमां पद्यभार माटे कोई खास पारिभाषिक शब्द वपरायो नथी, एटले बवेंए एने माटे ताल शब्द वापर्यो छे.

तेओ एक जगाए बर्वेनो ज मत उच्चारे छे. आख्यानकालनां वृत्तो उपरना व्याख्यानमां उपेन्द्रवज्रा अने इन्द्रवज्रानी चर्चा करतां बन्नेना संधिओ बणावी तेओ कहे छे: "चरणना आ नाना मोटा जूथने हुं संधि संज्ञाथी ओळखावुं छुं. प्रत्येक संधिनो आद्य अक्षर भारयुक्त होय छे अने ते पछीना अक्षर भारमुक्त रहे छे." (प. ऐ. आ. पृ. १२०–२१) अलबत आगळनो उल्लेख उपेन्द्रवज्रानो छे पण एना उपरथी सर्वसंग्राहक निरपवाद व्याप्ति आपवानो ज अहीं स्पष्ट अभिप्राय छे.

आम ज्यारे संधि विशे प्रथम उल्लेख करनारनां ते विशेनां वचनोमां एकरूपता नथी, अने तेमने ज अनुसरीने पिंगल लखनार बर्वेनु कथन बीजुं कंई नहीं तो सुसंगत तो लागे छे, अने तेने पण के. ह. ध्रुवना एक वचननो टेको तो छे, त्यारे संधिना स्वरूपनुं ए ज लक्षण, एटले के दरेक रूपसंधिना आद्य अक्षर उपर ताल के पद्यभार होय छे, स्वीकारी लईए तो शुं खोटुं? पण एम करवा जतां बीजी मुश्केली ऊभी थाय छे. अने ए मुश्केली संधिना स्वरूपने लगती ज छे. ए मुश्केली ए छे के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां पद्यभार क्यां क्यां छे ए संबंधी तेना लेखकोमां ज मतभेद छे.

पद्यभारना संबंधमां त्रण भिन्नभिन्न छन्दःशास्त्रीओना मतो सरखाववा जोईए. तेमांना बेनो उपर निर्देश कर्यो छे—के. ह. ध्रुव अने बर्वेनो. बर्वे तो के. ह. ध्रुवना अनुयायी छे छतां बन्नेमां भेद छे. त्रीजा पिंगलशास्त्री ते आपणा आद्य पिंगलकार दलपराम छे. मात्रामेळ छंदोमां ताल होय छे एम कहेनार ए आद्य पिंगलकार छे. तेमणे तेमना पिंगलमां बधा अक्षरमेळ छन्दोमां अमुक अमुक अक्षर उपर तालचिह्न मूकेलुं छे. आ तालचिह्न सौथी पहेलुं चोथी आवृत्तिमां देखा दे छे. अने त्यां प्रकरण ३ जुं अक्षरमेळ छन्दो उपर एकडो करी नीचे टीप छे के "अक्षरमेळ छंदोमां पहेला चरणमां ताल बताववाने आवी निशानी मूकी छे. ते प्रमाणे बीजां चरणोमां समजवुं." जो बर्वेना तालने आपणे ध्यानमां लईए तो आने पण ध्यानमां लेवो जोईए.

आ त्रण पिंगलकारोनी पद्यभारयोजनानी हुं सरखामणी करुं ते पहेलां मारे ए कहेवानुं छे के आमांना दरेकमां पोताना लेखमां ज पद्यभारमां विसंवाद आवे छे. अने ते हुं पहेलां दर्शाववा इच्छुं छुं. आ ज प्रकरणमां रथोद्धताना न्यासमां के० ह० ध्रुवे 'पद्यरचनाना प्रकारो'मां अने ते पछी प्रसिद्ध थयेल 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मां भिन्नभिन्न जगाए पद्यभार मूक्यो छे ते हुं कही गयो. ए विसंवाद माटे तो एम कही शकाय के एमणे विशेष विचार पछी आगलो अभिप्राय सुधार्यो. पण तेमना 'पद्यरच-

નાના પ્રકારો 'ના લેખમાં પણ એક જ છંદમાં ભિન્ન ભિન્ન પદ્યભારો જોવામાં આવે છે. ત્યાં એવો ખુલાસો શક્ય નથી. એ નિબંધમાં વૈતાલીયનું લક્ષણ તેમણે નીચે પ્રમાણે આપેલું છે.

| | | |
દદદા પછિ ગાલગા લગા
| | | |
દદદાદા પછિ ગાલ ગાલગા

સા. વિ. ૨. પૃ. ૨૮૮

આ માત્રગર્ભ વૈતાલીયનું સામાન્ય લક્ષણ છે. અને એ લક્ષણ તેમણે વિયોગિની અથવા સુન્દરી છન્દમાં આપેલું છે. એ રીતે વિયોગિની કે સુન્દરી છંદનો પદ્યભાર નીચે પ્રમાણે થયો :

| | | |
લલગા લલ ગાલગા લગા
| | | |
લલગાગા લલ ગાલ ગાલગા

આગળ જતાં વૈતાલીય અને તેને અંતે એક ગુરુ વધારવાથી બનતા ઔપચ્છન્દસિકમાં સળંગ લગાત્મક રૂપો વિષે લખતાં કહે છે: "વળી એના એ બે છંદોના માત્રાત્મક ભાગમાં વિષમ ચરણમાં લલગા લલ ને સમમાં લલગાગા લલ એવો ચિત્રબંધ યોજવાથી અનુક્રમે સુન્દરી ને માલ્યભારા સિદ્ધ થાય છે." આ રીતે, સુન્દરીના માત્રાગર્ભ ભાગો વિષમ સમ પંક્તિઓમાં, નીચે પ્રમાણે પદ્યભારવાળા થાય.

| |
લલગા લલ
| |
લલગાગા લલ

સમ પંક્તિમાં લલગાગામાં પદ્યભારની ઊભી લીટી બન્ને ગા વચ્ચે વંચાય છે. તેને ઉપરના ન્યાસની સાથે સંવાદમાં લાવવા લલગાગા વાંચીએ, પણ ઉપરના ન્યાસમાં સમ પંક્તિમાં લલ તદ્દન ભાર વિનાનો સંધિ છે, અને નીચે લલમાં ભાર આવે છે તેનો શો ખુલાસો? કર્તાના પોતાના મનમાં સંદેહ છે, કે નકલની ભૂલ છે કે છાપની ભૂલ છે, શું સમજવું?

બર્વેના પુસ્તકમાં તાલચિહ્નો ખસી ગયાંનો અને તૂટી ગયાંનો સંદેહ આવે છે. એટલે એવા વિસંવાદો ધ્યાનમાં ન લઈએ. પણ તેમનાંમાં પણ એક જગાએ સ્પષ્ટ વિસંવાદ દેખાય છે. અક્ષરછંદગાન વિભાગમાં તેમણે શિખરિણીના પદ્ય-

भारो नीचे प्रमाणे आप्या छे. (तेमणे अक्षर नीचें आडी लीटी करी बताव्या छे, हुं अहीं स्वीकारेली ऊभी लीटीथी बतावीश.)

छ ए रुद्रे छेदो । यमनसभलागे शिखरिणी

(गायन वादन पाठमाळा पु. १ वि. ३. प्र. २. पृ. ३७)

पण आगळ जतां रूपसंधि समजावतां तेओ तेना संधिओ नीचे प्रमाणे आपे छे:

२. शिखरिणीनुं चरण — कुपुत्रो तो थाशे तदपि न कुमाता कदि थशे

(अ) गणमेळवी वर्ण विभाग: कुपुत्रो, तो थाशे, तदपि, न कुमा, ता कदि, थशे.

(ब) बोलवामां पडता स्वाभाविक विभाग { कुपु, त्रो तो थाशे, तदपि न कुमा, ता, कदि थशे

(एजन. प्र. ३. पृ. १०८)

बन्नेनी सरखामणी सहेली थाय माटे बन्नेने लगात्मक रूपमां एमना ज संधिओमां मूकी बतावुं छुं:

पहेलो न्यास : लगा, गागा, गागा। लललल गागा, लललगा

बीजो न्यास : लगा, गागागागा । ललललगा, गा, लललगा

बवें दरेक संधिना आद्याक्षर पर ताल गणे छे ते प्रमाणे बीजा न्यासना संधिमां पण में ताल बतावेल छे. फरक तरत नजरे चडशे.

आवो ज फरक ए ज स्थाने आपेला वसन्ततिलकाना निरूपणमां पण मळी आवे छे. पृ. २७ उपर बवें वसन्ततिलकामां नीचे प्रमाणे तालस्थानो दर्शावे छे.

गागालगा लललगा ललगा लगागा

पण पृ. १०७ उपर ए छन्दना बोलती वखते पडता स्वाभाविक वर्णविभाग नीचे प्रमाणे आपे छे.

संगीतनो, परमअद्, भुत शो प्र, ताप

दरेक संधि अल्पविरामथी दर्शाव्यो छे, अने संधिना आद्याक्षर उपर ताल मूकतां तेनो लगात्मक तालन्यास नीचे प्रमाणे थाय

गागालगा लललगा ललगाल गागा

आ संदर्भमां जे ताल आपेला छे तेने हुं आगळ सरखामणी माटे मूकेला न्यासोमां ग संज्ञाथी जणावीश.

दलपतरामना पिंगलमां एक बीजी ज जातनो विसंवाद जणाय छे. एमना पिंगलनी घणी आवृत्तिओ थई छे. तेमां बीजी आवृत्ति सुधी अक्षरमेळ वृत्तोमां तालचिह्न नथी. चोथीमां सौथी प्रथम तालचिह्न छे ते हुं आगळ कही गयो. बेनी छ आवृत्तिओमां प्रस्तावना नथी. सातमी आवृत्तिनी जे नकल हुं वापरुं छुं तेमां मुखपृष्ठ नथी पण प्रस्तावना उपर पेनसिलथी १८९० लखेल छे ते हुं प्रकाशन साल मानुं छुं. तेमां दलपतराम पोते जणावे छे के आज सुधी तेमणे जे लक्षणो आपलां तेमां गणो तोडी नांखेला हता. "परंतु अभ्यासीने अडचण पडवाथी रा. रा. केशवलाल हर्षदराय ध्रुव, बी. ए. नी सलाहथी आ आवृत्तिमां केटलोक फेरफार कर्यो छे. . . " आ आवृत्तिने पुनःशोधित आवृत्ति गणवी जोईए. आमां उपर कह्या प्रमाणे मात्र गणोमां ज सुधारो कर्यो एम नथी. पण अक्षरमेळनां लक्षणोमां तालस्थानोमां पण फेरफार थया छे. आ फेरफारो पण के. ह. ध्रुवनी सूचना के संमितिथी थया के केम ते जाणवा साधन नथी. पण तालचिह्नो बदलायां छे ए आपणा पर्येषण माटे प्रस्तुत छे. आ पछी हुं १२मी आवृत्तिने महत्त्व आपुं छुं. ए सुधारायेली आवृत्ति नथी. पण दलपतरामना जीवन दरमियाननी ए छेल्ली आवृत्ति गणाय ए तरीके ए जोवा जेवी गणाय. ते पछी पिंगलनी शोधित आवृत्ति २२मी छे. त्यां तो स्पष्टपणे सुधारो के. ह. ध्रुवे ज करेलो छे. तेनी प्रस्तावनामां गु. व. सोसायटी (हाल गुजरात विद्यासभा)ना आसि. सेक्रेटरी लखे छे: "चालु सालमां पिंगळनी नवी आवृत्ति छपावती वखते समयानुसार योग्य फेरफार करवानुं वास्तविक जणायाथी रा. ब. केशवलाल ध्रुवने विनंति करतां तेओए आखुं पिंगळ नवेसरथी तपासी जई घटता फेरफार अने सुधारा करी आप्या छे. . . . " आना उपरनी पादटीपमां लखेलुं छे के "एमणे खास करीने प्रकरण ३ मां प्रभावती तथा पृथ्वी छंद उपर पृ. ५० ने पृ. ५६ मां उपयोगी टिप्पणी उमेरी छे. . . . " आ आवृत्तिथी पुस्तकनुं नाम 'गुजराती पिंगळ'ने बदले 'दलपत पिंगळ' राखवामां आव्युं जे अत्यारे चालु छे. अत्यारे आनी ३०मी आवृत्ति वेचाय छे ते उपर जणावी ते २२मीनुं पुनर्मुद्रण छे. आ २२मी आवृत्तिमां पण अक्षरमेळ छंदोना तालोनां स्थानोमां थोडा फेरफारो थया छे. आ फेरफारनुं कर्तृत्व के. ह. ध्रुवनुं गणवुं के नहीं ते पण निर्णयपूर्वक कही शकातुं नथी. ए बनवा जोग छे के एमणे फेरफारो कर्या होय अने ए बाबत गौण गणावाथी प्रस्तावनामां न नोंधाई होय. खरुं तो अक्षरमेळ वृत्तोना तालो पर कदी कोईनुं ध्यान ज गयुं नथी.

पण के. ह. ध्रुवनुं कर्तृत्व होय के न होय, ए आवृत्तिमां तालचिह्ननुं स्थानांतर थयुं होय तो ए प्रस्तुत तो छे ज.

एटले दलपतरामे आपेला पद्यभारना स्थाननो निर्देश करतां तेमना पिंगलनी चार आवृत्तिओ ४थी, ७मी, १२मी, २२मीमां आपेलां स्थानोनो निर्देश करवो जोईए. जे जे छन्दमां भिन्नभिन्न आवृत्तिओमां तालस्थानो फरी गयां छे ते ते छन्दमां हुं ते ते आवृत्तिनी संख्या मूकी तालस्थान बतावीश. ज्यां चारेय आवृत्तिओमां तालस्थान एनुं ए रह्युं हशे त्यां ते स्थान उपर दलपतरामना नामनो आद्याक्षर 'द' मूकीश. ते ज प्रमाणे के. ह. ध्रुवने माटे 'के' अने बर्वेने माटे 'ब' मूकीश. के. ह. ध्रुवनां तालस्थानो आगळ कही गयो तेम तेमना 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमांथी लईश कारण के तेमणे त्यां ज सौथी वधारे छन्दो पद्यभारस्थान साथे बतावेला छे. (सा. वि. भा. २. पृ. २७२ थी २८९) पण जे थोडा दाखलामां तालस्थानो 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मां आप्यां छे तेनो निर्देश आलोचना शब्दना आद्याक्षर 'आ' थी करीश. बर्वेए पोतानां तालस्थानो तेमना 'गायन वादन पाठमाळा' पुस्तक १, ना विभाग ३ ना खंड १ छंदोगान विनोद प्रकरण १ अक्षरछंद गानमां आपेल छे. (पृ १ थी ५१.)

हवे हुं त्रीजा प्रकरणमां आपेला छन्दोने ए ज क्रमथी अने ए ज संधिन्यासथी एक पछी एक लउं छुं:

इन्द्रवज्रा :

ब	ब		
आ	आ	ब	ब
के	के	आ	आ
द	द	द	द
गा गा ल गा	गा	ल ल गा	ल गा गा

उपेन्द्रवज्रामां भारस्थान बदलातां नथी. त्रणेय ग्रन्थकारो उपरनां ज स्थानो आपे छे. अने ए बेमां उपजाति पण आवी जाय छे.

इन्द्रवंशा :

ब	ब	ब	ब	
आ	आ	आ	आ	
द	द	द	द	द
गा गा ल गा	गा	ल ल गा	ल गा	ल गा

वंशस्थमां पण उपर प्रमाणे ज भारस्थानो आवे छे. पछी उपजाति विशे कंई कहेवानुं रहेतुं नथी.

आ पछी वसंततिलका लईए :

								ग				ग	
								ब				ब	
ग			के					के				के	
ब			२२		ब			२२				२२	
१२			१२		के			१२				१२	
७	के		७		२२			७				७	
४	२२	ब	४	ग	४			४				४	४
गा	गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	ल	गा	ल	गा	गा

चपळा :

	२२		२२				२२			
	७		७				७			२२
	४		४				४		७	४
गा	गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	ल	गा

१२मी आवृत्तिमां दलपतरामना ताल ७मी प्रमाणे छे. के. अने ब.ओ आ वृत्त आपेलुं नथी.

रथोद्धता :

आ										
२२		२२			आ					२२
१२		१२			१२		आ	के		१२
७		७			७		२२	१२		७
४		४			४		७	४		४
गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	गा	ल	गा

आ. अने के.ना तफावत विशे आ प्रकरणमां हुं आगळ कही गयो छुं. बर्बे आ वृत्त आपता नथी.

स्वागता :

२२		२२				२२			२२	
७		१२				१२			७	
४		४		४		७			४	४
गा	ल	गा	ल	ल	ल	गा	ल	ल	गा	गा

के.नो मत निश्चित थई शकतो नथी. व.मां आ वृत्त आपेलुं नथी.

मंजुभाषिणी :

के	के		के	के
२२	२२	के	२२	२२
७	७	७ २२	७	७
ल ल गा	ल गा	ल ल ल गा	ल गा	ल गा

१२, ७ प्रमाणे छे. ४मां आपेलुं नथी.

कलहंस :

के	के	के	
द	द	द	द
ललगा	लगा	लललगा	ललगागा

बर्वे आ छंद आपता नथी.

प्रमिताक्षरा :

के	के	के	के
द	द	द	द
ललगा	लगा	लललगा	ललगा

बर्वे आ वृत्त आपता नथी.

चन्द्रवर्त्म :

द द	द	द
गालगा	लललगा	ललललगा

के. अने व.ए आ वृत्त आप्युं नथी. एटले के आमां सरखामणी शक्य नथी.

प्रियंवदा :

ब		ब	
२२		२२	२२
४	४ २२	४ २२ ४	४ ४
ल ल ल गा		ल ल ल गा	ल गा ल गा

७ अने १२मांनां तालस्थानो छापवामां ऊडी गयां जणाय छे. जे थोडां छे ते उपर प्रमाणे छे. २२मी मां पुष्कळ फरक छे. के. मां आ वृत्त आपेलुं नथी. ब.मां बे ज तालस्थानो छपायां छे. पण वधारे हशे ने ऊडी गयां हशे एम लागे छे.

द्रुतविलंबित :

```
के          ब                       के
२२          के                      २२
१२    १२    २२                ब     १२
७     ७     ७          के     ७     ७
४     ४     ४    १२    २२     ४     ४
ल ल ल गा    ल ल गा     ल ल गा     ल गा
```

ब.मां बे ज तालस्थानो वंचाय छे. वधारे हशे ने ऊडी गयां हशे एम लागे छे.

वियोगिनी के सुन्दरी: सगवड खातर पहेलां बे चरणोनो न्यास एक सळंग पंक्तिमां लखुं छुं.

```
के    के          के    के     के      के        के
२२    २२     के   २२    २२     २२      २२        २२   २२
४     ४    २२ ४   ४     ४      ४   ध्रु  ४        ४    ४
ललगा ललगा लगा लगा ।  ल ल गा गा    ललगा       लगा लगा
```

४, ७, १२ सरखा ज छे. २२मां थोडो फेर छे. के.मां थोडो फेर छे. बर्वेए आ वृत्त आप्युं छे पण तेमां ताल दर्शाव्या नथी. ध्रु. विशे आगळ कही गयो छुं.

पुष्पिताग्रा :

```
२२  २२            २२                 २२    २२    २२   २२
१२  १२         १२ १२ १२              १२    १२    १२   १२
७   ७          ७  ७  ७   २२          ७     ७     ७    ७
४   ४  ४   २२  ४  ४  ४   ४७          ४     ४     ४    ४४
ललललललगा   ल गा लगा गा ।  ललललगा  ललगा   लगा लगा गा
```

के.ए भारस्थानो दर्शाव्यां नथी. ब.ए आ वृत्त आपेलुं नथी. पृथ्वी हुं लेतो नथी कारण के द.मां तेनुं स्वरूप दोषवाळुं छे, अने के.ए तेमां भार-

स्थानो आप्यां नथी. एटले सरखामणी माटे अवकाश नथी. नर्दटक पण कोईए आपेलुं नथी.

शालिनी :

२२ २२ २२ २२
७ ७ ७ ७ ७ ७
४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
गा गा गा गा । गा ल गा गा ल गा गा

७ प्रमाणे १२ छे. २२मीमां छेवटना तालो छपाया नथी एम लागे छे. के.ए आ छंदनुं निरूपण करेलुं छे पण भारस्थान बताव्यां नथी. ब.ए छंद लीधो नथी.

वैस्वदेवीमां दलपतरामनां भारस्थानो चारेय आवृत्तिमां एक ज छे, पण के.मां तेनां भारस्थान दर्शाव्यां नथी, अने ब.ए ए आपेल नथी एटले एने अहीं स्थान आपतो नथी.

मंदाक्रान्ता :

ब ब ब
२२ २२ २२ २२ २२ २२ २२
४ ४ ४ ४ ४ ४ ४ ४
गा गा गा गा । ल ल ल ल ल गा । गा ल गा गा ल गा गा

७ अने १२, ४ प्रमाणे छे. २२मां थोडो फेर छे. के. छन्दनुं स्वरूप आपे छे पण के.मां के आ.मां भारस्थान दर्शाव्यां नथी. ब.नां केटलांक ताल-स्थानो ऊडी गयां होवानो संभव छे.

स्रग्धरा :

ब ब ब ब
२२ २२ २२ २२ २२ २२ २२
७ ७ ७ ७ ७ ७ २२ ७ ७ ७
४ ४ ४ ४ ४ ४ ७ ४ ४ ब ४ ४
गा गा गा गा ल गा गा । ल ल ल ल ल ल गा । गा ल गा गा ल गा गा

१२नां स्थानो ७ प्रमाणे छे. के.मां भारस्थानो बताव्यां नथी. ब.नां कोई स्थानो ऊडी गयां हशे एम स्वीकारीए तो पण स्थानोमां फरक स्पष्ट छे.

मालिनी :

ब ब ब ब
१२ १२ १२ १२ १२ १२
४ ४ ४ ४ ४ ४ ब ४ ४
ल ल ल ल ल ल गा गा । गा ल गा गा ल गा गा

७नां स्थानो मात्र एक ज जगाए १२थी जुदां पडे छे, तेने छापनी भूल हुं गणुं छुं. २२, १२ प्रमाणे ज छे. के.मां भारस्थानो दर्शाव्यां नथी.

हरिणी :

ब ब ब
ब २२ १२ २२ २२ २२
२२ ७ ७ ७ ब ७ ब २२ ७ ब ७
ल ल ल ल ल गा । गा गा गा गा । ल गा ल ल गा ल गा

७ प्रमाणे १२नां भारस्थानो छे. २२नां जरा जुदां छे. के.मां भारस्थान आपेलां नथी.

सुवदना दलपतरामे अने बर्वेए आपेलुं नथी एटले लेतो नथी. तेम ज प्रहर्षिणी पण दलपरामे अने बर्वेए आपेलुं नथी एटले लेतो नथी. प्रभावती दलपतरामे आपेलुं छे पण तेनुं स्वरूप प्रचलित प्रभावती के रुचिराथी भिन्न छे, तेम ए बर्वेए लीधेलुं नथी माटे अहीं लेतो नथी.

शिखरिणी :

ग ग ग
ग ब ब ब ब ब
ब २२ २२ २२ २२ २२ २२
२२ ४ ४ ४ ४ ४ २२ ४ ग ४ ४
ल गा गा गा गा गा । ल ल ल ल ल गा गा ल ल ल गा

७ अने १२नां भारस्थानो ४ प्रमाणे छे. २२नां भिन्न छे ते आप्यां छे. उपर बतावेलां ब.नां स्थानो अक्षरछंदगान पृ. ३७मेथी लीधेलां छे. पृ. १०८ उपर ए भिन्न स्थानो बताव्ये छे ते आगळ कही गयो छुं. ग संज्ञाथी ए स्थानो अहीं फरी बतावुं छुं. बीजा यतिखंडनो सातमो गुरु बर्वेए ए स्वतंत्र संधि होय तेम छूटो लखेलो छे ते सताल छे के नहीं एवो प्रश्न थाय पण बर्वे एकला गुरुने पण संधि गणे छे अने दरेक संधिना

आद्याक्षर पर ताल गणे छे ए दृष्टिए त्यां ताल गणवो जोईए. के.मां स्थानो आप्यां नथी.

शार्दूलविक्रीडित :

व व   व व   व   व   व

७ ७   ७ ७   ७   ७   ७ ७

४ ४   ४ ४   ४   ४   ४ ४

गागागा ललगा लगा ललगा । गागागालगा गालगा

१२ अने २२नां भारस्थानो ७ प्रमाणे ज छे. के.मां स्थानो दर्शाविलां नथी.

आटलां वृत्तोनी सरखामणी माटे त्रणेय लेखकोनां पुस्तकोमांथी सामग्री मळी शके छे. के. ह. ध्रुवमांथी मळती सामग्री जोतां एक प्रकारनो असंतोष रहे छे. संधिना अस्तित्व विशे बोलनार ए ज पहेला छे. तेमणे 'पद्यरचनाना प्रकारो'नो लांबो निबंध लख्यो छे अने 'ऐतिहासिक आलोचना'नुं मोटुं पुस्तक लख्युं छे छतां तेमणे बधां वृत्तोना संधिओ आप्या नथी. 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेख पछी तेमणे क्यांई अभिप्राय बदलाव्यो के नहीं ते स्पष्ट कर्युं नथी. रथोद्धताना न्यासमां पूर्व अने अपर कथनमां फेर पडे छे ते में शोधी बताव्युं छे. ते उपरांत ए के तेमणे जेटला छंदो विशे लख्युं छे ते बधाना संधिओ अने पद्यभार पण तेमणे बताव्या नथी. 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना लेखमां क्यांक संधि अने भार आपे छे क्यांक नथी आपता. क्यांक आपशे एवी अपेक्षा ऊभी करी पाछा नथी आपता! जेम के उपेन्द्रवज्रानुं अने इन्द्रवज्रानुं दृष्टान्त आपी पछी लखे छे: "उपेन्द्रवज्रामां पहेलां ने छेल्लां पांच रूप एनां ए छे. ए बे संधि एक लघुथी मध्यमां जोडाय छे. संधि आकारमां मळता छे, पण उच्चारणमां भिन्न छे. पूर्वसंधिमां पहेलुं अने चोथुं रूप जोरदार छे." (सा. वि. २, पृ. २७२) अहीं पहेलां पांच रूपोमां पद्यभार दर्शाव्यो नथी. साथे साथे कह्युं छे के छेल्लां पांच रूप एनां ए होवा छतां, तेनुं उच्चारण जुदुं छे, अर्थात् एमां पद्यभार जुदो आवे एवुं सूचन कर्युं पण ए उच्चारण कई रीते जुदुं छे, अने एमां पद्यभार क्यां आवे ए कशुं कह्युं नहीं. सखंड छंदोमां प्रसिद्ध शालिनी, प्रहर्षिणी, मालिनी, मंदाक्रान्ता, शिखरिणी, हरिणी, शार्दूलविक्रीडित, सुवदना, स्रग्धरा एमां क्यांई संधि न बताव्या तेम पद्यभार न दर्शाव्यो, अने तेनाथी घणा ओछा प्रसिद्ध पथ्या, प्रमदा, रमणीयक, जलोद्धतगति, क्षमा, मध्यक्षामामां बन्ने बताव्यां. त्यारे प्रसिद्ध वृत्तो विशे एमना मनमां संधिना स्वरूप विशे संदेह छे एम मानवुं? खरुं तो एनां ज संधि-पद्यभारो आपवां जोईए कारण के प्रसिद्ध

अने परिचित होवाथी वांचनार ए तरत समजी शके अने चकासी जुए. प्रहर्षिणीनुं दृष्टान्त आपी लखे छे: "आमां प्रथम खंडने छेडे ने बीजा खंडने आरंभे पण जोरदार रूप छे. जोरदार रूप सळंग बोलवानी अगवड दूर करवाने यति विवक्षित छे." पण यतिनी बन्ने बाजुनां ए बे स्थानो उपरांत पद्यभार बीजे क्यां छे ते न कह्युं.

अने के. ह. ध्रुवे जलोद्धतगति अने मध्यक्षामा जेवा छंदोने अनावृत्तसंधि गणी तेमना संधिओनी अने अंतर्गत पद्यभारनी चर्चा करी छे, त्यां मारे तेमनी साथे सिद्धान्तनो भेद छे, एम अहीं टूंकामां पण नोंधवुं आवश्यक छे. ए छंदोनो मेळ मात्रासंधिओनो छे अने तेमां अनावृत्तसंधि आरोपवा ए भ्रामक छे. अन्यत्र आ संबंधी में कहेलुं छे एटले अहीं विशेष कहेतो नथी. (गत. पृ. १९३–९४)

अने सामग्री जेवी मळी छे तेवी उपरथी पण एटलुं समजाशे के वृत्तोमां पद्यभार के ताल आवे छे एम माननारा आ त्रणेय छंदोविदोना पद्यभार बहु थोड़ां वृत्तोमां सरखा ऊतरे छे. इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रा इन्द्रवंशा वंशस्थमां मानी लईए के त्रणेयमां एकवाक्यता छे. पण प्रसिद्ध वसंततिलकामां दलपत पिंगलनी जुदी जुदी आवृत्तिओमां फरक छे अने ध्रुव अने बर्वेनां स्थानोमां पण फरक छे. वृत्तोमां बे त्रण स्थान उपर त्रणेयना तालो एक ज स्थाने आवता होय तेथी आ ताल के पद्यभारना मतने समर्थन मळी जतुं नथी, कारण के पंक्तिमां एक के बे जगाए जरा पण भेद होय तो आखी पंक्तिना संधिओमां मळतापणुं न आवी शके. अर्थात् ए स्थानो संधि ओळखवाने उपयोगी न बनी शके. दाखला तरीके, पद्यभारथी संधिओ छूटा पडे छे एम मानी आपणे वसंततिलकाना पहेला आठ अक्षरोना ज संधि पाडवा जईए तो

दलपतराम प्रमाणे : गागाल गाल ललगा
बर्वे प्रमाणे : गागा लगाल ललगा
ग प्रमाणे गागालगा लललगा
के. ह. ध्रुव प्रमाणे गा गाल गाल ललगा

एम भिन्न भिन्न पडे. आ रीते जोतां जणाशे के एकवाक्यतानी मंडनशक्ति करतां भेदनी खंडनशक्ति घणी वधारे छे. अने अहीं तो वृत्तोमां एकवाक्यता करतां भेदना ज दाखला वधारे छे एटले स्पष्ट थशे के पद्यभार के तालथी संधिओ जुदा पडे छे एवा तर्क पर संधिओ रची शकाय एम नथी. अने के. ह. ध्रुवे संधिओमां ताल प्रथमाक्षर पर आवे के गमे ते अक्षर पर

आवे ए संबंधी संदिग्ध विधानो करेलां होवाथी संधिनो पद्यभार साथे कोई प्रकारनो संबंध निश्चित करी शकातो नथी, अने पछी संधिना स्वरूपनिर्णय माटे बीजुं कोई अवलंबन तेमना तरफथी मळतुं नथी.

एटले भारतत्त्वना अवलंबन विना संधिओ निर्णीत करवाने कोई पद्धति छे के नहीं ते जोवुं रह्युं. अने एवुं कोई तत्त्वं मळी आवे तो तेनो प्रयोग भारतत्त्व तरफ दृष्टि राख्या विना करवो जोईए ए देखीतुं छे.

आवुं तत्त्व छे एम हुं मानुं छुं. आपणे जोयुं के संस्कृत साहित्यमां पद्यरचनानो एकम श्लोक छे. श्लोकने अंते लांबी विलंबनात्मक तेम ज विरामात्मक यति छे. श्लोकार्धनो अंत पण एवो ज छे, जो के त्यां विलंबन तथा विराम श्लोकान्त करतां जरा टूंको होय. एकी चरणने अंते विराम नथी मात्र विलंबन छे एम हुं मानुं छुं अने मध्ययतिने स्थाने तेथी पण टूंकुं विलंबन छे एम हुं मानुं छुं ते हुं आगळ कही गयो. आ रीते अहीं सुधी श्लोकना पृथक्करणनुं तत्त्व पठनमां भिन्नभिन्न स्थाने आवतुं विलंबन ठरे छे. तो एथी आगळ पृथक्करण करवामां पण ए ज तत्त्वनुं अवलंबन करी शकाय. अर्थात् पठनमां स्वाभाविक रीते विलंबन आववाथी जे अक्षर-जूथो छूटां पडे छे ते ज संधिओ. हवे आ विलंबन गुरुना उच्चारणथी ज शक्य बने छे. अत्यार सुधीना श्लोकना पृथक्करणमां दरेक अंग के उपांगने अंते आपणे गुरु ज आवतो जोयो छे. तो आ संधिओमां पण अंते गुरु आवे एम स्वाभाविक रीते ज निष्पन्न थाय छे. अर्थात् संधिने अंते गुरु ज होय. पठनमां अक्षरजूथो स्वाभाविक रीते थोडा विलंबनथी जुदां पडे छे अने तेने अंते गुरु होय एटला ओळखाणथी आपणे हवे संधिओना स्वरूप-निर्णयनो प्रयत्न करवो जोईए. एम करवाथी मळी आवता संधिओथी वृत्तोना मेळ उपर कंईक पण प्रकाश पडे तो आ संधिओने वृत्तोना साचा अवयवो गणवा जोईए.

उपरना नियमथी आपणे संधिओनुं अन्वेषण शरू करीए. आ नियम प्रमाणे केवळ लघुनो कोई संधि होई शके नहीं, अने दरेक संधिने अंते गुरु होय ज. आटलाथी ज केटलांक वृत्तोना संधिओ बहु सहेलाईथी पडी शकशे. समजवानी खातर हुं सौथी पहेलो द्रुतविलंबित लईश. तेना न्यासमांथी संधिओ छूटा पाडवा सहेला छे. आपणा नियमने अनुसरतां तेमां लगा ललगा लललगा एवा त्रण संधिओ तरत जणाय छे. प्रमिताक्षरामां ए ज संधिओ जरा जुदे क्रमे जणाशे, अर्थात् संधिओ ए ज छे. आ उपरथी संधिओमांथी वृत्तो केम रचाय छे तेनो कंईक ख्याल आवशे. आनी पासे

हरिणीनो उत्तर खंड मूकी जोईशुं तो जणाशे के ते उपरना ज संधिओमांथी बनेलो छे: लगा ललगा लगा. आ संधिओ साथे नर्दटकनो न्यास सरखावी जोईशुं तो जणाशे के प्रथम संधि लललगा सिवाय तेमां उपरना ज संधिओ आवे छे. ए ज संधि चन्द्रवर्त्मंमां अंते आवे छे, जो के ए वृत्तनो मेळ हुं सुंदर नथी गणतो. आगळ जई जोईशुं तो प्रहर्षिणीना उत्तर खंडमां पण ए छे. लललगा लगा लगागा. अहीं उपसंहार लगा लगागाथी थाय छे. उपर आवी गयेल लगा क्वचित ज अंते वपराय छे — मात्र द्रुतविलंबित हरिणी ए बेमां ज वपरायो छे. बाकी तो ए घणी जगाए मध्यमां के आदिमां आवे छे. अने विशेष ए के ते घणी जगाए पांच के वधारे मात्रा-वाळा संधिनो अग्रसर बने छे. हरिणीमां लगा पछी ललगा चार मात्रानो आवे छे. पण मंजुभाषिणी कलहंस प्रमिताक्षरा शार्दूलविक्रीडित पृथ्वी नर्दटक बधामां ते लललगानो अग्रसर बने छे. अने माल्यभारा पुष्पिताग्रा औपच्छन्दसिक प्रहर्षिणी एमां ए लगागानो अग्रसर बने छे. लगा आगळ कह्युं तेम उपसंहारमां ओछो ज वपराय छे पण तेनुं अभ्यस्त रूप लगालगा उपसंहारमां सारी रीते आवे छे. इन्द्रवंशा, वंशस्थ, रथोद्धता, प्रियंवदा, वियोगिनी, अपरवक्त्र, रुचिरा अने गणीए तो अनष्टुपनो समपाद एमां लगालगा अंते आवे छे. लगानी पेठे ज ललगा पण अंते ओछुं ज वपराय छे. चपलामां ते अंते आवे छे. पण चपलानो मेळ सुन्दर जणातो नथी, तेने वसंततिलकानो अंत्य संधि लगागा कापीने बनाव्यो लागे छे, अने एने जाणे सारा उपसंहारनी खामी रही जाय छे. ते सिवाय ते प्रमिता-क्षरामां अने नर्दटकमां आवे छे. पण नर्दटकमां ललगानुं अभ्यस्त रूप आवे छे एम कही शकाय. त्यां ललगा बे वार आवे छे. उपर आवी गयो ते लगागा संधि उपसंहारमां सारो वपराय छे. इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वसंततिलका, माल्य-भारा, पुष्पिताग्रा, औपच्छन्दसिक, प्रहर्षिणी ए बधामां अंते लगागा छे. आ पछी रथोद्धता लईए. तेमां आगळ आवी गयेला लललगा अने लगालगा आवे छे. ते बाद करतां बाकी रहेतो गालगा स्वीकारवानो रहे छे. हवे पृथ्वी लईए. तेमां लगा ललगा लगा ललगा आटला संधिओ पडतां सुधी कशी मुश्केली नडती नथी. पछी लगागालगा आवे छे. तेमां संधि कई रीते पाडवा? लगा गालगा एम के लगागा लगा एम? एक साथे बे गुरु आववाथी आ मुश्केली ऊभी थई. हुं पठन उपरथी तेम ज अत्यार सुधीना संधिओना व्यापारो जोई लगा गालगा एम संधि छूटा पाडुं. लगागा लगा एम करवा जतां पडतो लगागा पण अलबत स्वीकारेलो संधि छे. पण पछी रहेतो लगा उपसंहारार्थे बहु वपरातो नथी. अने लगा गालगा एम व्यवस्था

करतां लगा एक पंचमात्रक संधिनो अग्रसर बने छे. अने गालगा रूपने आपणे एक जगाए जोयुं छे अने अन्यत्र पण जोईशुं अने ते अहीं पण जणाय छे. वळी पृथ्वीनी समग्र रचना जोतां तेमां ३+५ मात्राना संधिओनां आवर्तनो देखाय छे: लगा लललगा लगा लललगा; तो आ पण जरा जुदा स्वरूपनुं ३+५ मात्रानुं एक आवर्तन थई रहे छे:— लगा गालगा. एटले पृथ्वीना संधिओ ए प्रमाणे ज समग्र योजनामां बेसता जणाय छे. वळी गालगा अन्यत्र पण एक जगाए अंते वपरायो छे,—क्षमामां—जोके ए बहु वपरायेलुं वृत्त नथी. (गत पृ. १९४) त्यां पण उत्तर खंडमां गालगागालगा एम छे. आने जो गालगानुं अभ्यस्त रूप न गणीए तो गालगागा लगा एम संधिओ करवा पडे छे, अने लगा उपसंहारक्षम संधि नथी. एक बीजी रीते पण गालगा स्वीकारवानी आवश्यकता छे. भरतनाटचशास्त्रमां पुट अने शरभा नामनां बे वृत्तो छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे छे:

पुट : ललललललगागा । गालगागा
शरभा : गागागागा । ललललगा । गालगागा[४]

भ. ना. गा. बो. २, १५, ७८-७९ तथा ९१–९२.

आ बन्ने वृत्तोमां अंत्यखंडमां मात्र गालगागा आवे छे. एटले एने ज संधि तरीके स्वीकारी लेवो रहे छे. एमांना गालगाने संधि गणी ते पछी गाने छूटो राखवो अथवा ते एक ज अक्षरनो संधि गणवो ए उपपन्न नथी. कारण के जो एक ज अक्षरनो संधि गणवा आपणे तैयार होईए तो पछी ल अने गा ए बेने ज संधि गणी लई पछी कशुं करवानुं रहेतुं नथी. अर्थात् संधिओ ठीक ठीक मोटा होय तो ज तेने स्वीकारवानो अर्थ छे नहितर त्र्यक्षर गण तो पिंगलना समयथी मोजूद हतो ज! अने वळी बीजा संधिओ साथे एक ज अक्षरनो संधि गणवानी अनिवार्य आवश्यकता मने क्यांई जणाती नथी. एटले हुं गालगागाने अहीं संधि गणुं छुं. अने एक वार ए स्वीकृत संधि बनतां शालिनीगोत्रमां अंत्यखंडमां आ गालगागानो पुरोगामी गालगा स्वीकारवो ज पडे छे. ए रीते गालगानी अनेक रीते उपपत्ति थई शके छे. एटले पृथ्वीमां लगा लललगा लगा लललगा लगा गालगा एम संधिओ पड्या. गालगा पृथ्वीमां अंते आवे छे तेम शार्दूलविक्रीडितमां

४. आ छन्दनो प्रयोग 'सौन्दरनंद'मां छे ते नोंधीने तेनुं नाम पिंगळोमां उपलभ्य नथी एम कही के. ह. ध्रुव ओ श्लोकमांनो 'अप्रमत्त' शब्द पकडी छन्दनुं नाम 'अप्रमत्ता' पाडे छे (जुओ प. बै. आ. पृ. २११). भरतनाटचशास्त्रमां ते शरभा नामथी छे ते तरफ तेमनुं ध्यान नहीं गयुं होय एम जणाय छे.

पण अंते आवे छे. तेनो उत्तरखंड गागालगागालगा छे. आने उपर बताव्या प्रमाणे न वछोडीए तो गागा लगागा लगा एम संधिओ करवा पडे छे अने लगा अंतने माटे योग्य नथी. एटले गागालगा गालगा एम स्वीकारवुं योग्य छे. अने बोलवामां पण ए ज संधिओ वरताय छे. अहीं जेम गागालगा उत्तरखंडनो आद्य संधि छे तेम ज ते वसंततिलकामां पण आद्य संधि छे. गालगाने पृथ्वीमां आपणे चरणान्ते आवतो जोयो, तेम तेने मध्यमां आवतो पण जोयो, शालिनीगोत्रना उत्तरखंडमां, तेम ज तेने आदिमां आवतो पण जोयो, रथोद्धता-स्वागतानी जोडीमां. आ जोडकामां गालगा ललगा ए बे संधिओ समान छे. पहेलामां अंत्यसंधि लगालगा आपणे जोई गया छीओ, तेनी जगाए बीजामां आवतो ललगागा स्वीकारवो बाकी रहे छे. कलहंसमां पण ते अंत्यसंधि बने छे. वियोगिनी माल्यभारा अने औपच्छन्दसिकनी सम पंक्तिमां पण ते आवे छे—जो के मात्राविभागमां. हवे अयतिक वृत्तोमां मात्र इन्द्रवज्रा कुटुंब जोवुं रह्युं. इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्राना अंत्य बे संधिओ लगा लगागा तो तरत परखाई आवे छे. वसंततिलकामां पण अंते ए बे संधिओ ज आवे छे. तेम ज इन्द्रवंशा-वंशस्थमां अंते ललगा लगालगा आवे छे. प्रश्न आ पहेलांना संधिओनो रह्यो. तेमां इन्द्रवज्रा अने इन्द्रवंशाना आदिना गागालगागाने केम छोडवो ए ज प्रश्न छे. अलबत गागा अने लगागा करी शकाय एम छे पण हुं गागालगागाने एक ज संधि गणवो वधारे अनुकूल गणुं छुं. एक तो हुं एने ज प्राचीन, पंचाक्षरे यतिवाळा, त्रैष्टुभनुं बीज गणुं छुं. (गत पृ. ६०) पण बीजी रीते जोतां आ संधिमांथी अन्त्याक्षर खंडित थतां तेने वसंततिलकानो आद्य संधि गागालगा बतावी शकाय अने ए गागालगानो आद्य अक्षर खंडित थतां निष्पन्न थता गालगाने रथोद्धता-स्वागतानो आद्य संधि बतावी शकाय, माटे हुं एने ए ज रूपमां राखवा इच्छुं छुं. गागालगागा स्वीकार्या पछी उपेन्द्रवज्रा अने वंशस्थना संधिओ लगा लगागा थशे, ज्यां वळी लगा पंचमात्रक संधिनो अग्रसर बने छे. वसंततिलकाना संधिओ आने परिणामे गागालगा ललगा ललगा लगागा थशे.

हवे सयतिक वृत्तो जोई जईए. तेमां आपणे जोयुं के शालिनी कुटुंबनो अंत्य यतिखंड गालगा गालगागानो बनेलो छे. शालिनीना पूर्वखंड गागागागाने एक संधि गणवो के गागा गागा एम बे गणवा? अलबत बे गणवा होय तो गणी शकाय, दलपतराम अने बर्वे तेने बे गणता जणाय छे, पण गागाने ए रीते स्वतंत्र गणवा छतां, हुं तेना अभ्यस्त रूप गागागागाने एक संधि तरीके स्वीकारुं—लगालगानी पेठे. एम करवानुं कारण ए के ते आखा शालिनी

ગોત્રમાં આદિમાં એ જ રૂપે આવે છે. સ્રગ્ધરામાં પહેલા સાત અક્ષર પછી યતિ આવે છે ત્યાં સ્પષ્ટ રૂપે ગાગાગાગા અને લગાગા બે સંધિઓ ભેગા થયા દેખાય છે. શિખરિણીમાં પણ પૂર્વખંડમાં લગા અને ગાગાગાગા એમ સંધિઓ કરવા હું યોગ્ય ગણું છું. લગા એવી રીતે મોટા સંધિનો અગ્રસર બનવા યોગ્ય છે. એ પછી ગુરુઓમાં આપણે ક્યાંઈ ચાર ગુરુથી મોટો સંધિ ગણવાની જરૂર પડતી નથી. લઘુઓમાં અયતિક છંદોમાં આપણે હજી સુધી સૌથી લાંબો લલલલગા નર્દટકમાં જોયો. એથી વધારે લઘુવાળા અયતિકમાં આવતા નથી, જો કે આ સયતિક પ્રહર્ષિણીમાં પણ આવે છે. આથી વધારે લઘુની સંખ્યાના સયતિકમાં જ આવે છે,—મંદાક્રાન્તા અને હરિણીમાં લલલલલગા, સ્રગ્ધરામાં લલલલલલગા, માલિનીમાં લલલલલલગાગા. શિખરિણીમાં યતિ પછીના ખંડના સંધિઓ હું લલલલલગાગા અને લલલગા એમ કરું. હું આગળ[5] કહી ગયો તેમ પઠનમાં જેમ ઉપર પ્રમાણે અલ્પ વિલંબન બે ગુરુ પછી થાય છે તેમ પહેલા ગુરુ પછી પણ કોઈ કરે છે, એ પઠનને અનુસરતાં સંધિઓ લલલલલગા ગાલલલગા કરવા પડે. પણ ગાલલલગા બીજે ક્યાંઈ વપરાયેલ નથી, ત્યારે લલલગા આપણને અનેક જગાએ મળે છે. ખરું તો ગાલગામાં બે ગુરુ વચ્ચે એક લઘુ આવે છે, તે કરતાં વધારે લઘુઓ વચમાં આવી કોઈ લઘુગુરુનો સંધિ બનતો નથી. ગાલલગા ક્યાંઈ વપરાતો નથી,—હા, વંશપત્રપતિતમાં છે, પણ એને હું સુન્દર છંદ નથી ગણતો, એને હું નર્દટકની ઓછી સુન્દર વિકૃતિ ગણું છું અને એ ગોત્રના છંદોની આદ્ય ચાર માત્રાને હું માત્રાગર્ભ ગણું છું એટલે ગાલલગા સ્વીકારતો નથી. આ જ રીતે ગાલલગા વૈતાલીયના માત્રાવિભાગમાં પણ આવે છે (જુઓ ગત પૃ. ૧૨૯–૩૦). ચાર ગુરુથી ટૂંકો સંધિ ત્રણ ગુરુનો, તે પ્રહર્ષિણીના પૂર્વખંડમાં યતિ પૂર્વે એકલો જ આવે છે, અને શાર્દૂલવિક્રીડિતના આદિમાં પણ આવે છે, જોકે ત્યાં તેની પછી યતિ નથી પડતી. આ પછી હું સુવદના લઉં: તેના પહેલા બે યતિ-

---

૫. આને નરસિંહરાવનું સમર્થન છે. શિખરિણીના ઉત્તરખંડમાં તેઓ નીચે પ્રમાણે તાલ નાખી બતાવે છે. ('નૂપુરઝંકાર', આ. ૨, પૃ. ૧૬૩ ઘુવડ કાવ્ય ઉપરની ટીકામાં)

	ઘનતિમિરમાં તારક તરે
અર્થાત્	લલલલલગાગા લલલગા

અહીં સ્પષ્ટ રીતે તાલથી સંધિઓ છૂટા કર્યા છે.—બર્વેની પેઠે. બર્વે પણ અહીં છેલ્લો સંધિ લલલગા ગણે છે.

खंडो स्रग्धराना ज छे. अंत्य खंडमां गागाललगा आवे छे. आने गागा ललगा एम हुं विभजवानुं पसंद करुं, बन्ने आपणने परिचित छे. छए अक्षरनो एक संधि न स्वीकारुं कारण के ते बीजे क्यांई देखातो नथी. एने स्वीकारवो, ए तर्कनी परिभाषामां कहुं तो, गौरवदोष छे. बाकीमां वैश्वदेवी रह्यो जेनो उत्तरखंड शालिनीनो छे, अने पूर्वखंडमां पांच गुरुओ छे. ते शालिनी जेवो संवादी नथी, छतां वपराय छे, अने तेना संधिओ गागागा गागा एम करवा योग्य जणाय छे. जोके एक ज वृत्त आवुं होवाथी बीजा वृत्तोनी सरखामणी करी संधि नक्की करी शकाय एम नथी; गागा गागागा एम पण करी शकाय.

आ रीते निष्पन्न थयेला संधिओने एकत्र करी जोतां अयतिक वृत्तोमां नीचेना संधिओ मळे छे: लगा, (द्विर्भावथी) लगालगा, ललगा, लललगा, ललललगा, लगागा, गालगा, ललगागा, गागा, गागालगागा, गागालगा. आमांना घणा सयतिकमां पण वपराय छे. पण आ सिवायना नीचे दर्शावेला मात्र सयतिकमां ज वपराय छे: गागागा, गागागागा, लल-ललगा, लललललगा, ललललगागा, लललललगागा. एटले सयतिक छंदोनो बंध संधिनी दृष्टिए पण अयतिकथी जुदो पडे छे.

आ संधिओ छंदना घटक होवाथी सामान्य रीते एम कही शकाय के जो वृत्तनी पंक्ति अधूरी मूकवी होय, तो ते कोई पण एक संधि पूरो थये ज शोभे तेवी रीते अधूरी मूकवी जोईए. घणा दाखलामां में एम ज थयेलुं जोयुं छे.

आ प्रमाणे स्वाभाविक पठनमां आवता विलंबनथी तंत्रशुद्ध संधिओ पाडी शकीए छीए: ए संधिओ अनेक वृत्तोमां वपरायेला मळी आवे छे. अने तेथी वृत्तोनां बंधारणमां रहेला समान असमान अंशो वधारे स्फुट थाय छे. हजी आ संधिओनी विशेष उपपत्ति आपणे आ पछी आवता नवा छन्दोना प्रकरणमां जोईशुं.

हवे हुं अर्वाचीन छन्दःशास्त्रीओए चर्चेल पद्यभार के तालनो प्रश्न हाथमां लउं छुं. आ संबंधी मारे प्रथम ए कहेवानुं के उपरना संधिओ स्वी-कारी लीधा पछी तालना कोई विशेष तत्त्वने स्वीकारवानी जरूर रहेती नथी. अमुक जातनो भार के जोर आ संधिओने एकबीजाथी भिन्न करी बोलवामां आवश्यक बने छे. दाखला तरीके एक संधि पछी बीजो संधि शरू थाय त्यारे ए नवो संधि शरू करवाने माटे वाग्यन्त्रने नवो प्रयत्न करवो पडे छे. अने ते ज पद्यभार के ताल जेवो संभळाय छे. तेम ज संधिने अंते जे विलंबन आवे छे ए विलंबननो प्रयत्न क्वचित् ताल के पद्यभार-

रूपे प्रतीत थाय छे. बर्वे कहे छे के दरेक संधिना आदिमां ताल आवे छे, ते में उपर कह्युं तेम नवा संधिना उच्चारणना प्रारंभनो विशिष्ट प्रयत्न छे. नरसिंहरावे पण खंडशिखरिणीनी चर्चामां जे ताल के भार मूकी बताव्यो छे ते संधिना प्रारंभना उच्चारणनो ज प्रयत्न छे. बर्वेए जे पृथ्वीना संधिओ उपर ताल मूकी बताव्या छे ते बधा में बतावेला संधिओना आद्याक्षर उपर ज पडे छे:

दिशा नवपरे जसा । जसयला ग पृथ्वी धरो

तेथी ऊलटी रीते मंजुभाषिणी अने प्रमिताक्षरामां दलपतरामे अने के. ह. ध्रुवे जे ताल के पद्यभार बताव्यो छे ते दरेक संधिने अंते आवता गुरुना विलंबनना उच्चारणना प्रयत्ननो छे. ए बन्ने पिंगलकारोए द्रुतविलंबितमां जे तालो बताव्या छे ते उपरनी बन्ने पद्धतिना मिश्रणना छे. पण आ उपरांत तालस्थान घणी वार गावानी पद्धतिमां आवता भारथी आभासित थाय छे. वसंततिलकामां आ ज बे पिंगलकारोए आपेला तालो गावानी पद्धतिने आभारी छे. में पण पुराणीओने आ रीते भार मूकी वसंततिलका गाता सांभळ्या छे. हजी चंडीपाठ ए ज रीते गवाय छे. पण आ परंपराथी चाली आवती गावानी पद्धति में आगळ कह्युं तेम शास्त्रीय गणी शकाय एवी नथी. (गत पृ. ११८–१९) घणां तालस्थानो, भिन्नभिन्न गावानी पद्धतिने ज आभारी छे. एवी जगाए केवळ लयात्मक पठन, वृत्तोनी सरखामणी, नवां वृत्तोना बंधो ए बधा उपरथी ज संधिओ नक्की करवा वधारे उचित छे. वळी क्यांक संधि लांबो होय तो बोलवानी सगवड खातर अमुक अमुक संख्याना अक्षरोए नवा नवा प्रयत्नथी बोलवाथी पण पद्यभार जणाय. जेम के हरिणीमां अने मंदाक्रान्तामां बन्नेमां लघुबहुल संधि त्रण त्रण अक्षरने डगले बोलाय छे, अने तेथी त्यां त्यां भार जणाय छे. ललल ललगा आवी रीते. स्रग्धरामां एवो ज लघुबहुल संधि लल लल ललगा एम बोलाय छे. शिखरिणीनो यति पछीनो लघुबहुल संधि लल ललल गागा एम बोलाय छे. पण आमां अंगत टेव काम करती होय छे. स्रग्धरानो ए संधि कोई ललल ललगा एम पण बोले. वळी क्यांक हुं मानुं छुं के अमुक छन्दना नमूना तरीके अमुक श्लोकना संस्कारो मनमां कोतराई गया होय तो ए श्लोकना शब्दो अने अर्थभारो बन्ने, छन्दना संधिओनुं स्वरूप अने पद्यभारो घडी काढे अने पछी ए ज ए व्यक्ति माटे छन्दनुं स्वरूप बनी रहे. अलबत आ साबीत

करवुं मुश्केल छे पण आवां अनेक कारणो पछभार पडवामां प्रवृत्त थतां होवानो संभव छे, अने तेथी अंगत कारणो के अमुक श्लोकना संस्कारोथी अलग थई आ संधिओना स्वरूपनो विचार करवो जोईए.

अहीं संधिओथी आपणे जेने मुख्य वृत्तो तरीके स्वीकार्यां छे तेना स्वरूप उपर प्रकाश पडे छे. ए स्वरूपो ए संधिनी दृष्टिए जोतां वधारे स्फुट थाय छे, वधारे चोकसाईथी कहीए तो संधिओथी वृत्तोनुं स्वरूप अने संधिओ एक साथे स्फुट थाय छे. पण एथी पण वधारे स्फुटता नवा छन्द केम घडाय छे ए जोतां प्रगट थशे. अने आपणे आ पछीना प्रकरणमां ए ज विषय लईए छीए.

परिशिष्ट १

वृत्तोना स्वरूपनिरूपणनी केटलीक रीतिओ

'छन्दःसारसंग्रह'मां पिंगलनी परंपरा प्रमाणे प्रथम छन्दोनां स्वरूपो समजाव्यां छे. ए पूरुं थतां 'चतुर्थोऽशः' शरू थाय छे तेमां कर्ता चन्द्रमोहन घोष जुदी रीते छन्दोनां स्वरूपो दर्शावे छे (अथ तावच्छन्दांसि पुनरन्यथा श्रेणीविभागेन समासतो व्याख्यायन्ते।). आमां, हुं जेने आवृत्तसंधि अक्षरमेळ रचनाओ कहुं छुं तेनुं निरूपण शास्त्रीय थयुं छे. पण कर्ता ज्यां अनावृत्तसंधि अक्षरमेळने स्पर्शे छे त्यां घणी वार अशास्त्रीय युक्तिओमां सरी पडे छे. जेम के "स्वागतैकादशाक्षरा, दोधकस्य तृतीयचतुर्थवर्णयोरन्योन्यविनिमयेन यथा"— अर्थात् दोधकना त्रीजा चोथा वर्णोनो विनिमय करवाथी स्वागता थाय. हुं न्यासथी बतावुं—

       ३ ४
दोधक : गालल गालल गालल गागा
       ३ ४
स्वागता : गालगा लललगा लल गागा

आ हकीकत तरीके साचुं छे, कदाच शीखववानी युक्ति तरीके थोडे सुधी सफळ थाय, पण मेळनी दृष्टिए आ युक्ति भ्रम करनारी छे. दोधक अने स्वागता वच्चे कशो ज संबंध नथी. ते ज प्रमाणे ए लेखक स्वागता अने रथोद्धतानो भेद नवमा दसमा वर्णना विनिमयथी बतावे छे. त्यां ए पद्धति ओछी भ्रामक छे. जोके खरी रीते तो एम ज कहेवुं जोईए के बन्नेना पहेला बे संधिओ एक ज छे. छेल्ला संधिओमां स्वागतानो ललगागा छे, रथोद्धतानो लगालगा छे. (छ. सा. सं. पृ. ११७)

तेवी ज रीते मोटकना आद्य अने अन्त्य वर्णना विनिमयथी द्रुतविलंबित थाय छे एम कहे छे (एजन).

मोटक : गालल गालल गालल गालल छ. म. क. २,९३

द्रुतविलंबित : लललगा ललगा ललगा लगा

अहीं पण बन्ने छन्दोना मेळ वच्चे कशो संबंध नथी, जोके एक कूंची तरीके के कौतुक तरीके वात साची छे. एवी ज रीते आगळ कहे छे के तोटकना पांचमा छठ्ठा वर्णना विनिमयथी प्रमिताक्षरा बने (एजन पृ. १२०).

५ ६
तोटक : ललगा ललगा ललगा ललगा

५ ६
प्रमिताक्षर : ललगा लगा लललगा ललगा

अहीं पण उपरनो ज वांधो छे. बन्ने वच्चे संबंध नथी. ते पछी मात्रा समकोमां ते बे लघु स्थाने गुरु अने एथी ऊलटी परिवृत्ति बतावे छे ते बराबर छे, कारण के ते मात्रामेळ वृत्तो छे. आ मात्रामेळनी बहार आ पद्धति अशास्त्रीय छे.

रुचिरा विशे कहे छे के बार अक्षरना पंचचामरना छठ्ठा स्थानना गुरुने बदले बे लघु मूकवाथी रुचिरा बने छे (एजन पृ. १२१).

६
पंचचामर : लगा लगा लगा लगा लगा लगा

रुचिरा : लगालगा लललगा लगालगा

ते ज प्रमाणे रुचिराना बीजा साथे त्रीजानी अने चोथा साथे पांचमानी अदलाबदलीथी मंजुभाषिणी (एजन पृ. १२२).

२ ३४ ५
रुचिरा : लगालगा लललगा लगालगा

२ ३ ४ ५
मंजुभाषिणी : ललगा लगा लललगा लगालगा

अहीं पण मेळनी दृष्टिए बन्ने भिन्न छे. बन्नेना संधिओ पण छेल्ला सिवाय भिन्न छे. एटले सरखामणी मात्र यांत्रिक छे, मुद्दा विनानी छे.

सद्‌गत के. ह. ध्रुवे पण कंईक आने मळती पद्धति अखत्यार करी छे. 'पद्यरचनाना प्रकार'ना लेखमां तेओ प्रथम अगियार अक्षरना छंदो ले छे. "अगियार रूपना छंदोमां प्रसिद्ध जोडकुं इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रानुं छे. रचना उपर दृष्टि राखतां उपेन्द्रवज्रा तेनी प्रकृति छे. उदाहरण बंनेनां नीचे आपिये छीए. (आ पछी बन्नेनां उदाहरणो आपे छे. पछी लखे छे:) उपेन्द्रवज्रामां पहेलां अने छेल्लां पांच रूप एनां ए छे. ए बे संधि एक लघुथी जोडाय छे.

संधि आकारमां मळता छे, पण उच्चारणमां भिन्न छे. पूर्वसंधिमां पहेलुं अने चोथुं रूप जोरदार छे." (सा. वि. २. पृ. २७१–२) हवे उपेन्द्रवज्रा विशे तेमणे कह्युं ते साचुं छे. हुं न्यासथी दर्शावुं:

१ २ ३ ४ ५ १ २ ३ ४ ५
उपेन्द्रवज्रा: लगालगागा ल लगालगागा

अहीं पहेलां पांच रूपो, पछी एक लघु आवी, एना ए क्रमे फरी आवे छे ए साचुं छे. पण एने मेळ साथे कशो संबंध नथी. प्रथम तो खरी रीते जोतां इन्द्रवज्रा ए प्रकृति छे अने उपेन्द्रवज्रा ए एनी विकृति छे. नाम पण ए ज सूचवे छे. पछीथी एमणे ए वात एमनां व्याख्यानोमां सुधारी पण छे. तेओ कहे छे: "त्रिष्टुभ चारणमां पहेलो प्रकटे इन्द्रवज्रा, पछी उपेन्द्रवज्रा अने ते पछी तेमनां चरणोना मिश्रणथी बनेलो उपजाति छंद." (प. ऐ. आ. पृ. १३१) एटले प्रकृति इन्द्रवज्रा ठरी. अने एने प्रकृति लईए तो पछी पहेलां पांच रूपो अने छेल्लां पांच रूपो सरखां छे ए दृष्टि ज अशक्य बने छे. पण एथी पण आगळ जई मारे ए कहेवानुं के आ रीते सरखापणुं शोधवुं ए छन्दोनो मेळ शोधवानी साची दिशा नथी. एम कहीने पण एमने छेवटे तो एम ज कहेवुं पड्युं छे के 'संधि आकारमां सरखा छे पण उच्चारणमां भिन्न छे.' जो उच्चारणमां भिन्न होय तो पछी ए आकारमां सरखा जणाता जूथने सरखा संधि शा माटे मानवा? एटलुं ज नहीं, ए केवळ बाह्य आकारनुं सरखापणुं नोंधवुं ए पण अप्रस्तुत नथी? आ पद्धति तेमना निरूपणमां कोई अकस्मात नथी. वसन्ततिलकाना निरूपणमां पाछी ए ज पद्धति आवे छे. एनुं दृष्टान्त आपी तेओ कहे छे: "एनी विलक्षणता एनी रचनामां रहेली छे. आरंभमां जे छ रूप छे ते ज ऊलटा क्रमे अंतमां छे. आरंभना समूहमां बीजूं अने चोथूं ने छठ्ठूं रूप जोरदार छे. अंतना समूहमां छेडेथी विलोम गणतां बीजुं ने छठ्ठुं रूप जोरदार छे." (एजन पृ. ७७) हुं एमनुं वक्तव्य समजाय ए रीते नीचे न्यास आपुं:

१ २ ३ ४ ५ ६ ६ ५ ४ ३ २ १
गा गा ल गा ल ल लगा ल ल गा ल गा गा

हवे आ वात साची छे. एथी कोईने काव्यमां यमकोनी के लोम-विलोम काव्यनी रमतो रमवी होय तो रमी शकाय. पण ते तो मात्र अकस्मात छे. काव्यना मेळनी साथे ए वातने संबंध नथी. आ तो १७ अने ७१नो फरक आंकडाना व्यत्यासथी समजाववा बराबर थयुं. आम कहेवाथी संधि कया कया छे, तेमां क्यां क्यां पद्यभार आव्यो अने संधिओने पद्यभार साथे कंई संबंध छे के नहीं ए वात ऊलटी ढंकाई जाय छे.

पटवर्धन छन्दोनुं स्वरूप आपतां आवर्तनीने भिन्न गणे छे. त्यां, में कहेल आवृत्तसंधि ज तेने अभिप्रेत छे. अनावृत्तसंधि अक्षरमेळने ते अनावर्तनी कहे छे. "ज्या वृत्तांतील आन्दोलन अक्षररचने करून सहज प्रतीत होत नाही, ज्यांना तालांत बसवायला थोडे फार परिश्रम पडतात, परंतु ज्यांपैकी अनेक वृत्तांच्या चाली परम्परया चालत आल्याकारणाने सुकर वाटतात अशा वृत्तांना अनावर्तनी म्हटले आहे." अर्थात् जे वृत्तोमां आंदोलन अक्षररचनामांथी सहेलाईथी प्रतीत थतुं नथी, जेने तालमां बेसाडवामां थोडो घणो परिश्रम पडे छे, परंतु जेमांना अनेक वृत्तोनी चाल परंपराथी आवती होवाने कारणे सुकर जणाय छे ते वृत्तोने अनावर्तनी कह्यां छे. पण आ पछी ते कहे छे: "कित्येक वृत्तें अशीं आहेत कीं तीं सहज (क्वचित् एखादें दुसरें अक्षर प्लुत उच्चारून) आवर्तनी होऊं शकतात; परंतु त्यांचा परंपराप्राप्त चाली पहातां तीं अनावर्तनी वाटतात त्यांचें विवेचन आधी अनावर्तनी वृत्तांच्या वर्गांत केलें असून पुढे आवर्तनी वृत्तांच्या वर्गांत त्यांचा पुन्हा उल्लेख केला आहे. उदाहरणार्थ, रथोद्धता नि स्वागता यांची रूढ मोडणी अनुक्रमें (–⏑–⏑⏑⏑–।⏑–⏑–) आणि (–⏑–⏑⏑⏑–।⏑⏑––) अशी आहे, म्हणून त्यांचें विवेचन अनावर्तनी वृत्तांत केले आहे. परंतु त्यांची मोडणी अनुक्रमें (–⏑–⏑⏑⏑। –⏑–⏑–) आणि (–⏑–⏑⏑⏑।–⏑⏑––) अशी घेतल्यास तीं पद्यावर्तनी होतात म्हणून त्यांचा उल्लेख विद्युन्माला वर्गांतहि पुन्हा केला आहे." अर्थात् केटलांक वृत्तो एवां छे के ते सहेजे (क्यांक एक के बीजो अक्षर प्लुत उच्चारवाथी) आवर्तनी थई शके छे; परंतु तेनी परंपराप्राप्त चाल जोतां ते अनावर्तनी जणाय छे. तेनुं विवेचन आगळ अनावर्तनी वृत्तोमां करेलुं होई पछी आवर्तनी वृत्तोना वर्गमां तेनो फरी उल्लेख करेलो छे. उदाहरणार्थ, रथोद्धता अने स्वागता जेनी रूढ मोडणी के न्यास [गालगा लललगा । लगालगा] अने [गालगाललगा । ललगागा] एम छे एटले तेनुं विवेचन अनावर्तनी वृत्तमां कर्युं छे. परंतु तेनी मोडणी अनुक्रमे [गालगाललल। गालगालगा] अने [गालगाललल। गालल गागा] एवी लेतां ते पद्यावर्तनी (=अष्टमात्रक) थाय छे तेथी तेनो उल्लेख विद्युन्माला वर्गमां फरी कर्यो छे ('छन्दोरचना' पृ. ९५–९६). अलबत तेओ अहीं ज आगळ जतां स्वीकारे छे के मोडणी भिन्न थई एटले छन्द भिन्न थयो समजी लेवो जोईए. अने तेथी एवी रीते अनावर्तनी वृत्तने आवर्तनीमां गणतां तेमणे मळी आव्युं त्यां बीजुं नाम आपेलुं छे. जेम के अनावर्तनी पृथ्वीने तेमणे आवर्तनी विलंबितगति कहेलो छे. (एजन) आम करती वखते तेमणे आवर्तनी वृत्तमां ताल मूकवो जोईतो हतो एम हुं मानुं छुं. पण तेनो आग्रह हुं न करी शकुं, कारण के तेमणे जाति

छंदोमां ताल क्यांय दर्शाव्यो नथी. पण आम करवा पहेलां एक प्रश्न विचारी लेवो जोईए के ए वृत्तनी आवर्तनी अने अनावर्तनी मोडणीमांथी कई वधारे सुन्दर छे, अने जो अनावर्तनी वधारे सुन्दर होय तो पछी तेनुं आवर्तनी रूप आपी निरर्थक द्विधा न करवी जोईए. रथोद्धताना अनावर्तनी उच्चारण के पठन करतां तेनुं आवर्तनी उच्चारण (गालगालगल गालगालगा) कोई कहेशे नहीं के वधारे सुन्दर छे. पृथ्वीनुं पण तेम ज छे. आ तो ठीक पण क्यांक क्यांक तो अनावर्तनी वृत्तमां प्लुतिनी मात्रा उमेरीने तेने हठथी आवर्तनी करेलुं छे. आनो प्रसिद्ध दाखलो अवितथ छे. आ वृत्तने तेमणे वृत्तविस्तारमां ५०२ संख्यामां लीधुं छे (छ. र. पृ. १६०). तेनी मोडणी ५०२ अवितथ [◡◡◡◡ – ऽऽ । ◡ – ◡◡◡ – । ◡◡ – ◡◡ –] ए प्रमाणे आपी छे. एने मारी संज्ञामां मूकतां ललललगा ◡◡ । लगा लललगा । ललगा ललगा एम थाय. प्रथम संधि पछी ऽ आ चिह्न आवे छे ते प्लुतिनी एक मात्रानुं छे. अर्थात् पहेला संधिना गुरुने तेओ चार मात्रानो प्लुत करे छे. शा माटे? एम करवाथी एमणे आपेल दरेक खंड आठ आठ मात्रानो थई रहे छे, — आवर्तनी बने छे, माटे! पण अवितथना पठनमां त्यां गुरु चार मात्रानो उच्चाराय छे खरो? पृष्ठ २७० उपर तेओ बतावे छे के अवितथ भागवत दशम स्कंधमां वपरायो छे. त्यांथी एक श्लोक लई तेमणे दाखलो पण आप्यो छे जेमां अवितथ शब्द आवे छे, जेनाथी आ वृत्तनुं नामकरण थयुं छे. में भागवतनो आ भाग जे वेदस्तुति कहेवाय छे ते अनेक वार सांभळ्यो छे. परंपरा प्रमाणे गवातो सांभळ्यो छे. त्यां कदी पण ए गुरु प्लुत उच्चारातो नथी. तो पछी तेने मात्र आवर्तनी करवा खातर ज तेमां प्लुत मात्राओ शा माटे उमेरवी? अने उमेरी ते तो ठीक, पण तेनुं अनावर्तनी रूप आप्युं ज नहीं! आ तो मूळ स्वरूपने विकृत करी मूकवा बराबर छे. पटवर्धनना समर्थ निरूपणमां आ खरेखर एक मोटी खामी छे. वृत्तने अनावर्तनी आप्या पछी तेने शा माटे आवर्तनमां नांखवुं ए हुं तो समजी ज शकतो नथी! अने आम मात्रा वधारीने तो गमे तेवा अनावर्तनी वृत्तने आवर्तनी बनावी शकाय. पटवर्धने बीजां वृत्तोमां पण आ रीते मात्राओ वधारी छे पण तेमांनुं कोई वृत्त प्रसिद्ध अने सुन्दर नथी एटले ए विशे कशुं कहेतो नथी.

७

वृत्तोनो मेळ : नवां वृत्तो

हवे, अत्यार सुधी वृत्तोना मेळ विशे में जे कांई कह्युं, वृत्तोनो मेळ साधनारां जे जे घटक अंगो उपांगो अवयवो बताव्यां, ते नवां वृत्तो रचवामां केवी रीते प्रयुक्त थाय छे अथवा व्यापारमय बने छे ते जोईए. खरी रीते कोई पण वस्तुना अस्तित्वनो पुरावो तेनो व्यापार छे. अने कोई पण वस्तु समग्ररूपे एक छे तेनो पुरावो तेनो समग्ररूपे थतो व्यापार छे.

नवा छन्दोना निरूपणमां पण अहीं सुधीमां जे पृथक्करणक्रम आवी गयो ते क्रमे ज हुं चालीश. श्लोकनां मुख्य अंगोपांगो ते श्लोकार्ध अने चरण छे. में आगळ कह्युं के नवुं पिंगल आखा श्लोकमां तेम ज तेना एक चरणमां पण मेळनुं समग्रपणुं स्वीकारे छे. ए चरणनुं पृथक्करण करतां सयतिक वृत्तोमां प्रथम यतिखंडो मळे छे, अने ए यतिखंडोनुं तेम ज अयतिक वृत्तोनुं पृथक्करण करतां संधिओ मळे छे जेने वृत्तना अवयवो कही शकाय.

आ क्रमने अनुसरतां मारे प्रथम ए दर्शाववानुं के नवां वृत्तो, भिन्न वृत्तोना चरणोना विन्यासथी थाय छे. बीजी रीते कहीए तो वृत्तोनां मिश्रणोथी थाय छे. आ मिश्रणप्रयोग ठेठ वेदकालथी कविओने सुविदित हतो. अनुष्टुप त्रिष्टुभ वगेरे छन्दोनां पादोनां मिश्रणोथी लांबा छंदो बनता तथा प्रगाथ बनता (गत पृ. ६१-२). आपणे आवा मिश्रछन्दोनी पिंगले स्वीकारेली उपजाति जोई,—इंद्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्राना मिश्रणथी थती. आ युग्मना छन्दो एकबीजा साथे बहु ज मळता छे, मात्र एकमां पहेलो अक्षर गुरु छे ते स्थाने बीजामां लघु छे एटलो ज फेर छे. आ उपजाति उपर टीका करतां प्रसिद्ध टीकाकार हलायुध आ मिश्रणव्यापारने विस्तारवा प्रयत्न करे छे. ते ज तेने इन्द्रवंशा अने वंशस्थना मिश्रणने पण लागु पाडे छे. तेम ज शालिनी अने वातोर्मी जेवां स्वल्पभेदवाळां वृत्तोना उपजातिओ थई शके एम कहे छे. वातोर्मी में मारा निरूपणमां लीधो नथी कारण के बहु वपरातो नथी. ते शालिनीने मळतो छे.

वातोर्मी : गागागागा । ललगा गालगागा छ. शा. ६, २०

यति पछीनो संधि शालिनीना गालगाने बदले अहीं ललगा छे, एटलो ज भेद छे. एटले सरखी संख्याना अक्षरोवाळां वृत्तोनुं मिश्रण अहीं स्वीकारायुं

छे. पण आना उपर संपादक पादटीपमां बीजा कोई पुस्तकना पाठांतरमां मळी आवतां बीजां वृत्तोनां मिश्रणोनां उदाहरणो बतावे छे :

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम्
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्ति
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम्॥

अहीं पहेली बे पंक्तिओ शार्दूलविक्रीडितनी छे अने बीजी बे स्रग्धरानी छे. बीजुं उदाहरण :

यो विश्वात्मा विधिजविषयान् प्राश्य भोगान् स्थविष्ठान्
पश्चाच्चान्यान् स्वमिति विभवाञ्ज्योतिषां स्वेन सूक्ष्मान्।
सर्वानेतान् पुनरपि शनैः स्वात्मनि स्थापयित्वा
हित्वा सर्वान् विशेषान् विगतगुणगणः पात्वसौ नस्तुरीयः॥

अहीं प्रथमनी त्रण पंक्तिओ मंदाक्रान्तानी छे, अने छेल्ली स्रग्धरानी छे. —संपादक कहे छे के नव्यो आ उपजातिओने पण स्वीकारे छे (छ. शा. ३जी आवृत्ति अ. ६. सू. १७नी हलायुधनी टीका उपरनी पादटीप). पछी ए आगळ कहे छे के सरखी संख्यानां वृत्तोनां ज मिश्रणो थई शके एवो आम्नाय छे. अने तेथी आ मिश्रणोने 'अत्रानुक्तं गाथा' (छ. शा. अ. ८ सू. १)[1] ए सूत्र प्रमाणे गाथा गणवी. अने पिंगलना तंत्र प्रमाणे तेने गाथा ज गणवी पडे. आ शास्त्रनिरूपणनी पद्धतिथी ए आवश्यक बने छे. कारण के छंदोनी जातिओ चरणनी अक्षरसंख्या उपरथी थई, पछी जो भिन्नभिन्न संख्याना अक्षरोनां चरणोना संकरने स्वीकारे तो तेनो कई जातिमां समावेश कराय? तेने अर्धसममां पण न नांखी शकाय कारणके ते तो नियमित थई गया छे. अने उपजातिमां एकी पदो सरखां होतां पण नथी. आ पद्धतिमां विषमनी आ रीते ज व्यवस्था करी शकाय. तेथी हलायुधने अनुसरनार केदार भट्ट अने तेनो विद्वान टीकाकार नारायण भट्ट पण आ जातनी ज उपजातिओ स्वीकारे छे. हेमचन्द्रना आ संबंधी उल्लेखो कंईक वधारे उदार जणाय छे. ए, "एतयोः परयोश्च संकर उपजातिः" एम सूत्रमां ज कहे छे. अर्थात् "आ (एटले इन्द्रवज्रा अने उपेन्द्रवज्रा)नो तेम ज बीजा छंदोनो संकर ते उपजाति" एम कही बीजा छंदोना संकरने आ वर्गमां अवकाश आपे छे. पछी सूत्र मूके छे: "सर्वजातीनामपीति वृद्धाः।" अर्थात्, सर्व-जातिना संकरने उपजाति कही शकाय एवो वृद्धोनो मत छे. पछी एना उपर पोतानी

१. अर्थ : अहीं नहीं कहेवायेला छंदोने गाथा कहेवा।

टीका आपे छे: "सर्वजातीनामुक्तादीनां, प्रायो गायत्र्यादीनाम्, इतः परासां जगत्यादीनां कृतनामाकृतनामविसदृशप्रस्ताररूपस्वस्वपादानां स्वल्पभेदानां संकर उपजातिरिति बहुश्रुताः प्राहुः।" अर्थात् जुदी जुदी संख्याना अक्षरोथी थता छन्दोनी उक्ता वगेरे जे जातिओ थाय तेमनो संकर, खास करीने गायत्रीनो संकर अने तेथी आगळ जतां जगती वगेरे बीजी जातिओनो संकर, उपजाति कहेवाय. आनो अर्थ भिन्न जातिना एटले भिन्न संख्याना अक्षरोना छंदोनुं मिश्रण एवो थई शके. पण आगळ जतां स्वल्प भेदवाळा छंदोनो संकर एम कह्युं छे एटले अक्षरसंख्यामां बहु फरकवाळानो संकर न थई शके एवो अर्थ समजवानो छे. पण अहीं विशेषता ए छे के नामवाळा प्रसिद्ध छंदो साथे नाम विनाना भिन्नभिन्न प्रस्तारथी थता छंदोने पण ए संकरमां स्थान आपे छे; त्रिष्टुभना भिन्नभिन्न प्रस्तारथी थयेला नाम विनाना छंदोना मिश्रणनां दृष्टान्तो आपे छे. "यथा त्रैष्टुभः स्वप्रस्तारेण।" जेम के त्रिष्टुभना पोताना प्रस्तारथी थता छंदोनुं मिश्रण:

कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं। १

आमां बीजी पंक्ति इन्द्रवज्रानी छे, प्रथम पंक्तिमां एटली विकृति छे के पांचमा गुरुने बदले लघु छे,

गागालगाल ललगा लगागा

एम छे. जो के हुं मानुं छुं के प्राकृत भाषा छे एटले ए पांचमो 'हि' त्यां गुरु ज बोलातो हशे. पण हेमचन्द्रे एने लघु गणी एने नाम विनानो छंद गणेलो छे. बीजुं दृष्टान्त:

सक्कारए सिरसा पंजलीओ
कायग्गिरा भो मणसा य निच्चं। २

बीजी पंक्ति इन्द्रवज्रानी छे, पण पहेली कोई पिंगलमान्य वृत्तमां बेसती नथी. ए नाम विनानो छंद छे:

गागालग्ग ललगा गालगागा

पछी 'परजाति प्रस्तारेण' अर्थात् बीजी जातिना प्रस्तारथी थता छंदनो संकर:

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः १२
स्कंधोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखा। ११
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे ११
मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥ ११

अहीं १२ अक्षरना जगती साथे ११ अक्षरोना त्रैष्टुभोनो संकर छे. जगती ते

વંશસ્થ છે. પણ ત્રૈષ્ટુભોમાં ત્રણેયમાં વૃત્તો જુદાં જુદાં છે. ત્રીજી પંક્તિ ઇન્દ્રવજ્રાની છે, ચોથી શાલિનીની છે, પણ બીજી ગ્રાહી કે વિષ્વંકમાલાની છે.

ગ્રાહી કે વિષ્વંકમાલા : ગાગાલ ગાગાલ ગાગાલ ગાગા ૧૧

અહીં શ્લોકોમાં જણાતી અનિયમિતતા વાળી પંક્તિઓને હેમચંદ્ર એ જ જાતિના ભિન્ન પ્રસ્તારની કહે છે. પિંગલની પરિભાષામાં એ એમ જ કહી શકે. પણ આ શ્લોકોની અનિયમિતતા ગાણિતિક પ્રસ્તારપ્રયોગમાંથી ઉદ્ભવતી નથી. આ શ્લોકો આર્ષ છે, આખ્યાનકાલના છે, જે કાલમાં હજી છંદોને અત્યારનાં પિંગલોમાં મળે છે તેવાં નિયત સ્વરૂપો મળ્યાં નહોતાં. અને તેથી તેમાં અનિયમિતતા છે. છતાં એ આખ્યાનોના વસ્તુની ઉદાત્તતાને લીધે, તેમ જ એ શ્લોકોના ભાવપૂર્વક થતા પ્રલંબિત પઠનમાંથી નિષ્પન્ન થતા એક પ્રકારના ઘોષને લીધે, એ છંદોની સાથે એક ભવ્યતાનો ભાવ સાહચર્ય પામ્યો છે. અને તેથી એ ભાવનાં અત્યારનાં આપણાં કાવ્યો પણ છંદોમાં એ અનિયમિતતા કૌશલ્યથી આણે છે, એ આપણે આગળ જોઈશું. અહીં તો ઉપજાતિના પારિભાષિક નામ નીચે ભિન્નભિન્ન પિંગલો કેટલે સુધી મિશ્રણો સ્વીકારવા તૈયાર હતાં, એટલું જ જોવું પ્રસ્તુત છે.

સૂત્રપદ્ધતિ પ્રમાણે વિશેષ ભેદવાળા સંકરો ગાથા જ ગણાય. પણ પિંગલે જો મેળના સિદ્ધાન્તોની ચર્ચા કરવી હોય તો આ મિશ્રણને એક મેળનો વ્યાપાર ગણવો જોઈએ.

આવાં મિશ્રણો સંસ્કૃત સાહિત્યમાં પણ થયાં છે તે સુવિદિત નહોતું ત્યારે નરસિંહરાવે સૌથી પ્રથમ ઉપજાતિ અને વસન્તતિલકાનું મિશ્રણ પોતાના એક કાવ્યમાં કર્યું —

> પ્રચંડ એ જ્યોતિ અખંડ વ્હેતો
> વિશાળ આ વિશ્વ વિલોપિ દેતો;
> ના જ્યોતિથી ભિન્ન દિસે જ કાંઈ
> આ પેર જો! પ્રકૃતિ ડૂબિ પુરુષમાંહીં.

'દિવ્ય ગાયકગણ,' હૃદયવીણા, પૃ. ૧૦૯

આ મિશ્રણ વિશે નરસિંહરાવ લખે છે :

The author of this work believed he had created this original combination, till years afterwards he heard the following lines quoted from the *Bhagavata*:

> તં સર્વવાદપ્રતિરૂપશીલં
> વન્દે મહાપુરુષમાત્મનિગૂઢબોધમ્ ।।

(Probably from the XIIth Skandha)

Gujarati Language and Literature Vol. II p. 288

नरसिंहराव कहे छे के आ मिश्रण में नवीन ज कर्युं छे एम मानतो हतो पण में नीचेनी भागवतनी पंक्तिओ केटलांक वरसो पछी सांभळी जेमां ए ज मिश्रण नजरे पडे छे. नरसिंहराव लखे छे के आ पंक्तिओ घणे भागे बारमा स्कंधमां आवे छे. अलबत नरसिंहरावे भागवतमां आ पंक्तिओ शोधीने मेळवी जोयुं नथी पण एनी शोध करतां ए पंक्ति पण वसंततिलकानी ज नीकळे छे. ए आखो श्लोक नीचे प्रमाणे छे:

यद्दर्शनं निगम आत्मरहःप्रकाशं
मुह्यन्ति यत्र कवयोऽजपरा यतन्तः।
तं सर्ववादविषयप्रतिरूपशीलं
वन्दे महापुरु मात्मनिगूढबोधम् ॥

भागवत, १२, ८, ४९

एटले उपजाति-वसंततिलकानुं मिश्रण नरसिंहरावनुं ज नवीन रहे छे. पण ए साचुं छे के भागवतमां छंदोना घणा नवा प्रयोगो थया छे, अने छंदोना पिंगलनियत स्वरूपमां घणी छूट पण लेवाई छे.

आ मिश्रणना छंदो उपजाति अने वसन्ततिलका वृत्तोनी संख्या भिन्न-भिन्न छे, एकनी अगियार अने बीजानी चौद, अने तेथी पिंगलनी परंपरामां बन्ने भिन्नभिन्न वर्गना गणाय, पण मेळनी दृष्टिए बन्ने एक ज वर्गना छंदो छे ए पठन करतां जणाई आवे छे, अने पृथक्करण करी आपणे आगळ जोईशुं. साहित्यमां कोई एक नवुं पगलुं एक वार भराय पछी ए दिशामां प्रगति थतां वार लागती नथी. उपजाति-वसंततिलकानी पेठे ज शालिनी कुटुंबना छंदोनी पंक्तिओनां पण मिश्रणो थाय छे. नीचे नानालालनुं एक उदाहरण उतारुं छुं:

आछा पेला श्याम अब्धी तरंगे
व्हाली! व्हारी मूर्ति जो! मेघरंगे;
विश्वान्तर्मा, गीत शां घोर गाजे!
व्हालो त्य्हांये प्रणयरसिलुं आत्मबिन्दू विराजे.

'मणिमय सेंथी'—के. का. भा. १

अहीं शालिनी अने मंदाक्रान्तानुं मिश्रण छे. नीचेनुं दृष्टान्त शालिनी-स्रग्धराना मिश्रणनुं छे:

निःसत्योमां ओ महासत्य एक!
सत्कर्मोमां जे सरे छे सदाय—
धारी सत्ता मानुषोथी विशेक,
रेवा! गीतो थां तूं हंमेश गाय

जेनां साचां रहस्यो कठण समजवां लोकने सर्वथाय.

'रेवा,' पतील

शालिनी कुटुंबनां वधारे लांबां वृत्तोना मिश्रणनुं एक दृष्टान्त नीचे उतारुं छुं:

आव्यां वेगे वरस धसतां साहसोत्साह केरां,
हैयूं झंखे अमित अतळां ऊडवां बूडवां ज्यां:
वर्षाभीनी धसति चडती जेम रेवा तुं रेले,
कांठा भेदे, उपवनवनो खेतरो गाम वेडे;
तोये देती रसकस नवां जीवनो हाथ व्होळे—
छे ना सृष्टी विशे कं क्षणिक तदपि ताजी जुवानीनि तोले.

'रेवा' भणकार, पृ. ४५

अहीं मंदाक्रान्तानी पांच पंक्ति पछी स्रग्धराथी उपसंहार थई एक श्लोक बने छे. एथी पण ए ज कुटुंबना वधारे छंदोनुं मिश्रण:

व्हाली विश्वे कोड शा जीववाना?
जिवतर कलहोना कंटकोने बिछाने?
अंगे अंगे रुधिरझरती मानवीजात वच्चे?
अश्रू छानां अछानां, अविरत डुसकांनी कलंकावली ज्यां?

'सान्त्वना', निशीथ, पृ. ३३

आ बधां दृष्टान्तोमां वधारे लांबी पंक्ति श्लोकने अंते आवे छे ते अंग्रेजी स्पेन्सेरियन स्टान्झाना अनुकरणमां होवानो संभव छे. तेमां पंक्तिओ इयँबिक पेन्टामीटरमां आवी अंते लांबी एलेक्झान्ड्राइन पंक्ति आवे छे, ते उपसंहारमां सुन्दर देखाय छे. तेम अहीं पण थयुं छे. ए ज प्रमाणे सोनेटमां पण उपसंहार माटे अंतनी एक के बे पंक्ति वधारे लांबा वृत्तनी वपराय छे.

एथी ऊलटी रीते लांबी पंक्ति पहेलां आवे अने टूंकी पछी आवे एम पण बने छे. अने ए पण सुन्दर होई शके छे. जेम के:

आजे मारुं जिवनसहरा आगना फाग खेले
छो ने खेले—
कां के वर्षा ग्रीष्म पूंठे लपाती
आवे जाणे सासु पूंठे नवोढा!

'अमर आशा', चक्रवाक, पृ. ९४

आ वक्तव्य एवुं छे के आ प्रमाणे गोठवातां बराबर यथोचित बेसी जाय छे.

आ मिश्रणोमां छंदो एक ज कुटुंबना अने मेळना छे पण भिन्न मेळना छंदोनां पण मिश्रण थाय छे:

झुक्यो अधीर विधु मुग्ध वसुन्धरा पे,
जेवो लळे रसिक को निरखी प्रियाने;
ने गौर ते प्रियतमा मुखने सुहावी,
झूली लटो अलकनी ज्यम रम्य रे'ती,
छायाओ शी त्यम रहि लखी पृथ्वि–भाले–कपोले
'चंद्र अने ओळा', पनघट पृ. ६७

अहीं वसंततिलका अने मंदाक्रान्तानुं मिश्रण छे. तेवुं ज वसंततिलका साथे स्रग्धराना मिश्रणनुं नीचे उदाहरण आपुं छुं:

"हे कोकिला! उभयनो तन रंग एक,
ने चांच पिच्छ पण आम समान छेक;
छीए सगां, पण जरा स्वर भेद"; काग
बोले एवुं, कहे त्यां झट परभृतिका: "ए जरी भेद भांग."
'जरी भेद', पांखडी, पृ. १०६

आ बधा करतां वृत्तोनुं अनुष्टुप साथेनुं मिश्रण कंईक जुदा प्रकारनुं गणवुं जोईए. कारण के आपणे जे वृत्तो जोयां ते करतां अनुष्टुप विलक्षण छे. कवि नानालालनां आनां उदाहरणो जोईए:

ऊंचेथी जेटले आवे
पाणी प्रजाभक्ति तणां नृपालनां
फुवारा तेटला ऊंचा
उडे प्रजानी नृपराज भक्तिना.

अने
द्हाडे द्हाडे सूर्य जो तेज ढोळे,
रात्रे रात्रे चंद्रिका चन्द्र घोळे,
अनन्ता युगनां आवे अनन्तां तेज छांय जे,
ए ज संस्कार सर्वस्व प्रजानी संस्कृति हले.

पहेला उदाहरणमां पहेली अने त्रीजी पंक्ति अनुष्टुपना विषम चरणनी छे, अने बीजी तथा चोथी इन्द्रवंशा तथा वंशस्थनी छे. बीजा उदाहरणमां पहेली बे पंक्ति शालिनीनी छे, अने तेने अनुष्टुपना श्लोक साथे जोडी एक श्लोक करेलो छे. उमाशंकरनो आने मळतो दाखलो:

'फरी कदी ले नहि हाथ टोकणुं
प्रतिज्ञा एवि जो करे,

आपुं तने भेट खरा सुवर्णनुं,
सघरा जेसंग उच्चरे.

'कलानो शहीद', गंगोत्री, पृ. ७४

नानालालना दृष्टान्तमां पहेली पंक्ति अनुष्टुपनी हती, तो त्यां ए अनुष्टुपनुं विषम एटले प्रारंभक चरण हतुं, उमाशंकरमां बीजी अनुष्टुपनी छे, एटले ए अनुष्टुपनी सम एटले उपसंहारक पंक्ति छे. ए रीते त्रीणी विगतोमां पण मेळ सचवाय छे. आ अनुष्टुप के गायत्रीना पादो साथे अन्य वृत्तोनां मिश्रणो ठेठ वेदकालथी मळी आवे छे (जुओ गत पृ. ६१–२).

अहीं सुधी आपणे एक ज श्लोकमां भिन्नभिन्न वृत्तो एटले अनावृत्त-संधि अक्षरमेळ छंदोनां चरणोनुं मिश्रण जोयुं. पण त्रैष्टुभ कुटुंबनी उप-जातिओमां अने विशेष करीने तो एना छन्दःप्रवाहमां प्रवाह साथे भळी शके एवा आवृत्तसंधि अक्षरमेळ छंदनी पंक्तिओ पण आवे छे. आनुं एक सुन्दर श्लोकबद्ध दृष्टान्त प्रो. ठाकोरनुं मळे छे. ते जोईए:

कोनूं आखूं कोनुं हैयूं गळेलुं,
कोनी साची कोनि खोटी परीक्षा,
ए प्रश्नोने ते ज जाणे उकेली
ऊकेलतो सार निःसारनो जे,
निःसार गाळि शकतो वळि सारमांथी.

'पूछुं मने कटेव', भणकार, पृ. ३२८

पांच पंक्तिनो आ आखो एक श्लोक छे. तेमां पहेली त्रण पंक्तिओ सयतिक शालिनीनी छे. छेल्ली पांचमी वसंततिलकानी छे. चोथी ग्राही के विध्वंक-मालानी छे.

ग्राही : गागाल गागाल गागाल गागा

आ पंचमात्रक गागालनां आवर्तनो छे, छेल्लुं आवर्तन खंडित छे. ए रीते पंक्ति आवृत्तसंधि होवा छतां ते इन्द्रवज्रानी बहु नजीकनी छे. संधिओने बाजुए राखी कहेवुं होय तो एम कहेवाय के ग्राहीना सातमा गुरुनी जगाए लघु मूको एटले इन्द्रवज्रा थई जाय छे. पण जरा जुदी रीते जोतां ए शालिनीने पण बहु ज मळती छे. ग्राहीना त्रीजा लघुने स्थाने गुरु मूको एटले शालिनीनी पंक्ति थाय — अलबत तेमां यति आवे. पण आथी पण वधारे विलक्षण छंदनी पंक्तिओ छन्दःप्रवाहमां आवे छे, ते आपणे छन्दःप्रवाह विशे विचार करतां जोईशुं.

आ पछी आपणा पृथक्करणने क्रमे भिन्न वृत्तोना यतिखंडोना मिश्रणथी थता छंदो आवे. आवा प्रयोगो गुजरातीमां बहु थया नथी, अने संस्कृत पिंगलोमां

आवा प्रयोगोना छंदो छे ते पण कविप्रिय थया जणाता नथी. जाणे कंईक कौतुक खातर करेला जणाय छे. आना गुजरातीमां मळी आवता दाखला पहेला आपुं :

वर्षे वर्षे, कंइक युगथी, आम तूं तो पधारे,
तोये शाने पुनरपि घनान्धार घेराय हैये ?
तूं हो त्यारे सरल तरतूं तेजना सागरोमां
ते विश्वे कां पुनरपि रहे घोर वाधी तमिस्रा ?
मने प्रश्नो एवा कदि नहि स्फुरता; धन्य कां के गणूं हूं
अमासे अंधारी, क्षणिक तदपि ए दर्श तारी प्रभानुं.

'दर्श तारी प्रभानुं —', अभिसार, पृ.९९

आ काव्य सॉनेट छे. तेमां मुख्य प्रवाह मंदाक्रान्तानो छे. अने तेमां अंते उपसंहारार्थे लांबी बे पंक्तिओ मूकी छे ते शिखरिणी अने स्रग्धराना यतिखंडोनुं मिश्रण छे. पहेला छ अक्षरोथी शिखरिणीनो आद्य यतिखंड थाय छे, अने तेनी पछी स्रग्धराना मध्य अने अंत्य यतिखंडो आवे छे. मिश्रणनो आ सुभग दाखलो छे. हेमचन्द्रे आने शोभा कहेल छे.

शोभा : लगा गागागागा । ललललललगा । गालगा गालगागा

छंदोनु० पृ. १५अ

आनी नजीकनो एक दाखलो मळे छे ते लउं :

प्रिये, ले रीसाई पथ मनगम्यो, जा ज्यहीं चाहुं फाव्युं,
न आक्रन्दे अश्रू नयन वहशे, दीनता ना, न हैयुं
तमारा पंथे थै विवश पद आळोटशे, ए अछानुं
सदा तारे पंथे सुरधनुसमूं पाथरी र्‌हे बिछानुं.

'प्रिये जो ना आवे', उर्वशी अने यात्री, पृ. ७२

अहीं पहेलो यतिखंड शिखरिणीनो छ अक्षरनो छे, अने ते पछीना बन्ने खंडो मंदाक्रान्ताना छे. आ पण संस्कृत पिंगलोए नोंधेलो छंद छे. हेमचन्द्र तेने विस्मिता अथवा मेघविस्फूर्जिता कहे छे.

विस्मिता :
अथवा लगा गागागागा । ललललगा । गालगा गालगागा
मेघविस्फूर्जिता छंदोनु० पृ. १४अ

शोभामां अने आमां फेर एटलो ज छे के शोभाना मध्यखंड करतां आना मध्यखंडमां एक लघु ओछो छे.

अहीं आपणे शिखरिणीना पहेला यतिखंड साथे स्रग्धराना अने मंदाक्रान्ताना उत्तरखंडोनुं मिश्रण जोयुं. एथी ऊलटो दाखलो एक आवी गयो छे

ते जोईए. आपणे छंदोमां सुवदना जोई गया. (गत पृ. ९२) सगवड खातर तेनो न्यास फरी मूकुं:

सुवदना: गागागागा लगागा । ललललललगा । गागा ललगा

अहीं पहेला बे यतिखंडो स्रग्धराना छे. हवे शिखरिणीनो आखो अगियार अक्षरोनो उत्तरखंड अहीं लांबो पडे; एनो पहेलो संधि लललललगागा बाद करतां रहेतो ललगा संधि एकलो अंत्यखंडमां टूंको पडे. एटले आगला संधिमांथी बे गुरुओ पण उतारी लीधा. आ प्रमाणे खंडोनुं समतोलपणुं जाळववानो प्रयत्न कर्यो. छतां मने अहीं अंतिम खंड आगला खंड साथे सफाईथी रहेणाईने संधाई जतो लागतो नथी. जराक ए बे संधिओनी वच्चे कढंगापणुं लागे छे, जाणे बोलतां खांचो पडे छे.

हवे जुदी जातना मिश्रणनो दाखलो लईए, स्रग्धरा अने मंदाक्रान्ताना यतिखंडोना मिश्रणोनो. गूंचवण न थाय माटे यति बताववा एकवडुं अवतरण चिन्ह करुं छुं:

पृथ्वीनी ओढणीमां' झिणि झिणि पडि गै' भात सूवर्णरंगी
तारा नीचे सरीने' कुसुम बनि गयां' छोडवे छोडवे जै.
मुद्राओ, अंगभंगो' महि अजब जा'दू भर्या जिंदगीनां
एने रंगो तणी के' किरणगुंथणो'नी न'ती खेवना कैं
झंकारे दिक् नुपुरना', चरणपडछं'दे मृदंगे चढीने
ए पेला पंखीओने' हृदय तणी के'ती कथा कोक छानी.
पाछूं जोती हसीने' ठमक ठमकती' पानिओ रंगभीनी
नाची रैती जवानी' जिवनभभकथी' — गर्वघेली कलाथी:
चारे कोरे वसंतो': कुसुमढपवनो', कैंक रंगी कमानो
पृथ्वीनां अंगमांथी' पि रहि हृति ए' प्रकृतीनी खुमारी.

'उषानुं नृत्य', गोरसी, पृ. ३५

आ चौद पंक्तिनो सॉनेट छे. आनी पहेली छ पंक्तिओ शुद्ध स्रग्धरानी छे, जेमांनी ५–६ पंक्तिओ में उपर आपी छे. ते पछी आवता षट्कमां पण ११-१२–१३ पंक्तिओ शुद्ध स्रग्धरानी छे. बाकीनी एटले ७–८–९–१० अने १४ एटली पांच पंक्तिओमां पहेलो खंड स्रग्धरानो छे, अने बीजो मंदाक्रान्तानो छे. आ भिन्न यतिखंडो मारी दृष्टिए मेळ खाता नथी. स्रग्धराना लांबा प्रथम यतिखंडनी साथे समतोल थवाने स्रग्धरानो ज लांबो यतिखंड जोईए छे, मंदाक्रान्तानो तेने टूंको पडे. पण अहीं तो शुद्ध अने मिश्र पंक्तिओ सेळभेळ थवाथी पठन वधारे विघ्नवाळुं बने छे ए पण कहेवानुं छे. आ

पंक्तिओ छापेली छे ते उपरथी पण छन्दफेर थयानी कशी सूचना मळती नथी ए पण मुश्केलीनुं एक बीजुं कारण छे. आ मिश्र छन्द पण पिंगलमां मळे छे :—

चित्रमाला : गागागागा लगागा। लललललगा। गालगा गालगागा

छन्दोनु॰ पृ. १५अ

परंपराप्राप्त पिंगलोमां आवा यतिखंडोनां मिश्रणोथी थता छंदो आप्या छे ते जोई जईए.

कुसुमितलतावेल्लिता : गागा गागागा। लललललगा। गालगा गालगागा

छं. शा. ७–२०

अहीं वैश्वदेवीना पहेला यतिखंडने मंदाक्रान्तानो बीजो अने त्रीजो खंड लगाडेलो छे. वैश्वदेवी पोते बहु सुन्दर छंद नथी, अने आ प्रयोगथी पण ते कांई सुधरतो नथी.

पद्म : लललललगा । गागागागा। गालगा गालगागा

छंदोनु॰ पृ १२ब

अहीं मंदाक्रान्ताना पहेला बे यतिखंडो हरिणीनी पेठे उलटावेला छे, अने अंत्य यतिखंड मंदाक्रान्तानो ज कायम राख्यो छे. रचना हरिणी जेटली सुन्दर लागती नथी.

भाराक्रान्ता : गागागागा । लललललगा । लगा ललगा लगा

एजन, पृ. १२ब

अहीं पहेला बे यतिखंडो मंदाक्रान्ताना छे, अने अंत्य खंड हरिणीनो अंत्य खंड छे. प्रयोग करी जोवा जेवो छे.

चल : गागागागा । ललललललगा । लगा ललगा लगा

एजन, पृ. १३अ

पहेलो यतिखंड ते मंदाक्रान्तानो पहेलो यतिखंड, बीजो ते स्रग्धरानो बीजो यतिखंड अने छेल्लो ते हरिणीनो छेल्लो.

मकरन्दिका : लगा गागागागा। लललललगा । लगा ललगा लगा

छन्दोनु॰ पृ. १४अ

पहेलो यतिखंड ते शिखरिणीनो पूर्व यतिखंड, बीजो ते मंदाक्रान्तानो बीजो, अने छेल्लो ते हरिणीनो छेल्लो.

उपमालिनी : ललललललगागा । लगा ललगा लगा

छन्दोनु॰ पृ. १०ब

पहेलो खंड ते मालिनीनो पहेलो, अने बीजो ते हरिणीनो छेल्लो.

चंद्रोद्योत : ललललललगागा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० १०ब

अहीं मालिनीना पहेला खंड साथे शार्दूलविक्रीडितनो छेल्लो खंड जोडेलो छे.

ललित : लललललगा। गागागागा । लगा ललगा लगा

एजन, पृ. १३ब

पहेलो यतिखंड ते स्रग्धरानो बीजो, बीजो ते मंदाक्रान्तानो पहेलो, अने छेल्लो ते हरिणीनो छेल्लो. अर्थात् छेल्ला बन्ने हरिणीना.

हारिणी : गागागागा। लललललगा । गागालगा गालगा

एजन, पृ. १२ब

पहेला बे खंडो ते मंदाक्रान्ताना पहेला बे, अने अंत्य ते शार्दूलविक्रीडितनो अंत्य खंड.

छाया : लगा गागागागा । लललललगा । गागालगा गालगा

एजन, पृ. १४ब

पहेलो खंड ते शिखरिणीनो पहेलो, बीजो ते मंदाक्रान्तानो बीजो अने छेल्लो ते शार्दूलविक्रीडितनो छेल्लो.

मेघविस्फूर्जिता : लगा गागागागा । लललललगा । गालगा गालगागा

एजन, पृ. १४अ

पहेलो शिखरिणीनो पहेलो यतिखंड अने पछीना बन्ने मंदाक्रान्ताना छेल्ला बे.

केसर : गागागागा । लललललगा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० पृ. १३अ

पहेलो खंड ते मंदाक्रान्तानो पहेलो, मध्यम ते स्रग्धरानो मध्यम, अने अंत्य ते शार्दूलविक्रीडितनो अंत्य.

रोहिणी : लललललगा । गागागागा। गागालगा गालगा

एजन, पृ. १२ब

पहेला बे यतिखंडो हरिणीना अने अंत्य ते शार्दूलविक्रीडितनो अंत्य.

मदनललिता : गागागागा। लललललगा । गागा ललगा

एजन, पृ. १२अ

पहेला बे यतिखंडो ते मंदाक्रान्ताना अने अंत्य ते सुवदनानो अंत्य.

क्रीडा: लगा गागागागा। लललललगा । गागा लललगा

एजन, पृ. १४अ

पहेलो खंड शिखरिणीनो पहेलो, मध्य खंड ते मंदाक्रान्तानो मध्य खंड, अने अंत्य खंड ते सुवदनानो अंत्य खंड.

शार्दूलललित: गागागा ललगा लगा लललगा। गागा लललगा

एजन, पृ. १३ब

प्रथम यतिखंड ते शार्दूलविक्रीडितनो प्रथम यतिखंड, अने अंत्य यतिखंड ते सुवदनानो अंत्य यतिखंड.

छन्दोना यतिखंडोमांथी नवा छन्दो बनाववानी एक बीजी पद्धति ते यतिखंडोमांथी एकनो लोप करीने छंद टूंको करवानी. आनां बेक दृष्टान्तो गुजराती काव्योमांथी मळे छे ते प्रथम लईए, जो के बन्ने संस्कृत पिंगलशास्त्रोनी गणनामां आवी गयां छे.

आत्मानी यज्ञवेदी, इन्धणां ऊर्मिओनां
प्रारब्धाग्नीशिखाओ, काळवायू निसासा,
हैयानी आहुति ने, अश्रुनां आज्य मोंघां;
आजे संहारसत्रे नवजिवनतणी पामुं दौर्भाग्यदीक्षा!

'पधारो प्रलयानल', आलबेल, पृ. ३१

अहीं छेल्ली पंक्ति स्रग्धरानी छे. अने तेनी उपरनी त्रणमां स्रग्धरानो पहेलो अने छेल्लो यतिखंड छे, वचलो लुप्त करी पंक्तिओ टूंकी करेली छे. आगळ खंडशिखरिणीने नवो श्लोकबंध कह्यो तेम आ आखा श्लोकने स्रग्धरानो नवो श्लोकबंध कहेवो होय तो कहेवाय. पण आपणे एक एक पंक्तिमां पण समग्र मेळ गणीए छीए एटले कहेवानुं ए के एक यतिखंड लोपीने नवो छंद करवानी आ पद्धति छे ते पण साथे साथे ध्यान राखवुं जोईए. आ छंदने पिंगलमां लक्ष्मी कहेलो छे.

लक्ष्मी: गागागागा लगागा। गालगा गालगागा

छंदोनु० पृ. ९ब

आवी ज रीते स्रग्धराना छेल्ला बे खंडोनी एक पंक्ति गुजरातीमां मळे छे:

प्रियजन सहुनो अर्चना आटली शी!

अर्पण, 'श्रावणी मेळो'

आने हेमचन्द्र वसन्त कहे छे. तेनुं बीजुं नाम नन्दीमुखी छे.

वसन्त के नन्दीमुखी : ललललललगा । गालगा गालगागा

छन्दोनु० पृ. ९ब

आवी रीते एकाद खंड ओछो राखी टूंकी पंक्तिनो नवो छन्द कर्याना बीजा दाखला जोईए.

अपराजिता : ललललललगा । लगा ललगा लगा

छन्दोनु० पृ. ९ब

अहीं पहेलो यतिखंड ते स्रग्धरानो मध्य यतिखंड छे, अने अंत्य यतिखंड ते हरिणीनो अंत्य यतिखंड छे.

करिमकरभुजा : ललललललगा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० पृ. ९ब

अहीं पण पहेलो यतिखंड ते स्रग्धरानो मध्य यतिखंड छे अने अंत्य यतिखंड शार्दूलविक्रीडितनो अंत्य यतिखंड छे.

आ बधां दृष्टान्तो उपरथी जणाशे के नवा छन्दना प्रयोगोमां अंत्य खंडने स्थाने कोई पण छंदनो अंत्यखंड ज आवे छे. ज्यां कोई यतिखंडनो लोप थयो होय त्यां पण अंत्यखंडने स्थाने कोई पण छंदनो अंत्यखंड ज आवे छे. अने ए स्वाभाविक छे. कारण के नवा छन्दमां पण मेळनो उपसंहार तो जोईए ज, अने ए उपसंहार करवानुं सामर्थ्य अंत्य खंडमां ज छे. एथी विरुद्ध रीते ज्यां ज्यां नवा छन्दना प्रयोगमां अंते अंत्य यतिखंड नथी त्यां त्यां मेळ स्पष्ट रीते अधूरो जणाय छे. नवा छन्दनी लतवाळा पिंगलकारोए एवा प्रयोगो पण कर्या छे जेम के:

शिखंडिनी : लगा गागागागा

छन्दोनु० पृ. ४अ

हंसी : गागागागा । ललललगा

छ. म. क. २, ४०

आमां पहेलो छंद ते शिखरिणीनो प्रथम यतिखंड मात्र छे. बीजामां मंदाक्रान्ताना प्रथम बे यतिखंडो छे, अर्थात् मंदाक्रान्तानो मध्य यतिखंड अहीं पंक्तिने अंते आवे छे. बन्नेमां उपसंहारनी अपेक्षा रही जाय छे — जाणे पंक्तिनो मेळ बुठ्ठो रही जाय छे.

आना ज अनुसंधानमां अर्धसम वृत्तोनी एक पंक्तिनां आवर्तनोथी बनता नवा छन्दो जोईए. जेम समवृत्तमां एक पंक्तिमां एक अखंड मेळ छे, अने

तेना पूर्व यतिखंडोनो मेळ सापेक्ष छे, तेम ज अर्धसम वृत्तमां पण बे पंक्तिमां थईने एक अखंड मेळ थाय छे, तेनी हरकोई प्रथम पंक्तिनो मेळ, पूर्व यतिखंडनी पेठे ज सापेक्ष छे. अर्धसमनी एक पंक्तिनो व्यापार ते सयतिक वृत्तनी पंक्तिना यतिखंडोना अलग व्यापार जेवो छे. आपणे गुजरातीमां मळी आवतां दृष्टान्तोथी शरू करीए:

(सम–पुष्पिताग्रा)

रुधिरमयां मुख भासतां दिशानां,
विकृत, भयप्रद राक्षसी मुखो शां;
अवनि ऊभी उर हेवताइने शुं!
गगन तणां उडुनेत्र शूं मिचातां!

'शस्त्रसंन्यास', ज्योतिरेखा, पृ. २९

कर्ताए पोते कह्युं छे तेम आ श्लोकनी चारेय पंक्तिओ पुष्पिताग्राना समपादनी छे. हेमचन्द्रे आने सुवक्त्रा अथवा अचला कहेल छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

सुवक्त्रा के अचला : ललललगा ललगा लगा लगागा

छन्दोनु० पृ. ८ब

आवो ज रीते संस्कृत पिंगलमां वरतनु छन्द आवे छे ते अपरवक्त्रना बीजा चरणनो बनेलो छे.

वरतनु : ललललगा ललगा लगालगा

छ. शा. नि. ८, ३

आना लक्षणसूत्रमां पिंगले छठ्ठे अक्षरे यति कही छे पण ते शोभानी छे. अने तेना दृष्टान्तमां ज एक जगाए यतिभंग थाय छे ए हुं आगळ बतावी गयो छुं. (जुओ गत पृ. १८९–९०)

एक बीजो श्लोक श्री उमाशंकरनो लईए.

आवो बाल! रसर्षि सौम्य द्रष्टा,
स्नेहालाप सुहृति सृष्टि स्रष्टा,
स्वर्गंगा शुभ माळ कंठमां छे,
मासो आ मननी मढूलिमां के?

'स्वागत', क्लान्त कवि.

कविए पोते रणपिंगलमांथी जोवी आनुं नाम 'विश्वविराट' कहेलुं छे. पण चालु संदर्भमां मारे ए कहेवानुं के में आगळ अर्धसमना विवरणमां अर्धसमनो एक प्रकार जे भद्रविराट कह्यो (जुओ गत पृ. १३२) तेना सम चरणना आवर्तनथी आ छंद बनेलो छे. विश्वविराट नाम पण भद्रविराटने मळतुं छे, ए एमनो संबंध बतावे छे. त्यां ज आगळ आपेल वैसारीना समचरणनां आवर्तनोथी थता छंदनुं नाम विराट के शुद्धविराट छे, ए पण आना अर्ध-सम साथेना संबंधने विशेष समर्थित करे छे. हेमचंद्र विश्वविराटने एकरूप कहे छे.

एकरूप के विश्वविराट: गागागा ललगा लगा लगागा

छन्दोनु० पृ. ६ब

अने

विराट के शुद्धविराट: गागागा ललगा लगालगा

रणपिंगल, पृ. २७३

हजी सुधी जोयेला सुवक्त्रा, वरतनु, विश्वविराट अने शुद्धविराट त्रणेयमां आवर्तनो ते ते. अर्धसमना समपादनां थयां छे. ए ज स्वाभाविक छे कारण के सममां ज मेळ उपसंहार पामे छे. तेम छतां विषम पंक्तिनां आवर्तनोथी थतो एक छंद नोंधुं छुं: भद्रिका.

भद्रिका : ललललललगा लगा लगा

छन्दोनु० पृ. ६ब

गुजरातीमां दृष्टान्त न होवाथी हेमचंद्रनुं ज उतारं छुं.

परिहर नितरां परापदं[२]
कुरु जिनवचनेनुरागिताम्।
इति तव चरतः परे भवे
भवतु सपदि भद्रिकागतिः॥

आ स्पष्ट रीते पुष्पिताग्राना विषम चरणनां आवर्तनो छे. आनुं बीजुं नाम हेमचन्द्र अपरवक्त्र नोंधे छे ए पण एनो अर्धसमो साथेनो संबंध जणावे छे. आ विषम चरणनां आवर्तनो समचरणना जेटलां मेळवाळां जणातां नथी, सुन्दर लागतां नथी, ए पठन उपरथी तरत जणाई आवशे. तेनुं कारण प्रथम चरणनो

---

२. मूळमां 'परापवादं' एम छे पण एम करतां बार अक्षरो थई जाय छे जे दोष छे. एटले में उपर प्रमाणे पाठ सुधार्यो छे.

मेळ अधूरो छे, ए छे. आना जेवुं वियोगिनी के सुन्दरीना विषम चरणना आवर्तनोनुं वृत्त सहजा मात्र रणपिंगल नोंधे छे.

सहजा : ललगा ललगा लगालगा

रणपिंगल, पृ. २७४

भद्रिका अने सहजा बन्ने विषम चरणनां होवाथी मेळ सापेक्ष — जरा अध्धर रही जाय छे. तेम छतां कंईक पण उपसंहारनो संस्कार आ वृत्तो आपी शके छे, तेनुं कारण ए छे के पंक्तिने अंते लगालगा आवे छे, जेमां उपसंहारनुं सामर्थ्य छे.

आम नवा छन्दो थतां पण उपसंहारनी जगाए उपसंहारक्षम यतिखंड के चरण आवे छे.

अहीं एक प्रश्न थशे. अहीं नवा छंदो तरीके अमुक अमुक छन्दोने नवा कह्या, अने ते अमुक अमुक भिन्नभिन्न छन्दोना यतिखंडोना नवीन विन्यासोथी थया छे एम कह्युं. तेवी ज रीते में अमुक अमुक अर्धसम वृत्तोनां अंगरूप समविषम चरणोना अलग व्यापारथी नवा छंदो थाय छे एम कह्युं. एमां प्रश्न ए थाय के अहीं नवा कहेला छन्दोने ज नवा शा माटे मानवा? दाखला तरीके शिखरिणी अने मंदाक्रान्ताना यतिखंडोथी मेघविस्फूर्जिता थाय छे एम कह्युं तेने बदले मेघविस्फूर्जिता अने कोई एवा बीजा छन्दना यतिखंडोथी शिखरिणी अने मंदाक्रान्ता बन्या एम केम न मानवुं?

आनो जवाब आखा पद्यसाहित्यमां प्रयोजेला छंदोनुं पौर्वापर्य निर्णीत करीने आपी शकाय. आपणे बतावी शकीए के अमुक अमुक छंदो अमुक कविए ज सौथी प्रथम वापर्या. अथवा उपलब्ध पिंगलोना ऐतिहासिक अभ्यासथी पण केटलांक वृत्तो विशे निर्णय करी शकाय. जेमके उपर आपेल मेघविस्फूर्जिता विशे कही शकाय के पिंगलना प्राचीन छन्दःसूत्रोमां ए छंद नथी, पण 'अत्रानुक्तं गाथा' सूत्र नीचे हलायुधे ते विस्मिताना नामे आपेल छे. तेथी प्रस्तुत छंद पूरतुं शिखरिणी अने मंदाक्रान्तानी प्राचीनतानुं विधान साचुं ठरे छे. पण अहीं मारा वक्तव्यने माटे एटलुं बधुं निर्णीत करवानी जरूर नथी. मारा विषयनिरूपणमां छन्दनो मेळ ए मुख्य प्रश्न छे. सुन्दर मेळवाळा ज छन्दो वधारे व्यापक रीते वपरायेला होय, अने तेथी मारे बहु वपरायेला छन्दो उपर ज ध्यान केन्द्रित करवुं जोईए. एम करतां पंक्तिनां अमुक अमुक उपांगो, यतिखंडो जणायां. हवे आ ज यतिखंडो भिन्नभिन्न छंदो उत्पन्न करवामां व्यापारमय बनता होय तो ते ए यतिखंडोनी समग्रता विशे अने चरणना घटकत्व विशे बहु प्रबल पुरावो छे; एटले मारे जे दर्शाववानुं छे

ते मात्र यतिखंडोनी व्यापारमयता छे. एने माटे जरूरनी छे ते वृत्तोनी सरखामणी छे, पूर्वापरता नथी. सरखामणीथी आपणे जोई शकीए के भिन्न कविओए, अथवा अहीं तो विशेषतः पिंगलकारोए, नवा नवा छंदो रचवा ए यतिखंडोनो भिन्नभिन्न रीते विन्यास करेलो छे. अने एटलुं आपणे जोई शकवा छीए. तेम छतां संस्कृत पद्यसाहित्यनो मारो जे कांई परिचय छे ते उपरथी हुं एटलुं कहीं शकुं के अहीं मूळ तरीके गणावेला छंदो, लगभग बधाये, ऐतिहासिक दृष्टिए पण में जणावेला नवा छंदोनी अपेक्षाए प्राचीनतर छे.

यतिखंडो पछी तेनाथी नानो घटक ते संधि छे. सयतिक वृत्तोना यतिखंडो, तेम ज अयतिक वृत्तोनां अखंड चरणो पण संधिओनां बनेलां छे. नवा छंदो बनवामां आ संधिओ केवी रीते निमित्तभूत के साधनभूत थाय छे ते हवे आपणे जोईए.

अहीं सौथी महत्त्वनी पद्धतिने हुं संगम एवुं पारिभाषिक नाम आपीश. एक छन्द पोताने रूपे वहेतो वहेतो एवा संधिए आवे के ए संधि कोई बीजा छन्दमां पण क्यांक आवतो होय, अने पछी ए संधिमां जाणे तेनी साथे संगम पामी ए नवा छन्दमां ज ए वहे ए पद्धतिने हुं संगम नाम आपवा इच्छुं छुं. दृष्टान्तथी आ तरत स्फुट थशे. के. ह. ध्रुव 'शिशुपालवध'मां नवां प्रयोजेलां वृत्तोनो उल्लेख करे छे त्यां सौथी पहेलुं तेओ पथ्या अथवा मंजरी नोंधे छे. ए ए काव्यना ४था सर्गनो २४मो श्लोक छे:

स्थगयन्त्यमूः शमितचातकार्त्तस्वरा
जलदास्तडित्तुलितकान्तकार्त्तस्वराः।
जगतीरिह स्फुरितचारुचामीकराः
सवितुः क्वचित् कपिशयन्ति चामी कराः॥

शिशुपालवध ४, २४

आनो न्यास के. ह. ध्रुव नीचे प्रमाणे आपे छे:

| | | | |
ललगा लगाल ललगा लगागा लगा

सा. वि. २, पृ. २७७

आनो हुं नीचे प्रमाणे न्यास करुं:

पथ्या के मंजरी: ललगा लगा लललगा लगा गालगा

आनो उद्भव प्रमिताक्षरा अने पृथ्वीना संगमथी थयो छे एवो मारो अभिप्राय छे. एनो प्रारंभ प्रमिताक्षराथी थाय छे अने थोडे जतां ज्यां प्रमिता-

क्षरा अने पृथ्वीना समान संधिओ आवे छे त्यांथी ए वृत्त पृथ्वीमां सरी पडे छे. बन्नेना न्यासो नजीक नजीक मूकवाथी आ तरत प्रत्यक्ष थशे :

प्रमिताक्षरा : ललगा लगा लललगा ललगा

पृथ्वी : लगा लललगा लगा लललगा लगा गालगा

प्रमिताक्षरानो बीजो अने त्रीजो संधि अने पृथ्वीनो त्रीजो अने चोथो संधि एक ज छ, बन्ने लगा लललगा छे अने त्यांथी ए वृत्तप्रवाह पृथ्वीमां सरी गयो. रचना प्रमिताक्षराथी उद्गम पामी, लगा लललगाना समान संधिए पृथ्वी साथे संगम पामी अने पछी पृथ्वीमां ज वही तेना ज उपसंहारे पूर्ण थई.

आवो एक बीजो छन्द ध्रुव रमणीयक बतावे छे. ते 'शिशुपालवध'ना १३मा सर्गनो ६९मो श्लोक छे. एने ज तेओ प. ऐ. आ .(पृ २२२) मां नूतन कहे छे :

ना मळे अवनिमां रसदार पुरा मने
स्नेहमां अनुपदे नवधा नव नूतने
वातमां अमृत भोजन-तृप्ति थती मने
श्रीपती अवनिनाथ परस्पर बेउने.

मूळ नीचे प्रमाणे छे :

मर्त्यलोकदुरवापमवाप्तरसोदयं
नूतनत्वमतिरिक्ततयानुपदं दधत्।
श्रीपतिः पतिरसाववनेश्च परस्परं
संकथामृतमनेकमसि स्वदताम्भौ॥

शिशुपालवध, १३, ६९

उपरनो अनुवाद में श्री अंबालाल पटेलना अप्रसिद्ध भाषान्तरमांथी लीधो छे. ध्रुव एनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे :

रे नमे भर बडे रमणीयक थाय छे.

सा. वि. २. पृ. २७७

आना संधिओ एमणे गमे तेम कल्प्या होय. पण हुं नीचे प्रमाणे गणुं छुं :

रमणीयक के नूतन : गालगा लललगा ललगा ललगा लगा

आने हुं उपरनी ज पेठे रथोद्धता अने द्रुतविलंबितना संगमथी थयो मानुं छुं.

रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा

द्रुतविलंबित : लललगा ललगा ललगा लगा

रथोद्धतानो बीजो संधि लललगा छे अने ए ज द्रुतविलंबितनो पहेलो संधि छे. ए समान संधिथी पद्यरचना द्रुतविलंबितमां ज वही, अने आखी द्रुतविलंबितनी पंकित एनो भाग बनी गई. आने एम कहेवुं होय तो कहेवाय के द्रुतविलंबितना प्रारंभमां गालगा मूकवाथी आ वृत्त थयुं छे. पण अहीं व्यापार उमेरणनो नथी, पण समान संधिथी बीजा वृत्तमां सरी पडवानो छे. अने ए महत्त्वनुं छे.

आ पछी ध्रुव वाणिनी गणावे छे. एने विशे तेओ कहे छे : "सोळ रूपनो वाणिनी छंद छे. एनो मध्य पिंड रथोद्धताना चरण जेवो ज छे. तेना आरंभमां चार लघुनो अने अंते एक गुरुनो वधारो जोवामां आवे छे. आरंभना चार लघु रूपना संधिने लीधे रथोद्धताथी वाणिनीनी चाल नोखी पडे छे." हवे हुं वाणिनीनुं लक्षण हेमचंद्रमांथी नीचे उतारुं छुं. सगवडनी खातर सूत्रने बदले वृत्तिमांथी ज लक्षण लउं छुं : "नजभजजेभ्यः परौ गौ चेद्वाणिनीसंज्ञं।" (छन्दोनु० पृ. १२ब) उदाहरण माटे श्लोक हेमचन्द्रनो ज लउं छुं :

परभृतकूजितानि जरठेक्षुरसो नवेंदु
मलयसमीरणो मलयजं मधुसंगमश्च।
अपि न तथा हरन्ति मिलितानि मनो यथेदं
मदभरलल्लभाषितमहो खलु वाणिनीनाम्॥

एजन

के. ह. ध्रुवे न्यास आप्यो नथी एटले हुं मारी रीते आपुं छुं :

वाणिनी : ललललगा लगा लललगा ललगा लगागा

आनो मध्यपिंड मने कोई रीते रथोद्धता जेवो जणातो नथी. के. ह. ध्रुव तेना आरंभमां चार लघु जणावे छे, ते चार लघु छोडीने न्यास जोईए तो

गालगा लललगा ललगा लगागा

थाय. अंत्यनो एक गुरु वधारानो गणीने काढी नांखीए तो पण आ मध्यपिंड रथोद्धता प्रमाणे थई रहेतो नथी. त्यां एक लघु वधारे छे जे उपरना न्यासमां आठमो आवे छे. खरी रीते आटला फेरफार पछी, अने आखी चाल रथोद्धतानी नथी एम कह्या पछी तेने 'रथोद्धता जेवो ज' कहेवानो कशो अर्थ रहेतो नथी. मारी दृष्टिए ए नर्दटक अने वसंततिलकानुं मिश्रण छे, अने मिश्रण बन्नेना समान संधिओथी शरू थाय छे.

નર્દટક: લલલલગા લગા લલલગા લલગા લલગા

વસંતતિલકા: ગાગાલગા લલલગા લલગા લગાગા

નર્દટકના ત્રીજા અને ચોથા સંધિ લલલગા લલગા એ વસંતતિલકાના બીજા અને ત્રીજા સંધિ સાથે અભિન્ન છે, અને નર્દટકથી શરૂ થયેલી રચના એ સમાન સંધિ સુધી આવી પછી વસંતતિલકામાં સરી જાય છે. વસંતતિલકાનો પ્રથમ સંધિ ગાગાલગા છે તેમાંનો લગા પણ નર્દટકનો બીજો સંધિ છે; એ રીતે સમાન સંધિ લગા લલલગા લલગા એટલા બધા ગણી શકાય. વાણિનીનું બંધારણ હું એ રીતે નિષ્પન્ન થયું ગણું છું.

તે પછી હું ધૃતશ્રી લઉં છું. માઘે આ નવું પ્રયોજેલું વૃત્ત છે એમ કે. હ. ધ્રુવ નોંધે છે (પ. ઐ. આ. પૃ. ૨૨૨). 'શિશુપાલવધ'ના ત્રીજા સર્ગનો એ છેલ્લો ૮૨મો શ્લોક છે.

> तुरगशताकुलस्य परितः परमेकतुरंगजन्मनः
> प्रमथितभूभृतः प्रतिपथं मथितस्य भृशं महीभृता।
> परिचलतो बलानुजबलस्य पुरः सततं धृतश्रिय-
> श्चिरविगतश्रियो जलनिधेश्च तदाभवदन्तरं महत्॥
>
> शिशुपालवध, ३, ८२

આનો ન્યાસ કે. હ. ધ્રુવ આ પ્રમાણે આપે છે:

```
|      |    |    |      |      |      |   |
લલલલ ગાલ ગાલ લલગા લલગા લલગા લગા લગા
```

સા. વિ. ૨, પૃ. ૨૮૪

અને ઉમેરે છે કે તેમાં "અગિયારમા રૂપ પછી યતિ છે તે આવૃત્ત થતા સંધિને નોખા પાડવા માટે મૂકવી પડી છે." (સા. વિ. ૨, ૨૮૫)

હું ધૃતશ્રીનો પિંડ નર્દટક અને વિયોગિનીના વિષમ પાદથી બંધાયેલો માનું છું. મારા પ્રમાણે એ ન્યાસ આમ થાય:

ધૃતશ્રી: લલલલગા લગા લલલગા । લલગા લલગા લગાલગા

અહીં નર્દટકના પાંચેય સંધિ પ્રારંભથી શરૂ થઈ ઉપાન્ત્ય લલગા સુધીમાં આવી જાય છે. નર્દટકના અંત્ય બે સંધિઓ લલગા લલગા એ વિયોગિનીના વિષમ પાદના પ્રથમ બે સંધિઓ સાથે અભિન્ન છે, ત્યાંથી પછી રચના વિયોગિનીમાં જ આગળ ચાલી તેના અંત્ય લગાલગા સંધિએ ઉપસંહાર પામે છે. બીજી રીતે કહીએ તો પ્રારંભથી વાંચતાં ઉપાન્ત્ય લલગા સુધીમાં નર્દટક આવી જાય છે, અને અંતના ત્રણ સંધિઓ પઠતાં બરાબર વિયોગિનીનું વિષમ પાદ થઈ

रहे छे. अगियारमे अक्षरे ज्यां यति कही छे त्यांथी बराबर वियोगिनीनुं पाद शरू थाय छे. एटले आ यति मने नवा छन्दना मिलनस्थाननी यति जणाय छे. नहितर पण आटला लांबा एकवीश अक्षरना चरणमां यति क्यांक मध्यमां आवे ज, अने मध्यने नजीकमां नजीकनो गुरु ते अगियारमो गुरु छे एटले त्यां ज यति निर्णीत थाय.

आवो ज दाखलो प्रभद्रकनो मळे छे.

प्रभद्रक : ललललगा लगा ललगा लगालगा

छन्दोनु० पृ. ११अ

दृष्टान्त हेमचन्द्रनुं ज लउं छुं :

जयति जगत्त्रयोपकृतिकारणोदयो
जिनपतिभानुमान्परमधाम तेजसां ।
भविकसरोरुहां गलितमोहनिद्रकं
भवति यदीयपादलुठनात् प्रभद्रकं ॥

एजन

अहीं छन्द मूळ नर्दटकमां शरू थई, ललगा संधिए आवी रथोद्धतामां सरी पडे छे.

नर्दटक : ललललगा लगा ललगा ललगा ललगा

रथोद्धता : गालगा ललगा लगालगा

नर्दटकनो त्रीजो संधि ते रथोद्धताना बीजा साथे अभिन्न छे. अने ए संगम छन्दःस्रोतने रथोद्धतामां वहेवानुं निमित्त बने छे.

नवा छन्दोनी रचनामां आ पद्धतिने घणी चातुर्यवाळी अने छन्दना बंधारणना ऊंडा विशाल पाया पर प्रतिष्ठित थयेली समजुं छुं. तेनां परिणामो सुंदर गणाय एवां मने जणायां छे. आ पद्धतिथी आपणे संधिनुं अस्तित्व मात्र नहीं, तेनो व्यापार पण जोई शकीए छीए. अलबत एटलुं उमेरवुं जोईए के आ पद्धतिना प्रयोग करवामां पण मेळनी सूक्ष्म कलात्मक बुद्धि तो जरूरनी छे ज. आ पद्धतिनो गमे तेम उपयोग करीए तो पण तेनुं परिणाम सारुं ज आवे एम न कही शकाय. अने तेथी एमनी सुन्दरतानो अंतिम प्रश्न तो हजी पहेलां जेटलो ज गूढ रहे छे. मात्र एटलुं ज के संधि सुधीनुं आपणुं पृथक्करण काल्पनिक नहीं, पण वृत्तोना बंधोना साचा ख्याल उपर मंडायेलुं छे एटलुं प्रतीत थाय छे.

आगळ (प्रकरण ४, पृ. १४०) मां उद्‌गताना मेळनी चर्चा करतां उद्‌गताने में द्विदल छंद तरीके न्यासी बताव्यो हतो अने त्यां कह्युं हतुं के तेना प्रथमार्धमां मंजुभाषिणी अने अपरवक्त्रना विषम पादनो एक प्रकारनो संयोग छे. ते हवे अहीं जोईए. हुं फरीथी ए प्रथमार्धनो न्यास अहीं बतावुं छुं:

उद्‌गता प्रथमार्ध } ललगा लगा ललगा ल'लललललगा लगालगा

अहीं पहेला त्रण संधि अने छेल्ला संधिथी मंजुभाषिणी बने छे, अने छेल्ला बे संधिथी अपरवक्त्रनुं विषम पाद बने छे. बन्नेमां अंत्यसंधि समान छे अने आखी पंक्तिमां ए एक ज संधिमां बन्ने वृत्तोनो अभिन्न संधि सिद्ध थाय छे एटले अंशे ए संगम पद्धतिने मळतुं आवे छे. पण संगममां समान संधिथी एक वृत्त बीजामां मळी, पछी ए बीजाना न्यासे आगळ चाले छे. अहीं एम बनतुं नथी. समान संधि बन्नेमां अंत्य छे एटले एम बनवुं पण अशक्य छे. अहीं संगमथी तद्दन नोखो ज व्यापार ए थाय छे के एक वृत्त बीजा वृत्तनो असमान संधि पोतामां लई लईने अंतना समान संधिए विराम पामे छे. आ व्यापार विलक्षण छे. आवो व्यापार बीजा कोई दृष्टान्तमां में जोयो नथी. मने आ सुमेळ करनारो व्यापार जणायो नथी. आखा उद्‌गता वृत्त माटे में विशेष त्यांना प्रकरणमां ज कहेलुं छे एटले अहीं आटलुं बस थशे.

हवे हुं एवां नवां वृत्तोना दाखला लउं छुं, जेमां संयोग पामेलां बन्ने वृत्तोमां समान एक के बे संधिओ होय छे, पण ए समान संधिए पहेलुं वृत्त बीजा साथे संगम पामतुं नथी. पण समान संधिओ भिन्न रही एक पछी बीजा आवी संकळाय छे. आने शृंखला पद्धति कही शकाय. आनुं पहेलुं दृष्टान्त अश्वललित छे. भट्टिए तेनो प्रयोग कर्यो छे:

विलुलितपुष्परेणुकपिशं प्रशान्तकलिकापलाशकुसुमं
कुसुमनिपातचित्रवसुधं सशब्दनिपतद्रुमोत्कशकुनम्।
शकुननिनादनादितककुब्विलोलविपलायमानहरिणं
हरिणविलोचनाधिवसतिं बभंज पवनात्मजो रिपुवनम्॥[३]

भट्टिकाव्य ८, १३१

आमां नर्दटक अने जलोद्धतगतिनुं मिश्रण छे पण मिश्रणनो प्रकार उपरना मिश्रणो करतां भिन्न छे, अने परिणाम सुमेळवाळुं आव्युं नथी. जलोद्धतगतिने में मुख्य वृत्तोमां स्थान आप्युं नथी, कारण के मारी दृष्टिए ए सुन्दर नथी, अने कविओए बहु वापरेलुं पण नथी. ते विशे के. ह. ध्रुव कहे छे:

३. छंदोदोष परिहरवा बीजी अने त्रीजी पंक्तिनो पाठ में सुधार्यो छे.

"बार रूपनो एक अखंड छंद जलोद्धतगति छे: भारवि ने माघे ए छंद वापर्यो छे. एना चरणनो न्यास:—

लगाल ललगा । लगाल ललगा

एवो छे. 'एमां छठ्ठा रूप पछी यति छे. बे खंड समान होवाथी यतिथी नोंखा पाड्या जणाय छे." (सा. वि. भा. २, पृ. २८०)

उपर बतावेल पद्यभारचिह्नो कदाच अभिप्रेत स्थानोथी खसी गयां हशे. कदाच पहेला यतिखंडमां नथी जणातां त्यां कर्ताए मूक्यां हशे, पण मारे एनी साथे संबंध नथी. के. ह. ध्रुवे जे रीते संधिओ छूटा पाड्या छे ए रीते पठतां रचना शुद्ध वृत्तनी रहेती नथी. ए आवृत्तसंधि चतुष्कल रचना बनी जाय छे. अने ए रीते ए नर्दटक जेवा शुद्ध वृत्त साथे जोडाई न शके. पण तेनुं बीजी रीते पठन थई शके एम छे. एने पृथ्वीना संधिओ गणी शकाय.

पृथ्वी: लगा ललगा लगा ललगा लगा गालगा
आमांथी छेल्ला बे संधिओ कापी नांखीए तो बाकी उपर आपेल जलोद्धतगति थई रहे. पण ए पृथ्वीनुं अपंग स्वरूप छे. एने कोई योग्य उपसंहार मळतो नथी. अने नर्दटक साथे जोडातां पण एनी पंगुता कायम रहे छे.

हवे हुं अश्वललितनो न्यास रजू करुं छुं:

अश्वललित: लललगा लगा ललगा । लगा ललगा लगा ललगा

पहेला त्रण संधि सुधी नर्दटक चाले छे. धृतश्रीनी पेठे ए त्रण संधिओ पछी एटले अगियारमे अक्षरे यति आवे छे. नर्दटकनो बीजो त्रीजो ए बे संधिओ

---

४. दृष्टान्त: अतीव सुखिया शिरे निवसता
समीर लहरे लहे शितलता
विना पथ पयोधरेय धवला
धरे जवनिका मने मनवतां.

श्री अंबालाल पटेलना अनुवादमांथी

मूल :

समीरशिशिरः शिरःसु वसतां
सतां जवनिकानिकामसुखिनाम्।
बिभर्ति जनयन्नयं मुदमपा-
मपायधवला बलाहकततीः॥

शिशुपालवध ४, ५४

लगा लललगा थतां, जाणे समान संधिओना संबंधे जलोद्धतगति त्यां जोडाई जाय छे. एथी लगा लललगानां कुल त्रण आवर्तनो थाय छे, ते कांई सुरूप देखातां नथी. अने वृत्तने लायक उपसंहार एने मळतो नथी. वृत्त जाणे लगा लललगानां आवर्तनोमां चढी जई एनुं अनावृत्तसंधि सौंदर्य खोई बेसे छे. अहीं समान संधिओ आवे छे पण समान संधिए वृत्तो संगम पामतां नथी पण वृत्तोना समान संधिओ एक पछी एक आवी जोडाई जाय छे, सांकळनी पेठे.

आना जेवुं ज मुद्रक छे:

मुद्रक: गाललगा लगा लललगा । लगा लललगा लगा लललगा

छ. शा. ७, २५

अहीं यति सुधीनो भाग नर्दटकने बदले वंशपत्रपतितनो छे, एटलो फेर छे. वंशपत्रपतित नर्दटकनी एक विकृति छे ए हुं आगळ कही गयो छुं (गत पृ. १३४) अने आ रचना अश्वललितथी कोई रीते वधारे सारी नथी.

आने कांईक मळतुं मिश्रण, हेमचन्द्र दीपार्चि नामनुं बावीस अक्षरनुं वृत्त आपे छे, तेमां मळी आवे छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे छे:

दीपार्चि: गागागा ललगा लगा लललगा । लगा लललगा लगालगा

छन्दोनु० पृ. १६अ

आनो पहेलो लांबो यतिखंड ते शार्दूलविक्रीडितनो छे. ते पछीनो खंड ते मंजुभाषिणीना छेल्ला त्रण संधिओ छे. बन्ने पासे पासे मूकवाथी मिश्रण कई रीते थयुं छे ते समजाशे.

शार्दूलविक्रीडित: गागागा ललगा लगा लललगा। गागालगा गालगा

मंजुभाषिणी: ललगा लगा लललगा लगालगा

हवे अहीं मंजुभाषिणीना पहेला त्रण संधिओ ते शार्दूलमां बीजो त्रीजो चोथो संधि छे. जेने हुं संगम पद्धति कहुं छुं ते प्रमाणे तो मंजुभाषिणीनो छेल्लो लगालगा मात्र बाकी लगाडवानो रहे. अहीं एम कर्युं नथी. पण शार्दूलना लगा लललगा पछी मंजुभाषिणीना लगा लललगा फरी मूकीने पछी मंजुभाषिणीने अंत सुधी चलावेलो छे. अश्वललितमां बे जोडाता छन्दोमां संगम जेवो कोई सामान्य संधि नथी. अहीं ललगाने सामान्य संधि गणी शकाय, छतां ललगा संधिमां बन्ने छन्दोनो संगम थतो नथी, पण अश्वललितनी पेठे ज बन्नेना सामान्य संधिओ एक पछी एक आवे छे. अकस्मात्, आ पासे पासे आवता संधिओ पण अश्वललितना ज छे,—लगा लललगा, पण एनी पछी मंजुभाषिणीना लगालगाथी अहीं उपसंहार थाय छे एटलुं विशेष छे.

हवे हुं नवा छंदो बनाववानी एक बीजी पद्धतिनुं विवरण करीश. आ पद्धति ते अमुक वृत्तमां एक के बे संधिओ उमेरवानी. आना प्रथम दृष्टान्त तरीके हुं अतिशायिनी लउं छुं. तेनो उल्लेख के. ह. ध्रुवे करेलो छे (प. ऐ. आ. पृ. २२२). ए पण माघे ज 'शिशुपालवध'मां प्रयोजेलो छे:

इति धौतपुरन्ध्रिमत्सरान् सरसि मज्जनेन
श्रियमाप्तवतोऽतिशायिनीमपमलांगभासः।
अवलोक्य तदैव यादवानपरवारिराशेः
शिशिरेतररोचिषाप्यपान्ततिषु मंक्तुमीषे॥

शिशुपालवध, ८, ७१

आ श्लोकमां आवता अतिशायिनी शब्द उपरथी ज वृत्तनुं ए नाम पडेलुं छे. तेनो न्यास:

अतिशायिनी: ललगा ललगा लगालगा। ललगा लगागा

आ वृत्तना प्रथम त्रण संधिओ स्पष्ट रीते वियोगिनीना विषमपाद साथे समान छे. अने ए पाद पूरुं थतां त्यां यति आवे छे ए पण ए पादनुं समग्रत्व बतावे छे. ते पछी आवता बे संधिमांनो एक्केय वियोगिनीमां आवतो नथी. वियोगिनीना संधिओ साथे कशा पण संबंध विना वियोगिनीनी पंक्ति साथे तेमने जोडी दीधा छे. अलबत्त तेमांनो छेल्लो लगागा छे ते, आपणे आगळ जोई गया तेम, घणां वृत्तोमां उपसंहारार्थे आवे छे, तेनी पहेलांनो ललगा पण घणां वृत्तोमां आपणे जोयो छे, पण ते कोई रीते वृत्तना आगला भाग साथे संधातो नथी. कोई ज छन्दमां अंते ललगा लगागा आवतुं नथी. आ नवो संयोग सुभग जणातो नथी. अहीं उमेरण एक वृत्तनी पंक्तिने अंते वळगाडेलुं छे, पण कोई वृत्तमां ते वचमां पण आवे छे. एवुं एक दृष्टान्त सद्‌गत नानालाल कविमांथी मळे छे:

बीत्या कंईक दिवसो प्रभु! त्हारि कुंजे,
बीती अनेक घडि त्हारि स्मृती विहोणी;
त्हारे पदे रविनी मंडलि रास खेले
ते जन्मयोग गित गुंजति आज स्मृती जगावे.

प्रथम त्रण पंक्तिओ वसंततिलकानी छे. अने छेल्ली पंक्तिमां ए ज छंदने एक ललगा संधि उमेरीने विस्तारेलो छे. छेल्ली पंक्तिनो न्यास जोवाथी आ समजाशे.

गागालगा लललगा ललगा ललगा लगागा

वसंततिलकामां एक ललगा संधि हतो ज त्यां बीजो वधारीने मूक्यो छे. आ नवो प्रयोग कंई सुन्दर नथी लागतो, अने एनुं बहु अनुकरण पण नथी थयुं. नवा संधि उमेरवाना सौथी उत्तम दाखला शालिनीमां मध्यखंड उमेराईने मंदाक्रान्ता बन्यो ए अने शालिनीना पहेला यति खंडमां लगागा उमेराई स्त्रग्धरानो प्रथम यतिखंड बन्यो ए छे. आ सिवाय आना महत्त्वना दाखला नथी एटले वधारे शोधीने मूकतो नथी.

आधुनिक कविनो एक बीजो प्रयोग नोंधुं. प्रथम एनुं अवतरण ज लउं छुं:

म्होटा म्होटा पत्थरोना कठण तलनी हार सूती किनारे
घू घू घू घू घोर गाजी प्रबल विचिओ वारिधी ज्यां विसारे;
लांबां सीधां सप्तवर्णी किरण सरतां सूर्यनां वीचि संगे
जाणे गूंथे पृथ्विकाजे विविध वरणुं वस्त्र मार्तंड रंगे!
'महालक्ष्मीना समुद्र किनारे', नलिनीपराग, पृ. ४०

आ संग्रहमां आ न्यासनां बीजां पण काव्यो छे ते सर्वना पठन उपरथी न्यास नीचे प्रमाणे थाय छे.

गागागागा । गालगागा । ललललगा । गालगा गालगागा

पहेलो, त्रीजो अने चोथो ए यतिखंडो मळी मंदाक्रान्तानुं चरण थाय छे. वचमां गालगागानो एक यतिखंड उमेर्यो छे एटलो फेर छे. ए उमेरेला यतिखंडमां सर्व गुरु नथी, एटलो ए खंड स्वतंत्र यतिखंड थवाने माटे जरा हळवो पडे छे. बीजी बाजु त्यां प्रथम खंडने ज बेवडीने फरी मूक्यो होत तो एकविधताने लीधे ए शोभत नहीं. वळी आना विरुद्ध ए पण कहेवानुं छे के कविओए पुष्कळ वापरेला छंदोमां क्यांई त्रण यतिओ एटले के चार यतिखंडो होता नथी. एटला माटे पहेली यति लुप्त करवी होय तो ते शक्य छे, अने एम करवुं होय तो, स्रग्धरामां चार गुरुओने लगागा लगाडेलुं छे तेने बदले अहीं पांच गुरुओने लगागा लगाडयुं एम कही शकाय. पण तो पांच गुरु टूंका वैश्वदेवीमां पण रचनाने भारे अने शिथिल करे छे, तो अहीं तो एम विशेष थाय, अने एम करतां पण, वचलो यतिखंड जे अहीं मंदाक्रान्तानो छे ते मेळमां टूंको पडे.

आम आ नवा उमेदवारना जमा पासा करतां उधारपासुं मोटुं छे एम प्रथम दृष्टिए तो जणाय छे. —वधारे प्रयोगो पछी कंई जुदुं जणाय तो कोण जाणे?

आ पछी नवा छन्दो बनाववानी एक प्रक्रिया छुं ए गणावीश जेमां एक वृत्तमांथी एक के बे संधि काढी तेनी जगाए एक के वधारे संधिओ मुकाय छे. आनो सरल अने सुंदर दाखलो शालिनी अने वातोर्मिनो छे;

शालिनी : गागागागा । गालगा गालगागा

वातोर्मि : गागागागा । ललगा गालगागा

एक आवुं बीजुं दृष्टान्त पद्यरचनामां नवुं करवाना शोखीन राजाराम रामशंकर भट्टना 'नागानन्द' नाटकना भाषान्तरमांथी मळे छे. ए छन्दनुं नाम कर्ताए अहिमणि आपेलुं छे. ए नाम माटे मने कोई प्रमाण मळ्युं नथी. आने हेमचन्द्र मृदंग कहे छे (छन्दोनु० पृ. ११अ). 'रणपिंगल'मां पण ए ज नाम छे, बीजुं कोई नथी :

अहिमणि

हुं एकलो ज अति सत्वर दोडतो जई,
काढी कृपाण अरिमस्तक घातकी थई,
अग्रे पडी द्विरदने ज्यम केशरी हणे,
युद्धे मतंग-रिपुने क्षणमां हणुं त्यम.

नागानन्दनुं भाषान्तर पृ. ४७

आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

मृदंग अथवा अहिमणि : गागालगा लललगा ललगा लगालगा

वसन्ततिलकानो अंत्यसंधि लगागा हतो तेनी जगाए अहीं लगालगा मूकी दीधो छे. आ फेरफारनुं वर्णन कोई एवी रीते करे के अहीं वसन्ततिलकामां उपान्त्य स्थाने एक लघु उमेरी दीधो छे. पण आपणे जो समजीए के वृत्तोनुं बंधारण संधिनी गोठवणीथी थयुं छे तो अहीं आपणे एक संधिनी जगाए बीजो संधि मुकायो छे एम ज कहेवुं जोईए. एनुं आकलन एक आखा संधि तरीके ज थवानुं छे. ए नवो आवेलो संधि ए स्थान उपर आववाने योग्य होवो जोईए, जेमके अहीं लगालगा उपसंहारने माटे समर्थ छे. इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्रानो छेल्लो संधि ए ज लगागा छे ते इंद्रवंशा वंशस्थमां लगालगा बने छे. अदलोबदल तेवो ज आ प्रयोग छे.

प्रो. ठाकोरे आ मृदंगने छन्दनी चर्चा कर्या विना काव्योमां वणेलो छे. जेमके :

मृत्यू माटे क्यांय को ठाम छे ना,
तर्णूंये ना नैंव एणे हणाय;
तूं प्राण, तूं अमरजीवन, तूं हि छो गति,
तूं तत्त्व, तूं सत, विकारतणी तुं विकृति !
'एमिलि ब्रॉन्टीनी अद्वैत भावना,' भणकार, पृ. १६७

पहेली बे पंक्ति शालिनीनी छे, अने तेनी साथे मृदंगनी बे पंक्ति मूकी श्लोक रचेलो छे. आखुं काव्य आ श्लोकबंधनुं छे.

आवी ज रीते श्री उमाशंकरे रथोद्धताने अंते एक गुरु उमेरी श्लोको लख्या छे त्यां पण मूळ एक संधिनी जगाए नवा बे संधिओ आवे छे:—

थै गदाभिमुख, नाथ हे सुतेला,
संगिनी विसरि के शुं युद्धघेला ?
नित्य हुं परिघबाहुमां समाती,
अन्य त्यां दयित आज रंगराती.
'गांधारी,' प्राचीना, पृ. ३३

आनो न्यास: गालगा लललगा लगा लगागा

रथोद्धतानो अंत्य त्रीजो संधि लगालगा हतो ते एकने बदले हवे लगा लगागा एम बे संधि थया.

आ ज विलापमां आगळ एक श्लोक आवे छे ते जोईए:

द्यूतने दिन मळेलुं द्रौपदीने
दास्य, आज भुजनेय युद्धद्यूते.
धर्म, तेंय अमने दिसे विसार्या !
ऊरुघात दइ युद्धनिषिद्ध ! हार्या !
एजन, पृ. ३४

पहेली त्रण पंक्तिओ आगळ जोयेली अंतगुरुलग्न रथोद्धतानी छे. पण चोथी नीचे प्रमाणे छे:

गालगा लललगा ललगा लगागा

आने उपरनी पंक्तिओ साथे सरखावतां एम कहीशुं के उपान्त्य लगाने बदले अहीं ललगा छे. अने ए रीते रथोद्धतामां फरी वधारो थयो छे. पण बीजी रीते एम पण कहेवाय के आ वसंततिलकानो आद्य गुरु तोडीने अर्थात् पहेलो संधि गागालगानी जगाए गालगा मूकीने करेली पंक्ति छे. आ पंक्ति आवी रीते

बन्ने वृत्तो साथे संबंध धरावती देखाय छे तेनुं कारण ए छे के रथोद्धता ए, आगळ जोईशुं तेम, वसंततिलकामांथी ज ऊतर्यो छे. एक बीजो पण जरा जुदा प्रकारनो प्रयोग छे ज्यां वर्धित स्वागता वसंततिलकानी पासे जाय छे.

छे आखुं जीवन नरी ठगबाजी
छे धूर्त तार खिचतो जम पाजी!
शूं ना लहो ? मति अरे तम लाजे;
शोधो गुरू मृगविहंग समाजे!

'ज. पि. त्रि. नुं अवसान', भणकार, पृ. ११०

आनो न्यास : गागालगा ललगा ललगागा

पहेला बन्ने वसंततिलकाना अखंड संधिओ छे. छेल्लो संधि स्वागतानो छेल्लो छे. आने 'रणपिंगल'मां नीरांतिक कहेलो छे.

नीरांतिक : गागालगा ललगा ललगागा

र. पिं. ३०४

आनी जोडीनो विवर्धित रथोद्धता छन्द 'भरतनाटयशास्त्र'मां एक जगाएथी जडी आवे छे :

आद्ये चतुर्थदशमाष्टमान्तगा
यस्या गुरूणि च भवन्ति पादतः।
ज्ञेया ततोऽनुकरणोद्भवा हि सा
विश्लोकजाति जगती समाश्रिता॥

भ. ना. चौ. ३२, १४८, पृ. ३९६

न्यास : गागालगा ललगा लगालगा

'भरतनाटयशास्त्र'मां आ जगतीवृत्तने ललिता कहेल छे एम हुं मानुं छुं.[१] 'रणपिंगल'मां आने ललिता अथवा सुललित कह्यो छे. (पृ. ३१०). हेमचन्द्र पण आने ललिता नाम आपे छे. (छन्दोनु. पृ. ८अ).

---

१. उपर आपेला न्यासवाळो श्लोक ते लक्षणछंद छे. अने तेमां आपेला लक्षण प्रमाणे ए छंद बेसी रहे छे एटले ए छंद साचो छे एटलुं नक्की थाय छे. आमां एनुं नाम आपेलुं नथी. हुं मानुं छुं एनुं नाम एनी पछी आवता १४९मा श्लोकमां छे. ए श्लोक नीचे प्रमाणे छे :

आद्ये चतुर्थनियमं नैधने ह्यष्टमे तथा।
यत्र दीर्घाणि पादे स्युर्जगती ललिता तथा। एजन, श्लो. १४९

आ ज संदर्भमां एक बीजुं दृष्टान्त पण उमाशंकरनुं ज लईए:

चरणरेणु उरआंगणे प्रियानी
नयनअंजन समान तें प्रमाणी,
अलकनी लट सुगंध फोरती जे,
तव सुकाव्य विण क्यां मळे ज बीजे?
'स्वागत काव्य', क्लान्त कवि

आनो न्यास: ललगा ललगा लगा लगागा

अहीं पण आगळ आवी गयेल प्रियंवदाने अंते एक गुरु मूक्यो छे. मूळ प्रियंवदा: ललगा ललगा लगालगा छे तेनो त्रीजो छेल्लो संधि लगालगा छे तेमां अंते गुरु भळवाथी संधिओ लगा लगागा थई गया—पहेलां श्री उमाशंकरना वर्द्धित रथोद्धतानी पेठे ज.

पण आमां ए याद राखवुं जोईए के जे कंई भळे तेथी त्यां संधि बनवो जोईए अने ए संधि समग्र पंक्तिना मेळमां बेसवो जोईए. मात्र प्रक्षेप बस नथी, ऊलटो ए मेळमां विक्षेपरूप थाय. आनो एक दाखलो मने भट्टिना 'रावणवध'मां मळे छे. ए काव्यने अंते ए आवे छे:

आनी पछी एनुं दृष्टान्त आवे छे:

एसो वसंतमहुआंसिआअणो
सेलो ब्व पुव्वपणवस्य छालिओ।

. . . .

एजन, श्लो. १५०

. . . .

आनी बाकीनी बे पंक्तिओ उपरना न्यासथी भिन्न न्यासवाळी छे एटले एने भ्रष्ट गणी उतारतो नथी. आ बे पंक्तिओ १४८मा श्लोकमां आपेला लक्षण प्रमाणे मळी रहे छे. एटले वचमां जे १४९मा श्लोकमां ललिता नाम आप्युं ते आनुं ज. पण आ श्लोकमां आपेलुं लक्षण १४८ अथवा तेना दृष्टान्तरूप १५०मा श्लोकना न्यासने मळतुं नथी. तेम ज तेमां नियम शब्दनो अर्थ बेसतो नथी. पण आ लक्षणनो शुद्ध पाठ मने निर्णयसागरनी आवृत्तिमांथी मळे छे:

आद्ये चतुर्थं दशमं नैधनं ह्युष्टमं तथा।
यत्र दीर्घाणि पादे स्युस्तद्वृत्तं ललितं स्मृतम्॥

भ. ना. नि. ३२, १५१ पृ. ५५३

बन्ने अनुष्टुपो सरखावतां निर्णयसागरनो पाठ साचो लागे छे. पण आ ज आवृत्तिना आ अनुष्टुप उपर आवता बन्ने श्लोको भ्रष्ट छे ते चौखंबा साथे सरखावतां तरत जणाई आवशे. मने ए आपवानी जरूर लागती नथी.

काव्यमिदं विहितं मयावलभ्यां
श्रीधरसेन नरेन्द्र पालितायाम्।
कीर्तिरतो भवतान् नृपस्य तस्य
प्रेमकरः क्षितिपो यतः प्रजानाम्॥

भट्टिकाव्य, (निर्णयसागर प्रेस) २२, ३५

आनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

गा ललगा ललगा लगा लगागा

आ नवी रचना ते माल्यभारिणीनी विषम पंक्तिमां प्रथम गुरु मूकवाथी थयेली छे.

माल्यभारिणी: ललगा ललगा लगा लगागा
ललगागा ललगा लगा लगागा

भट्टिनुं नवुं वृत्त समवृत्त छे. तेना पठनमां जोईशुं तो प्रक्षिप्त थयेलो गुरु अलग ज रहे छे. तेनो कोई नवो संधि बनतो नथी. तेनी निर्वाह्यता एक ज रीते गणी शकाय के ते मात्रागर्भ अर्धसमवृत्तना मात्राविभागमां आवे छे. आ विभागमां आपणे गाललगा संधि अर्धसमवृत्तमां तेम ज एनी साथे सरखावी शकाय तेवा वंशपत्रपतितमां पण जोयो छे.

आ वृत्तने कोई पिंगळे मान्य कर्युं जणातुं नथी. भट्टिए नवा वापरेला अश्वललित जेवा छंदो पिंगळमां मळे छे, तेम आ मळतो नथी. भट्टि काव्यनी जयमंगल टीकामां आ श्लोकना वृत्त विशे कंई लख्युं नथी. भट्टि उपर मल्लिनाथनी टीका छे, अने मल्लिनाथ हमेशां श्लोकनुं वृत्त पण कहे छे, पण आ श्लोक एणे टीका करेल भट्टिकाव्यमां मळतो नथी. तेथी आ श्लोकने प्रक्षिप्त मानवो के नहीं ए प्रश्नने हुं स्पर्शवा मागतो नथी. पण आ उपरथी एटलुं तो कही शकाय के आ श्लोकना वृत्तने पिंगलमां स्थान मळ्युं नथी. अने मारी दृष्टिए ए कोई सारा मेळवाळुं वृत्त नथी. भट्टि मोटो समर्थ विद्वान हतो ए खरुं पण तेना छन्दोना प्रयोगोमां मने घणी जगाए क्षतिओ जणाई छे.

आ पछी आपणे एक नवो छंद पृथ्वीतिलक जे प्रो. ठाकोरे रचेलो छे ते जोईए. आ छन्द विशेष करीने तेमणे पोतानां सोनेटोमां वापर्यो छे अने त्यां पण कोई आखुं सोनेट ए वृत्तमां लख्युं नथी. एनी पंक्तिओ पृथ्वी छंदना सोनेटमां विखरायेली मळी आवे छे. साधारण रीते त्रण चार सळंग पंक्तिओ पण मळती नथी. मात्र एक ज सोनेटमां एक साथे आठ पंक्तिओ ए छंदमां छे. ए सोनेट हुं दृष्टान्त तरीके उतारुं छुं:

एक हाय

गयूं तुज जुवानि जोम, प्रिय हृदय गादलीये गई,
गयां प्रिय सुतासुतो, तड तड तुटि गै उमेदो बधी.
प्रभा न, न हि मिष्टता, सुखसमय तणा न ते साथिओ,
न ते गरवुं कामकाज, नहि मळत ते विनोदोय ना;
रह्यूं फकत आयखूं, रतिगतिसुखहीन नैराश्यनूं,
रही फकत डाकणी हरति रुधिरधातुओने जरा,
रही दिनदिने सुतीक्ष्ण करकसरनी भुंडी कातरे,
अने अवयवो विहीन पण रह्युं स्वमान तो आगलूं.

अरे अरर भाइ रे! तुज दशा न जोई जती!
कचूंमर करी जमाडुं मुज उर त्हने, त्हने एम जो
लगीर पण थाय निर्वृति,—अरे बकूं हूंय शूं!

प्रभो! यम! करालकर्म पण सदयचित्त जे को महा
वसे बल किहांक विश्वमहि!—हाय म्हारी श्रुणो!
लियो उंचकि सद्य दुःखदरियाथि आ बन्धुने!

म्हारां सोनेट, पृ. २३

आ सोनेटना आठ, त्रण, त्रण, पंक्तिना एम त्रण विभागो पडे छे तेमांनो आठ पंक्तिनो पहेलो आखो विभाग पृथ्वीतिलकनो छे. पछीनी त्रण पंक्तिओमां पहेली त्रीजी पृथ्वीनी छे, वचली पृथ्वीतिलकनी छे, अने छेल्ली त्रणमां पहेली पृथ्वीतिलकनी छे, छेल्ली बे पृथ्वीनी छे.

आ नवा प्रयोगनी पंक्ति आ संग्रहमां सौथी प्रथम ४ था काव्यमां आवे छे, अने त्यां स्वोपज्ञ विवरणमां प्रो. ठाकोर ए विशे कहे छे: "पंक्ति वच्चेना त्रण लघुना ठेकाणे छ ए रूपनो; पण—अर्थ संवादी लय जाळवीने—पृथ्वीनी पंक्तिमां गमे त्यां त्रण मात्रा उमेरवामां आवे (।।। ललल, ऽ। गाल, ।ऽ लगा, एम गमे ते रूपनी) अने एम जे जे अतिपृथ्वी पंक्ति थाय ते ते सर्वने पृथ्वीतिलक नाम आपुं छुं." ('म्हारां सोनेट' पृ. ५६) पृथ्वीनुं माप नजर सामे राखवा नीचे उतारुं छुं:

पृथ्वी: लगा लललगा लगा लललगा लगा गालगा

आमां वच्चेना त्रण लघु एटले उपर दर्शावेल संधिओमां चोथो संधि लललगा. एमां त्रण मात्राओ ललल, लगा के गाल एम त्रणेय रीते उमेरवानुं उपर कथन छे. बीजी रीते कहीओ तो पृथ्वीमां प्राचीन परंपरा प्रमाणे आठमे आवती

यति पछी त्रण मात्रा उमेरवानी. हवे उपरनी पृथ्वीतिलकनी एक पंक्तिनो न्यास नीचे उतारुं छुं:

पृथ्वीतिलक: लगा लललगा लगा ललल लललगा लगा गालगा

उच्चारणमां आ प्रत्यक्ष करवा खातर एम कहुं के पहेली अने त्रीजी पंक्तिमां 'हृदय' अने 'समय' पृथ्वीतिलकना उमेरणनी त्रण मात्राओ छे. अर्थात् अहीं ललगा संधिने बदले लललललगा संधि मुकाय छे.

आ प्रकारनी बधी पंक्तिओमां वधारानी मात्राओ तेमणे कहेला नियम प्रमाणे ए ज स्थाने उमेराई छे. पण आखा संग्रहनी पंक्तिओ जोतां मने कोई जगाए लगा के गाल रूपे ए मात्राओ उमेरायेली मळती नथी. ए रूपना लगात्मक न्यासो नीचे प्रमाणे थाय:

लगा लललगा लगा गाल लललगा लगा गालगा
लगा लललगा लगा लगा लललगा लगा गालगा

आ वधाराना गाल के लगा, ललगामां वच्चे पण गमे त्यां आवी शके के नहीं ए प्रश्न हजी रही जाय छे. पण कविए पोते एक्केयनो प्रयोग कर्यो नथी एटले ए प्रश्नमां हुं ऊतरतो नथी. त्रणेय लघु उमेराय छे ए स्थाने (अने दाखला तो बधा एना ज छे) ए छ जेटला लघुओनी कतार शैथिल्य आणे छे, अने पठनमां क्यांक गोटाळो पण थाय छे. पृथ्वी छंदनी नवी कविता माटेनी खास लायकात के 'एमां गुरु स्वरो लघु स्वरोना खडकला नथी'[४] ए एमने हाथे ज खंडित थाय छे. अयतिक समवृत्तोमां क्यांय छ लघु एक साथे मळता नथी. एवा संधि पछी तो यति आवश्यक बने छे. गाल रूपे ए त्रण मात्राओनुं उच्चारण पण मेळबद्ध थतुं नथी. आगला लगानी साथे ते बराबर संधातुं नथी. अने लगा रूपना उच्चारणमां बे लगा पासे पासे आवे छे ते कर्णकटु लागे छे. वळी कोई अयतिक वृत्त सत्तर अक्षरोथी वधारे संख्यानुं हजी आपणे जोयुं नथी. यति विना आटलुं वीस अक्षर जेटलुं लंबाण पंक्ति खमी शके के केम ते जोवानुं रहे छे. आ रीते मने आमां सुमेळ जणातो नथी. एटलुं उमेरीश के आटला लघुओ एक साथे आवतां आर्यानी पेठे जो पहेला लघु पछी शब्दान्त आवे तो कदाच आनो दुर्मेळ हळवो थाय. उपरनां दृष्टान्तोमां एवी थोडी पंक्तिओ छे, ते बीजी साथे सरखावतां आ स्पष्ट थशे. आ विकृतिनुं अनुकरण थयुं नथी. अनेकने हाथे प्रयोगो थतां कंईक नवो मेळ देखाय तो कही शकाय नहीं. पण ए सघळुं छतां, उद्वेगनी उत्कटता दर्शाववा आवी पंक्तिओ क्यांक क्यांक आवे तो ते दोषरूप न थाय, क्यांक भूषणरूप पण थाय.

४. 'भणकार', १ली आवृत्ति, पृ. (१४)

जेम एकाद अक्षर वधवाथी संधिफेर थई एकनी जगाए बीजो संधि के संधिओ आवे छे तेम एकाद अक्षर कपावाथी पण नवो संधि बनी नवो छन्द बने छे. तेनो प्रसिद्ध दाखलो प्रहर्षिणी-रुचिरानो छे.

प्रहर्षिणी : गागागा । लललगा लगा लगागा

रुचिरा : लगालगा । लललगा लगालगा

अहीं प्रहर्षिणीना अंत्यसंधिनो गुरु जतां, तेना छेल्ला बे संधिनी जगाए रुचिरानो लगालगा एक संधि आवे छे. आ फेरफार आपणे आगळ रथोद्धतामां गुरु भळतां जे फेरफार जोयो तेथी ऊलटा प्रकारनो थयो. बीजो अर्वाचीन साहित्यमांथी आपुं छुं. ते के. ह. ध्रुवनो छे :

शुद्ध शुद्धतर शुद्धतमे
बुद्धि लुब्ध मम मुग्ध भमे !
रम्य रम्यतर रम्यतमे
कल्पना रमतियाळ रमे.

सा. वि. २ पृ. ३२५

आमां स्वागताना छेल्ला ललगागा संधिनी जगाए तेना छेल्ला गुरुना खंडनथी थतो ललगा संधि आवे छे. ललगा जोके बहु थोडी जगाए उपसंहारमां आवे छे पण अहीं शोभे छे.

आनो विशेष दाखलो प्रो. ठाकोरे जेने गज छंद कह्यो छे ते छे. 'आपणी कवितासमृद्धि'मां सद्गत गजेन्द्र बूचना 'गिरनारनी यात्रा'ना काव्यमां एक नवा छंदनी पंक्ति जोतां तेनुं तेमणे 'गजछन्द' एवुं नाम आप्युं छे. तेमणे अवतारेल भागमांथी ज हुं ए दृष्टान्त टांकुं छुं.

अघवचे शिर ऊपर आ उभो
खडक भैरवनो भय प्रेरतो;
तहिं चडी पडतूं मुकतां मळे
नृपतिनूं पद: भावना फळे १४

आपणी कवितासमृद्धि (आ. १ली) पृ. १३

काव्यमां द्रुतविलंबित विस्तारथी वपरायेलो छे, अने तेमां क्यांक क्यांक गजछन्दनी पंक्तिओ वेरायेली मळी आवे छे. उपरना श्लोकमां पहेली त्रण पंक्तिओ द्रुतविलंबितनी ज छे, अने चोथी आ नवा गजछन्दनी छे.

गजछन्द : लललगा ललगा लगालगा

अहीं स्पष्ट रीते द्रुतविलंबितना छेल्ला बे संधिओ एटले त्रीजा अने चोथा ललगा लगा हता तेमांना ललगानो पहेलो ल कपाई जाय छे एटलुं ज बने छे. ए कपातां पाछळ लगालगा एवो संधि रहे छे जेमां उपसंहारनुं सामर्थ्य छे. इन्द्रवंशा वंशस्थमां ए उपसंहारमां आवे छे, अने वियोगिनीमां तो अंत्य बे संधिओ ललगा लगालगा ए प्रमाणे ज छे. एटले पंक्ति शोभे छे।'

---

५. आ संबंधी प्रो. ठाकोर काव्यना टिप्पणमां नोंध करे छे: "वळी त्रिष्टुपजातिनो नभरलग मापनो एक छंद अहीं देखाय छे. . . जे 'रणपिंगळ' जेवा मोटा ग्रंथमां पण नोंधायो नथी, एटले एने माटे कविना नाम उपरथी गजछन्द नाम सूचवुं छुं. अने द्रुतविलंबित अने गजछन्दना मिश्रणथी थता उपजातिनी अहीं चार कडी छे." (एजन पृ. १०३) पछी द्रुतविलंबित अने आ गछन्द बन्नेनुं लक्षण आवे छे:

"(१) द्रुतविलंबित १२ वर्णी जगती जातिना आ छन्दनी पंक्तिमां न भ भ र गण: एनी व्याख्या — न(सल) भा(नस) भा(नस) रा(जभा)

(२) ११ वर्णी त्रिष्टुभ जातिनो नभरलग मापनो छन्द 'गिरनारनी यात्रा'मां आवे छे. ए जातिमां २०४८ छन्द थाय एमांथी १२९ रणछोडभाईए नोंध्या छे, दरेकनां नाम आप्यां छे, केटलाकनां अनेक. तेमां आ छन्द न होवाथी एने एना कर्ता उपरथी गजछन्द नाम आपीशुं, अने एनी व्याख्या— न(सल)भा(नस)रा(जभा)लगा. ललितछन्द (करण राज तूं क्यांह रे गयो) मां छठ्ठो वर्ण गुरु ते आमां लघु, एटलो ज बे वच्चे फेर. आटला ज फेरथी ये बन्नेना ढाळमां केटलो तो फेर पडी जाय छे ते अभ्यासीए ध्यानमां लेवुं. अने 'गिरनारनी यात्रा'मां आ गजछन्द अने द्रुतविलंबितना मिश्रणवाळो नवो उपजाति पण आवे छे. (कडी १०, १४, १७ अने ३०)" (एजन, पृ. ११२)

अहीं प्रो. ठाकोरे गजछन्दने ललितछन्द साथे सरखाव्यो छे, ते छन्दोना मुख्य प्रकारो अने तेनां भेदक तत्त्वो नहीं समजवानुं परिणाम छे. द्रुतविलंबित ए अनावृत्त अक्षरसंधिमेळ वृत्त एटले शुद्ध वृत्त छे अने ललितछंद ए तो आवृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्त छे. एनो मेळ ए मात्रामेळनो तालबद्ध मेळ छे. अने ए बाबत प्रो. ठाकोरे, एमना समयमां तो अत्यंत प्रचलित आ ललितछंदना गान उपरथी न जाण्युं होय तो, तेमना प्रिय पुस्तक दलपतपिंगळमांथी तेओ जाणी शक्या होत. ते स्पष्ट कहे छे: "आमां वृत्तनी सोळ मात्रा थाय छे खरी, पण तेना चार चार मात्राना पृथक् पृथक् खंडको नहीं पडवाथी छठ्ठो अने ११मो अक्षर त्रण मात्रा सुधी लंबावी, त्रण त्रण मात्राना छुटा छुटा खंडको पाडी जलद दादरा तालमां गाई शकाय अथवा तो (विलंब) दादरामां गाई शकाय

आवा फेरफारो जो के छन्दना आद्य के अंत्य संधि पूरता थयेला अहीं आपणे जोया, पण ए बाबत भूलावी न जोईए के ए फेरफार पछी पण मेळ तो आखी पंक्तिनो ज समग्र अने सुरेख बनवो जोईए. आपणे कही शकीए के शालिनीना प्रथम खंड गागागागानी जगाए ललललललगागानो खंड मूकवाथी मालिनी थाय छे. पण त्यां मालिनीनी आखी पंक्ति पाछी सुमेळ बनवी जोईए. आ फेरफारोनो सौथी सारो दाखलो इन्द्रवज्रा गोत्रमांथी मळे छे. अने हवे एक गोत्र तरीके आपणे एने जोईए. इन्द्रवज्रानो पहेलो संधि गागालगागा हतो, तेना पहेला गुरुनी जगाए लघु मूकवाथी उपेन्द्रवज्रा बने छे. बन्नेमां मेळ बहु नजीकनो छे, छतां त्यां एक संधिने बदले बे संधिओ थाय छे लगा लगागा ए भूलवुं न जोईए. पछी आ बन्ने वृत्तोना अंते उपान्त्य स्थाने एक लघु उमेरवाथी इंद्रवंशा अने वंशस्थ बने छे. पण त्यां पण पछी अंत्यसंधि लगागाने बदले लगालगा एवो नवो अभ्यस्त संधि आवे छे. आवी ज क्रिया वसंततिलका अने अहिमणि के मृदंगमां थती आपणे हमणां जोई. आ मूळ इन्द्रवज्रानो सुन्दर विस्तार वसंततिलकामां आपणे जोईए छीए. बन्नेने पासे पासे मूकी जोईए:

इन्द्रवज्रा: गागालगागा ललगा लगागा

वसंततिलका: गागालगा लललगा ललगा लगागा

बन्नेनी समानता बतावतां नरसिंहरावे कह्युं के बन्ने वच्चे बहु ओछो फरक छे. इन्द्रवज्राना चोथा अक्षर पछी ललल उमेराय छे.[१] उपलक दृष्टिए आ खरुं छे, पण जे बने छे ते एथी मोटा पाया पर बने छे. गागालगागा ए लांबो संधि

ते माटे ६ठ्ठो अने ११मो अक्षर छ मात्रा सुधी लंबावी गावामां आवे छे." (गायन वादन पाठमाळा . पु. १ वि. ३ छंदोगीतविनोद प्रकरण १, पृ. १३) अने ललितछंद अने आ गजछंदनी वच्चे जे पठनफेर प्रो. ठाकोर नोंधे छे ते गुरुलघुना फेरफारनो नथी, पण ललितछंद अने द्रुत-विलंबितनी मूलगत भिन्न प्रकृतिनो छे. अलबत्त ललितछंदनी पंक्ति साथे गज-पंक्तिनी बादबाकी करतां तेओ बतावे छे एवो भेद नीकळे, पण ए पद्धति तो प्रो. ठाकोर पोतानी लाक्षणिक शैलीमां धिक्कारे छे ते गणितिकनी थई, छन्दोविदनी न थई. एमने ए मूलगत छंदोभेदनो विचार न आव्यो तो भले, पण तेमने एटलो पण विचार न आव्यो के द्रुतविलंबित साथे गजनी उप-जाति छे, तो पहेलां तो द्रुतविलंबित साथे एने सरखाववी जोईए ! उपजातिओमां कंईक समान होय छे ए तो एमणे अनेक वार कह्युं छे.

१. Gujarati Language and Literature Vol. 2. p. 291.

खंडित थई नवुं गागालगा रूप ले छे, अने ए खंडनने लीधे लललगा एवा एक आखा नवा संधिने त्यां स्थान मळे छे. बधां वृत्तोमां आ कुटुंब सौथी वधारे विस्तरेलुं छे. ए वसंततिलका पाछो नवा छंदो बनवानी भूमिका बने छे. तेमांथी ज रथोद्धता बने छे.

वसंततिलका : गागालगा लललगा ललगा लगागा

रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा

गागालगानो आद्य गुरु छेदाई गालगानो नवो संधि बन्यो. लललगानुं स्थान कायम रह्युं अने पछी त्यां ज उपसंहार लगालगाथी करी नाख्यो. आ अभ्यस्त संधि इंद्रवंशा-वंशस्थमां मोजूद हतो. रथोद्धताना छेल्ला संधिने बदले ललगागा आवतां स्वागता थयो. अने पछी पाछुं आ रथोद्धता वृत्त बीजा छंदोनी भूमिकारूप बन्युं. रथोद्धताना प्रारंभना गुरुने तोडी बे लघु करतां गालगाने बदले लललगा संधि मळे. ए संधि त्यां मूकतां आपणे जोई गयेल प्रियंवदा थाय.

रथोद्धता : गालगा लललगा लगालगा

प्रियंवदा : लललगा लललगा लगालगा

अने रथोद्धताना छेल्ला संधिनो पहेलो गुरु ए रीते ज तोडतां चन्द्रवर्त्म थाय.

चन्द्रवर्त्म : गालगा लललगा ललललगा

अलबत्त आ बन्ने रचनाओ मूळ रथोद्धता जेटली सुन्दर नथी. आपणे फरी वसंततिलका पासे जईए. तेना न्यासमांथी अंत्य लगागा कापी नांखतां चपला थाय छे.

चपला : गागालगा लललगा ललगा

चपला पोते सुन्दर नथी. पण ते उपरथी बीजा सुन्दर छंदो बने छे. प्रमिताक्षरा प्रथमसंधिना गुरुना बे लघु करी नवो ललगा संधि आवतां बने छे.

प्रमिताक्षरा : ललगा लगा लललगा ललगा

आना ज अंत्य ललगाने बदले रथोद्धतानो अंत्य लगालगा मूकतां मंजुभाषिणी थाय छे.

मंजुभाषिणी : ललगा लगा लललगा लगालगा

अने मंजुभाषिणीना अंत्य लगालगानी जगाए रथोद्धता-स्वागतानी पेठे ललगागा मूकतां कलहंस थाय :

कलहंस : ललगा लगा लललगा ललगागा

रथोद्धता-स्वागता जेवी कलहंस–मंजुभाषिणीनी उपजाति करी शकाय.

मंजुभाषिणी : ललगा लगा ललगा लगालगा

कलहंस : ललगा लगा ललगा ललगागा

आ कुटुंब विशे छेल्लुं ए कहेवुं जोईए के द्रुतविलंबित जो के आ वर्गमां मुकाय छे छतां ते बीजां वृत्तोनी पेठे बराबर कोई एक वृत्तमांथी निष्पन्न करी शकातो नथी. एना संधिओ ए वर्गना संधिओ ज छे अने एनुं पठन प्रमिताक्षरा वगेरे जेवा संस्कारो उत्पन्न करे छे एटलुं ज एने विशे कही शकाय.

अर्धसम वृत्तोमां बहु नवा प्रयोगो थया नथी. 'रणपिंगल' जोतां तेमां अनेक अर्धसमवृत्तो मळी आवे छे, पण घणांखरां बनावटी लागे छे. वैतालीय वर्ग जेवां कोई सुन्दर नथी, अने कविओए एने अपनाव्यां नथी. अर्वाचीन कालमां तेनो एक ज नवो प्रयोग जणाय छे अने ते श्री उमाशंकरनो छे. हुं प्रथम ए छे ए प्रमाणे ज उतारुं छुं:

कविकुलोनी असीम कल्पना,
प्रणयीनी पण एवि जल्पना
कंइ कसूर न जोउं कोइनी;
सहुथी मोटि कसूर प्रीतडी.

'हृदयनी रखवाळण', निशीथ, पृ. ४४

गुजरातीमां ह्रस्वदीर्घनी छूट लेवाय छे ए पंक्तिओनुं अभिप्रेत माप शोधतां घणी वार अडचणरूप थाय छे. एटला माटे प्रथम आखुं काव्य वांची जोईए. घणी वार कवि छंदमां फेर करे तो पण तेना मुख्य छंद जवुं साथे ते मेळ खाय एवो ज करे छे. ए दृष्टिए जोतां तरत जणाशे के काव्यना केटलाक श्लोको वियोगिनीमां छे, केटलाक द्रुतविलंबितमां छे, अने वचमां उपरनो श्लोक आवे छे. हवे आपणे आ श्लोक तपासी जोईए. आनी समपंक्ति तो वियोगिनीनी ज समपंक्ति छे. कांई विचारवानुं रहे छे ते विषम विशे रहे छे. तेमां पहेली 'कविकुलोनी' ए पंक्तिने वियोगिनीनी सम पंक्ति तरीके पठी शकाय छे: 'कविकूलोनि असीम कल्पना'. जो के एम करतां 'कुल' ने 'कूल' बोलवो पडे छे ते अत्यंत कर्णकटु लागे छे. तो हाल एने त्यां छोडी बीजी जोईए. एने वियोगिनीनी समपंक्ति तरीके वांची शकाय एम नथी. पठन करतां तेनो न्यास आ प्रमाणे थशे:

ललगा ललगा लगालगा

अने हवे प्रथम पंक्ति पण ए प्रमाणे बेसी रहे छे: 'कविकुलोनि असीम कल्पना',—उच्चारणना कशा पण अत्याचार विना. एटले विषमनुं माप तो आ ज थयुं. अने ए जोतां याद आवशे के आ, आगळ आवी गयेल गजछन्दनी पंक्ति छे. पण अत्यारना अन्वेषण माटे एटलुं बस नथी. प्रश्न ए छे के ए वियोगिनीनी सम साथे शी रीते आवी शकी? तरत जवाब मळशे के वियोगिनीनी विषम पंक्तिमां पहेलो ललगा आवे छे तेनी आगळ अहीं एक वधारे लघु आवे छे एटलो ज फेर छे. आथी चारेय पंक्तिओ अगियार अक्षरनी थई रहे छे, अने छतां तेमां अर्धसम जेवो विषमसमनो भेद छे:

ललगा ललगा लगालगा
ललगागा ललगा लगालगा

आ प्रमाणे वियोगनीनी समपंक्ति कायम रहेवाथी तेमां त्रीजो गुरु एने ए स्थाने ज रहे छे, अने विषम पंक्तिना ते स्थानना लघुनी पडछे, लगभग पूर्व पेठे असरकारक पण रहे छे, अने तेथी नवा प्रकारनुं एक अर्धसम वृत्त बनी रहे छे. अने आखा काव्यमां वियोगिनी अने द्रुतविलंबितना श्लोको आवे छे, ते भूमिकामां आ वियोगिनी अने खंडित द्रुतविलंबितनो नवो अर्धसम-श्लोक पण भळी जाय छे. ते साथे ए व्यक्त थाय छे के द्रुतविलंबितने वियोगिनी साथे आटलो बधो निकटनो संबंध छे. आ संबंध प्राचीनोने पण कदाच अजाण्यो नहोतो. अर्धसमवृत्तोमां एक हरिणीप्लुता आवे छे. तेनुं समपाद द्रुतविलंबितनुं ज होय छे. अने पहेलुं पाद, द्रुतविलंबितनो आद्य लघु खंडित करीने निपजावेलुं होय छे.

अयुजि प्रथमेन विवर्जितं[७]
द्रुतविलंबितकं हरिणीप्लुता।

छन्दोमं० ३, ३

हरिणीप्लुता: ललगा ललगा ललगा लगा ११
लललगा ललगा ललगा लगा १२

अहीं सुधी आपणे श्लोकबद्ध छंदोमां भिन्नभिन्न छन्दोनां चरणोनां मिश्रणोथी थता नवा छंदो, भिन्नभिन्न छंदोना संधिओना संगमथी थता नवा छंदो तेम ज संधिओमां उमेरण के छेदनथी थता नवा संधिओना नवा छंदोना श्लोको

७. विषमे प्रथमाक्षर वर्जतां
द्रुतविलंबितनी हरिणीप्लुता.

जोया. पण वर्तमान साहित्य श्लोकबद्ध प्रवर्ते छे तेम छन्दप्रवाहमां पण वहे छे. अने छंदप्रवाह जुदो जोवानी जरूर एटला माटे रहे छे के सामान्य रीते श्लोकबद्ध साहित्यमां शुद्धवृत्त साथे आवृत्तसंधि अक्षरमेळ छन्दोनुं मिश्रण थतुं नथी, पण छन्दप्रवाहमां एम थाय छे, एटलुं ज नहीं, तेमां केटलांक चरणो एवां आवे छे जेने कोई पिंगळे विशेष नाम आपेलुं होतुं नथी, अने केटलांक एवां आवे छे जेने ए ज कवि स्वतंत्र रीते एक श्लोक जेटले पण सळंग वापरतो होतो नथी. आ बाबत बीजा कोई छंदना प्रवाह करतां त्रैष्टुभ जागतना मुख्य प्रवाहमां विशेष बने छे. एटले अहीं हुं प्रवाहमां मळी आवता नवा छंदो जुदा विचारी जोईश. आमांनो एक ग्राही के विष्वंकमाला आपणे एक जगाए जोयो (गत पृ. २३७) ते त्रैष्टुभ-जागत प्रवाहमां ज विशेष वपराय छे. ८६ पंक्तिना 'निशीथ' (निशीथ पृ. १) काव्यमां ८३ मी ग्राहीनी छे.

ने मानवोनी मनोमृत्तिकामां

तेवी ज रीते 'वसुधा' (पृ. ७८)मां 'जेलनां फूलो'ना काव्यमां

तेने फरी धूळभेळूं करीने पं. ३७

वृत्तोना न्यासोनी जे निकटता उपर बतावी ते काव्यपंक्तिथी बताववा ए बे दृष्टान्तो आपुं:

वर्षावी शस्त्रास्त्रघातोनी धारा पं. ५०
'१९ मा दिवसनुं प्रभात', प्राचीना, पृ. १८

आने वर्षावीं शस्त्रास्त्रघातोनीँ धारा

एम पठीए तो ते ग्राही थाय. पण 'वी'ने दीर्घ ज राखीए तो

वर्षावी शस्त्रास्त्रघातोनीँ धारा

यतिभग्न शालिनी थाय. तेवी ज रीते

छेदे महावृक्षनी डाळडाळ, पं. ७५
एजन, पृ. १९

एने 'छेदे महावृक्षनीँ डाळडाळ'

एम वांचीए तो ते इंद्रवज्रा थाय, 'नी' दीर्घ ज राखीए तो ग्राही थाय. आम आ छंदोमां जराक ज उच्चारभंगीनो भेद छे.

तेवी ज रीते क्वचित् भुजंगीनी पंक्ति पण आवे छे. जेम के 'पनघट'मां (पृ. २०) 'जनता' ना लांबा काव्यमां वच्चे वच्चे उपजाति आवे छे त्यां

कदी राष्ट्र नामे, कदी धर्म नामे पं. ६१

ए भुजंगी छे. ए पण आवृत्तसंधि अक्षरमेळ छे पण ते उपेन्द्रवज्रानी बहु नजीकनो छे.

भुजंगी : लगागा लगागा लगागा लगागा

भुजंगीनो त्रीजो गुरु काढी नांखीए अने आठमा गुरुने स्थाने लघु मूकीए तो उपेन्द्रवज्रा थई रहे छे. ग्राही तथा भुजंगी बन्नेनी पंक्तिओनो उपाड अनुक्रमे गागाल अने लगा, अने बन्नेनो अंत लगागा, ए इन्द्रवज्रा उपेन्द्रवज्राने बहु ज मळता छे. एटले आ आवृत्तसंधि अक्षरमेळ छन्दो पण वृत्तो साथे भळी रहे छे. आ ज रीते प्रहर्षिणी अने रुचिरा पण भळी शके, जो के तेना दाखला बहु मळ्या नथी. प्रहर्षिणीमां आद्य गागागा ए शालिनी साथे भळी शके अने अंत्य लगागा पण भळे. रुचिरामां पण आदिमां लगालगा आवे छे ते उपेन्द्रवज्रानी साथे भळी जाय छे अने अंते लगालगा आवे छे ते इन्द्रवंशा-वंशस्थ साथे भळी रहे छे. पण आपणे हजी मुख्य छंदना नियत रूपथी आघी पाछी जती नवी नवी रचनाओ जोईए. 'प्राचीना'नां लांबां काव्यो घणांखरां त्रैष्टुभ-जागत उपजातिमां छे अने वस्तु महाभारतनुं होवाथी तेमां अनियमित आर्ष छन्दोनुं अनुकरण करवामां औचित्य रहेलुं छे, तेमांथी आपणे दाखला लईए.

अधन्य एवां पद्य-ने-पोयणाशां पं. ४

'कर्णकृष्ण', प्राचीना

न्यास : लगालगागा गालगा गालगागा

पहेला पांच अक्षरो सुधी उपेन्द्रवज्रा छे ते पछी तेनी साथे शालिनीनो उत्तर यतिखंड जोडेलो छे. एवी ज बीजी पंक्ति

सह्यो न जातां स्नेह ऑथार माता. पं. १९

नवी पंक्ति : धर्मध्वजाळा शिबिरे पांडवोना. पं. २२

गागालगागा ललगा गालगागा

अहीं इन्द्रवज्राना पांच अक्षरो पछी वातोर्मिनो अंत्य यतिखंड आवे छे. एवी ज

जेवो अरण्ये कठियारो कराळ

'ओगणीसमा दिवसनुं प्रभात' पं. ७४. एजन

मूके घडी नणिती तेनि साठ पं. ४३ एजन

गागालगा ललगा गालगागा

अहीं वसंततिलकानो प्रथम संधि आवे छे, पछी तरत वातोर्मिनो ज यतिखंड आवे छे.

आगळ में भुजंगीनी एक पंक्ति मूकेली:

कदी राष्ट्र नामे, कदी धर्म नामे

आमां बन्ने जगाए 'कदी'नो 'दि' ह्रस्व बोलीए, अने ए पठननो पूरो संभव छे, तो न्यास नीचे प्रमाणे थाय. हेमचन्द्र एने केकीरव कहे छे: (छन्दोनु० पृ. ८ब)

केकीरव: ललगा लगागा ललगा लगागा

अर्थात् इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्राना छेल्ला बे संधिओ बेवडाईने आखी पंक्ति बने छे. कोई कवि आवी तद्दन नवा प्रकारनी पंक्तिओ उपजाति-जागत प्रवाहमां भेळवे ए तद्दन संभवित छे. आगळ नवी रचनानी पंक्तिओ नोंधीए:

ऊभा अहीं ते कृतवर्मा अने कृप २८. प्राचीना पृ. १७

गागालगागा ललगागा लगालगा

आखी पंक्ति लगभग इंद्रवंशा जेवी देखाय छे, मात्र त्रीजा संधिमां एक गुरु वधारे छे. पण एटलो फेरफार थतां मने शंका छे के एटलो भाग पछी इंद्रवंशाना मेळमां रही शकतो नथी. आवा बीजा दाखला हजी उतारुं.

कैं वर्षोथी शौर्यउन्मादव्याकुळा १२
संग्रामार्थे जे भुजा खंजवाळता १२

पहेला चार अक्षरोथी शालिनीनो पूर्व यतिखंड बने छे. आखी पंक्तिओनो न्यास:

गागागागा । गालगागा लगालगा
गागागागा । गालगागा लगालगा

वळी एवी ज पंक्तिओ:

जाओ लावो । कृष्ण, श्वेताश्वशोभिते १८२
प्राचीना, पृ. ९

पांचोलाना । स्वामी आ धृष्टद्युम्न ते ४५
प्राचीना, पृ. १७

तेने अंते । खोट ते शस्त्रघातनी ५३
प्राचीना, पृ. १८

के वर्चस्वी । वीसर्यो ते घटोत्कच? २६३
प्राचीना, पृ. २७

आ बधीयमां प्रारंभमां शालिनीनो पूर्व यतिखंड छे. ते पछीना चार अक्षरो गागागागा अथवा गालगागा आवे छे पण अंते सर्वत्र लगालगा आवे छे जे अनुष्टुपनी समपंक्तिनो अंत्य चतुरक्षर संधि छे. एटले आ अष्टाक्षरखंडो शालिनीने गमे तेटला मळता होय छतां संधिओ चारचार अक्षरोना पडी अनुष्टुपनो संवाद उत्पन्न करे छे, खास करीने तेनो अंत्य चतुरक्षर संधि. अने आ परिणाम पण कंई कमेळवाळुं बनतुं नथी. शालिनी गुरुप्रधान छे, तेनो पहेलो यतिखंड चतुरक्षर छे, अने आ बीजा बे चतुरक्षर संधिओ तेनी साथे भळी रहे छे. एटले एनो मेळ हुं आ ज गणुं छुं.

आ प्रमाणे अनुष्टुपनुं चरण बीजा छंद साथे जोडाई गयानुं एक बीजुं दृष्टान्त मळे छे:

सान्निध्य तारे सखि, आ धरित्री
डगे डगे रूप वसन्तनूं धरे,
सुहाग तारो मृदु सौम्य नीतरे,
ने आ कंगाळ हैये, विपुल मुदतणा, वैभवोने भरे भरे. २०

'सान्निध्य तारे', वसुधा, पृ. २१

'सुहाग०' पंक्ति सुधीनुं काव्य त्रैष्टुभ अने जागत उपजातिनुं छे अने ते पछी उपसंहार करवा कवि लांबो छंद वापरे छे. ए लांबो छंद स्रग्धराना बे यतिखंड सुधी जाय छे, अने उपसंहार गालगागा लगालगा एवा अनुष्टुपना समपादथी थाय छे. आ समपाद, उपर आवता स्रग्धराना अंत्यखंडने बहु ज मळतो छे.

स्रग्धरा अंत्यखंड: गालगा गालगागा

उपरनुं अनुष्टुप पाद: गालगागा लगालगा

एटले अनुष्टुप त्यां स्रग्धराना उपसंहार तरीके सारी रीते काम आपे छे.

आ जातना हजी बीजा प्रयोगो कदाच मळे. पण आटलाथी वस्तुनुं स्वरूप समजाई जशे.

आ जगाए एक प्रश्न पुछाय छे: कवि आवां मिश्रणो शा माटे करे छे? एक जवाब ए छे के आवा प्रयोगो कवि कोई वार मात्र वैविध्य खातर करे, पण घणी वार तो भाव अने अर्थने माटे नवीन छंदोभंगीनो जरूर लागवाथी करे छे. कान्ते खंड काव्योमां छंदोवैविध्यनो उपयोग कर्यो, तेने सद्‌गत रमणभाईए भाव प्रमाणे छंद बदलाववानी रीति कही. (कविता अने साहित्य.

वॉ. १. पृ. ९१) आ संबंधी एवो प्रश्न पुछायो छे के एक के बे श्लोको जेटलुं काव्य आगळ चाल्युं एटलामां काव्यनो भाव एवो ते शो बदलाई गयो ? आनो एक जवाब ए छे के भाव काव्यशास्त्रमां गणावेला छे एटला ज नथी, पण मानवजातिनी मनोवृत्ति जेटला असंख्य छे. पण बीजी रीते एने माटे हुं एम कहुं के कवि वाक्यभंगीनी खातर पण छंद बदलावे. ए वाक्यभंगी पण भावनुं ज परिणाम छे, पण एने भाव न गणवो होय तो, वाक्यभंगी ए पण छंदनी पसंदगी माटे निर्णायक बनवा पूरती महत्त्वनी अने बळवान छे. जेमके :

गांधारी : रे आयुष्मन्! ऊठ संभाळ भार,
रह्यूं सह्यूं धर्म वडे उगार.

प्राचीना, पृ. २७

अहीं एक ज उक्तिमां छंद बदलाव्यो छे. संबोधनने तीव्र करवा माटे शालिनीनो यति खंड एने आप्यो. अने पछी लघुगुरुना अत्यंत लीसा छन्दवळांकमां भावनुं गौरव सचवाय ए रीते बाकीनुं वाक्य शालिनीना उत्तरखंडमां अने तेनी पछीना उपेन्द्रवज्राना चरणमां पूरुं थयुं. नवो छंद जेम लागणीथी थती छंदोभंगीने झीलवा आवे, तेम विचारना वळांकने झीलवा पण आवे. आगळ आपेलुं प्रो. ठाकोरनुं दृष्टान्त फरी मूकुं :

कोनूं आखूं, कोनुं हैयूं गळेलूं,
कोनी साचो कोनि खोटी परीक्षा,
ए प्रश्नोने ते ज जाणे उकेली
ऊकेलतो सार निःसारनो जे,
निःसार गाळि शकतो वळि सारमांथी.

भणकार, पृ. ३२८

अहीं कविने अमुक प्रश्नो विशे अमुक कहेवानुं छे. ए प्रश्नो एमणे सीधी सादी शालिनीमां मूक्या, प्रश्ने प्रश्ने यति आवे एवी रीते ए प्रश्नो कथ्या, अने ए प्रश्नो विशे जे कहेवानुं छे तेने माटे छन्दफेर कर्यो, अने आत्मश्रद्धाना बळथी जाणे एक ज श्वासथी बोलता होय तेम एकएकथी लांबी पंक्तिमां पण एक ज गोत्रना छंदमां ए कही नाख्युं. अहीं अलबत विचार प्रधान छे पण अहीं पण भाव नथी, भावनी तीव्रता के वेग अने बळ नथी एम नहीं कही शकाय. पण आ बन्ने दृष्टान्तोथी एटलुं जणाशे के छन्द वक्तव्यनी भंगीने झीलवा बदलाय छे. जेम कथकनृत्तमां तबलाना बोल नर्तकना अंगविन्यासथी व्यक्त थाय छे, नृत्यमां जेम गीतना भावो तेना तालबद्ध अभिनयथी व्यक्त थाय

छे, तेम काव्यमां काव्यनो भाव, कविनी वाक्यभंगी अने छंदोभंगीथी व्यक्त थाय छे. छन्द अने छन्दोभंगी ए काव्यभावना शब्दशरीरनुं नर्तन छे. एटले साचा कविने हाथे थती आ छंदोभंगी ए स्वच्छन्द नथी पण व्यंजनकलानी सूक्ष्म रीति छे.

आपणे उपरना निरूपणमां एक छन्दःप्रवाहमां अनेक छन्दोनुं मिश्रण — भिन्नभिन्न छन्दोनी पंक्तिओनुं, तेम ज भिन्न छन्दोना संधिओनुं — जोयुं. पण ते साथे ए पण स्वीकारवुं जोईए के छन्दःप्रवाहमां एवी पण पंक्तिओ आवे जेने कोई पण एक छन्दना नियत रूपमां बेसाडी न शकाय. ए रचना मात्र छन्दनी एक अनियमितता ज होय. आपणे छन्दःशास्त्रमां ए स्वीकारवुं जोईए के कविने ए प्रमाणे कोईक ज वार, क्वचित ज, नियत स्वरूपनी बहार जवानी पण छूट रहेली छे. कविने व्याकरण बहारनो प्रयोग करवानी छूट होय छे तेवी ज आ छूट छे. बे कांठामां वहेती नदी पण पूरमां जेम कांठाने भेदे छे, तेम कोई पण भावनो उद्रेक थतां छंदनुं नियत स्वरूप त्यां भेदाय छे. पण आ छूट के अपवाद छे, अने कुशल कवि ज आ छूटनो सुन्दर उपयोग करी शके छे. जेने छंदनुं पूरुं स्वाभाविक प्रभुत्व छे, अने जे भाव भाषा अने छन्दनो मार्मिक संबंध जाणे छे ते ज आ छूट लई शके. छूटना दृष्टान्त तरीके, एक पंक्ति 'द्युतिकणी'मांथी उतारुं छुं. आखुं काव्य पृथ्वीमां छे. सॉनेटनी १३ पंक्तिओ सादा पृथ्वीमां छे अने छेल्ली पंक्ति

बनो विमल विमल विमल नयन श्रोत्र उर पंड आ

भणकार (१९३७), पृ. १००

पृथ्वीना पहेला संधि लगा पछी लललगा लगा आवे छे तेनी जगाए अहीं एक सामटा नव लघु छे, अने ते पण एक 'विमल' शब्दनां त्रण आवर्तनथी थया छे. आ आवर्तनो अदम्य मनोवेग दर्शावे छे, अने ए वेग अहीं पृथ्वीना बे संधिओने भेदे छे. आ प्रक्रियाने आपणे स्वीकारवी जोईए. ए पंक्ति अनियमित ज छे, अने भावनी आवश्यकताथी ए रूपे पृथ्वीमां आवे छे. छतां ए पृथ्वीना प्रवाहनी छे, अने एने अछान्दस गणवी न जोईए. अलबत्त आनो अर्थ एवो नथी ज के नियमित छन्दमां भावनो उद्रेक न ज आवी शके. तेम एवो पण नथी ज के छन्दने भेद्यो एटले भावनो उद्रेक सधाई गयो. ए तो ज्यारे साचा काव्यमां आ प्रमाणे बने त्यारे ज त्यां छन्दोभंगने निर्दोष गणी स्वीकारवो जोईए एटलुं ज वक्तव्य छे.

आपणां परंपरागत पिंगलो, निरूपणमांथी रही गयेला छन्दोने माटे गाथा शब्द योजे छे, पण आ व्यवस्था शास्त्रीय नथी. ए रही गयेला छन्दोने पेटीए

पेढीए योग्य जगाए स्थान आपवुं जोईए, अने उपर आवी एवी जे अनियमित पंक्तिओ होय, तेने माटे ज अपवादसूत्र के अपवादविभाग राखवो जोईए एम हुं मानुं छुं. अने त्यां पण उपरनी पंक्तिने पृथ्वीगाथा कहीए तो सारुं.

अत्यार सुधी नहीं स्पर्शेली एवी एक छन्दोविकृतिनी पद्धति हवे लउं छुं. आने हुं विकृति ज गणुं छुं, नवछन्दोविधान गणतो नथी, छतां तेने चर्चवानुं आ ज योग्य स्थान छे. 'छन्दःसारसंग्रह'ना कर्ता चन्द्रमोहन घोष तेने सममात्रकादेश कहे छे. घोष तेनुं स्वरूप नीचेना शब्दोमां दर्शावे छे. "अथ कोऽयं सममात्रकादेश इत्यत्रोच्यते—गुरोरेकस्य स्थाने लघुद्वयस्य, लघुद्वयस्य स्थाने गुरोरेकस्य वा, एकचतुष्कलगणस्य स्थानेऽपरचतुष्कलगणस्य च सन्निवेशः सममात्रकादेशः। (छन्दःसारसंग्रह पृ. ११४.) अर्थात् एक गुरुनी जगाए बे लघु अथवा बे लघुनी जगाए एक गुरु, अथवा एक चतुष्कल गणनी जगाए कोई बीजो चतुष्कलगण मूकवो तेने सममात्रकादेश कहे छे. घोष आ प्रक्रियाथी नवा छन्दो बने छे एम कहे छे. नरसिंहराव पण आ शब्दनो अर्थ आ ज करे छे, पण ए व्यापारनुं स्थान प्राकृत पिंगलमां छे, वृत्तोमां नथी एम कहे छे.[८] पहेलां आपणे आनुं स्वरूप समजवा घोषे आपेलुं दृष्टान्त जोईए. घोष अहीं 'भागवत' दशम स्कंधना ३५ मा अध्यायमांथी केटलाक श्लोको उतारे छे. आ श्लोकोनो मुख्य प्रवाह स्वागतानो छे, अने तेमां वच्चे वच्चे सममात्रकादेशनी विकृतिओ थाय छे. बधा श्लोको न उतारतां हुं बेत्रण ज उतारीश.

हन्त चित्रमबलाः शृणुतेदं
हारहास उरसि स्थिरविद्युत्।
नन्दसूनुरयमार्त्तजनानां
नर्मदो यर्हि कूजितवेणुः॥

भागवत १०–३५–४

अहीं पहेली त्रण पंक्तिओ शुद्ध स्वागतानी छे. चोथीनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

गालगा गालगा ललगागा

बीजो संधि लललगा ने बदले गालगा थाय छे. अर्थात् संधिना पहेला बे लघुनी जगाए एक गुरु आवे छे. ए प्रमाणे अहीं सममात्रकादेश थाय छे ए खरुं पण साथे साथे प्रश्न थाय छे के अहीं 'यर्हि'नो उच्चार 'यरहि' जेवो

८. Gujarati Language and Literature vol II, p. 292.

नहीं थतो होय? आ जातनो विकार ए अध्यायमां आगळ १०मा अने १२मा श्लोकमां थाय छे त्यां पण विकारनो शब्द आ ज 'र्यार्हि' छे. आगळ २१मामां थाय छे त्यां चरण आ प्रमाणे छे: "मानयन् मलयजस्पर्शेन।" अहीं अंत्य संधि ललगागाने स्थाने गागागा थाय छे पण अहीं पण 'स्परशेन' एवो उच्चार करवाथी छंद बेसी रहे छे. प्राकृत भाषाओमां तो आवा र् संयोगमां स्वर-भक्ति थई 'र' आखो बने छे जेम के 'धर्म'नुं 'धरम'. एटले आने छन्दनी विकृति कहेवी के भाषानुं प्राकृतीकरण कहेवुं ए प्रश्न हमेशां रहेशे. अत्यारनो आपणो गुजराती कवि तो आ जगाए स्पष्ट रीते 'धर्म'नुं 'धरम' ज करे. पण आपणे आगळ चालीए. सममात्रकादेशनां बीजां ऊलटा प्रकारनां दृष्टान्तो पण ए ज अध्यायमांथी मळी रहे छे. हुं एक उतारुं छुं:

तर्हि भग्नगतयः सरितो वै
तत्पदाम्बुजरजोऽनिलनीतम्।
स्पृहयतीर्वयमिवाबहुपुण्याः
प्रेमवेपितभुजाः स्तिमितापः॥

एजन, श्लो. ७

अहीं १, २, ४ पंक्तिओ शुद्ध स्वागतानी छे, त्रीजी पंक्तिना पहेला संधि गालगानी जगाए अहीं ललगा थाय छे एटलो भेद छे. आने हेमचन्द्र पोताना पिंगलमां कलहंसा अथवा द्रुतपदा कहे छे. (छंदोनु० पृ. ७ब) अने वृत्तोमां तो लघुगुरुना जरा पण फेरथी वृत्त बदलाय ज ए ज खरो सिद्धान्त छे. पण कविनो अभिप्राय अने उद्देश अहीं जोईशुं तो जणाशे के पोते तो आने स्वागतानो श्लोकप्रवाह ज माने छे. अलबत भागवतकारनो आवो अभिप्राय ए मारुं अनेक छंदोना अनुभव उपरथी तारवेलुं अनुमान छे. पण आधुनिक गुजरातीमां तो ए अनुमाननो विषय रहेतो नथी. सद्‌गत न्हानालाल अने प्रो. ठाकोर बन्ने आ प्रकारना विकारने छन्दोना स्वरूपने अनुकूल माने छे एटले आ प्रश्ननुं महत्त्व वधे छे, अने तेने छन्दना स्वरूपना सिद्धान्तनी कसोटीए कसी जोवो जोईए. वस्तुनी चर्चा वधारे स्पष्ट थाय माटे केटलांक दृष्टान्तो प्रथम लउं:

प्रथम कवि न्हानालालना 'मेघदूत'ना भाषान्तरमांथी बब्बे पंक्तिओ लउं छुं:

ने पृथ्वीने। फलवति करे छत्रि पुष्पो खिली, ते
काने गमतुं। गरजन सुणी त्हारुं, माने उडन्ता ११

*

લાંબા વિરહે । જનમિ ઉરની ક્હાડિ ઊંહી વરાળો
ઋતુ ઋતુએ જે । પ્રિત પ્રગટતો તૂજ સંયોગ પામ્યે. ૧૨

આમાં પ્રથમ પંક્તિમાં જ માત્ર પહેલો યતિખંડ પિંગળ પ્રમાણે ચાર ગુરુનો બનેલો છે: 'ને પૃથ્વી ને'. એ જ. એની પછીની બે પંક્તિમાં સામાન્ય રીતે લઘુ ગુરુ ગણીએ તો ગાગાલલગા થાય. છતાં એમ કહી શકાય કે આ યતિખંડમાં કશું નિયમ બહાર નથી થયું, કારણકે 'ગમતું'નો ઉચ્ચાર 'ગમ્તું' જેવો થાય છે અને 'વિરહે'નો ઉચ્ચાર 'વિર્હે' જેવો થાય છે, અને એ પ્રમાણે ઉચ્ચારણ કરીએ તો યતિખંડ ગાગાગાગા થઈ રહે. પ્રો. ઠાકોર 'ભણકાર'ની જૂની આવૃત્તિના પદ્યરચનાના નિબંધમાં શ્રુતિભંગ ઉપર લખે છે: "'ક્વચિત્' શબ્દનું માપ એક લઘુ અને એક ગુરુનું ગણાય. પણ 'કેવળ' શબ્દનું માપ એક ગુરુ અને બે લઘુનું ગણાય અથવા બે ગુરુનું પણ ગણાય. 'પણ' શબ્દનું માપ એક લઘુનું કે એક ગુરુનું જ્યાં જેવું ગણવું હોય તેવું ગણાય. આપણું ગુજરાતી ભાષાનું ઉચ્ચારણ જ એવું છે. . . . સંસ્કૃત ભાષા અને તેના નિયમોની દૃષ્ટિએ બેશક આમ ન કરાય; પણ આપણે તો ગુજરાતી ભાષાની વાત છે. . . . ભાષાની વિલક્ષણતાનું પ્રતિબિંબ પદ્યના ઉચ્ચારણમાં પડે એ કુદરતી છે." (સળંગ (અગેય) પદ્ય. પૃ. ૨૫–૨૬. ભણકાર ૧ લી આવૃત્તિ) ભાષાના ઉચ્ચારણની દૃષ્ટિએ શબ્દનો અંત્ય અ ચબકતો–દ્રુત બોલાય છે એ ખરું, પણ એ બાબતમાં હું નરસિંહરાવનો મત સાચો માનું છું કે એ માત્ર દ્રુત જ બોલાય છે, ત્યાં 'અ' લુપ્ત થતો નથી, 'કેવળ'ના ગુજરાતી ઉચ્ચારણમાં 'ળ' એ 'ળ્' ખોડો બોલાતો નથી. તેને સામ્ય હોય તો સસ્વર ળ સાથે વધારે સામ્ય છે, અને કવિતામાં ઉચ્ચારણ ગદ્યના કરતાં વધારે ધીમું હોય છે એ જોતાં ત્યાં સસ્વર વ્યંજન વધારે સાચો ગણાય. છતાં પ્રો. ઠાકોર એને છૂટ ગણે છે તે છૂટ તરીકે એને સ્થાન છે, એમ હું સ્વીકારું છું. તેઓ પોતે આના અનુસંધાનમાં કહે છે. "છૂટનો અતિયોગ કે દુરુપયોગ ઇષ્ટ નથી એ સૌ સ્વીકારે છે જ." (એજન પૃ. ૨૭) અને એટલું હું અહીં ઉમેરીશ કે પ્રો. ઠાકોરના કહેવાનો મારી દૃષ્ટિએ એ ફલિતાર્થ છે કે આ છૂટ સંસ્કૃત તત્સમ શબ્દોમાં ભાગ્યે જ ક્ષમ્ય ગણાય, જો કે તેમણે એવી છૂટ પુષ્કળ લીધી છે. જેમ કે (હું નરસિંહરાવનાં જ દૃષ્ટાન્ત લઉં છું)

અરે શીળી સુન્દર સુખદ દયિતા, આવ નિકટ

એજન, પૃ. ૬૫

અરે ત્હારા શીતલ કમલ યુગલે ભીડ મુજને

એજન, પૃ. ૬૫

आ बन्ने दृष्टान्तोमां 'सुन्दर्' 'शीतल्' एम उच्चार करवो पडे छे ते तेना शुद्ध उच्चारणनी विकृति छे.

आपणे चर्चाना मूळ विषय उपर आवीए. कवि न्हानालालनां दृष्टान्तोमां आवता 'गमतुं' अने 'विरहे' शब्दने आपणे उपरनी चर्चानी दृष्टिए बब्बे गुरुना गणीने चलावी लईए तो त्यां पछी छन्दोदोष रहेतो नथी. पण एवो एक पण बचाव छेल्ली पंक्ति माटे थई शके तेम नथी. 'ऋतु-ऋतुए जे' ए तो स्पष्ट ललललगागा छे, अने मंदाक्रान्ताना पहेला यति खंडमां एने स्थान आपी शकाय नहीं. ए स्पष्ट छन्दोभंग छे. ए कोई रीते क्षम्य नथी.

प्रो. ठाकोरे छन्दोमां भाषाना उच्चारणने कारणे जे छूट लीधी छे ते संबंधी हवे कशुं कहेवानुं रहेतुं नथी. ए छूट छन्दना बंधनी नथी, पण भाषाना अमुक उच्चारणने बे लघुने बदले एक गुरु गणवाना रूपनी छे. पण छंदोमां तेमणे जे छूटो लीधी छे, ते बधीनो आमां समावेश थई जतो नथी. ए छूटो आपणे अहीं जे सममात्रकादेश कह्यो ते प्रकारनी छे. नरसिंहराव ए छूटोनो निषेध करतां जे दृष्टान्तो आपे छे, तेमांनां बे में उपर उतार्यां, बीजां बे हवे नीचे उतारुं छुं:

तजी फलक वर्तमान, प्राचीनथी पोषिने

भणकार, आवृत्ति १ली, पृ. ५१

लपेटि जतनेथि खीण, लोभावती लोचन

एजन, पृ. ५२

बन्नेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय:

लगा लललगा लगा लगागा लगा गालगा

उपरना न्यासो जोतां जणाशे के पहेला त्रण तथा अंत्य बे संधिओ पृथ्वीना ज शुद्ध रूपमां छे. वचमां ललगाने बदले लगागा आवे छे. अर्थात् संधिना वचला बे लघुओनी जगाए एक गुरु आवे छे. बीजी रीते कहीए तो ललगा एवा पंचमात्रक संधिनी जगाए लगागा एवो बीजो पंचमात्रक संधि अहीं आव्यो छे. आ सममात्रकादेशनो ज विकार थयो. आने भाषाना कोई उच्चारणने कारणे समर्थित करी शकाय एम नथी. आपणी पासे शुद्ध रूपे प्रश्न आवीने ऊभो रहे छे के आ व्यापार शुद्धवृत्तोमां आवी शके?

आनी चर्चा आगळ चलावीए ते पहेलां हजी आ ज व्यापारनां बीजां केटलांक दृष्टान्तो प्रो. ठाकोरना सॉनेटोमांथी मळे छे ते लईए.

प्रकाश न न अन्धकार ; नहि अभ्र, अनिले नहीं;
'तारा दर्शन', म्हारां सॉनेट, पृ. ५

निहाळुं वळि मिलनी मदभरी स्मरप्रहरणी
'सुन्दरीओ', म्हारां सॉनेट, पृ. ८

बन्नेना क्रमवार न्यासो :

लगा लललगा लगा लललगा लललगा लगा
लगा लललगा लगा लललगा लगा लललगा

बधा ज दाखलाओ आ बे प्रकारोमां आवी जाय छे. अहीं पहेला चार संधिओ सुधी नियमित पृथ्वी चाले छे. ते पछी लगा गालगा ए बे संधिओने बदले एकमां लललगा लगा एवा संधिओ आवे छे, अने बीजामां अंत्य गालगाने बदले लललगा एवो संधि आवे छे. बन्नेमां व्यापार सममात्रकादेशनो छे. प्रो. ठाकोरे पृथ्वी विशे जे कांई लख्युं छे, पद्यरचनामां जे कांई छूटो विशे लख्युं छे तेमां आ प्रसंगोनो समावेश थई शकतो नथी[१]. आपणे आ स्वतंत्र रीते जोवाना रहे छे.

---

१. प्रो. ठाकोरे, एमणे पृथ्वीना प्रयोगोमां करेला फेरफारो संबंधी क्यांय आंगळी चींधीने कशुं कहेलुं नथी. दूर दूरनी सूचनाथी कंई कह्युं होय तो उपर आपी ते चर्चामां आगळ जतां कहे छे ते ज. गुजराती भाषाना उच्चारणनी विलक्षणता विशे आगळ अवतरण आपेल छे (पृ. २७८) ते पछी तेओ कहे छे : "वळी आवा प्रयोगोना लाभमां उमेरवुं जोईए के एथी वाणी-प्रवाहनी भारव्यवस्था अथवा तो स्वरव्यंजननी सुरावट के शब्दार्थनुं औचित्य कोई कोई वार सुघरी आवे छे. छेवटे, गेय रचनाने तालबन्धनी सफाई आवश्यक छे, तेमां ताळी (आघात के सम)नां जे जे स्थान तेमां एक मात्रानो के लेश पण आम के आम फेर पडवो न जोईए. पण संगीतथी स्वतंत्र कवितामाधुर्य जेनुं लक्ष्य, ते रचनामां आ प्रकारनी छूट शा माटे नहीं ? छूटनो अतियोग के दुरुपयोग इष्ट नथी ए सौ स्वीकारे छे ज; आ संग्रहमां जे कोई अति छूटना दाखला हशे तेनो बचाव करवा आग्रह पण नथी. वांचनार आ नवी स्वतंत्र यतिवाळी पद्यरचनानुं रूप समग्र रीते जाणवा आकर्षाय तोये घणुं छे." (भणकार १ली आवृत्ति, पृ. २६–२७) वक्तव्य एवुं जणाय छे के 'मात्रामेळी रचनाओमां तालनी मात्रानां स्थानो नियत छे, त्यां बे ताल वच्चेनी मात्रासंख्यामां वधारो घटाडो थई शके नहीं; पण आ वृत्तरचनाओ तो संगीतथी विश्लिष्ट थई छे तो तेमां शा माटे फरफार न थाय ?'

सिद्धान्तनी दृष्टिए आवा एक पण फेरफारथी मूळ छंद एनो ए रहेतो नथी ए ज साचुं छे. अने जूनो छंद छतां नवो छंद सुमेळवाळो छे के नहीं ए प्रश्न ज रहे छे. ए रीते कहेवुं होय तो कही शकाय के आ नवा प्रयोगो वाळी पंक्तिओ पृथ्वीनी नथी, अने नवो छंद पृथ्वी जेटलो सुन्दर नथी. पण छन्दनी दृष्टिए आपणी पासे एटलो ज प्रश्न नथी. प्रश्न ए छे के पृथ्वीना प्रवाहमां आ पंक्तिओ आवी शके के नहीं? तो ए संबंधी मारो अभिप्राय ए छे

हवे मात्रामेळ रचनाओमां बे ताल वच्चेनुं अंतर नियत छे ए खरुं पण ए अंतर कालमात्रानुं छे, तेमां आवती अक्षरमात्राओ सामान्य गणतरी रीते वधती के घटती होय तो ते लांबी टूंकी करी समयमात्रा साथे बंध बेसाडी शकाय छे, ए तो प्रसिद्ध छे. एटले ए एटलुं विधान मात्रामेळना खोटा ख्याल उपर बंधा'लुं छे अने तेथी विरुद्ध पक्ष तरीके ना पछीना विधानने नो टेको मळी शकतो नथी. पण खरी रीते तो शुद्ध वृत्तनो प्रश्न स्वतंत्र रीते ज चर्चवो जोईए. प्रश्न ए छे के जो शुद्ध वृत्तो, एटले अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो संगीतथी स्वतंत्र होय, तो एनो मेळ बंधाय छे शाथी? अलबत लघुगुरुनी अमुक क्रमनी रचनाथी. अने एम होय तो ऊलटुं ए लघुगुरुनो क्रम न बदलावी शकाय एवी स्थिति ज एमांथी प्राप्त थाय छे. अने आवा कथनने अंते एमणे जे यतिस्वातंत्र्यनो उल्लेख कर्यो छे एने आ सममात्रकादेश साथे शो संबंध छे ए जरा पण स्पष्ट थतुं नथी. अर्थात् प्रो. ठाकोर पोते पृथ्वी छंदमां करेला फेरफारोने स्पर्शे छे पण ते विशे कशुं कही शकता नथी.

आ कथनमां प्रो. ठाकोर एक साथे घणा प्रश्नोने स्पर्शे छे. अने छतां तेना अंदरना मुद्दाने स्पष्ट करी शकता नथी. जेम के गुजराती भाषाना विलक्षण उच्चारणथी शब्दार्थनुं औचित्य कोई वार सुधरे एम कहयुं छे ते खरुं छे; एवी स्वरव्यंजननी सुरावट कोई वार सुधरे एम कहयुं छे ए पण समजाय एवुं छे जो के एना समर्थनमां दृष्टान्त आप्युं होय तो वधारे सारुं. पण एवी वाणीप्रवाहनी भारव्यवस्था सुधरे एम कहयुं छे एनो अर्थ शो? आ भारव्यवस्था ते अर्थनिष्पाद्य भारव्यवस्था के पद्यनिष्पाद्य भारव्यवस्था? अर्थनिष्पाद्य भारव्यवस्था एवो अर्थ होय तो ते केवी रीते गुजराती उच्चारणथी सुधरे ए समजातुं नथी. ए तो जे शब्द मूकीए तेना अर्थथी नियत थवानो छे, तेमां सुधरवा-बगडवापणुं रहेतुं नथी. पद्यभारव्यवस्था अभिप्रेत होय, तो प्रश्न थाय छे के तेओ पद्यभार स्वीकारे छे? पद्यभारव्यवस्था तो पद्यरचनाथी नियत थाय छे, ते अमुक उच्चारणथी शी रीते सुधरी शके?

के जेम त्रैष्टुभ जागत छन्दःप्रवाहमां अनेक प्रकारना छंदोनी पंक्ति आवी शकती हती — आवृत्त अक्षरमेळ छन्दनी पण आवी शकती हती, तेम आ पण आवी शके. एनाथी पृथ्वीनो आखो प्रवाह बगडी जतो नथी. कारणके तेथी पृथ्वीना संधिओ बहु बदलाता नथी.' तजी० ' पंक्तिमां चोथा संधि ललगानी जगाए लगागा थाय छे त्यां ए एक ज संधि बदलाय छे, बाकीना बधा एम ने एम रहे छे. 'प्रकाश०'वाळी पंक्तिमां मात्र छेल्ला बे टूंका संधिओ लगा गालगा बदलाय छे, अने 'निहाळुं०' पंक्तिमां मात्र छेल्लो संधि जरा बदलाय छे. पण एथी पठनमां बहु मोटो फरक पडतो नथी. अने तेथी पृथ्वीना प्रवाहमां आवी पंक्तिओनो निषेध करवानी जरूर नथी. क्यांक एनाथी वैविध्य पोषाईने समग्र छन्दःप्रवाहने लाभ पण थाय. एथी ऊलटी रीते 'ऋतु ऋतुए जे०' पंक्तिने में निषिद्ध गणी तेनुं कारण ए छे के सयतिक वृत्तोना बंधारणमां में आगळ कह्युं तेम यतिने माटे तेना पूर्वे आवता खंडमां चार गुरु आवश्यक छे, ए गुरुनी जगाए लघु मूकी शकाता नथी. एटले त्यां सममात्रकादेशथी मंदाक्रान्तानुं आखुं स्वरूप भांगी जाय छे. उपरना पृथ्वीना दाखलामां आखुं स्वरूप भांगी जतुं नथी, थोडो फेरफार थाय छे. ज्यां यतिनी आवी आवश्यकता नथी त्यां एकाद गुरुनो सममात्रकादेश वृत्तना मेळने बहु नुकसान करतो नथी — खास करीने लांबा वृत्तमां. आ बाबतने आवा फेरफारवाळां बीजां वृत्तो जोवाथी टेको मळे छे. 'भागवत'मांथी ज एक दृष्टान्त लउं. 'भागवत'ना ९मा स्कंधना २४मा अध्यायमां व्यापक तरीके अनुष्टुप आवे छे. अने अंतना बे श्लोको वसंततिलकामां छे. तेमांनो छेल्लो नीचे मुजब छे:

पृथ्व्याः स वै गुरुभरं क्षपयन् कुरूणा
मन्तः समुत्थकलिना युधि भूपचम्वः।
दृष्टया विधूय विजये जयमुद्विघोष्य
प्रोच्योद्धवाय च परं समगात्स्वधाम॥

भागवत, (निर्णयसागर, आवृत्ति ८मी) ९, २४,६७

आवी ज विकृतिवाळो एक श्लोक 'ललितविस्तर'मांथी मळे छे:

प्रत्येक बुद्धभि च अर्हभि पूर्णलोको
निर्वार्यमाणु न बलं मम दुर्बलं स्यात्।
सो भूपु एकु जिनु भेष्यति धर्मराया
गणनातिवृत्तु जिनवंशु न जातु छिद्यत्॥

ललितविस्तर, पृ० ३०३

बन्ने श्लोकमां त्रण पंक्तिओ वसंततिलकानी छे. 'भागवत'ना श्लोकमां पहेली पंक्तिनो अने 'ललितविस्तर'ना श्लोकमां छेल्ली पंक्तिनो प्रथम गुरु चिराईने बे लघु बन्या छे. ('भागवत'मां 'पृथव्याः' शब्दमां व्या संयोग निर्बल गणवो जोईए.) छतां पठनमां नहीं जेवो फेर पडे छे. आ लघुद्वयना प्रारंभवाळुं वृत्त पिंगलमां स्वीकारायुं पण छे. तेनुं नाम हेमचन्द्र ऋषभ आपे छे.

ऋषभ : ललगालगा ललगा लगा लगागा

छन्दोनु० पृ. १०ब

शार्दूलविक्रीडितना पण पहेला गुरुने स्थाने बे लघु आवतां तेनो मत्तेभविक्रीडित थाय छे.

मत्तेभविक्रीडित : ललगागा ललगा लगा ललगा । गागालगा गालगा

छन्दोनु० पृ. १५अ

अने 'प्राकृत पैंगल' शार्दूलनी साथे आ मत्तेभनी पंक्तिओ, ए शार्दूल होय ए प्रमाणे मिश्र करे छे (प्रा. पै. पृ. ५३३).

आवुं ज हेमचंद्र महास्रग्धरा पण आपे छे, जो के यतिने लीधे अेने हुं ओछुं निर्वाह्य गणुं छुं.

महास्रग्धरा : ललगागागा लगागा । ललललललगा । गालगा गालगागा

छन्दोनु० पृ. १६अ

आ बधां दृष्टान्तो जोतां एम जणाय छे के आ प्रकारना फेरफारोमां जो गुरुने बदले बे लघु मूकवा होय तो बे गुरु भेगा आवता होय तेमांथी एक लई ए फेरफार करवाथी चरणना मेळमां ओछामां ओछो विक्षेप थाय छे. प्रो. ठाकोरे 'म्हारां सॉनेट'ना पृथ्वीमां करेलां सर्व गुरुपाटनो[10] आ ज स्थाननां एटले लगा गालगामां ज्यां बे गुरुओ भेगा थाय छे ते स्थाननां ज छे. आनुं कारण स्पष्ट छे. बे गुरुमांथी पहेलो भांगतां त्यां तरत बीजो गुरु ए भागेला संधिने बांधी लेवाने हाजर होय छे. अलबत्त बीजो गुरु आ प्रमाणे आगला संधिमां चाल्यो जाय छे, पण तेथी पछीनो संधि आधारहीन नथी थई जतो, तेनो अंत्य गुरु तो स्थिर ज छे. पाटन दुष्ट त्यां गणाय ज्यां गुरुना तूटवाथी तेनी आगळना लघुओ निराधार थाय अने तेमने पछीना लघुओ साथे भळी जवुं पडे. आथी लघुओनी संख्या एकदम घणी वधी जाय अने रचना

१०. गुरुपाटन, एटले गुरुने चीरीने तेना बे लघु करवा ते.

शिथिल थई जाय. अने बीजुं ए के आवो फेरफार लांबा वृत्तना मेळने विक्षिप्त करे ते करतां टूंकाने वधारे विक्षिप्त करे. दाखला तरीके वसंततिलकाना आद्य बे गुरुमांथी पहेलो तूटतां मेळने बहु विक्षेप थतो नथी पण ए वसंततिलकामां ए ज जातना फेरफारथी शरू थई प्रमिताक्षरा बने छे त्यां मेळ तद्दन बदलाई जाय छे. अने ते साथे ए पण स्मरणमां राखवुं जोईए के ज्यां गुरुसंततिथी यति आवश्यक बनती होय त्यां कोई पण गुरुनुं पाटन मेळने मोटी हानिरूप छे, जेनुं दृष्टान्त आपणे 'ऋतु ऋतुए जे०' पंक्तिमां जोयुं. अने आ पाटनमां पण, वसंततिलका अने शार्दूलविक्रीडित बन्नेमां, आद्य गुरुनुं ज पाटन थाय छे. वळी आ ज दृष्टान्तो उपरथी कही शकीए के एक गुरुनुं पाटन कदाच नभे पण एक ज पंक्तिमां बे गुरुनां पाटन कदी नभे नहीं.

. सामान्य रीते सममात्रकादेशमां गुरुना पाटनना ज वधारे प्रसंगो होय छे. बे लघुना गुरु बनवाना प्रसंगो ओछा ज होय छे. आ विकृतिथी कदी आसपासना संधिओ बदलावानो संभव नथी. ए विकृति ए संधिमां ज उत्पन्न थई एमां ज समाय छे. छतां अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तमां गुरुनुं एवुं मोटुं महत्त्व छे, के ए क्यांक पण अस्थाने आवी पडतां तेनाथी मेळनुं समतोलपणुं तरत विक्षिप्त थाय अने ए जातनो फेरफार पण लांबा करतां टूंका वृत्तना मेळने वधारे विक्षिप्त करे. अने ए बधुं कही रह्या पछी ए तो कहेवानुं रहे छे ज के आवा फेरफारो पारखवाने छन्दःसौष्ठवनी दृष्टि तो जोईए ज जेने माटे कोई नियमो आपी शकाता नथी.

आ सममात्रकादेशथी थती विकृतिओ एक ज छंदने लक्ष करी जोईए. श्री सांडेसराए शालिसूरिना विराटपर्वमांथी लांबा उतारा आप्या छे. तेमां घणा श्लोको रथोद्धता स्वागतामां छे. तेमां घणी जगाए आ जातनी विकृति थई छे. तत्कालीन भाषानी खासियतोने लीधे देखाती विकृतिओ बाद करीने शुद्ध सममात्रकादेशनी विकृतिओ ज जोईशुं.

देवि जां परभवी कुरुनाथि,
१ द्रूपदी सा गई प्रिय साथि;

* * *

पांच पांडव रह्या हिव नासी,
२ द्रूपदी रही थाइय दासी;

* * *

डूंबनइ घरि जल वहिउं हरिचंदइ,
३ भालडी मरण साधु मुकुंदइ;

* * *

पुत्र गांगलि महारिषि केरा,
४ दैव बांधव अछइ बहु तेरा.

वृत्तरचना पृ. १४–१५

अहीं दरेक कडीमां अकेक पंक्ति शुद्ध छे. १–२–४ कडीनी पहेली पंक्ति शुद्ध स्वागतानी छे, ते दरेकनी बीजी पंक्ति विकृतिवाळी छे. त्रीजी कडीमां १ली विकृतिवाळी छे, बीजी शुद्ध छे, अने तेने ज हुं सौथी पहेलां लउं छुं: त्रीजी कडीमां ए छे ते प्रमाणे वांचीए तो पठन अने न्यास नीचे प्रमाणे थाय

डुंबनि घरि जल वहिउं हरिचंदइ
ललल लल लल ललल लल गालल

उपान्त्य स्थाननो मात्र एक ज गुरु अहीं टकी रहे छे. सममात्रकादेशथी लघूकरण व्यापार आगळ लई जईए तो मेळ केवी रीते नाश पामे ते बताववानो आ सुन्दर दाखलो छे. पण अंत्य 'दइ' ते 'दे' जेवु ज उच्चारातुं हशे, एमां शंका रहेती नथी. एवो उच्चार करीए तो न्यास नीचे प्रमाणे थाय.

ललल लल लल ललल ललगागा

संधिना स्वरूपने स्थिर राखवानुं काम गुरु ज करे छे ते आथी ध्यानमां आवशे. आवो प्रवाह स्वागतानो छे, एटले कोई कुशल छंदोविद आने स्वागतामां पठी शके, नहितर आ एकली पंक्तिने स्वागतामां पठवी ए लगभग असाध्य छे. एक साथे आवता लघुओ बोलवामां पण फावता नथी. "जल वहयूं".. एम उच्चारीए तो मेळनो कंईक उद्धार थाय छे. पण ए मेळ सुन्दर तो बनतो ज नथी. अहीं गुरु मूकतां पण तेनी आगळ आठ जेटला लघुओ आवे छे, जे वृत्तोमां क्यांई आवता नथी. एटले लघूकरणव्यापार विशे आपणे कही शकीए के तेथी एक साथे बे संधिओना बधा लघुओ भेळा थई जवा जोईए नहीं. ४थी कडीनी पंक्तिमां पण लघूकरणव्यापार ज छे. तेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय छे.

गालगा ललल लल ललगागा

अहीं पण बीजा संधिने बांधनारो गुरु तूटतां बीजा अने त्रीजा संधिना लघुओ भेगा थई जाय छे. छतां पाठ, उपरनी पंक्ति जेटलो विनष्ट न लागतो होय तो कारण एटलुं ज छे के आद्य गालगाथी स्वागतानो प्रारंभ

थई जाय छे एटले पठन, उपर जेटलुं मुश्किल नथी बनतुं, बाकी सममात्र-कादेशना आ दाखला तो निषिद्ध ज गणवा जोईए. हवे बाकीना बे दाखला लईए. बन्ने गुरुकरणना दाखला छे.

१ गालगा गालगा ललगागा
२ गालगा लगागा ललगागा

बन्नेमां बीजा संधिना बे लघुओनी जगाए गुरु आवे छे. पहेलामां आटली टूंकी पंक्तिमां गालगानी द्विरुक्ति उद्वेगकर जणाय छे. साथे साथे ए पण कही शकीए के आ फेरफार रथोद्धतामां पण नहीं शोभे. कदाच वधारे खराब देखाशे. रथोद्धतानी पंक्ति आ फेरफारथी गालगा गालगा लगालगा थतां गालगानी वीप्सा उपरांत लगानां अनेक आवर्तनो तेमां काने अथडाय छे, जे असुन्दर देखाय छे. तेना करतां बीजी पंक्ति सारी छे. बीजीनो फेरफार पण रथोद्धतामां खराब ज देखाशे. गालगा लगागा लगालगा करतां पण लगा एटलो ज प्रधान रहे छे. आ फेरफार स्वागतामां एटलो खराब लागतो नथी. आपणे कही शकीए के स्वागताना प्रवाहमां आ पंक्ति चाली शके. कारण के तेमां संधिओ विविध जणाय छे अने कशानी पुनरावृत्ति थती जणाती नथी. गुरुना लघूकरणव्यापार संबंधी में कह्युं के बे संधिओना लघुओ भेगा थई जाय ए रीते ए लघूकरणव्यापार न थवो जोईए, कारण के एम थवाथी मेळना घटकरूप संधिओ नाश पामे छे, अने घणा लघुओनुं उच्चारण हमेशां क्लेशकर बने छे. गुरुकरण विषे एवुं कही शकाय तेम नथी. गुरुकरणव्यापार संधि बहार जई ज शके नहीं, एटले एमां संधि तद्दन लुप्त थवानो प्रश्न उपस्थित थतो नथी. तेम तेमां उच्चार वधारे मुश्केल बनतो नथी. पण आ व्यापार पण मेळने तो विक्षेपकारक थाय छे ज. वृत्तोमां गुरु एटलो बधो भारे अने उत्कट छे के, तेथी तरत मेळनुं समतोलपणुं विक्षिप्त थाय छे, तेनी स्निग्धता एकदम बगडे छे, अने छन्द बेडोळ लागे छे. एटले आ व्यापारने पण घणो ओछो अवकाश छे, बहु ज विरल प्रसंग छे. आवा दरेक प्रसंगे कविए समजवुं जोईए के ते मेळ बहार जाय छे, अने एम जवाने माटे काव्यमां कोई खास हेतु होय तो ज ते न्याय्य अथवा क्षम्य गणाय.

प्राचीन पिंगलोए आवी विकृतिओने भिन्न छन्दनुं नाम आप्युं छे तेने हुं अशास्त्रीय गणुं छुं. दाखला तरीके हेमचन्द्रे अने विरहांके बन्नेए रथोद्धतानी विकृतिओने भिन्नभिन्न नामो आपेलां छे. हेमचन्द्र तेने भूषणा नामनुं गलितक कहे छे, विरहांक विलासिनी कहे छे. बन्ने एनो न्यास मात्रा

छन्दो तरीके आपे छे, जे अशास्त्रीय छे, अने समजवामां मुश्केली ऊभी करे छे." न्यास आप्या पछी पण छंदनुं स्वरूप तो पठनथी ज समजवानुं रहे छे एटले हुं बन्नेनां लक्षणदृष्टान्तो नीचे आपुं छुं:—

पिच्छ पीवरमहापओहरा
कस्स कस्स न वयंस मणहरा।
विप्फुरन्तसुरचावकण्ठिआ
भूसणा नहसिरी उवट्ठिआ।।

छन्दोनु० पृ. ३१अ

अहीं पहेली त्रीजी अने चोथी पंक्ति शुद्ध रथोद्धतानी छे. बीजीमां विकृति एटली छे के तेना अंत्य संधि लगालगाने बदले अहीं ललललगा छे, अर्थात्

११. भूषणानुं लक्षण हेमचन्द्र "पौ तौ भूषणा।" एम आपे छे. तेना उपर टीका: "द्वौ पंचमात्रौ द्वौ त्रिमात्रौ यमितेंऽघ्रौ भूषणा नाम गलितकम्।" बे पंचमात्रको बे त्रिमात्रको, चरणोमां यमक, ए भूषणा नामनुं गलितक. (छंदोनु० पृ. ३१अ) आ रीते एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे अपाय:

भूषणा : ५+५+३+३

आ पद्धतिने हुं अशास्त्रीय एटला माटे कहुं छुं के आ छन्द वस्तुताए रथोद्धतानी विकृति छे, पण एनुं माप एवी रीते आप्युं छे के तेथी रथोद्धतानुं स्वरूप सचवाई शके नहीं. उपरना मापमां जे मात्रा संख्या मूकी छे ते रथोद्धताना संधिओनी छे. ए रीते मारी संधिपद्धतिने आ उत्थापनिकानुं हुं समर्थन पण गणुं:—

रथोद्धता: गालगा लललगा लगा लगा

पण बे पंचमात्रक कहेवाथी तो लगागा गागाल गाललल एम अनेक संधिने पहेलां बे स्थाने प्रसंग मळे, अने ए संधिओथी रथोद्धताना मेळने जरा पण अवकाश मळतो नथी. दाखला तरीके

लगागा गागाल गाल लगा

करीए तो रथोद्धतानो तो शुं पण कोई पण जातनो मेळ रहेतो नथी. आ करतां विरहांके आपेलुं लक्षण रथोद्धताना मेळने वधारे संरक्षक छे.

बे गुर्वन्त पंचमात्रको+लगाल+गा

पंचमात्रकोने गुर्वन्त कह्या अने अंत्य चार अक्षरोनुं लगात्मक रूप आप्युं एटले रथोद्धताना संधिओ बंधाई गया. ए एम पण बतावे छे के गुरुओ ज संधिओनुं रूप बांधनारा छे. पण एकंदर आ मात्रासंख्या आपवानी पद्धति वृत्तो माटे अपर्याप्त तेम ज भ्रामक छे.

બીજા સ્થાનના ગુરુની જગાએ બે લઘુ મૂક્યા છે. એમ કરવાથી રથોદ્ધતાનો મેળ શિથિલ થાય છે. એટલું જ નહીં, પણ ધ્યાનમાં આવ્યું હશે કે એ વિકૃત સંધિનું સ્વરૂપ એવું છે કે એને સ્વાગતાનો પણ કહી શકાય. અહીં એ પંક્તિ રથોદ્ધતામાં આવે છે એટલે એને આપણે રથોદ્ધતાની વિકૃતિ ગણીએ, પણ જો એ સ્વાગતામાં આવી હોત તો એને સ્વાગતાની વિકૃતિ ગણત. આ ઉપરથી સ્પષ્ટ થશે કે છન્દોનું સ્વરૂપ તેના સંધિઓ ઉપર આધાર રાખે છે અને લઘૂકરણવ્યાપાર સંધિઓની વિશિષ્ટતાનો નાશ કરે છે. અલબત્ત ગુરૂકરણવ્યાપાર પણ મેળમાં વિક્ષેપ આણે છે પણ એની પ્રક્રિયા સંધિઓ સોંસરી ચાલી શકતી નથી, એનો વ્યાપાર સંધિઓની અંદર જ પુરાઈ રહે છે, પણ લઘૂકરણવ્યાપાર અનેક સંધિઓ સોંસરો જઈ આખા છંદના મેળનો નાશ કરે છે. વૃત્તવિકાસમાં આપણે ઘણી જગાએ લઘૂકરણને જ પ્રવૃત્ત થતો જોયો પણ એ જ વ્યાપાર અંતે વૃત્તના બંધનો નાશ કરે છે. હવે વિરહાંકના વિલાસિની છંદનો દાખલો લઈએ:

मणिविरामवाणाण मज्झओ
घित्तुआण दो दे शिलीमुखे ।
पत्थिवं च तइअं विलासिणी–
पाअअम्मि फुडणेउरिल्लिए ॥
वृत्तजातिसमुच्चय ४, १५

આ શ્લોકમાં ઉત્તરાર્ધ આખું શુદ્ધ રથોદ્ધતાનું છે. પૂર્વાર્ધમાં પણ અંત્યસંધિ લગાલગા શુદ્ધ રૂપે રહેલો છે. પહેલી પંક્તિમાં પહેલો સંધિ ગાલગા જોઈએ તેને બદલે લલલગા છે, એટલું જ પહેલા ગુરુનું લઘૂકરણ થયું છે. એ જ રથોદ્ધતાનો બીજો સંધિ છે, પણ તે ત્યાં બેવડાતો નથી કારણ કે બીજા સંધિમાં ગુરૂકરણ થઈ એ લગાગા બન્યો છે. બીજી પંક્તિમાં પણ એ બીજો સંધિ લગાગા જ છે, જો કે ત્યાં પહેલો સંધિ પોતાના મૂળ રૂપ ગાલગામાં જ રહ્યો છે. રથોદ્ધતામાં આટલો જ ફેર થયો છે. વિકૃતિ છતાં ક્યાંઈ સંધિ ભાંગતો નથી એ સ્પષ્ટ છે. વિકૃતિ એવી નથી કે રથોદ્ધતાના મુખ્ય મેળનો નાશ કરે, અને તેથી આ વિકૃતિને પણ જુદું નામ આપવાની જરૂર ઊભી થતી નથી.

પરંપરાથી મળેલાં પિંગળોમાં અણવપરાયા છંદોનું અને અલ્પ મહત્ત્વની વિકૃતિઓનું એટલું બધું ભારણ થયું છે કે એ નકામાં નામોની સાફસૂફી કરવાની જરૂર છે. અને તેમ છતાં જ્યાં નવો અને સ્વતંત્ર મેળ જણાતો હોય ત્યાં નવું નામ આવશ્યક છે એ ધ્યાનમાં રાખવું જોઈએ. આ રીતે હું પ્રિયંવદાને સ્વતંત્ર છંદ ન ગણું. પણ રથોદ્ધતા અને સ્વાગતા સ્વતંત્ર છંદો છે જ. તેમ જ પ્રમિતાક્ષરા, મંજુભાષિણી, કળહંસ એ બધાને સ્વતંત્ર છંદો ગણું. કારણકે

जो के ए बधाना संबंधो वसंततिलका साथे बतावी शकाय छे छतां तेमांना दरेकनो मेळ स्वतंत्र छे. पण जे छंदो सममात्रकादेशव्यापारथी थता होय, अथवा एकाद मात्राना विवर्धन के खंडनथी थोडा बदलाता होय, पण कोई नवो मेळ व्यकत न करता होय, मात्रमूळ मेळनी विकृति ज बतावता होय, बे मूळनी साथे उपजाति के मिश्रण तरीके ज आवी शकता होय पण जेमनामां स्वतंत्र ऊभा रहेवा जेटलुं जीवनसामर्थ्य न होय, एवाने जुदां जुदां नामो आपवानी जरूर नथी. अने तेथी में आ ग्रन्थमां बहु ओछां नामो वापर्यां छे.

अहीं सुधी जे कंई मेळ विशे कह्युं ते उपरथी जणाशे के अनुष्टुपने एक ज वृत्त के छंद गणतां तेनो आ रीते खुलासो थई शकतो नथी. तेमां अमुक अमुक अक्षरोनूं लघु गुरु स्वरूप नियत न होवाथी उपरनी रीते तेना संधिओ पाडी शकाता नथी. पण बीजी एक रीते संधिओ पाडी शकाय. अनुष्टुपना जेटला विकल्पो होय ते दरेकना संधिओ जुदा जुदा नियत करी बतावी शकाय. मारुं वक्तव्य स्पष्ट करवा श्री उमाशंकरना 'रति-मदन' काव्यमांथी थोडा अनुष्टुपो नीचे उतारुं छुं:

जोतो'ती: सिंधु उल्लासे ऊछळी ऊछळी जतो,
वेळुमां जळनी रेखा मृदुतामयि आंकतो. १

परंतु पूछ तो एने, खडको काळमींढ त्यां
ऊभा ते किंचिते भींज्या, झींकी शिर मथ्यो छतां! २

लीलोतरी-लचंताने कहे मित्र वसंतने
के कैलास तणे भाले विशाळे एक, जो बने, ३ १७०

स्फुरावी तो जुए मंजु म्होरंती वेल माधवी,
शिवने हृदये लीला तारीये एवि छे थवी. ४

स्वर्गंगा शीकरे इन्द्रचाप दीठुं जगे कहे,
के शुचि शिवहैये तुं रमणा रागनी चहे? ५

प्राचीना, पृ. ६७–६८

आ श्लोकोने आपणे स्वीकारेला संधिओमां न्यासवा होय तो नीचे प्रमाणे न्यास थाय:

गागागागा लगागागा गालगागा लगालगा
गालगा ललगा गागा ललगा ललगा लगा १

लगालगा लगागागा ललगागा लगालगा
गागागागा लगागागा गागा ललगा लगा २

गागालगा लगागागा लगागा ललगा लगा
गागागा ललगा गागा लगागागा लगालगा ३

लगागागा लगागागा गालगागा लगालगा
ललगा ललगा गागा गागागागा लगालगा ४

गागागागा लगागागा गालगागा लगालगा
गालगा ललगा गागा ललगागा लगालगा ५

अहीं न्यास मूकतां पादान्त ह्रस्वने गुरु करी मूक्यो छे, अने छेल्ली पंक्तिमां 'शुचि'नो 'चि' गुरु गण्यो छे कारण के अनुष्टुपमां बीजो अने त्रीजो बन्ने अक्षरो लघु आवी शकता नथी, एटलुं न्यासपद्धति विशे कहेवानुं. हवे न्यासमां जे जे संधि प्रतीत थाय छे ते सर्व पूर्वे आवी गयेला जणाशे."[1] पण आटला बधा भिन्न छंदोने एक नाम आपी शकाय ? अनुष्टुपनुं बहुलतम गुरुवाळुं रूप

गागागागा लगागागा गागागागा लगालगा

अने बहुलतम लघुवाळुं रूप

ललगा ललगा गागा ललगा ललगा लगा

---

१२. आम कहुं छुं पण ते माटे जरा सार्थक तो छुं:

तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमत्तरः।
दिलीप इति राजेन्दुरिन्दुः क्षीरनिधाविव॥

रघुवंश, १ १२

तेनो न्यास:

लगा लगा गाललगा लगागा गालगा लगा
लगा ललगा गागा गागागा ललगा लगा

प्रथम चरणमां गाललगा आवे छे तेने आपणे क्यांय स्वीकार्यो नथी. अलबत्त एने परिहरवा लगा लगागा ललगा एम संधिओ छूटा करी शकाय, पण संधिओना संस्कारो पहेलां जणाव्या तेवा जणाय छे. तेनी सामे एम कही शकाय के ए प्रतीतिनुं कारण पंक्तिमां बे चतुरक्षर शब्दो छे ए छे. ए खरुं, छतां संधिओना आ पृथक्करण अने न्यासथी संतोष थतो नथी एटलुं नोंधवुं जोईए.

ए बे वच्चे अनेक संधिओ आवे छे—आवी शके, ए बधाने एक ज अनुष्टुप नाम आपी शकाय? मिश्रोपजातिनुं दृष्टान्त अहीं काम आवी शके? मिश्रोपजाति प्रवाहमां केटलांकेटलां वृत्तो आवी जाय छे! ए बधांने आपणे एक ज उपजाति के मिश्रोपजातिनुं नाम आपीए छीए. नाम खोटासाचा विषे प्रश्न नथी. प्रश्न ए छे के ए छन्दःप्रवाहने आपणे स्वीकारीए छीए, एने स्वच्छन्द गणता नथी, तो आने पण एक प्रवाह तरीके स्वीकारी न शकीए? आ एवो प्रवाह छे के जेमां व्यक्तिनां जुदां जुदां नामो पिंगले पाड्यां नहीं. मात्र मिश्र प्रवाहने ज एक नाम आप्युं, अने ए रीते अनुष्टुपने शुद्ध संस्कृत वृत्तप्रवाहमां स्थान आपी न शकीए? अलबत्त त्यारे पण एने अर्धसम वृत्त तो गणवुं ज पडे कारण के एनो उपसंहार लगालगा एवा स्थिर संधिथी समचरणमां ज थाय छे. पण आ स्थिति संतोषकारक लागती नथी. मिश्रोपजातिमां आपणे स्वीकारीए छीए के तेमां छंदो बदलाय छे, अर्थात् तेमां आवता भिन्न भिन्न छन्दोने आपणे स्वतंत्र छंद तरीके स्वीकारीए छीए. मात्र एटलुं विशेष के एना कुशल मिश्रणथी एक प्रवाह चाली शके छे एम आपणे कहीए छीए. प्रवाहने एक नाम आपवाथी दरेक पंक्तिनो छंद एक ज छे एवुं निष्पन्न थतुं नथी. अने मिश्रणमां त्रिष्टुभथी मांडीने पृथ्वी सुधीना प्रयोगो थया छे. अर्थात् आ मिश्रणमां जुदा वृत्तने जुदुं वृत्त ज आपणे गणीए छीए. अनुष्टुपमां आपणे एम गणता नथी. तेनो पठनसंस्कार एवो नथी. एमां दरेक पंक्ति अनुष्टुपनी ज विषम के सम पंक्ति छे. तो एक ज स्थाने आवतां भिन्नभिन्न लगुगुरुगुच्छो क्या सिद्धान्तथी आवी शके छे, अने केवी रीते ए प्रश्न रहे छे ज. आ बधां कारणोने लीधे आ अनुष्टुपने आपणे अत्यार सुधी स्वीकारेलां वृत्तोमां स्थान आपी शकीए नहीं.

आपणे मेळ संबंधी सामान्य रूपे कंईक कही वृत्तोना आ विभागनो उपसंहार करीए ते पहेलां एक वात तरफ लक्ष आपवुं जोईए. में अहीं कह्युं के संस्कृत वृत्तोमां बे मोटां कुटुंबो छे, एक इन्द्रवज्रानुं अने बीजुं शालिनीनुं. बन्ने वेदकालना त्रैष्टुभो छे. बन्नेमांथी अनेक प्रकारनां नवां वृत्तो विस्तर्यां छे. ए बधां में जे क्रममां तेमनो विस्तार बताव्यो ए ज क्रमे विकस्यां छे एम कहेवानो उद्देश नथी. मारी दृष्टि अहीं पौर्वापर्यनी नथी, पण वृत्तोनी मेळनी दृष्टिए सरखामणी करतां तेमना बंधोमां जे संबंध देखाय छे ते बताववानी छे. ते उपरांत अहीं मारे ए कहेवुं छे के आ बधो विकास वृत्तोने लघुबाहुल्य तरफ लई जनारो छे. इन्द्रवज्रा अने शालिनी बन्ने गुरुप्रधान वृत्तो छे. तेमना कुटुंबनां बीजां वृत्तोने आ दृष्टिथी जोतां बधां धीमे धीमे वधारे वधारे लघुबाहुल्य तरफ जतां जणाशे. अहीं ए बधां तेना कुल अक्षरो अने लघुगुरुनी संख्या मूकी बतावुं छुं:

वृत्त	कुल अक्षरसंख्या	गुरुसंख्या	लघुसंख्या
इन्द्रवज्रा	११	७	४
उपेन्द्रवज्रा	११	६	५
इंद्रवंशा	१२	७	५
वंशस्थ	१२	६	६
वसंततिलका	१४	७	७
रथोद्धता	११	५	६
स्वागता	११	५	६
प्रियंवदा	१२	४	८
चन्द्रवर्त्म	१२	४	८
चपला	११	५	६
प्रमिताक्षरा	१२	४	८
मंजुभाषिणी	१३	५	८
द्रुतविलंबित	१२	४	८

शालिनी	११	९	२
वैश्वदेवी	१२	१०	२
वातोर्मि	११	८	३
मंदाक्रान्ता	१७	१०	७
स्रग्धरा	२१	१२	९
मालिनी	१५	७	८
हरिणी	१७	८	९
सुवदना	२०	१०	१०

बाकी थोडां ज रह्यां ते जोई लईए.

पृथ्वी	१७	७	१०
नर्दटक	१७	५	१२
शिखरिणी	१७	८	९
शार्दूलविक्रीडित	१९	११	८
प्रहर्षिणी	१३	७	६
रुचिरा	१३	५	८

अर्धसमवृत्तो पण आमां अपवादरूप नथी. ए छंदोना प्राचीन स्वरूपना मात्रात्मक भागमां एकसाथे गुरुओ आवी शकता. पण छेवटे एमनां जे लगात्मक रूपो

संस्कृत साहित्यमां नियत थयां ते बधां लघुप्रधान ज थयां. वैतालीयनुं गुरुबहुलतम रूप वैसारी छे. तेमां सम विषम पादोना गुरुलघुनी संख्या नीचे प्रमाणे छे.

		कुल	गुरु	लघु
वैसारी	विषम	९	५	४
	सम	१०	६	४

तेनुं एक रूप वियोगिनी छे.

वियोगिनी	विषम	१०	४	६
	सम	११	५	६

तेनुं लघुबहुलतम रूप अपरवक्त्र छे.

अपरवक्त्र	विषम	११	३	८
	सम	१२	४	८

हवे औपच्छन्दसिकनो जुदो विचार करतो नथी. पण आटला समीक्षण उपरथी स्पष्ट थाय छे के वृत्तोनो विकास गुरुबहुलतामांथी लघुबहुलता तरफ थयो छे. गुरुबहुल वृत्तो प्रौढि अने गौरवने व्यक्त करवा समर्थ छे, लघुबहुल वृत्तो मार्दव अने लालित्यने माटे उचित छे. आ दृष्टिए कही शकीए के वृत्तविकासमां मार्दव अने लालित्यनी छन्दसामग्री वधी छे. वळी ए पण कही शकीए के जेमां बन्ने शक्तिओ सरखी होय एवां अयतिक वृत्तो त्रैष्टुभ उपजाति अने वसंततिलका छे, अने तेनी नजीकमां ज पृथ्वीने मूकी शकीए. माटे ज लांबा वृत्तान्तकथनने माटे आ वृत्तो वधारे सगवडवाळां नीवडे. सयतिक वृत्तोने मात्र आ दृष्टिए जोई शकाय नहीं कारण के तेमां लघुओ अने गुरुओ सळंग सतत आवे छे, अने पंक्तिनी लंबाईनुं एक नवुं तत्त्व अंदर उमेराय छे. ए रीति ए वधारे अटपटां छे. आ लघुगुरुसंतति शार्दूलविक्रीडितमां टूंकामां टूंकी आवे छे एटलुं ज विशेष नोंधवा जेवुं छे.

आ प्रकरणोमां आपेला चरणना आ लांबा पृथक्करणथी स्पष्ट थयुं हशे के चरणोना आ अंतिम घटको ते संधिओ छे. आ संधिओ, बधा, पठनमां मेळना भिन्न अवयवो होवानो संस्कार पाडे छे. ते बधा ज गुर्वन्त होय छे अने भिन्नभिन्न संख्याना गुरुओ, के लघुओना बनेला होय छे. आ लघुओ अने गुरुओ ते वृत्तपिंगलनां मूळभूत तत्त्वो छे. ते परस्पर अप्रमेय छे. छन्दोजगतनी रचनामां सौथी पहेलां आ लघुओ गुरुओना संधिओ बने छे. पछी ए संधिओथी ज, ए संधिओना भिन्नभिन्न विन्यासथी भिन्नभिन्न छंदो बने छे. अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोनो मेळ लघुगुरुओना नियतक्रमविन्यासथी थाय छे

એ ખરું છે પણ વિન્યાસમાં એ લઘુગુરુઓ અક્કેક ભિન્નભિન્ન અલગ ઘટકો નથી હોતા પણ તે પ્રથમ સંધિઓમાં નિબદ્ધ થયેલા હોય છે, અને છન્દોની સર્વ રચના આ સંધિઓના પ્રપંચની છે. નવા છંદો રચાતાં પણ આ સંધિઓ જ ગતિમાન થઈ નવરચના સર્જે છે. નૈયાયિકોના મતે જેમ પરમાણુઓમાંથી સીધેસીધા પદાર્થો બનતા નથી, પણ તેના પ્રથમ દ્વ્યણુકો ત્રિસરેણુકો બને છે, અને પછી તેના સંયોગથી પદાર્થો બને છે, તેમ અહીં પ્રથમ લઘુગુરુઓના સંધિઓ બને છે અને પછી તેમના સંયોગથી ભિન્નભિન્ન છંદોરચના બને છે. અથવા અર્વાચીન રસાયનશાસ્ત્ર પ્રમાણે જેમ પરમાણુ, પ્રોટોન અને ભિન્નભિન્ન સંખ્યાનાં ઇલેક્ટ્રોનનું બનેલું હોય છે, અને પછી એ પરમાણુઓના રાસાયાનિક સંયોગોથી ભિન્નભિન્ન પદાર્થો બને છે તેમ અહીં પ્રથમ ઓછામાં ઓછા એક ગુરુ અને બીજા ગુરુઓ કે લઘુગુરુઓ અમુક રીતે ગોઠવાઈ તેના સંધિઓ બને છે. પરમાણુની રચનામાં એકાદ ઇલેક્ટ્રોન વધતાં કે ઘટતાં જેમ પરમાણુનું આખું સ્વરૂપ બદલાઈ જાય છે, તેમ આ સંધિઓમાંથી એકાદ લઘુ કે ગુરુ ઘટતાં છંદનું સ્વરૂપ બદલાઈ જાય છે. સંધિઓની ગોઠવણીનો ક્રમ બદલાતાં પણ છંદનું સ્વરૂપ બદલાઈ જાય છે. આ સંધિઓ આટલા જ લઘુગુરુના આવા ક્રમથી જ કેમ બંધાયા, અને તેના અમુક રીતના વિન્યાસથી છન્દોનો મેળ કેમ બન્યો અન્યથા કેમ નથી બનતો તેનો ખુલાસો હું કરી શકતો નથી. એ સંબંધી મારે એટલું જ કહેવાનું છે કે આટલા સંધિઓના આટલા ન્યાસથી જ મેળ બની શકે છે, એવી છન્દ:સૌષ્ઠવની કોઈ અજ્ઞાત આવશ્યકતા છે.

અંગ્રેજી ફારસી અને માત્રામેળી છંદોનો મેળ, જેની સાથે આપણે સાધારણ રીતે પરિચિત છીએ, તેના કરતાં આ મેળ બહુ વિલક્ષણ છે. ઉપર કહ્યા તે બધા મેળો અમુક સંધિનાં આવર્તનોથી નિષ્પન્ન થાય છે. અંગ્રેજીનો મેળ ઇયામ્બિક ટ્રોકિક કે એવા સંધિનાં અમુક અવર્તનોથી સિદ્ધ થાય છે. ફારસી ગઝલોનો મેળ મફાઈલુન્ કે એવા એક કે વધારે સંધિઓનાં આવર્તનોથી સિદ્ધ થાય છે. આપણી માત્રામેળ રચનાનું પણ એમ જ છે. પણ ઉપર કહ્યાં તે વૃત્તોનો મેળ એવા કોઈ આવર્તનથી સિદ્ધ થતો નથી, પણ લઘુગુરુના સંધિઓની ગોઠવણથી સિદ્ધ થાય છે. એ રીતે એ, જગતના આપણને પરિચિત મોટાભાગની પદ્યરચનાથી ભિન્ન પ્રકારનો છે, અને આવર્તનો ઉપર આધાર નહીં રાખતો હોઈ વિલક્ષણ છે, ગૂઢ છે, સંવાદના કોઈ ગૂઢ નિયમને વશ વર્તે છે, અને હું જાણું છું ત્યાં સુધી બીજા કોઈ સાહિત્યની પદ્યરચનાની સંધિઓ કરતાં આની સંધિસામગ્રી ઘણી મોટી અને ઘણા મોટા વૈવિધ્યવાળી છે. સંસ્કૃત વૃત્તોની અસર એ રીતે અનન્ય છે. સંસ્કૃત વૃત્તોનું ભાષાંતર માત્રામેળી છંદોમાં ઉતારતાં જે અસંતોષ, જે ઊણપ રહી જાય છે તેનું એક વિશેષ કારણ આ છંદની અનન્યતા છે.

आ छंदो आज सुधी गवाता, ए खरुं पण ते तालथी गवाता नहीं. मात्रामेळ छंदोमां आपणे आगळ जोईशुं तेम, संधिना स्वरूपने संगीतना ताल साथे संबंध छे. एवो ताल साथेनो संबंध आ वृत्तोने नथी. 'भरतनाट्यशास्त्र'मां आ वृत्तोना पठन अने गान संबंधी वर्णन मळी आवे छे. अने तेमां तालनो उल्लेख नथी.[13] अने अर्वाचीन छन्दविवेचको पण आ बाबतमां संमत छे

---

१३. 'भरतनाट्यशास्त्र'मां पाठ्यगुणो नीचे प्रमाणे गणाव्या छे: "पाठ्यगुणा निदानीं वक्ष्यामः। तद्यथा सप्तस्वराः, त्रीणि स्थानानि, चत्वारो वर्णाः, द्विविधा काकुः, षडलंकाराः, षडंगानीति।" (भ. ना. गा. वॉ. २, पृ. ३८५.) सप्त स्वरो, त्रण स्थान, चार वर्ण, बे प्रकारनी काकु, छ अलंकारो, छ अंगो. तेमां सप्त स्वरो ते संगीतना प्रसिद्ध सा रे ग म वगेरे सप्त स्वरो छे (एजन पृ. ३८६). त्रण स्थानो ते उर, कंठ अने शिर छे. (एजन. पृ. ३८७) चार वर्णो ते उदात्त अनुदात्त स्वरित अने कंपित छे (एजन पृ. ३९०). बे प्रकारनी काकु ते साकांक्ष अने निराकांक्ष एम बे प्रकारनी छे (एजन पृ. ३९१). छ अलंकारो ते उच्च, दीप्त, मन्द्र, नीच, द्रुत अने विलंबित छे (एजन पृ. ३९२). छ अंगो ते विच्छेद, अर्पण, विसर्ग, अनुबंध दीपन अने प्रशमन (एजन पृ. ३९६). आ बधा शब्दोना अर्थो विवरण अने प्रयोग विना पूरा समजाय एवा नथी. पण तेनो गमे ते अर्थ होय ते छतां आमां ताल आवतो नथी एटलुं अवश्य कही शकाय. चौखम्बानी आवृत्तिमां (अध्याय १९मो. पृ. २२१थी पृ. २२४) तथा निर्णयसागरनी आवृत्तिमां (अध्याय १७मो पृ. २८०थी २८४) पाठ्यना आ ज गुणो कहेला छे. तेम छतां आ बे आवृत्तिओमां अध्यायने अंते आवता "एवमेतत्स्वरकृतं कलाताललयान्वितम्। दशरूपविधाने तु पाठ्यं योज्यं प्रयोक्तृभिः।" आ श्लोकमां तालनो उल्लेख आवे छे पण ते पाठदोष छे. ए स्थानना गायकवाड ओरिएन्टल सिरीझना पुस्तकमां (पृ. ४०४) 'कलाकाललयान्वितम्' पाठ छे ते खरो समजवो जोईए. अने ए ज अध्यायमां आ ज संबंधमां आगळ कलाकालनो उल्लेख त्रणेय पुस्तकोमां आवे छे. "विषादे च वितर्के च प्रश्नेऽयामर्ष एव च। कलाकाल प्रमाणेन पाठ्यं कार्यं प्रयोक्तृभिः।" (श्लोक १४१, पृ. ४०२) अने आ ज श्लोक थोडा पाठान्तर साथे चौखम्बा आवृत्तिमां (श्लोक ६९, पृ. २२५) अने कशा पण पाठभेद विना निर्णयसागरमां (श्लोक १२८, पृ. २८५) मळी आवे छे. अहीं जे कंई कहेलुं छे ते छन्दना पठन विशे नथी, पण भावप्रदर्शन विशे छे ए स्पष्ट छे, एटले संदर्भ जोतां ताल शब्दने स्थान नथी एटलुं अवश्य कही शकीए.

के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळवृत्तो ताल साथे गावानां नथी. नरसिंहराव गुजरातीमां वपराता छंदो विशे बोलतां मात्र हरिगीत जेवा छंदोने ज तालबद्ध कहे छे. मालिनी मंदाक्रान्ता जेवाने नहीं. (Gujarati Language and Literature vol II, p. 245) के. ह. ध्रुव पद्यरचनाना भिन्नभिन्न प्रकारो विशे बोलतां कहे छे: "पृथ्वी, शिखरिणी, स्रग्धरा आदि वृत्त लघुगुरु रूपनी संवादी योजना द्वारा ऊपजती नादलहरीने लीधे गेय छे. तोटक, भुजंगप्रयात, पंचचामर आदि आवृत्त संधिना रूपबंध विशेषमां तालबद्ध होई गेय ज छे. . . . " (सा. वि. १, ११७) अर्थात् वृत्तो ताल साथे गवातां नथी. के. ह. ध्रुवना ज भाष्यकार जेवा बर्वे आ बाबत विस्तारथी अने दाखलादलीलथी स्पष्ट करे छे." अलबत्त आ वृत्तोने पण तालबद्ध करी बताववानो प्रयत्न थयो छे, अने ए प्रयत्न मौलाबक्ष घीसेखां जेवा संगीतकोविदने हाथे वडोदराना महाराजा सयाजीरावना आश्रये पुस्तकरूप पामेल होवाथी एने प्रतिष्ठा पण मळी छे. पण ए शास्त्रीय पद्धति नथी. दाखला तरीके ए प्रयत्नमां आवृत्तसंधि अने अनावृत्तसंधि छन्दोनो भेद गण्यो नथी अने तेमां यति विराम के विलम्बन रूपे आवी शकतो नथी."

---

१४. . . . "आ संधिओ जणाव्या, तेमांथी कोई पण एक ज संधिनी बे अथवा ते करतां घणी आवृत्तिओथी जो वृत्त बनाववामां आवे तो ते वृत्त गेय एटले गायनने अनुकूळ थशे. पण जो जुदा जुदा अनुवादी [=संवादी] संधिओ लई तेनुं वृत्त बनावीए तो ते पाठ्य एटले के श्लोकनी माफक बोलातुं वृत्त थशे, केमके एक ज संधि पुनः पुनः अनेक वार आवे तो, गायन पक्षे तालना सरखी मात्राना समूहो थता होवाथी कोई पण चोक्कस तालमां गाई शकवानी अनुकूळता थशे. परंतु पाठ्यवृत्तमां एक ज संधि, बे करतां वधारे वार आवर्तन पामतो नहीं होवाथी गायन पक्षे कोई एक मुकरर ताल थतो नहि होवाथी पाठ्य वृत्त ते मात्र पाठ (पठन) करवानी रीत प्रमाणे बोलाशे." . . . . (गायनवादन पाठमाळा पु. १. वि. ३. छंदोगीतविनोद पृ. ११०)

१५. आनो सचोट दाखलो प्रहर्षिणी छे. प्रहर्षिणीनी मात्रा गणतां वीस थाय छे. तेने मौलाबक्षे १० मात्रानां तालमां मूकी बतावी छे, नीचे प्रमाणे:

राग शहना, ताल चतुश्रजाती प्रतिमठताल विलंबकाल मात्रा १०

री री री रि ग । म प मा ग री रि । गा सा
२ २ २   २   २   २ २

प्रहर्षिणीनी ज पंक्ति तेमणे संगीतना स्वरोमां मूकी छे, अने जे स्वर बे मात्रानो करवानो छे तेनी नीचे में २नो अंक लखेलो छे. आ रीते प्रथम तालमां

अने ए प्रयत्न, वृत्त संबंधी खोटा ख्यालथी उपस्थित थयो जणाय छे. वृत्त संपूर्ण रीते संगीतनी रीते तालबद्ध न गवाय एमां जाणे कंईक आपणा छंदोनी अपूर्णता होय, नामोशी होय एवी समजणथी थयो जणाय छे. ए संबंधमां तो बर्वे कहे छे ते योग्य जणाय छे के "पाठ्य अने गेय ए बेनो मार्ग प्राचीन काळथी ज भिन्नभिन्नपणे प्रवर्तती आवेलो जणाय छे. आ उपर लक्ष न आपतां घणा संगीतज्ञोनो एवो मत छे के, गमे तेवा वृत्तने गमे ते रागतालथी गाई शकाय छे, तो पछी पाठ्य श्लोकने माटे आवो निर्बंध शो? आ अभिप्राय धरावनारामां काव्य, पिंगल, शब्दनृत्यनो संवाद अने ए बधानो संगीत साथे केवा योगथी संयोग करवामां आवे तो कर्णसंवादना रसमां क्षति थशे के नहीं, ए विशेनुं सूक्ष्मज्ञान न होवुं जोईए; एटलुं ज टूंकामां कही शकाशे." (गायनवादन पाठमाळा पृ. ११०)

पण तालबद्ध न गाई शकाय एम कहेता साथे आ वृत्तो पण गावानां छे एवो अभिप्राय तो प्रवर्ते ज छे. बर्वे पण एमना आ पुस्तकमां दरेक छंद परंपरा प्रमाणे केवी रीते गवाय छे तेनुं स्वरांकन आपे छे. अने उपर प्रमाणे कहेतां छेल्ले उपसंहारमां कहे छे: "भमराओनो गुंजारव बे के त्रण स्वरमां थाय छे तेम पाठ्यवृत्तोनुं गुंजन बे त्रण चार के पांच स्वर सुधी पण करी शकाशे." (एजन)

अलबत्त अत्यार सुधीनी परंपरा गावानी छे. अने श्लोकबद्ध पद्यो प्राचीन रीते के तेमां थोडो फेरफार करीने गाई शकाय तेनी ना नथी. पण अर्वाचीन पिंगलने आ संबंधमां नवुं कहेवानुं ए छे के आ वृत्तोनो संगीतना स्वरो विना पण पाठ करी शकाय छे. वृत्तोनी आ पठन-क्षमता ए छन्दोविकासमां आवती अद्यतन दृष्टि छे. कलाओनो इतिहास जोतां कलाओ प्रथमावस्थामां संकीर्ण रूपमां ज मळी आवे छे अने धीमे धीमे विकसती विकसती ज भिन्न थई भिन्नभिन्न प्रस्थान करे छे. तेम काव्य आज सुधी संगीत साथे संश्लिष्ट हतुं, ते आ युगमां स्वतंत्र थाय छे, ए मात्र शब्द अने अर्थनी ज कला रहे छे, अने आ वृत्तोमां संगीतथी स्वतंत्र पोतानो मेळ प्रगट करे छे. तेने बे त्रण संगीतना स्वरोनी पण आवश्यकता रहेती नथी, आवश्यकता रहे छे मात्र अर्थानुसारी छन्दोबद्ध पठननी. काव्य जेम नाट्यकला साथे सखीभाव राखे छे, अने तेथी जेम अद्भुत कलाकृतिओने प्रगट करे छे तेम ते संगीत साथे

अहीं प्रहर्षिणीना पहेला पांच अक्षरो आवे छे. अने त्यां त्रण अक्षरो पछी यतिने अवकाश नथी, यति न ज होय ए रीते पहेला पांच अक्षरो त्यां गावाना आवे छे. (संगीतानुसार छंदोमंजरी, पृ. ३६)

પણ સખીભાવ રાખતું આવ્યું છે અને રાખશે પણ એ ઇચ્છામૂલક સાહચર્ય હશે, કાવ્યના પોતાના અસ્તિત્વ માટે એક આવશ્યક અંગ તરીકે નહીં.

અને આ સ્વાતંત્ર્યથી કાવ્યે નવી જ પ્રગતિ કરી છે તે સર્વ કાવ્યરસજ્ઞો સમજી શકશે. અર્વાચીન યુગમાં સ્વ. કાન્તે એક જ છન્દનો નવો શ્લોકબંધ (ખંડશિખરિણી) આપ્યો અને એક જ કાવ્યમાં ભાવને અનુકૂલ રીતે છંદો બદલવાની શૈલી આપણને આપી. સદ્‌ગત નરસિંહરાવે સંવાદી પણ ભિન્નભિન્ન છંદોનાં ચરણોનો નવો શ્લોકબંધ આપ્યો, અને તેમાંથી અનેક છંદોનાં ચરણોના ચાર કે વધારે પંક્તિઓના શ્લોકબંધો થયા. પ્રો. બ. ક. ઠાકોરે આપણને અનેક છન્દોની પંક્તિઓના થતા છન્દઃપ્રવાહોનો પ્રયોગ કરી બતાવ્યો અને તેથી કાવ્યને વળી નવી મુક્તિ મળી, અને કાવ્યે અનેક છન્દોના નવા પ્રયોગ કરી બતાવ્યા. એમાં કવિને જૂના નવા છન્દોનું એક બહુ મોટું ક્ષેત્ર મળે છે, તે દરેક વાક્યભંગીને અનુકૂળ છન્દ પસંદ કરી શકે છે કે નવો યોજી શકે છે, અને તેથી કાવ્યભાવને શબ્દદેહે લાંબા ફલક ઉપર અર્થાનુસારી નર્તન કરવાને અપૂર્વ અવકાશ અને પ્રસંગ મળે છે. છન્દના આ વિકાસમાં ગુજરાતી કાવ્યે સાત્ત્વિક અભિમાન લેવા જેવો ફાળો આપ્યો છે, એમ કહેવામાં સ્વભાષાસાહિત્યના અભિમાનજન્ય કોઈ અત્યુક્તિ નથી થઈ જતી એમ માનું છું.

८

मात्रामेळ के जातिछंदो : परंपरागत स्वरूप

बीजा प्रकरणमां छन्दोना प्रकारोनी चर्चा करतां मात्रामेळ के जातिछंदोना स्वरूपनी सामान्य रूपरेखा दृष्टान्त साथे बतावी हती. आनुं स्वरूप समजवुं एक रीते वधारे सहेलुं छे कारण के छंदमां आवर्तन तरत जोई शकाय छे. आनो मेळ आवर्तनात्मक छे. अने छतां आना मेळ विशे पण मारे केटलुंक कहेवानुं छे, जेना विना छन्दोना मेळनी मीमांसा हुं अधूरी मानुं छुं. आ मीमांसा करवा माटे तेनी पूर्वभूमिका तरीके, में वृत्तमां कर्युं हतुं तेम, प्रथम जातिछंदोनुं परंपरागत स्वरूप आपी जाउं छुं. एम करवामां पण हुं छंदोनो क्रम मारी रीते ज लईश अने निरूपण पण मारी संज्ञामां करीश.

मात्रामेळ छंदोनुं स्वरूप सामान्य रीते गणोथी निरूपाय छे. आ गणो ते अक्षरमेळ वृत्तो निरूपवाना त्र्यक्षरगणो नहीं, पण भिन्नभिन्न संख्याना मात्रागणो छे. प्राचीनतम पिंगलना 'छन्दःसूत्र'मां मात्र चार मात्राना गणनो उल्लेख छे.[1] पण पछी पिंगलोमां जुदी जुदी मात्रामेळ रचनाओ आवी अने निरूपण पद्धति झीणवटवाळी थतां जरूरियातो वधी तेथी पिंगलोए जुदी जुदी संख्याना मात्रागणो स्वीकार्या; हेमचंद्र बे त्रण चार पांच अने छ मात्राना गणो स्वीकारे छे, अने तेना वडे छंदोनां स्वरूपो निरूपे छे. 'प्राकृतपैंगल'कार अने हिंदीमां प्रतिष्ठित 'छन्दःप्रभाकर' पण आ ज गणो स्वीकारे छे, जो के बन्ने हेमचन्द्र करतां जुदी संज्ञाओ वापरे छे जेनी साथे आपणे संबंध नथी. पण आ साधनोवाळी पद्धति पण वृत्तोनी अक्षरगणपद्धति जेवी ज अशास्त्रीय छे. पहेलुं तो ए के आ मात्रामेळना पिंगलकारो पण एक चरणमां आवती मात्रानी कुल संख्या प्रमाणे ज छंदोना विभागो पाडे छे. टूंकाने पहेला ले छे अने पछी वधता वधता आगळ ३२ मात्राना छंद सुधी जाय छे. तेथी वधारे मात्राना छंदो मात्रादंडको गणाय छे. अने छेवटे अर्धसम विषम अने मिश्र छंदो आवे छे. पण छंदोना मेळ पारखी एमने अनुकूळ कोई पद्धतिथी एनुं निरूपण करता नथी. ऊलटुं एमनी पद्धतिथी एमनुं स्वरूप शोधवुं वधारे मुश्किल बने छे. दाखला तरीके 'छन्दःप्रभाकर' २८ मात्राना छंदोनुं सामान्य नाम यौगिक कही, तेना भेदो ५,१४,२२९ जणावी पछी सार छंद आपे छे:

---

१. लः समुद्रा गणः। ४, १२. छन्दःशास्त्रम्

सार (१६+१२ अन्तमें कर्णा ऽऽ)

सोरह रविकल अंते कर्णा, सार छंद अति नीको।
चरित कहिय कछु बालकृष्ण अरु, सुघर राधिकाजीको॥

बीजी बे पंक्तिओ उतारतो नथी. अहीं स्वरूप ए प्रमाणे कह्युं छे के

सार छंद सोळ अने बार मळी कुल अठ्ठावीस मात्रानो छे, जेने अंते कर्ण एटले बे गुरु आवे छे. आ पद्धति खोटी छे. मात्रामेळ छंदोनो मेळ चरणनी के अर्धचरणनी कुल मात्रासंख्या आपवाथी मळी रहेतो नथी, तेमां संधिओ होय छे अने ए संधिओनां आवर्तनोथी कुल मात्रा मळी रहेवी जोईए. खरुं तो एम कहेवुं जोईए के मात्रामेळ छंदोमां अमुक मात्रानो संधि होय छे, अने ए संधिनां अमुक आवर्तनोथी तेनुं चरण थाय छे. उपर आपेला छंदमां पण चतुष्कल संधिनां, पहेला यतिखंडमां चार अने बीजामां त्रण आवर्तनो छे. पहेला यतिखंडमां 'सोरह, रविकल, अंते, कर्णा' एम चतुष्कलनां चार आवर्तनो स्पष्ट रीते देखाई आवे छे. बीजा यतिखंडमां 'सार छंद अति' एमां चच्चार मात्रानां आवर्तनो छूटां देखातां नथी, आठ मात्रानो एक संधि आवे छे, ए अपवाद छे जेनो खुलासो मात्रा-मेळना पिंगले करवो जोईए. आ ज रीते पछीनां चरणोमां पण 'बालकृष्ण अरु' अने 'सुघर राधिका' एटलामां चतुष्कलो पडी शकतां नथी, ए पण 'सार छंद अति' जेवो ज प्रसंग छे. पण छंदनो मेळ चतुष्कलोनां आवर्तननो छे ए ज पिंगलनुं मुख्य वक्तव्य होवुं जोईए तेने बदले कुल मात्राओ सोळ अने बार आपी छे ते खोटो मार्ग छे.

आनी पछी २८ मात्रानो बीजो छंद हरिगीत आवे छे:—

हरिगीतिका (१६+१२ अंतमें ।ऽ)

शृंगार भूषण अंत लग जन, गाइये हरि गीतिका।
हरि शरण प्राणी जे भये कहु है तिन्हें भव भीतिका॥

आ पछी आवती बे पंक्तिओ छोडी दउं छुं. आना उपर टीका नीचे मुजब छे:

शृंगार=१६ भूषण=१२

इसका रचनाक्रम यों है—२, ३, ४, ३, ४, ३, ४, ५=२८

जहां जहां चौकल हैं उनमें 'जन' जगण ।ऽ। अतिनिषिद्ध है, अन्तमें रगण ऽ।ऽ कर्णमधुर होता है।

अहीं यतिखंडोनी कुलमात्रा आपवा उपरांत मात्रागणो दर्शाववा पड्या छे, एटले के कुलमात्राथी छंद नथी बनतो एटलुं स्पष्ट थाय छे. पण आ आटली मात्राना गणो ज शा माटे तेनो खुलासो अहीं मळतो नथी. चार मात्राना गणमां जगण लगाल न आवी शके तेनुं कारण पण जणाव्युं नथी. खरुं तो आ छंद सप्तकल संधिनां आवर्तनोथी बनेलो छे, ए आवर्तनो पण आ निरूपणमां स्फुट देखातां नथी, ४, ३ ४, ३ बे वार आवे छे तेथी आवर्तन जाणनार समजी शके, पण नहीं जाणनारनी आंखे तो आवर्तित संधि चडशे ज नहीं. अने चतुष्कलना मेळवाळो सार अने सप्तकलना मेळवाळो हरिगीत एक ज साथे मुकाय छे ए पण प्रधान विभजननी अशास्त्रीयता बतावे छे.

अने सौथी मोटो प्रश्न के आ मात्राओने अमुक ज गणमां शा माटे मूकवी तेनो पण खुलासो आ प्राचीन परंपरानां कोई पिंगलो आपतां नथी. तेनो पहेलवहेलो खुलासो आपवानुं मान गुजरातने फाळे जाय छे. कवि दलपतरामे सौथी पहेलां मात्रामेळ पिंगलमां तालव्यवस्था योजी, अने तालनी आवश्यकताथी गणो पाडवा पडे छे, अमुक जगाए अक्षर पूरो करवो पडे छे ते समजाव्युं. अने मात्रामेळना निरूपणमां तेमणे तालस्थानो अने तालसंख्या दर्शावी अने कह्युं के तालनी मात्रा ताल पहेलांनी मात्रा साथे जोडाई जाय तो ताल तूटे, पाछळनी मात्रा साथे जोडाय तो ताल तूटे नहीं.[2] तेओ कहे छे:—

वरणमेळ तो वरण गणि, रचतां रहे न व्हेम;
मन धरि मात्रामेळमां, ताल धरो कहुं तेम. १६

---

२. पिंगलमां दलपतरामे दाखल करेली तालव्यवस्थानी अपूर्वता अने महत्त्व बीजा पिंगलकारोए पण नोंध्युं छे. १८९३मां प्रसिद्ध थयेला 'भगवतपिंगल'नी प्रस्तावनामां तेना कर्ता जीवराम अजरामर गोर लखे छे: "पिंगलनो विषय गूजराती भाषामां पहेलो जाहेर करनार कवीश्वर दलपतराम डाह्याभाई सी. आई. ई. छे; अने तेमणे ज ताळनी अगत्यनी बाबतनो मोटो शोध कर्यो छे, के जे ताळनी बाबत हिंदुस्तानी कविता करनारा अद्यापि समजता नथी." बवें पण ए ज कहे छे: "मात्रावृत्तिना ताल गुजराती पिंगलो सिवाय बीजां कोई पिंगळोमां आपेला नथी; ने ते सुधारणा प्रथम लोकप्रिय स्वर्गस्थ दलपतरामे पोताना पिंगळमां करी. . ." (गायनवादन पाठमाळा पुस्तक १ वि. भाग ३ खंड १. छंदोगानविनोद प्र. २. मात्राजाति गान. पृ. ५२)

ताळनि कळने पाछली, मळ्ये न तूटे ताळ;
आवि मळे जो आगली, ताळ तुटे तत्काळ. १७

वर्णमेळ एटले अक्षरमेळमां अक्षर लघु के गुरु होय ते प्रमाणे मूकवाथी छंद मळी रहे. मात्रामेळमां ताल आवे. तालनी मात्रा, पछीनी मात्रा साथे जोडाय तो ताल तूटे नहीं, पण आगली मात्रा साथे जोडाय तो ताल तूटे. पण वळी उमेरे छे के

ताळ लगारक तूटतां, गणे न गुणिजन दोष;
लागे कविता लंगडी, तो सुणि नहि संतोष. १८

दलपतपिंगळ पृ. ७

आ बधुं दाखलाथी वधारे सारी रीते समजी शकाय. तेने माटे दलपरामे आपेलो ज चरणाकुळनो दाखलो लउं छुं:

१३. चरणाकुळ छंद—मात्रा १६, ताल ४.

चरण चरणमां मात्रा सोळे, ताळ धरो चोपाई तोले;
छे गुरु बे जो छेवट ठामे, छंद नकी चरणाकुळ नामे. ७९

भांग्य, अफिण ने गांजो जाणो, ते मदिरानी प्रजा प्रमाणो;
मूळ दुःखनां उपजे एथी, जाय मनुषनी बुद्धी जेथी. ८०

अहीं कह्युं के दरेक चरणमां सोळ मात्रा आवे, अने तेमां चोपाई प्रमाणे एटले १, ५, ९, १३ ए संख्यानी मात्रा उपर ताल आवे. उपरनी बाबत समजाववा माटे हुं उपरना एक चरणमां मात्रा-संख्या लखी बतावुं:

१	२	३	४	५	६	७	९	११	१३	१५
च	र	ण	च	र	ण	मां	मा	त्रा	सो	ळे
						८	१०	१२	१४	१६

ताल पहेली अने पांचमी मात्रा उपर पडे छे ते बन्ने मात्राना अक्षरो छूटा छे. ते पछी नवमी मात्रा छूटी नथी, ते दसमी साथे मळीने तेनो एक गुरु थयो छे, पण तालनी मात्रा पछीनी मात्रा साथे मळे तो तेथी ताल तूटतो नथी एम कह्युं छे, एटले त्यां ताल तूटतो नथी. तेरमी मात्रानुं पण एम ज छे. एटले क्यांई ताल तूटतो नथी. पण उपरना दृष्टान्तमांथी ज एक बीजी पंक्ति लईए:

१	३	४	६	७	९	१०	११	१३	१५
मू	ळ	दुः	ख	नां	उ	प	जे	ए	थी
२		५		८			१२	१४	१६

अही तालनी पहेली मात्रा तेनी पछीनी एटले बीजी साथे मळी गई छे, ते दोष नथी. पण तालनी पांचमी मात्रा तेनी आगळनी एटले चोथी साथे मळी गई छे ते दोष छे. उपर मात्रानी संख्या जे रीते लखी छे ते उपरथी ए पण जणाशे के आम थाय त्यारे तालभंग शाथी थाय छे. आपणे जोई शकीए छीए के तालनी मात्रा आवी रीते आगली मात्रा साथे जोडाई गुरु बने छे त्यारे ते गुरुनी बीजी मात्रा बने छे, तालनी मात्रा आगळनी मात्राथी ढंकाई गई होय छे, ए ताल मेळववाने खुल्ली नथी होती, अने तेथी ताल तूटे छे. ए तालनी मात्रा ज्यारे पछीनी मात्रा साथे जोडाय छे त्यारे ए रीते ए ढंकाई जती नथी, ए ताल मेळववाने माटे खुल्ली होय छे. अलबत प्रस्तुत दाखलामां पांचमी मात्रा उपरनो ताल तूटे छे पण ते दलपतरामे आपेला 'ताल लगारक तूटतां गणे न गुणिजन दोष' ए अपवादमां आवे छे. आ अपवादनो सिद्धान्त शो ए दलपतरामे चर्च्युं नथी. आपणे ए प्रश्न यथास्थाने चर्चवानो रहेशे. पण आपणे आगळ चालीए.

दलपतरामना छंदमां ज तालनी जगाए तालनुं चिह्न करी जोईशुं तो तरत समजाशे के तालनी मात्रा खुल्ली राखवाथी संधिओ छूटा पडे छे. जेम के :

```
 |     |      |   |
चरण चरणमां सोळे मात्रा
```

अहीं दरेक संधि तालथी छूटो पडे छे. अने तालने लीधे संधिनां आवर्तनो तरत स्पष्ट देखाय छे. चरण च, रणमां, सोळे, मात्रा एम दरेक संधि अने तेनां आवर्तनो स्पष्ट देखाय छे.

दलपतरामे आपणने समजाव्युं के तालनी मात्रा उपर ताल बराबर पडी शके माटे ते मात्रा, आगळनी मात्रा साथे मळी जवी न जोईए, खुल्ली रहेवी जोईए. एनो ज अर्थ ए के तालनी मात्रा पहेलांनी मात्रा आगळ अक्षर पूरो थवो जोईए. के. ह. ध्रुवे आपणने आ वस्तु वधारे स्फुट करीने समजावी के त्यां अक्षर पूरो करवानुं कारण ए के छन्दना मात्रासंधिओ छूटा पडी शके. ए प्रमाणे संधिओ छूटा न देखाय तो पछी संधिओनां आवर्तनो छे एम कहेवानो कशो अर्थ रहेतो नथी. नीचे एक गद्य पंक्ति उतारुं छुं :

"आ साते प्रसंगकाव्यो छे, तेम संवादकाव्यो पण छे."

आमां गणी जोशो तो दरेक खंड सोळ सोळ मात्रानो जणाशे. पण तेमां कोई प्रकारना संधिओ प्रतीत थता नथी, एटले ए मात्रामेळनी पंक्ति नथी. सोळ

मात्रानी ज जो चरणाकुळ थतो होत तो आ चरणाकुळ बन्यो होत. पण गमे तेटलो प्रयत्न करी जोतां पण आ चरणाकुळ पेठे पठी शकाशे नहीं. अने तेनुं कारण ए छे के आमां चतुष्कल संधिओ छूटा पडता नथी. अने तेथी तेमां ए संधिओनुं आवर्तन पण नथी. आवर्तन नथी एटले मेळ पण नथी.

ते ज प्रमाणे हरिगीत पण ताल आपीने संधिओ छूटा पाडीने बतावी शकाशे. दलपतराम हरिगीतमां ताल नीचे प्रमाणे कहे छे:

त्रीजी उपर पछि त्रण चतुर पर एम आठे ताळ छे
ते ताळमां जो जगण तो, न कहीश छंद रसाळ छे.

अर्थात् पहेलो ताळ त्रीजी मात्रा उपर आवे अने पछी तेमां त्रण अने चार मात्राओ अनुक्रमे वधारतां जवी अने एना पर ताल नांखवो. एटले पहेलो ताल त्रीजी मात्रा उपर, ते पछीनो छट्ठी उपर, ते पछी चार उमेरतां दसमी उपर, पछी त्रण उमेरतां तेरमी उपर, पछी चार उमेरतां सत्तरमी उपर ए प्रमाणे वीसमी उपर, चोवीसमी उपर अने छेल्ले सत्तावीसमी उपर. ३, ६, १०, १३, १७, २०, २४, २७ ए प्रमाणे. ए प्रमाणे ताल मूकी जोईए:

३ ६ १० १३ १७ २० २४ २७
शृं गा र भू ष ण अं त ल ग ज न, गा इ ये ह रि गी ति का

तालनी जगाए में मात्रासंख्या मूकी छे जेथी ताल अने तालनी मात्रा बन्ने एक साथे समजाय. आ ताल प्रमाणे नीचे प्रमाणे संधिओ पडता जणाशे.

शृंगार भू, षणअंतलग, जनगाइये, हरिगीतिका

गणी जोतां दरेक संधि सात मात्रानो थशे अने एवा सप्तकल संधिनां चार आवर्तनोथी हरिगीत थयेलो जणाशे. आ सप्तकल संधिनी विलक्षणता ए छे के तेमां एक नहीं पण बे ताल छे, अने ए बन्ने ताल माटे मात्रा खुल्ली राखवी पडे छे. 'छन्दःप्रभाकरे' जे गणो पाडी बताव्या ते आ ताल मात्राओ खुल्ली राखवा माटे.

हवे प्रश्न रह्यो आ जातिछंदोने माटे संज्ञाओ नक्की करवानो. आपणे आगळ जोई गया के आ संधिओमां गुरुनी जगाए बे लघु मूकी शकाय छे. एम न थई शके एवा गुरुने माटे आपणे गा संज्ञा राखी हती, अने आवो फेरफार करी शकाय तेवा गुरु माटे आपणे दा संज्ञा राखी हती. एटले दा=२ मात्रा ए प्रमाणे आपणी संज्ञानो अर्थ छे. ए समीकरण प्रमाणे आपणे चतुष्कल

माटे दादा संज्ञा राखी शकीए. आ संज्ञा के. ह. ध्रुवे सौथी पहेलां पसंद करी छे. अने तेमां ताल बताववा तालचिह्न मूकवानी व्यवस्था राखी छे, दादा ए प्रमाणे. आम कर्या पछी संधिनां आवर्तनो आ संज्ञानां आवर्तनोथी ज बताववानां रहे. जेम के दादा दादा दादा वगेरे. आनी पछी ताल माटे मात्रानी संख्या आपवानी रहे ज नहीं. उपर प्रमाणे दर्शाव्या पछी पहेली पांचमी नवमी मात्राए ताल छे एम कहेवानी जरूर रहेती नथी. संधिओ छूटा छे, एटले संधिघटक अक्षरोनां गुच्छो छूटां पडी ज जशे, अने तेमां तालनुं स्थान जणाई ज जशे. जेम के

चरण च, रणमां, सोळे, मात्रा,

अहीं दरेक चतुष्कल संधिमां पहेली मात्राए ताल आवे ए स्पष्ट छे. 'चरण च,' पछी, 'रणमां', एम ताल एनी मेळे निर्देशाई जशे. अने तालनी मात्रा आगळनी मात्रामां भेळववी नहीं एम कहेवानी पण जरूर नहीं रहे, कारण के संधिओ छूटा ज छे, मात्रा भळी हशे तो संधि ज छूटा नहीं पडे. अने बीजो लाभ ए थशे के, वृत्तोमां आपणे गा अने लना न्यासथी छंदनी पंक्तिनुं लगात्मक पठन करी शकता हता तेम अहीं पण संधिदर्शक अक्षरोथी छंदनुं पठन करी शकीशुं.

गाने बदले आपणे जेम दा संज्ञा नक्की करी तेम लने बदले अहीं कोई बीजी संज्ञानी जरूर पडशे नहीं. कारण के ल अहीं पण पोताने रूपे ज स्थिर रहेशे. दाने बदले बे लल मूकी शकाय छे पण लने बदले कशुं मूकी शकातुं नथी. अलबत्त बे ललनी जगाए एक गा मूकी शकाय छे पण त्यां तो आपणे दा ज मूकीशुं जेमां गा अने लल बन्ने विकल्पो आवी जाय छे. अने बीजुं ए के संधिओमां ज्यां दानी साथे ल आवे छे त्यां तेनुं स्थान स्थिर होय छे. एम ज होय कारण के आसपासना दा नी जगाए गा के लल आवतां तेना स्थानने कशी असर थती नथी. एटले आपणे बधा संधिओ दा अने लथी बतावी शकीशुं.

उपरना चरणाकुळ छंदनी उत्थापनिका ज आपणे आ संज्ञाथी करी जोईए :

दादा दादा दादा गागा

छंदना लक्षणमां अंते बे गुरु कहेला छे तेथी त्यां गागा संज्ञाथी चतुष्कल दर्शाव्युं. आम जरूर पडे त्यां आपणे गानो पण उपयोग करवो पडशे.

पण हजी एक प्रश्न रहे छे. चरणाकुळनुं स्वरूप एवुं छे के तेमां चार-चतुष्कलो आवे. हवे उपरनी संज्ञा चतुष्कलना बधाय पर्यायो दर्शाववा समर्थ छे? दा=गा अथवा लल मूकतां दादामांथी नीचेना पर्यायो निष्पन्न थाय छे: गागा, गालल, ललगा लललल. पण हजी एक पर्याय बाकी रह्यो लगाल. दानी जगाए गा के लल मूकतां लगाल नहीं साधी शकाय. एटले के दादा संज्ञा आ एक पर्याय बताववा असमर्थ छे. एक रीते तेमां आकस्मिक लाभ रहेलो छे ते ए के घणी जगाए चतुष्कल रचनाओमां अमुक अमुक स्थाने आ लगाल निषिद्ध करवो पडे छे त्यां दादा संज्ञा बराबर इष्ट पर्यायो उपर ज व्याप्त थई रहेशे. पण घणी जगाए पांचेय पर्यायोनो समावेश करवानो आवे छे. एने माटे बवें 'चाआ' एवी संज्ञा करे छे, पण ए पठनमां कठोर लागे छे, अने 'आ' तो चार मात्रा पूरी करवा माटे ज उमेरवो पडे छे. अन्यत्र में आने माटे दा–दा एवी संज्ञा वापरेली, एटले के बे दा वच्चे समासदर्शक आडी लीटी करेली पण ते छापमां बादबाकीना चिह्नवाळी जेवी देखाय छे, अने पठनमां दादाथी भिन्न ओळखी शकाय नहीं ए एनी क्षति छे. एटले उच्चारमां दादाने ज मळती अने छतां तेनाथी जुदी परखाय एवी नवी संज्ञा 'दद्दा' योजुं छुं. अने आने मात्र संज्ञा तरीके योजुं छुं एटले एने विशेष समर्थन के खुलासानी जरूर रहेती नथी. घणाखरा चतुष्कल-संधि छंदोमां जगण रहित संधि ज वपराय छे, मात्र अपवादरूपे जगण क्यांक क्यांक आवे छे. एटले एवी रचनाओमां उत्थापनिका दादाथी ज आपीश. आपणां मात्रामेळ रचनानां पिंगलो आ बाबतमां झीणवटवाळां नथी एटले घणी जगाए जगणना स्थाननी चर्चा करतां नथी. पण ए खरुं छे के जगण बहु ओछो वपराय छे एटले जगणनां स्थाननो स्पष्ट निषेध न होय, तो पण दादाथी चतुष्कल रचनाओ सामान्य रीते निर्देशुं त्यां जगण तद्दन निषिद्ध न मानवो, पण अपवादरूपे आवी शके एम मानवुं. खरुं तो जगण-ना निषेधनुं कारण जाणवुं ए ज महत्त्वनुं छे अने एम बधा पछी मात्रामेळनी उत्थापनिकाओ दरेक विगतमां पूर्ण आपवी अशक्य जणाय तो पण कशुं अनिष्ट थई जवानुं नथी.

हवे हुं मात्रामेळ छंदो एक पछी एक मारा निरूपणने अनुकूळ क्रमे लईश अने तेम कर्या पहेलां एक वात मारे सामान्य रूपे कहेवानी ते ए के आपणां प्राकृत अपभ्रंश गुजराती पिंगलो जो के सामान्य रीते छंदोमां प्रास आवश्यक छे ए बाबत उल्लेखतां के चर्चतां नथी पण अपभ्रंश साहित्यथी मांडीने छंदोमां प्रास सार्वत्रिक बन्यो छे, अने गुजरातीए पण अपभ्रंशनो ए वारसो अपनावी लीधो छे. पिंगलो प्रासनी वात नहीं करतां पण सर्वत्र

प्रास पाळे छे. हुं मानुं छुं के एनुं कारण ए छे के आपणा पिंगलकारो पासे संस्कृत पिंगलनी परंपरा हती अने संस्कृत अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां, हुं आगळ कही गयो तेम, प्रास आवश्यक नथी. पण आवृत्तसंधि मात्रामेळमां ए आवश्यक छे ए हुं ए विशेनी चर्चामां दर्शावीश. अहीं तो मात्र आपणे एटलुं ज नोंधीशुं के बधां अपभ्रंश गुजराती पिंगलो मात्रामेळना निरूपणमां प्रास पाळे छे, अने ए परंपराने हुं अहीं पण पाळुं छुं, अने ते तरफ ध्यान दोरुं छुं.

अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां में जेम 'दलपतपिंगळ'ने पायारूप गणेलुं हतुं तेम अहीं पण एने ज पायारूप गणी हुं आगळ चालीश. 'दलपतपिंगळ'ना छंदो उपरांत बीजां पिंगलोमांना छंदो उमेरवानी मने जरूर जणाशे त्यां उमेरीश. अक्षरमेळ वृत्तोमां जेम टूंका छंदो वपराता नथी अने मात्र पिंगलकारोनां कौतुको छे ए कारणे एने छोडी दीधा, तेम अहीं पण टूंका नहीं वपराता छंदो छोडी दईश.

सौथी पहेली अहीं चतुष्कल रचनाओ लईश. तेमां एक बे बाबतो सामान्य रूपे याद राखवानी छे. एक तो हमणां ज कही गयो ते के आखी उत्थापनिकामां दादा संधि वापरेलो होय तो जगण सर्वथा निषिद्ध न मानवो. बीजुं ए के दादामां पहेली मात्रा उपर ताल होवा छतां आगळ जोई गया तेम कोईक चतुष्कल आगला चतुष्कलथी जुदुं नथी पडतुं अने छतां ताल तद्दन नष्ट थतो होतो नथी. 'ताल लगीरक' ज तूटेलो होय छे, एटले दादाथी निरूपित थती चतुष्कल रचनामां पण अमुक* अविश्लेष्य चतुष्कलोवाळां अष्टकलोने अवकाश छे ए ध्यानमां राखवुं. आवां अष्टकलो बे छे. दालगालदा अने लदागालदा. अत्यार सुधीमां तालनी मात्रा खुल्ली न होय एवां जे अष्टकलो आवी गयां, ते बधां आ स्वरूपनां छे : 'सार छंद अति,' 'बालकृष्ण अरु,' 'सुघर राधिका,' 'मूळ दुःखनां'. एटले चतुष्कल रचनामां पण आ अष्टकलोने अवकाश छे एने एक सार्वत्रिक नियम समजवो. एवुं नहीं होय त्यां हुं एवो स्पष्ट निर्देश करीश.

चतुष्कल रचनामां हुं सौथी पहेलां चरणाकुल लउं छुं. तेनी उत्थापनिका :—

चरणाकुल : दादा दादा दादा $\frac{\text{गागा}}{\text{दागा}}$

दलपतरामे आपेलो आनो लक्षणछंद आपणे उपर जोई गया. तेमां अंते बे गुरु आणवानुं कह्युं छे पण त्यां ज नीचे टीप छे के "अंते एक गुरु होय तो पण नभे." (द. पि. पृ. १३)

| | | |

अलक अथवा अरिल्ल: दादा दादा दादा दालल

अर्थात् चरणाकुळमां जेम अंते दागा के गागा आवतुं हतुं तेम अहीं दालल आवे छे. ते पछी जेकरी लईए:

| | | |

जेकरी: दादा दादा दादा लगा

अहीं अंत्य चतुष्कल लगा एवुं एक खंडित मात्रानुं रूप ले छे. ते पछी चोपाई.

| | | |

चोपाई: दादा दादा दादा गाल

अहीं पण छेल्लुं चतुष्कल एक मात्रा जेटलुं खंडित गाल एवुं रूप ले छे. आ प्रमाणे पहेला बे छंदो पूरी सोळ मात्राना छे, बीजा बे पंदर पंदर मात्राना छे. छतां एना ताल सरखा होवाथी अने तफावत जूज होवाथी, अने तेमनुं पठन एक सरखुं होवाथी ए चारे छंदो चोपाई गणाय छे अने चोपाईना प्रवाहमां वपराय छे:

जेकरि चोपाई चरणाकुळ, अलक वळी ए चारेने मुळ;
चोपाई कहिये साधारण, ताळ बराबर छे ते कारण. ८४

द. पि. पृ. १३

अहीं दलपतरामे अरिल्लने पण चोपाईमां गणावेल छे पण गुजरातीमां ए छंद बहु विरल वपरायो छे. अपभ्रंश साहित्यमां तेनो पुष्कळ वपराश हतो. ते पछी पद्धरी के पद्धति लईए.

| | | |

पद्धति के पद्धरी: दादा दादा दादा लदाल

आ छंद पण अपभ्रंशमां ज विशेषे करीने वपरायो छे. गुजरातीमां भाग्ये ज प्रयोजायो हशे. छंदनुं उपरनुं लक्षण में हेमचंद्रना 'छन्दोनुशासन'मांथी लीधुं छे. "चीर्नौ जे जो लीर्वान्तेऽनुप्रासे पद्धतिः।" तेना उपर टीका छे: "चगण चतुष्टयं। पादान्तेऽनुप्रासे सति पद्धतिः पद्धटिकेत्यन्ये। अस्यापवादः नात्र विषमे जगणः, पादान्ते च जगणो लघुचतुष्टयं वा।" (छन्दोनु० पृ २६ब) अर्थात् चार चतुष्कल संधिओ अने चरणने अंते प्रास होय त्यारे पद्धति के पद्धटिका छंद थाय. तेमां अपवाद के विषम चतुष्कल जगण (लगाल) न थाय, अने अंत्य चतुष्कल जगण होय अथवा चार लघुनुं होय. अपभ्रंश

साहित्यमां आ छंद आ स्वरूपे ज मळे छे, अने छतां दलपतराम तेनुं लक्षण जुदुं आपे छे:—

३ ६ ११ १४ ३ ६ ११ १४
प्रतिचरण सोळ मात्रा प्रमाण, ते चरण अंत जो जगण आण;
३ ६ ११ १४ ३ ६ ११ १४
त्रण चक्र इंद्र रले ज ताळ, पद्धरी छंदनो एज ढाळ ८७
द. पि. पृ. १४

अहीं कुलमात्रा तो सोळ ज छे, उपरनी ज रीते अंते जगण कह्यो छे (जो के सर्वलघुनो विकल्प जणाव्यो नथी) पण तालनी मात्रा जुदी ज कही छे: हेमचंद्रनी रीते चार चतुष्कलो आपीए एटले ताल १, ५, ९, १३ मात्राए ज पडे. पण दलपतराम ३, चक्र एटले ६, ११ अने १४ मात्राए ताल मूके छे. एमनी रीते ए प्रमाणे ताल माटे खुल्ली मात्राओ मळी रहे छे, अने ए स्पष्ट करवा में तालस्थाननी मात्रासंख्या बतावी छे. पण हेमचन्द्रे जे दृष्टान्त आप्युं छे तेमां ताल माटे ए बधी मात्राओ खुल्ली मळी आवती नथी. हुं हेमचन्द्रनुं दृष्टान्त नीचे उतारुं छुं:

१ ३ ५ ६ ८ ९ १० ११ १३ १४ १६
छ त्रा य मा ण ध र णो र गे न्द्र
२ ४ ७ १२ १५

१ ३ ४ ५ ७ ९ १० ११ १२ १३ १४ १६
पा र्श्व जि ने न्द्र स्म र मृ ग मृ गे न्द्र
२ ६ ८ १५

१ ३ ४ ५ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
द र्श य दी र्ण दु रि त ति मि र नि क र
२ ६

१ ३ ५ ६ ७ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६
स त्य द्ध ति मा स्य जि त र ज नि क र
२ ४ ८

अहीं बीजी पंक्तिमां छठ्ठी मात्रा ताल माटे उपलभ्य नथी केम जे ए आगळनी मात्रा साथे जोडाई गई छे. तेम ज 'छन्दःप्रभाकर'मां जे पद्धतिनो लक्षणछंद आपेलो छे तेमां पण बीजी त्रीजी अने चोथी पंक्तिओमां छठ्ठी मात्रा ताल माटे खुल्ली मळती नथी:—

वसु वसु कल पद्धरि लेहु साज,
१ ३ ४ ५ ७ ८ ९ ११ १२ १३ १४ १६
सेवहु संतत संतन समाज।
२ ६ १० १५
१ २ ३ ५
भजिये राधा सह नंद लाल,
४ ६

१ २ ३ ५
क टि जं हं स ब भ व सि न्धु जा ल।।
४ ६

छन्दःप्र० पृ. ४९

एटले आपणे आ बाबतमां दलपतरामनुं लक्षण नहीं स्वीकारतां हेमचन्द्रनुं ज स्वीकारीशुं. चतुष्कलना पर्यायोनुं पृथक्करण करतां जणाशे के पद्धरिमां त्रीजी मात्रा हमेशां खुल्ली ज रहे कारण के त्यां जगण आवे तो ज त्रीजी मात्रा ढंकाय, अने जगण तो त्यां निषिद्ध छे, पण बीजुं चतुष्कल गागा के गालल रूप ले तो छठ्ठी मात्रा अवश्य ढंकाय, अने ए रूपो ए जगाए निषिद्ध थयां नथी. ए स्थाने लगाल अने लललल तेम ज ललगा रूपो आवे तो छठ्ठी मात्रा खुल्ली रहे, अने अकस्मात् ए रूपो पद्धरीमां आवी शके छे, पण ए एनुं लक्षण नथी. दलपतरामे आवुं स्वरूप शाथी स्वीकार्युं, अने एमणे स्वीकारेला तालो कया प्रकारना छे ते आपणे आगळ यथास्थाने जोईशुं. हमणां तो एटलुं ज कहेवुं बस थशे के दलपतरामे आपेली तालव्यवस्था पद्धतिना स्वरूपनी नथी, अने एनुं स्वरूप आपणे हेमचन्द्रे आप्या प्रमाणेनुं स्वीकारवुं जोईए.

पद्धतिनी चर्चा पूरी करतां पहेलां तेना अर्धनो बनेलो मधुभार छंद पण लईए. अपभ्रंशमां ए क्यांक क्यांक वपरायो छे.

मधुभार: दादा लदाल

पद्धतिमां कुल चार चतुष्कलोमांथी अहीं आपणे छेल्ला बे लईए छीए. आना ताल पण पद्धति प्रमाणे ज होय ए स्वाभाविक छे. पण दलपतरामे आना ताल पण पद्धतिनी पोतानी रीते आप्या छे:

कळ आठ आण, मधुभार जाण
गुरु अंत होय संशय न कोय २६
त्रीजी छठी ज मात्रा कही ज
त्यां ताळ दीज, लघु पंचमी ज. २७

द. पिं. पृ. ८

पांचमी लघु अने अंते ग अने ल एटले लगाल जगण ज थ्यो. अने ताल त्रीजी अने छठ्ठीए उपर बताव्या प्रमाणे. आने विशे जुं कंई कहेवानी जरूर रहेती नथी. आनी पछी हुं काव्य के रोळा लउं छुं:

रोळा: दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा
आ छंद चतुष्कल संधिनां कुल छ आवर्तनोनो बनेलो छे. एटले कुल २४

मात्रानो छे. एमां विशेष ए छे के ११ मी मात्राए यति छे. आ यतिए शब्द पूरो थवो जोईए. वृत्तोमां हुं यति दर्शाववा दंड करतो हतो तेने बदले मात्रा-मेळमां हुं उपरना भागमां एकवडुं अवतरण चिन्ह करुं छुं. दलपतरामना लक्षण उपरथी ज आ स्वरूप स्फुट थशे.

काव्य अथवा रोला छंद—मात्रा २४, ताळ ६

अर्ध चरण अगियार, तथा पछि तेर कळानुं,
प्रथम पछी प्रति चार, कळा पर ताळ भलानुं;
जगण न होय जरूर, तमाम तपासो ताळो
काव्यछंद करि ऊर, तिमिर अणसमजण टाळो. १०३
जन्म मरण दुःख हरण, चरण श्रीहरिनां सेवो,
ए प्रभु अभराभरण, तरण तारण छे तेवो;

द. पि. पृ. १६

आगळ उतारतो नथी. यतिनी जगाए लक्षणछंदमां अल्पविराम छे तेथी तेनुं स्थान जणाई आवशे. उपर आपेली प्रथम चार पंक्तिओमां त्रीजुं चतुष्कल दाल'ल आवे छे. पछीनी बेमां ललल'ल आवे छे.
ते पछी हुं प्लवंगम लउं छुं:

प्लवंगम: दादा दादा दाल'ल दादा दालगा

अहीं स्पष्ट थशे के रोळानी पेठे ज आमां ११ मी मात्राए यति छे. आ छन्दनां पहेलां चार चतुष्कलो बराबर रोळाना जेवां छे. पछी फेर पडे छे. दलपतराम जूनी प्रणालिकाने अनुसरीने प्लवंगममां आदि अने अंतमां गुरु आवश्यक गणे छे:

१६ प्लवंगम छंद—मात्रा २१, ताळ ५
मात्रा प्रतिपद एक, अने विस आणिये,
एकादश दश उपर, जरुर जति जाणिये;
एक उपर पछि चतुर, चतुर पर ताळ छे,
आदि गुरू, गुरु अंत, प्लवंगम चाल छे. ९०

द. पि. पृ. १४

आ लक्षण नीचे टीप[१] छे के "ताळनो अने आदि गुरु तथा अंत गुरुनो

१. आ टीप सद्गत के. ह. ध्रुवे 'दलपत पिंगळ'नुं संस्करण करतां उमेरी छे. जुओ प्रस्तावना पृ. ४

नियम 'हुन्नरखानની चढाई'मां पळायो नथी." (एजन) ते ते पंक्तिओ हुं नीचे उतारुं छुं:

बय छो,टीमां, वस्यों छुं, हिंदु, स्तानमां

अहीं पंक्तिनो पहेलो अक्षर गुरु नथी. अने यतिवाळुं चतुष्कल लगा'ल छे ते कर्णकटु लागे छे ते जोई शकाशे.

धातु औषधी शोध, राजनी नीतियो

अहीं प्रथम बे चतुष्कलोने बदले दालगालदा अष्टमात्रक संधि आवेलो छे. में आगळ कह्युं तेम चतुष्कल रचनामां ए क्यांक आवे तो तेथी दोष थतो नथी. ए आठ मात्रा पछी 'शोध' शब्द आवी अगियार मात्राए यति आवे छे. पण ते पछी ल आवी ए त्रीजुं चतुष्कल पूरुं थतुं नथी. खरी रीते त्यां पण, पंक्तिना प्रारंभमां थयुं छे तेम, 'शोध राजनी' एवो दालगालदा संधि फरी आवे छे. रोळामां अने प्लवंगममां आम घणी वार बने छे, तेने दोष गणवो न जोईए. हवे अंते पण गुरु न होय एवो दाखलो जोईए:

हिंदू मटी हुं हाल, थयो छुं युरोपियन,
कोइ न जाणे मने, हतो आ हिंदुजन.

दलपतकाव्य भाग २, पृ. २७

प्रारंभमां गुरु छे, अंतमां गुरु नथी. आ अनियमितता छे, एनुं खरुं स्वरूप आपणे मेळनी चर्चामां जोई शकीशुं. हाल तो एटलुं ज नोंधीशुं के मात्रामेळमां नियमो मात्र सामान्य रीते प्रवर्ते छे, ते बधा निरपवाद अने अव्यभिचारी नथी.

आनी पछी हुं सवैया लउं छुं. सवैयाना बे प्रकारो छे, सवैयो बत्रीसो अने सवैयो एकत्रीसो.

सवैयो बत्रीसो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गागा

सवैयो एकत्रीसो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गाल

आ लांबामां लांबी चतुष्कल रचना छे. बन्नेनां दृष्टान्तो 'दलपतपिंगळ'मांथी ज मूकुं छुं:

सवैया छंद—मात्रा ३१-३२, ताळ ८

सज्जन कवि जो करो सवैया, हैयामां धरि हेत अनंत,
मात्रा एकत्रीस चरणमां, सोळे तो विश्राम वसंत;

बत्रीसा पण बीजि तरेना, रुचिरा तुल्ये ताळ रहंत,
एकत्रीसे अंते गुरुलघु, बत्रीसामां बे गुरुअंत. ११४

* * *

जो संसार सुखे सुधरे तो, जोगि बनी जावे कुण बाबू,
तीर्थ पिता माता तजि कोण चडे गिरनार सिधाचळ आबू;

* * *

द. पि. पृ. १८–१९

सोळ मात्राए यति, त्यां लक्षणछंदमां अल्प विराम मूकेलुं छे, अने ए यति 'तीर्थ०'वाळी पंक्तिमां पळाई नथी ए पण ध्यानमां राखवा जेवुं छे. अर्थात् आ यतिने पिंगळकार पोते एटली स्थिर अचळ के आवश्यक मानतो नथी.

आ पछी रुचिरा लईए:

रुचिरा: दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा

दलपतराम प्रमाणे उपरनुं लक्षण आपेलुं छे. दलपतराम आठ आठ मात्राए एम बे मध्य यतिओ आपे छे.

२३ रुचिरा छंद–मात्रा ३०, ताळ ८

चरण चरणमां त्रीसे मात्रा, अंते तो गुरु एक करो,
आठे आठे पडतां पाठे, वळि थोडो विश्राम धरो;
एक उपर पछि चारे चारे, ताळ सरस लावो तेमां,
रुचिरा नामे छंद रुपाळो, अल्प नथी संशय एमां. ११२

द. पि. पृ. १८

बीजी पंक्तिमां 'आठे आठे पडतां पाठे' एटला भागमां शोभानो आंतर प्रास छे ते ध्यानमां आववुं तुरो. आ लांबी पंक्तिओमां आ प्रमाणे यतिओ मूकी तेना खंडोने प्रासथी जोडवाने कविओ स्वाभाविक रीते ललचाय छे. आ पछी चोपायो लउं छुं:

चोपायो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दागा

दलपतरामनुं लक्षण जोईए:

२१. चोपाया छंद—मात्रा २८, ताळ ७

प्रथम अरधमां सोळ कळा करि, ऊपर बारे आणो,
ताळ प्रथम पछि श्रुतिश्रुति ऊपर, जो चोपाया जाणो;
अंते तो गुरु अक्षर आणो, चरण रचो शुभ चारे,
बे चरणे पण कोइ कहे छे, हशे सुणेल हवारे. १०८

द. पि. पृ. १७

आमां खास नोंधवा जेवुं ए छे के आनी चारने बदले बे पंक्तिए कडी गणवानी पण परंपरा छे. आनी पछी सामान्य परंपराने नहीं अनुसरतां, अर्धसम गणाती दूहानी रचना हुं लउं छुं:

| | | | | |
दूहो: दादा दादा दालदा' दादा दादा गाल

दलपतराम तेनुं नीचे प्रमाणे लक्षण आपे छे:

३१. दोहरा छंद—मात्रा ४८, ताळ १२

पहेले त्रीजे तेर कळ, अवर पदे अगियार;
भू, भूते ने भक्तिए, ताळ दोहरे धार. १३७
कर लघु कळ अगियारमी, जगण न ताळ हरेक;
ताळ प्रथम के बीजिमां, निभे जगण कदि एक. १३८

द. पि. पृ. २४

आमां ताळमां जगण न आववा देवो एम कह्युं छे, ते में चतुष्कल रचनाओ विशे प्रारंभमां सामान्य रीते कह्युं छे तेमां आवी जाय छे. दाखला तरीके आनी पछी दृष्टान्त माटे बीजा दोहरा मूक्या छे तेमांथी पहेलो लईए:

भान खानने पाननुं, गानतान गुलतान;
ज्ञान विना विदवाननुं, मान धरे नादान. १३९

१ ३ ४ ६ ७
अहीं 'भा न खा न ने' ए अक्षरोमां 'नखान' ए जगण छे, अने एने लीधे तालनी
२ ५

पांचमी मात्रा दटाई जाय छे. बीजा तालमां जगण आववानुं आ परिणाम छे. पण में आगळ कह्युं तेम आ रचना दालगालदा छे अने ते बे चतुष्कलोनी जगाए आवी शके छे. जगणने सर्वथा निषिद्ध कह्यो छे छतां पहेला चतुष्कलमां आवी शके एम कह्युं छे तेनो दाखलो अहीं आपेला दोहरामां नथी. पण ताल संबंधी आगळ उतारेला दोहरामां जगणनां दृष्टान्तो छे:

ताळनि कळ ने पाछली, मळ्ये न तूटे ताळ;
आदि मळे जो आगली, ताळ तुटे ततकाळ. १७
ताळ लगारक तूटतां, गणे न गुणिजन दोष;
लागे कविता लंगडी, तो मुणि नहि संतोष. १८

द. पिं. पृ. ६

अहीं 'मळ्ये न' अने 'गणे न' ए सम पंक्तिना प्रथम तालमां आवता जगणो छे. आ जगणनो निषेध के अनिष्टतानो ख्याल पिंगलना अभ्यासीओमां ओछो छे. एटले में तेना दाखला उपर आप्या छे. 'छन्दःप्रभाकर' पण जगणनो निषेध करे छे. दोहा विशे ते कहे छे:

ल० — जान विषम तेरा कला, सम शिव दोहा मूल।

अने टीका आपे छे: "विषम चरणोंमें १३ और सम चरणोंमें (शिव) ११ मात्राएँ होती हैं। 'जान विषम' पहिले और तीसरे अर्थात् विषम चरणोंकि आदिमें जगण नहीं होना चाहिये। अन्तमें लघु होता है।" (छन्दःप्रभाकर पृ. ८४.) अर्थात् 'प्रभाकर' तो विषम चरणना आदिमां जगणने निषिद्ध गणे छे. दलपतरामे एम कह्युं नथी पण तेमना पण जगणना प्रसंगो विषम पादमां नथी आवता, सम पादमां ज आवे छे. एटले 'प्रभाकर' प्रमाणे पण एमां दोष नथी. 'प्रभाकर' आ स्थाने विचक्षण रीते दृष्टान्तो आपी चर्चा करे छे तेमां जगण उपरांत शब्द क्यां तोडवो ए प्रश्न पण आवे छे, जेनी चर्चा हुं आगळ करवानो छुं. अहीं तो एटलुं नोंधवुं बस थशे के दोहरामां जगण अनिष्ट छे. दोहरा पछी सोरठो लईए. 'सोरठियो दूहो' एनुं टूंकुं नाम सोरठो थई गयुं छे.

सोरठो: दादा दादा गाल' दादा दादा दालदा

दूहानां विषम सम पदो उलटाववाथी आ नवो छंद थयो छे. दलपतरामे स्पष्ट लख्युं नथी पण ए नोंधवुं जोईए के पदो उलटावतां पण तेनुं मूळ प्रासस्थान कायम रहे छे, एटले के सोरठानां विषम चरणोमां आवता गाल गणमां प्रास आवे छे. जेम के

व्हाला तारां वेण, स्वपनामां पण सांभरे;
नेह भरेलां नेण, फरी न दीठां फारबस. १५२

द. पि. पृ. २५

विषम चरणो 'वेण' अने 'नेण'ना प्रासथी संधायेलां छे. 'फरी न' एम सम चरणमां प्रथम स्थाने जगण आवे छे, ए ध्यान खेंचे छे. दलपतरामे दोहरा

सोरठाने चार चरणना गण्या छे, पण एने द्विदल गणवानी प्राचीन परंपरा छे अने ते शास्त्रीय छे, एटली नोंध अहीं जरूरनी छे.

आनी साथे दलपतरामे नहीं आपेलो उल्लाल छंद लईए. गुजराती साहित्यमां उल्लाल स्वतंत्र छंद तरीके वपरातो नथी, छप्पानी छेल्ली बे पंक्तिओमां आवे छे. पण अहीं दूहा सोरठानी साथे तेनो उल्लेख करवो योग्य छे.

उल्लाल: दा दादा दादा दालदा' दादा दादा दालदा

अहीं पहेलां एक दा मूकी पछी दोहरानुं विषम चरण बेवडयुं छे. ए ध्यानमां राखवा जेवुं छे के आ चतुष्कलो शरू थया पहेलां आवतो दा निस्ताल छे. उल्लाल द्विदल होय छे; उपर आपी ते एनी एक पंक्ति छे. तेनुं लक्षण दलपतराम छप्पाना लक्षण छंदनी छेल्ली पंक्तिमां आ प्रमाणे आपे छे.

पछिमां बे कळ ने बेवडु, दुहा प्रथम पद जाणजो. १७९

द. पि. पृ. २८

आ पछी हुं लीलावती छंद लउं छुं:

लीलावती: दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दागा गा

दृष्टान्त माटे दलपतरामनो लक्षणछंद उतारुं छुं:

२५ लीलावती छंद—मात्रा ३२, ताळ ८

मात्रा बत्रीसे चरण चरणमां, अंते तो गुरु बे आणो,
लीलावति नामे छंद बनावो, जति दश आठ उपर जाणो;
त्रिजि कळ पर ताळ पछी श्रुति श्रुति पर, तेज रिते स्वरगति ताणो,
आ लोक विषे परलोक विषे, प्रभुपद भजि पूरण सुख माणो. ११७

द. पि. पृ. १९

आने रुचिरा साथे सरखावी जोतां जणाशे के आमां रुचिरानी पूर्वे एक निस्ताल दा मूकेलो छे, बाकी बधी रीते ए रुचिरा प्रमाणे ज छे—मध्य यतिमां, अने तालमां पण. उपर उल्लालमां जेम पहेलो एक निस्ताल दा आवे छे एवो ज अहीं आवे छे. अहीं त्रीजी पंक्तिमां आवता 'पछी' शब्द उपर टीप छे के "आवा प्रसंगे ज्यां अर्धयति होय, त्यां ते पूरेपूरी न सचवाय तोपण यतिभंग गणातो नथी" जे आगळ जोयुं तेम जातिओमां यतिनुं सामान्य शैथिल्य दर्शावे छे. आ पछी पद्मावती छंद लउं छुं.

पद्मावती: दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा

आ छंद लगभग लीलावती प्रमाणे ज छे. तेमां विशेष ए छे के अहीं मध्य-यतिथी पडता बे यतिखंडोने प्रासथी जोडवाना छे, जे बतावबा में नीचे लहरीयुक्त लीटी करी छे. बीजो भेद ए छे के लीलावतीमां अंते बे गुरु आवे छे, आमां एक आवे छे, जो के दलपतरामे ए विशे कशो निर्देश कर्यो नथी. पण आपणे जाणीए छीए के अंत्य बे गुरु कह्या होय त्यां एकथी पण चाले छे, जेम के चरणाकुळमां. दलपतरामनुं लक्षण जोईए :

२७. पद्मावती छंद — मात्रा ३२, ताळ ८

दश आठे खासा, धरि अनुप्रासा, उपर कळा चौदे आवे,
पद्मावति नामे, छंद सुकामे, गुणवंता कविजन गावे;
लीलावति जेवा, ताळ ज लेवा, कोमळ पद रचशे कविता,
उजळो जश जामे, सघळे ठामे, ते शोभे जेवो सविता. १२९

द. पि. पृ. २१

दृष्टान्त उपरथी आंतरप्रास समजाशे. अंते एक गुरु के बे गुरु कशानो उल्लेख नथी, पण एक गुरु ओछामां ओछो आवश्यक छे एम पठन उपरथी पण जणाशे.

आ पछी हुं मरहट्ठा लउं छुं. दलपतरामे तेनो लक्षणछंद नीचे प्रमाणे आपेलो छे :

२२ मरहट्ठा छंद — मात्रा २९, ताळ ७.

मात्रा दश आठे, धर जति पाठे, उपर कळा अगियार,
मरहट्ठा नामे, कविता कामे, छंद बनावो सार;
छे गुरु लघु छेल्लो, एम ज मेलो, खेलो लावी खांत,
तजि बे चच्चारे, ताळ ज धारे, त्यारे थाय निरांत. ११०

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा गाल

आ छंद पद्मावतीने बहु ज मळतो छे. फरक एटलो ज छे के पद्मावतीनो अंत्य खंड दादा दादा दादा गा छे तेनी जगाए अहीं दादा दादा गाल छे. आ पछी त्रिभंगी लईए. ए पण पद्मावतीने मळतो ज छे.

त्रिभंगी : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा' दादा गा

आमां पद्मावतीथी आगळ जई आठ मात्राए एक यति वधारे छे अने एथी थयेला त्रणेय यतिखंडो एक ज प्रासथी सांधेला छे. लक्षणछंद जोईए.

२६. त्रिभंगी छंद — मात्रा ३२, ताळ ८

मात्रा दश आणो, आठ प्रमाणो, वळि वसु जाणो, रस दीजे,
अंते गुरु आवे, सरस सुहावे, भणतां भावे, त्यम कीजे;
लीलावति जेवा, ताळ ज देवा, त्रिभंगि तेवा, छंद करो,
जतिपर अनुप्रासा, धरिये खासा, सरस तमासा, शोधि धरो. ११९

द. पिं. पृ. १९

अहीं मध्ययतिओ अने आंतर प्रासो वधारेमां वधारे आवे छे. आ जातनी आगंतुक शोभा ज्यां ओछामां ओछी छे एवो हवे दुमिला लईए:

दुमिला: दा दादा दादा दादा दादा दादा दादा दादा गा

एनुं पठन जोवा लक्षणछंद जोईए:

२८. दुमिला छंद — मात्रा ३२, ताळ ८

वधिये मळि मात्रा बत्रिस छे, पण एक गुरू अंते धरिये,
विश्राम करी कळ सोळ कने, दुमिला ए विधिये आदरिये;
दुमिला गण मेळ थकी मळतो, कळ तो ते तुल्य गणी करिये,
तजि बे पछि ताळ तमाम तमे, गणि आठ धरो श्रुति आंतरिये. १३१

द. पिं. पृ. २२

अहीं पहेली बे मात्रा निस्ताल छे. पछी सात चतुष्कलो अने छेल्ले गुरु आवी बत्रीस मात्राओ थाय छे. ए रीते जोतां एम कही शकाय के रुचिरानी आगळ अहीं एक निस्ताल दा मूक्यो छे. पण एक बीजो फरक पण छे. रुचिरामां आठ आठ मात्राए यति आवे छे तेवी यति आमां नथी. आमां जे यति छे, ते पहेलो निस्ताल दा ते पछी त्रण चतुष्कलो पूरां थाय, अने पछी जे चोथुं चतुष्कल आवे तेनी वचमां यति आवे छे. बीजी रीते जोईए तो आमां सवैया जेटली ज ३२ मात्रा छे, ताल आठ छे, सोळ मात्राओ यति छे, छतां पहेली बे मात्राओ निस्ताल होवाथी आनुं पठन सवैया करतां तद्दन जुदुं छे. खरूं तो लीलावतीथी शरू करी अहीं सुधी जे छंदो लीधा ते बधानी ज ए खासियत छे के तेमां प्रारंभमां एक निस्ताल दा आवे छे. पण आ छंद सवैया जेवो ज सादो होवाथी तेनो सवैया साथेनो भेद खास स्पष्ट कर-. वानी जरूर रहे छे.

हवे चतुष्कलसंधि रचनाओमां छेल्ले हुं आर्यावर्ग लईश. आर्या छंद तो प्राचीन छे, घणुंखरुं प्राकृत साहित्य आर्यामां लखायुं छे, एने संस्कृत साहित्ये पण अपनावेल छे, पण एनुं बंधारण उपर आपी ते सर्व

चतुष्कल रचनाथी भिन्न प्रकारनुं छे तेथी तेने हुं छेल्ले लउं छुं. अत्यार सुधीना छंदो करतां तेनुं बंधारण पण वधारे अटपटुं छे, अने तेना बंधारणनी चर्चामां पिंगले घणी झीणवट वापरी छे, जे चतुष्कल रचना उपर बहु प्रकाश पाडे छे. हवे आपणे तेनुं दलपतरामे आपेलुं बंधारण जोईए, एम करतां ज्यां कंई नवुं उमेरवुं पडशे त्यां उमेरीशुं:

३३. गाथा अथवा आर्या छंद — मात्रा ५७, ताळ १५

सात चतुष्कळ ने गुरु, विषम चतुष्कळ विषे न जगण धरो;
छठ्ठे जगण, न लघु वा, बार कळाए विराम करो. १६४
ए आर्या पूर्वारध, अवर अरधमां विशेष शुं कहिये;
छेक चतुष्कळ छठ्ठुं, त्यां केवळ एक लघु लइये. १६५
प्रथम पछी चच्चारे, ताळ भला प्रथम अर्धमां दीसे;
पछि शशि शर नव तेरे, सत्तर बावीश छव्वीशे. १६७
द. पि. पृ. २६

आर्या द्विदल छे. तेना पूर्वार्धमां कुल सात चतुष्कल आवे पण तेमां विषम स्थाने कोई पण जगण न आवे. पण तेमां छठ्ठे स्थाने जगण अथवा न लघु एटले नगण उपरांत एक लघु अर्थात् सर्वलघु चतुष्कल आवे. दरेक दलमां बार मात्राए यति आवे. अने उत्तरार्धमां छठ्ठा चतुष्कलनी जगाए मात्र एक लघु आवे. पूर्वदलमां पहेली मात्राथी ताल शरू थई पछी चच्चार मात्राए ताल आवे. अने बीजा दलमां १, ५, ९, १३, १७, २२, २६ मी मात्राए ताल आवे. आपणी संज्ञामां आ नीचे प्रमाणे मूकी शकाय:

आर्या: { दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदाल दादा गा
दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल दादा गा ।।

एकी स्थाने दादा मूकवाथी त्यां जगण निरवकाश थई ज जाय छे. बेकी स्थाने दद्दा मूकवाथी जगण सहित सर्व चतुष्कलोने अवकाश मळे छे. छठ्ठे स्थाने लदाल मूकवाथी जगण अथवा सर्वलघु एनी मेळे आवश्यक बने छे. कारण के लदालना ए बे ज पर्यायो छे. एटले दलपतरामनुं लक्षण आटलामां आवी जाय छे. ते उपरांत जणाशे के में दरेक दलने अंते गुरु मूक्यो छे, तेने आर्यानुं लक्षण गणवुं जोईए. आ उपरांत खास कहेवानुं ए के लदालने स्थाने लगाल न होय अने सर्वलघु एटले लललल होय त्यारे पहेला लए शब्द पूरो थवो जोईए, एवुं सर्व संस्कृत पिंगलोनुं विधान छे. '(छं. शा. ४, १८ वगेरे) एनुं एक दृष्टान्त गुजरातीमां नीचे मूकुं छुं:

रक्षो लक्षणवन्तो, देवोए मुकुटमणिथि पूजेलो,
दशमुख अंगूठाए, चांप्यो ते रुद्रनो पाद।।

'भगवदज्जुकीय'ना मंगलनो अनुवाद

प्रथमार्धनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थशे :

गागा गालल गागा' गागा गालल ल'लल गागा गा

अहीं छठ्ठो गण सर्वलघु लललल छे, अने तेना पहेला लघुए 'मुकुट' शब्द पूरो थाय छे. वळी एक विशेष नियम ए छे के छठ्ठो गण जगण अथवा सर्वलघु आवी गया पछी जो सातमो गण सर्वलघु आवे तो तेना आदिथी ज शब्द शरू थवो जोईए.' तेनुं दृष्टान्त दलपतरामनी लक्षणनी पहेली आर्यामांथी

---

४. आ स्थाने हलायुध अने बीजी बाजु 'वृत्तरत्नाकर'–'छंदोमंजरी' भिन्न-भिन्न अभिप्रायो आपे छे. उपर आपेलो अभिप्राय हलायुधनो छे. ते स्पष्ट कहे छे, "षष्ठे गणे मध्यगुरौ सर्वलघौ वा जाते सप्तमो गणः सर्वलघुश्चेद्भवति, तदा प्रथमाक्षरादारम्य पदं प्रवर्तते।" (छं. शा. ४, १९ उपरनी टीका) अने दृष्टान्तो पण बन्ने प्रकारनां आपे छे. एकमां छठ्ठा जगण पछी सर्वलघु आवे छे, बीजामां छठ्ठुं चतुष्कल सर्वलघु छे, अने सातमुं पण सर्वलघु छे. 'वृत्तरत्नाकर' अने 'छन्दोमंजरी' पण आ बाबतमां स्पष्ट छे. 'छन्दोमंजरी'नो टीकाकार श्रीरामधन भट्टाचार्य स्पष्ट कहे छे, "षष्ठे जगणे तु नास्ति काऽपि व्यवस्था इति पर्यवसितम्।" (छं. मं. क. पृ. २०२.) पण मूळ 'छंदःशास्त्र' जोतां मने हलायुधनो अर्थ साचो लागे छे. "षष्ठो ज्" (४, १६) छठ्ठो गण जगण होय. "न्लौ वा" (४, १७) अथवा न–ल चतुर्लघु होय. "न्लौ चेत् पदं द्वितीयादि।" (४, १८) छठ्ठो गण जो चतुर्लघु होय तो पद बीजा लघुथी शरू थाय. "सप्तमः प्रथमादि" (४, १९) आखां वाक्यो बेसाडतां नीचे प्रमाणे अन्वय थाय छे. "षष्ठो न्लौ चेत् पदं द्वितीयादि" अने "सप्तमः न्लौ चेत् पदं प्रथमादि" अर्थात् छठ्ठो चतुर्लघु होय तो पद बीजा लघुथी शरू थाय, सातमो चतर्लघु होय तो पद प्रथम लघुथी शरू थाय. आ ज अन्वय आ पछीना सूत्रमां चाले छे. "अन्त्ये पञ्चमः" (४, २०) "अन्त्यार्धे पंचमः न्लौ चेत् पदं प्रथमादि" अर्थात् द्वितीयार्धमां पांचमो गण चतुर्लघु होय तो पद पहेला लघुथी शरू थाय. हेमचंद्र पण आ ज अभिप्रायने अनुसरे छे एम मानुं छुं. तेनुं सूत्र छेः "षष्ठे ले लाद्द्वितीयात् सप्तमे चाद्यात्पदमन्यार्द्धे च पञ्चमे।" छठ्ठो न-ल होय त्यारे बीजा लघुथी पद शरू थाय, सातमो न–ल होय त्यारे आद्य लघुथी पद शरू थाय अने बीजा अर्धमां पांचमो न–ल होय त्यारे पण आद्य लघुथी शरू थाय. (छन्दोनु० २७अ) पण हलायुधनो मत स्वीकारवानुं मारुं कारण तो मेळवनुं छे जे आगळ स्फुट थशे.

मळी रहे छे. तेना पूर्वार्धमां 'विषे न' एवो जगण छे. ते पछी सर्वलघु 'जगण ष' आवे छे तेमां पहेली मात्राथी ज नवो शब्द शरू थाय छे. आवो ज द्वितीयार्ध विशे एवो नियम छे के तेनो पांचमो सर्वलघु होय तो तेमां पण आद्य लघुथी ज शब्द शरू करवो. दृष्टान्त माटे, हलायुधे मुंजना अनेक श्लोको आप्या छे, तेमांथी एकनुं गुजराती मूकुं छुं:

जय हो मुंज नृपतिनो, सहु अर्थिजनो तणो ज कल्पतरु।
सामन्तचक्रमेरू, दाता अनवरत दानोनो ॥

द्वितीयार्धमां पांचमो गण (अनवर [त]) सर्वलघु छे अने त्यांथी ज नवो शब्द शरू थाय छे.

पिंगळीए आर्याना अनेक विभागो दर्शाविला छे, जेमके, बीजे चोथे स्थाने जगण अवश्य होय तेने चपला कहेली छे, अने वळी चपलाना पण तरेहवार नामोवाळा विभागो आपेला छे, पण हुं तेने महत्त्व आपतो नथी. मात्र एक विभाग तरफ ध्यान दोरुं छुं, केम जे ए आर्याना स्वरूप उपर अमुक दृष्टिए प्रकाश पाडे छे. आपणे उपर जोयुं के आर्यामां त्रण चतुष्कले एटले बार मात्राए यति आवे छे. जे आर्यामां एम यति न आवे तेने विपुला कहेली छे. आ यतिनो अभाव बन्ने पादमां होय अथवा हरकोई एकमां ज होय. विपुलाथी भिन्न एटले बन्ने सयतिक दलवाळी आर्याने पथ्या आर्या कहेली छे. आपणे अहीं सुधी जेना लक्षणनी चर्चा करी ते पथ्या आर्या छे.

विपुला प्रकार यतिना अभावथी ज थाय छे, पण 'रणपिंगल' तेनुं निरूपण जुदी रीते करे छे. त्रीजा गणनो शब्द बार मात्रा उल्लंघीने ज्यां सुधी जाय त्यां यति आवे तेने ए विपुला कहे छे:

त्रीजा गणकेरो शब्द, ज्यां पुरो थाय त्यां विरति आणो;
विपुला आर्या त्रण जातिनी, बने छे खरूं जाणो. ६५

रणपिंगल पृ. १०६

अने 'रणपिंगले', उपरनी विपुलामां बारमी मात्रा पछी ज्यां शब्द पूरो थाय छे त्यां यतिदर्शक अल्पविराम पण करेलुं छे. 'छन्दःसूत्र'नो के हलायुधनो के हेमाचार्यनो मत आवो जणातो नथी. तेओ बन्ने यतिना अभावने ज विपुलानुं लक्षण गणे छे. पण 'वृत्तरत्नाकर' कहे छे के विपुलानो पाद आद्य गण-त्रयने ओळंगीने जाय छे, अने टीकामां नारायण भट्ट एनो एवो अर्थ करे छे के पादनी यति त्रण गणने ओळंगीने जाय ते विपुला. ते उपरथी 'रणपिंगले'

आवा मतनो उल्लेख कर्यो जणाय छे. पण ज्यां शब्द पूरो थाय त्यां यति मानवी ए अनवस्था छे. छतां आ मत परोक्ष रीते यतिशैथिल्य उपर प्रकाश नाखे छे ए रीते महत्त्वनो छे. 'रणपिंगल' विशेष कहे छे के "जेनो कोई भाग विपुल एटले विस्तारवामां आवे ते विपुला कहेवाय" ए नोंधवा जेवुं छे.

आर्यानां ज दलोना भिन्नभिन्न विन्यासोथी नवानवा छंदो कर्या छे ते जोईए. आर्याना प्रथमार्धने ज बेवडीने द्विदल करवाथी गीति थाय छे:

३४ गीति छंद — मात्रा ६०, ताळ १६

गाथा पूर्वारध सम, ए ज मुजब उत्तरार्ध पण आणो;
गुणिजन गणजो गीती, जरुर तफावत जरा नहीं जाणो. १७०
द. पिं. पृ. २६

आर्याना उत्तरार्धने ज बेवडवाथी उपगीति थाय छे:

३५ उपगीति छंद — मात्रा ५४, ताल १४

आर्या उतरारध सम, पूर्वारध प्रेमथी करिये;
ए कविता उपगीति, अद्‌भुत जुक्तीथि आदरिये. १७३
द. पिं. पृ. २७

आर्यानां बन्ने दलो उलटाववाथी उद्‌गीति थाय.

३६ उद्‌गीति छंद — मात्रा ५७, ताल १५

उतरारध आर्यानुं, पूर्वारध जो गणो प्रीते;
पूर्वारध सम पछिनुं, ते उद्‌गीती रचो रसिक रीते. १७४
द. पिं. पृ. २७

दलपतरामे नहीं आपेल एक ज प्रकार आमां उमेरुं छुं, ते स्कंधकनो. गीतिने अंते एक गुरु उमेरी कुल ३२ मात्रा करवाथी स्कंधक थाय छे. मात्र दृष्टान्त खातर आगळ आपेली एक आर्यामां जरा फेरफार करी मूकुं:

जय हो मुंज नृपतिनो, सहु अर्थिजनो तणो ज जे कल्पतरु;
सामन्तचक्रमेरु, दाता अनवरत दानने कर्ण समो.

अहीं हुं चतुष्कल रचनाओ पूरी करी त्रिकल रचनाओ लउं छुं. त्रिकल संधि माटे हुं दाल संज्ञा राखीश. आमां त्रिकल गाल अने ललल ए बन्ने पर्यायो आवी जाय छे. पण, त्रीजो पर्याय लगा नहीं आवी शके. पण चतु-

ष्कलोमां दादामां नहीं आवतो जगण — लगाल, बीजां चतुष्कलोथी भिन्न राखवानी जरूर हती तेवी कोई जरूर लगा विशे नथी, एटले दालने आपणे त्रिकलना त्रणेय पर्यायोनी संज्ञा गणीशुं.

दलपतरामे त्रिकलना ज गणाय एवा बे ज छंदो आपेला छे. तेमांनो एक तो छ ज मात्रानो वाम छंद छे ते मने स्वीकारयोग्य लागतो नथी. मात्र एक कौतुक छे. अने ए जतां पछी मात्र हीर छंद रहे छे. तेनुं लक्षण जोईए :

१८ हीर छंद — मात्रा २३, ताळ ८

त्रेविश कळ, लावि सकळ, मित्र प्रबळ, प्रेमथी,
आदि उपर त्रण त्रण पर, ताळ तुं धर नेमथी;
शास्त्र अंत, शास्त्र अंत, विरतिवंत, तोय ते,
आदि दीर्घ, अंत रगण, हीर छंद, होय ते. ९९

द. पि. पृ. १६

कुल त्रेवीश मात्राओ, तेमां पहेली मात्रा पर अने पछी त्रण त्रण मात्रा उमेरतां जतां ताल नांखवा. छ छ मात्राए यति राखवी. चरणना प्रारंभमां गुरु आवे अने अंते रगण गालगा आवे. तेनी आपणी संज्ञामां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

हीर : गाल दाल' दाल दाल' दाल दाल' गाल गा

आ पछी हुं आ वर्गमां महीदीप मूकुं छुं, जोके दलपतरामे तेना तालनी व्यवस्था त्रिकलथी नहीं पण षट्कलथी करी छे. आपणे प्रथम तेमनुं लक्षण जोईए :

१७ महीदीप छंद — मात्रा २२, ताल ४

बाविश कळ सकळ अंत, जुगल दीर्घ दीजे,
बार कळ उपर विराम, महीदीप कीजे;
प्रथम उपर खट खट पर, ताळ सरस तेमां,
सुणतां पद सरस दिसे जुक्ति सरस जेमां. ९५

द. पि. पृ. १५

अर्थात् कुल २२ मात्रा, अंते बे दीर्घ, बार बार मात्राए यति, ताल पहेली मात्राथी शरू थई पछी छ छ मात्राए आवे.

हवे दलपतरामे आमां छ छ मात्राए ताल कह्यो छे, पण पठन करतां तरत जणाशे के आमां त्रिकलो जुदां पडे छे, अने हीर छंदनी पेठे ज त्रण त्रण मात्राए ताल नांखी शकाय छे:

| | | | | | |
दाल दाल दाल दाल' दाल दाल गागा

एम करी शकावे. मात्र एक ज जगाए ए नहीं बनी शके — छेल्ली पंक्तिमां. छेल्ली पंक्तिनो लगात्मक न्यास नीचे प्रमाणे थशे :

ललगालल ललल लगा गाल ललल गागा

पहेली छ मात्रानां बे त्रिकलो नथी पडी शकतां. पण एम ताल क्यांक 'लगीरक' तूटतां आपणे रचना सदोष कहेता नथी, एटले हुं आने पण त्रिकल रचना ज गणीश.

आ रचनामां एक बीजी बाबत पण नजरे पडशे. हीर छंदमां आखी पंक्तिमां त्रिकलना बे ज पर्यायो गाल अने ललल ज आवता हता. आमां ते बे उपरांत लगा पण जणाय छे. बीजी पंक्तिमां 'महीदीप' शब्द आवे छे ते लगागाल छे. पण लगानो पण आपणे दालमां समावेश कर्यो छे एटले उपर आपेली उत्थापनिका बराबर छे.

पण आ स्थाने आपणे षट्कलने त्रिकल मात्रामेळ रचनामां स्थान तो आपवुं जोईए. जेम चतुष्कल रचनामां दालगालदा अने लदागालदाने आपणे बे चतुष्कलनी जगाए स्वीकारता हता तेम अहीं षट्कलने बे त्रिकलनी जगाए स्वीकारवुं जोईए. एनी संज्ञा दादादा करीशुं.

हवे त्रिकल रचनाओमां हुं दिंडी लईश. 'दलपतपिंगल'मां के नर्मदाशंकरना पिंगलमां के 'रणपिंगलमां' आनो निर्देश नथी. तेनुं कारण स्पष्ट ए छे के आ मराठी साहित्यमांथी नवो अपनावेलो छंद छे. तेनी पिंगलचर्चा सौथी पहेली के. ह. ध्रुवे 'पद्यरचनाना प्रकारो'ना निबंधमां करेली छे. तेओ कहे छे:

"मात्राबंधमां अने अक्षरबंधमां प्लुततत्त्वने स्थळ आपवानुं मान आपणा दक्षिणी बंधुओने छे. दिंडी ए एक मात्राबंद्ध रचना छे. एनुं उदाहरण :—

दिंडी

मोहफंद नांखि जाय कां उडी तूं —
तरुडाळ? पंखि! बाळ छां हजी तूं,
मधुर किलकिलाट गान सांज व्हाणे
विविधवरण मेघशरण कां न माणे?

|
आमां दाल संधिनी पांच आवृत्ति पछी 'च' संधि आवे छे. ए 'च' संधिनुं प्रथम द्रुकल प्लुत बोलवानुं छे, माटे त्यां दीर्घ स्वरनो उपयोग अर्थापन्न

छे. 'च' संधिनुं बीजुं दुकल चरणने अंते होवाथी पूर्वना दीर्घनो प्रतिध्वनि बनी दीर्घ किंवा गुरु ज होवो इष्ट छे. आ रीते दिंडीना चरणमां दाल संधिनी पांच आवृत्ति पछी बे गुरु सिद्ध थाय छे. एमांनो उपान्त्य गु प्लुत छे." (सा. वि. २, ३०५)

अहीं एक साथे घणा प्रश्नो उपस्थित थाय छे. प्रथम तो ए के दिंडी सिवाय गुजरातीमां जे जे मात्रामेळ रचनाओ प्रसिद्ध छे, तेमां क्यांई प्लुत आवतो ज नथी? बीजो ए के जो प्लुत कहेवो होय तो साथे साथे केटली मात्रानो प्लुत ए पण कहेवुं जोईए. अने उपान्त्य गुरु पछी जे बीजो गुरु आवे छे ते मात्र प्रतिध्वनि माटे ज छे, अने पोते पण प्लुत नथी? अने सौथी महत्त्वनो प्रश्नो तो ए छे के मराठीमांथी जे दिंडी छंद गुजरातीमां लीधो छे तेनुं मूळ स्वरूप दालनां ज आवर्तनो छे के कंई जुदुं? आ बधा प्रश्नो जाति छंदोना मेळमां हुं हाथ लईश. हमणां तो के. ह. ध्रुवे जे कंई कह्युं ते रजू करवुं एटलो ज उद्देश छे. तेमना प्रमाणे दिंडीनी उत्थापनिका नीचे प्रमाण थाय :

दिंडी: दाल दाल दाल दाल दाल गागा

जेमां उपान्त्य गुरु प्लुत छे. तेना पर ताल के. ह. ध्रुवे नथी कह्यो पण ताल स्पष्ट छे एटले मूक्यो छे. आ संबंधो बर्वेए अने सद्गत नरसिंहरावे चर्चा करी छे पण तेनुं स्थान मेळनी चर्चामां छे, अहीं नथी. अहीं तो मात्र एक त्रिकल रचना तरीके आ छंद स्वीकारायो छे ते तरफ ध्यान खेंचवानो ज उद्देश छे. अहीं त्रिकल रचनाओ पूरी करुं छुं, अने पंचकल रचनाओ हाथमां लउं छुं.

पंचकल रचनाओमां सौथी पहेली गुजराती पिंगलोए नहीं आपेली मदनावतार नामनी रचना लउं छुं. 'कविदर्पण' (उल्लास, १, २२, उदा० ३७) अने 'छन्दोनुशासन' बन्ने ए आपे छे. एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

मदनावतार: दालदा दालदा दालदा दालदा

अर्थात् पंचकल दालदानां चार आवर्तनोनो एक पंक्ति. आ विशे विशेष कहेवा पहेलां हुं बन्ने ग्रंथोमांथी तेनां उदाहरणो आपुं छुं:

रोसगुरुगिरिसविसमच्छिमुच्छंतए
पलयजलणम्मि गयणंमि गच्छंतए।

तंमितम्मंतरइववयणनलिणे खणे
को खमो हुज्ज मयणावयारक्खणे ॥ ३७॥

कविदर्पण, .. ८५

गिज्जंति गीईओं पिज्जंति मइराओं
नच्चंति वेसाओं परिल्हसिअकेसाओं।
एवमन्नोन्नपरिरंभणासारए
कीलंति रामाओं मयणावयारए॥

छन्दोनु० पृ. ३३ब

बराबर पाठ करतां जणाशे के 'कविदर्पण'ना दृष्टान्तमां सर्वत्र दालदा संधि बेसी जशे. आवी रीते: पलयजल, णंमिगय, णंनिग, च्छन्तए वगेरे. पण 'छन्दोनुशासन'नुं पठन करतां दालदा सिवायना पंचमात्रक संधिओ तेमां भळेला जणाशे. स्पष्ट पंचकलो दर्शाववा हुं संधिओने लगात्मक रूपमां मूकुं छुं:

गागाल गागाल गागाल ललगाल
गागाल गागाल लललल गागाल।
गालगा गाललल गालगा गालगा
गागाल गागाल ललगाल गालगा ॥

अहीं दादाल अने दालदा बन्ने संधिओनुं मिश्रण जणाशे. आवां मिश्रणो थई शके के केम ए चर्चा मेळना अंगनी छे, ते आपणे आगळ करीशुं.

आनी पछी हुं गमक लउं छुं. वपराटनी दृष्टिए आ महत्त्वनो नथी, अने बहु ज टूंको छे, छतां एना संधिना स्वरूपनी खातर तेने लउं छुं. तेनी उत्थापनिका:

गमक: दादाल

एटली ज थाय. दलपतराम तेनुं लक्षण नीचे प्रमाणे आपे छे:

१ गमक छंद—मात्रा ५, ताळ १

कळ बाण, पद जाण, ते गमक, पद समक. १
त्रीजी ज, कळ कीज, त्यां ताळ, संभाळ. २

अर्थात् पांच मात्रानुं चरण, तेमां त्रीजी मात्रा उपर एक ताल. हवे हुं प्रसिद्ध झूलणा लउं छुं. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

झूलणा: दालदा दालदा' दालदा दालदा' दालदा
दालदा' दालदा गा

दस दस मात्राए यति अने दालदानां सात आवर्तनो पछी एक गुरु एम एक चरण थाय. हुं तेना दृष्टान्त तरीके नरसिंहनी कडी लउं छुं,

निरखने गगनमां कोण घूमी रह्यो,
ते ज हुं ते ज हुं शब्द बोले;
श्यामना चरणमां इच्छुं छूं मरण रे
अहींयां कोइ नथि कृष्ण तोले.

न. का. सं. पृ. ४८४

आमां स्पष्ट रीते दालदानां आवर्तनो छे. पण 'अहींयां' शब्दमां लदादा आवे छे, ए नोंधवा जेवुं छे.

पंचकलना कुल त्रण पर्यायो थाय: दालदा, लदादा, दादाल. तेमां गमकमां आपणे दादाल संधि जोयो पण ते बहु टूंको छे, अने तेमां दादालनुं एक ज आवर्तन थाय छे, तो हवे बे आवर्तनवाळो दीपक लईए:

दीपक छंद—मात्रा १०, ताळ २[५]

दस मात्रिका देख,
गुल अंत गणि लेख;
दीपक नकी नाम,
छे छंद सुखधाम. ३०

त्रीजी अने आठ,
त्यां ताळनो ठाठ;
पण पांचमी मात्र
ते लघु तणुं पात्र. ३१

द. पिं. पृ. ९

अहीं ताल बहु अटपटी रीते बतावेलो छे. त्रीजी पछी आठमी उपर ताल कह्यो छे एटले पांच मात्राने अंतरे ताल ठर्यो अने संधि पंचकल थ्यो. पठनथी तरत समजाशे के उत्थापनिका

दीपक : दादाल दागाल (ताल: दा, दा)

ए प्रमाणे छे.

---

५. मूळमां ३ ताल छपाया छे ते देखीतो पाठदोष छे.

पंचकलना अहीं आवता त्रण संधिओ दालदा लदादा अने दादाल ए एक ज पंक्तिमां आवी शके के नहीं ए प्रश्न मेळनो छे, जे आपणे पंचकल छंदोना मेळनी चर्चामां हाथ धरीशुं.

ए पछी आपणे सप्तकल संधिना छन्दो लईए. तेमां प्रथम हरिगीत लउं छुं:

| | | | | | | |

हरिगीत: दादालदा दादालदा दादालदा दादालगा

आ संधिमां बे ताल छे ए एनी विशेषता छे. तेमां यति चौदमी के सोळमी मात्राए आवे छे. आपणे दलपतरामनुं लक्षण लईए.

२० हरिगीत छंद — मात्रा २८, ताळ ८

| | | | | | | |

कळ सकळ अट्ठावीश मां, गुरु अंतमां ए रीत छे,
शणगार के रत्ने जतो, मनहरण ते हरिगीत छे.
त्रीजी उपर पछि त्रण चतुर पर, एम आठे ताळ छे,
ते ताळमां जो जगण तो, न कहीश छंद रसाळ छे. १०५

द. पिं. पृ. १७

पहेलो ताल त्रीजी मात्रा उपर आवे, अने पछी त्रण अने चार एम एक पछी एक उमेरतां जे मात्राओ आवे ते उपर ताल पडे. एटले के ३ ६ १० १३ १७ २० २४ अने २७ ए मात्राओ उपर ताल पडे, अंते गुरु आवे, सोळ के चौद मात्राए यति आवे. उपरना छंदमां १, २, ४ पंक्तिओमां चौदमी मात्राए यति छे, अने त्रीजी पंक्तिमां सोळमी मात्राए यति छे, जे बधी अल्पविरामथी दर्शावेली छे. आनी पहेली बे मात्रा छोडी नर्मदाशंकरे नवो हरिगीत रच्यो छे:

| | | | | | | |

विषमहरिगीत: दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल गा

अहीं संधि दादालदा ने बदले दालदादा थाय छे, जे सप्तकलनो एक भिन्न पर्याय ज छे. बन्ने प्रकारोनां मिश्रण थाय छे. आ छंदने नरसिंहरावे विषम-हरिगीत नाम आप्युं. नरसिंहरावे एक खंडहरिगीत नामनी नवी रचना प्रयोजी छे ते जोईए:

ऊछळी उल्लासथी
सिन्धु-उर पर राजता
हसे उज्ज्वल हासथी
थणगण तरंगो आज आ; १

स्मरणसंहिता पृ. १

बेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दा दालदादा दालगा

बीजी एक वैचित्र्यमय रचना जोईए जेने श्री खबरदारे मिश्रहरिगीत कहेली छे.

ओ मेघ वृष्टी लावजे
तुज रेल अहिं रेलावजे!
गडगड करी,
भडभड भरी,
रणवाद्य तुज वगडावजे! —
धरणी विषे कंई तापना संताप छे,
पूंठे पड्यां मनहरमुखी कंइ पाप छे;
ए सर्वने तुज रेलमां घसडी जई होमावजे;
ओ मेघ! कर कर वृष्टि! दुर दुर सर्व ए व्हेवडावजे.

'मेघने,' विलासिका

स्पष्ट रीते आमां सप्तकल संधिनां भिन्नभिन्न संख्यानां आवर्तनो छे. एम आ रचनानुं पृथक्करण सरल छे.

आनाथी अर्ध संख्यानी मात्रानी पंक्तिनो उधोर छंद छे, पण तेनो संधि हरिगीत करतां जरा भिन्न छे. ए संधि छे दादादाल. आपणे दलपतरामनुं लक्षण पहेलुं लईए:

१० उधोर छंद—मात्रा १४, ताळ ६

मात्रा चौदनुं पद मान, गुल अंते उधोर प्रमाण;
ताळो एक त्रण शर आठ, दश ने बार पर पण पाठ. ५६

द. पि. पृ. ११

एक पंक्तिमां चौद मात्रा, अंते गुरु लघु आवे, अने ताळो १, ३, ५, ८, १० ने १२ मात्राओ पर पडे. आ रीते एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दा दा दा ल दा दा गा ल

स्पष्ट रीते आ सप्तकल छे, पण हरिगीतना सप्तकलमां बे ज ताल हता, आमां दलतपरामे त्रण ताल नांख्या छे. ते हुं मानुं छुं के बधी सप्तकल

रचनानो समग्र रूपे विचार नहीं करवानुं परिणाम छे. जो हरिगीतनी पेठे आ उपर ताल नाखवा होय तो दा दा दा ल एम तालो पडे. आनाथी पण टूंको, आना अर्ध जेटलो कंता छंद दलपतरामे आपेलो छे, तेमां आ ज संधि छे, पण ताल में अहीं सूचव्या प्रमाणे (एटले के दा दा दा ल) छे. छंद में क्यांय वपरायो जोयो नथी पण मात्र सरखामणी माटे लउं छुं:

३ कंता छंद — मात्रा ७, ताळ २

मुनि कळवंत, गुरु लघु अंत, कंता छंद, छे सुखकंद. २०
पृथ्वी पांच, ज्यां कळ वांच, त्यां धर ताळ, भणि संभाळ. २१

द. पिं. पृ. ८

ताळ पृथ्वी एटले पहेली अने पछी पांचमी मात्राए छे.

सप्तकल संधिना कुल चार पर्यायो थाय. तेमां दादालदा हरिगीतमां आवे छे. दालदादा खंडहरिगीतमां आवे छे. दादादाल उधोरमां आवे छे. अने बाकी रहेल लदादादा ते हरिगीतमां अने खंडहरिगीतमां मिश्रण तरीके आवे छे.

मात्रासंधिओमां आटला ज संधिओ आवे छे. तेमां सौथी सादो त्रिकल छे, अने सौथी अटपटो सप्तकल छे.

आ उपरांत अहीं आवी गयेला छंदोनां मिश्रणोथी नवा छंदो बने छे ते हवे जोईए.

मिश्रणोमां सौथी पहेलो कुंडळियो दलपतराम ले छे:

३७ कुंडळिया छंद — मात्रा १४४.

कुंडळियो करतां करो, आदि दोहरो एक,
वळती चोथा चरणने, उलटावो धरि टेक;
उलटावो धरि टेक, काव्यनां चार चरण सम,
चरण रचो शुभ चार, छ पद थाशे सघळां त्यम;
प्रथम चरणनो प्रथम, शब्द छेवट जो भळियो,
छे ते रूडो छंद, कहे कविजन कुंडळियो. १७५

द. पिं. पृ. २७

आमां दोहरानुं अने रोळानुं मिश्रण छे. तेमां दोहरानां बे दल आवे छे अने रोळानी चार पंक्तिओ आवे छे. दोहराना उत्तरार्धनो छेल्लो यतिखंड दादा दादा गाल एटलो भाग रोळा शरू थतां तेमां फरी आवे छे. एम करवाने

पूरी सगवड छे कारण के रोळानो पहेलो यतिखंड बराबर ए ज प्रमाणे छे. छेल्ले कह्युं छे के ए रोळाना अंतमां दोहराना प्रथम चरणनो प्रथम शब्द मूकवो. एने माटे दलपतरामे आपेलुं दृष्टान्त अहीं उतारुं छुं:

नहि डोले जो नाग तो, नहि वंशीनो नाद,
जंगम जन थिर थाय नहि, सुणि कवितानो साद;
सुणि कवितानो साद, मरद मादा नहि डोले,
नहि कविता ते ठाम, बराबर बकरो बोले;
कहे कवि दलपतराम, नाम धिक खोटुं खोले,
धिक वंशी वानार, नाग सुणि जो नहि डोले. १७६

एजन पृ. २७–२८

खरी रीते रोळाने अंते दोहराना प्रारंभनां बे चतुष्कलो आवे छे अने तेमां अर्थने अनुकूळ रीते शब्दोनो क्रम पण बदलाय छे ते आ दृष्टान्तमां जणाशे. अहीं बे रचनाओ जुदीजुदी रहेती नथी पण रहेणाईने एक थई जाय छे, ते ध्यानमां राखवा जेवुं छे. दोहरानो छेल्लो यतिखंड रोळामां फरी आववाथी रचनाओ भिन्न छतां एक थई जाय छे, अने प्रारंभना अने छेवटना शब्दो एक थवाथी आमां छंदने एकत्व मळे छे. चारणी रीते पठन करवाने आ छंद बहु ज अनुकूळ छे.

गुजराती पिंगळोमां कुंडळियानो आ एक ज प्रकार प्रसिद्ध छे पण आवां मिश्रणो बीजा छंदोनां पण थाय छे. आने ज मळती मिश्र रचना कुंडलिनी छे तेमां आर्या अने रोळानुं मिश्रण आवे छे. हुं मानुं छुं दलपतरामे आपेली रचनामां दोहरो पुंल्लिग छे माटे ए रचनाने कुंडळियो कह्यो छे, अने आ रचनामां प्रथम आर्या स्त्रीलिंग छे एटले आने कुंडलिनी कही छे. खरी रीते पहेलीने दोहरा-कुंडळियो, अने बीजीने आर्या-कुंडलिनी कहेवी जोईए. पहेलीमां दोहरानी जगाए सोरठा जेवी दोहरानी बीजी रचना आवी शके छे, अने ए ज रीते आर्याकुंडलिनीमां आर्या जेवी गीति उपगीति वगेरे रचनाओ पण आवे छे. कुंडलिनीनुं लक्षण 'रणपिंगल'मां नीचे प्रमाणे छे:

२२. कुंडलिनी, कुंडलिणो (आर्या-कुंडलिनी) मात्रा १५३

धरिने प्रथम ज आर्या अंत पदनि कुंडली फरी करजो;
तेम थतां रोळा पद, सरखुं आवे त्यम ज धरजो;
सरखूं आवे त्यम ज, तमे पछि रोळा रचजो;
तेमां कल चोवीश, नियमसर रचवा मचजो;

आदि रचेला बोल, उचारो अंते फरिने;
रचजो कुंडलिनी ज, प्रथममां आर्या धरिने. २००

रणपिंगल १, पृ. १८२–३

आ उपरथी जणाशे हशे के आमां रचनानी मुख्य खूबी ए छे के बे स्वतंत्र छंदो, पहेलाना अंत्य पदना बीजाना आदिमां थता आवर्तनथी जोडाई जाय छे, अने बीजाना अंतमां पहेलाना आद्य चरणना शब्दो फरी आवी एक आखो सुबद्ध छंद बने छे.

दलपतरामे पिंगलमां तो एक ज कुंडळियानो प्रकार आपेलो छे पण तेमनां काव्योमां एक बीजो प्रकार मळी आवे छे तेने कुंडळिया–तोटक कहीशुं. प्रथम तेनुं लक्षण 'रणपिंगल'मांथी लउं छुं:

१३. कुंडळिया-तोटक, मात्रा ११२

तेर अने अगियारनां, चरण रचीने चार;
एम करीने दोहरो, ते पर तोटक धार.
धर तोटक ते पर प्रेम धरी, उलटी तुक चोथि दुहानी करी;
रच तोटक कुंडलिया सरखा, कविता करि एम पछि हरखा.

र. पि. १, १४१

आनो दलपतरामे करेलो प्रयोग:

घाव टळे तरवारनो, तीर तणो पण तेम;
कदी न रुझे कथननो, जीव कपायो जेम;
ज्यम जीव कपाय रुझाय नहीं, कथनोनि पिडा पण तेम कही;
घटमांहि करे ज कलेश घणो, कदि घाव टळे तरवार तणो. १२

'विजयविनोद' दलपतकाव्य–२, पृ. १८०

आवी एक बीजी मिश्र रचना 'रणपिंगल' आपे छे, जेनुं सामान्य नाम चूडाणा छे. तेमां पंचा नामना जातिछंद साथे आर्याकुलना छंदने जोडवामां आवे छे. पंचा आ सिवाय अन्यत्र नोंधायो नथी. एनुं लक्षण 'रणपिंगल' नीचे प्रमाणे आपे छे. :

पंचा

पूर्वार्ध ६+४+२ ; ६+२+गु+ल = २३
उत्तरार्ध ६+४+२ ; ६+२+गु+ल = २३

मारी रीते तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

पंचा : दादा दादा दादा, दादा दादा गाल

खरी रीते आ रोळा ज छे, मात्र तेनां अंते दागाने बदले गाल मूकेलो छे. एटले के चूडाणा रचनामां पण रोळानो ज प्रकार आवे छे. हवे आपणे आ मिश्र रचनाओ जोईए.

२६ चूडाणापंचागाहा (आर्या) कुंडलिनी मात्रा १०३

पंचा एक ज आणी, ते पर गाहा धार,
चूडाणाकुंडलिनी, एवी छे सुखकार;
एवी छे सुखकारी, पंचागाहा तणे भले नामे;
कविजन कविता करवा, जोडे छे आपने कामे. २०४

र. पि. पृ. १९४

आ विषे विशेष कहेवानी जरूर नथी. पंचानी जगाए दोहरो के तेनुं कोई रूपान्तर आवी शके छे. तेम ज आर्यानी जगाए तेनुं कोई रूपान्तर आवी शके छे. जेम के

२७ चूडाणा उपदोहा विगाहा (सद्‌गीति) कुंडलिनी मात्रा १०५

उपदोहो रच एक, जेने कें छे सोरठो,
ते पर राखो टेक, राख विगाहा शोभती;
राख विगाहा रूडी, जे उद्‌गीती तणे नामे;
उपदोहा वीगाहा, चूडाणाकुंडलिनि बने आमे. २५०

र. पि. १, पृ. १९५

अहीं सुधीनी बधी कुंडळिया रचनाओ एक ज प्रकारना छंदोना मिश्रणनी छे, केम जे दोहरा आर्या रोळा बधी चतुष्कल रचनाओ छे. पण भिन्न प्रकारना छंदोना कुंडळिया पण मळे छे. 'छंदःकोष' एवा बे छंदो आपे छे: चंदायणो अने चंदायणी. पहेलो दोहरो अने कामिनीमोहन[६] जेने आपणे अहीं मदनावतार

६. 'छन्दःकोष' कामिनीमोहनना लक्षणमां तेने रगण एटले गालगानां आवर्तनोथी बनेलो कहे छे. मत असलोइ रगणण संजुत्तयं, (छं. को. श्लो. १०) अर्थात् रगण संयुक्त ऐंशी मात्रानो कहे छे. एटले 'छंदःकोष'ने मते आ आवृत्तसंधि अक्षरमेळ थाय. पण आगळ चंदायणामां अने चंदायणीमां जे कामिनीमोहन आवेलो छे, जेने में आखो ज उतारेलो छे, ते पाछो रगणात्मक नथी, तेमां दालदा मात्रामेळी संधि आवे छे, एटले में एने मदनावतार गणी शकीए एम कहेलुं छे.

गणी शकीए तेनो, अने बीजो आर्या अने कामिनीमोहननो बनेलो छे. पहेलां जोई गया ते प्रमाणे छंदनी जाति दोहरा अने आर्या उपरथी निर्णीत थई छे. हुं दृष्टान्तो मूळमांथी ज लउं छुं.

चंदायणो

सो चंदायणु छंदु फुडु। जहि धुरि दोहा होई।
अइ कोमलु जणमणुहरणु। बुहियणसंसिउ सोइ॥

बुहियणह संसियउ सोइ सलहिज्जए
कामिणीमोहणो पुरउ पाठिज्जए।
मत्त अडवीससउ जेण विरइज्जए
सोवि चंदायणो छंदु जाणिज्जए॥ ३२॥

छंदःकोष पृ. ५८

चंदायणी

सो चंदायणिछंदो जेण पढिज्जंति पठम गाहाओ।
कामिणिमोहण पुरओ मत्ता अस्सीय संजुत्तो॥

मत्त अस्सीइं (जुय) होइ नीरुत्तयं
पंचकल सव्व ससिकल य संज्जुत्तयं।
कामिणीमोहणो पुरउ पाठिज्जए
सोवि चंदायणी छंदु सलहिज्जए॥ ३९॥

एजन, पृ. 59

कुंडळिया रचनानां बधे लक्षणो अहीं जळवायेलां छे. पंचकलोनुं स्वरूप जोतां जणाशे के आ आगळ आवी गयेलो मदनावतार ज छे.

आ सिवाय कुंडळिया अनेक प्रकारना थाय छे. पण अहीं आपी ते ज रचनाओ सौथी सुन्दर छे. छतां बीजी रचनाओ केवी होय छे तेना दृष्टान्त तरीके दयारामनो एक कुंडळियो उतारुं छुं.

श्री गुरु गोविन्द समरतां सकळ मनोरथ सिद्ध,
सकळ मनोरथ सिद्ध थाय बुद्धि शुभ प्रकाशे;
महा मंगळ आनंद होय दुःख दुःकृत नासे;
जगत उखाणे जटित, रचित आ मनप्रबोधिनी;
राधावर रतिकरणि प्रीत परपंच निरोधिनी;

निरोध करवा चित्तने, दये कथन आ कीध,
श्री गु गोविन्द समरतां सकळ मनोरथ सिद्ध.
बृ. का. दो. १, पृ. ६१४

अहीं प्रथम आखा दोहराने बदले दोहरार्ध ज आवे छे. पछी पूर्वोक्त कुंडळियानी पेठे ज चार पंक्तिनो रोळा आवे छे. पण उपसंहार त्यां नथी थतो. रोळा पछी फरी आखो दोहरो आवे छे, जेमां दोहरानु आद्य दल आखु उत्तरार्ध तरीके आवे छे. आ रचना पूर्वोक्त कुंडळिया जेवी सुन्दर नथी.

पछी छप्पो अथवा छप्पय छंद लईए:

३८ छपय छंद — मात्रा १५२

छपय छंद करनार, प्रथमनां चार चरणमां,
कळा करो अगियार, अने वळि तेर वरणमां;
पंचम पद पण तेर, आदि कळ उभय वधारो,
ते ऊपर पण तेर, छठ्ठु पण एम सुधारो;
कळ प्रथम उपर चव्वार पर, ताळ चार पद आणजो;
पछिमां बे कळने बेवडु, दुहा प्रथम पद जाणजो. १७९
द. पिं. पृ. २८

आमां पण रोळा आवे छे, जो के दलपतरामे ए नामनो उल्लेख कर्यो नथी. चार रोळानां पद पछी, आपणे आगळ जोई गया ते उल्लाळो आवे छे ए छप्पानु स्वरूप छे. आ पण सुन्दर मिश्रण छे. रोळानी पछी लांबी उल्लाळानी पंक्तिओ उपसंहार करवामां बहु सारी रीते उपयुक्त थाय छे.

आ पछी दलपतराम चंद्रावळा आपे छे:

३९. चंद्रावळा छंद — मात्रा ११८

चरणाकुळनु चरण रचीने, दुहा उत्तरपद देख,
बे चरणो तो एम बनावी, पछि कुंडळि पण पेख;
पछि कुंडळि पण पेखि विचारो, चार चरण चरणाकुळ धारो,
मन रच चंद्रावळा मचीने, चरणाकुळनु चरण रचीने. १८१
द. पिं. पृ. २९

लक्षणमां आवता प्रथम चरणाकुल शब्द आगळ निशानी करी नीचे टीप आपी छे के "चरणाकुळना चरणने अंते एक गुरुवाळु के बे लघुवाळु सोळ

मात्रानुं चरण पण नथी." चरणाकुळनुं आटलुं लक्षण लई लईए एटले त्यां पाछळ चतुष्कलोनां चार आवर्तनो मात्र रहे छे. खरी रीते त्यां चरणाकुळ छे ज नहीं. ए छंद खरो तो छेल्ली मात्रा खंडित थयेली चोपायो छे:—

| | | | | | | |

दादा दादा दादा दादा। दादा दादा दादा गाल

एटले आ चंद्रावळा छंद चोपाया अने चरणाकुळनुं मिश्रण छे एम कहेवुं जोईए.

आमां कुंडळी करवानी कही छे अने आ छंदोमां बन्ने आवश्यक स्थळे कुंडळी छे. पण 'रणपिंगल' कहे छे के कुंडळी आवश्यक नथी. प्रथम तो 'रणपिंगल' आ नाम सामे पण वांधो ले छे. ते कहे छे: "गुजरातीमां हाल जे चंद्रावला नाम कहेवाय छे ते अशुद्ध छे. 'छंदःकामदुघावत्स'मां एनुं नाम चंद्रावली लख्युं छे. चंद्र+आली अथवा आवली एटले चंद्राली अथवा चंद्रावली नाम आप्युं छे. तेमां कुंडळी वाळवानुं अथवा प्रथम चरण जेवुं ज छेल्लुं एटले आठमुं चरण लाववुं एवो नियम कर्यो नथी." (रणपिंगल १, पृ. १४२) अने एवा कुंडळी विनाना चंद्रावळा पण मळे छे, जेनो प्रसिद्ध दाखलो काळीदासना ध्रुवाख्यानना चंद्रावळानो छे:

श्री गुरु गोविन्दने वरणवुं, प्रेमशुं लागुं पाय,
आराधूं अविनाशी एवा आदि निरंजन राय;
आदि निरंजन अकळ स्वरूप, रामे लीधां रमवा रूप,
सृष्टि निपावा थइ मनसाय, सुभट थई पोढया जळमांय
जे जे वैकुंठराय. १

बृ. का. दो. १, पृ. ६०५

अहीं पहेली पंक्ति दोहरानी, बीजी चोपायानी, अने पछीनी चोपाईनी छे. चोपायाना अंत्य खंडना शब्दो पाछळ आवती चोपाईमां फरी आवे छे, पण अंते कुंडळी नथी. एटले आने कुंडळिया रचना कही शकाय नहीं अने उपरनो दाखलो बतावे छे तेम आ रचनाना पण भिन्नभिन्न प्रकारो छे.

अहीं सुधी आपणे बे जुदा जुदा कडीबद्ध छंदोनां मिश्रणो के जोडाणो जोयां. पण आवी कडीओनां नहीं पण तेनां दलोनां मिश्रणोना बे दाखला मळे छे ते लईए. बन्ने 'छंदःकोष'मां मळे छे. पहेलो दाखलो हुं चूडामणिनो लउं छुं: तेमां प्रथमार्धमां दोहरो आवे छे, अने उत्तरार्धमां आर्यानो उत्तरार्ध आवे छे:

पुव्वद्धउ पढि दोहडउ। पच्चद्धउ गाहाण।
चूडामणि जाणिज्जउ मज्झे सयलाण छंदाण॥ ४८॥

छंदःकोष

आनी उत्थापनिका (जग गव ळं बेकी स्थान खास जणावतो नथी.) आम थाय :

चूडामणि : { दादा दादा दालदा दादा दादा गाल
दादा दादा दादा दादा दादा ल दादा गा }

ते पछी वेरालु लउं. तेमां त्रण पादो दोहरानां अने छेल्लुं ते आर्यानुं चोथुं पाद आवे :—

दोहा छंदह तिन्नि पय। पढम सुद्ध पढेहु ॥
पुणवि चउत्थुवि गाहपउ। वेरालुवि तं वियाणेहु ॥ ३३

उत्थापनिका : { दादा दादा दालदा दादा दादा गाल
दादा दादा दालदा दादा दादा ल दादा गा }

बन्ने दृष्टान्तोमां प्रास छे. छतां प्रासनी मुश्केली पण स्पष्ट छे. प्रथमार्द्धमां दोहरो छे एटले अंते गाल आवे. तेनी साथे प्रास मेळववाने आर्यानो अंत्य यतिखंड छे एटले अंते दागा आवे. एटले प्रथमार्द्धमां अंते ह्रस्व जोईए, अने उत्तरार्धमां अंते एनी साथे प्रास मेळववा ह्रस्व मूकी पछी दीर्घ उच्चारण करवुं पडे. एकंदर प्रासनी जरा मुश्केली रहेवानी एम हुं मानुं छुं. बाकी आ मिश्रण पठनमां सुन्दर तो जणाय छे. रचना दोहराथी बहु दूर नथी जती.

आ पछी प्राचीन अपभ्रंश साहित्यमां पुष्कळ वपरायेलो पण जूनी गुजरातीमां ज लुप्त थयेलो वस्तु के रड्डा छंद लउं छुं. तेना लक्षण विशे जुदांजुदां पिंगलोमां जुदाजुदा गणो आपेला छे, जे गणपद्धतिनी अपूर्णता दर्शाववानुं सारुं साधन थाय, पण तेमां नहीं ऊतरतां हुं तेनुं स्वरूप मारी योजना प्रमाणेनुं आपुं छुं :

वस्तु अथवा रड्डा

दालदादा दालदादा ल।

दादा दादा दाल । दालदालदा दालदालल ।
दादा दादा दाल । दालदालदा दालदालल ॥

दादा दादा दालदा, दादा दादा गाल ।
दादा दादा दालदा, दादा दादा गाल ॥

पहेलुं दृष्टान्त हरमान याकोबी संपादित 'सनत्कुमारचरित'मांथी लउ छुं. एना कर्ता हरिभद्र सूरि १२मा सैकाना छे.

तुंगपणमिरु विउसु सुकुलीणु।

सुसमत्थउ खंतिपरु सीलवन्तु सोहग्गमंदिरु।
अहिगम्मउ दुद्धरिसु घणसमिद्धु दाणम्वुसंदिरु॥
जयजणनयणसुहावणउ ग यतेय पब्भारु।
आससेण अभिहाणुनिवु आसि वसुन्धरसारु॥ ४५९

सनत्कुमारचरित, पृ. २६

आ रचना गुजरातीमां ऊतरतां तेना पहेला सप्तकल सधिनी वीप्सा थई, ते सिवाय तेमां बीजो कशो फेरफार थयो नथी:

चलीँय गयवर चलीँय गयवर गुडीँय गज्जन्त,
हूं पत्तउ रोसभरि, हिणहिणंत हय थट्ट हल्लीँय।
रह भय भरि टलटलीँय मेरु, सेसुमणि मउड खिल्लीँय।
सिउं मरुदेविहि संचरीँय, कुंजरीँ चडिउ नरिंद।
समोसरणि सुरवरि सहिय, वंदिय पढम जिणंद॥ १६

भरतेश्वरबाहुबलिरास, पृ. २

आ रचनानो अपभ्रंश साहित्यमां पुष्कळ वपराट हतो. ते गुजरातीमां शुद्ध रूपे, अने प्रथम सप्तकलनी वीप्साना विशेष लक्षण साथे ऊतरी आवी, पण पछी तेनुं स्वरूप धीमे धीमे ओळखातुं बंध थयुं, अने तेनुं एक एक अंग लुप्त थतां थतां छेवटे ए आखी लुप्त थई गई. एक रचना पिंगळमांथी केम लुप्त थाय छे, ए व्यापार आ ग्रंथना अधिकारनो नथी, एटले हुं ए निरूपतो नथी पण ए रसिक विषय तो छे ज. ए आखो, में मारा 'प्राचीन गुजराती छंदो'मां चर्चेलो छे (पृ. १७७ थी १८२). आ रचना अत्यारे लुप्त थई छे पण मारा समजवा प्रमाणे ते पुनरुज्जीवित करवा योग्य छे.

अहीं हुं जातिछंदोनुं निरूपण पूरुं करुं छुं अने हवे एना मेळनो विषय हाथमां लईश.

९

मात्रामेळ के जातिछंदोनो मेळ

आपणे गया प्रकरणमां जोई गया के मात्रामेळ के जातिछंदोमां अमुक अमुक नियत संख्यानी मात्राना संधिओ होय छे, अने एमांना कोई एक संधिनां अमुक संख्यानां आवर्तनोथी जातिछंदनु चरण बने छे. आ संधिओ अमुक चार ज छे: चतुष्कल, त्रिकल, पंचकल, सप्तकल. अलबत्त, कोई कोई जातिछंदोमां आवु चरण एक ज संधिनां आवर्तनोनु बनेलु न होय एवु उपलक दृष्टिए जणाय छे, जेम के चोपाईमां दादानां त्रण आवर्तनो आवी छेल्ले गाल आवे छे, जे देखीती रीते चतुष्कल नथी, पण पंक्ति मुख्यत्वे कोई एक ज संधिनां आवर्तनोनी छे एटलु तो आपणे कही शकीए छीए. आ नियत-संख्य मात्राना संधिनां नियत संख्यानां आवर्तनो ए ज आ प्रकारने वृत्तोथी व्यावृत्त करे छे, जे वृत्तो अनावृत्तसंधि छे. जातिछंदोना मेळ पकडवामां आ सामान्य लक्षण बहु सूचक छे.

आ संधिओ विशे बीजो एवो नियम ए छे के आ संधिओ पंक्तिमां छूटा पडता होवा जोईए एटले के दरेक संधि स्वतंत्र अक्षरथी शरू थतो होवो जोईए, तेनी पहेली मात्रा आगला संधिना अंत्याक्षरमां भळेली न होवी जोईए. आ नियम घणो महत्त्वनो छे, अने एने प्रधान लक्षणोमां गणवो जोईए. खरुं तो एम न थाय तो संधिओ छूटा न ज पडी शके, छूटा न पडे एटले संधिनां आवर्तनो ज प्रतीत न थाय. संधिओ आद्याक्षरथी शरू थवानो नियम आवश्यक न होय तो हर कोई मजकुरमां आपणे गमे ते संधिनो आरोप करी शकीए. दाखला तरीके पंदर मात्राना कोई वाक्यने आपणे त्रण चतुष्कलो अने गालनु बनेलु, के पांच त्रिकलोनु के त्रण पंचकलोनु बनेलु के बे सप्तकलो अने एक लघुनु बनेलु एम गमे ते रीते घटावी शकीए. आ नियम पण घणुं ज सूचक लक्षण छे.

पण आ बन्ने लक्षणो जे मेळनु सूचन करे छे तेना स्वरूपनु सूचन, एक रीते दलपतरामे तालनी व्यवस्था करी, करी आपेलु ज छे. आ दरेक संधिमां मुक अमुक स्थाने ताल छे, अने ए ताल संधिनी नियत मात्रा उपर ज पडवो जोईए. संधिओ अलग राखवानु कारण तालनी मात्रा ताल माटे उप-लब्ध—खुल्ली राखवी ए छे. अर्थात् जातिछंदोना नियमो तालना रक्षण माटे छे. आथी जातिछंदोनो मेळ तालमां होवानु आपणने प्रबळ सूचन मळे छे.

अने आ संधिओ अमुक अमुक मात्राना ज केम छे? — चार, त्रण, पांच, सात मात्राना ज केम छे? ए संधिओनी मात्रा अमुक संख्यानी छे, एवा केवळ संख्याभानमां कोई संवादनी शक्यता होई शके नहीं. मात्र संख्याना आकलनमां ज पद्यनी हृद्यता रहेली होत तो आ चार ज संख्याथी भिन्न अनेक संख्याना संधिओ बन्या होत. पण एम नथी. केवळ संख्याभान ए तो पद्यना आकलनमां अप्रस्तुत छे अने तेथी विक्षेपक पण थई शके. आपणो कवितापठननो अनुभव तो एवो छे के तेना पद्यपठनमां कोई संख्यानुं आकलन थतुं होतुं नथी. वसंततिलकाना पठनमां पंक्तिमां चौद अक्षर आवे छे एवुं पठनमां प्रतीत थतुं नथी, ए संख्या तो आपणे पछीथी पठनसंस्कारोना पृथक्करणव्यापारथी शोधी काढीए छीए. तेवुं ज जातिपठननुं छे. एटले आ संख्याओनो पद्य साथेनो संबंध कोई संख्या तरीकेनो नथी पण कोई इतर तत्त्वनो छे.

आ तत्त्वनुं सूचन आपणे उपर जोई गया ते तालमांथी मळे छे. आपणे जोयुं के संधिओ बंध तालने माटे मात्रा खुल्ली रहे तेवी रीते योजायेली होय छे. आ ताल शब्द सहेजे आपणने संगीतना तालनुं सूचन करे छे. वळी आपणा जातिरचनाना चारेय संधिओनी मात्रासंख्या पण संगीतना तालोनुं सूचन करे छे. जातिरचनाना संधिओ चार मात्राना, त्रण मात्राना, पांच मात्राना अने सात मात्राना छे. तो आ मात्रासंख्याने बराबर बमणी मात्राना तालो संगीतमां मळी रहे छे. संगीतमां आ मात्रानो लावणी ताल छे, छ मात्रानो दादरो ताल छे, दस मात्रानो झप ताल छे, अने चौद मात्रानो दीपचंदी ताल छे. अर्थात् संगीतना ऊपर कहेल दरेक तालमात्रामां पद्यरचनाना बब्बे संधिओ माई रहे छे: लावणीमां बे चतुष्कल संधिओ, दादरामां बे त्रिकलो, झपमां बे पंचकलो, अने दीपचंदीमां बे सप्तकल संधिओ. पद्यरचनानो ताल सामान्य रीते तालोना रूपनो के कोई बे वस्तुना आघातथी थता थडकाराना रूपनो के छेवटे अवाजना थडकाराना रूपनो छे. हुं विद्यार्थी हतो त्यारे तो जातिरचनानो पा अने हाथथी ताळो दईने करता. अत्यारे पण कदाच कोई निशाळमां ए प्रथा चालु हशे. पिंगळमां मात्रामेळ रचनाना तालो ताळी दईने ज बतावाता. अने जातिछंदोना पठन उपर ध्यान आपतां जणाशे के तेमां ताल अवाजमां थडकाराथी के भारथी बतावाय छे. तेथी पद्यना तालने पद्यभार पण कहे छे. तो संगीतना तालनुं पण बाह्य स्वरूप आवुं ज छे. बर्वे कहे छे: "ताल शब्दनो मुख्य अर्थ तो एवो छे के, बंने हाथे ताळी आपवी. ए ज अर्थ गायनविद्यामां स्वीकारवामां आवेलो छे. ...ताल

शब्दनी गायनविद्याने लगती व्याख्या करीए तो एवी रीते थई शके के, मुकरर करेला काळने अंतरे बंने हाथथी ताळी आपवी, अथवा बीजी कोई रीते टकोरो के आघात करवो ते." (गा. वा. पा. पु. १, वि. १ पृ० ६७) आ रीते भिन्न-भिन्न संधिओनी मात्रासंख्या अने संधिमां आवता तालनुं स्वरूप बन्ने आपणने पद्यसंधितालनुं संगीतताल साथेनुं अनुसंधान सूचवे छे. अने आटला स्पष्टीकरण पछी आपणने ए अनुसंधाननी निष्पत्ति तरत समजाय छे. कोई पण गायक उपरना कोई तालमां कोई गीत एटले वाङ्मय रचना गातो होय त्यारे एनी वाणी पण ए गीतनी तालबद्ध योजनाने अनुकूल थाय, तेनी साथे सारूप्य साधे ए स्वाभाविक छे. अने ए अनुकूलता के सारूप्य एज संधिबद्धता. संगीतना तालमां कालमात्रानी अमुक अमुक योजना के आकृति आवती होय छे, अने वाणी ए कालमात्राने नियत पद्धतिए वाङ्मय मात्राथी पूरे एमांथी संधि थाय. लावणी तालनी एक कालमात्रा वाणीना लघुथी पुराय अथवा बे कालमात्राओ बे लघुथी के एक गुरुथी पुराय, तो लावणीनी आठमात्राओ बे चतुष्कल संधिओथी पुराय. जेम रंगोळी पूरनार, कल्पित पुष्पपांदडीनी आकृति रंगथी पूरे छे तेम वाग्गेयकार तालनी कालमात्रानी आकृतिने वाणीना — अक्षरोनी कालमात्राथी पूरे अने ए रीते संधिओ निष्पन्न थाय. पिंगलमां रूढ थयेलो जाति शब्द पण आनुं समर्थन करे छे. भरतनाटयशास्त्रमां जाति शब्द जे अर्थमां वपरायो होय छे ते अर्थ लगभग आधुनिक रागने मळतो छे, एवुं विद्वानोनुं मानवुं छे. अने जातिछंदो बधा ज तालबद्ध गीतमां गावाने अनुकूल होय छे. एटले हवे मात्र जातिछंदसंधिओने संगीतना तालो साथे घटाववानुं ज बाकी रहे छे. पण एम करीए ते पहेलां संगीतमां तालनुं स्थान अने तेना स्वरूपनो सादामां सादी रीते जरा विचार करी लईए.

संगीत ए स्वरोनी हृद्य आकृतिथी निष्पन्न थाय छे. मानव कंठ तो अनेक स्वरो काढी शके छे पण तेमांथी अमुक ज स्वरो जे हृद्य छे तेनो ज संगीत प्रयोग करे छे. भौतिक शास्त्रनी दृष्टिए आ स्वरो हवानां अमुक संख्यानां आंदलनोथी थाय छे. आ आंदोलनोनी संख्या वधे तेम तेम स्वर वधारे उच्च के तार बने, घटे तेम मन्द्र बने. संगीत सा रे ग म प ध नी एवा सात[1] स्वरोनो प्रयोग करे छे. आ स्वरोनां आंदोलनो वच्चे

१. संगीतना सात ज स्वरो मनाय छे अने तेथी सप्तक एवुं नाम रूढ थयुं छे पण खरी रीते आथी वधारे स्वरो संगीत प्रयोजे छे अने उच्चतानी दृष्टिए ए स्वरो जे बे स्वरो वच्चे आवे छे तेमांना एकना धोरणे ते कोमल के तीव्र बोलाय छे. जेम के कोमल 'रे' ते 'सा' अने 'रे' वच्चेनो पण 'म'

अमुक प्रमाण हमेशां रहेलुं होय छे. दाखला तरीके आपणे जे स्वरने 'सा', एटले मध्यम सप्तकनो 'सा' ठराव्यो होय तेमां २४० आंदोलनो होय तो ते 'सा' साथे संबंध राखता 'प'नां ३६० एटले के दोढां आन्दोलनो थाय अने आ सप्तक पूरुं थतां पछी तार सप्तकनो जे 'सा' आवे तेनां ४८० एटले पहेला 'सा'ना करतां बमणां आंदोलनो होय. अने ए ज रीते नीचेना एटले मन्द्र सप्तकमां जतां मन्द्रनो 'सा' मध्यमना 'सा'थी अर्धां एटले १२० आंदोलनोनो होय. आम आ त्रणेय सप्तको अने तेना सातेय स्वरो अंदरअंदर नियत संबंधवाळा होय छे. एम होय तो ज तेनो संगीतमां प्रयोग थई शके. पण दरेक गायकने पोतानो 'सा' नक्की करवानो हक होय छे. कोई २४० आंदोलनोवाळा ध्वनिने 'सा' स्थापे तो कोई २५६ आंदोलनोवाळा ध्वनिने 'सा' स्थापे. एम दरेकने पोतानो 'सा' स्थापवानी छूट छे पण ए 'सा' स्थाप्या पछी बाकीना बधा स्वरो अंदरअंदर ए ज नियत संबंधवाळा होवा जोईए. ए आवुं षड्जग्राम अंदरअंदर नियत संबंधवाळा स्वरोनी एक सृष्टि छे.

ज्यारे गायक कोई पण गीत अमुक रागमां गाय छे त्यारे ते आ संगीते स्वीकारेला स्वरोनो प्रयोग करतो होय छे. हवे आ संगीतना संस्कारोनुं पृथक्करण करीए तो जणाशे के आमां स्वरो उपरांत तालनुं तत्त्व पण भेगुं भळेलुं होय छे. संगीतना साजमां स्वरोत्पादक वाद्य सारंगी के दिलरुबा होय तो तालोत्पादक साज तबलां के मृदंग होय छे. आ ताल अनेक प्रकारना होय छे. ते भिन्नभिन्न संख्यानो मात्राना होय छे अने भिन्नभिन्न संख्याना मात्राखंडोमां विभक्त होय छे. मात्राओनी भिन्नभिन्न प्रकारनी रचनाथी तेनी भिन्नभिन्न हृद्य आकृतिओ थाय छे. साजथी गवाता संगीतमां आ ताल तेनी मात्राओ अने ए मात्राओना पण सूक्ष्म विभागो, तबलां के मृदंगना भिन्नभिन्न प्रकारना अवाजथी व्यक्त थाय छे.

आ रीते ताल तत्त्व संगीतमां प्रवेश पामी संगीतना स्वरोने कालमां मर्यादित करे छे. कोई पण रागमां गवाता गीतमां, संगीतना स्वरो होय छे एटलुं ज नहीं, एमांनो दरेक स्वर अमुक मात्रा सुधी प्रयोजायेलो होय छे अने रागनी आकृति आ रीते स्वर अने ए स्वरनी कालमात्रा ए बेथी नियत थाय छे.[२]

अने 'प'नी वच्चेनो ते 'म' तीव्र कहेवाय. आ कोमल अने तीव्र गणाता पण स्वरो ज छे पण मुख्य स्वरो सात स्वीकाराता होवाथी कोमल तीव्र अने शुद्ध बधा माटे सामान्य नाम श्रुति कहेवाय छे.

२. अलबत्त राग व्यक्त करतुं बधुंय संगीत तालबद्ध होतुं नथी. गायक घणी वार राग शरू करतां 'नोमतोम' ले छे तेने ताल नथी होतो जो के तेने लय होय छे.

आ तालमात्रा ते कोई पण कालमापक यंत्रथी मापीने नक्की करेलो सर्वसंमत समय नथी. जेम स्वरोमां गायक पोतानो 'सा' पोते नक्की करे छे, तेम ताल माटेनी मात्रानो गाळो पण गायक पोते ज नक्की करे छे. अने स्वरोनी पेठे ज, ए एक वार नक्की करेला मात्रासमयने ज मात्रानी बधी रचनाओ— मात्राना बधा प्रकारना विभागो माटे, तेणे पछीथी अनुसरवानुं होय छे.

आपणे उपर जोयुं के मात्रानो गाळो गायक पोते नक्की करे छे. हवे गायनमां सा रे ग म प ध नी ए सात स्वरोनां त्रण सप्तको होय छे अने मध्यम सप्तकना 'सा'नां आंदोलनोथी तार सप्तकना 'सा'नां आंदोलनो बमणां होय छे, अने मंद्र सप्तकना तारनां आंदोलनो अरधां होय छे, तेने मळती रीते, आ नियत थयेली मात्रानो गाळो पण लय उपर आधार राखे छे. लय एटले गीतनो वेग. सामान्य रीते गानार धीमा वेगथी गान शरू करे छे अने त्वरित वेग तरफ जाय छे. वेगनी दृष्टिए लय त्रण छे. विलंबित, मध्य अने द्रुत. धारो के कोई गायक विलंबित वेगथी गीत शरू करे छे. तो ते ज वखते ए विलंबितनो मात्रानो गाळो नक्की करशे. पछी धारो के संगीत आगळ चालतां ते वेग वधारवा मांडे छे, तो पहेलांना वेग करतां बमणो वेग थाय त्यां सुधी तेणे मध्यलयमां गायुं गणाय. विलंबित लयनी नक्की करेली मात्रानो गाळो, तेथी अर्ध थाय त्यां सुधी मध्यलयनी मात्रा गणाय. ए ज प्रमाणे मध्यलयनी मात्राथी गीत शरू थाय अने पछी वेग वधवा मांडे तो, मध्यलयनी मात्रानो गाळो तेनाथी अरधो थाय त्यां सुधी गीत द्रुत लयमां चाल्युं गणाय. आ रीते मात्रानो गाळो ज्यारे गायक नक्की करे छे त्यारे ते अमुक लयनी मात्रानो गाळो नक्की करे छे, पण एक वार एम कर्या पछी तेणे ते गाळाना मापने वळगी रहेवुं जोईए अने वधारे त्वरित लयोमां जवुं होय त्यारे पण तेना प्रमाणनी सीमामां रहेवुं जोईए. संगीत जेम स्वरमां तेम तालमां पण अंदरअंदरना संबंधोथी गूंथायेली एक सृष्टि छे. सामान्य पद्यपठनमां पण आपणे वेग वधारीए घटाडीए छीए. विधिपुरःसर श्रोतावर्ग आगळ पठन करवुं होय तो अमुक वेगमां पठन करीए, पोताने माटे ज प न करवुं होय तो ते करतां वधारे त्वरित वेगमां करीए, ए ज वस्तु गोखवा माटे पठन करता होईए त्यारे एथी पण वधारे त्वरित वेगमां करीए. आम काव्यपठनमां पण आपणे वेग ओछो वधतो करीए छीए पण ते वेग ए काव्यकलानुं अंग नथी होतो. काव्य बहारनां प्रयोजनोने ते आभारी छे. पण संगीतमां वेग ए पण संगीतकलानो ज भाग छे. अने संगीतनुं केटलुंक वैविध्य ए तत्त्व उपर आधार राखे छे. आ रीते संगीतना लयने पद्यना संवाद साथे सीधो संबंध नथी. पण मात्रानो गाळो लय उपर आधार राखतो होवाथी

आपणे तेनी आटली चर्चा करी. आपणे प्रस्तुत वात ए छे के संगीत जेम स्वर तेम ज तालथी नियुक्त थयेलुं होय छे. तेना तालतत्त्वने पद्यरचना साथे संबंध छे. अने ए ताल अनेक मात्राखंडोमां अने मात्राओमां विभक्त थयेलो होय छे.

आ रीते सामान्य व्यवहारमां तालनो अर्थ मात्र ध्वनिनो थडकारो एवो थाय छे ते संगीतमां खूब विकसित अने पुष्ट थाय छे. संगीतमां ताल ए अमुक संख्यानी मात्रानी, पटोळा ऊपरना फूल जेवी आवर्तनवाळी, एक हृद्य आकृति छे. आ आकृति अने तेनां अंगोपांगो संगीतमां तबलांना ओछा वत्ता बलवाळा अनेक प्रकारना ध्वनिथी व्यक्त थाय छे, एटले तालनो मुख्य अर्थ ध्वनिनो थडकारो ए अहीं लुप्त तो नथी थतो पण ए गौण बने छे अने तालनो मुख्य अर्थ कालमात्रानी आवर्तनशील हृद्य आकृति एवो थाय छे. हवे, पाछुं फरीने जोतां, जणाशे के पद्यरचनामां पण तालनो थडकारो नियत संख्यमात्राना संधिओने जुदा पाडवा, तेमने व्यक्त करवा ज आवतो हतो, छतां सामान्य व्यवहारनो अर्थ अने संगीतपरिभाषानो अर्थ बन्ने ध्यानमां राखवा जेवा छे.

ऊपर कह्यो ते संगीतताल संगीतमां संगीतस्वरमय स्वरूपमां मळी आवे छे पण तेनामां एटलुं कलासामर्थ्य छे के स्वरो विना पण, तेने कलाजगतमां स्वतंत्र स्थान छे. एनी प्रतीति आपणने संगीत विनाना मृदंगवादनमां थाय छे पण तेनो बहु ज प्रसिद्ध सर्वविदित दाखलो छे आपणो ढोल. मात्र आघातजन्य ध्वनिथी ए रसनिष्पादक कलात्मक आकृतिओ रचे छे. अने तालना आ सामर्थ्यथी ज ते संगीतविश्लिष्ट पद्यरचनामां ऊतरी आवी शके छे. एनुं स्वरूप आपणे संगीतनी एक पछी एक विशेषता दूर करीने समजवा प्रयत्न करीए. धारो के कोई एक माणस कशा पण साज विना तबलां के मृदंग विना गीत गाय छे. संगीत श्रवणगम्य कला छे तो संगीतनां बन्ने तत्त्वो स्वर अने ताल श्रवणगम्य ज होवां जोइए. एम होय तो आपणे तालनो भौतिक अंश शोधी काढवो जोईए. ध्वनिना भौतिक स्वरूपनुं पृथक्करण करतां विज्ञान तेना नीचे प्रमाणे घटक अंशो बतावे छे. पहेलो स्वर. स्वरने उपर जोयुं तेम आंदोलनसंख्याथी नियत करी शकाय छे. हवे ताल आ आंदोलनसंख्याने तो असर करी शके नहीं. एम थाय तो 'सा' ते 'सा' ज न रहे. आंदोलनसंख्या वधे के घटे तो ते कोई बीजो ज स्वर थई जाय. एटले ताल, स्वरने असर करी शके नहीं. ध्वनिनुं स्वरूप घडवामां बीजुं तत्त्व ते तेनी उपाधि के वस्तु कहीए. तांबानो तार, लोढानो तार, तांतनो तार, ए दरेक एक ज स्वर काढे त्यारे पण तेमां भेद रहे छे— आपणे कहीए के 'उपाधिभेदात्.' जुदा जुदा माणसना आपणे अवाजो

ओळखीए छीए ते स्वरना उपाधितत्त्वने लीधे. आपणे विचार करीए छीए ते प्रसंगे तो एक ज माणस गाय छे एटले उपाधिभेदने अवकाश नथी. एटले ताल उपाधिभेदथी व्यक्त थई शके नहीं. ध्वनिनुं त्रीजुं तत्त्व ते तेनी विपुलता छे. आपणे एक गीत गाता होईए पण श्रोतावर्ग मोटो होय तो मोटो अवाज काढीए, श्रोतावर्ग नानो होय अने एनुं ए ज गीत होय तो हळवो अवाज काढीए. बन्ने गीतमां 'सा' एनो ए ज रहेवानो छे, बधा स्वरो एना ए ज रहेवाना छे, फेर पडे छे ते मात्र मोटा नाना अवाजनो. आ फरकने माटे आपणी भाषामां जोईए तेवा चोक्कस शब्दो रूढ नथी. भौतिक दृष्टिए आ फरक आंदोलनविस्तारना वधारा घटाडाथी थाय छे. हळवा बोलाता 'सा'नां अने मोटेथी बोलाता 'सा'नां आंदोलनोनी संख्या तो एक ज होय छे, पण हळवा अवाजमां ए आंदोलनोनो विस्तार टूंको होय छे. माटे में उपर तेने अवाजनी विपुलता कही छे. संगीतमां[३] अने पद्यरचनामां ताल, स्वरनी विपुलताथी दर्शावाय छे. पद्यरचनाना पठनमां तालनी मात्रा जरा मोटेथी बोलाय. ते वखते अवाज हळवाथी ऊलटो एटले जरा भारे होय तेथी तालने पद्यभार पण कही शकाय. साधारण गद्यना पठनमां कोई शब्द तरफ विशेष ध्यान खेंचवुं होय त्यारे आपणे ए शब्द उपर भार दईए छीए —ए शब्द (वरुं तो तेनो अमुक अक्षर) वधारे मोटा अवाजे बोलीए छीए, तेम पद्यमां पण भार आपणे अवाजने मोटो करीने दर्शावीए छीए. भौतिक दृष्टिए ताल अवाजनी विपुलताथी, अवाजना भारथी दर्शावीए छीए एम कहेवाय. गद्यभारमां क्वचित् भारवाळा अक्षरनुं उच्चारण विलंबित करवामां आवे छे, पण पद्यभार, के तालनो भार तो क्षणिक ज होय छे. ए एक थडकाराना रूपनो होय छे. धीमे वांचता होईए त्यारे पण ए थडकारो आवे छे, अने मनमां वांचता होईए त्यारे पण तेना मानसिक उच्चारणमां ए थडकारो होय छे. आटली चर्चा ध्यानमां राखीने आपणे एम कही शकीए के जातिछंदोमां संधिओ, सामान्य रीते, अमुक अमुक संगीत तालना अर्थमां, सामान्य रीते, दरेक कालमात्रा वाणीनी एक मात्राथी पूरवाथी थाय छे, अने

---

३. संगीतमां ताल हमेशां भारथी ज, अवाजनी विपुलताथी ज, दर्शावाय छे एम नथी. सम आवतां गानार क्वचित् जेना पर सम पडतो होय ते स्वरनुं उच्चारण एकदम धीमुं करी नांखे छे. क्वचित् समनी आगळना स्वरने थडकारो आपी क्षणिक अवाज बंध करी पछी तरत समनो स्वर उच्चारे छे. पण आ बधा प्रकारो स्वरनी ओछीवत्ती विपुलता द्वारा ज व्यक्त थाय छे एम कही शकाय. अने संगीतमां तो आ उपरांत अभिनयथी पण ताल घणी वार व्यक्त थाय छे.

तेमां ते ते संगीततालनो ताल ते ते तालनी कालमात्राने पूरनारा अक्षर उपर पडे छे. आ ताल उच्चारणमां थडकाराथी व्यक्त करवामां आवे छे.

आ अति सामान्य रूपे करेली चर्चा दाखला आपी स्पष्ट करवी जोईए. संगीतना तालनी कालमात्राने वाणीना अक्षरोनी कालमात्राथी पूरवी एटले शुं, ए क्यारे नियमपूर्वक पुरायेली गणाय, क्यारे नियम विना पुरायेली गणाय, ए स्थळुं दाखलाथी बताववुं जोईए. ए हुं संगीतनां भिन्नभिन्न गीतो स्वरांकनो साथे उतारीने बताववा प्रयत्न करीश.

पहेलुं गीत हुं 'केशवकृति'नुं लउं छुं जेनुं स्वरांकन बर्वेए आपेलुं छे. मूळ गीत नीचे प्रमाणे छे:

सद्गुरुशरण विना अज्ञानतिमिर टळशे नहीं रे;
जन्म मरण देनारूं बीज खरूं बळशे नहीं रे: सद्गुरु०
प्रेमे वचनामृत पान विना, साचाखोटाना भान विना;
गांठ हृदयनी ज्ञान विना, गळशे नहीं रे: सद्गुरु० १
शास्त्र पुराण सदा संभारे, तन मन इन्द्रिय तत्पर वारे,
वगर विचारे वळमां, सुख रळशे नहीं रे: " २
तत्त्व नथी मारा तारामां, सुज्ञ समज नरता सारामां;
सेवक सुत दारामां दिन वळशे नहीं रे: " ३
केशव हरिनी करतां सेवा, परमानंद बतावे तेवा;
शोध विना सज्जन एवा, मळशे नहीं रे; " ४

के. कृ. पृ. ९७

आमां पहेली बे पंक्तिओ ध्रुव के टेकनी छे अने तेनी पछी कडीओ आवे छे. ध्रुवनी दरेक पंक्ति अने दरेक कडी एक सरखी रीते गवाय छे. बर्वेए नमूना माटे ध्रुवनी बन्ने पंक्तिओनां अने पहेली बे कडीनां स्वरांकनो भेगां आपेलां छे. आमांनी पहेली कडीमां पाठदोष[४] छे, तेथी हुं मात्र बीजी कडीनुं स्वरांकन आपुं छुं. बर्वेए पोतानी पद्धतिथी स्वरांकनो आपेलां छे. पण आ पछी जे स्वरांकन मारे आपवानां छे ते भातखंडेनी पद्धतिनां छे ते साथे सरखाववुं सहेलुं पडे माटे हुं आनां स्वरांकनो पण भातखंडेनी पद्धतिथी आपुं छुं. बर्वेए गीतना स्थायी अने अंतरो ए बे भागो स्वरांकनमां दर्शाव्या नथी पण ए जरूरना होवाथी हुं दर्शावुं छुं.

४. बर्वेमां 'प्रेमामृतवच' एवो पाठ छे, जे देखीती रीते खंडित छे. उपरनो पाठ 'केशवकृति' जोई सुधार्यो छे.

राग देस, ताल त्रिताल, मात्रा १६

स्थायी

सा सा सा सा	रे रे म म	प – नि –	सां रें सां सां
स द गु रु	श र ण वि	ना ऽ श ऽ	ज्ञा ऽ न ति
ज ऽ न्म म	र ण दे ऽ	ना ऽ रूं ऽ	बी ऽ ज ख
२	०	३	×
नि ध प ध	म प म ध	प ध म ग	रे – – –
मि र ट ळ	शे ऽ ऽ न	हीं ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
रू ऽ व ळ	शे ऽ ऽ न	हीं ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×

अंतरो

म – म –	प प नि नि	सां – सां सां	सां – सां –
शा ऽ स्त्र पु	रा ऽ ण स	दा ऽ सं ऽ	भा ऽ रे ऽ
२	०	३	×
नि – नि –	सां – सां –	नि सां रें सां	नि ध प –
त न म न	इं ऽ द्रि य	त ऽ त्त र	वा ऽ रे ऽ
२	०	३	×
रें – रें रें	रें रें रें –	नि रें सां सां	नि ध प प
ब ग र वि	चा ऽ रे ऽ	व ळ मां ऽ	सु ख र ळ
२	०	३	×
म प म ध	प ध म ग	रे – – –	
शे ऽ ऽ न	हीं ऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऽ ऽ।	
२	०	३	

गा. वा. पा. पु. १. वि. ३. पृ १८७

प्रथम तप पूरती स्वरांकननी पद्धति जाणी लईए. गीतनी पंक्तिओ अहीं प्रथम स्वरांकन पहेलां आपेली छे ते स्वरांकनमां तरत जडशे. सामान्य रीते स्वरांकनमां गीतनी पंक्तिनी उपर स्वरो दर्शावाय छे अने नीचे ताल-चिह्नो अपाय छे. आ गीत त्रितालनुं छे तेमां सोळ मात्रा आवे छे, अने ए सोळ सोळ मात्रा त्रितालमां आवतां ते चच्चार मात्राना खंडो के कौंऽमनां विभक्त थाय छे. गीतनी पंक्तिमां क्यांक ऽ आवुं अवग्रहचिह्न आवे छे ते खाली मात्रा के मात्रानो अभाव बतावे छे. अने तेनो अर्थ एवो छे के ते मात्रा के मात्राविभाग

आगला अक्षरथी पूरवानो छे. गीतनी प्रथम पंक्ति सदगुरु। शरण वि। ना ऽ अ ऽ। ज्ञा ऽ नति। एम छे. तेमां प्रथम कॉलममां चारेय मात्रा जुदाजुदा अक्षरथी पुराय छे, 'सदगुरु', एवा चार अक्षरथी. बीजा कॉलमनी चार मात्राओ पण 'शरण वि' एवा चार अक्षरथी पुराय छे. त्रीजा कॉलममां पहेली मात्राने स्थाने 'ना' छे अने बीजी मात्राने स्थाने अवग्रह छे तेनो अर्थ एवो समजवानो के पहेली मात्रामां आवतो 'ना' बीजी मात्राने पण पूरे छे. अर्थात् गीतनो ए एक अक्षर त्यां बे मात्राने पूरे छे. ए ज रीते त्रीजा कॉलममां आवतो 'अ' अने चोथामां आवतो 'ज्ञा' पोताने स्थाने रहीने पछीनी मात्रा पण अर्थात् बब्बे मात्रा पूरे छे. आ रीते जोतां गीतना अंत तरफ आवतां 'शे' कुल त्रण मात्रा, पछी आवतो 'ह्रीं' अने 'रे' दरेक चच्चार मात्रा पूरे छे. गीत पंक्तिना अक्षरोनी उपर आवतां स्वरांकनोमां ज्यांक — आडी लीटी आवे छे त्यां एम समजवानुं के ए मात्रामां तेनी आगळनो स्वर लंबाववानो छे. दाखला तरीके गीतने अंते 'रे' आवे छे तेना उपर रे स्वर छे तेनो अर्थ ए के गीतनो 'रे' रे स्वरमां गावानो छे. हवे आपणे जोई गया के गीतनो 'रे' अवग्रहथी बतावेली बाकीनी त्रण मात्रामां पण लंबाय छे. अने ए लंबाती प्लुतिनी मात्राओ उपर — आडी लीटी छे एटले ए प्लुतिनी मात्राओ पण — आडी लीटीनी आगळ आवेल रे स्वरथी ज पूरवानी छे. अर्थात् गीतनो 'रे' चार मात्रामां लंबाय छे, अने एनो स्वर रे पण चार मात्रामां लंबाय छे. प्लुतिमां आम सर्वत्र बनतुं नथी — क्वचित ज, बने छे. आगळ जोई गया के अंत तरफ आवतो 'शे' त्रण मात्रामां लंबाय छे, पण प्लुतिनी मात्राओ जुदाजुदा स्वरमां गावानी छे: 'शे' नी पहेली मात्रा, उपर लखेल म मां, तेनी बीजी मात्रा, उपर लखेल प मां अने त्रीजी मात्रा पाछी उपर लखेल म मां गावानी छे.

पद्यरचनाने आ स्वरवैविध्य साथे झाझुं काम नथी. एक ज पद्यरचना अनेक रागमां, अने एक ज रागमां अनेक स्वरवैविध्यथी गाई शकाय. तेम ज बे के त्रण स्वरोमां सादी रीते पढी शकाय, के एक ज स्वरमां पण पढी शकाय. पद्यरचनाने मार्मिक संबंध संगीतना तालनी साथे छे. आगळ आप्यां ते स्वरांकनोमां गीतना अक्षरोनी नीचे जे २ ० ३ × आवां संख्यांको अने चिह्नो आपेलां छे ते तालनां चिह्नो छे. त्रिताल कुल सोळ मात्रानो छे. तेनो मुख्य ताल जे सम गणाय छे ते सोळ मात्राए, × आवी निशानी करी छे त्यां पडे छे. त्रितालनां बीजां गौण अंगो होय छे ते ० अने आंकडाथी बतावेलां छे. खरुं तो जेम गीत सादी रीते थोडा स्वरोमां गाई शकाय छे, अने एक मात्राना सोळमा भाग जेटला टूंका कालमां भिन्न-

भिन्न स्वरो मूकी गाई शकाय छे, तेम ताल लांबे लांबे अंतरे मात्र चपटी वगाडीने बतावी शकाय छे, तेम ज एक तालनी मात्रानो सोळांश जेटलो टूंको भाग पण तबलाना बोलोथी बतावी तालने समृद्ध करी शकाय छे. जेम एक आखी स्वरसृष्टि छे, तेम ज एक आखी तालसृष्टि छे. पद्यरचनामां जेम स्वरोनुं सादामां सादुं रूप, अथवा छेक एक स्वर जेवुं सादुं स्वरूप ऊतर्युं, तेम तालनुं पण सादामां सादुं स्वरूप, मात्र संधिमां अमुक थडकारा रूपे ज ऊतरी आव्युं छे.

आपणे स्वरांकननी पद्धति गोळ गोळ जोई लीधी. हवे अहीं तरत समजाशे के आ गीतमां तालमात्रा पूरवाने प्रयोजेला अक्षरोमां एवी सामान्य व्यवस्था छे के वर्णोनो लघु अक्षर तालनी एक कालमात्रा पूरे छे, अने वर्णोनो गुरु तालनी बे कालमात्रा पूरे छे. स द गु । श र ण वि । ना ऽ अ ऽ । ज्ञा ऽ न ति । एमां सोळ मात्रा बराबर ए ज व्यवस्थाथी पुराई छे. आगळ जतां शा ऽ स्त्र पु । रा ऽ ण स । दा ऽ सं ऽ । भा ऽ रे ऽ । ए पण ए ज प्रमाणे; तेम ज त न म न । इं ऽ द्रि य । त ऽ त्व र । ता ऽ रे ऽ । पण ए ज प्रमाणे पुराई छे. आखुं गीत जोतां जणाशे के कशा पण प्रयत्न विना दरेक चार चार कालमात्रानो खंड चारचार अक्षरमात्राओथी पुराय छे. (कडीना अंत तरफ 'शे नहीं रे' मां गुरु अक्षरो वधारे मात्रा रोके छे. पण ते पण आखा गीतमां ए स्थाने एक ज रीते एक ज प्रमाणथी पूरे छे. अने त्यां पण अक्षरमात्रा अने कालमात्रा साथे संबंध तो नियत ज होय छे.) अने आ प्रक्रिया एटली बधी स्वाभाविक लागशे के जाणे गीतमां एथी अन्यथा बनी ज न शके एम प्रथम प्रत्यय तो थशे. पण बधां गीतोमां एम नथी थतुं अने हवे हुं तेनो दाखलो आपुं छुं. मारुं मुख्य वक्तव्य ए ज छे के पद्यरचनामां ए संबंध नियत होय छे अने ए नियत संबंध ए पिंगलनो अधिकार दर्शावे छे. ए नियत संबंध आखा गीतमां सळंग न होय तो ए गीत पिंगलना अधिकारमां न आवे. हवे हुं उपरनाथी विलक्षण गीत लउं छुं जे पिंगलना अधिकार बहारनुं छे.

ए गीत गुजराती नाटक मंडळीना 'अजब कुमारी' नाटकनुं मंगळगीत गीत छे. एना रचयिता प्रसिद्ध कवि मूळशंकर हरिनंद मूळाणी छे अने तेनी तर्ज प्रसिद्ध संगीतज्ञ पंडित वाडीलाले बांधेली छे. आ गीत अने तेनुं स्वरांकन में श्री जयशंकरभाई जेओ आ नाटक मंडळीना विख्यात नट हता अने कविना अने पंडित वाडीलालना निकटना स्नेही हता तेमनी पासेथी मेळव्युं छे. अहीं हुं प्रथम ए गीत चोपडीमां छपातुं हतुं ते रीते नीचे उतारीश अने पछी तेनुं स्वरांकन आपीश. गीतना गानमां बेवडाती पंक्तिओनां स्वरांकनो लिपिमां बेवडीश नहीं.

'अजब कुमारी' नाटकनुं मंगलगीत

जय नटवर धाओ री व्हारे वेगे चडो
करुणाघन कोमल कमलदललोचन हरि. . . . धाओ री०
तुम विण अवर भ्राता ना
त्राता धाता दाता
विपदमोचन भक्तरोचन
आर्त्त आ सुणि वीनती
करो दृष्टि दुखी प्रती
धाओ धाओ रमापती — दयाळो — करुणा०

राग कल्याण : ताल दीपचंदी

स्थायी

ग रे सा सा	रे रे –	– – रे रे	नि नि –
ज य न ट	व र ऽ	ऽ ऽ धा ओ	री ऽ ऽ
३	×	२	०
म – प –	ग – रे	ग – – प	ग रे –
व्हा ऽ रे ऽ	वे ऽ ऽ	गे ऽ ऽ च	डो ऽ ऽ
३	×	२	०
नि ध प म	ग ग –	ग – ग –	ग ग ग
क रु णा ऽ	घ न ऽ	को × म ल	क म ल
३	×	२ ×	०
ग ग ग –	ग ग ग	म रे रे रे	नि नि –
द ल लो ऽ	च न ह	री ऽ धा ओ	री ऽ ऽ
३	×	२	०
म – प –	ग – रे	ग – – प	ग रे –
व्हा ऽ रे ऽ	वे ऽ ऽ	गे ऽ ऽ च	डो ऽ ऽ
३	×	२	०

अंतरो

नि ध प प	ग ग ग	ग – ग –	ग – –
तु म वि ण	अ व र	भ्रा ऽ ता ऽ	ना ऽ ऽ
३	×	२	०

– – रे –	गम प –	ग – रे –	ग – रे
ऽ ऽ त्रा ऽ	ताऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ त्रा ऽ	ता ऽ ऽ
३	×	२	०
सा रे सा –	ग ग ग	प – प प	ग – ग
दा ऽ ता ऽ	वि प द	मो ऽ च न	भ ऽ क्त
३	×	२	०
ध – ध ध	नि ध नि	सां – रें रें	सांनि सां ध
रो ऽ च न	आ ऽ र्त्त	आ ऽ सु णि	वीऽ ऽ न
३	×	२	०
प – – –	ध नि ध	निसां रें रें	सांनि सां ध
तीऽ ऽ ऽ	क रो ऽ	दुऽ ष्टि दु	खीऽ ऽ प्र
३	×	२	०
प – – –	नि ध नि	सां – रें रें	सांनि सां ध
तीऽ ऽ ऽ	धा ऽ ओ	धा ऽ ओ र	माऽ ऽ प
३	×	२	०
प – – –	म प –	मप धनि सां नि	ध प –
तीऽ ऽ ऽ	द या ऽ	ळुऽ ऽऽ ऽ ऽ	क रू ऽ
३	×	२	०
प – म ग	ग ग –	ग – ग ग	ग ग ग
णाऽ ऽ ऽ	घ न ऽ	कोऽ म ल	क म ल
३	×	२	०

आ पछी "दललोचन हरि थाओ री म्हारे वेगे चडो" वगेरे ध्रुव पंक्तिओ ए ज स्वरोमां अने ए ज तालोमां आवे छे एटले फरी वार लखी नथी.

आ गीतनी स्वरांकनपद्धति एनी ए ज छे. पण एक बे बाबत तरफ ध्यान खेंचवुं जरूरी छे. अहीं अर्धमात्रानो उपयोग थयो छे. पहेलो भाग जेने स्थायी कहे छे तेमां अर्धमात्रा आवती नथी पण अंतरामां आवे छे. 'त्राता' शब्दनो 'ता' छे तेनी पहेली अर्धमात्रा 'ग'मां अने बीजी अर्धमात्रा म

मां बोलाय छे. आवी ज रीते 'वीनती'ना 'वी'नी बे अर्धमात्राओ जुदा-जुदा स्वरोमां बोलाईने पछी तेनी प्लुतिनी मात्रा पाछी जुदा स्वरमां बोलाय छे. स्वरो तरफ जरा नजर करतां ज आनुं स्वरवैविध्य विशेष छे ए जणाशे जो के स्वरोनी केटलीक खोणवट तो में स्वरांकन लखवामां छोडी दीधी छे —ए आपणा प्रश्नने प्रस्तुत नथी माटे. पण आ गीत खास तो ए बतावबा मूक्युं छे के आमां घणां स्थानो एवां देखाशे ज्यां लघु गुरु अक्षरोनो कोई नियमित रीते संगीतनी कालमात्राओमां विनियोग थयो नथी. दाखला तरीके 'जय नटवर' ए छ लघु अक्षरोमां पहेला पांच एक सरखी रीते अकेकी संगीतनी मात्रा रोके छे, पण छेल्लो 'र' त्यां ज चार मात्रा रोके छे. 'व्हारे'नो दरेक गुरु बब्बे मात्रा रोके छे, पण 'वेगे'नो दरेक गुरु त्रण त्रण रोके छे. 'धाओ'ना बन्ने गुरु स्थायीमां अकेकी ज रोके छे, अंतरामां पहेलो गुरु बे अने बीजो अेक मात्रा रोके छे. 'भ्राता त्राता शाता दाता'मांनो दरेक शब्द बब्बे गुरुनो छे पण गीतमां जुदी जुदी संख्यानी मात्राओ रोके छे. अने 'दयालु'नो 'लु' एक साथे चार मात्रा रोके छे. स्थायीमां 'करुणा' लगा उच्चाराई चार मात्रा रोके छे पण ए ज शब्द पछीथी आवतां 'रु' बे मात्रा अने 'णा' चार मात्रा रोके छे. अलबत्त आवा गीतमां 'सदगुरु०' गीतनी पेठे क्यांई कालमात्रा अने अक्षरमात्रानो प्रमाणबद्ध मेळ आवतो ज नथी एम नथी. गीत दीपचंदी तालमां छे जेनी १४ मात्राओ होय छे, अने तेनां गौण अंगो ४ ३ ४ ३ मात्राखंडोनां छे. दीपचंदीमांथी निष्पन्न थतो जातिसंधि सप्तकल छे, अने ते ज्यां वपरायो छे त्यां अछतो रहेतो नथी :

कमलदल लो। चन हरी धाओ
विपदमोचन। भवतरोचन। आर्त आ सुणो। वीनती
करो वृष्टि दु। खीप्रती
धाओ धाओ र। मापती

अहीं, पहेली पंक्तिमां बे सप्तकल संधिओ छे. पछीनी एक पंक्ति तो आखी विषम हरिगीतनी ज छे, अने ते पछीनी बे अर्ध पंक्तिओ ते पण विषमहरिगीतना उत्तरार्धनी छे. आम संधिओनां आवर्तनो आवे छे पण ते सळंग नथी आवतां. उपरनां सप्तकलो सिवाय अक्षरोमांथी बीजां कांई सप्तकलो नहीं जडे. अने त्यारे प्रश्न थशे के आ प्रमाणे गीतमां भाषा प्रयोजवी अने तेम छतां अक्षर-मात्रानो तालमात्रा साथे कशो नियत संबंध न राखवानुं प्रयोजन शुं? जवाब ए छे के आ कृतिओ मात्र गावाने माटे ज रचायेली छे. ए गवाय त्यारे ज अमुक अमुक अक्षरो प्लुत थईने केवी रीते गायनने सुन्दर करे छे ते समजाय. त्यारे

ज तेमां अक्षरविन्यासनुं सौन्दर्य समजाय. आ जातनी रचनाने आपणे 'गीत' अर्थात् केवळ गीत कहीशुं. आ गीतोनी खासियत ए जणाशे के ते एक बाजु मात्रामेळ रचनानी पेठे पठनक्षम नथी, तेम बीजी बाजु ए सादा गद्य तरीके पण पठनक्षम नथी. 'जयनटवर०' कोई मात्रामेळ रचनानी पेठे पठी शकाशे नहीं, तेम ज गद्यनी पेठे पण पठी शकाशे नहीं. आनो एक बीजो दाखलो 'नूपुरझंकार'मांथी उतारुं —स्वरांकन विना.

आर्तनो पुकार

गीत[६]

दुरितकूपे पड्यो हुं हे जगत्राता!
लोभन लता नीरखी मुज पाय चक्यो—
दुरित कूपे० १

श्रवण न धरीं तुज वाणी मंगल,
कूपमुख अंध बनी
चरण मूक्यो. दुरित कूपे० २

करुण रुदन सुणी तात! उगारो,
नीरखवा दिव्य प्रभा
हुं अति भूख्यो दुरित कूपे० ३

आ गीत वांचतां तरत समजाशे के तेमां कोई नियत मात्रासंख्यावाळा संधिओ नथी. पण वांची जोतां ए बाबत कंई शंका रहेती होय तो ते, पुस्तकने अंते स्वरांकन अने तालांकन आपेलुं छे तेथी निरस्त थाय छे. त्यां लखेलुं छे के "ताल झंपा —अन्य मते, दीपचंदी (तालनी मात्रा १४)". गीत नीचे ताल टप्पो कह्यो ते सोळ मात्राना त्रितालनो ज एक प्रकार छे, (गायन वादन पाठमाळा. पु. १. विभाग १. पृ. ६९) अने बीजी रीते गातां १४ मात्राना तालथी पण गवाय एम कह्युं. गायननी दृष्टिए आमां कशो ज विसंवाद नथी, कारण के गायक एकनुं एक गीत भिन्नभिन्न रागमां तेम ज तालमां गाई शके. पण १६ मात्राना अने १४ मात्राना बन्ने तालोमां गाई शकाय एनो अर्थ ए थयो के अहीं कोई अमुक मात्राना ज अक्षरसंधिओ नथी. अक्षरन्यास जोतां पण एम ज जणाशे. अने गीत वांची जोतां जणाशे के ते गद्यमां पण वांची शकाय

६. मधुर रूपे विराजो हे विश्वराजा ए बंगाळी गीतनी चाल. राग —जंगलो, सोरठ, अने कंईक अंशे गोडसारंग —एम मिश्रण जणाय छे. ताल, टप्पो. नूपुर झंकार (प्रथम आवृत्ति) पृ. ७४

एवुं नथी. आ ज खरी रीते अपद्यागद्य, अपद्य–अगद्य छे. ध्यानपूर्वक जोशो तो आमां पद्य के गद्यनी पंक्तिओ पण जणाशे नहीं. 'सद्‌गुरु०' काव्यमां पंक्तिओ छे. 'जय नटवर०' मां पंक्तिओ आपी छे पण तेनो कशो अर्थ नथी, कारण के ए पद्यनी पंक्तिओ बनती नथी, तेम ज गद्यनी पण बनती नथी. भातखंडे पोतानी संगीतनी क्रमिक पाठमालामां गीतोने भिन्न पंक्तिबद्ध आपता ज नथी तेनुं कारण कदाच आ ज होय के ए गीतोमां पंक्तिओ होती नथी. एमां मात्र स्थायी अने अंतरो, के एवा जे कोई संगीतना भागो आवे छे ते ज होय छे, पंक्तिओ होती नथी. आम गेयतानी दृष्टिए आपणे काव्योना नीचे प्रमाणे भागो करी शकीए: (१) अगेय पद्यरचना, जेवा के प्रो. ठाकोरना अगेय पृथ्वीबद्ध परिच्छेदो. अहीं स्पष्ट करवुं जोईए के अगेय एटले कोई पण माणस गावा धारे तो पण गाई ज न शके एम नहीं, पण कर्ताए गावाना उद्देशथी नहीं रचेली, अने माटे गाया विना मात्र पठन करवाथी तेनुं भावन वधारे सारुं थाय एवी. (२) बीजी पाठ्य-गेय रचनाओ जेवी के 'सद्‌गुरु०': आ रचनाओ गवाय छे पण साथे साथे पाठ्य पण छे. बे त्रण स्वरोथी सादी रीते तो तेनुं पठन-गायन थई शके, गावी ज न होय तो पण सादुं पठन थई शके. (३) अपाठ्य अने गेय एटले के केवळ गेय. मात्र गावा माटे ज रचेली, अने गावा सिवाय ते गद्य के पद्य तरीके पठी न शकाय एवी.*

---

७. हुं मानुं छुं के में उपर जेने अपाठ्य अने केवळ गेय कह्यां अने जेने पाठ्य-गेय कह्यां तेनो भेद अभिनवगुप्त पण करे छे. 'भरतनाट्यशास्त्र'ना पंदरमा अध्यायमां संस्कृत सम अर्धसम विषम वृत्तो आपी दीधा पछी नीचे प्रमाणे आवे छे:

एवमेतानि वृत्तानि समानि विषमाणि च।
नाटकाद्येषु काव्येषु प्रयोक्तव्यानि सूरिभिः॥ १९२
सन्त्यन्यान्यपि वृत्तानि यान्युक्तानीह पिंडशः।
न च तानि प्रयोज्यानि हृतशोभानि तानि हि॥ १९३
यान्यत्र प्रतिषिद्धानि गीतके तानि योजयेत्।
ध्रुवायोगे तु वक्ष्यामि तेषामेव विकल्पनम्॥ १९४

अर्थ एवो छे के 'आ प्रमाणेनां सम विषम वृत्तो नाटक वगेरे काव्यमां योजवां. बीजां वृत्तो पण संग्रह करी अहीं—आ पुस्तकमां कहेलां छे ते प्रयोगयोग्य नथी. कारण के ते शोभा विनानां छे. अहीं जे प्रतिषिद्ध कर्यां तेने गीतमां योजवां, तेने विशे ध्रुवायोगमां आगळ कहीश.' आना उपर अभिनवगुप्त कहे छे: "ननु हृतशोभानीति चेत् कथं प्रयोज्यानीत्याह: यान्यत्र प्रतिषिद्धानीति;

आ रीते संधिने, एटले के अमुक संधिना आवर्तनोथी थती पंक्तिने हुं गेयकृतिओमां जातिछंदोनुं व्यावर्तक लक्षण गणुं छुं. एटले गेयकृतिओमां संधिओनां आवर्तनो देखाय तो ज अने त्यां ज पिंगलनो अधिकार, पिंगलनी हकूमत, तेनी बहार नहीं. अने संधिना आवर्तनोनुं आटलुं महत्त्व छे तो ज्यां ज्यां जातिछंदोमां संधिनां सळंग आवर्तनो न देखाय, त्यां त्यां तेनो शास्त्रीय खुलासो करवो ए पण पिंगलशास्त्रनुं काम छे. जेम के उपर में 'सद्‌गुरु०' गीतने पाठ्य कह्युं, तेमां चतुष्कल संधिओनां आवर्तनो बताव्यां, पण त्यां ज पाछुं पंक्तिना अंत तरफ चतुष्कल संधिनां अवर्तनो बंध पडी नवां ज लघुगुरुयूथो आवतां जणाय छे. सदगुरु । शरण वि । नाऽ अऽ । ज्ञाऽन ति । मिर टळ । शे ऽ ऽ न । हीं ऽ ऽ ऽ । रे ऽ ऽ ऽ । एमां चार चतुष्कलो पछी 'शे'नी बेने बदले त्रण मात्रा थाय छे, ते पछी 'हीं'नी चार थाय छे, 'रे'नी चार थाय छे. अलबत्त आनो खुलासो आगळ आवशे, पण एटलुं तो अहीं पण बतावी शकाय के भले पांचमा खंडथी अक्षरमात्रानां चतुष्कलो नथी आवतां, पण आखा गीतनां ते स्थाने आ एक ज नियत रीते नियत स्थानना अक्षरोनी नियत प्लुति थाय छे. आवी नियमितता आपणे पेला अपाठ्य गीतोमां जोई नथी.[६]

गीतं पाठ्यमानत्वाभावात् न वृत्तगता श्रव्यतापेक्षते केवलं तालयोजनार्थं साम्यमवश्यकर्तव्यमिति मात्राणां वर्णानां नियमस्तत्राश्रीयते।" पूर्वपक्ष करे छे के 'जो वृत्ती शोभा विनानां होय तो पछी ते योजवां ज शा माटे?' तेनो खुलासो करे छे के 'अहीं जे गीतो प्रतिपिद्ध कर्यां तेमां पाठ्यता नथी, तेथी वृत्तगत श्रव्यतानी तेमां अपेक्षा होती नथी. तेमां तो तालयोजना माटे ज मात्राओ अने वर्णो योजेला होय छे.' अहीं गीतोनो पाठ ज नथी थई शकतो एम कहेलुं छे, ते में उपर कहेलुं छे ते ज अर्थमां एम हुं मानुं छुं. काव्य गद्य होय के पद्य होय, बन्ने रूपमां ते श्रव्य के श्राव्य कहेवाय छे, ते श्राव्यता आ गीतमां नथी एम कहेलुं छे. ते मात्र गेय छे.

उपर 'वृत्तगता श्रव्यतापेक्षते' एम छे त्यां—पा खोटो जणाय छे पण अर्थ उपर प्रमाणे छे एम हुं मानुं छुं. (भ. ना. गा. वॉ. २. अध्याय १५, पृ. २८६–७)

८. मराठी ओवीमां संधिओ होता नथी, मात्र प्रास होय छे. मारी दृष्टिए हुं एने प्रासबद्ध गद्य कहुं. ए पद्यरचना नथी. एनुं पठन स्वरोना लहेकाथी थाय छे ए खरुं पण एम तो हरिकीर्तनकारो गद्यने पण एवा ज स्वरोना लहेकाथी बोले छे. बखारेमां बखारे एटलुं कही शकाय के ए कंईक गद्य अने पद्य बच्चेनो आकार छे. आगळ जतां ए ओवी ज संधिबद्ध थई अभंग नामनी पद्यरचना बने छे.

संगीतना तालनी मात्रा साथे जातिछंदना संधिओने संबंध छे, अने तेथी तेनां अनेक परिणामो जातिछंदोना बंधोमां प्रतीत थाय ए स्वाभाविक छे. तेवुं एक परिणाम ए छे के संगीतना एक तालनी समस्त मात्रामां जातिछंदना बे संधिओ समाय छे तेथी बधा ज जातिछंदोना चरणमां बेकी संख्याना संधिओ ज होय छे. एक बहु ज सादो दाखलो लेवो होय तो चतुष्कल छंदोमां चोपाई चार आवर्तनवाळी छे, तो पछी रोळा छ आवर्तनवाळो, अने सवैयो आठ आवर्तनवाळो छे. आ लक्षण जातिछंदोनो मेळ संगीतताल साथेना संबंधने लईने होवाना मूळ सिद्धांतने समर्थित करे छे. आ लक्षण एटलुं व्यापक छे के ज्यां प्रथम दृष्टिए चरणमां संधिनां बेकी आवर्तनो न देखाय त्यां ए बाबतनो खुलासो करवानी जवाबदारी पिंगले लेवी जोईए. अने ए खुलासो संतोषकारक थतां, फरी मूळ सिद्धान्तने एक विशेष समर्थन मळे ए स्वाभाविक छे.

जातिछंदोना तालोना अने संधिओना संगीतना तालो साथेना आ जातना संबंधथी केटलाक प्रश्नो उपस्थित थाय छे अने ए प्रश्नोना खुलासामांथी ज जातिछंदोना स्वरूप उपर विशेष प्रकाश पडे छे, अने आ प्रकाशथी वळी आपणा मूळ सिद्धान्तने बिम्ब–प्रतिबिम्ब न्याये विशेष समर्थन मळे छे. आ संबंधमां पहेलो प्रश्न आ प्रमाणे मुकाय: तालनो संबंध अनंत काल साथे होवाथी तेने प्रयत्नथी बंध न करीए त्यां सुधी ते अनंत चाल्या करे एवुं तेनुं स्वरूप छे. एक गीतमां जे ताल शरू करेलो होय छे तेने गीतमां बंध करीए नहीं त्यां सुधी ते एक सरखो चाल्या करे छे. तो ते रीते छंदमां शरू थयेली, ए तालमांथी ज उद्‌भवेली संधिपरंपरा पण अनंत चाल्या ज करे. अने एम ए सतत चाल्या करे तो पछी छंदनी पंक्तिओ केवी रीते एक बीजीथी जुदी पडे? जातिछंदमां तो चार चतुष्कले चोपाईनी पंक्ति थाय छे, छ चतुष्कले रोळानी पंक्ति थाय छे, आठ चतुष्कले सवैयानी पंक्ति थाय छे, अने जो संधिपरंपरा सतत चालु रहेती होय तो एक पंक्ति पूरी थईने बीजी शरू थई एनी प्रतीति केवी रीते थाय? आ प्रश्न साचो छे. अने आपणे जोईशुं के ए पंक्तिओनो विच्छेद करवामां ज पिंगल विकास पाम्युं छे.

आ विच्छेद माटे पिंगल मुख्यत्वे करीने बे हिकमतोनो उपयोग करे छे. एक तो प्रासनो, बीजो पंक्तिना अंत्य संधि के संधिओने अने ते साथे क्वचित् प्रथम संधिने अमुक चोक्कस रूप आपवानो. घणे भागे आ बन्ने हिकमतो एक साथे प्रयोजाय छे. आमां प्रास तो सुप्रसिद्ध छे, जो के हजी सुधी तेनुं रहस्य पूरेपूरुं पिंगलमां स्वीकारायुं नथी. अने बीजी हिकमत तरफ तो ध्यान ज गयुं नथी एम कहुं तो चाले.

जातिछंदोमां प्रास पंक्तिने छेडे आवे छे ए प्रसिद्ध छे. ए त्यां, घणा माने छे एम, अलंकार माटे आवे छे ए खोटुं छे. एनुं मुख्य प्रयोजन संधिओनां सतत आवर्तनोमां पंक्तिनो अंत बताववानुं छे. माटे ज तेने हिंदीमां तूकान्त, तूक-टूंकनो अंत कहे छे. प्रास पंक्तिओने जुदी पाडतो जाय छे अने बब्बे पंक्तिओने अंत आगळ सांधी तेनां युग्मो पाडतो जाय छे. जेम बे छूटां पतरांने एक छेडे काणुं पाडी तेमां कडी परोवीए तो बे पतरां भेगां थाय छे, (घणां ताम्रपत्रो एवी रीते भेगां करेलां होय छे) तेम प्रास एक कडीनी पेठे एक ज जगाएथी बे पंक्तिओने सांधे छे. आ रीते संधाईने भेगी थयेली पंक्तिना युग्मने आपणे कडी के टूक कहीए छीए. आ रीते भेगी थयेली बे पंक्तिओ गानमां थोडा वैविध्यथी आरोह-अवरोहनुं एक संपुट रचे छे. आथी जातिछंदोनुं एकम आ प्रसिद्ध बे पंक्तिनी एक टूक के कडी छे. आपणां पिंगलो अत्यारे जातिछंदोनां चार चरणो गणे छे पण ते संस्कृत पिंगळोनी देखादेखीए. आपणा घणाखरा जातिछंदो कविताप्रयोगमां जोईशुं तो बब्बे पंक्तिना ज जणाशे. लांबी पंक्तिपरंपराओमां, चोपाईना घणा लांबा परिच्छेदोमां चारथी निःशेष भागी शकाय तेवा चतुष्पाद छंदो नहीं पण, प्रासबद्ध कडीओ मळशे.

एटले प्रास ए जातिछंदोमां संधिनी सतत परंपरामां पंक्तिनो अंत व्यक्त करवानुं काम करे छे. संस्कृत अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां पंक्तिनो अंत चरणान्त यति अने चरणान्त गुरुना विलंबनथी दर्शावाय छे, एटले संस्कृत वृत्तोने चरणान्त दर्शाववा प्रास आवश्यक नथी. संस्कृत पिंगलोमां प्रास मात्र शोभानो शब्दालंकार छे, अने तेथी एनी चर्चा पिंगलोमां कदी थई नथी. पिंगलकारो प्रथम संस्कृत वृत्तोना पिंगलकारो थया अने पछी तेमणे जाति-छंदोने पिंगलना अधिकारमां लीधा तेनुं परिणाम एक ए आव्युं के अपभ्रंश जातिछंदोमां प्रास सार्वत्रिक बन्यो त्यारे पण पिंगलकारोए जातिछंदना निरू-पणमां तेने आवश्यक स्थान आप्युं नहीं. आ विचारदोष आपणा सुधी पहोंच्यो छे. सद्‌गत के. ह. ध्रुवे पिंगलना प्रश्नोनी ऊंडी चर्चा करी छे पण तेमणे प्रासनो प्रश्न समग्रपणे विचार्यो नथी. जातिछंदोमां मध्ययति ए छंदनुं अंग नथी एम कही तेओ आगळ कहे छे के आंतर प्रास ए पण छन्दनुं अंग नथी अने ते संबंधमां प्रासनी चर्चा करे छे :

"ए शब्द (प्रास) व्युत्पत्तिमां सं. अनुप्रास साथे अने अर्थमां सं. यमक साथे संबंध धरावे छे. वर्ण के वरडीनी आवृत्ति ते अनुप्रास, अने वर्णना समूहनी आवृत्ति ते यमक. बन्ने शब्दालंकारो छे. प्राचीन यमकमां आधुनिक प्रासनो अंतर्भाव थाय छे. प्रासना बे प्रकार छे. एक चरणना अंत्य भागने

ते पछीना चरणना अंत्य भाग साथे जोडनारो यमक ते अंत्यप्रास. एने साधारण बोलीमां प्रास कहे छे. चरणना खंडोने परस्पर जोडनारो जे यमक ते आंतरप्रास. पहेला प्रकारनो प्रास गूजराती हिन्दी वगेरे भाषाना पद्यात्मक साहित्यमां पदान्तनो पर्याय बन्यो छे. चरणोने यमक द्वारा अंत्य भागमां सांकळी लेवानी रीति ए भाषाओमां रूढ छे. ज्यां सुधी आपणा दोहरा चोपाईमांथी अंत्यप्रास नीकळी जशे नहीं त्यां सुधी आपणी पद्यरचनाना एक लाक्षणिक अभिमत अंग तरीके ए टकी रहेवा निर्मित छे. परंतु आंतर प्रासनी हकीकत जुदी छे. . . . प्रबंधोमां योजाता बीजा अलंकारोनी पेठे ए एक शब्दालंकार छे." (प. अ. आ. पृ. ३५)

अहीं आंतरप्रासने शब्दालंकार कह्यो ते बराबर छे, अने चरणान्त प्रासने तेथी भिन्न कह्यो ते पण बराबर छे, पण ते शा माटे आवे छे, तेनुं छन्दमां शुं स्थान छे ते के. ह. ध्रुवे कह्युं नथी. प्रास चरणने अंते आवे छे, ते सादा विधान तरीके साचुं छे. पण छन्दोरचनानी दृष्टिए ए वस्तुस्थितिथी ऊलटुं कथन छे. पहेलां चरण सिद्ध थई तेने अंते प्रास आवे छे, एम नथी पण प्रास ज चरणनो अंत सिद्ध करे छे—व्यक्त करे छे, एम छे.[1] अने दोहरा चोपाईमांथी अंत्य प्रास नीकळी जशे नहीं त्यां सुधी ए पद्यरचनाना अंग तरीके टकी रहेशे एम कहेवुं ए तो शब्दान्तरे पुनःकथन छे. एमनी आ विषयनी बधी चर्चा जोतां जणाय छे के तेमना मनमां एवो वहेम छे के चरणान्त प्रास ए छन्दनुं अंग छे, पण ते केवी रीते, शा कारणोथी, ए संबंधी विचार नहीं करेलो होवाथी ए संबंधी निर्णयात्मक विधान तेओ करी शक्या नथी. आ ज निबंधमां तेओ आगळ कहे छे: "आपणी पद्यरचना साथे कंई पण संबंध धरावतो होय, तो अंत्यप्रास धरावे छे. मध्यप्रास तो केवळ शोभारूपे छे." (एजन पृ. ५९) अहीं पण एमनुं वचन संदिग्ध छे.

प्रास ए व्युत्पत्तिनी दृष्टिए संस्कृत अनुप्रासमांथी आव्यो जणाय छे, पण ए, स्वरूपे, अनुप्रास नथी तेम यमक पण नथी. प्रासने केटलाक अंत्यानुप्रास कहे छे. केटलाक अंत्य यमक कहे छे. पण ए बधा नवा प्रयोजेला शब्दो भ्रामक छे. हेमचंद्र प्रास माटे सामान्य रीते अनुप्रास शब्द वापरे छे. (छंदोनु॰ पृ. २६ ब) अने 'प्राकृतपैंगल' अने बीजां केटलांक पिंगलो यमक शब्द वापरे छे. पण तेमांनो कोई शब्द प्रासनो चोकस अर्थ बताववा समर्थ नथी. सामान्य रीते बे भिन्नार्थ शब्दोनो अंत्य अक्षर अने उपान्त्य स्वर एक ज होय त्यारे

१. मराठी ओवी गद्य जेवी ज छे छतां मात्र प्रासथी तेनी पंक्तिओ पडे छे, ए पंक्तिनो अंत बतावावानुं प्रासनुं सामर्थ्य बतावे छे.

ए बे शब्दो वच्चे प्रास मळ्यो गणाय. 'काम' अने 'धाम' वच्चे प्रास छे. बन्ने शब्दो भिन्न छे. बन्नेमां अंत्य अक्षर 'म' एक ज छे, उपान्त्य स्वर 'आ' एक ज छे. अनुप्रास मात्र कोई पण व्यंजनना आवर्तनथी थाय छे. 'काव्य-प्रकाश' तेनुं लक्षण 'वर्णसाम्यमनुप्रासः,' अर्थात् वर्णसाम्य एटले अनुप्रास एवुं सूत्र कही टोका करे छे के 'स्वर वैसादृश्येऽपि व्यंजनसदृशत्वं वर्णसाम्यम्।' स्वर भिन्न होवा छतां व्यंजननुं सादृश्य होय — साम्य होय ते अनुप्रास. 'खूब चलित जल हाले' ('मानससर', पूर्वालाप) ए पंक्तिमां 'ल'नी आवृत्तिथी अनुप्रासालंकार थाय छे. तेमां 'लि' 'ल' 'ले' एम जुदा जुदा स्वरो साथे 'ल' आवे छे. आपणा पादान्त प्रास माटे आवुं वर्णसाम्य कंई काम न आवे. अने ए नोंधवा जेवुं छे के अनुप्रास घणे भागे एक ज पंक्तिमां आवे छे, ज्यारे प्रासनुं स्थान घणुंखरुं नियत छे — बे पंक्तिने अंते ज ए आवे. यमकमां बे के वधारे अर्थवाळा अक्षरो भिन्न अर्थमां ए ने ए क्रममां आवृत्त थाय छे.[१०]

वणसे वणसेवना थकी नरवारी नर धारणा नकी

द. पिं. पृ. ६६

अहीं प्रथम पादमां 'वणसे' अक्षरो ए ने ए क्रममां बे वार आवे छे. अने त्यां भिन्न जगाए ए अक्षरोनो एक ज अर्थ थतो नथी. बीजा पादमां 'नरधा'-नुं पण एम ज बने छे. 'हळवे हळवे हळवे हरजी' एमां 'हळवे' अक्षरो फरी वार आवे छे, पण अर्थ एनो ए रहे छे तेथी ते यमक नथी. पण यमक अने प्रासमां घणो भेद छे. यमकमां बे के वधारे अक्षरो आवृत्त थवा जोईए, प्रासमां बे अक्षरो आवृत्त थवानी जरूर नथी, अंत्य अक्षर अने उपान्त्य स्वर ए बे आवृत्त थवानी जरूर छे. 'काम' अने 'धाम'मां यमक छे ज नहीं, पण प्रास छे. अने यमक पण घणे भागे अनुप्रासनी पेठे एक ज पंक्तिमां आवे छे. प्रास बे पंक्तिओने छेडे आवे छे.

उपरनी जे प्रासनी व्याख्या आपी तेमां थोडी विगत उमेरवी रहे छे. पंक्तिना अंतना बन्ने शब्दोमां छेल्लो अक्षर प्रत्यय होय तो प्रत्यय बाद करीने तेनी आगळ प्रास मेळववो जोईए. दृष्टान्तथी आ नियम केटलो स्वाभाविक छे ते तरत समजाशे.

मूरख मित्रो मळी, गाळ दइ गंमत करशे,
मारि परस्पर लात, वातमां मस्करि धरशे;

दलपतकाव्य भा. २. पृ. ५७

---

१०. अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः। यमकम्

काव्यप्रकाश, उल्लास ९, सूत्र ११७

बन्ने अंत्य शब्दोमां 'शे' प्रत्यय छे तेथी प्रास 'कर' अने 'घर' ए शब्दो वच्चे मेळव्यो. एम न थाय तो प्रासनी अपेक्षा अपूर्ण रहेशे. क्वचित् तेने आघात लागशे. 'साथमां' साथे 'हाथमां' प्रास बराबर छे पण 'हाथमां' साथे 'नादमां' के 'मोदमां' ए प्रासबुद्धिने संतोषशे नहीं, जो के त्यां अंत्य अक्षर अने उपान्त्य स्वर एक ज छे. संस्कृत वृत्तोमां प्रास आवश्यक नथी पण जो प्रास राखवो होय तो संपूर्ण प्रास राखवो जोईए. कान्तना प्रासो घणा रमणीय छे.

रे प्हेलां न हती कदी अनुभवी आवी उदासीनता,
दीठी शु न कठोर! तें करुण जे व्यापी मुखे दीनता!

'उपालंभ', पूर्वालाप

'ता' प्रत्यय होवाथी प्रास तेनी पहेलांना बे अक्षरोमां मेळव्यो छे. प्रत्ययो लांबा होय त्यां पण आ ज नियम पळावो जोईए.

व्योमथी जळनी धारा जोरमां पडती हती;
ढळी पलंगने पाये सुन्दरी रडती हती!

'रमा', पूर्वालाप

अंत्यना 'ती हती' ए त्रणेय अक्षरो प्रत्ययना छे, एटले तेनी पूर्वेने स्थाने 'पड' अने 'रड'नो प्रास मेळव्यो. आपणे जोयु के प्रास बे भिन्न शब्दो वच्चे मेळववो जोईए. तेथी एकनो एक शब्द बन्ने पंक्तिने अंते आवे तो प्रास मळ्यो गणाय नहीं. त्यां ते शब्दने प्रत्ययनी पेठे बाद करीने तेनी पहेलां प्रास मेळववो जोईए. जेम के:

मुख मीठां ने मनमां कपट, स्वारथ लगी सगाई छे,
कदी जोखमकारी जीवने, मूरखनी मित्राई छे.

दलपतकाव्य भा. २. पृ. ५७

अहीं बन्ने पंक्तिने छेडे 'छे' एक ज शब्द छे. तो प्रास तेने छोडीने तेनी आगळ मेळव्यो.

उपर कह्यु के बन्ने शब्दोमां एक ज प्रत्यय होय तो तेने बाद करीने प्रास मेळववो पण एक शब्दमां प्रत्यय होय अने बीजामां प्रत्यय न होय तो प्रत्यय बाद करीने प्रास मेळववानी जरूर रहेती नथी. जेम के

बोली शक्यो नहि मुखथी वाणी
आंसुप्रवाह आंख भराणी.

एजन, पृ. ५९

'भराणी'मां 'णी' प्रत्यय छे, पण 'वाणी'मां 'णी' प्रत्यय नथी तेथी तेने बाद करवानी जरूर रहेती नथी. उपरनो प्रास निर्दोष छे. तेम ज जो के एकनो एक शब्द बन्ने पंक्तिने छेडे आववाथी प्रास बनतो नथी, पण एक ज शब्द बन्ने जगाए जुदा जुदा अर्थमां आवतो होय तो प्रास मळ्यो गणाय. दाखला तरीके 'आवो' विशेषणनो 'आवो' क्रियापद साथेनो प्रास चाली शके. वळी प्रास माटे अंत्याक्षर अने उपान्त्य स्वरनी आवृत्ति आवश्यक कही पण तेमां केटलीक छूट लई शकाय छे—कोईक रीते पण उच्चार साम्यनी असर थती होय तो. दाखला तरीके

घीरेकथी डाळी रहे त्यां वींजणा
कोण वीजु रे—विना ते सदावत्सल लीमडा.

आतिथ्य पृ. १२७

'ड' अने 'ण'ना उच्चारसाम्यने लईने आ प्रास सुनिर्वाह्य बने छे. तेम ज

आजे विदेशीने हाथे थयां छेक ज जर्जर
देवी मुज,—देवनां ए जोवा आव्यो छुं मंदिर.

एजन, पृ. ११२

अहीं उपान्त्य स्वर भिन्न छे छतां प्रास सुनिर्वाह्य छे. आ बधाने हुं सुनिर्वाह्य गणुं छुं पण उपान्त्य स्वरनो मेळ ज न होय, अंत्याक्षरमां पण मात्र स्वर ज सरखो होय ए बधाने हुं प्रासाभास गणुं छुं. अलबत्त प्रास बीजी अनेक रीते विकास पाम्या छे. पण अहीं ते आपणो विषय नथी. अहीं तो मात्र पंक्तिनो अंत बताववा ते आवे छे ए ज मुख्यत्वे प्रस्तुत छे."

११. प्रास संबंधी एक नानी हकीकत नोंधुं छुं. प्रासस्थानना शब्दो घणे भागे तो बब्बे अक्षरोना ज होय छे. पण ज्यां प्रासस्थानना बन्ने शब्दो वधारे लांबा होय छे त्यां प्रासनी अपेक्षा अंत्य बे अक्षरथी जरा आगळ वधे छे. 'सागर'नी साथे 'नागर'नो प्रास सुन्दर लागशे तेवो बीजो कोई नहीं लागे. 'पामर' के 'नटवर' एटला सुन्दर नहीं लागे, तेम छतां ए खोटा नथी. आ मात्र एक वलण छे, नियम नथी, अने जुदा जुदा विषयो अने छंदो परत्वे तेनुं बलाबल जुदुंजुदुं होय छे. दलपतरामनो नीचेनो मनहर जोवा जेवो छे.

मनहर छंद

मेलो घेलो पेलो जुओ आग खेलमां ऊभेलो
गोदडे गूंथेलो एवो आवे हनुमानजी;
काळो हाथ दारूवाळा, दीसे दाढी मोढुं काळुं,
पाघडीनो पल्लो पूंठे पूंछडा समानजी;

પ્રાસ સામાન્ય રીતે બે પંક્તિઓને અંતે આવી બન્ને પંક્તિઓને ભિન્ન કરીને પાછો સાંધે છે, પણ કોઈ કોઈ વાર એક પંક્તિના બે ખંડોને પણ તે સાંધે છે. આનો એક દાખલો પ્રથમ સંસ્કૃતમાંથી આપું—અને તે પણ અનાવૃત્તસંધિ અક્ષરમેળ વૃત્તનો :

सकलविबुधशोकः स्रस्तनिःशेषशोकः
कृतरिपुविजयाशः प्राप्तयुद्धावकाशः ।
अजनि हरसुतेनानन्तवीर्येण तेना—
खिलविबुधचमूनाम् प्राप्य लक्ष्मीमनूनाम ॥

કુમારસંભવ ૧૩, ૫૧

આ શ્લોક 'કુમારસંભવ'ના ૧૩મા સર્ગનો છે. કુમારસંભવના આઠ સર્ગો જ કાલિદાસના લખેલા છે, તે પછીના પ્રક્ષિપ્ત છે, એમ વિદ્વાનોનું માનવું છે. અને આ શ્લોકમાં યમક નહીં પ્રાસ આવે છે, એ એ ભાગ પ્રક્ષિપ્ત હોવાનો એક ખાસ પુરાવો ગણાય. કાલિદાસે યમકનો ઉપયોગ કર્યો છે, પણ પ્રાસનો કદી નહીં, પણ આપણે તો આને એક ચરણના બે યતિખંડોના પ્રાસના દૃષ્ટાન્ત તરીકે જોઈએ છીએ. આને ઉતારવાનું ખાસ કારણ તો એ છે કે આવા જ પ્રાસવાળા શ્લોકો ગુજરાતીમાં થયા છે. કવિ રત્નેશ્વરના આ શ્લોકો પ્રસિદ્ધ છે, પણ હું તે પહેલાંના જૈન કવિ શાલિસૂરિનો એક શ્લોક ઉતારું છું :

નિરુપમ કુલવાલી, રૂપની ચિત્રસાલી,
અવિકુલ ગુણવલ્લી, કામભૂપાલભલ્લી;
કઇ હુઇ સુર રાણી, માનવી મઇં ન જાણી,
અહવ હુઇ જિ નારી, તોઇ તું હુઇ ગંધારી.

વૃત્તરચના પૃ. ૧૨

ત્રીજા ચરણમાં 'મઇં' અને ચોથા ચરણમાં 'હુઇ' એક ગુરુ તરીકે અને 'ગંધારી'નો પ્રથમાક્ષર લઘુ તરીકે ઉચ્ચારવાના છે તે દેખીતું છે. આ માત્ર એક ચમત્કાર એક શબ્દાલંકાર જ છે. અને તેનું માત્ર ઐતિહાસિક મહત્ત્વ છે.

લોક નાસાનાસ કરે, ત્રાસ પામી તેની ઠામે
એને નાવે આંચ જેને રામજી જમાનજી;
ઠેકો ઠામ ઠામ આગ, લગાડીને આવો ખસે,
હશ હનૂમાનજી કે મુલ્લાં સુલેમાનજી.

અહીં પ્રાસમાં 'જી' તો પ્રત્યય તરીકે બાદ કરવો જોઈએ પણ તેની આગળ ઉપાન્ત્ય સ્વરની જગાએ આખો અક્ષર આવૃત્ત કરેલો છે. 'સમાનજી' 'જમાનજી'માં જી કાઢતાં પણ ત્રણ અક્ષરો સુધી પ્રાસ જાય છે.

हवे आपणे पंक्तिनो अंत व्यक्त करनार बीजी हिकमत, अंतना संधिओने अमुक खास रूप आपवुं, ए जोईए. आना सौथी सरल दाखला चोपाई अने तेना पेटाप्रकारोमांथी मळे छे. आपणे जोई गया के चरणाकुल, अलक अथवा अरिल्ल, जेकरी अने चोपाई (विशिष्ट) ए सर्व चोपाईना प्रकारो गणाय छे. चरणाकुलनी उत्थापनिका: दादा दादा दादा गा गा, एमां छेल्ला संधिने
दा गा
गागा अथवा दागानुं विशिष्ट रूप आपेलुं छे. अरिल्ल: दादा दादा दादा दालल एमां अंत्य संधिने दाललनुं विशिष्ट रूप आपेल छे. चोपाई सिवायनो पद्धति पण अहीं प्रस्तुत छे. तेनी उत्थापनिका दादा दद्दा दादा लदाल एमां पण अंत्य संधिने विशिष्ट रूप आपेलुं छे. आ बधा दाखलामां संधिना अनेक पर्यायोमांथी एक पर्यायने ज अंत्य संधि तरीके पसंद करेलो छे पण जेकरी चोपाईमां ते उपरांत जरा विशेष बने छे. जेकरी: दादा दादा दादा लगा एमां लगा, अने चोपाई: दादा दादा दादा गाल एमां अंत्य संधिनुं रूप गाल ए बन्नेमां अंत्य संधिने निश्चित लगात्मक रूप तो मळे छे पण ते उपरांत ते बन्नेमां अक्षरमात्रा गणतां जणाशे के ए संधिमां एक अक्षरमात्रा ओछी थाय छे. अहीं पण संधिपरंपरा तो चालु रहेवी जोईए अने रहे ज छे,—दरेक संधि चार मात्रानो होवो ज जोईए नहितर मेळ तूटे, एटले खरुं तो एम बने छे के अक्षरसंधिनी एक मात्रा तूटे छे, पण चतुष्कल कालसंधि एमनो एम ज रहे छे, अर्थात् ए अंत्य संधि लगा अने गाल पूरेपूरी चार कालमात्रा पूरे छे, अने ए रीते संधिपरंपरा अने तज्जन्य मेळ सुरक्षित रहे छे. उपरनां बन्ने दृष्टान्तोमां एटले के जेकरीमां अने चोपाईमां, ध्यानपूर्वक पठन करतां जणाशे के गामां एक मात्रा वधे छे, अर्थात् ए संधिनो गुरु त्रण मात्रानो प्लुत थाय छे.

आ प्रक्रिया बधा प्रकारना संधिओना जातिछंदोमां थाय छे. ए प्रक्रिया व्यवस्थित रीते तो आपणे आ पछीनां भिन्नभिन्न संधिना जातिछंदोनां प्रकरणोमां जोईशुं पण उपरनी प्रक्रियानां विशेष दृष्टान्तो तरीके एक बे बीजा संधिओना छंदो जोईए.

हीर: गाल दाल दाल दाल दाल दाल गाल गा

अहीं अंत्य संधि उपरांत प्रथम संधिने गालनुं विशिष्ट रूप आपेलुं छे. अने अंत्य संधि गा मूक्यो छे त्यां एक अक्षरमात्रा खंडित थाय छे. अने गा

एटले अंत्य गुरु त्रण मात्रानो प्लुत थाय छे. अहीं विशिष्ट लगात्मक रूप, अंत्य एक नहीं पण बे संधिओने मळेलुं छे, ते पण ध्यानमां आव्युं हशे. आ प्रक्रियाने आपणे प्लुति–सहकृत–अक्षरमात्रा–खंडन एम अथवा कालसंधिना रक्षणपूर्वक अक्षरसंधिनुं खंडन एम कही शकीए. आनो एक ज बीजो दाखलो लईए. आपणे गया प्रकरणमां मदनावतार जोई गया तेमां दरेक पंक्तिमां पंचकल संधिनां चार आवर्तनो आवे छे. आमां अने झूलणामां शो फेर छे ते बन्नेनी उत्थापनिका पासे पासे मूकीने जोईए.

मदनावतार: दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा दालदा

आ मदनावतारनी बे पंक्तिओ थई. हवे झूलणानी एक पंक्ति लईए:

झूलणा: दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गा

हुं ध्यान दोरवा मागुं छुं ते ए उपर के मदनावतारमां दालदानां आवर्तनो एम ने एम क्यांई पण विशिष्ट थया विना चाल्या करे छे. झूलणानी पंक्तिमां अंते दालदा संधि खंडित थई त्यां तेनुं गा एवुं मात्र एकाक्षर रूप रहे छे. अक्षरमात्रा मात्र बे ज रहे छे, पण ए गुरु त्यां आखो पंचकल कालसंधि पूरे छे, पांचमात्रानो प्लुत बने छे अने एवा प्लुत स्वरूपे पंक्तिनो अंत दर्शावे छे. चोपाई अने जेकरीमां एक ज अक्षरमात्रा खंडित थती हती, अहीं त्रण मात्राओ खंडित थाय छे. चोपाई जेकरीमां गु त्रण मात्रानो प्लुत थाय छे अहीं झूलणामां अंत्य गुरु पांचमात्रानो प्लुत थाय छे. आ अंत्य संधिओने खडित करवानो व्यापार अटपटो छे, अने तेनां वधारे अटपटां स्वरूपो आपणे जातिछंदोना मेळना निरूपणमां वधारे विस्तारथी तपासीशुं.

आ अक्षरमात्राखंडननुं एक बीजुं परिणाम पण ध्यान आपवा योग्य छे: एथी ए पंक्तिने अंते शब्दोच्चारणने हानि थया विना संगीतना ललकारने अवकाश मळे छे. आपणा माणभट्टोने पंक्तिना अंतनो प्रलंबित ललकार करता घणाए सांभळ्या हशे.

आपणे जोयुं के अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां वृत्तना चरणने अंते यति आवती अने त्यां गुरु आवतो अने तेनुं विलंबन थतुं. श्लोकार्धे यतिस्थाने विलंबन उपरांत विराम पण आवी शकतो. वळी चरणनी अंदर मध्ययति आवती अने त्यां टूंकुं विलंबन थतुं. जातिछंदोनो मेळ भिन्न प्रकारनो होवाथी एमां यतिनुं स्वरूप एवुं ए रही शकतुं नथी. प्राचीन पिंगलकारोए संस्कृत

वृत्तो अने जातिछंदोना निरूपणमां बन्नेना स्वरूपनी भिन्नतानो, तेमना मेळनी भिन्नतानो विचार कर्यो नथी एटले बन्नेमां जाणे एक ज स्वरूपनी यति होय एवी सामान्य मान्यता प्रवर्ते छे, पण जातिछंदोनो मेळ जोतां ए मान्यतानी अनुपपत्ति तरत जणाशे. पहेलुं तो ए के ज्यां एक ज सरखी कालमात्रावाळा संधिनां आवर्तनो थतां होय त्यां कोई संधिनी मध्यमां विलंबन करी ज न शकाय. एम करीए तो तेनुं कालमान वधी जाय, अने मेळ तूटे. जातिछंदोमां घणी वार एम संधिनी अंदर यति आवे छे. रोळा अने आर्या आना प्रसिद्ध दाखला छे. रोळानी पंक्ति दलपतराम प्रमाणे नीचे प्रमाणे थाय छे:

रोळा : दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा

अहीं त्रीजा संधिमां त्रण मात्रा पछी यति आवे छे जे में एकवडा अवतरण चिह्नथी बतावेली छे. आखो प्रवाह चतुष्कलोनो छे, चच्चार मात्राए ताल आवे छे, तेमां त्रीजा चतुष्कलमां यति आवती होवाने कारणे जो विलंबन के विराम करीए तो तालप्रवाह तूटे, मेळ तूटे. ते ज प्रमाणे आर्यामां पण अमुक प्रसंगे संधिनी अंदर यति आवे छे. आर्याना प्रथमदलनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे:

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदाल दादा गा।

अहीं नियम एवो छे के छट्ठा चतुष्कलमां जो चारेय लघु आवे तो पहेला लघु पछी यति आवे. पण जो त्यां जगण एटले लगाल आवे तो यतिनो कशो नियम नथी. अर्थात् छठ्ठुं चतुष्कल ल'ललल अथवा लगाल बने. हवे एम कोई भाग्ये ज कही शकशे के त्यां ज्यारे चतुर्लघु रूप होय त्यारे यतिने लीधे विलंबन थाय अने लगाल रूप होय त्यारे विलंबन न थाय. एक ज छंदमां आम मानवुं ज अशक्य छे. खरुं तो छंदनो मेळ चतुष्कलोनां आवर्तनोनो छे, एने आपणे बराबर समजीए तो पछी यतिने कारणे विलंबननो अवकाश रहेतो नथी. एटले आ बधा प्रसंगे यतिनो अर्थ त्यां शब्दनो अंत आवे एटलो ज करवो जोईए. छन्दःशास्त्रमां आ स्थाने बीजा लघुथी पद शरू थाय छे, एटलुं ज कह्युं छे (छ. शा. ४, १८), यति कही नथी, यतिनी चर्चा तो ते पछी छट्ठा अध्यायना आदिमां आवे छे. हेमचन्द्र पण सूत्रमां यति शब्द वापरतो नथी टीकामां वापरे छे त्यां ए शब्द उपचारथी वापरे छे.[12]

अहीं आपणे पंक्तिनी अंदर मध्ययति एक संधिनी अंदर आवती जोई, पण केटलाक दाखलामां तो एवुं बने छे के चरणने अंते संधि पूरो थयो होतो

१२. जुओ गत पृ. ३२० पादटीप

नथी, अने संधिनो बाकीनो भाग पछी आवता चरणना प्रारंभमां होय छे. अर्थात् चरणान्त यति पण संधिनी अंदर पडेली होय छे. त्यां पंक्तिना अंतनी यति विलंबन के विराम रूपनी होई शके ज नहीं. आना दाखला जाति छंदोनी विस्तृत चर्चामां आगळ आवशे पण अहीं टूंकमां एटलुं कही शकुं के गया प्रकरणमां लीलावती अने पद्मावती ए छन्दोमां प्रथम निस्ताल दा आवे छे, अने पछी दादा चतुष्कलोनां आवर्तनो चालतां छेवटे गा आवे छे, ए गा अपूर्ण चतुष्कल छे, अने ते पछीनी पंक्तिना पहेला निस्ताल दा साथे जोडाई आखुं चतुष्कल बने छे. अर्थात् चरणान्ते पण त्यां विलंबनात्मक के विरामात्मक यति नथी. निष्पन्न ए थयुं के जातिछन्दोमां मध्ययति तेम ज चरणान्त यति बन्ने अवश्य रीते विलंबनात्मक के विरामात्मक नथी. जातिछंदोमां यति एटले के शब्दान्त ए मात्र एक छंदोभंगी छे. संस्कृत वृत्तो अने जातिछंदो बन्नेनी सरखामणी करतां आपणे एम कही शकीए के प्रास ए संस्कृत वृत्तोनुं अंग नथी, त्यारे तूकान्त प्रास ए जातिछंदोनुं अंग छे, यति ए संस्कृत वृत्तोनुं अंग छे त्यारे जातिछंदोनी ए एक भंगी मात्र छे. एनो चमत्कार छे तेनी ना नथी, पण ते छन्दनुं आवश्यक अंग नथी, एक छंदोभंगी छे, अने ए महत्त्वनो फरक छे.

जातिछंदोमां जो यति ज न होय तो पछी पठनमां क्यांई विराम ज न आवे? कोई पण पठन सळंग शी रीते चाली शके? प्रासथी अने बीजी रचनायुक्तिओथी चरणनो अंत व्यक्त थाय पण त्यां विराम के विलंबननुं स्थान न होय तो पठनकार श्वास शी रीते लई शके? आवर्तनो सतत चाल्या करतां होय तो श्वास खावानो पण विराम शी रीते मळे? आनो एक जवाब ए छे के झूलणा जेवा छंदमां आपणे जोयुं के पंक्तिने अंते त्रण मात्रा जेटलो अनक्षर गाळो छे त्यां गुरुना विलंबनने बदले विराम लेवो होय तो लई शकाय. पण आ जवाब बधा प्रसंगोने व्यापी शकतो नथी. घणा जाति-छंदोनां अंत्य संधिमां एवो के एटलो अनक्षर अवकाश होतो नथी. त्यां शुं समजवुं? खरुं तो आ मात्र श्वास खावानो प्रश्न नथी. पंक्तिनो तात्पर्यार्थ श्रोताने मनमां ऊतरे एटला माटे पण विरामनी जरूर होय छे. आनो एक जवाब ए छे के संगीतना स्वरो साथेना के स्वरो विनाना विलंबित पठनमां तो पठन एटलुं धीमुं होय छे के गमे त्यां श्वास लई लेवाय छे. पण तेवा नहीं पण श्रोतावर्ग आगळ करवाना पठनमां, छंदने अंते जो संधि पूरो थतो होय तो त्यां बे संधि जेटलो समय विराम करी शकाय छे. बे संधिथी आखो ताल बनी रहे छे, अने एक ताल आखो वचमां जतां ताल परंपरा चालु रहे छे. मैं

पहेला प्रकरणमां कह्युं तेम तालपरंपरामां के संधिपरंपरामां निःशब्द चालेलो काळ पण तालपरंपरानुं—छंदनुं अंग बनी रहे छे, अने ताल तूटतो नथी. पण ते सिवाय पण पठनकार गमे त्यां अमुक प्रयोजन माटे छंदने पडतो मूकी शके छे, अने पछी पाछुं पठन ज्यांथी पडतुं मूक्युं हतुं त्यांथी सांधीने आगळ चाली शके छे. तेथी पण आगळ जईने पठनकार प्रयोजनने खातर छंदने गमे त्यारे पडतो मूकी शके छे, अने गमे त्यारे गमे त्यांथी पाछो शरू पण करी शके छे. ए वखते छंदनुं अनुसंधान कल्पी लेवानुं रहे.

परिशिष्ट १

के० ह० ध्रुवनो अनावृत्तसंधि मात्रामेळ संबंधी मत

में सघळा जातिछंदोना मेळ, संधिओना आवर्तनोथी सिद्ध थाय छे एम कह्युं. के. ह. ध्रुव तेमां बे छंदोनो अपवाद माने छे. काव्य अने प्लवंगम ए बे छंदोने तेओ अयतिक गणे छे, अने बन्नेमां ११मी मात्राए यति होय त्यारे तेने भिन्न दर्शाववा बन्नेने उपकाव्य अने उपप्लवंगम एवां नामो आपे छे. अने आ यतिने लीधे आ बन्ने छंदो अनावृत्तसंधि बने छे एम माने छे. आपणे एमनुं आखुं कथन जोईए:

"आवृत्त संधिना समचतुष्पद मात्राबंध साथे सरखावतां अनावृत्त संधिना छंदनी संख्या छेक कमी छे. मात्र बे ज मात्राबंध अनावृत्त संधिना मळी आवे छे. एकने आपणे पिंगळमां प्लवंगम अने बीजाने काव्य कहिये छिये. ए नाम अपभ्रंश भाषामांथी गूजरातीमां ऊतरी आव्यां छे. अपभ्रंश साहित्यना प्लवंगम अने काव्य आवृत्तसंधिना समचतुष्पद मात्राबंध छे. पहेला छंदना चरणमां चाचा संधिनां चार आवर्तन पछी वाहवा आवे छे. बीजानुं चरण उक्त संधिनां छ आवर्तनथी नीपजे छे. तेमां छेल्ला आवर्तनमां चाचा संधिनो गागा भेद वपराय छे. चरण आवृत्तसंधिनां होवाथी ए बे छंदमां मध्य यति छे नहि. गूजरातीमां प्लवंगम अने काव्यनां जूनां नामथी जे बे मात्राबंध ओळखाय छे, तेमां अनावृत्तसंधि आवे छे, अने चरणना बे खंड पडे छे, अर्थात् एमां मध्य यतिनी जरूर छे. आ अंगगत तफावतने लीधे एमने नवा नामथी ओळखाववानी अगत्य जोई एकने हूं उपप्लवंगम अने बीजाने उपकाव्य कहूं छूं. तेमनी ऊठवणी नीचे प्रमाणे छे:

उपप्लवंगम: बावा बावा बाह् । ह्वाबा बाह्गा ।

उपकाव्य: " " " " बावा बागा ।

पहेला छंदमां पांच अने बीजामां छ मात्रासंधि छे. ते पैकी चोथो जे ह्वाबा संधि, तेमां बीजी मात्रा उपर भार पडे छे अने बीजा बधामां पहेली मात्रा भारयुक्त छे. एमां पूर्वापर बाह् अने ह्वाबानुं स्वतंत्र व्यक्तित्व टकावी राखवाने माटे मध्य यति ऐकान्तिक उपपत्ति धरावे छे, अर्थात् ते आवश्यक छे. मध्य यति दूर थतां संधिनूं अनावृत्तत्व नाश पामी गूजराती भाषाना उपप्लवंगम तथा उपकाव्य अपभ्रंशना अनुक्रमे प्लवंगम अने काव्य बनी जाय छे." (प. ऐ. आ. पृ. ३६–३७)

आ आखुं निरूपण जातिछंदोनी यति पण अनावृत्तसंधि वृत्तोनी यति जेवी ज छे एवा मंतव्यथी प्रेरायेलुं छे. में आगळ कह्युं तेम जातिछंदोनो मेळ संधिओनां सतत आवर्तनोथी सिद्ध थाय छे, अने तेमां अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तोमां आवती विलंबनात्मक के विरामात्मक यतिने अवकाश ज नथी, कारण के चतुष्कलनी वचमां विराम के विलंबन करवा जईए तो चतुष्कल पछी चतुष्कल न रहे, ने मेळ तूटे. एक वार एटलुं स्वीकारीए एटले पछी चतुष्कलोनो प्रवाह ज रहे छे. के. ह. ध्रुवे यतिने अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो जेवी गणी, तेथी पंक्तिना खंडो स्वीकार्या अने तेथी यति पछीना खंडनो एक स्वतंत्र खंड तरीके विचार कर्यो, अने यतिखंडोना संधिओ भिन्न होवा जोईए ए पोताना मतने अवलंबी भिन्न संधिओ शोधवा प्रेराया. खरी रीते रोळा अने उपकाव्य तथा प्लवंगम अने उपप्लवंगम बन्नेना तालो दलपतरामे बताव्या छे तेवा चतुष्कल संधिना ज छे, अने यतिथी तेमां कशो फेरफार थतो नथी. दलपतरामना तालो फरी जोईए.

काव्य : दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा

प्लवंगम : दादा दादा दाल'ल दादा दालगा

आवी, संधिनी अंदर यति, आर्याना छठ्ठा चतुष्कलमां आवे छे त्यां तेओ चतुष्कल आवर्तनो स्वीकारे छे. तो अहीं न स्वीकारवानुं कशुं कारण नथी.

१०

चतुष्कलसंधि छंदो — मेळनी दृष्टिए

आपणे गया प्रकरणमां जातिछंदोना मेळनो सिद्धान्त जोयो. ए मेळ अने तेमांथी निष्पन्न थता नियमो बधी जातिरचनाओमां केवी रीते प्रवृत्त थाय छे ते जोवुं जोईए. आ प्रकरणमां आपणे चतुष्कल संधि रचनाओ ए दृष्टिए जोईए.

चतुष्कल रचनाओना प्रारंभथी ज एक प्रश्न उपस्थित थयो छे, ते ए के कोई कोई रचनाओमां — खास करीने आर्या अने पद्धतिमां, विषम संधिस्थाने जगण शा माटे निषिद्ध कर्यो छे? एक बीजो प्रश्न पण उपस्थित थयो छे के ज्यांक चतुष्कल संधिओ छूटा पडता नथी त्यां पण 'ताल ल्गारक' तूट्यो गणी तेने निर्वाह्य गणे छे तेनूं कारण शुं छे? हाल तुरत तो आपणे पहेलो ज प्रश्न विचारीए.

आपणे जोयुं के बधा संधिओ, अमुक अमुक तालना अर्थमां, तालमात्रानी जगाए अक्षरमात्राना विनियोगथी थया छे. चतुष्कल संधि लावणीना तालमांथी थयो छे. लावणीनो ताल सद्‌गत बर्वे नीचे प्रमाणे आपे छे:

लावणी: १ २ । ३̲ ४ ५ ६ । ७̲ ८
÷ ०

गायन वादन पाठमाळा पुस्तक १, पृ. ६१

मात्राना अंक नीचेनी संज्ञाओ तालनी छे. आमां ÷ चिन्हवाळुं तालस्थान छे ते सम एटले के सौमां मुख्य छे. ते पछी ३जी मात्रा नीचे निशानी छे ते गौण तालस्थान दर्शावे छे. पद्यरचनामां आपणे तालस्थान थडकारथी दर्शावीए छीए अने तेने ताल कहीए छीए तो ए रीते अहीं पहेली मात्रा उपर आवता समने प्रधान ताल कहीए अने त्रीजी मात्रा उपरनाने गौण ताल कहीए. मुख्य ताल माटे अक्षर उपर ऊभी लीटी अने गौण ताल माटे अक्षर उपर गोळ पोलुं मींडुं करतां आपणो संधि दादा थाय.

सामान्य रीते पिंगलमां मुख्य ताल ज स्वीकाराय छे अने तेमां कशुं खोटुं नथी. पण अहीं आपणे जरा वधारे झीणवटथी जोवानी जरूर छे. चतुष्कलना गागा गालल ललगा लललल ए चारेय प्रस्तारोमां मुख्य ताल माटे

मेळवीने एक चतुष्कल रचे छे. एटले के आ छंद गालल संधिनां आवर्तनोनो छे, लगालनां आवर्तनोनो नहीं.

आर्यामां अने पद्धतिमां जगणने विकल्पे सर्वलघु चतुष्कल आवी शके छे, अहीं ए प्रस्तुत नथी एटले चर्चतो नथी. यथास्थाने तेनी चर्चा आगळ करीश.

आ लगालना निषेधनो खुलासो जेम गौण तालथी थाय छे तेम ज बे संधिओ छूटा न पडतां पण अमुक अमुक अक्षरयूथोमां रचना निर्वाह्य गणाय छे तेनो खुलासो पण आ गौण तालथी मळे छे. बे संधिओ छूटा क्यारे न पडे? आगला संधिनो अंत्य लघु पछीना संधिना आद्य लघु साथे मळीने एक गुरु बनी जाय त्यारे. एटले आ प्रसंग प्रथम संधि गालल, लललल के लगाल होय अने ते पछीनो ललगा, लललल, के लगाल होय त्यारे ज बने. आ जातनां संधिओनां संश्लिष्ट थयेलां रूपो नीचे प्रमाणे थाय (१) गालगालगा (२) गालगालल (३) गालगागाल (४) ललगालगा (५) ललल-गालल, (५) ललगागाल (७) लगागालगा (८) लगागालल, (९) लगागागाल. आ बधां रूपोमां पहेली मात्रा खुल्ली छे, पांचमी खुल्ली नथी, गुरुनी पहेली मात्रा नीचे दटायेली छे. पण आमांनां १, २, ४, ५, ७, अने ८ रूपो चतुष्कल रचनाओमां आपणे वपरायेलां जोईशु. दर्वेए तो आ रचनाओनो खास स्वीकार कर्यो छे. ते कहे छे:

> चच कदि बे साथे मळे, तो तेना आदेश,
> लगागालगा ने वळी गालगालगा बेश. ७
>
> गायन वादन पाठमाळा पुस्तक १, विभाग ३, पृ. ५३

आ दोहरामां ज चच एटले बे चतुष्कलोनी जगाए (७) अने (१) तो आवी गयां. दर्वेए आ बे ज जणाव्यां छे अने अलबत्त आ बे रूपो ज वधारे वपराय छे पण उपर बताव्यां ते बीजां पण वपराय छे. दाखला तरीके पहेला ज प्रकरणमां आपणे उतारेल तुलसीदासनी चोपाईनी चोथी पंक्तिमां 'प्रभु विलोकि जनु' एवुं अक्षरजूथ जोयुं हतुं ते ललगालल हतुं. 'दलपतकाव्य'मां एक आवी चोपाई आवे छे.

> सकळ हिंदुनां राज्यस्थान
> नहि कोइ द्वारामती समान;
>
> दलपतकाव्य. भा. २, पृ. ५६

अहीं प्रथम पंक्तिमां 'सकळ हिंदुनां' छे ते ललगालगा छे. अर्थात् खरी रीते निर्वाह्य रूपोने टूंकमां मूकवां होय तो दालगालदा अने लदागालदा कहेवां जोईए. निषिद्ध रूपो माटे हुं एम कहुं के जेने अंते गागाल आवे छे ते ज निषिद्ध छे. अर्थात् आगली त्रण मात्राओ गमे ते रूपमां आवी शके छे. मात्र पाछली पांच मात्राओ गागाल रूपमां आवे छे त्यारे ज ए रूपो निषिद्ध बने छे.

हवे आनुं कारण शोधवुं घणुं सहेलुं बने छे. दालगालदा अने लदागालदामां अलबत्त पांचमी मात्रा एटले के बीजा चतुष्कलना मुख्य तालनी पहेली मात्रा गामां दटाई जाय छे. पण ए चतुष्कलनी त्रीजी, सळंग गणतां सातमी मात्रा ए गुरु पछीना लघुने लीधे गौण प्राप्त माटे उपलभ्य बने छे, अने तेथी मुख्य तालनो लोप थतां पण गौण तालथी मेळनो उद्धार थई मेळ आगळ चालवा लागे छे. पण निषिद्ध अक्षरयूथ दालगागाल के लदागागालमां, बीजा चतुष्कलनी मुख्य तालनी तेम ज गौण तालनी बन्ने मात्राओ लुप्त थतां ए आखुं चतुष्कल ताल रहित रही जाय छे, अने तेथी मेळ खंडित थई जाय छे. मात्रासंख्या मांडीने हुं विशेष स्पष्ट करुं.

	१२४६७		१३४६७		१२४६८		१३४६८
(१)	लदागालदा	(२)	दालगालदा	(३)	लदागागाल	(४)	दालगागाल
	३ ५ ८		२ ५ ८		३ ५ ७		२ ५ ७

आ चारेयमां पहेला चतुष्कलमां पहेली एटले मुख्य तालनी मात्रा खुल्ली छे. एटले पिंगलनो नियम सचवाई जाय छे. ते पछी (२) के (४) जेवा रूपमां त्रीजी मात्रा खुल्ली होय के (१) के (३) जेवा रूपमां ढंकायेली होय ते महत्त्वनुं नथी. महत्त्वनुं ए छे के बधां रूपोमां बीजा चतुष्कलनी पहेली मात्रा, एटले सळंग गणतां पांचमी मात्रा गुरुमां ढंकायेली छे एटले बीजा चतुष्कलना मुख्य तालने अवकाश नथी मळतो; पण तेमां गौण ताल जे चतुष्कलनी त्रीजी मात्रा उपर एटले के सळंग गणतां सातमी मात्रा उपर पडवो जोईए, ते लदागालदा अने दालगालदामां खुल्ली छे, अने लदागागाल अने दालगागालमां ए पांचमी अने सातमी, बन्ने ढंकायेली छे, अने तेथी पहेलां बेमां मेळ ऊगरी जाय छे, बीजां बेमां भांगे छे. अहीं पण मेळने भांगनार लगाल ज जणाशे. बीजा चतुष्कलमां लगाल आवे अने एनो पहेलो लघु आगला संधि साथे जोडाई जाय एटले, लगालनुं मुख्य तालस्थान पण लोपाय, एनुं गौणतालस्थान तो पहेलेथी ज लुप्त हतुं.

आ उपरथी आपणे चतुष्कलसंधि जातिओ विषे बे मुख्य नियमो करी शकीए, के एनी रचनाओमां बने त्यां सुधी पंक्तिने प्रारंभे जगण न मूकवो.

ક્યાંક આવી જાય તો ચાલે. બીજું એ કે પંક્તિમાં કોઈ પણ સ્થાને બે જગણ સાથે આવવા દેવા નહીં, આવે તો દોષ છે. ત્રીજું એ કે ચતુષ્કલસંધિ જાતિઓમાં ગમે ત્યાં બે ચતુષ્કલ સંધિઓનો જગણ $\frac{\text{લદા}}{\text{દાલ}}$ ગાલદા આવી શકે. એથી મેળ લોપાતો નથી. ત્યાં તાલ 'લગીરક તૂટ્યો' છે એટલું કહેવાની પણ જરૂર રહેતી નથી. અને આપણે ચતુષ્કલ રચનાઓમાં આવતો એક અષ્ટકલ સંધિ ગણીશું, અને મૂળ સંધિ દાદાની અપેક્ષાએ અને નિષ્પાદ્ય કે દ્વૈતીયીક સંધિ ગણીશું. જેમ દાદામાં એક જ સ્થાને — પ્રથમ માત્રાએ તાલ મૂકીએ છીએ તેમ આમાં પણ માત્ર પહેલી માત્રા ઉપર તાલ મૂકીશું. ગૌણ તાલનો પિંગલમાં નિર્દેશ નથી કરતા તે વ્યવહાર ચાલુ રાખીશું. આવો જ ચતુષ્કલનો એક બીજો નિષ્પાદ્ય સંધિ છે પણ તે જવલ્લેજ વપરાય છે, અને તેના ઉલ્લેખનો પ્રસંગ હવે નજીકમાં જ આવે છે.

સોળ માત્રા એટલે થોડથી રચનાઓમાં આપણે પદ્ધતિ જોઈ ગયા. અપભ્રંશ પિંગલ પ્રમાણે આપણે તેનું માપ નીચે પ્રમાણે આપેલું

પદ્ધતિ : દાદા દેદ્દા દાદા લદાલ

અહીં માત્રાઓ સળંગ ગણતાં, તાલ ૧, ૫, ૯, ૧૩મી ઉપર પડે છે. પણ આપણે ગયા પ્રકરણમાં જોયું કે દલપતરામની આ છંદની તાલવ્યવસ્થા જુદી છે. આપણે તેનો લક્ષણછંદ જોઈએ :

પ્રતિ ચરણ સોળ માત્રા પ્રમાણ,
તે ચરણ અંત જો જગણ આણ,
ત્રણ ચક્ર રુદ્ર રત્ન જ તાળ,
પદ્ધરી છંદનો એ જ ઢાળ.

દ. પિ. પૃ. ૧૪

હવે અહીં જો માત્ર પદ્ધરી છંદના પ્રાચીન સ્વરૂપનો જ પ્રશ્ન હોત તો જવાબ સહેલો છે અને તે આપણે આગલા પ્રકરણમાં આપ્યો કે ઉપર ઉત્થાપનિકામાં આપ્યું તે જ તેનું સાચું સ્વરૂપ છે (ગત પૃ. ૩૦૮–૧૦). ત્યાં આપણે જોયું કે એ પ્રાચીન ઉત્થાપનિકામાં દલપતરામની તાલયોજના બેસી શકતી નથી, કેમ જે તેમાં ત્રીજી માત્રા તો તાલને માટે અવશ્ય ઉપલબ્ધ હોય છે પણ તે પછીની છઠ્ઠી ઉપલબ્ધ હોતી નથી. પણ આપણે માટે એટલું બસ નથી. દલપતરામનો પદ્ધતિ તે ભલે પ્રાચીન અપભ્રંશનો પદ્ધરી નથી, આગળ જઈને એમ

पण कहीए के एने पद्धरीनुं नाम पण न अपाय, पण आपणे त्यां ज अटकी शकीए नहीं. आपणे ए तपास करवो जोईए के ए कोई बीजो छंद छे के छंद ज नथी? अने बीजो छंद होय तो आपणी मेळयोजनामां तेने क्यां स्थान मळे? आने माटे आपणे दलपतरामना पद्धरीनो ज अभ्यास करवो जोईए. ए रीते जोतां जणाशे के दलपतराम जेम चोथा चतुष्कलने स्थाने लगाल मूके छे तेम घणी जगाए बीजा चतुष्कलने स्थाने पण लगाल मूके छे. आगळ जे लक्षण उतार्युं छे तेमां अने ते पछी आवता बीजा छंदोमां पण बीजा चतुष्कलने स्थाने लगाल छे. पण तेमां एक अपवाद छे. लक्षणछंदनुं चोथुं चरण

पद्धरी छंदनो ए ज ढाळ

एम थाय छे. अर्थात् एमणे सर्वत्र बीजे स्थाने लगाल मूक्यो नथी. अहीं तो गालगागाल एवुं अष्टकल पण आवे छे. अने आ अष्टकल ते उपर स्वीकारेलुं $\frac{\text{दाल}}{\text{लदा}}$ गालदा नथी. उपर उपरथी जोवा जईए तो ए निषिद्ध करेलुं गालगागाल थवा जाय छे पण ए निषिद्ध अष्टकल अने आ बन्ने एक ज नथी. ए निषिद्ध अष्टकलमां प्रथम मात्रा उपर ताल पडतो हतो अने एम करवा जतां बीजुं चतुष्कल ताल विनानुं रही जतुं हतुं. अहीं एम नथी. अहीं ताल बीजी मात्राथी शरू थाय छे एटले एनो गुरुलघुन्यास मात्र जोई ते निषिद्ध गणी लेवुं बराबर नथी. जातिछंदोनो मेळ तालथी थाय छे अने ताल तूटतां तूटे छे. माटे आपणे एनी लघुगुरुयोजना उपरांत तालयोजना पण जोवी जोईए.

आ छंद दलपतरामे पोते योज्यो होय एम जणातुं नथी. एमणे पोते मात्र एक दल छंद नवो योजेलो छे, आ पद्धरीने एमणे नवो कह्यो नथी. तपास करतां आ छंद तेमणे हिंदीमांथी लीधो होय एम मने जणायुं छे. दलपतरामने हिंदी सारुं आवडतुं हतुं, तेमणे पोते हिंदीमां काव्यो लख्यां छे. अने तेमणे जेम संस्कृत तेम हिंदी पिंगळनो पण अभ्यास करेलो हतो. उपरनो छंद तेमणे हिंदीमांथी लीधो छे तो आपणे आ छंदनी थोडी हिंदी पंक्तिओ पण जोईए. नीचेनी पंक्तिओ हुं 'पृथ्वीराजरासा'मांथी लउं छुं. त्यां आने छंद कहेलो छे.

छंद

कच्छ ही देश सिन्धु समघ्य। १
चंदसेन ईक पर्वत सनघ्य॥ २

संवत अठार ओगनीस सोइ। ३
कल्पांत ईक संग्राम होइ॥ ४
पंसेर भार सब्वा प्रमान। ५
तरहे पखान चहुआन रान॥ ६
संवत अठार छत्तीस जान। ७
कच्छ ही सिन्धु डोलत निघान॥ ८
परसिन्धु बन्ध कारन प्रमान। ९
इह सुनहि बात चहुआन रान॥ १०
कच्छ ही देश भूपाल होइ। ११
सु हि कर्न करि हेति को ॥ १२

पृथ्वीराज रासेकी प्रथम संरक्षा पृ० ३९

मात्र छंदनी दृष्टिए जोतां पण थोडी अशुद्धि जणाय छे. आपणे ते सुधारीने तेनुं स्वरूप जोईशुं. पंक्तिओ २ थी ७ अने ९ तथा १०मां पूर्वार्धमां प्रथम चतुष्कल पछी लगाल आवे छे. पण १लो, ८मो अने ११-१२मोमां 'पद्धरीछंद'नी पेठे ज गालगागाल आवे छे. प्रथम चतुष्कल पछी लगाल आवे छे तेने दादालगाल ए रूपे मुकाय, अने १, ८ वगेरे पंक्तिमां उपलब्ध थता बीजा रूपने गालगागाल एम मुकाय. आमां बन्नेमां पहेली बे मात्राओ निस्ताल छे. एटले दा ने बाद करीने जोतां दालगाल अने लगागाल एवां रूपो मळी आवे छे. आपणे आगळ जे चतुष्कलनिष्पाद्य अष्टकल जोयुं तेनुं स्वरूप $\frac{\text{दाल}}{\text{लगा}}$ गालदा हतुं. अने एमां मात्र एक ज मुख्य ताल आपणे पहेली मात्रा उपर मूकेलो हतो. अहीं पद्धरीमां आवतुं रूप दादालगाल ए स्पष्ट रीते दालगालदाना छेल्ला निस्ताल दाने अंतेथी उपाडी आदिमां मूकवाथी थयेल छे. खरी रीते आ संगीतनी सुप्रसिद्ध प्रक्रिया छे. सतत अनवच्छिन्न चालता तालने गमे त्यांथी शरू करीने आगळ चाली शकाय छे. मोतीदाममां आपणे आ ज प्रक्रिया जोई हती. अहीं पण ए ज प्रक्रिया छे. दालगालदादालगालदादालगालदा आम एक अनंत श्रेणी चाले छे. तेमां रचना पहेला दाथी शरू करो तो संधि दालगालदा

देखाय पण ए ज श्रेणीमां पांचमा अक्षर दाथी शरू करो तो दादालगाल एवो संधि मळे. आम थाय त्यारे आ नवा संधिरूपमां आवतो दालगाल विभाग, तेनी पछी आवता दादालगालनो पहेलो निस्ताल दा पोतामां पकडीने, मूळ अष्टकल पूरं करे छे. काव्यना पठनमां पण एम ज थाय छे:

प्रति	चरण सोळ मा	त्रा माण ते	चरण अंत तो	जगण आण
दा	दाल गाल दा	दा लगाल दा	दा ल गाल दा	दा लगाल—
त्रण	चक्र रुद्र र	त्ने ज ताळ, प	द्धरी छंदनो	ए ज ढाळ
—दा	दा ल गाल दा	दा ल गाल दा	लदा गालदा	दा ल गाल—

अहीं स्पष्ट थशे के दालगालदानां ज आवर्तनो चाले छे. चोथी पंक्तिमां आपणने स्वरूप कंईक जुदं देखायुं हतुं तेमां फरक मात्र दालगालदानी जगाए लदागालदा आवे छे तेनो ज हतो. अहीं रचनामां एक खूबी थये छे. पंक्ति संधिना संपूर्ण आवर्तने पूरी थती नथी, पण छेल्लो संधि त्यां अपूर्ण रहे छे, अने पछी ते पछीनी पंक्तिना आद्य भागथी पूर्ण थाय छे. पंक्तिओ प्रासथी संकळाती हती ते उपरांत अहीं, एक संधि आगली पंक्तिना अंते अने पछीनी पंक्तिना आदिमां वहेंचाई जई, पंक्तिओ रेणाई जाय छे. रचनामां एक बहु ज विलक्षण खूबी आवे छे. मोतीदाममां आ खूबी बहु उत्कट रूपे देखाती नहोती, अहीं देखाय छे. आपणे जोईशुं के घणी रचनाओमां कविओ आ खूबी जरा पण आयास विना साधी शके छे.

एक प्रश्न हजी रहे छे. में अहीं जे संधि बताव्यो तेमां त्रीजी मात्राए ताल पडे छे. पछी अगियारमी मात्राए, एटले एक अष्टकल पूरुं थतां पाछो ताल पडे छे. ए दलपतराम प्रमाणे छे. पण दलपतराम त्रीजी पछी पाछी छठ्ठी मात्राए ताल नांखे छे. तेवो ताल आपणा अष्टकलमां नथी. हुं मानुं छुं के ए तालनी त्यां जरूर नथी. ए स्थाने गुरु अवश्य आवे छे, अने तेना गुरुत्वने लीधे एमने तालनो भास थयो एम मने लागे छे. एवी रीते क्यांक क्यांक बीजे पण दलपतरामे वधारानो ताल नांखेलो मळी आवे छे ते आपणे आगळ जोईशुं. आ दादालगालने आपणे पेला निष्ताल संधिना मात्र पर्याय तरीके स्वीकारीशुं. पद्धरीना तालनी आ व्यवस्थाने सद्गत के. ह. ध्रुवनो संपूर्ण टेको छे. चतुष्पद मात्राबंधोमां आवर्तन पामता संधिओनी गणना करतां तेओ आठमो बाबाहबाह गणावे छे. अने स्पष्ट कहे छे के "आठ

मात्राना बावाहवाहनो (प्रयोग) पद्धरी (प्रा. पज्झडिया. हि. पद्धडी)-मां थाय छे." (प. अं. आ. पृ. ३०) कहेवानो भाग्ये ज जरूर होय के दा अने ल संज्ञाने छोडीने तेमणे अहीं वा अने ह संज्ञा लीधो छे. एमणे प्राकृत पज्झडिआ मां आ संधि कह्यो छे, पण में आगळ बताव्युं छे के हेमचन्द्र वगेरेए आपेलां दृष्टान्तोमां आ संधि गोठवी शकातो नथी. एटले आ संधि खरो तो दलपतरामना अने हिंदी साहित्यना पद्धडीनो छे.

के. ह. ध्रुवे जेने हुं निष्पाच कहुं छुं एवा आ बावाहवाह संधिने मुख्य संधिओमां स्थान आप्युं अने एना जेवा ज दालगालदा संधि ने न गणाव्यो ए आश्चर्य जेवुं छे. वरुं तो चतुष्कल रचनाओमां आ, दालगालदा ज वधारे वपराय छे. अने ए एमणे स्वीकार्युं पण छे (प. ऐ. आ. पृ. ३८). कदाच एवो तर्क थाय के बावाहवाहनां आवर्तनोथी जेम हिंदी पद्धरी थाय छे तेवो कोई छंद दालगालदानां आवर्तनोथी थतो नथी, एवुं एनुं कारण होय. अत्यारना पिंगळमां एवो छंद नथी ए खरुं पण प्राचीन पिंगलोमां दालगालदानां आवर्तनोवाळा छंदो मळी आवे छे. जेम के:

उग्गदित्ततवतावभासुरो
ता गओ मसाणं मुणीसरो।
तं च केरिसं कालगोयरं
सिवसियालदारियमओयरं।

जसहरचरिउ १, १२

आमां स्पष्ट रीते दालगालदानां आवर्तनो जणाशे. दरेक पंक्तिमां ए संधिनां बब्बे आवर्तनो छे. 'महापुराण'मां पण आ छंद वपरायो छे.

वल्लहंतरंगंगकंपणं
एम जाम जायं पयंपणं
माणिमाणवित्थारमंथणं
सित्त 'वसंणिहियमग्गणं

महापुराण ३४ – १०

आ रचनाओनी स्वतंत्र छंद तरीके क्यांई गणना थई नथी. पण तेनुं बंधारण जोतां तेम थवानी जरूर छे. आने ज मळतो एक अक्षरमेळ छंद पिंगलोमां नोंधायो छे. हिन्दी 'छन्दःप्रभाकर,' 'रणपिंगल' बन्ने तेने कामदा कहे छे. तेनुं माप :

कामदा : गाल गाल गा गाल गाल गा = १० अक्षरो

आने आपणे दालगालदानुं लगात्मक रूप गणी शकीए. एनां आमां बे आवर्तनो थाय छे. ए रीते ए उपर उतारेल बे अपभ्रंश छंदोने मळतो थाय. 'संगीत छंदोमंजरी' (पृ. ९.) आने सोळ मात्रानो गणी राग केदारो ताल चतुश्र जाति त्रितालमां तेनां स्वरांकनो आपे छे. अर्थात् आने अष्टकल संधिनां आवर्तनोनो छंद गणी शकाय. वळी आ स्वीकारतां, एनुं ललित छंदने मळतुं पठन पण थाय छे एम नोंधे छे (गायन वादन पाठमाळा पु. १, वि. ३, पृ. ७). कामदा साहित्यमां वपरायेलो में जोयो नथी, एटले बेमांथी कई एक ज पद्धति खरी छे ते कही शकतो नथी. एटले एनी बन्ने शक्यता स्वीकारुं छुं. ललित छंदना निरूपण साथे तेने फरी जोईशुं. पण अहीं तेने आ अष्टकलना आवर्तनथी सिद्ध थता छंद तरीके गणवामां कशो दोष नथी. आ सिवाय पण केटलाक छन्दोमां तेनां आवर्तनो आवे छे. पण ते रचनाओ सोळथी वधारे मात्रानी छे, एटले अहीं षोडशी रचनाओना संदर्भमां एने लेतो नथी. पण आटला उपरथी एटलुं तो अवश्य जणायुं हशे के दालगालदा संधि चतुष्कल रचनाओमां बे चतुष्कलोनी जगाए मात्र आकस्मिक रीते ज नथी आवतो पण तेनां ज आवर्तनोना विशिष्ट छंदो पण छे.

षोडशी रचनाओमां आपणे पद्धति जोई गया. हवे बाकी चोपाईना सामान्य नामे चालतो त्रण रचनाओ जोवानी रही. ते पण आपणे आगळ जोई गया छीए.

चरणाकुळ : दादा दादा दादा गागा / दागा

एमां पूरी सोळ अक्षरमात्रा छे, अने चरणान्त व्यक्त करवा अंत्यसंधिने विशिष्ट रूप आपेलुं छे.

अलक के अरिल्ल : दादा दादा दादा दालल

एमां पण पूरी अक्षरमात्राओ छे, अने अंत्य संधिने जुदी रीते विशिष्ट रूप आपेलुं छे.

जेकरी: दादा दादा दादा लगा

चोपाई: दादा दादा दादा गाल

आ बन्नेमां अंत्य संधि बे रीते विशिष्ट थाय छे. तेनुं रूप लगात्मक छे ते उपरांत तेमांथी एक अक्षरमात्रा खंडित करेली छे. अलबत्त ए अंत्य संधि पोताना गुरुने त्रण मात्रानो प्लुत करी आखो चतुष्कल मात्रासंधि पूरी आपी संधिनां आवर्तनोनो मेळ चालु राखे छे. आ खंडनव्यापार केटलाक ओछा जाणीता छंदोमां आथी पण आगळ गयेलो मालूम पडे छे. जेम के:

हालक छंद—मात्रा १४, ताल ४

जुग जुग जुग कळ गुरु अंते,
हालक छंद कह्यो संते;
प्रथम पछी चारे चारे
ताळ धरे, न जगण धारे. ५२

द. पिं. पृ. ११

जुग एटले चच्चार मात्राना त्रण संधिओ अने अंते गुरु. तेमां क्यांई जगण न आवे. पहेली मात्राथी ताल शरू थई आगळ चच्चार मात्राए ताल आवे. एटले के १ली, ५मी, ९मी, १३मी उपर ताल. आपणी रीते

हालक: दादा दादा दादा गा

दादा रूप मूक्यूं एटले जगणनी शक्यता ज न रही. अंते एक गुरु आवे छे, ते अंत्य चतुष्कल कालखंडनो एकलो प्रतिनिधि छे, अने आखा चतुष्कलने पूरे छे एटले के त्यां चार मात्रानो प्लुत थाय छे. पठनमां स्वाभाविक रीते गुरुने लंबावीने चार मात्रानो करीने ज पछी ते पछीनी पंक्ति आपणे बोलीए छीए. आ खंडनव्यापार तेथी पण आगळ तुरग छंदमां जाय छे:

तुरग छंद—मात्रा १२, ताळ ३

जुग जुग जुग कळ धरिये,
जगण न जतिमां करिये;
प्रति जति प्रथम ज ताळे
ते वृत तुरग रुपाळे. ४१

द. पिं. पृ. १०

अहीं जति शब्द खोटी रीते वपरायो होय एम जणाय छे. पण आ उपरना हालकने ज मळतो छंद जणाय छे. लक्षणमां अंते गुरु कह्यो नथी पण उदाहरणमां सर्वत्र छे. आपणी रीते तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

तुरग: दादा दादा दागा

पंक्तिए पंक्ति छूटी पाडीने बोलवी होय तो एक आखा चतुष्कल जेटलो समय विराम के विलंबन करी पछी बीजी पंक्ति बोलवी जोईए. कारण के आवर्तनो बेकी ज होई शके. पठन करतां आ बाबत स्पष्ट थशे. पण बब्बे पंक्तिने एक गणी पठन करतां वचमां एवा विरामनी के विलंबननी जरूर नहीं जणाय. पण त्यारे ए छ चतुष्कलोनो छंद गणाय.

आवो पण टूंको ११ मात्रानो आभीर छे. तेनी उत्थापनिका दादा दादा गाल एवी 'दलपतपिंगळ'मां आपेली छे (द. पि. पृ. ९). पण आ दोहरानुं सम चरण छे, एनी चर्चा दोहराना संदर्भमां करवी वधारे अनुकूळ पडशे. आ टूंको छंद तो भाग्ये ज वपराय छे, एटले तेने अहीं लेतो नथी. एवो ज एक छंद वरवीर 'रणपिंगल' भा. १, पृ. १० मे आपे छे तेनुं स्वरूप दादा दादा गालगा ए प्रमाणे छे, ते यति पूर्वेनुं दोहरानुं विषम पाद थई रहे छे, एटले एनी चर्चा पण अहीं नथी करतो.

षोडशी रचनाना मुख्य मुख्य जाति छंदो अहीं पूरा थाय छे. पण विषयनी संपूर्णता खातर तेना मुख्य मुख्य लगात्मक छंदो पण आपणे जोवा जोईए. आमां स्वाभाविक रीते सौथी पहेलो प्रसिद्ध तोटक आवे जे संस्कृत साहित्यमां पण खूब प्रसिद्ध छे.

तोटक: ललगा ललगा ललगा ललगा

आने ज नाममां तेम ज स्वरूपमां मळतो एक मोटक छे जे हाल वपरातो नथी, पण घणो जूनो हशे एम मानुं छुं, कारण के ठेठ 'भरतनाट्यशास्त्र'-मां तेनो उल्लेख छे.

मोटक: गालल गालल गालल गालल

मोटकनुं आ स्वरूप 'छंदोमंजरी'मां छे (२, ९३). दलपतराम आने मोदक कहे छे (द. पि. पृ. ४३). पण भरते आपेलुं तेनुं स्वरूप जरा भिन्न छे:

आदौ द्वौ पञ्चमञ्चैवाप्यष्टमं नैधनं तथा।
गुरुण्येकादशे पादे यत्र तन्मोटकं यथा॥

म. ना. गा. बो. २, १५, ४०, पृ. ५२८

अर्थात् पहेला बे, पांचमो, आठमो, छेल्लो एटला अक्षरो गुरु. पादमां कुल अक्षर अगियार. आ प्रमाणे तेनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे थाय:

गागा ललगा ललगा ललगा

आ पछी दोधक लईए.

दोधक: गालल गालल गालल गागा

द. पि. पृ. ३८

विद्युन्माला पण षोडशी रचनानुं ज लगात्मक रूप छे.

विद्युन्माला: गागा गागा गागा गागा

मोतीदाम आपणे आगळ जोई गया छीए

मोतीदाम: ल गालल गालल गालल गाल

आ बधा छंदोमां चतुष्कलना एक ज पर्यायनां आवर्तनो आवे छे. दोधकमां अंते गागा छे पण ते तो अंत्य चतुष्कलने आपेलुं विशिष्ट रूप छे, जेम भरते मोटकमां प्रथम चतुष्कलने आपेलुं छे तेम. पण चतुष्कलना भिन्न पर्यायोना मिश्रणथी थयेली लगात्मक रचनाओ पण होय छे ते आपणे आगळ जोयुं, अने ते चालु संदर्भमां आपणे टूंकमां जोईए.

भ्रमरविलसिता: गागा गागा लललल ललगा
जलोद्धतगति: लगाल ललगा' लगाल ललगा
चंचलाक्षिका अथवा गौरी: लललल ललगा लगालगा
प्रहरणकलिता: लललल ललगा लललल ललगा
पणव: गागा गालल ललगा गागा
नवमालिनी: लललल गालगाल'लल गागा
कुड्मलदंती: गालल गागा' लललल गागा

अहीं चतुष्कलना पर्यायो उपरांत बे जगाए द्वैतीयीक संधि दाल/लदा-गालदानो प्रयोग पण थयो छे. वळी अंत्य संधि खंडित होय एवा पण छंदो मळे छे जेम के

उपस्थिता: गागा ललगा ललगा लगा
वृन्ता: लललल लललल गागा गा

उपस्थिता तो जेकरीनुं ज लगात्मक रूप जणाशे. त्यां एक मात्रा खंडित थई छे. वृन्तामां हालकनी पेठे बे मात्रा खंडित थई छे.

आ बधा लगात्मक जातिछंदोमां चतुष्कलनो ताल क्यां आवे? के. ह. ध्रुव तोटक संबंधी कहे छे: "तोटकमां . . . . चित्ररचनाना संधि, जे बे बिनजोर रूपथी शरू थाय छे, तेना प्रथम संधिनां ए बे बिनजोर रूप नोंखां राखी जोरदार बीजथी आरंभ थतां त्रण 'च' संधि अने ते पछी 'दा' बीज गोठवाई जाय छे. अहिं. . . . पहेलां बे बिनजोर लघु बीजनूं बिनजोरपणूं जाळववाने प्रथम मात्रात्मक संधिना 'दा' बीजमां गुरु रूप वापरवूं पडे छे." (सा. वि. पृ. २९३) भावार्थ के ललगाने संधि न गणतां ललने निस्ताल मात्राओ तरीके बहार राखी गालल्नां आवर्तनोथी तोटक निष्पन्न थयो मानवो : आ रीते लल गालल गालल गालल गा. आपणे प्रथम आ प्रश्न बधा संयोगो ध्यानमां लई विचारी जोईअे. प्रथम तो ए के लघु उपर ताल न ज पडी शके अेम न कहेवाय. चोपाई जेवा छंदना सामान्य पठनमां प्रथम मात्राए ज ताल पडवानो, पछी त्यां ललगा रूप होय के लललल होय. एटलुं ज नहीं वचमां ज्यांज्यां आवां रूपो आवे त्यां पण संधिनी प्रथम मात्राए ज ताल पडवानो. भ्रमरविलसितामां त्रीजुं अने चोथुं चतुष्कल लललल ललगा छे ते बन्नेमां प्रथम मात्राए पडवानो. अने एम थतां त्यां पठनमां कशुं अयुक्त जणातुं नथी. बीजुं आ रीत अखत्यार करतां प्रथम ज लललल आवे त्यां शुं करवुं? दाखला तरीके चंचलाक्षिका के गौरीना न्यासमां? अहीं कोई रीते पहेली मात्राओने बाद करी शकाशे नहीं. एम करवा जतां अंते आवता लगागालगामां ताल मूकी शकाशे नहीं. एटलुं ज नहीं केटलीक जगाए ललगानां आवर्तनो होय त्यां पण आम नहीं करी शकाय. दाखला तरीके नीचेनां बे अर्धसम वृत्तोमां:

वेगवती : { ललगा ललगा ललगा गा
गालल गालल गालल गागा

केतुमती : { ललगा लगाल ललगा गा
गालल गालगालल गागा

बन्नेमां प्रथम अर्धमां त्रण चतुष्कलो अने चोथा चतुष्कलनी जगाए एक गुरु मात्रा छे, जे चार मात्रानो बने छे. अने बीजा अर्धमां तो स्पष्ट गाललथी ज आवर्तनो शरू थाय छे. पठनमां पण प्रथमार्धमां ललगाथी ज आवर्तनो शरू थाय छे, अने तेमां ताल प्रथम ल उपर जणाशे. एटले मने बधी रीते विचारतां कोई पण एक पर्यायना तालनो विचार तेने वितथी विश्लिष्ट करी करवो ए साची पद्धति जणाती नथी. लगाल जेवो पर्याय जेमां गौण ताल दबायेलो रहे छे

तेनो विचार पण पंक्तिना संदर्भमां ज करवो जोईए. प्राकृत अपभ्रंशना पद्धतिमां छेल्ले एटले चोथे स्थाने ते आवे छे त्यां तेनो प्रथम मात्रा उपर ज ताल पडे छे. दादा दद्दा दादा लदाल ए प्रमाणे. ए ज लगाल मोती-दाममां आवे छे त्यारे, बे जगण साथे आववा अशक्य छे तेथी तेमां चतुष्कल ताल पहेली मात्रा छोडीने शरू थाय छे. त्यां पठनमां पण गालल ज संभळाय छे. लगाल करीने पठन करवा जतां, आपणे आ प्रकरणमां जोयुं तेम, मेळ अत्यंत कढंगो थई जाय छे. एटले आमां पठनने ज आपणे निर्णायक राखीए. कोई संधिनो अलग करीने विचार न करीए.

आ रीते जोतां घणाखरा छंदमां संधिनी प्रथम मात्राए ज ताल पडतो जणाशे. के. ह. ध्रुव प्रमाणे विचारतां ज्यां संधि गुरुथी शरू थतो होय त्यां तो ताल पहेली मात्राए ज आवशे. एटले

मोटक : गालल गालल गालल गालल

दोधक : गालल गालल गालल गागा

विद्युन्माला : गागा गागा गागा गागा

थशे. तेम ज

भ्रमरविलसिता : गागा गागा लललल ललगा

पणव : गागा गालल ललगा गागा

कुड्मलदंती : गालल गागा । ललल गागा

उपस्थिता : गागा ललगा ललगा लगा

थशे. एटलुं ज नहीं पण केटलीक जगाए अनादि गागा पण पहेली मात्राना तालनो निर्णायक बनशे. जेम के

नवमालिनी : ललल गालगालगा गागा

अहीं अंत्य संधि गागा उपरांत गालगालगा पण प्रथम मात्राना तालनो समर्थक नीवडे छे.

वृन्ता : ललल ललल गागा गा

वृत्तामां अनादि गागा तालनिर्णायक बने छे. चंचलाक्षिका अथवा गौरीमां द्वैतीयीक संधि तालमात्रानो निर्णायक बने छे.

चंचलाक्षिका अथवा गौरी: लललल ललगा लगागालगा

जलोद्धतगतिमां प्रथम मात्रा सिवाय कोई बीजी मात्रा तालयोग्य जणाती नथी.

जलोद्धतगति: लगाल ललगा । लगाल ललगा

अहीं ललगामां गा उपर ताल नांखवा जतां वांधो ए आवे के ए त्रीजी मात्रा लगालमां उपलब्ध नथी. एटले तेमां प्रथम उपर जणाव्या प्रमाणे पहेली पर ज ताल नांखवो पडे.

प्रहरणकलिता: लललल ललगा लललल ललगा मां ललगा एम त्रीजी मात्रा उपर ताल नांखवा जतां आद्य चतुर्लघु चतुष्कलमां त्रीजी मात्रा उपर ताल नांखवो पडशे. आ चतुर्लघुमां कोई गुरु तो नथी. ज, अने जो बधा लघुमांथी ताल माटे कोईनी पसंदगी करवी होय तो आद्य लघुनी करवी जोईए कारणके आद्य पठननो थडकारो एने मळे छे. ललगामां आपणे घणी वार पहेली मात्रा उपर ताल जोयो छे, एटले उपर आपी ते ताल-व्यवस्था ज बरावर छे. प्रश्न मात्र रह्यो तोटकनो. तेमां ललगानां ज आवर्तनो छे. आपणे सामान्य रीते लघु गुरु वच्चे ज पसंदगी करवानी होय त्यारे ताल माटे गुरुने ज पसंद करीए छीए. दलपतराम पण तोटकमां त्रीजी मात्राथी चतुष्कल ताल शरू करे छे. एटले ताल गुरु पर आवे ए स्वीकार उपपन्न बने छे. पण ते माटे पहेला बे लघुने बाजु पर काढी गालल संधि गणवानी जरूर मने जणाती नथी. मने ललगाना पठनमां तेम ज तोटकनी कविताना पठनमां पण ललगा संधि ज संभळाय छे. जेम के

रमतां भमतां कदि दिव्य वने,
फुलडां जडियां रडलां मुजने,
बहु वेळ रह्यां पडि मूज कने,
गुंथि आज दऊं रसिकां! तम्हने.

'अवतरण', कुसुममाळा पृ. १

आमां पठनमां ललगानां आवर्तनो ज संभळाशे.

षोडशी रचनाओ पछी हवे चोवीशी रचनाओ आवशे. बीजी रीते कहीओ तो चतुष्कलनां चार आवर्तनोवाळा प्रकार पछी छ आवर्तनोना प्रकारवाळी रचनाओ आवे. एक आखो ताल ए संगीतना कालमाननो अखंड विभाग छे, अने एक तालमानमां बे संधिओ आवे छे एटले रचनाओनो विस्तार बब्बे संधिनी वधघट वाळो होय.

आमां मुख्य बे रचनाओ छे. कवित के रोळा, अने प्लवंगम.

रोळानी रचना तो सादी छे पण तेने विशे एक बे बाबत कहेवानी प्राप्त थाय छे. पहेलुं ए के तेमां अगियार अक्षरे यति कहेली छे पण प्रयोगमां ते पळाती नथी. तेनुं कारण में आगळ कह्युं ते प्रमाणे ए छे के जातिछंदोमां यति ए छंदनुं आवश्यक अंग नथी, पण भंगी छे,—शोभा छे. आनां दृष्टान्तो पुष्कळ मळी रहे छे. जेम के:

झिरिमिरि झिरिमिरि झिरिमिरि ए मेहा वरिसंति,
खलहल खलहल खलहल ए वाहला वहंति,
झळझळ झळझळ झळझळ ए वीजुलिय झबकई
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपई

प्राचीन गूर्जरकाव्यसंग्रह पृ. ३८

अहीं कोई पण पंक्तिमां ११मी मात्राए शब्द पूरो थतो नथी. सर्वत्र बारमी मात्राए पूरो थाय छे. 'रणपिंगल'मां नोंध छे के 'रोळाना चरणमां ११मी मात्रा लघु होय ते रोळा काव्य कहेवाय छे.' (रणपिंगल भा १. पृ. ३६-३७) पण यति जो छंदनुं अंग होय तो ते आवी पाछी थई शके नहीं. ए ज पिंगल रसावलीमां पण ११मी मात्राए यति आवश्यक कही छे पण दयारामनी रसावलीमां सर्वत्र ए यति पळाई नथी:

चिंतामणि मोटो पण' जेनो आप्यो मळियो;
त्यारे ते चिंतामणि' थकि दाता अति बळियो; १७३
श्री महाप्रभु स्वतंत्र' पुरुष श्रीमुख सांभळियुं;
तेमनि कृपा ज्यहां' तेनूं भाग्य अतो बळियुं. १७४

दयारामकृत काव्यमणिमाळा पृ. २७१

मात्र त्रीजी पंक्तिमां ११मी मात्राए शब्द पूरो थाय छे, ते सिवाय क्यांई ११मीए यति पळाई नथी. पहेली पंक्तिमां 'पण' आगळ शब्द पूरो थाय छे त्यां १२ मात्रा पूरी थाय छे. बीजीमां 'चिंतामणि' आगळ शब्द पूरो थाय छे त्यां १०मात्रा पूरी थाय छे. खरं तो अहीं यति पळाई ज नथी एम कहेवुं

जोईए. आ दृष्टान्त साथे साथे ए पण बतावे छे के चोपाईनी पेठे रोळामां पण बन्ने प्रासबद्ध पंक्तिए अकेक कडी गणाय छे, जे बधा जातिछंदो माटे स्वाभाविक धोरण गणावुं जोईए:

दयारामे रसावळा पण लख्यां छे ते पण आ रसावळीथी भिन्न जणातां नथी:

रसावळा

हीरा रत्न परीक्षा' ज्यम सहु झवेरि माह्यर;
एदृश अमूल्य चिंतामणि शुं ल्हे मति बाह्यर. ४७
विरल नाम पण लहे' दृष्टिगोचर नथि केनो;
ते माटे शुं चिंता'मणि क्यहुं वो पण छेरो? ४८
बंदीजन नृपसदृश' सभा पर्यंत वखाणे;
रंग म्हेल राणो' वृत्तान्त अनुभवी जाणे. ४८

दयारामकृत काव्यमणिमाला. पृ. २४६

आमां पण यतिनुं नियत स्थान जणातुं नथी. केटलीक जगाए १२मी मात्राए शब्द पूरो थाय छे अने छेल्ली पंक्तिमां तो दसमी मात्राए शब्द पूरो थाय छे. एटले यति पळाई नथी.

रोळा छंदमां यति छंदनुं अंग नथी ए खरुं पण ते साथे ए पण स्वीकारवुं जोईए के ११मी मात्राए यति होय छे त्यारे रचनामां एक सुन्दर भंगी आवे छे. एम ने एम चाल्यां आवतां चतुष्कलोमां भाषानी एक हिकमतवी छंद आखो दीपी ऊठे छे. आ भंगी आ पछी आवता प्लवंगममां पण आवे छे. आ भंगीने लीधे ए यतिस्थाने लघुगुरुन्यास उपर जे असर थाय छे ते तरफ पिंगळकारोनुं ध्यान गयुं नथी पण ते जोवा जेवुं छे. ११ मात्राए यति आवे एटले त्रीजा चतुष्कलमां त्रण मात्रा पछी शब्द पूरो थाय. एम थवा माटे ए त्रण मात्राओ त्रण रूपे आवी शके : ललल, गाल अथवा लगा. आमां घणे भागे गाल, तेथी ओछी संख्यामां ललल, अने क्वचित ज लगा आवे छे. अर्वाचीन गुजरातीमां रोळा बहु वपरायो नथी पण छप्पानां पहेलां चार चरणो रोळानां चरणो होवाथी शामळमांथी रोळानी पुष्कळ पंक्तिओ मळी शके. ते जोतां तरत जणाशे के गाल रूप ज विशेष वपरायुं छे. आपणे ८मा प्रकरणमां रोळानुं जे दृष्टान्त उतार्युं छे तेमां गाल अने ललल बन्ने रूपो स्पष्ट मळी आवे छे. सौथी वधारे वपराश एनो छे एटले एनां दृष्टान्तो अहीं आपतो नथी. मात्र लगानां आपुं छुं:

महिषी मोटुं दान, अणूंबी लोभी नानो;
पवनथि प्हेडूं मंन, विवेक देवोथी दानो;
चंद्रथि निर्मळ क्षमा, क्रोध अग्नीथी तातो
दुधथि उजळो यश, अमल मदिराथी मातो.

बृ. का. दो. भा. ३, पृ. ३९२–३

उल्लाल उतारतो नथी. बीजुं दृष्टान्त:

वृक्ष एकनां डाळ, बार भलि भात भणीजे;
पांखडि त्रणसें साठ, गुणीजन जोइ गणीजे
चतुर जुओ चोवीश, सरस फळ तेनां फळियां
एकविसहस्र छवें, पत्र कविलोके कळियां.

एजन, पृ. ३९५

विप्र वांचजे वाण, किया खटरस खावाना;
भोगी खटरस भणो, गणो खटरस गावाना;
जोगी खटरस खोल, बोल खटरस था पुन्ये;
कृहे खटरस धन धर्म, नेक राखिश नहि नुन्ये

एजन, पृ. ३९८

पहेला कवितमां त्रीजी क्तिमां यति स्थाने 'क्षमा', बीजामां चोथी पंक्तिमां 'छवें', त्रीजामां बीजी पंक्तिमां 'भणो' एटलां ज लगा रूप छे. अने ते पण बधांई एक ज कडीमां बे नथी. ए ज एनी विरलता अने अनिष्टता बतावे छे. बाकी तो बधां ज गाल छे. आ पछी एक बीजी बाबत पण नोंधवा जेवी छे. आमांथी कोई पण एक रीते अगियार मात्राए शब्द पूरो थाय, पछी ए रचना आगळ कया रूपे चाले छे? अलबत्त एक रीत तो तरत सूझे एवी छे के चतुष्कलनी बाकीनो लघु आवी पछी चतुष्कलो आगळ चाले. एवुं घणी जगाए बने पण छे. जेम के पहेला छंदनी पहेली पंक्तिमां "दान अ,णूंबी," एमां यति पछी आवता 'अ' लघुथी अधूरूं रहेलुं चतुष्कल पूरुं थाय छे. पण सर्वत्र एम बनतुं नथी. घणी जगाए त्यां दालगालदा एवो द्वैतीयीक संधि आवे छे. जेमके: "वृक्ष एकनां डाळ बार भलि भात गणी जे." एमां 'वृक्ष एकनां', ए दालगालदा छे ते पछी 'डाळ बार भलि' ए पण दालगालदा छे. ए ज प्रमाणे 'खोल बोल खट' तथा 'धर्म नेक रा' ए बधां दालगालदानां ज रूपो छे. पण विशेष ए छे के ज्यां शब्दान्त लगाथी थायछे, त्यां, एनी पछी ल आवीने भाग्ये ज चतुष्कल पूरुं थाय छे, घणे भागे

तो लगागालदा ज त्यां थाय छे, अने ए रीते जगण बने त्यां सुधी टाळवामां आवे छे. उपरनां दृष्टान्तोमां 'क्षमा क्रोध ए' 'छसें पत्र कवि' ए बंने लगागालदा छे मात्र 'भणे ग'मां ज जगण आवे छे. आ आखी रूपावतीनी वार्तामां मने बधा मळीने ए स्थानना पांच ज जगणो मळ्या छे. निचोड ए थयो के ११मी मात्राए यति आणवी होय तो दाल ए रूप ज इष्ट छे, लगा इष्ट नथी, अने लगा आवे त्यां पण ए चतुष्कलमां जगण इष्ट नथी.

अहीं आपणे जोयुं के बे चतुष्कलोनी जगाए लदागालदा आवे छे. तो आगळ षोडशी रचनामां लदागालदानां आवर्तनथी जेम एक षोडशी रचना जोई तेवी चोवीसी पण थाय छे ते जोईए. अलबत्त आ रचना पण अपभ्रंश साहित्यमां ज वपरायेली मळे छे.

हेला : इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्गं।
दाययदेज्ज पत्तववहारसारमग्गं॥

महापुराण खंड १, पृ. १४७

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

| | | |
दादा दालगालदा दालगालदा गा

अहीं प्रथम एक चतुष्कल आवुं आवी पछी दालगालदानां बे आवर्तनो थाय छे. पछी छ आवर्तनो पूरां थवाने एक चतुष्कल खूटे तेनी जगाए मात्र गा आवे छे, जे त्यां आखा कालसन्धिने पूरे, अर्थात् ए गा चार मात्रानो छे. आने मळता आवली छंदमां छेल्लुं आखुं अक्षरचतुष्कल खंडाई जाय छे.

आवली : धरिऊणं इसी मुणिगंथवेसयं
दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं।
तिस्सा रइकएण परिसेसियंगओ
एयत्तं भरेण झाणालयं गओ॥

महापुराण खं. १, पृ. १२१

| | |
उत्थापनिका : दादा दालगालदा दालगालगा

छठ्ठुं चतुष्कल आखुं अनक्षर छे. ए आखुं य विरामथी अहीं पुराय छे. आवी रीते दालगालदाना अमुक स्थानना प्रयोगथी पण अपभ्रंशमां अने प्राचीन गुजरातीमां भिन्नभिन्न रचनाओ थई छे, ते बधांनां दृष्टान्तो अहीं आपतो

नथी. ए बधी भंगीओ छे, जे एक वार छंदनुं स्वरूप समजाया पछी कोई पण कवि सहेलाईथी प्रयोजी शके, अने वांचनार ओळखी शके. तेने जुदाजुदा छंदनां नामो घटतां नथी. (जुओ प्रा. गु. छं. पृ. ६९)

आपणे ८मा प्रकरणमां जोयुं के बत्रीसी रचनाओमां आंतर प्रासवाळी अनेक रचनाओ थाय छे, जेमां सौथी वधारे प्रासवाळी त्रिभंगी छे. बत्रीस मात्रा जेटली लांबी पंक्तिमां एवी भंगीओ करवाने पुष्कळ अवकाश मळी रहे. थोडी रचनाओ एटली टूंकी छे के एनां एवी भंगीओ थई शके नहीं. पण चोवीशी रचनाओ लांबी छे, अने तेमां कविओए एवी आंतर प्रासनी भंगीओ करी छे. अलबत्त आवी रचनाओ अत्यारना गुजराती साहित्यमां प्रयोजाती नथी, पण अपभ्रंशमां ए मळी आवे छे. नमूना तरीके हुं एक दृष्टान्त लउं:

सिबूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयलि वियसियसयदलि रंभवणे।
उववासु करेप्पिणु जिणुपणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमारुह कयणियमायरु रिसहसुउ॥

महापुराण १३, ९, पृ. २२९

आ आखी रचनानी मात्रा गणीशुं तो २४ थई रहेशे. ए रीते एने सादो रोळा गणवो होय तो गणी शकाय. एम करतां एनां चतुष्कलो नीचे प्रमाणे पाडी शकाय. पहेली ज पंक्ति मात्र चतुष्कले अल्पविराम करी उतारुं छुं:

सिबू, सरिदा,रइ सुर,हिसमी, रइ सुर, भवणे

पण आ जातना संधिओ त्यां उद्दिष्ट नथी. उद्दिष्ट नीचे प्रमाणे छे:

सि] बू सरि,दारइ; सुरहि,समीरइ; सुर भवणे
को] इलकुल, कलयलि; वियसिय, सयदलि; रंभवणे।

आ प्रमाणे वांचतां पंक्तिनो आंतरप्रास तरत व्यक्त थशे. पहेली पंक्तिमां दारइ — मीरइ नो आंतरप्रास, बीजीमां कलयलि–सयदलि नो आंतरप्रास व्यक्त थशे. उच्चारणमां ज ए आंतरप्रास ऊठी आवशे. अने माटे ए ज साचो संधिन्यास छे. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दा] दादा दादा;' दादा दादा;' दादा गा
दा] दादा दादा;' दादा दादा;' दादा गा

पठनमां पहेलो दा निस्ताल छे ते जुदो बोलाय छे, अने तेनी पछी चतुष्कलो शरू थाय छे. छेवटे गुरु आवे छे, ते गुरु, पछीनी पंक्तिना दा साथे संयोजाई पूरुं चतुष्कल थई रहे छे. आवो रीते ज्यां पंक्तिनी पहेली मात्राओ उपरनी पंक्तिना अंत्य अक्षरो साथे जोडाई संधि रचाती हशे त्यां हुं तेने पराङ्मुख कौंसथी दर्शावीश. ए निस्ताल दा पछी बब्बे चतुष्कलोना यतिखंडो पडे छे, जे आंतरप्रासथी सांधेला छे. आ अष्टमात्रक खंडोने ए रीते एक उपांग तरीकेनुं स्वतंत्र अस्तित्व छे ते बताववा तेने अंते में अर्धविराम करेलुं छे. एक संधि बताववा हुं अल्पविराम करुं छुं, तो बब्बे संधिनो खंड बताववा हुं अर्धविराम करुं. आ रचना त्रिभंगीने बहु ज मळती छे. त्रिभंगी करतां तेमां एक आंतरप्रासबद्ध अष्टकल ओछुं छे एटलो ज फेर छे.

त्रिभंगी: मात्रा दस आणो; आठ प्रमाणो; वळि वसु जाणो; रस दीजे

अंते गुरु आवे; सरस सुहावे; भगतां भावे; त्यम कीजे.

आमांथी त्रीजुं अष्टकल काढी नांखतां उपरनी अपभ्रंश रचना बनी रहे:

मा] त्रा दस आणो; आठ प्रमाणो; रस दीजे,
अं] ते गुरु आवे; सरस सुहावे; त्यम कीजे.

आने आपणे द्विभंगी रोळा कही शकीए.

आ जातनो आंतरप्रासनो भंगीओ अपभ्रंशमांथी गुजरातीमां ऊतरी आवी नथी. पण एक बीजा प्रकारनी भंगी गुजरातीमां आवे छे. तेनुं दृष्टान्त आगळ शामळमांथी आपेलां अवतरणोमांथी मळी आवे छे.

भोगी खटरस भणो, गणो खटरस गावाना
जोगी खटरस खोल, बोल खटरस वा पुन्ये

अहीं यतिस्थाने 'भणो-गणो' अने 'खोल-बोल' ना प्रासो आवे छे. आगळ जोयेला यतिखंडोने अंते आवता आंतरप्रासथी आ भिन्न छे, अने तेने माटे प्राससांकळी एवुं नाम आपवुं मने योग्य लागे छे. सांकळना बे अंकोडा एकबीजाने अडीने भिडायेला होय छे तेम आ प्रासो अडीने पासेपासे आवे छे, माटे आने सांकळी कही छे. केटलाक आने यमकसांकळी कहे छे पण उपरना दृष्टान्तथी समजाशे के अहीं प्रास छे यमक नथी — जो के क्यांक क्यांक प्रास साथे यमक पण भळेला मळी आवे छे. के. ह. ध्रुवे 'पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचना'मां 'अनुभवबिन्दु'ने आ प्राससांकळीनी

युक्तिथी पोतानी रीते शोधन करी मूक्युं छे. मूळ काव्य छप्पामां छे; हुं तेमांथी रोळा जेटली चार पंक्तिओ एक जगाएथी उतारुं छुं:

जाणी ले जगदीश शीश सद्गु ने नामी,
अवसर छे आ वार; सार श्रीपति भज स्वामी,
तें जावुं नथी दूर, ऊर अंतर अवलोकी,
टाल असत अहंकार, चार स्थल रह्यो इ रोकी.

प. ऐ. आ. . ६१

अर्वाचीन युगमां नर्मदे 'हिंदुओनी पडती'ना काव्यमां अने बीजां केटलांक काव्योमां रोळानो विस्तृत उपयोग कर्यो छे. तेणे पण क्यांक सुन्दर प्राससांकळी पाडी छे. हुं थोडी पंक्तिओ उतारुं छुं:

सलाम रे दिलदार यारनी कबूल करजे,
राखिश मा दरकार, सार समजी उर धरजे.
घणा घणा लइ घाव तावथी खूब तपायां
नहीं भोगपर भाव नावमां नीर भरायां.

नर्मकविता पृ. ७३३

साधारण रीते नर्मद प्रास मेळववामां बहु कुशळ नथी पण उपरनी पंक्तिओमां तुकान्त प्रास तेम ज प्राससांकळी बन्ने सुन्दर छे.

रोळा घोषबद्ध पठनने माटे अनुकूळ छे. ए घोषने आद्य वेग आपवा एना परिच्छेदोना प्रारंभमां 'अह' के 'ऍह' एवुं छंद बहार गद्यमां बोलाई पछी पठन शरू थाय एवी परंपरा केटलांक प्राचीन काव्योमां नोंधायेली मळी आवे छे. खास करीने फाग के फागु काव्योमां आवो प्रारंभिक उमेरो मळी आवे छे. जेमके:

अह सोहग सुन्दर रूववंतु गुण मणिभंडारो
कंचण जिम झलकंत कंति संजम सिरिहारो
थूलिभद्द मुणिराउ जाम महियलि बोहंतउ
नयरराय पाडलियमाहि पहुतउ विहरंतउ ॥ २॥

प्राचीन गुजराती काव्य पृ. ३८

'हेमविमलसूरिफाग'मांथी पण हुं थोडी पंक्तिओ नीचे उतारुं छुं:

अहें मनि धरीं सरस तें सरसतीं, वरसतीं अविरल वाणि
सिरितपगछपति गाइसुं भाविस्युं नित सुविहाणि.

जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्यसंचय पृ. १८६

आ पण उपर जेवी ज रचना छे. तेमां विशेषमां [illegible]मां प्राससांकळी छे जे आगळ आपेला अवतरणनी बीजी पंक्तिमां पण जणाय छे. ते सिवाय अहीं नोंधवा जेवुं विशेष ए छे के अहीं पंक्तिओना छेल्ला चतुष्कलनी एक मात्रा खंडित थईने ते गाल बनेलो छे. षोडशी चोपाईना अंत्य संधिना बधा विकल्पो रोळाना अंत्य संधि तरीके आवे छे. उपर प्राचीन गुजराती काव्यमांथी लीधेला अवतरणमां आवता 'डारो-हारो' ए प्रासमां चरणाकुळनो अंत्यसंधि गागा छे, ते पछीनी प्रासबद्ध कडीमां आवतो 'हंतउ – रंतउ' मां अरिल्लनो दालल संधि छे, तेनी उपर आपेला 'नर्मकविता'ना दृष्टान्तमां 'करजे-घरजे' ए चरणाकुळनो दागा संधि छे. अने उपर आपेल फागमां आवतो 'वाणि-हाणि' ए गाल के गा◡ल संधि छे. आ संधिमां अंत्य ह्रस्व इ कदाच गुरु बोलातो हशे एवा तर्कथी आ गाल न जणाय पण स्पष्ट गालान्तनां दृष्टान्तो ए ज पुस्तकमां अन्यत्र मळी आवे छे. जेम के

लहूँअ लगइ सुविचारचतुर सुविवेक सुजाण ।

रत्नपरीक्षा रंजवई राय अनुँ राण ॥ २ ॥

तउ देसल नियकुलपईव ए पुत्र सधन्न।
रूपवंत अनु सीलवंत परिणाविय कन्न ॥ ३ ॥

साहु रायदेसलह पूतु ततु सेवइ पाय।
कला करी रंजविउ खानु बहु देइ पसाय ॥ १०

जैन ऐतिहासिक गूर्जर काव्यसंचय पृ. २४०–४१

पृ. २३८ उपरना 'संघपति समरसिंह रास'नी बीजी भाषा १४ रोळानी छे, तेमांथी मात्र गालान्त रोळा में उपर उतार्या छे. अहीं 'वाणि–०हाणि' जेवी शंकाने स्थान नथी कारण के त्रणेय रोळामां अंते अकार आवे छे, अने गुजरातीमां अकार असंदिग्ध ह्रस्व छे. आ गालान्त रचना शृंगारना फागुमां रूढ थई जणाय छे. 'मनिधरि०' ए दृष्टान्त 'हेमविमलसूरिफाग'नुं छे. ते ज प्रमाणे नयसुन्दर, रूपचंदकुंवर रासमां फाग आपे छे त्यां आ ज रचना छे. आनी पेठे ज रोळानो परिच्छेद पद्य वहारना ललकारप्रारंभक अव्ययथी शरू थाय छे, अने मध्यसंधि आगळ प्रास सांकळी पण पडे छे. नयसुन्दर प्रासनी प्रस्तावना चोपाईथी करे छे अने पछी फागनो रोळा शरू थाय छे:

(ढाळ – फागनी देशी)

ईम अनोपम अमृतथि गळी करे गोष्टि भलि भलि मन रळी;
कामिनी कनक गौर शरीरा, रूपचंद रससागर हीरा १

आ पछी 'आहे'थी रोळा शरू थाय छे. अहीं आवतो 'आहे' ते 'हेमविमलसूरिफाग'मां आवता 'अहे'थी अभिन्न हशे एम हुं कल्पना करुं छुं. ए एक ज उच्चारने जुदी जुदी रीते लखवानी आ रीत हशे एम हुं मानुं छुं.

आहे हीरु मुद्रडी ऊपर तीणी परे सरस संयोग;
हंस सुरत रमे हेजे ए, सेजें ए सवळा भोग. २

आहे अहंकरतां अतिरस, अधरस अमृतपान;
करे कुंवर तजी व्रीडा, क्रीडा अति असमान. ३

सुन्दरी कहे तव स्वामी, कामी मूको रोळ;
टेव भली नहि ए तुम्ह, अम्ह सही करशी टोळ. ४

नन मम करतां अंगना, अंगना भीडे सोय;
बाहुपाश कुचतस्कार, रसभर बंधे दोय. ५

चोळी कसण त्रटूके, मूके तोहि न कंत;
थण गजमत करे वश, अंकुश कर ज महंत. ६

आनंदकाव्यमहोदधि ६, ८९

प्रसिद्ध 'वसन्तविलास' आ ज परंपरानो छे:

पहिलउ सरसति अरचिसु रचिसु वसंतविलास
वीणु धरइ करि दाहिण वाहिण हंसलउ जासु
वसंततणा गुण गहगह्यॉं महमह्यॉं सवि घनसार
त्रिभुवन जयजयकार पिका रव करइ अपार

रोळामां घणी वार अगियारने बदले बारमी मात्राए शब्द पूरो थाय छे. केटलाक रोळामां त्यां ज यति आवे छे एम 'रणपिंगल' कहे छे, अने आगळना दाखलामां आपणे एम जोयुं पण छे. अने रोळा जो गालान्त होय तो पहेलां १२ मात्रा पछीनो भाग ११ मात्रानो थई रहे. पहेली १२ मात्राने तेर गणवी मुश्किल नथी, अंत्य लघु होय तो ते सहेलाईथी थई शके, एटले आ रचना सहेजे १३+११ दोहरा जेवी लागी जाय. पण फागुनी लांबी परंपरा जोतां तरत समजाशे के ते रोळा छे. अने उपरनां बन्ने दृष्टान्तोनी केटलीक पंक्तिओ रोळामां बेसशे, दोहरामां नहीं बेसे. जेम के पहेला दृष्टान्तनी 'करे कुंवर तजी व्रीडा' 'चोळी कसण त्रटूके', अने बीजा दृष्टान्तनी 'त्रिभुवन जयजयकार पिका रव'. भाषाना शैथिल्यने लीधे घणी वार जातिछंदोमां आवो भ्रम थवा संभव छे. अने एटला माटे लांबां काव्योनुं पठन करी तेमांथी निर्णायक थई शके

एवी पंक्तिओ लई तेना उपरथी छन्दना स्वरूपनो निर्णय करवो जोईए. देशीओमां तो ए पठननुं घणुं वधारे महत्त्व छे ए आपणे आगळ जोईशुं.

रोळानी अंत्यसंधि चोपाईना ज अंत्यसंधिना बधा विकल्पो धरावे छे. रोळाने अंते दागा अथवा गागा आवे ए तो आपणे जोई गया. घणी जगाए अरिल्लनी पेठे गालल पण आवे छे ए पण जोयुं. घणी वार गाल आवे छे, —खास करीने रोळानी फागु रचनामां. पण चोपाईमां पण सामान्य रीते नहीं स्वीकारायेला एवा अंत्यसंधिना जुदा ज प्रकारना विशिष्ट स्वरूपथी रोळामांथी प्लवंगम अने आभाणक थया छे ते हवे आपणे जोईए.

प्लवंगम आपणने परिचित छे. आभाणक मात्र अपभ्रंश साहित्यमां ज आवे छे. आपणे प्रथम तेनुं स्वरूप जोईए. 'छन्दःकोष'मां तेनुं लक्षण नीचे प्रमाणे आपेलुं छे:

मत्त हुवइ चउरासी, चउपइ चारिकल
तेसठिजोणि निबंधी जाणहु चहुयदल।
पंचक्कलु वज्जिज्जहु गणु सुद्धुवि गणहु
सोवि अहाणहु छंदु जि महियलि बुह मुणहु॥ १७

छन्दःकोष

अर्थमां ऊतरवा करतां आ लक्षणछंदना पठनथी ज स्वरूपनिर्णय करवो वधारे सलाहभरेलुं छे. स्पष्ट रीते उत्थापनिका:

आभाणक: दादा दादा दादा दादा दालल ल

एम थाय. हेमचंद्र जेने रासक कहे छे ते पण आ आभाणक ज छे, जो के एनुं लक्षण बहु गोळगोळ आपेलुं छे. अहीं पण एनो लक्षणछंद उतारुं छुं:

सुररमणो अणकअबहुविहरासयथिणिअ
जोईविदविदारय सय अणुणिअचरिय।
सिरिसिद्धत्थनरेसरकुलचूडारयण
जयहि जिणेसर वीर सयलभुवणाभरण।

छन्दोनु० पृ. ३५अब

बराबर पाठ करतां जणाशे के अहीं रोळाना छेल्ला चतुष्कलमां मात्र एक लघु अक्षर ज राखेलो छे अने ए अक्षर लंबाईने ए आखा चतुष्कलने पूरे छे. सर्वत्र पाठ ए ज रीते थई शकशे. हजी सुधी आपणे चतुष्कल रचनामां जे जे मात्राखंडनो जोयां तेमां आ सौथी वधारे मोटुं छे, आमां त्रण अक्षर-

માત્રાઓ ખંડિત થયેલી છે. લઘુ ચાર માત્રાનો પ્લુત બને છે. અહીં મેં પહેલા પ્રકરણમાં કહેલું કે જાતિછંદોમાં ક્યાંક ક્યાંક એકલો લઘુ જ ત્રણ કે વધારે માત્રાનો પ્લુત થાય છે તેનું આ દૃષ્ટાન્ત છે. આ છંદ રોળાનો જ પ્રકાર છે. આમાં મધ્યયતિનો ઉલ્લેખ નથી. અલબત્ત હેમચન્દ્ર રાસકમાં યતિ મૂકે છે—જરા જુદે સ્થાને. તેનું રાસકનું લક્ષણ "દામાત્રાનો રાસકો ઢૈ:।" ટીકા: "દા ઇત્યષ્ઠા દશમાત્રા નગણશ્ચ રાસકઃ। ઢૈરિતિ ચતુર્દશભિર્માત્રાભિર્યતિઃ।" (છન્દોનુ૦ ૩૫અ) અર્થાત્ અઢાર માત્રા અને અંતે નગણ (લલલ)નું એક પાદ અને તેમાં ચૌદ માત્રાએ યતિ. એ ભેદ યતિની આગન્તુકતા બતાવે છે. પણ પઠન પરથી આભાણક અને રાસક એ એક છે એ તરત જણાશે. અને એક જગાએ તો એમ સ્પષ્ટ કહેલું પણ છે. (જુઓ આની ચર્ચા માટે — પ્રાચીન ગુર્જર છંદો, પૃ. ૮૦–૮૧)

પ્લવંગમ પણ આભાણક જેવો જ રોળામાંથી નિષ્પન્ન થયેલો છંદ છે. બન્નેમાં અક્ષર માત્રા ૨૧ છે. બન્નેમાં અંત તરફ ત્રણ ત્રણ માત્રા ખંડિત થઈ છે. જે કંઈ ફરક પડે છે તે ખંડનપદ્ધતિનો છે. આભાણકમાં છેલ્લા ચતુષ્કલમાં માત્ર એક લઘુ જ છે, અને તેની ત્રણ માત્રાઓ ખંડિત થઈ છે. પ્લવંગમમાં છેલ્લા બે ચતુષ્કલોમાં થઈને ત્રણ માત્રાઓ ખંડિત થઈ છે. આપણે જોઈએ કે કેવી રીતે. પ્લવંગમની ઉત્થાપનિકા ૮મા પ્રકરણમાં નીચે પ્રમાણે છે:

પ્લવંગમ: દાદા દાદા દાલ'લ દાદા દાલગા

આમાં અંતે આવતો દાલગા બે રીતે આવે, લલલગા અને ગાલગા. ગુજરાતીમાં ઘણે ભાગે ગાલગાનું જ પ્રાધાન્ય છે. દલપતરામે આપેલા લક્ષણછંદમાં સર્વત્ર ગાલગા જ આવે છે. અને એ લક્ષણછંદ પછી આપેલાં ઉદાહરણોના ચાર છંદોમાં માત્ર બે પંક્તિમાં જ લલલગા રૂપ છે, બાકી સર્વત્ર ગાલગા જ છે. આ ગાલગા રૂપ જ ગુજરાતે પસંદ કર્યું છે એમ કહી શકાય. આ રૂપ જ્યારે વપરાય છે ત્યારે પ્રથમ ગા ત્રણ માત્રાનો પ્લુત બને છે અને છેલ્લો ગા ચાર માત્રાનો પ્લુત બને છે. આ રીતે ગા⌣લગા—, અને એમ થઈને ત્યાં છેલ્લું અષ્ટકલ બની રહે છે. સૂક્ષ્મ ધ્યાન દઈ પઠન કરતાં એ પ્રમાણે પ્લુતિઓ જણાશે. હું માનું છું કે આ પ્લુતિને લીધે જ આ છંદનું નામ પ્લવંગમ પડ્યું છે, પણ એ મારો તર્ક છે, તેના પર હું મુખ્ય આધાર રાખતો નથી. મુખ્ય આધાર પઠન જ હોઈ શકે. અને એવું પઠન ચતુષ્કલ રચનાઓમાં અનેક જગાએ જણાઈ આવશે. દાખલા તરીકે આપણે જોયેલું 'સદ્‌ગુરુ૦' એ ગીત એના દૃષ્ટાન્ત તરીકે હું સૌથી પ્રથમ ઉતારું. તેમાં લાંબી ધ્રુવ પંક્તિ ૩૨ માત્રાની થતી હતી:

सदगुरु। शरण वि। नाऽ अऽ। ज्ञाऽ नति
निरटळ। शेऽऽ न। हीँ ऽऽऽ। रे ऽऽऽ

(गत पृ. ३४७)

एमां 'शेनहीं' उपर प्रमाणे ज गालगा छे अने ते उपरना पठनगायनमां अष्टकल बने छे. तेनी पछी रे चार मात्रानो प्लुत आवी कुल बत्रीस मात्रा पूरी थाय छे. वळे प्लवंगममां गालगाने उपर प्रमाणे ज अष्टकल थतुं गणे छे:

"प्लवंगमनी मात्राओ संगीतना चालू व्यावहारिक तालोमांथी कोईनी साथे मळती नथी आवती, तेथी गावामां बहु अनुकूळता थई पडती नथी. पण जो तेने संपूर्ण अंशे गायनने अनुकूळ बनाववो होय तो तेनो छेल्लो संधि जे दालगा छे तेने बदले गालगा एवो करवामां आवे तो तेमांनो प्रथम गा ३ मात्रा सुधी लंबावी, तथा छेल्लो गा ४ मात्रा सुधी लंबावी आखा वृत्तनी २४ मात्राओ करी, चोताल अथवा एक्का तालमां गाई शकाशे. ने ए ज कारणथी मापमां पदान्ते गालगा (अथवा रगण) आणवा विशे खास विकल्प जणाव्यो छे."

गायनवादन पाठमाळा पु. १. वि. ३, छंदोगीत विनोद, पृ. ६२

अनेक चतुष्कल रचनामां आ गालगा आठ कालमात्राओ पूरे छे. आपणे थोडा बीजा दाखला लईए. "ओधवजी संदेशो केजो श्यामने" ए देशी पण रोळानी ज देशी छे अने शुद्ध प्लवंगममां बेसे छे. तेमां अंते आवतो गालगा 'श्यामने' ते अष्टकल छे.: श्याऽमने — ए रीते. आवा अनेक दाखला परथी आपणे चतुष्कल रचनामां गालगा अने अष्टकलनुं समीकरण करी शकीए.

हजी एक प्रश्न रहे छे. अंते गालगाने बदले ललगा होय त्यारे प्लुतिनी व्यवस्था केवी रीते थाय? आपणे बन्ने भंगोनी मिश्र रचनानो छंद 'दलपतपिंगल'मांथी उतारीए:

इंद्रपुरी अनुसार, नगरिओ नोखमां,
कोटिध्वज साहुकार, गरजता गोखमां;
सुंदरिओ गुणसार, महा गुण मरदमां,
को जाणे कहिं ठार, गयां मळि गरदमां.

द. पि. पृ. १५

'नोखमां' 'गोखमां' स्पष्ट रीते 'नोऽखमां —' 'गोऽखमां —' एम बोलाय छे. पण ए पछी 'मरद'मां' पण ए ज रीते एटले के पहेली बे मात्रा पछी

प्लुतिनो एक मात्रा वधारीने अने अंत्य गुरु पछी बे मात्रा वधारीने बोलाय छे. एटले के 'मर⌣दमां —' 'गर⌣दमां —' ए रीते. पठन करतां आ स्पष्ट थशे. पण खास प्रयत्न करीने गरदमां ⌣⌣⌣ एम अंत्य गुरुने पांचमात्रानो प्लुत करवो होय तो करी शकाशे. जो के एवो पाठ प्लवंगममां में सांभळ्यो नथी पण एवुं पठन करीए तो त्यां चरणने अंते दालगालदा संधि आवे. आ रीते:

गर द मां ⌣⌣⌣
दा ल गा लदा

हवे आनी एक तद्दन भिन्न प्रकारनी पठनपद्धति स्वीकारवी जोईए, जे मने नरसिंहरावनी प्लवंगम विशेनी चर्चा उपरथी सूझे छे.[1] एमनो ज दाखलो लेतां ते मारी रीते नीचे मुजब मुकाय:

छत्रे थाती छांय' छडीधर ⌣ ⌣ ⌣ छाजता
दादा दादा दाल' लदा दा ललल गालगा

आ पद्धति प्रमाणेनुं पठन में कोईक ज वार सांभळ्युं छे. पण ए छे ते रूपे शास्त्रीय छे. अने एना जेवी ज छंदोभंगीमां एना जेवुं ज पठन बीजे में सांभळ्युं छे एटले आने स्वीकारवुं जोईए. अहीं ध्यानमां आव्युं हशे के अहीं प्लुति अने अंत्य गालगा एकपिंड बनी दालगालगानो द्वैतीयीक संधि बने छे. अने ए रीते रोळानी २४ मात्रा थई रहे छे.

आ प्लुतिव्यवस्थाथी आपणे आ छंदोनो मेळ अने तेना संधिओनां आवर्तनो स्पष्ट करी शकीए छीए. तेथी प्लवंगमना दलपतरामे आपेला लक्षणमां जे अपूर्णता के विसंवाद देखातो हतो तेनो खुलासो थई जाय छे. दलपतराम प्रमाणे प्लवंगमनी उत्थापनिका:

। । । । ।
दादा दादा दाल'ल दादा दालगा

चार चार मात्राए ताल पडे छे एटले १, ५, ९, १३, १७ एम पांच ताल पडे छे. पण प्लवंगमनी मात्रा कुल २१ छे, तो १७मी पछी २१मी उपर ताल केम न पडयो? बीजो स्वाभाविक प्रश्न ए ऊभो थाय छे के प्लवंगमना स्वाभाविक पठनमां अंत्य गानी पहेली मात्रा उपर ताल पडे छे, तो तालनी

१. जुओ नरसिंहरावनुं **Gujarati Language and Literature Vol. II, p. 287.** एमणे अहीं प्लवंगम अने गरबो विशे कह्युं छे ते लांबी चर्चा मागे छे तेथी ए आ प्रकरणना परिशिष्ट तरीके मूकी छे.

व्यवस्था केवी रीते करवी? अक्षरमात्रा गणतां ए २०मी मात्रा थाय. बन्नेनो खुलासो में दर्शावेल पठनमां रहेली प्लुतिमात्राओ मूकवाथी थई जाय छे, अने जातिछंदोमां अंत्य एक के बे संधिओनी अक्षरमात्रा खंडित थाय छे ए नियमने प्रबळ समर्थन मळे छे.

में उपर कह्युं के आभाणक अने प्लवंगम बन्ने रोळानी त्रण अक्षरमात्रा खंडित करवाथी थती भिन्नभिन्न रचनाओ छे. आ बन्ने भेदोनो विकल्प स्वीकारीने तेनी एक ज उत्पादनिका आपवी होय तो नीचे प्रमाणे थाय.

| | | | |
दादा दादा दादा दादा दालदा

वच्चे आवती यति जे जातिछंदनुं अंग नथी ते अहीं मूकी नथी कारणके आभाणकमां नथी. अने अंते दालदा मूक्युं छे तेमांथी आभाणकनी दाललल तेम ज प्लवंगमनी गालगा तेम ज ललगा बन्ने भंगीओ निष्पन्न करी शकाशे. आ बन्ने रचनाओनुं पठनगान एटलुं बधुं एक सरखुं छे के कविओए एक ज छंदमां बन्नेनो प्रयोग कर्यो छे. दाखला तरीके अब्दुल रहेमान जे छन्दःशुद्धि माटे आग्रह धरावतो जणाय छे तेणे एक ज छंदमां बन्ने प्रयोज्या छे:

जिणिहउ विरहह कुहरि एव करि धल्लिया
अत्थलोहि अकयत्थि इकल्लिय मिल्हिया।
संदेसडउ सवित्थरु तुहु उत्तावलउ
कहिय पहिय पिय गाह वत्थु तह डोमिलउ।।९२

संदेशरासक, पृ. २६

अहीं पहेली बे पंक्ति प्लवंगमनी अने बीजी बे आभाणकनी छे. अब्दुल रहेमानने तो आभाणक सुविदित हतो पण ए रचनानो उल्लेख पण नहीं जाणनार दलपतरामे केवळ अंतरसूझथी आ बन्नेनुं मिश्रण करेलुं छे. के. ह. ध्रुवे प्लवंगमना लक्षण संबंधी नोंध करतां ते तरफ आपणुं ध्यान खेंचेलुं (गत पृ. ३१२). आपणे फरी जोईए.

हिंदु मटी हुं हाल, थयो छुं युरोपियन,
कोई न जाणे मने, हतो आ हिंदु जन;
चीन विलायत आज, राज मारुं ठर्युं,
हिंदुनी हरुं देवि, अधिक तो आबरू. ५०

दलपतकाव्य भा. २. पृ. २७

अहीं पहेली बे पंक्तिओ आभाणकनी छे, अने बीजी बे प्लवंगमनी छे.

हवे रोळानी मुख्य मुख्य लगात्मक रचनाओ जोईए: तेमां सौथी प्रसिद्ध मत्तमयूर छे.

मत्तमयूर: गागा गागा। गालल गागा ललगा गा

संस्कृत साहित्यमां आ वपरायो छे. गुजरातीमां पण रमणभाईए एक जगाए वापर्यो छे. हुं बे ज पंक्तिओ उतारुं छुं:

जागो पुत्रो हिदतणा आळस छोडी,
धारो थाशे शूं मददे देव ज कोई;

कविता अने साहित्य वो. ४, पृ. १४९

आमां कुल पांच चतुष्कलो छे अने अंत्य चतुष्कल खंडित थवाथी त्यां एकलो गुरु रहे छे जे पठनमां चार मात्रानो प्लुत थाय छे. आनी पछी असंबाधा.

असंबाधा: गागा गागा गा। लल लललल गागा गा

अहीं यतिने खसेडीने पांचमा गुरु पछी मूकी छे. अलबत्त आ यति जातिछंदनी ज यति छे. बाकी चतुष्कलो उपर प्रमाणे ज छे. आ बहु वपरातो नथी. आ पछी कान्तोत्पीडा अने जलधरमाला लईए.

कान्तोत्पीडा: गालल गागा गालल गागा गागा

जलधरमाला: गागा गागा। लललल गागा गागा

पहेलामां यति नथी. बीजामां मत्तमयूर जेवी चार गुरु पछी यति छे. बन्नेमां पांच ज चतुष्कलो छे, छठ्ठुं आखुं खंडित थयेलुं छे, अने ए आखा चतुष्कल जेटलो अहीं विराम आवे छे.

उपर आपेला छंदोमां मुख्यत्वे गागानां आवर्तनो छे. तो आ ज वर्गमां आवता भ्रमरावळी छंदमां मात्र ललगानां पांच आवर्तनो छे. बीजी रीते कहीए तो आमां तोटक करतां ललगानुं एक आवर्तन वधारे छे. दलपतराम एनुं बीजुं नाम नलिनी आपे छे.

भ्रमरावळी: ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा

पांच आवर्तनो होवाथी आमां पंक्तिने अंते एक ललगाना आवर्तन जेटलो विराम आवे छे अने ए रीते एमां पूरां छ एटले बेकी आवर्तनो थई रहे छे. आ छंद गुजरातीमां पण वपरायो छे. कविश्री खबरदारे आ छंदने सॉनेट माटे वधारे अनुकूळ गण्यो छे, अने अंग्रेजी सॉनेटना पर्याय तरीके एओ एने ध्वनित कहे छे. नर्मद उपरनो एमनो सॉनेट आ छंदमां छे. थोडी पंक्तिओ लईए:

वीर नर्मद! तूं जगमां लडि जंग गयो
तुज वीरछबी निरखी चख अश्रु भरे!
कंइ पुष्प नवां खिलतां तुज प्रेम-करे
स्थळ सर्व विखेरि दई कृतकृत्य थयो;

विलासिका, पृ. २६

चतुष्कलोनां छ आवर्तनोवाळा रोळा पछी आठ आवर्तनोवाळो बत्रीस मात्रानो सवैयो आवे. तेने बत्रीसो सवैयो ज कहे छे. सामान्य चोपाईना एक प्रकार चरणाकुळना लक्षणमां अंते बे गुरु आवे एवो सामान्य निर्देश आवे छे अने छतां त्यां एक गुरु पण चाले छे तेम ज बत्रीसा सवैयाना लक्षणमां अंते बे गुरु आवश्यक गणे छे. पण एक गुरु चाले छे. तेम ज जेम सामान्य चोपाईना अरिल्ल के अडिल्ला प्रकारमां अंते दालल आवे छे तेम ज सवैयामां पण आवे छे. हुं 'अंगदविष्टि'मांथी एक दृष्टान्त लउं छुं:

सवैयो

हुकम होय हजूरी केरो, सोषी नांखुं बाधो सायर,
हुकम होय हजूरी केरो, महाकाम करवा छुं मायर;
हुकम होय हजूरी केरो, जुद्धे जोर करूं त्यां जाहर,
कासद काम सोंप्युं कयम मुजने, छेका मुने कें'म कीधो कायर? ४४

बृ. का. दो. १,४३४–३५

छेल्ली पंक्ति खडबचडी छे ते सरखी करीने वांचवी पडे एवी छे, बाकीनी बराबर छे. बधीमां अंत्य चतुष्कल दालल आवे छे. अंते एक गुरुनुं दृष्टान्त पण ए ज काव्यमांथी मळी रहे छे:

विष्टि काम करवुं ते शाने, करगरि बोल शा माटे कहिये?
नगर झगर करवुं निरखंघी, शत्रुवचन शा माटे सहिये?
सुत परिवार सँघारूं एना, हवे राज बेशो कयम रहिये?
लंक वसा सीता अहिं लावूं, जरूर पणे अयोध्या जइए. ५२

एजन, पृ. ४३६

तेम ज चोपाई सामान्यनो जे विशेष प्रकार चोपाई तरीके ओळखाय छे तेमां अंत्य चतुष्कल एक मात्रा जेटलुं खंडित थई गाल बने छे, तेम ज सवैयामां पण बत्रीसानो एकत्रीसो गालान्त सवैयो बने छे, अने चोपाईनी अखंडित रचना करतां चोपाईनी गालान्त रचना जेम वधारे लोकप्रिय छे, तेम ज

बत्रीसा करतां एकत्रीसो वधारे लोकप्रिय छे. बन्ने सवैयानी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

सवैयो बत्रीसो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गागा

सवैयो एकत्रीसो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गाल

सोळ मात्राए यति छे पण ते छंदनुं अंग नथी. एटले के अविचल नथी. सवैयानी पंक्ति घणी लांबी छे, चतुष्कल रचनामां ए ज सौथी वधारे लांबी छे, एटले एमां अनेक जातनी छंदोभंगीओने अवकाश छे. तेमां सौथी पहेलां हुं अंत्य संधिओनी अक्षरमात्रा खंडननो प्रकार हाथमां लउं छुं. सवैयानी मूळ बत्रीस मात्रा तेमांथी एक तूटीने एकत्रीसो थयो. ए खंडनव्यापार आगळ चालतां त्रीसो सवैयो थाय. आपणे आगळ जोई गया ते रुचिरा एवी रचना छे (गत पृ. ३१३). पण चोबोला तरीके ३० मात्रानी जे रचना प्रसिद्ध छे तेने पण हुं सवैयो ज मानुं छुं. दलपतरामे ए आपेल नथी. पण 'रणपिंगल'मां ए आवे छे. सामान्य रीते आ १६ अने १४ मात्रानी अर्धसम जाति मनाय छे. 'प्राकृतपैंगल'तेनुं आ ज लक्षण आपे छे (प्रा. पैं. पृ. २२६). पण 'रणपिंगल' पोते तेने त्रीशी रचना कहे छे, ए ज यथार्थ छे. आम मध्ययतिने चरणान्त गणी त्यां ज पंक्ति पूरी थयानो घणी वार भास थाय छे अने ए भास पाछो स्वतंत्र छन्दोविकासने उपकारक पण थाय छे. 'रणपिंगल' चोबोला नीचे प्रमाणे आपे छे:

"चोबोला, चौयाला, चतुष्पया, चतुर्वचा, चतुर्वचन, चउबोला: १–३ विषम पदमां १६ मात्रा. २, ४ समपदमां १४ मात्रा. प्रत्येक दलमां १, ५, ९, १३, १७, २१, २५, २९ मात्राए ताल.

विषम पदे करि सोळ कला पछि, सममां चौद सदा धरजो;
प्रथम उपर पछी श्रुति श्रुति चडता, तालो चोबोले करजो. ३५
त्रीश कलानां बे दल छे पण, चार पदे बोलायां छे;
चतुर्वचा वळि कोइ कहे छे, चतुष्पया चौयाला छे." ३६

आ छंद गुजरातीमां बहु वपरातो नथी, पण तेनुं दृष्टान्त तरीके महत्त्व छे. कहेवानी भाग्ये ज जरूर होय के पठनमां तेनो अंत्य गुरु चार मात्रानो थई चतुष्कल पूरुं करे. आ ज खंडनव्यापारमां आगळ चालतां चोपायो आवे. जेमां २८ मात्रा छे अने चतुष्कलनां सात आवर्तनो छे. आ छंद गुजरातीमां पुष्कळ

वपरायो छे. बत्रीसी रचनानी अत्यार सुधी गणावेली बधी शाखाओमां आ सौथी वधारे वपरायो छे. देशीओमां वपराती चोपाई दाबटी ते आ प्रकार छे. 'कान्हडदेप्रबंध'मां जे पवाडु आवे छे ते आ ज प्रकार छे:

> गॅमि गॅमि मारेवा लागा, मलिक सवे वचि कीधा
>
> अंगे अंगि विहु दल साह्मा मलिकि ऊंचला दीधा. ५१
>
> सींगिणि गण सपराणा गाजइं; साह्मा आवइ तीर;
>
> ऊडइ लोह बीज जिम झबकइ, भडई मोटा पीर. ५२
>
> कान्हडदेप्रबंध (आवृत्ति २) पृ. ३४

आ दृष्टान्त उपरथी तरत जणाशे के जेम षोडशी रचनामां दागान्त साथे गालान्त रचना छे, जेम रोळामां दागान्त अने गालान्त बन्ने रचना छे, जेम सवैयामां बत्रीसो अने एकत्रीसो सवैयो छे तेम चोपायामां पण अठावीशो अने सत्तावीशो, दागान्त अने गालान्त बन्ने रचनाओ छे. दयाराम आ चोपाया रचनाने दुवैयाछंदने नामे प्रयोजे छे. आ नाम 'दलपतपिंगल'मां नथी पण हिन्दी 'छन्दःप्रभाकर'मां 'दोवै' (छ. प्र. पृ. ६९) मळे छे. त्यां तेनुं स्वरूप १६–१२ अंते कर्ण (=बे गुरु) एम आपेलुं छे पण एक गुरु पण चाले एम दर्शावेलुं छे. पण दयाराम २७नी २८नी बन्ने रचनाओ दुवैया नामथी वापरे छे.

> जयश्री वल्लभहरि हरिवल्लभ श्रीम्हाप्रभु वागीश;
>
> श्री कृष्णानन विश्वानर परमानंद म्हालक्ष्मीश.
>
> दयारामकृत काव्यमणिमाला भा. ३जो, पृ. ९९
>
> कुरंगाक्षीँ कमलाक्षी कामलता कंदर्पा रंगा;
>
> केतकीँ मालतीँ माधवीँ मुग्धा मंजुकीँ माननीँ गंगा.
>
> एजन, पृ. १०७

पहेली बे पंक्तिओ २७ मात्रानी छे, बीजी बे २८नी छे. आ रचनामां १६ मात्राए यति सचवाई नथी, ए यतिनी अनिश्चलता बतावे छे. आ रचनामां छेल्लुं चतुष्कल आखुं पठनमां विराम रूप ले अने त्यां अंते गाल आवे त्यारे गाल चोपाईनी पेठे गा⌣ल बने. अने चोपाईमां जेवी लगान्त जेकरी रचना छे तेवी चोपायानी शुद्ध जाति रचना जोके गुजरातीमां मळी आवती नथी, पण चोपायानिष्पन्न पदोमां एवी लगान्त रचनाओ छे. जेम के स्व. मेघाणीनुं—

નવાં કલેવર ધરો હંસલા નવાં કલેવર ધરો
ભગવી કંથા ગઇ ગંધાઈ સાફ ચદરિયાં ધરો
હંસલા નવાં કલેવર ધરો.

અંતે આવતી ટેક ટાળીને વાંચતાં આ શુદ્ધ લગાન્ત ચોપાયો છે. દયારામનું

પ્રેમ અંશ અવતરે પ્રેમરસ એના ઉરમાં ઠરે

એ પણ લગાન્ત રચના છે.[२] આ પદ છે, એને શુદ્ધ જાતિછંદમાં નહીં ગણી શકાય, પણ આગળ ઉપર આ રચનાનો ઉલ્લેખ કરવાની જરૂર છે માટે અહીં આ રચનાનું દૃષ્ટાન્ત આપું છું. અને જો કે અત્યાર સુધી લગાન્ત ચોપાયો વપરાયો નથી પણ તે વાપરી શકાય એવો છે એ આ ઉપરથી જણાશે. આ પ્રમાણે બધી ચતુષ્કલ રચનાઓમાં અંત્ય સંધિઓ એક સરખી રીતે જ ખંડિત થાય છે.

આ ચોપાયાના સ્વરૂપ વિશે મારે વિશેષ હવે એ કહેવાનું કે આ જ રચનાનો પહેલો યતિખંડ સ્વતંત્ર પંક્તિ હોય એ રીતે ખંડિત થતાં દોહરા રચના નિષ્પન્ન થાય છે. અને તેમ થતાં પણ તેના પ્રાસનું સ્થાન જે હતું તે જ રહે છે. દોહરો, ચોપાયાની ર૭સી રચનામાંથી નિષ્પન્ન થાય છે. કઈ રીતે તે બન્ને પાસે પાસે મૂકી બતાવું છું.

ચોપાયો : દાદા દાદા દાદા દાદા' દાદા દાદા ગાલ

દોહરો : દાદા દાદા દાલદા' દાદા દાદા ગાલ

બન્નેમાં ગાલ આગળ જ પ્રાસ આવે છે.

આ દાલદા તે આભાણક-પ્લવંગમની પેઠે અષ્ટકલનું ખંડિત રૂપ છે. અને એ બે છંદોની પેઠે જ, પ્લુતિની માત્રા દાલદાના જુદાજુદા પર્યાયોમાં ઉમેરતાં ત્યાં અષ્ટકલો થઈ રહે છે. જેમ ચોબોલો દ્વિપદી છે, પણ યતિસ્થાને ચરણાન્ત ગણાવાથી તે ચાર ચરણનો ગણાયો તેમ જ આ દોહરો પણ દ્વિપદી જ છે, પણ યતિસ્થાને ચરણાન્ત ગણાવાથી તે ચતુષ્પદ ગણાયો, અને ચતુષ્પદ ગણાવાથી પછી તે અર્ધસમ માત્રામેળ જાતિ ગણાયો. બોલવાની સગવડ ખાતર તેમાં

---

૨. 'ગીતગોવિંદ'માં શુદ્ધ લગાન્ત ચોપાયો મળે છે:
समुदितमदने रमणीवदने चुम्बनवलिताधरे
मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे।
गीतगोविन्द १५।२

चार पदो गणीए तो भले पण ए स्वरूपे द्विपदी छे. जेमांथी दोहरो ऊतरी आव्यो छे ते मूळ चोपायो द्विपदी छे, अने चोपाया द्विपदीनो मूळ प्रास साचवीने तेमांथी ऊतरी आवेलो दोहरो पण द्विपदी छे. दोहरामां दलान्ते गाल एवुं लगात्मक रूप छे ए चोपायाने आभारी छे, अने एना पंक्तिना प्रारंभमां आवता यतिखंडमां कोई लघुगुरु स्थिर नथी ए पण एना पूर्वज चोपायाने आभारी छे. प्लवंगममां अने आभाणकमां दालगा अने दाललल एवां लघुगुर्वात्मक रूपो स्थिर थयां तेनुं कारण ए त्यां चरणने अंते आवे छे ए छे. दोहरानां दालदा स्थान चरणने अंते मूळथी नथी. पण जेम जेम दोहरानो पहेलो यतिखंड स्वतंत्र चरण थतो गयो तेम तेम त्यां दालगा रूप निश्चित थतुं गयुं छे. गुजरातने गुर्वन्त रूप अने तेमां पण गालगा माटे पक्षपात छे. पठनमां आ गालगा, गा‿लगा — रूप ले अने अंत्य गा‿ल आव्या पछी एक चतुष्कल जेटलो विराम आवे, अने ए रीते रचना पूरी आठ चतुष्कल जेटली थई रहे.

बर्वे आ मतने पोतानी रीते टेको आपे छे:

"जो के दोहरो ए संपूर्ण अंशे गेय (संगीतक्षम, गायनने अनुकूळ) नथी. तो पण जो गेय करवो होय तो उत्तम पक्ष ए छे के पहेला अने त्रीजा चरणनी अंतनो दालदा ए संधि छे तेने गालगा एवुं स्थिर रूप आपवुं अने तेमांना पहेला गुरुने ३ मात्रा तथा बीजा गुरुने ४ मात्रा सुधी लंबाववो, अने ते ज प्रमाणे बीजा तथा चोथा चरणना उपान्त्य गुरुने ३ मात्रा सुधी लंबाववा-मां आवे तो तेथी आखा वृत्तमां संगीतना तालना ४–४ मात्राना गाळा पडशे, ने पछी ते चतुश्र जाति एक तालो, लावणी के चलतीमां गवाशे. अथवा कदाच गालगाने बदले प्रथमना गा ने बदले दा राखी (विषम चरणने) अंते लगा एवुं कायमनुं रूप रखाय तो पण सारुं. केवळ गरबी वगेरेमां ज्यां ज्यां साखीओ गवाय छे ते साखी ते दोहरो ज छे, मात्र विषम चरणने अंते लगा रखाय तो पण गावा तरीके, अने साखी तरीके पण दोहरानो उपयोग करी शकाय तेम छे."

गा. वा. पा. पु. १. वि. ३. पृ. ७८

अहीं मारा मतने संपूर्ण समर्थन मळे छे. मात्र एटलुं ज के समचरणने अंते गा‿ल आव्या पछी एक चतुष्कल जेटलो विराम आवे ए एमणे कह्युं नथी. पण लावणीमां ए गान लेवुं होय तो त्यां पूरी ३२ मात्रा थवी ज जोईए ए एमना वक्तव्यमांथी फलित थाय छे. बीजुं एमणे गालगाने बदले दालगा आवी

शके एम कह्युं. एनो अर्थ ए थयो के त्यां गालगाने बदले लललगा रूप पण आवे अने एम थाय त्यारे—जो के क्यांए स्पष्ट कह्युं नथी पण—त्यां लललगा ⏑⏑⏑एम अंत्य गुरु पांच मात्रानो प्लुत बने. अने ए रीते दालगा-लदा जेवो अष्टकल संधि बने जेनी छेल्ली त्रण मात्राओ अनक्षर थाय अने त्यां विलंबन के विराम आवे. हवे दालदाना पर्यायोमां एक ज पर्याय जोवो बाकी रहे छे. दालल ल, जे आभाणकनी भंगीने मळतो छे. में आगळ कह्युं तेम आ भंगी प्राचीन छे, अने जूना अपभ्रंश साहित्यमां आ भंगीवाळा दूहा घणा मळे छे. त्यां त्यां अंत्य लघुने लंबावीने चार मात्रानो प्लुत करवो जोईए.

तुलसीदासना रामायणमां आवा दूहा सारी संख्यामां आवे छे. उदाहरणार्थ हुं एक उतारुं छुं:

मोहसम दीन न दीनहित' तम समान रघुबीर।
अस बिचारि रघुबंसमणि' हरहु बिषम भवपीर॥

आश्रम भजनावलि पृ. ९३

में ध्यान दईने तुलसीदासना अनेक दूहानुं पठन-गान सांभळ्युं छे, अने तेमां जोयुं छे के ज्यारे ज्यारे आ रीते दालल ल आवतुं त्यारे अंत्य लघुनुं प्रलंबित पठन-गान थई त्यां आखुं चतुष्कल पुरातुं.

हजी एक बाबत मारे स्पष्ट करवी जोईए. में उपर कह्युं के दोहराना सम यतिखंडनो अंत्य संधि गा⏑ल बोलाई पछी एक चतुष्कल जेटलो त्यां विराम आवे. चोपायामां अने दोहरामां बंनेमां अेम थाय छे. पण ते साथे अे पण नोंधवुं जोईअे के दोहराना साखी जेवा प्रलंबित गानमां गालनो गुरु सात मात्रा सुधी लंबाई पछी लघुथी ए अष्टकल पूरुं थाय छे. आ रीते:

दादा दादा गा––⏑ल

संगीतमिश्र पठनमां तो आम थाय छे. पण जरा पण स्वर-वैविध्य विनाना पठनमां शुं थाय छे? सूक्ष्मताथी जोतां मने एम जणायुं छे के एवुं पठन बे रीते थाय छे. वर्गमां शिक्षक पठन करतो होय एवा शिष्टसर पठनमां गालगाना पहेला गुरुमां पण प्लुति नथी आवती. त्यां मात्र पहेला गुरु उपर ताल आवे छे. अने छेल्ला गा पछी त्रण मात्रानो विराम आवे छे. एटले के त्यां दालगालदा होय ए रीते मात्र दालगा बोलाई बाकीनी मात्रा अनक्षर रहे छे, ते साथे ध्वनिशून्य पण बने छे. एटले के त्यां त्रण मात्रानो विराम

रहे छे. अने बीजा यतिखंडमां ए ज रीते त्यां पांच मात्रा ध्वनिशून्य रहे छे. पण माणस केवळ पोता माटे वांचतो होय के गोखतो होय त्यारे आटलो ध्वनिशून्य गाळो पण ते पाळतो होतो नथी. त्यां पठनकार दादा दादा गालगा एम प्रवाहबद्ध गालगाना पहेला गुरु पर ताल नांखी त्यांथी ताल छोडी दे छे. अने बीजो यतिखंड आवतां त्यां ताल शरू करे छे. अने ए ताल पण गालना तालथी छोडी दई, तरत त्रीजो यतिखंड शरू करे छे एम थाय छे. ताल सळंग चालतो होतो नथी. छतां दरेक पंक्तिमां चतुष्कल संधिनां ज आवर्तनो होवाथी एनो बोध मेळबद्ध लागे छे. हुं मानुं छुं के ए मेळ लागवामां दोहरानुं वैधिक पठन सळंग तालवाळुं होय छे एनो संस्कार पश्चाद्भू तरीके काम पण करे छे. पण आवुं, तालनुं तूटक पठन थई शके छे माटे ताल पोते सळंग नथी, अथवा न होय तो चाले एवुं निगमन मने स्वीकार्य नथी. जातिछंदोना विकासमां क्यांई पण ताल तूटक चालतो होय एवो प्रसंग में जोयो नथी. ताल जाणी जोईने छोडी शकाय छे, अने पाछो ते पकडीने आगळ चाली शकाय छे. शिक्षक वर्गमां कविता शीखवतो होय त्यारे दोहरानुं चरण पठी ए चरण अने ताल बन्नेने छोडी दई विवरण करे, अने विवरण पूरुं थतां बीजुं चरण ताल साथे पाछो उच्चारे छे, त्यां एना विवरण दरमियान ताल चालतो नथी होतो. एम, प्रयोजन माटे, पठन अने ताल बन्नेने छोडी शकाय छे. पण छन्दनुं शुद्ध स्वरूप तालबद्ध छे, अने ए ताल जे कृतिमां अभिप्रेत होय ते कृतिमां सळंग होय छे.

दूहो चोपाया साथे उपर दर्शाव्युं तेम मार्मिक संबंध धरावे छे ए बाबत अनेक रीते छंदोमां जणाई आवे छे. घणी वार एक ज कडीमां एक पंक्ति दोहरानी अने एक चोपायानी आवे छे.

राज पाघने पारखूं, नाडी ने वळि न्याय,
वरखूं तंतरखूं तस्करखूं आठे आपकळाय.

आ प्रसिद्ध कहेवत छे. कहेवतो घणी शिथिल रचनावाळी होय छे, पण उपरनी कहेवत पिंगळनी दृष्टिए सफाईवाळी छे. तेमां पहेली पंक्ति दोहरानी छे अने बीजी सत्तावीसा चोपायानी छे. दयारामना दोहरामां आवां मिश्रणो मळी आवे छे:

नानाविधि स्तुती करी, परम पुरुष आनंद,
जय जय जय श्रुति गीत गाय छे, भाखी नाना छंद. १५

भूमि रक्षण करवा माटे धार्यो' वराह् अवतार,
पछे कपिल रूपे थई, कह्यो सांख्य वीचार. १९
स्वायंभुवना द्वितिय पुत्र उत्तानपाद मति धीर
तेनो ध्रुव बाळक थयो, वळि उत्तम गंभीर. ७१
ध्रूवे राज्य घणुं कर्युं, पछे गया निज लोक,
सर्वनि ऊपर सदा बिराजे, ध्रूव सदा निःशोक. ८२

दयारामकृत परचुरण कविता (प्रा. का. सी.), पृ. १४९–१५६

आर्वाचीन कवितामां पण आवो एक प्रयोग मळी आवे छे.

एकल खावुं, एकल जोवुं, एकल रमवूं, ईश!
एकल वाटे विचरवुं, करम न कदी लखीश.

शेषनां काव्यो, पृ. ८०

सामान्य रीते दोहराना बंधारणमां गालान्त यतिखंड ज स्वीकाराय छे. पण अन्य स्वरूपना अंत्य संधिवाळा चोपायाना यतिखंडो दोहरामां ऊतरेला मळी आवे छे. जेमके —

वळीवळीने रातभर टपटप नेवां चुवे.
आभ झरूखे एकलुं कोण रही रहि रुवे.
त्रमके तमरां तिमिरमां, तरुथी जलकण खरे,
वहोळा कदली पर्ण पर फोरां खखडघां करे,
घन गगडे, थथरे धरा, छाती ऊठे छळी,
पडघा गिरिगोरंभता प्रगटे उरथी वळी!
पडखां फरता जीवनी कोण वेदना कळे?
टपटप नेवांरव थकी लची पोपचां ढळे.

आतिथ्य, पृ. १३८

आनी उत्थापनिका आ प्रमाणे थाय:

दादा दादा दालदा' दादा दादा लगा

शुद्ध दोहरामां अने आमां फेर एटलो ज छे के दोहराना प्रासधारक अंत्य गाल संधिने बदले अहीं लगा संधि छे. बीजी रीते कहीए के आ गालान्त चोपायाने बदले लगान्त चोपायामांथी ऊतरी आवेल छे. एना जूना एक बे दाखला मळे छे ते मूकुं छुं.

भेळां त्यां नथीं' जाणतां, जाणशों' जुजवां थये.
सरोंवर घणुं संभारशो, हंसा में'रामण गये.

ह्रस्व दीर्घनी घणी छूट लेवी पडे छे, पण लोकगीतना दूहामां आवी छूट घणी वार आवे छे. एक बीजो दाखलो पण में संघरेलो छे ते मूकुं छुं. ओढा अने मोरना टूंका संवादमां ए मोरनी उक्ति छे:

अमे डुंगरवळना राजिया कांकर चणी पेट भरां,
मारी रते ना बोलुं तो हैडा फाटी मरां.

दूहो ललकारतां अंदर गद्य टूकडा पण बोलाता, तेम अहीं थयुं छे. तेवा टूकडा काढी नांखतां दूहो नीचे प्रमाणे थाय.

डुंगरवळना राजिया, कांकर पेट भरां,
मारी रते न बोलुं तो, हैडा फाटी मरां.

आ बन्ने दूहानी मारी वाचना साची होय तो आ लगान्त चोपाया साथे संबंध धरावता दूहा छे. तेम ज दागान्त चोपाया उपरथी ऊतरेला दूहा पण मळे छे.

खाओ पिओ सुवास ल्यो, मनमां राखो हेतां,
मरी जवुं छे मानवी, छातीएँ हाथ देतां.

बीजो वधारे सफाईवाळो छे:—

हालूं हालूं नर थयो, राल्यो न रहे रंगे,
हाथ हते पग पेंगडे, तापी भीडया तंगे.[२]

आम दोहराना दलना आखा प्रासधारक यतिखंडमां चोपायाना प्रासधारक यतिखंडना बधा विकल्पो जणाय छे.

दूहो अति सुंदर छे अति लोकप्रिय छे अने अति प्रसिद्ध छे तेथी तेने विशे बहु झीणवटथी चर्चा थयेली छे. जेम संस्कृतप्राकृत पिंगलकारोए बधी रचनाओ विशे चर्चा न करतां आर्या विशे ज झीणवटथी चर्चा करी तेम अपभ्रंश-हिंदी पिंगळोमां दोहरा विशे थयुं छे. एटलुं ज नहीं दोहराना स्वरूपनी चर्चानां घणां सूचनो आर्यामांथी लेवायां छे, एम हुं मानुं छुं. आपणे पण दोहरा विशेनी ए चर्चा अहीं जोईए.

---

२. एवा ज बाजा दूहा:

चंदनका कटका भला, अवर काठका भारा;
पंडितकी दु घडी भली, मूरखसूं जन्मारा.

आनंदकाव्यमहोदधि, वॉ. ६. रूपचंदकुंवररास पृ. ५३

'प्राकृत पैंगल' मुख्यमुख्य जातिछंदोनी बाबतमां छंदना एक गुरुनी जगाए बे लघु मूकवाथी जे भिन्नभिन्न आकृतिओ थाय तेनां जुदांजुदां नामो आपे छे. ते प्रमाणे दोहानी भिन्नभिन्न आकृतिओनां ते जुदांजुदां नामो आपे छे. जेम के २२ गुरु अने ४ लघु मळी २६ अक्षरना दूहानुं नाम भ्रमर छे. दोहरामां आथी वधारे गुरुओ न आवी शके अने आथी ओछा लघु न आवी शके. उत्थापनिका करी जोईए:

गागा गागा गालगा गागा गागा गाल

कुल तेर अक्षर थया तेमां ११ गुरु छे अने २ लघु छे. ते उपरना आंकडा साथे मळी रहे छे. 'प्राकृत पैंगल' आनुं दृष्टान्त पण आपे छे जेनुं भाषान्तर कंईक नीचे प्रमाणे करी शकाय:

छे अर्धांगे पार्वती जेने गंगा शीष,
जे व्हालो छे लोकने, वंदूं हूं ते ईश.

आ तो छंदोनुं गणित थयुं पण आ पछी 'प्राकृत पैंगल' दूहाना लघुगुरुनी संख्या विशे आगळ कहे छे, ते जोईए:

बारह लहुआ विप्पी तह बाईसे हि खत्तिणी भणिआ।
बत्तीस होइ बेसी जा इअरा सुद्दिनी होई ॥८३॥

प्रा. पैं. पृ. १४४

अर्थ एवो छे के दोहारचनामां बार लघु होय तो ते ब्राह्मणी, बावीसे क्षत्रियाणी, बत्रीसे वैश्य अने इतर ते शूद्रिणी गणाय. इतरनो अर्थ उपर आपेली संख्याथी वधारे लघुवाळी रचना ते शूद्रा एवो अर्थ थाय. आ बधामां सिद्धान्त मने एवो जणाय छे के गुरु तूटीने जेम जेम लघु वधता जाय तेम तेम रचना शिथिल थती जाय. अने आ सिद्धान्त बधी जातिरचना माटे हुं साचो मानुं छुं. अक्षरमेळ वृत्तोमां पण आपणे आ ज नियम उपर आव्या हता, अने अहीं पण ए ज नियम साचो पडे छे.

'प्राकृत पैंगल' एक बीजो पण नियम उपर जेवी ज आलंकारिक भाषामां कहे छे.

जस्सा पढमहि तीए जगणा दीसंति पाअ पाएण।
चंडालह घर रहिआ दोहा दोसं पआसेइ ॥८४॥

बेना पहेला अने त्रीजा पादमां जगणो होय ते चंडालना घरमां रहेली दोहा-रचना दोष प्रकाशे छे. अहीं विषम चरणमां जगण निषिद्ध कर्यो छे, ते मात्र

प्रारंभमां ज निषिद्ध कर्यो छे के आखा चरणमां ते स्पष्ट नथी. गुजराती पिंगलोमां आ संबंधी कशुं कह्युं नथी पण हिंदी 'छंदःप्रभाकर' आ लक्षणनी चर्चा दोहा (चंडालिनी) एवा नामथी करे छे. 'प्राकृत पैंगल'मां चंडाल शब्द मात्र निकृष्टताना अर्थमां छे पण 'छंदःप्रभाकर' ए जाणे दूहानो प्रकार होय एम गणता जणाय छे. कदाच कोई परंपरामां एवो शब्द रूढ थई गयो हशे. आपणे सविस्तर एनुं वक्तव्य जोईए.

"दोहा (चंडालिनी)

ल०— जहां विषम चरणनि परैं, कहूं जगन जो आन।
बखान ना चंडालिनी, दोहा दुख की खानि॥

टी०—गणागणका विचार प्रधानतः छन्दके आदिमें ही देखा जाता है अतएव दोहेके पहले और तीसरे चरणके आदिमें कोई ऐसे शब्दका प्रयोग न करे कि जिसके तीनों वर्ण मिलकर जगणका रूप (⏑–⏑) सिद्ध हो जाय। यदि ऐसा हो तो ऐसे दोहेको चंडालिनी कहते हैं। यह दूषित है अतएव त्याज्य है। जगणसे अभिप्राय यह है कि प्रथम तीन वर्णोंमें (लघु गुरु लघु) मिलकर एक शब्द पूर्ण हो (अर्थात् जगणपूरित शब्द जैसे तीसरे चरणमें 'बखान' लिखा है) यदि प्रथमके तीन वर्ण मिलकर जगण तो सिद्ध होता हो परंतु शब्द प्रथम और दूसरे अथवा दूसरे और तीसरे वर्णके मिलनेसे हि पूर्ण होता हो तो ऐसा शब्द दूषित नहीं है।" भावार्थ के विषम चरणमां जे निषेध कर्यो ते निषेध चरणना प्रारंभनो समजवो. चरणनी मध्यमां जगणनो निषेध न समजवो. पण 'छन्दःप्रभाकर' एथी आगळ जईने कहे छे के आ जगणना निषेधनो अर्थ एवो समजवो के जगणना त्रणेय अक्षरो मळीने एक शब्द थतो होय तो ज ए निषिद्ध छे, जेमके उपरना दूहामां 'बखान' शब्द. पण जो जगणना पहेला बीजा अक्षरथी एक शब्द बनतो होय तो निषेध लागु न पडे जेम के पहेला चरणमां 'जहां वि' छे ए निर्दोष छे. तेम ज बीजा त्रीजाथी एक शब्द बनतो होय तो पण ए जगण निर्दोष छे. आ छेवटना विकल्पनुं दृष्टान्त 'छन्दःप्रभाकर'मां मळतुं नथी. मळवुं दुर्लभ छे, कारण के बीजा त्रीजा अक्षरथी एक शब्द बनवा माटे पहेलो लघुमात्राथी आखो शब्द बनवो जोईए. गुजरातीमां सामान्य विचार करतां तरत तो एवो शब्द मात्र 'न' ज जणाय छे. 'न मूर्ख समजे एटलूं' 'न मान के आदर रहे' 'न बोल एवुं अघटतूं'. अलबत, 'जहां वि' जेवुं सफाईवाळुं तो ए नथी. प्रेमानन्दनी प्रसिद्ध पंक्तिओमां जरा फेरफार करी आपणे 'जहां वि' जेवां दृष्टान्त माटे एक दूहो उपजावी शकीए:

तुटी सरीखी झूंपडी, लुंटी सरीखी नार,
सडयां सरीखां छोकरां, मळयां न बीजी वार.
(सुदामाचरित्र कडवा १३, ११ उपरथी)

अहीं आपणे एटलुं उमेरीए के जगणमां पहेला एक के बे अक्षरे शब्द थाय तो चाले तेम ज त्रणथी वधारे अक्षरनो शब्द त्यां आवे तो पण चाले जेम के

प्रदक्षिणा पोते करी
शामळ, पंचदंड २६७ बृ. का. दो. १. पृ. ४०४

निशाळमांथी नीसरी
दलपतराम.

कोई आपणे जोडी काढीए.

बनारसी साडी सजी

अने आखा जगणनो एक ज शब्द बने ते पण तद्दन निषेध करवा जेवुं नथी जणातुं.

प्रणाम कीधो पोपटे
शामळ, 'पंचदंड' कडी २८८ बृ. का. दो. १, ४०५

पतीज पाडो मूजने
शामळ, 'नंदबत्रीशी' कडी ४९३ बृ. का. दो. १, ३७४

आमां एकशब्दी जगण खास खराब नथी लागतो एटले जगण विकट छे, एटलुं ध्यानमां राखी तेनो क्यांक थतो प्रयोग दोषकर गणवो जोईए नहीं. खरुं तो जगणनी अंदर क्यांक शब्दान्त जोईए ए नियम दोहरा के एवा कोई एक छन्दनो नथी पण संधि अने शब्दान्तनो छे.

आपणे जोयुं के दोहराना दलनो उत्तर यतिखंड चोपायानो उत्तर खंड छे. ए उत्तर यतिखंड सवैयाना उत्तर यतिखंडना मात्राखंडनथी थयेलो छे. सत्तावीसा चोपायामां अंतनी पांच मात्रा प्लुत रूपे अनक्षर रहेली छे. केटलाक दोहरामां आ उत्तरखंड हजी वधारे खंडित थई गालनो लघु अनक्षर बने छे. जेमके :—

दिन गणंतां मास गया, वरसे आंतरियां,
सूरत भूली साह्यबा, नामे वीसरियां.

बीजां दृष्टान्तो

जे मारग केशरि गयो, रज लागी तरणां;
ए खड ऊभां सूकशे, नहि चाखे हरणां.
पीपळ पान खरंतां, हसती कूंपळियां;
तम वीती अम बीतशे, धीरी बापुडियां.

'पीपळ०' वाळो यतिखंड अनियमित छे, पण उत्तर यतिखंडो उपरना दृष्टान्तना छे. दयारामनो एक दूहो आवो मळे छे:

सुथरा दिल बैसाहि रखि, जैसा आगे था,
माना धागा मुंजका, पाया ईना था.

कागनो एक दूहो आवो मळे छे:

मीठपवाळां मानवी जग छोडी जाशे,
कागा एनी काण तो, घरघर मंडाशे.

कागवाणी भा. २, पृ. ९६

उत्थापनिका अहीं

दादा दादा दालदा' दादा दादा गा

ए प्रमाणे थाय छे. अहीं सवैयाना उत्तर खंडनी छ मात्राओ अनक्षर थाय छे. सवैयानुं आथी वधारे खंडित रूप में जोयुं नथी.

अहीं आपणे दोहराना उत्तर यतिखंडना फेरफारो जोया. पूर्वयतिखंडमां पण एक नोंधवा जेवो फेरफार मळे छे. पूर्वयतिखंडमां अंते दालदा आवे छे. एना पर्यायोमां एकथी पांच सुधीना लघु आवी शके छे ते आपणे जोयुं. पण एक बीजा प्रकारनो फेर पण आवे छे जे गुजरातीमां बहु परिचित नथी. ए दालदा बदलाईने लदादा बने छे, जेनां दृष्टान्तो मने हिंदी अने डिंगलमां मळ्यां छे. 'रघुनाथरूपक गीतांरो' ए डिंगलनुं पुस्तक छे, तेमां दोहरानां लक्षणोनी चर्चामां ज नीचेनो दोहरो आवे छे:

परमुख सनमुख परामुख, श्रीमुख बले सुजाण।
कहं मंछ कवि जुत्तकर, च्यार उक्त पहिछाण॥

र. रू. गी. पृ. ३८

पूर्वदल अहीं दादा दादा लदादा एम थाय छे. आवां बीजां दृष्टान्तो दयाराममांथी पण मळे छे पण ते पण तेनां हिंदी काव्योमांथी:

हरि रछयक कबू कहुं न डर' जाय जंगलमें बेंठय;
सो कोपत नहि बचेंगो' सत पताल तर पेंठय.

दयारामकृत काव्यमणिमाला, भा. १, पृ. १२४

बीजां दलोनां दृष्टान्तो:

स्वपचिरानि अतिअसंभव' को लहि नृप हिय बात.

एजन, पृ. १३२

हरि सहिष्णु अति कृपानिधि, सो क्यों छोडे टेक?

एजन, पृ. १३३

आ बधां दृष्टान्तोमां दालदाने बदले लदादा थयुं छे, तेने हुं मेळनी क्षति के दोष गणतो नथी. आपणे आगळ जोई गया के आ दालदा उच्चारतां के गवातां कोई वार दा ⌣ लदा — ए प्रमाणे प्लुतिबद्ध थाय छे, अने कोई वार दालदा ⌣ – ए प्रमाणे प्लुतिबद्ध थाय छे. आ बीजी रीतना प्लुतिबद्ध स्वरूपनो पर्याय लदादालदा छे ए आपणे जाणीए छीए. ए बन्नेने आपणे द्वैतीयीक अष्टकल संधिओ कह्या छे. तो ए रीते दालदा ⌣ — नी जगाए लदादा ⌣ – पण आवी शके. अर्थात् दालदानी जगाए लदादा खोटुं नथी.

बन्ने प्रसंगे पहेली मात्रा उपर ताल आवे. दालदा अथवा लदादा

दोहराना यतिखंडोने उलटाववाथी सोरठो थाय छे ए आपणे जोई गया छीए पण एथी भिन्न रीते दोहराना यतिखंडोना जुदाजुदा न्यासथी थती जुदीजुदी रचनाओ 'रघुनाथरूपक गीतांरो' नोंधे छे. जेमके,

जपें समुझ नित जाप, सागर-भव तिरबो सहल।
जल तिरिया पाहण सुजड़, पतसिय नाम प्रताप ।।

र. रू. गी. पृ. २

अहीं पूर्वार्ध सोरठानुं छे, उत्तरार्ध दोहरानुं छे. 'रूपक' आ प्रासने अंतमेळ कहे छे. अने आ रचनाने बडा दोहा कहे छे.

एक बीजी रचना लईए:

राम बरण जुग रूप ऐ, सह बरणाँ सिरताज।
रहें मुकुटमणराज, आषर अवराँ ऊपरै।।

एजन

अहीं पूर्वार्ध दोहरानो छे, अने उत्तरार्ध सोरठानो छे. रूपक आ प्रासने मध्यमेल कहे छे अने रचनानुं नाम तूंबेरी कहे छे. आ बधी रचनाओमां कायमी

तत्त्व ए छे के प्रास गाल संधिनो ज मळे छे, पछी ए गाल दलनी मध्यमां होय के दलने अंते होय.

उपर आपी ते मध्यमेळनी रचना आपणा लोकसाहित्यना दूहामां पण जणाय छे. जेम के :

वाडी माथे वादळां, मेडी माथे मेह;
दुःखनी दाझल देह, मुख देखाडो भाणना.

काठियावाडी जवाहीर, पृ. ३१

मागशरमां मानवी, सौना एक ज श्वास;
ते वातुंनो विश्वास, जाण्युं करशे जेठवो.

एजन, पृ. २५

गरना डुंगर जागिया, फरक्यां वेणुंनां वन्न,
म्हे तारूं रे मन्न, वकोळ न क्युं वरडाधणी.

एजन, पृ. ३४

दूहा जरा खडबचडा छे पण ए दूहा छे अने मध्यमेळना छे एटलुं स्पष्ट छे. आवो एक अर्वाचीन दूहो पण

बादळ दळ सजिए वळी, मे वारे मंडाय;
(पण) कागा नव कोळाय, सूकल ठूंठां सागनां.

कागवाणी, भा. २जो, पृ. ८६

खंडित थयेला यतिखंडोवाळो पण आवी रचना मळी आवे छे :

हरिया अषाढे हुवा, दाळल डुंगरडा;
(पण) कागा कोळे ना, मननां बळियल मानवी

एजन, पृ. ८५

आ मध्यमेळनो ज दूहो छे पण तेमां प्रासना अधिष्ठानभूत गाल संधि खंडित थई मात्र गा रूपे ज रह्यो छे. अलबत्त प्रास बहु सारो नथी. आनी सुंदर पण जरा अटपटी रचना शाह अब्दुल लतीफना दूहानी छे. श्री माणंके एनो प्रयोग कर्यो छे :

धींगा गड धीरज तणा, डगमग डुले असार,
अबोल अंतर कळकळे; 'पियुपियु' करे पुकार;
वरसे वज्जर धार, विज झबुके घन गडगडे. १२

आलबेल, पृ. ५३

अहीं दूहा पछी अर्धसोरठो आवी दूहो दोडाय छे, अने त्रणेय पंक्तिओमां गाल संधिए एक ज सळंग प्रास आवे छे. आने दोडियो दूहो कही शकाय जो के सोरठी लोकसाहित्यनो दोडियो दूहो आनाथी भिन्न छे.

दोहराना ज यतिखंडोने स्वतंत्र चरण तरीके लई बनेला बे छंदो आपणे आगळ जोई गया ते अहीं विचारी लईए. (गत पृ. ३८१) तेमां वरवीर दोहराना प्रथम एटले विषम यतिखंडोनो बनेलो छे. दादा दादा गालगा. अहीं गालगा अष्टकल बने छे. साहित्यमां आनो प्रयोग जोयो नथी. पण बाल जोडकणांमां जोयो छे. जेम के

होकानां बे काचलां,
सोनानां बे माछलां.

अहीं का⌣वलां –, मा⌣छलां — एम बोलाय छे. अने आभीर दोहराना सम-यति-खंडनो बनेलो छे. ते पण साहित्यमां वपरायो जोयो नथी. बाळ जोडकणांमां आवे छे, जेम के

छैये मांड्यां हाट,
त्यांची निकळ्यो भाट.

पणे भागे अहीं अंत्य गाल, तेनो गुरु प्लुत बनी आखुं अष्टकल बने छे. वार्ता कहेतां त्यां लहेंकाथी गुरु सात मात्रानो प्लुत बने छे.

दोहरो अति प्रसिद्ध होवाथी बीजा केटलाक छंदोनां स्वरूपो, ए छंदो दोहरामांथी निष्पन्न थया होय ए रीते निरूपाय छे. एवुं एक स्वरूप सोरठो आपणे जोई गया. तेम ज छप्पानी छेल्ली बे पंक्तिमां जे उल्लालो आवे छे, तेने दलपतराम

पछिमां बे कळने वेवडुं, दुहा प्रथम पद जाणजो १७९

एम कहे छे एटले के

दा दादा दादा दालदा, दादा दादा दालदा

एमां प्रथम बे मात्रानो निस्ताल दा आवी पछी दूहानुं प्रथम पद दादा दादा दालदा वेवडाय छे एम कहे छे. ते ज प्रमाणे 'प्राकृत पैंगल' एक चुलिआला छंदनुं निरूपण पण दोहराना बंध उपरथी करे छे:—

अथ चुलिआला छंद।
चुलिआला जइ देह किमु

दोहा उप्पर मत्तह पंचइ।
पअ पअ उप्पर संठवहु
सुद्ध कुसुमगण अंतह दिज्जइ॥ १६७॥

प्रा. पं. पृ. २७४

अर्थ एवो छे के दोहा उपर जो पांच मात्रा आपो तो चुलिआला थाय. अने तेने पद पद उपर मूकवी. अंते शुद्ध कुसुमगण देवो. अहीं पदनो अर्थ दल एटले के द्विदल चुलिआलानुं एक दल, एटले अर्द्ध एवो करवानो छे. कुसुमगण एटले लघु पछी गुरु पछी बे लघु, लगालल. उपरना लक्षण प्रमाणे अने लक्षणछंद प्रमाणे उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

चुलिआला: दादा दादा दालदा' दादा दादा गालल गालल

अहीं उत्तरखंडनो मात्रा सवैया बत्रीसाना उत्तरखंड जेटलो पूरी सोळ थई रहे छे. पूर्वखंड अलबत्त दोहरानो एटले त्रण अक्षरमात्रा खंडित हतो तेवो रहे छे. आ प्रमाणे पिंगलीनो पद्धति छे, पण एने हुं ऐतिहासिक सत्य तरीके स्वीकारी शकतो नथी. आ चुलिआला वगेरे खरी रीते द्विपदीओ छे जे कडवाने अंते गवाती. 'महापुराण'मां आ बधी रचनाओ द्विपदी घत्ताओ तरीके आवे छे. आपणे त्रणेयनां दृष्टान्तो जोईए:

छुडु छुडु कारणि वसुमइहि सेण्णइं जाम हणंति परोप्परु।
अंतरि ताम पइट्ठु तहिं मंति चवंति समुब्भिवि णियकरु॥

महापुराण, पृ. २८८

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दादा दादा दाललल' दादा दादा गालल गालल

ए ज प्रमाणे एक उल्लाल लउं छुं:

परमाणु अट्ठ जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुब्भवइ।
अट्ठहिं तसरेणुहिं पिंडयहिं एक्कु जि रहरेणुउ हवइ॥

एजन, पृ. २३

आनी उत्थानिका आ प्रमाणे थाय:

दा दादा दादा दाललल' दादा दादा दालल ल

हवे सोरठो लईए. आनुं बंधारण सामान्य सोरठाथी जरा भिन्न होवाथी तेनां बे दृष्टान्तो लउं छुं.

बंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तसयइं उग्घुट्ठइं।
बिण्णि वि बुड्ढइं ताइं मुहसालहि उवविट्ठइं॥

एजन, पृ. ५३०

ता खयरायसुयाहि बंभु महेसरु अच्चुउ।
णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहि संथुउ॥

एजन, पृ. ५३१

आनी उत्थानिका :

दादा दादा गाल' दादा दादा गालगा

आम एनो संधिन्यास सामान्य सोरठा जेवो ज छे, पण तेनो प्रास सोरठानी पेठे गाल संधिनिष्ठ नथी पण गालगानिष्ठ छे. जो दोहरा उपरथी ज सोरठो थयो होय तो प्रास गालनिष्ठ बने. वळी 'महापुराण'मां अनेक जातनी द्विपदीओ आवे छे पण क्यांई दोहरो द्विपदी तरीके आवतो नथी. चुलिआला दोहरामांथी व्युत्पन्न थयो एम लागे पण एमां जे पांचमात्राओ दोहराना गालना अंते लगाडाय छे एम कहेवाय छे त्यां शब्दान्त यति पण नथी. उत्तरखंडने अंते गालल गालल एवा बे संधिओ आवे छे जे मात्रारचनानो चरणान्त बतावे छे. एटले मने आ रचनाओ बत्रीशीना काठा उपरथी स्वतंत्र रीते घडाई होय एम लागे छे. पछीथी दोहरो धीमे धीमे घडातां, एना सौंदर्यना माहात्म्यने लीधे एनी साथे अनुसंधान करी बीजा छंदो निरूपावा लाग्या अने तेनी असरथी ए छंदोनां अंगो पण दोहरा जेवां थयां. एटले अत्यारनो प्रचलित सोरठो ए दोहराने उलटावीने करेलो छंद छे ए खरुं, पण ते पहेलां सोरठो द्विपदी तरीके स्वतंत्र रीते विकसेलो पण खरो.

आठमा प्रकरणमां सवैयाना सामान्य वर्गमां लीलावती, पद्मावती, मरहट्टा, त्रिभंगी, दुमिला, वगेरे छंदो मूक्या छे ते बधा मूळ बब्बे प्रासबद्ध पंक्तिनो कडीना रूपना हता, अने ते मूळ कडवामां आवती द्विपदीओने मळती रचना छे. पछीथी ए चार पंक्तिना छंदो बन्या छे. बधाने एक साथे मूकवाथी तेमनुं स्वरूप जणाई आवशे.

लीलावती : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा

पद्मावती : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा

मरहट्टा : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा गाल

त्रिभंगी : दा दादा दादा ' दादा दादा ' दादा दादा ' दादा गा

दुमिला : दा दादा दादा दादा दादा दादा दादा दादा गा

बधामां पहेलो एक निस्ताल दा आवी पछी चतुष्कलो शरू थाय छे. लीलावती पद्मावती त्रिभंगी अने दुमिलामां आवा सात चतुष्कलो आवी पछी छल्ले गा आवे छे, जे पछीनी पंक्तिना निस्ताल दा साथे मळी आठमुं चतुष्कल रचे छे. बाकी तो आ रचनाओमां यतिखंडो अने तेने जोडता आंतरप्रासोनी कारीगरी छे.

आ रचनाओमां आवतो दादा दादा दादा गा ए चोपायानो अंत्य खंड गणी शकाय. मरहट्ठा रचना आ बधाथी एटले ज अंशे निराळी छे के त्यां चोपायाना खंडने बदले दोहरानो अंत्यखंड आवे छे. चोपायामांथी दोहरो थतां तेना अंत्यखंडमां जे फेरफारो थाय छे ते ज फेरफारो थई आ मरहट्ठानो अंत्यखंड बने छे. बाकी आपणे चतुष्कल रचनाओ विशे जे जोई गया छीए तेथी विशेष अहीं कंई कहेवानुं रहेतुं नथी.

अपभ्रंश कडवांमां आथी भिन्न प्रकारनी द्विपदीओ पण आवती तेमांनी केटलीक महत्त्वनी छे ते अहीं जोई जईए. आमां हुं सौथी प्रथम आरणाल लउं छुं:

जो जिप्पइ णहारिणा कुलसवारिणा पयडसुहडरोलें।
सो णिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देय कलहकाले॥

महापुराण, खंड १, पृ. २६६

उत्थापनिका : दादा दालगालगा ' दालगालगा ' दादा दादा गा

आपणे आ प्रकरणमां दालगालदानां आवर्तनोवाळी षोडशी अने चोवीशी रचनाओ जोई हती तेवी आ बत्रीसी रचना छे. पंक्तिनी मध्यमां आवता बन्ने यतिखंडो आंतरप्रासथी सांधेला छे. एक बे आथी जरा विलक्षण प्रकारनी द्विपदीओ जोईए:

जे रुद्धा संगरि बद्धा ते णिव मेल्लिवि पुज्जिय।
पियवयणहि वत्थाहरणहि णियणियपुरहं विसज्जिय॥

महापुराण, पृ. ४५८

अहीं बे यतिखंडो आंतरप्रासथी सांधेला छे. आपणे जोयेला छंदोमां पद्मावती छंद आवा आंतरप्रासथी संधायेलो छे. आ बन्ने रचनाओने आपणे पासे पासे मूकी सरखावी जोईए.

पद्मावती : दा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा
जे रुद्धा' संगरि बद्धा' तेणिव मेल्लिवि पुज्जिय
दादा दादा' दादा दादा गालल

पहेलो यतिखंड बाद करतां बीजो यतिखंड पद्मावती जेवो ज छे, पद्मावतो पेठे ज आंतरप्रास धारण करे छे, अने अंत्य यतिखंड पण पद्मावती प्रमाणे ज चाले छे मात्र पद्मावतीनो एक छेल्लो गा आमां नथी, तेनो खुलासो स्पष्ट छे के अक्षरमात्राखंडनमां ए लुप्त थयो छे. हवे पद्मावतीमां बीजो प्रासधारक यतिखंड दादा दादा' छे तेनी पहेलांनो ए प्रासधारक यतिखंड दा दादा दादा' एटलो लांबो छे तेने बदले अहीं 'जे रुद्धा' दा दादा एटलुं ज छे. छतां एटलो टूंको खंड पछीना दादा दादा साथे प्रासबद्ध छे अर्थात् ए पण ओछामां ओछो एटलो लांबो एटले के अष्टकल जोईए. ए टूंको छे एनो ए अर्थ थयो के, ए यतिखंड स्वतंत्र होय ए रीते खंडित थयो, एटले एनी अष्टकलमां खूटती मात्राओ प्लुतिथी पूरवी जोईए. ए प्रमाणे तेनुं पठन करी जोतां रचनानो पाठ सुन्दर थई रहे छे. आ रीते—

जे रुद्धा◡◡' संगरि बद्धा' तेणिव मेल्लिव पुज्जिय
दादा दा◡◡' दादा दादा' दादा दादा दालल

आने ज मळतो बीजो दाखलो 'महापुराण'मांथी मळे छे.

हयकम्में जिणवरधम्मे उवरि उवरि रंकु वि चडइ।
कयगावें पल्लिव पावें हेट्ठामुहु राउ वि पडइ॥
महापुराण २१, १. पृ. ३३४

उपरनी ज पद्धतिए प्लुति मूकी आनुं पठन करतां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दादा दा◡◡' दादा दादा' दादा दादा दादा ल

उपरनी रचना करतां अहीं एक लघु विशेष छे. पद्मावतीमां अंते जे गुरु आवतो हतो ते अहीं खंडित थई मात्र लघु रह्यो. ए लघु प्लुत थई आखुं चतुष्कल पूरे एटले रचना बरोबर थई रहे.

उपरनी रचनाओमां प्रासबद्ध अष्टकलोमां मात्र पहेलुं ज खंडित थयेलुं छे. पण बन्ने ए रीते खंडित थयां होय एवी पण रचना मळे छे. आपणे प्लुतिनी मात्रा उमेरीने ज जोईए:

पियमेलइ ऽऽ' गयकालइ ऽऽ' एक्कहिं दिणि सहकारिणि।
णिरुवमसइ ऽऽ' सेंधुरगइ ऽऽ' णाहिवणयमणहारिणि॥

महापुराण, संधि ५, पृ. ७२

अर्थात् जेम चोपायानो सोळ मात्रानो पहेलो यतिखंड त्रण मात्रा जेटलो खंडित थई तेमांथी दोहरानो पहेलो यतिखंड बन्यो, तेम अहीं पण पद्मावतीमां आवता प्रासबद्ध अष्टकलोनी बब्बे मात्राओ खंडित थई. ए रीते आ खंडन-व्यापार, ज्यां ज्यां स्वतंत्र पंक्ति गणी शकाय एटलो लांबो यतिखंड मळी आव्यो त्यां त्यां प्रवृत्त थयो.

हुं आगळ कही गयो के अपभ्रंश प्रबंधोमां कडवाने अंते जे घत्ताओ आवती तेमां वपराती आ बधी द्विपदीओ छे. आवी तो घणी भिन्नभिन्न द्विपदीओ छे, पण तेमनी विविधता उपर दर्शावेला व्यापारोथी ज थयेली छे. आ द्विपदी प्रकार अहीं निरूपायो छे तो साथेसाथे घत्ता अने द्विपदीना विशेष नामथी ओळखाती रचनाओ जोता जईए. बन्ने 'प्राकृत पैंगल'मां आपेली छे. घत्तानो लक्षणछंद नीचे प्रमाणे छे:

अथ घत्ता

पिंगल कइ दिट्ठउ छंद उकिट्ठउ घत्त मत्त बासट्ठि करि।
चउ मत्त सत्त गण बे बि पाअ भण तिण्णितिण्णि लहु अंत धरि॥९९॥

प्रा. पैं. पृ. १७०

पठन उपरथी, अने आ लक्षणछंदना बधारामां एक गाहामां विशेष लक्षण आपेलुं छे ते ध्यानमां लेतां तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

घत्ता: दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दालल ल

उपरना लक्षणछंदमां पहेला दलना अंत्य यतिखंडमां 'घतमत्तबा' ए द्वैतीयीक अष्टकल छे. तेम ज बीजा दलना पहेला यतिखंडमां 'मत्त सतगण' पण द्वैतीयीक अष्टकल छे, पण ए छंदनुं अंग नथी. छंदना दृष्टान्त तरीके आवती घत्तामां ए संधि नथी. एटले उपर आपी ते ज उत्थापनिका बराबर छे. तेमां आंतरप्रास आवश्यक छे, जो के लक्षणमां कह्यो नथी. ए रीते ए पद्मावतीनी बहु नजीक जाय छे.

पद्मावती : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दादा गा
· घत्ता : दा दादा दादा' दादा दादा' दादा दादा दालल ल

तफावतने हवे शब्दोमां बताववानी जरूर रहेती नथी.

बीजो छंद द्विपदी लईए. तेनुं लक्षण 'प्राकृत पैंगल', प्रथम बे छंदोमां आपे छे. पठन जोतां मने पहेलो लक्षणछंद दोषवाळो जणाय छे एटले हुं बीजो छंद लउं छुं.

सरसइ लइ पसाउ तहि पुहविहि करहि कइत्त कइअणा ।
महुअर चरण अंत लइ दिज्जहु दोअइ भणहु बुहअणा ॥ १५३

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

द्विपदी : दादा दादा दादा दादा दादा दादा दादा

उपरना लक्षणछंदमां 'लइ पसाउ तहि' अने 'चरण अंत लइ' ए बन्ने द्वैतीयीक अष्टकलो छे, अने घणी द्विपदीओमां ए अष्टकल ए स्थाने आवे छे. पण व्यापक तरीके (महापुराण संधि २, कडवक १३, वॉ. १. पृ. २९) ते क्यांक क्यांक वपरायेलो छे त्यां जोतां, ए स्थाने एनो प्रयोग अव्यभिचारी जणातो नथी. तेम ज घणी द्विपदीओमां ए संधि अंते वपरायेलो जणाय छे. जेमके द्विपदीना दृष्टान्त तरीके 'प्राकृत पैंगल' नीचेनी द्विपदी आपे छे :

दाणव देव बेवि डुक्कंतउ गिरिवर सिहर कंपिओ ।
हअ गअ पाअ घाअ उट्ठंतउ धूलिहि गअण झंपिओ ॥ १५५
प्रा. पैं. पृ. २६०

अहीं अंते 'सिहर कंपिओ' अने 'गअण झंपिओ' बन्ने लदागालदा छे. अने उपर कहेला 'महापुराण'ना कडवानी घणी द्विपदीओमां आ ज संधि अंते आवे छे. अलबत्त 'प्राकृत पैंगल'मांथी पहेली उतारेली द्विपदी जोतां जणाशे के छंदनुं ए, अविचल अंग नथी, पण घणी द्विपदीओमां आ अंते आवे छे अने तेथी आ छंदने एक विशिष्ट ढाळ मळे छे, वळी आ द्वैतीयीक संधि, पंक्तिमां ठेठ अंते आवतो होय एवा दाखला विरल ज छे माटे आ लक्षणने हुं नोंधवा लायक लक्षण गणुं छुं. अलबत्त, आ बधी ३२नी रचनाओ छे एटले खूटती मात्राओ विलंबन के विरामथी पुराय छे ए याद राखवुं जोईए.

आठमा प्रकरणना क्रमे चालतां हवे आर्यायूथना छंदो लेवा जोईए. आपणे जोई गया के संस्कृत पिंगलकारोए आर्याने अंगे घणो विचार कर्यो छे अने तेथी आर्यानुं स्वरूप बहु ज चोकस थयुं छे. चतुष्कलसंधिमेळ संबंधी

आपणे जे विचार करी गया ते दृष्टिए आर्यांना नियमो तपासीए. आर्यानी परंपरा प्रमाणेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे:

आर्या: दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लगाल/ललल दादा गा

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल दादा गा

तालो दलपतराम प्रमाणे मूक्या छे ते स्मरण करीने आगळ चालीए. आमां पहेलो नियम के एकी स्थानमां जगण लगाल न आवे. ए नियमनुं कारण आपणे जाणीए छीए के रचनाना पठनप्रारंभमां चतुष्कलना प्रधान अने गौण बन्ने तालोनां स्थानो उपलब्ध रहे ए छे. अने पहेले स्थाने जगण निषिद्ध थतां, पछी तेने बीजे स्थाने ज अवकाश आपवो पडे, अने एम कर्या पछी, बे जगणो लगोलग न आवी जाय माटे तेने सळंग एकी स्थाने निषिद्ध करवो पडे ज. प्रारंभमां जगण न आवे ए नियम सामान्य रीते बधी चतुष्कल रचनाओमां पळाय छे, अने क्यांक प्रारंभमां जगण आवे ए दोष नथी, तो पछी प्रारंभमां जगणनो सदंतर निषेध करवानी अहीं पण जरूर रहेती नथी, एम कही शकीए. एम कर्या पछी बे जगणो साथे न आवी जाय एटला एक ज नियमनी जरूर रहे छे. सद्गत नरसिंहराव पण ए ज मतना छे. आपणा विवेचन साहित्यमां सद्गत मगनभाई चतुरभाई पटेलना 'अभिज्ञान शाकुन्तल'ना भाषान्तरमां आवती आर्याओनी अनेक पिंगलक्षतिओ श्री जहांगीर संजाणाए 'वसंत'मां संख्याबंध दृष्टान्तो आपी समर्थ रीते पुरवार करी, तेने अंगे सद्गत नरसिंहरावनी एक गीतिमां आवती संधिसंसृष्टिनां* क्षति तेमणे बतावी ए उपरथी नरसिंहरावे गीतिना स्वरूप उपर एक लांबो विद्वत्तापूर्ण लेख 'वसन्त'ना १६मा वर्षमां आप्यो. तेमां तेओ कहे छे के

"विचार, वाणी, वर्तन त्रणे समन्वित करे जनो विरला

आ गीतिदलमां 'विचार' ए प्रथम गण जगण छे अने छतां आखी पंक्ति लयबद्ध बोली शकाय एम छे." (वसन्त अषाढ, संवत १९७३ वर्ष १६ अंक ६ पृ. ३५१) अलबत्त आम कह्या पछी एटलुं ज याद राखवानी जरूर छे के रचनामां क्यांई बे जगणो भेगा थवा न जोईए. आ पछी प्रश्न करवा जेवो नियम ए छे के छठ्ठो संधि जगण अथवा चतुर्लघु शा माटे आवश्यक मान्यो हशे? पिंगलकारोने जगण विकट लाग्यो, ए एमनी सूक्ष्म

* आ संधिसंसृष्टिनुं दृष्टान्त नीचेनो यतिखंड हतुं:
"कंठे वाणी रही कांइ अटकी"

संवेदन शक्ति बतावे छे. पण ते साथे साथे एमने जगणनी आवश्यकता अने ते पण अमुक ज स्थाने शा माटे जणाई? जगणनो निषेध करतां करतां पण पिंगलकारो तेने अमुक स्थाने आवश्यक जरूर माने छे. जेम के 'प्राकृत पैंगल' कहे छे:

एक्के जे कुलमन्ती बे णाअक्के हि होइ संगहिणी।
णाअकहीणा रंडा बेसा बहु णाअका होई॥ ६३

प्रा. पै. पृ. ११८

जगणनुं एक नाम नायक छे. ए शब्द उपर श्लेष करीने कहे छे आर्या के गाथा, तेमां एक नायक होय तो कुलवंती, बे नायक होय तो संगृहिणी, नायक विनानी रांडेली अने बहु नायकवाळी वेश्या थाय. प्राकृत 'संगहिनी'नो अर्थ एक टीकाकार विधवा थया पछी परणेली (एजन) अने बीजो व्यभिचारिणी (एजन पृ. ११९) आपे छे. अर्थात् अहीं जगणनो विरोध तो छे ते साथे तेनी आवश्यकता पण कही छे. 'वृत्तजातिसमुच्चय' आ ज वात बीजी रीते कहे छे.

ठाणट्ठिओ पसाहइ ठाणहरहियो (अ)जेण विनडेइ।
मज्जाअं पिन लंघइ तेण गुरु मज्झओ राआ॥

वृत्तजातिसमुच्चय

"पोताने स्थाने रहेलो शोभा आपे छे. स्थान रहित थतां कोपे छे. मर्यादा उल्लंघतो नथी, तेथी मध्यगुरु (जगण) राजा कहेवाय छे." अहीं पण जगणनो निषेध अने आवश्यकता बन्ने कहेली छे. अने विचार करतां तेनो निषेध अने आवश्यकता तेना एक ज लक्षणमांथी ऊभां थतां जणाय छे. ए लक्षण ते तेनुं विकटत्व. जगण सिवायना बधा चतुष्कल पर्यायो उच्चारणमां बहु ज लीसा छे, फीसा छे. ए लीसापणुं लांबे गाळे अरुचिकर लागे छे. तेमां पण आर्या जेवी लांबी पंक्तिमां तो ते अरुचिकर लागे ज अने तेथी त्यां विकटत्व आवश्यक बने छे. जमवामां जेम पोची वस्तुओमां कोई कडक भावे छे, तेम. अने तेथी तेने छठ्ठे स्थाने आवश्यक गण्यो. पांच स्थान सुधी लीसा संधिओ आवतां अरुचि उपचित थाय ते छठ्ठे स्थाने जगणथी लुप्त थाय. तेने छठ्ठे ज आवश्यक गण्यो एनुं कारण ए के एनी पछी पाछा बीजा संधिओ आवे जेथी पंक्ति पूरी थया पहेलां एनुं विकटत्व लुप्त थाय. अने ए रीते पाछी पंक्ति लीसी बनी रहे. नरसिंहराव पोतानी रीते आ वात रजू करे छे.

"लगाल — ए लघुगुरु योजनानुं स्वरूप एवुं छे के लना नीचाणमांथी गानी दीर्घताना शिखर उपर चढी तरत लना नीचाणमां पडाय छे. आ शक्ति

होडीनी गतिमां थता फेरफारना जेवी छे; पाणीनी सपाटी उपर थोडी वार — लांबो वखत — सरल चालीने पछी एक तरंगनी टोच उपर चढी तरत होडी पाछी सरल सपाटीमां पडीने चाले त्हेवुं भान जगणथी थाय छे; अने . . . पंक्तिमां उल्लास मळे छे. अथवा क्वचित् क्वचित् न्हानो तरंग उपर चढी पाछी होडी पडे त्हेवुं भान पण जगणथी थाय छे; " (वसंत, श्रावण संवत १९७३, वर्ष १६, अंक ७, पृ. ४६२) आ जगणनो निषेध अने तेनी छठ्ठा स्थाने नियुक्ति बन्ने जगणना स्वरूपनी ऊंडी समज अने कलानी सूक्ष्म संवेदनशक्ति अने सर्जकशक्ति दर्शावे छे.

सिद्धान्त तरीके आपणे स्वीकार्युं के बे जगण भेगा न आवी जाय ए रीते प्रथम स्थाने जगण आवी शके. आ जातनो जगणनो पहेलो प्रयोग मने सद्गत राजाराम रामशंकरना 'नागानन्द' नाटकना भाषान्तरमां जणाय छे:

समान कुलने वयनो समान रूपानुराग संबंध
परस्पर प्रेम थकी, करनारा पुण्यवंत जन विरला.
नागानन्द नाटकनुं गुजराती भाषांतर पृ. ३६

आ पछी स्वाभाविक रीते ए प्रश्न आवे के जगणना विकल्पे छठ्ठे स्थाने सर्वलघु चतुष्कल आवी शके अने ए आवे त्यारे तेना पहेला अक्षरे शब्द पूरो थवानो नियम शा माटे कर्यो? जगण साथे आ सर्वलघु चतुष्कलने उच्चारणमां कशी समानता नथी. जगण उत्कट छे, सर्वलघु फीसुं अने शिथिल छे. पण आ कारणने लीधे ज आ सर्वलघु जगणना जेटलुं ज विरल बनेलुं छे. अने ए विरलत्वमां ए जगणना जेवुं ज छे एम कही शकाय. शिथिलत्वने लीधे आ सर्वलघु चतुष्कल जगण जेटलुं ज अनिष्ट गणायेलुं छे. 'प्राकृत पैंगले' जेम जगणनी अप्रशस्यता आलंकारिक भाषाथी कही छे, तेवी ज रीते लघुबहुलत्वनी अप्रशस्यता पण कही छे. ते कहे छे:

तेरह लहुआ विप्पी एआईसेहि खत्तिणी भणिआ।
सत्ताईसा वेसी सेसा सा सुद्दिणी होई॥ ६४॥
प्रा. पैं. पृ. ११९

आर्या तेर लघुथी ब्राह्मणी, एकवीस लघुथी क्षत्रियाणी, सत्तावीस लघुथी वैश्या, अने एथी वधारे लघुथी शूद्रिणी थाय छे. आ विधान लघुनुं अनिष्टत्व ज बतावे छे. अने लघुजन्य शिथिलता ज एनुं कारण जणाय छे.

सर्वलघु चतुष्कल शिथिल छे ए खरुं पण तेना पहेला अक्षरे यति एटले के शब्दान्त आववाथी एनुं शिथिलत्व घटे छे ए नरसिंहरावनो अभिप्राय यथार्थ

छे. एमना गीति उपरना लांबा लेखमां सर्वलघुना दृष्टान्त तरीके तेओ कालिदासनो नीचेनो यतिखंड ले छे.

प्रसीद रम्भोरुविरमसंरम्भात्।

अहीं छठ्ठो गण 'रु विरम' ए चार लघुनो बनेलो छे ते संबंधी तेओ कहे छे:"'रम्भो' ए पांचमो गण अने 'रु' ए छठ्ठा गणना आरम्भे आवेलो मळी 'रम्भोरु' शब्द बे गण वच्चे वहेंचाई जवाथी, बंने गणमां ए शब्द पग मूकीने ऊभो छे तेथी बन्ने गणने जोडनार अंकोडो दाखल थाय छे अने बे गण श्लिष्टतामां गूंथाय छे. . . . उपर कह्या प्रमाणे श्लिष्टता साधक बे गण उपरनुं आक्रमण ना होय तो शिथिलता आवे; उदाहरण :—

(१) अपराधी नूनमहं प्रसीद कान्ते परिहर संरंभम्।

आम होय तो 'कान्ते' अने 'परिहर' ए बे गण जुदा जुदा शब्दोने लीधे अशृंखलित रही शिथिलता थात.

(२) "राजे रेणे अरुणो मंगळ काळा घननिकटे जेवो"

(रा. केशवलाल ध्रुवकृत 'विक्रमोर्वशीय नाटक' आवृत्ति २ जी, अं ५, श्लोक ४)

आ स्थळे पण उपर कहेली स्थिति ज आवे छे: छठ्ठो गण — घननिक चार लघुनो अने पांचमो अने छठ्ठो गण जुदा जुदा शब्दोने लीधे अशृंखलित रही शिथिलता आवे छे."

'वसंत' माघ संवत १९७३, वर्ष १६, अंक १, पृ. ३५, ३६

पण आ उपरांत एक बीजी बाबत पण हुं नोंधवा इच्छुं छुं. ते ए छे के सामान्य रीते शब्दनो अंत्य एक ज लघु संधि बहार जाय ए इष्ट नथी. एवुं एकथी वधारे वार थतां रचना क्लिष्ट बने छे, अर्थबोध विक्षिप्त थाय छे. आ विक्षेपकता ज सर्वलघुनी पसंदगी करावनार तत्त्व छे. जगण गौणतालने दाबी दे छे तेने लीधे विकट बने छे, विक्षेपक बने छे. तेम आ सर्वलघु चतुष्कल पण आगला शब्दनो छेल्लो एक ज लघु तेनां आवे छे तेने लीधे विक्षेपक बने छे. अने एम आ छठ्ठा स्थानमां, जगणना स्वरूपनो नहीं तो, एक भिन्न स्वरूपनो विरल अने विक्षेपक प्रयोग बनी रहे छे.

अने छठ्ठा स्थाननो प्रयोग विक्षेपक छे माटे ज एवो नियम छे के एनी पछी सातमे स्थाने जो सर्वलघु आवे तो त्यांथी नवो शब्द शरू थवो जोईए. आ संबंधी मतभेद छे, ते आपणे गया प्रकरणमां (पृ. ३२०) जोई गया छीए.

हलायुध, आ सर्वलघु संबंधी नियम, छठ्ठो संधि गमे ते होय, एटले के छठ्ठा संधिना बन्ने विकल्पोमां प्रवर्ततो माने छे, अर्थात् छठ्ठाना स्वरूपथी एने स्वतंत्र माने छे, त्यारे 'वृत्तरत्नाकर' छठ्ठो सर्वलघु होय त्यारे ज तेने प्रवर्ततो माने छे. हुं हलायुधनो मत साचो मानुं छुं तेनुं कारण ए छे के छठ्ठे स्थाने एक विक्षेपकारक तत्त्व आव्या पछी, ते पछी तरत ज शब्दभंगनो बीजो विक्षेप अनिष्ट छे. जेम रचनाना प्रारंभमां अविक्षेप आवश्यक छे तेम ज अंते पण आवश्यक छे. अने छठ्ठो ज संधि विक्षेपकारक छे त्यारे तो विशेष करीने सातमो विक्षेपकारक न जोईए. प्रयोगो जोतां पण आ हलायुधना मतने ज समर्थन मळतुं मने जणाय छे. सातमे स्थाने सर्वलघुनां दृष्टान्तो मेळववानी दृष्टिए 'ज्ञानपञ्चमीकथा'मांनी त्रीजी अने चोथी कथानी दरेकनी सवासो आर्याओ हुं जोई गयो तो तेमां सातमा स्थानना बधा सर्वलघु चतुष्कल संधिओमां संधिना प्रारंभथी ज शब्द शरू थाय छे. आ बधां दृष्टान्तोमां छठ्ठो संधि जगण ज छे, एटले छठ्ठो सर्वलघु होवानी आवश्यकता परास्त थाय छे. पहेली कथामां आवां चार दृष्टान्तो छे. बीजीमां त्रण छे. हुं दरेकमांथी बब्बे लउं छुं:

(१) तद्दिवसे च्चिय तीए गब्भे सुह-असुहकम्म परियरिओ।

श्लो. १६

(२) देसंति बहुजणाणं धम्मं जिणदेसियं च पइदियहं।

श्लोक. ११९ ज्ञानपञ्चमीकहा: ३ भद्दाकहा पृ. २५, २९

(३) उवगरणेण समेया रंधणए सुव्वया वि अइकुसला।

श्लो. २५

(४) जइ चित्तं न विसुद्धं ता जाण तवोवणं पि घरसरिसं।

श्लो. १२१, एजन, पृ. ३२, ३३

चारेय दृष्टान्तोमां छठ्ठो संधि जगण छे, अने चारेयमां ते पछी सर्वलघु संधि आवतां संधिना प्रारंभथी शब्द शरू थाय छे. एटले नियम हलायुध प्रमाणे एवो ज गणवो जोईए के सातमो गण ज्यारे ज्यारे सर्वलघु होय त्यारे त्यारे तेना पहेला लघुथी ज शब्दनो प्रारंभ थवो जोईए. बीजी रीते कहीए तो शब्दनो अने संधिनो प्रारंभ एक साथे थवो जोईए. आ नियम सर्वलघु माटे ज करवानुं कारण हुं मानुं छुं के बधा पर्यायोमां सर्वलघु ज्यारे बे शब्दो वच्चे वहेंचाय छे त्यारे ज सौथी वधारे विक्षेप करे छे. बीजा संधिओ एवो विक्षेप करता नथी.

આર્યાના પૂર્વાર્ધમાં છઠ્ઠે સ્થાને લગાલ કે લ'લલલ મૂકીને પદ્યપઠન અતિ લીસું થતું અટકાવ્યું તો ઉત્તરાર્ધમાં એ જ કામ છઠ્ઠા સંધિને બીજી રીતે વિક્ષેપકારક કરીને કર્યું, અહીં સંધિનું જ ખંડન કર્યું,—એ ચતુષ્કલની ત્રણ માત્રા કાપી નાખી ત્યાં માત્ર એક લઘુ રહેવા દીધો. એથી ચાલ્યો આવતો ચતુષ્કલ-પ્રવાહ વિચ્છિન્ન થાય, તેમાં વિક્ષેપ આવે એ દેખીતું છે. અને પઠન પણ તેની સાક્ષી પૂરે છે. અને આ પ્રમાણે ત્યાં ચતુષ્કળો ઓળખવામાં મુશ્કેલી પડે એવું થવાનું છે માટે તેની આગલું ચતુષ્કલ સર્વલઘુ હોય તો ત્યાંથી શબ્દારંભ થવો જોઈએ એવો નિયમ કર્યો જેથી એ ચતુષ્કલનો સંસ્કાર બરાબર પડે. અહીં પણ એ નિયમ સર્વલઘુ માટે જ છે. આ પ્રમાણે આર્યાના પરંપરાપ્રાપ્ત નિયમોનો પૂરો ખુલાસો થઈ રહે છે, જો કે યતિ અને પઠનનો પ્રશ્ન હજી વિચારવાનો રહે છે. પણ એ તરફ જઈએ તે પહેલાં હજી સંધિઓ વિશેનો જ એક પ્રશ્ન બાકી રહે છે તે જોઈ લઈએ.

આપણે આગળ જોઈ ગયા કે બધી ચતુષ્કલસંધિ રચનાઓમાં બે ચતુષ્કલોની જગાએ લદાગાલદા કે દાલગાલદા આવી શકે છે. તો એ દ્વૈતીયીક અષ્ટકલ સંધિને આર્યાવૃત્તમાં અવકાશ આપવો કે નહીં એ પ્રશ્ન રહે છે. નરસિંહરાવ એને અવકાશ આપવો એવો મત દર્શાવે છે અને તેને માટે તેઓ નીચેનાં દૃષ્ટાન્ત ખાસ રચીને મૂકે છે.

બિના જ્ઞાન જે બોલે તે નર હલકો પડે જ્ઞાનિવર્ગે.
ભગ્નમાન થઇ ઊભો દુર્યોધન તે ક્ષણે હસી કૃષ્ણા.

એજન, પૃ. ૩૫૦

પહેલા દૃષ્ટાન્તમાં આર્યા લદાગાલદાથી અને બીજામાં દાલગાલદાથી શરૂ થાય છે. એટલું જ નહીં ક્યાંક આ દ્વૈતીયીક સંધિ છઠ્ઠા સ્થાનના જગણનું કામ પણ કરે છે એમ તેઓ બતાવે છે. ગીતિની ચર્ચામાં તેઓ દૃષ્ટાન્ત આપે છે:

"પવિત્ર જન્મી ત્યાંથી પાવન તેને કોણ કરે બીજું?
(મણિલાલ દ્વિવેદીનું 'ઉત્તર રામચરિત')

અને પછી કૌંસમાં ટીપ આપે છે:

"(અહિં 'કોણ કરે' એ શબ્દો ઉલટાવીને 'કરે કોણ' એમ કર્યાથી શૈથિલ્ય સુધારાશે; મ્હેં ઇ. સ. ૧૮૮૪ માં જૂનના 'બુદ્ધિપ્રકાશ' માં પૃ. ૧૨૭-મે તે બતાવ્યું હતું.)"

એજન, પૃ. ७૩૦

अहीं मणिभाईनी मूळ पंक्तिमां छठ्ठे स्थाने आवश्यक जगणने स्थाने 'कौणक' गालल आवतो हतो. नरसिंहरावे सूचवेलो फेरफार 'करे को'थी त्यां लदागालदा बने छे, अने तेथी पंक्तिमां श्लेष आवे छे ए साचुं छे. खरी वात तो ए छे के ए स्थाने कंईक पण विक्षेप इष्ट छे, ते अहीं आ संधिथी बनी रहे छे, एटले रचना आस्वाद्य थाय छे.

प्रो. ब. क. ठाकोर तो आ अष्टकल संधि स्वीकारे छे एटलुं ज नहीं एमणे एना अनेक प्रयोगो कर्या छे, जे तेओ आ गीतिनी चर्चाना संबंधमां ज दर्शावे छे. जेम के:—

"म्होर करुं तुज अंग चाप चढावी रहेल मनसिजने;
उत्तम शर पांचेमां वनी बींध जा पथिकवधूजनने."
वसंत, चैत्र, संवत १९७४ वर्ष १७, अंक ३. पृ. १५९

अहीं 'वनी बींध जा' ए लदागालदा छे. आर्यावृत्तमां आ अष्टकल संधिनो पण सौथी पहेलो प्रयोग मने 'नागानन्द' नाटकना भाषान्तरमां ज मळे छे:

विधि हरिहरने पण जे, गर्वने लिधे नमी न जाणे ते
शेखरक आज तुजने नमुं छूं नव मालिके, मना व्हेली.
नागानन्द नाटकनुं गुजराती भाषांतर पृ. ३९

अहीं 'गर्वने लिधे' ए दालगालदा छे.

आ रीते आ प्रयोगो सिद्धान्तथी साचा छे, अने कविप्रयोगोथी अर्वाचीन काळमां समर्थित छे. पण एम होय तो दोषित करेला मगनभाई चतुरभाईना नीचेना प्रयोगो विचारवा रहे.

लता गेरवी पांडु पांडु पत्रो

अने

पंचबाणनुं श्रेष्ठ बाण तुं था

अहीं न स्वीकारवानुं कारण एक ज होई शके के अहीं एक ज यतिखंडमां दालगालदा के लदागालदाना एकने बदले बे प्रयोगो थाय छे. अने एम थतां संवादनो प्रकार बदलाई जाय छे. आ मेळ बदलाई जाय छे ए मतने एक बीजी रीते पण समर्थन मळे छे. आपणे आगळ (गत पृ. ३७८) जोई गया के अष्टकलनां बे आवर्तनो आवतां होय एवा जुदा ज छंदो पिंगळो आपे छे. अलबत्त नहीं जेवो बाबतने अवलंबी छंदने नवुं नाम आपवानुं वलण प्राचीनोमां

અપવાદ હતુ છતાં અહીં તો આપણે કહી શકીએ કે આ સંધિનાં બે આવર્તનોથી મેળનુ સ્વરૂપ બદલાય છે. પઠનની અસર જરૂર બદલાય છે. એટલે નરસિંહરાવનો વાંધો હું આ કારણથી સ્વીકારું છું. આ પદ્ધતિની વિચારણાથી આપણે એમ પણ કહી શકીએ કે પ્રાચીન છન્દઃશાસ્ત્રીઓ આર્યાયૂથમાં આ સંધિને અવકાશ નહીં આપીને આર્યાને અમુક જ સ્વરૂપની શુદ્ધ રાખવા ઇચ્છતા હતા. અને તેથી મૂળ આર્યામાં આપણે જે ફેરફારો સ્વીકાર્યા, જગણ સંબંધી અને આ અષ્ટકલ સંબંધી, તે પણ અપવાદરૂપ જ ગણવા જોઈએ. આપણે એકંદરે સ્વીકારવુ જોઈએ કે આર્યાના મૂળ નિયમો કલાની આવશ્યકતાની બહુ સૂક્ષ્મ સમજણ દર્શાવે છે.

હવે આપણે આર્યાના પઠન સંબંધી વિચાર કરીએ. મેં ગયા પ્રકરણમાં કહ્યું છે તેમ જાતિછંદોમાં હું યતિને વિલંબનાત્મક કે વિરામાત્મક સ્વીકારતો નથી. એ માત્ર, એ સ્થાને શબ્દ પૂરો કરવાની ભંગીરૂપની છે. અને આ બાબતને વિપુલા નામની સ્વીકારાયેલી આર્યાથી સમર્થન મળે છે. આપણે આગળ જોઈ ગયા તેમ વિપુલા આર્યામાં બાર માત્રાએ યતિ નથી. અને હું પછીથી પેસી ગયેલી શિથિલતા માનતો નથી. આપણુ શાસ્ત્રબંધનનું સામાન્ય માનસ જોતાં શિથિલતા પછીથી પેસી ગયેલી હોય એ શક્ય લાગતુ નથી. એ એવી શિથિલતા હોત તો પિંગલ તેને સ્પષ્ટ રીતે યતિભંગ માનત. અને એ શિથિલતા જ હોત તો કાલિદાસ જેવો છંદોનો સૂક્ષ્મ કલાવિદ એનો પ્રયોગ ન કરત. આપણા શિષ્ટ કવિઓએ તો પિંગલમાં યતિસ્થાને શબ્દ તોડવાની જે છૂટ આપી છે તે પણ ક્યાંઈ ભોગવી નથી. તો આ એક આર્યાની બાબતમાં કાલિદાસ એમ કરે એ સંભવતુ નથી. કાલિદાસની એ આર્યા નીચે પ્રમાણે છે:

ઈસીસિચુમ્બિઆઇં ભમરેહિં સુઉમારકેસર સિહાઇં।
ઓદંસઅંદિ દઅમાણા પમદાઓ સિરીસકુસુમાઇં॥

અહીં પ્રથમ દલમાં પંક્તિની અંદર આવતા સાનુસ્વાર ઇ અને હિં બન્ને લઘુ છે. અને ત્રીજુ ચતુષ્કલ 'આઇંભ' એમ થતાં યતિ રહેતી નથી. 'ભમરેહિં' નો ભ બારમી માત્રા થઈ ત્રીજા ચતુષ્કલનો ભાગ બને છે. એવી જ રીતે બીજા દલમાં 'દઅમા' એ ત્રીજુ ચતુષ્કલ બને છે, અને ત્યાં આવેલા 'દઅમાણા' શબ્દનો ણા ચોથા ચતુષ્કલમાં ચાલ્યો જાય છે એટલે યતિ રહેતી નથી. યતિ સાચી હોય તો કદી લુપ્ત થાય નહીં, આઘીપાછી થાય નહીં. એટલે હું આ યતિને પણ જાતિછંદોની યતિ જેવી માત્ર એક છંદોભંગી જ માનું છું. એ રીતે આર્યાને પણ હું સળંગ પઠન કરવાની રચના જ માનું છું. અને ત્રીશ માત્રાનું સળંગ પઠન ન થઈ શકે એમ પણ ન કહી શકાય. એ રીતે એ પણ બત્રીસી રચનાની

अंत्य बे मात्राना खंडनथी थयेलो प्रकार ज गणाय. आर्यामां अंते गा आवश्यक छे ते चार मात्रानो प्लुत थई त्यां बत्रीस मात्रा पूरी थई रहे छे. पण ते साथे आर्याना बीजा दलना पठननो खास विचार करवानो रहे कारण के तेमां छठ्ठु चतुष्कल त्रण मात्रा जेटलु खंडित थाय छे. दलपतराम ए खंडित मात्रावाळा चतुष्कलने निस्ताल राखी सातमानी पहेली मात्राथी ताल शरू करे छे. पण आपणे जे रीते ताल समजीए छीए ए रीते ए शक्य नथी.

| | | | | | |
दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा ल दादा गा

पांचमा चतुष्कलनी पहेली मात्राए ताल पड्यो. पछी शु पांच मात्राए ताल पड्यो एम गणवु? चतुष्कल संधिना मेळमां ए शक्य नथी. हु मानु छु के त्यां अंते लदागालदा संधि बने छे अने तेनी बीजी लघु मात्रा प्लुत होय छे. आ रीते

| | | | | |
दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदादा‿गा – –

आ, मात्राओ मेळववाने करेली कोई युक्ति नथी. जे रीते परंपराथी पठन थाय छे तेने सूक्ष्मताथी जोतां मने त्यां ए अष्टकल संधि जणायो छे. अने तेथी ए यतिखंड आखो सळंग चतुष्कल संधिना आवर्तनोनो थई रहे छे. पंक्तिने ठेठ अंते लदागालदा आवे ते विरल छे पण द्विपदीमां ते आपणे आगळ जोई गया छीए. आर्या विशे आटलु कह्या पछी आर्यायूथनी बीजी रचनाओ, जेवी के गीति, माटे खास कशु कहेवानु रहेतु नथी.

आर्याना पठन संबंधी में जे उपर कह्यु ते जातिछंदना अल्पतम संगीतवाळा शुद्ध पठननी दृष्टिए कह्यु छे. पण ते साथे नोंधवु जोईए के अत्यारे आर्या अने गीतिओ आपणा शास्त्रीओ अने हरदास बावाओ अमुक रीते ज गाय छे. ए रीते गातां तेमां मध्ययति बहु दृढ रीते आवे छे. अने आखु गीतपठन प्रलंबित स्वरोथी नियत संख्यानी मात्राथी गवाय छे. तेमां पहेली बार बार मात्रा पछी चार मात्रानो अवकाश आवे छे जे स्वरोना विलंबनथी पुराय छे, अने दलना अंते आवता गुरु पछी वळी बीजु छ मात्रानु विलंबन थाय छे. ए रीते आर्यानु, पहेलु दल कुल चाळीश मात्रानु बने छे. अने बीजु पण गावामां एटली ज मात्रानु थाय छे. आ गीतपद्धति में गुजरातमां सर्वत्र जोई छे अने हु मानु छु के महाराष्ट्रमां पण ए ज रीत छे. आना संस्कारो एटला बधा दृढ छे, के हवे कदाच विपुला आर्या आपणे त्यां न रचाय. एम करवा जतां यतिनी ख्ब अपेक्षाने आघात पहोंचे. अने

कर्ता आपणुं रुचितंत्र धीमे धीमे एटलुं लवचिक थतुं जाय छे के विपुलाथी पण ए भडके नहीं.'

अर्वाचीन काळमां आर्यायूथना प्रयोगो घणा ओछा थया छे. आपणा नवा कविओने अक्षरमेळ वृत्तो वधारे प्रिय अने रुचिकर थई पड्यां छे ए कदाच एनुं कारण होय. पण आपणा प्रयोगशोखी प्रो. ठाकोरे आर्यानो पण विस्तार कर्यो छे अने ते कृति पण ध्यान आपवा योग्य छे. तेमणे पोते तेने आर्यातिलक कही छे. हुं ए काव्यना बे छंदो उतारुं छुं:

पूना अने मुंबई

१. पूणा मुंबई तुलना शके करी केम कविजन तो!
पूणा कुदरत खोळे मुंबई रत्नाकर कटि पर धरतो.

४. आर्यांना पठन संबंधी 'प्राकृत पैंगल'मां एक गीति छे:
पढमं वी हंसपअं बीए सिंहस्स विक्कमं जाआ।
तीए गअवर लुलिअं अहिवर लुलिअं चउत्थए गाहा।६२॥
प्रा. पै. पृ. ११७

अर्थ एवो छे के गाथाना पहेला पादनुं पठन हंसगति जेवुं, बीजानुं सिंहनी फाळ जेवुं, त्रीजानुं गजवरनी गति जेवुं, अने चोथानुं सर्प जेवुं. 'प्राकृत पैंगल'ने आवी आलंकारिक भाषानो शोख छे. आगळ जगणनी बाबतमां जगणना पर्यायनायक शब्द पर श्लेष करी गाथाने रंडा वगेरे कही, अने लघुना ओछा वधारे भरावा उपरथी ब्राह्मणी क्षत्रियाणी वगेरे कही त्यां आपणे जगणनी अमुक स्थाने आवश्यकता अने अन्यत्र प्रशस्याप्रशस्यता तथा लघुना भरावानी अप्रशस्यता एटलुं तो समजी शकता हता, पण उपरना वर्णनथी तो एथी पण ओछो प्रकाश पडे छे. वधारेमां वधारे एटलुं कही शकाय छे के प्रथम पाद एटले यतिखंड टूंको छे, ते धीमे धीमे गवाय एटले एनी हंस जेवी मंथर गति कही. बीजो यतिखंड लांबो अढार मात्रानो छे एटले एनी गतिने सिंहनी फाळ साथे सरखावी (जेम शार्दूलविक्रीडितमां लांबा यतिखंडने सिंहनी फाळ साथे सरखाव्यो छे तेम). त्रीजानी गतिने गजगति साथे सरखावी, गजगति पण धीमी होय छे. पण पहेला यतिखंडनी गति हंस जेवी अने बीजानी गज जेवी एवो जे भेद कर्यो ते तो मात्र उपमावैविध्य माटे ज कर्यो हशे, कारण के बन्ने यतिखंडो सरखा छे. छेल्लानी गतिने सर्प जेवी कही तेनुं कारण तेमां चतुष्कल संधिओनो प्रवाह छठ्ठुं चतुष्कल खंडित थई गति स्खलित थाय छे ए होवुं जोईए. एवी रीते वर्णनने बेसतुं करी शकीए छीए पण पठनपद्धति नक्की करवामां वर्णन मार्गदर्शक थई शके एवुं नथी. बहु आलंकारिक भाषानो आ दोष छे.

पूणानी सरिताओ उदधिखाडियो रसळत मुंबइनी,
महिधीधण टेकरियो एके अवरे शिशुधनधण सह् धी गिरणी.

२ शिवाजि कदमे अंकित अथ मंडित पार्वती मुकुटे
एक धरे छे जोडी भक्तिज्ञानथी अमर वनी निकटे;
अवरे भव्य सनातन घारापुरिनी त्रिमूर्ति, कन्हेरी
गुफाहारमां सभामंडपे अमोघवत्सल ते मुदिता घेरी।

भणकार (ई. स. १९४२) पृ. २९२

आ छंद विशे प्रो. ठाकोर कहे छे:"लखतां लखतां आ नवो छंद बेसी गयो. एने 'आर्यातिलक' नाम आपुं छुं. पंक्ति १ ली — आर्यानी बीजी पंक्ति; २ अने ३ — आर्यानी १ ली पंक्ति; ४ थी — पूर्वार्धमां चार मात्रा वधारे, उत्तरार्ध, आर्यानी १ ली पंक्तिनो: ए प्रमाणे एनुं माप छे." (भणकार टिप्पण पृ. ७९) विशेष एटलुं बताववा जेवुं छे के अहीं छठ्ठे स्थाने जगण मूकवानो के त्यां सर्वलघु चतुष्कल आव्युं होय तो पहेले लघुए शब्द पूरो करवानो आग्रह राख्यो नथी. पण तेथी खास मेळ बगडतो जणातो नथी. कारण के आखी रचना जुदी छे. बीजुं ए के 'उदधिखाडियो' ए द्वैतीयीक अष्टकल संधि छे. अने त्रीजुं ए के अवतरणनी छेल्ली पंक्तिमां पहेला यतिखंडमां एवा बे द्वैतीयीक संधिओ लागलागट पासे आवतां मेळ बदलाय छे, अने ते गीति जेवो सुन्दर नथी लागतो. आखी रचना तेम छतां नवी छे, अने कोईने नितान्त सुन्दर न लागे तो पण ध्यानमां लेवा योग्य छे. नवो प्रयोग साची दिशानो छे.

प्रो. ठाकोरे आर्यानो एक बीजा प्रकारनो प्रयोग कर्यो छे, जेनो उल्लेख आपणे हमणां गीतिना स्वरूपनी चर्चा जोई तेमां आवे छे. नरसिंहराव ए आर्यामां क्षति बतावे छे के तेना पहेला यतिखंडना छेल्ला चतुष्कलमां एक मात्रा ओछी छे. ते आर्या नीचे प्रमाणे छे:

पौरव नृपनूं राज्य, धृष्टोनो शासक जग आखामां,
त्यां अविनय को आज, मुग्ध तपस्वी कन्या सह मांडे?

(ब. क. ठाकोरनुं 'अभिज्ञान शाकुन्तल' अंक १, श्लोक २३)
वसंत, मार्गशीर्ष, संवत १९७४, वर्ष १६, अंक ११, पृ. ६७५

आना जवाबमां प्रो ठाकोर कहे छे:"म्हारा तरजुमामां आवा चार श्लोक छे. . . . जे नथी आर्या के नथी गीति, के नथी आपणा परंपरागत छन्दः-

शास्त्रमां नोंधायेलो कोई पण पद्यबन्ध. आ चार श्लोक नवी मिश्र रचनाना छे. एमांना विषम पाद सोरठाना छे अने समपाद आर्या के गीतिना समपादने मळता छे. एटले एमने सोरठी आर्या के सोरठी गीतिनां नाम आपुं छुं." (वसंत, चैत्र, संवत १९७४, वर्ष १७, अंक ३. पृ. १४९.) आगळ जतां तेओ पोते एवी बीजी एक सोरठी आर्या उतारे छे ते जोईए:

राजाए शुं धर्म वीसरवो यदि रुचे न कर्युं हाथे?
—सत्तामदनां कर्म ज्यां त्यां एवां सदोष ज ते.
एजन, पृ. १५८

आ बीजा श्लोकना आर्याखंडमां जगणनुं स्थान साचव्युं छे, पहेलामां साचव्युं नथी, तेथी रचना लूली लागे छे ए तो देखीतुं छे. एटले आवी सोरठी आर्यामां पण आर्यानी खासियतो राखवी सारी एटलुं तरत जणाशे. पण नरसिंहरावनी चर्चानो ए विषय नथी. एमणे मूळ मुद्दो ए चर्च्यो छे के सोरठाना यतिखंडो साथे आर्याना यतिखंडोनुं आ मिश्रण सुश्राव्य छे?—संवादी छे? नरसिंहराव ए विशे नीचे प्रमाणे कहे छे:"खास जोवानुं एक ए छे के ए मिश्र रचनामां लयबंध सचवाय छे के केम? ए संकलनामां घटनासारस्य छे के केम? मने तो लयभंग स्पष्ट लागे छे, अने घटना क्षतिवाळी जणाय छे, ... म्हने तो आ रचना जोईने, गणपतिनुं माथुं कपाई गयेलुं चन्द्रलोकमां पडयाथी हाथीनुं माथुं लावीने धड उपर बेसाडयुं ते कथा याद आवे छे." (एजन, ज्येष्ठ, संवत १९७४, पृ. २७१) नरसिंहरावने आ संयोजन विसंवादी जणायुं. पण संवादना संस्कार माटे पण अभ्यास अने परिचयनी जरूर होय छे. आ ज जातनुं मिश्रण आठमा प्रकरणमां आपणे जोई गया. चूडामणिमां पूर्वार्ध दोहरो छे, उत्तरार्ध आर्या छे. अने वेरालुमां त्रण पादो के यतिखंडो दोहराना छे अने चोथो यतिखंड आर्यानो छे. आ रचनाओ दोहराने केटली बधी मळती छे ए बताववा प्रथम दोहरानुं अने पछी तेमां ज थोडा फेरफार करी रचेल चूडामणि अने वेरालुनुं दृष्टान्त आपुं छुं:

दोहरो: सोरठियो दूहो भलो, भली मारुनी वात,
जोबन छायी तारुणी, तारा छायी रात.

चूडामणि: सोरठियो दूहो भलो, भली मारुनी वात
जोबन छायी तारुणीं, ताराथी छायली रात.

वेरालु: सोरठियो दूहो भलो, भली मारुनी वात
जोबन छायी तारुणी, ताराथी छायली रात

जो दोहरा अने आर्यानुं मिश्रण थयुं तो सोरठाना अंत्य यतिखंड साथे एनुं मिश्रण न ज थई शके एम न कहेवाय. उपरना मिश्रणमां आपणे जोईए छीए के दोहरानो पूर्वयतिखंड तेर मात्रानो छे, अने आर्यानो बार मात्रानो छे, अने एकने बदले बीजो मूकी शकाय छे. तो सोरठानो त्यां आवतो गालान्त यतिखंड अगियार मात्रानो छे, ए पण आर्याना पूर्व यतिखंडनी बहु ज नजीक छे, अने त्यां बेसी जाय एवो छे. आपणे आ बे रचनाओ साथे सोरठी-आर्या के सोरठी-गीतिने पण स्थान आपीए. उत्थापनिका:

सोरठी-आर्या { दादा दादा गाल' दादा दादा लदाल दादा गा
दादा दादा गाल' दादा दादा ल दादा गा

आने सोरठी-आर्या कहेवी होय तो कहेवाय, पण एक बीजी रीते पण आना मेळनो खुलासो करी शकाय. अने एम करतां नरसिंहराव बे छंदोनुं मिश्रण कहे छे ते मिश्रणनुं अवलंबन पण न करवुं पडे. पूर्वयतिखंडमां बारने बदले अगियार मात्रा छे, अने एम यतिखंडने पण स्वतंत्र मानी तेना मात्राखंडननो व्यापार आपणे आगळ अनेक जगाए जोयो छे. एटले आ एक यतिखंडित आर्यानुं ज स्वरूप छे एम कही शकाय. अने ए वधारे साचुं छे. ए रीते आना मेळनो खुलासो वधारे समर्थ अने वस्तुने अनुरूप बने छे. अने जे सोरठानो प्रास छे ए पण आर्या साथे विसंवादी नथी. एवी रीते बे यतिखंडोने विशिष्ट स्वरूप आपी प्रासथी सांधवाना प्रयोगो आपणे रोळामां जोया छे (गत पृ. १३९) अने त्यां पण आ ज अगियार मात्रानो खंड हतो.[५]

---

५. अहीं आने मळती एक मिश्र रचना मने 'मृच्छकटिक'मां मळी छे ते नोंधुं छुं:

जे वत्तबलं जाणिअ' भालं तुलिदं बहेइ माणुस्से।
ताह खलणं न जाअदि' ण अ कन्तालगदो विवज्जति॥

मृच्छकटिक (Kale's Edition 1924) अंक २, श्लो. १४, पृ. ५६

आमां स्पष्ट रीते पहेला त्रण यतिखंडो आर्याना छे, अने चोथो यतिखंड ते वियोगिनीना समपादनो छे. आ प्रमाणे:

दादा दद्दा दादा' दद्दा दादा लदाल दादा गा
दादा दद्दा दादा' ललगागा ललगा लगालगा

पण आ नाटकनो संस्कृत टीकाकार पृथ्वीधर नीचेनी टीकामां आने वैतालीय छन्द कहे छे. अने टीका करे छे: "तुलितं कलितमिति 'वा पदान्त' — इति बिन्दो-

बत्रीस मात्रानी रचनाना लगात्मक छंदो केटलाक छे पण ते घणाखरा नहीं वपरायेला अने अरुचिकर छे. आटली लांबी पंक्तिमां एक ज लगात्मक रूपनो संधि आवर्तन पाम्या करे ते क्लेशकर ज नीवडे. छतां एक बे रूपो कंईक वपरायेलां छे ते नीचे आपुं छुं.

इन्द्रविजय अथवा मत्तगयंद	।गालल ।गालल ।गालल ।गालल ।गालल ।गालल ।गालल ।गागा

पंक्तिनो अंत दृढ करवा अंते गागा आवे छे. आमां यति नथी. बीजो एथी ओछो प्रसिद्ध दुमिला लईए :

दुमिला : लल।गा लल।गा लल।गा लल।गा लल।गा लल।गा लल।गा लल।गा

दलपतराम दरेक गा उपर ताल मूके छे. ए रीत आपणे तोटकमां स्वीकारी छे.

रोळामां जेम अंत्य बे संधिओ खंडित थई तेनी गालगान्त प्लवंगम रचना थई तेम सवैयामांथी एवो कोई जातिछंद निष्पन्न थयो नथी. पण बत्रीस मात्रानां पदोमां ए गालगा वारंवार आवे छे, जेनो दाखलो आपणे आगळ जोई गया.

सद्गुरु शरणवि नाव ज्ञानति मिरटळ शे͜न हीं– रे–

अंते आवतो गालगा 'शेनहीं' ए प्लुति साथे गणतां अष्टकल छे.

अर्वाचीन समयमां केटलीक नवी रचनाओ आपणे अन्य साहित्यमांथी अपनावी छे तेमांनी जे चतुष्कल रचनाओ होय तेनो पण अहीं उल्लेख करवो जोईए. आ रचनाओमां पहेली अंजनी गीत छे. ए गीत छे ए

लंवुत्वम्।" अभिप्राय एवो छे के छन्दने खातर पदान्तने लघु के गुरु लई शकाय छे ए विकल्प प्रमाणे श्लोकमां आवता तुलितं शब्दनो अंत्याक्षर लघु गणवो. पण तुलितं शब्द पादान्ते छे एम कोई रीते गणी शकाय एम नथी अने एम गणतां पण वैतालीय थतो नथी. एटले हुं आने टीकाकारनी गेरसमझ मानुं छुं. अने में उपर बताव्युं तेम आ रचना बराबर आर्या-वैतालीयमां बेसी जाय छे एटले एने मिश्ररचना मानवी जोईए. छतां आ मिश्ररचनाना बीजा दाखला मने मळ्या नथी, एटले आनो टीपमां उल्लेख करुं छुं. कोई पिंगले आ रचना मान्य करी होय एम मारा जाणवामां नथी. पण मने आ रचना सुन्दर जणाई छे. अने आनुं हुं कहुं छुं ते ज मिश्र स्वरूप होय तो आपणा कविओने मिश्ररचनाना केवा विविध प्रयोगो कर्या छे ते जोई आश्चर्य थया विना रहेवो नहीं।

तरीके तेनी पदोमां गणना थाय छतां एनुं माप एक जातिछंदना जेवुं ज सुघड छे एटले अहीं तेनो उल्लेख आवश्यक गणुं छुं. अंजनी गीत सौथी पहेलुं कान्ते लख्युं गणाय छे, पण बीजा केटलाक छंदोमां तेम आमां पण, एमना मित्र राजाराम रामशंकर तेमना पुरोगामी नीकळे छे. एमना 'नागानन्द'ना गुजराती भाषान्तरमां पृ. ४३मे एक अंजनी गीत छे पण एमां प्रास मेळव्यो नथी एटले ए हृद्य जणातुं नथी. एटले कान्तनुं ज अंजनी गीत दृष्टान्त तरीके उतारुं छुं:

विप्रयोग

(अंजनी गीत)

आकाशे एनी ए तारा:
एनी ए ज्योत्स्नानी धारा:
तरुण निशा एनी ए: दारा —
क्यां छे एनी ए?

पूर्वालाप, (आवृत्ति ३), पृ. ५५

पहेली त्रण पंक्तिओ सोळ सोळ मात्रानी एक ज प्रासथी सांधेली छे. एमां चार चतुष्कल संधिओ आवे छे. एने चरणाकुळनी त्रण पंक्तिओ कही शकाय. त्रणेय पंक्तिमां अंत्य चतुष्कल गागा छे. चोथी पंक्ति टूंकी छे, दस मात्रानी छे, उपरना प्रासथी विखूटी छे, अने ए चरणाकुळनी अंत्य छ मात्राओ खंडित थईने बनेली छे. अर्थात् एनो अंत्य गुरु आठ मात्रा जेटला काल सुधी लंबाववानो छे. आनी खास खूबी तो ए छे के त्रीजी पंक्ति प्रासथी आगली बे साथे संधायेली छे, छतां अर्थमां अने पठनमां ए चोथी साथे वधारे गाढ रीते संधायेली छे. एम बताववा पठनमां त्रीजी पंक्ति आगळ — आवुं चिन्ह पण करेलुं छे. त्रीजी पंक्ति प्रासथी पहेली बे साथे संधायेली अने अर्थ अने पठनथी चोथी साथे संधायेली होवाथी एक सुन्दर भंगीनो अनुभव थाय छे. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

अंजनी: दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा गागा
दादा दादा गा – – –

एक बीजा गीतमां कान्ते आ रचनामां जरा फेर करेलो छे.

વ્હાલાંઓને પ્રાર્થના

રોનારું ભીતરમાં રોતું,
લ્હોનારું ભીતર ના લ્હોતું:
દૂર સખાનું હૈયું
સાથે રોતું ને જોતું
વ્હાલાંઓ વ્હાલાંને ક્હેજો!
સાગરમાં તો સાથે વ્હેજો;
સ્હેવાનાં એકાબીજાનાં
સાથે સૌ સ્હેજો.

આ ગીતમાં મૂળ ફરક તો પ્રાસ રચનાનો છે. પણ તેની ચર્ચા પહેલાં એક લેખનમુદ્રણપદ્ધતિનો ફરક જોઈ લેવો જોઈએ. 'વ્હાલાંઓને૦' કાવ્યના પહેલા છંદમાં ત્રીજી ચોથી પંક્તિ ભેગી બાંચતાં તે ઉત્થાપનિકા પ્રમાણે થઈ રહે છે, પણ તેમાં ત્રીજીમાં ત્રણ ચતુષ્કલો છે એટલે એક ચતુષ્કલ ઓછો છે અને તે નીચેની પંક્તિમાં છપાયો છે. બીજો છંદ ઉત્થાપનિકા પ્રમાણે જ છે. એ સંબંધી છંદની દૃષ્ટિએ મારે કંઈ કહેવાનું નથી. પહેલા છંદમાં કદાચ અર્થની દૃષ્ટિએ કવિએ એટલો ફેરફાર કર્યો હશે. મુખ્ય કહેવાનું છે તે પ્રાસ વિશે છે. અહીં ત્રીજી પંક્તિ પ્રાસ-યોજનાથી વિછૂટી પડી જાય છે, અને ચોથી પ્રાસયોજનામાં સામીલ થાય છે. પણ એમ થવાથી એક બીજો ફેરફાર થાય છે. ત્રીજી ચોથી ભેળી બોલાઈ એક છવ્વીસા સવૈયાની સળંગ પંક્તિ બની જાય છે. એને ખરી રીતે હવે ત્રણ પંક્તિનું કાવ્ય કહેવું જોઈએ જેમાં ત્રીજી પંક્તિ વધારે લાંબી છે: આ રીતે

દાદા દાદા દાદા ગાગા
દાદા દાદા દાદા ગાગા
દાદા દાદા દાદા ગાગા દાદા દાદાગા – – –

મને પોતાને અંગનીની મૂળ પ્રાસયોજના જ વધારે સુન્દર લાગે છે.

અહીં સર્વત્ર પ્રાસનિષ્ઠ સંધિ આપણે ગાગા જોયો છે, પણ ક્યાંક દાગા પણ ચાલે ક્યાંક દાદા પણ ચાલે. એનાં દૃષ્ટાન્તો પ્રો. ઠાકોરનાં કાવ્યોમાંથી મળી રહે છે:

રામેશ્વર એડીએ ચળકે:
પુરી દ્વારિકા કાશી ઝળકે:
મા ત્હારી બાળીની ઠળકે જય જય મા મ્હારી!

सप्तशूल पंजाब एक कर:
परशू अरवल्ली बीजे कर:
तेग लटकती सॅह्याद्रि कटि पर: जय जय मा म्हारी!
'माजीनुं स्तोत्र', भणकार, पृ. २१२

प्रो. ठाकोरे आ रचनामां बीजा पण केटलाक फेरफार कर्या छे. पहेलां तेनुं दृष्टान्त लउं.

अ. सौ. नर्मदा भट्ट

संभाळे र्‌हेती'ती न्हानी,
जानैया आव्या स्हेलाणी,
एके भुरकी नाखी छानी —केवी, नानी?
भणकार, पृ. ९७

प्रासरचना आगळ जोई गया ते ज अंजनीनो विशिष्ट छे ते ज छे. फरक मात्र चोथा चरणमां थयो छे—ते चोथा चरणनी बे मात्राओ कापवानो. तेना पठननी प्लुतिनी व्यवस्था ध्यानमां राखवा जेवी छे. ए प्लुतिनी मात्राओ दर्शावतां नीचे प्रमाणे बने छे:

दादा —गा गा— — —
केवी —न्हा नी— — —
क्यां छे एनी ए — — —

जूनी अने नवी पंक्ति अने तेनां प्लुतिस्थानो सरखाववाथी फरक ध्यानमां आवशे. आ फरकमां रचना पोतानुं जूनुं सौंदर्य कंईक पण खूए छे एम हुं मानुं छुं. एमनी एक बीजी रचना पण जोईए:

कोकिल विलाप

कोकिल टहुक्यो उच्च घटामां,
टहुकत उतर्यो अंक छटामां,
ज्यां तडकाशीळा हिंडोळे हींचूं हूं कोडे.
भणकार, पृ. १०१

अहीं फेर मात्र एटलो छे के पहेलां बे पंक्तिमां एक प्रास छे, अने चोथी टूंकी छतां त्रीजा चोथामां एक बीजो प्रास छे. आखा काव्यमां प्रासनी आ एक ज रीत राखी नथी पण ते बधा प्रयोगो जोवानी जरूर नथी. आ प्रमाणे आ रचना गुजरातीमां अनेक रीते विकसी छे.

परिशिष्ट १

प्लवंगम-पठन विशेना अन्य मतोनी चर्चा

Language and Literature Vol. II p. 286 7 उपर नरसिंहराव देशो अने पदनी चर्चा करे छे, अने तेनां देशोमां पण कालनुं मात्रामाप होवुं जोईए एम साबीत करवा दाखला आपे छे. तेमां तेओ प्लवंगमनो दाखलो आपे छे: "(b) Take the following line of the regular metre known as प्लवगम:—

छत्रे थाती छांय छडीधर छाजता

and the following line of garabi of the type of आसो मासो सरदपुन्यमनी रात्य जा:

हा! दैव! शुं विपरीत दूखड़ुं दीधलुं?

You can read one and the other in convertible forms, the underlying metric formation being one and the same; the difference consisting in the chanting of them and the shifting of the यति; thus in प्लवगम the यति is after the eleventh mâtrâ while the garabi is a non-stop line altogether. Read the garabi line with the caesura after त in विपरीत and the ड़ turned into a three mâtrâ प्लुत and it will be प्लवंगम; or read and chant the प्लवंगम line without the caesura after य in छाय and without lengthening the र in छडीधर into a प्लुत and it will be the garabi of the type stated.

[Note : I would not insist on the प्लुत in the प्लवंगम metre; for it is possible to read it as one matra syllable and yet secure the rhythm. The प्लुत variation is but an ornamental element in chanting.]"

नरसिंहराव प्लवंगम अने प्लवंगमनो गरबो बन्नेना बंधनी अभिन्नता स्वीकारे छे. छतां बन्नेनो भेद पण करे छे. ए भेद एक तरफथी प्लवंगममां

११ मी मात्राए यति छे, गरबीमां यति नथी एनो गणावे छे. तेओ कहे छे के प्लवंगम सयतिक छे, गरबीनुं पठन सतत अविरत छे. पण अहीं खरी वात ए छे के प्लवंगमनुं पण पठन तो सतत ज छे, कारण के यतिस्थाने आपणे विराम के विलंबन करी शकता नथी. ए यतिवाळु चतुष्कल बीजां चतुष्कलो जेवुं चार मात्रानुं ज रहे छे. बीजुं, ए प्लवंगम अने गरबीना पठनगानना एक एवो भेद करे छे के प्लवंगममां 'छडीधर' शब्दनो 'र' प्लुत थाय छे. गरबीमां एम थतुं नथी. हवे 'र' प्लुत थतो होय तो केटली मात्रानो प्लुत थाय छे ए पण नक्की थवुं जोईए. प्लुतनी मात्राओ न आपी होय त्यारे ए साधारण रीते त्रण मात्रानो गणाय. 'र' ए प्रमाणे त्रण मात्रानो बनतां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

छत्रे थाती छांय छडीधर ⌣ ⌣ छाजता

प्लुतिनी मात्रा साथे गणतां कुल २३ मात्रा थाय. हवे एओ ज 'हा दैव'नी पंक्तिमां ए रीते 'दूखडुं'ना 'डुं'ने प्लुत करवाथी उपर प्रमाणे पठनमात्राओ थई रहेशे एम कहे छे. करी जोईए. मूळ पंक्ति नीचे प्रमाणे छे:

हा दैव शुं विपरीत दूखडुं दीधलुं

आमां हादै, वशुंविप, रीत दूखडूं, दीधलुं. ए प्रमाणे मात्रागणो छे. पहेला बे चच्चार मात्राना, 'रीत दूखडूं' ए आठ मात्रानो, अने 'दीधलुं' पांच मात्रानो. ए रीते एमां कुल २१ मात्रा थई रहे छे. एमां 'डूं' गुरु छे तेने प्लुत करवाथी एक मात्रा वधे छे. तो कुल २२ मात्रा थाय. एटले बन्ने पंक्तिओ सरखी थती नथी. खरुं तो नरसिंहरावे पोताना सिद्धान्तना समर्थन माटे आखी पंक्तिनुं मात्रामाप आपवुं जोईतुं हतुं. अने प्लुतिनी मात्रासंख्या पण आपवी जोईती हती. 'छडीधर'ना 'र'नी त्रण मात्रा कही तो ते साथे 'दूखडूं'-ना 'डूं'नी पण केटली मात्रा ते कहेवी जोईती हती. वळी प्लवंगममां प्लुति मूकवी होय तो मुकाय न मूकवी होय तो पण पठन बराबर चाले ए नोंध तो एमना मूळ सिद्धान्तने विघातक छे. एम प्लुति विकल्पे नाखी शकाती होय तो मात्रामाप छेवटे असिद्ध रहे. आ बधा विसंवादनो खुलासो में आ प्रकरणमां कह्युं ए रीते ज थई शके छे के प्लवंगम ए मूळ रोळानी ज प्लुतिबद्ध रचना छे. अने प्लुतिनी मात्राओ मूकवानी भिन्नभिन्न पद्धतिथी भिन्नभिन्न रचनाओ अने पठनो थाय छे. आभाणक अने प्लवंगम ए मात्राखंडनना भिन्न व्यापारथी थयेल छे अने ए बन्ने पद्धति छोडी प्लुति चार चतुष्कलो पछी नांखवी होय तो ते त्रण विशेष मात्रानी ज जोईए. आ प्रमाणे

छत्रे, याती; छांय छ, डीधर; ⏑⏑⏑ छाजता;
हा दै, वशुंविप; रीत दूखडूं; ⏑⏑⏑ दीधलुं;

साथे साथे प्लवंगम विशेनो बवॅनो मत जोईए. तेओ कहे छे: "हवे इतिहास उपरथी आ विशे विचार करीए तो प्लवंगमनी उत्पत्ति दोहरामांथी थयेली होय एम चोक्कसपणे जणाय छे, ते एवी रीते के 'दुहानुं बीजुं चरण ते प्लवंगमनो प्रथम यतिवाळो खंड छे. अने दुहाना पहेला चरणमांनी आरंभनी त्रण मात्रा ओछी करी, जोर अने संधिनी व्यवस्था मूळ प्रमाणे राखवाथी प्लवंगमनो बीजा यतिवाळो खंड बने छे.'" (गायनवादन पाठमाळा पु. १ वि. ३. पृ. ६२) बवॅए आपेलुं अवतरण के. ह. ध्रुवनुं छे (सा. वि. भा. २. पृ. २९७) पण ध्रुवे ए मत ठेठ सुधी राख्यो के केम ए जाणवा साधन नथी. प. ऐ. आ. पृ. ३७·ए प्लवंगमनुं निरूपण आवे छे, त्यां उपरना मतनो अनुवाद थयो नथी, एटले ए मत एमणे छोडी दीधो होय. ए स्थितिमां आपणे एने बवॅनो मत ज मानीए. बवॅनुं कहेवुं न्यासथी प्रथम स्पष्ट करीए.

| | | | |
दादा दादा दाल लदादा दालगा ए प्लवंगमनो बवॅनो न्यास छे. अलबत्त प्लवंगममां यति सुधीमां दादा दादा दाल आवे छे अने ते दूहानो उत्तर यति-खंड देखाय छे, पण ते आकस्मिक ज छे. दूहामां गाल छे पण ए गाल चतुष्कल छे, अने तेनी पछी एक आखुं चतुष्कल अनक्षर छे. बवॅ पोते पण दोहराना स्वरांकनमां गा त्रण मात्रानो अने ल चार मात्रानो आपे छे (गा. वा. पा. पु. १, वि ३. पृ. ८०) ज्यारे प्लवंगममां तो दाल'ल ए चतुष्कल-परंपरानी एक कडी छे अने तेनी पछी पाछुं लगोलग दादा आवे छे. एटले गाल आगळ रचनानो कोई स्वाभाविक अवयव पडतो नथी. अने तेनो स्वतंत्र अवयव तरीके विचार करवो अप्रामाणिक छे. के. ह. ध्रुवे अनावृत्तसंधि वृत्तोनी यति, अने जातिछंदोनी यतिनो मूळ स्वरूपभेद न जोयो तेनुं आ एक परिणाम छे.

११

त्रिकल, पंचकल, सप्तकल जातिओनो मेळ

जातिरचनामां आवर्तित थतो त्रिकल संधि संगीतना दादरा तालमांथी निष्पन्न थाय छे. बर्वे दादरा तालनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे:

दादरो: १ २ ३ ४ ५ ६
÷ ०

आनुं अर्ध त्रण मात्राए थाय तेमां प्रथम मात्रा उपर ताल पडे छे. दरेक मात्राने अक्षरथी पूरतां आ संधिने आपणे दालनुं रूप आपी शकीए. त्रण मात्रानो ललल संधि पण छे. पण गुरु अक्षर भारे होई ए स्वाभाविक रीते बधारे तालक्षम छे तेथी त्रिकल बीज साधारण रीते दाल एवा रूपथी निर्देशाय छे. त्रिकल संधिनो एक पर्याय लगा थाय अने ए रूप आपणे दालमांथी निष्पन्न करी शकता नथी, जेम लगाल रूप दादामांथी निष्पन्न करी शकता नहोता तेम. चतुष्कलनी पद्धतिए, दालना त्रणेय पर्यायो माटे आपणे दल्ल एवी संज्ञा करी शकीए, पण एम करवानी जरूर नथी कारण के लगानुं लगाल जेवुं महत्त्व नथी. एटले सामान्य रीते आपणे दाल संज्ञाथी ज चलावी लईशुं.

आ संधिना छंदो गुजरातीमां बहु ओछा वपराय छे. दलपतराम छ मात्राना चरणनो वाम छंद आपे छे, ते तो मात्र एक कौतुकरूप छे. एनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

वाम: दाल दाल

ए पछी हीर आवे छे ते महत्त्वनो छे. आठमा प्रकरणमां आपणे एनुं लक्षण जोयुं छे (जुओ गत पृ. ३२३), अने संधिओना प्रवाहनी दृष्टिए ते नीचे प्रमाणे मूकी शकाय:

हीर: गाल दाल' दाल दाल' दाल दाल' गाल गा

आ छंदमां पंक्ति दर्शाववा अंत्य संधिओने लगात्मक रूप मळेलुं होवा उपरांत आद्य संधिने पण लगात्मक रूप मळेलुं छे. अंत्य संधिनी एक मात्रा खंडित थयेली छे, जेने गणतरीमां लेतां संधिनां कुल आठ आवर्तनो थाय छे, अर्थात्

बेकी आवर्तनो थई रहे छे. यति छ छ मात्राए एटले दादराना एक एक ताले मूकी छे, ते, अलबत्त, एक भंगी छे, छंदनुं अंग नथी.

आ पछी आठमा प्रकरणना क्रमे हुं महीदीप लउं छुं, अने तेनुं लक्षण फरीथी उतारुं छुं:

१७. महीदीप छंद — मात्रा २२, ताल ४

वाविश कळ सकळ अंत, जुगल दीर्घ दीजे,
बार कळ उपर विराम, महीदीप कीजे;
प्रथम उपर खट खट पर, ताल सरस तेमां,
सुणतां पद सरस दिसे जुक्ति सरस जेमां. ९५

द. पिं. पृ. १५

पठन करतां आमां पण त्रिकल संधिनां आवर्तनो जणाशे. पण दलपतरामे एनो ताल पहेली मात्रा पछी छ छ मात्राए नांख्यो छे, एटले आपणी परिभाषामां एने षट्कल संधिनां आवर्तनो कहेवां पडे. आम करवानुं कारण उपरनी पंक्तिओमां 'सुणतां पद' ए स्थाने त्रिकल संधिओ जुदा पडता नथी ए छे. अहीं त्रीजी चोथी मात्राओ 'तां' अक्षरमां भेगी थई गई छे. आने चतुष्कल रचनाना लदागालदा अने दालगालदा ए बे द्वैतीयीक संधिओ साथे सरखावी शकाय. आ द्वैतीयीक संधिओ, एक संधिनो अंत्य लघु बीजा संधिना आद्य लघु साथे जोडाई जई एक गुरु थवाथी थया हता तेम ज अहीं त्रिकल संधिओमां पण एक संधिनो अंत्य लघु, बीजा संधिना आद्य लघु साथे मळवाथी आ षट्कल संधि निष्पन्न थयो छे. गाल के ललल साथे लगा के ललल मळवाथी ए थाय. ए रीते त्रिकलोमां ४ द्वैतीयीक संधिओ थाय: गागागा, गागालल, ललगागा, ललगालल. उपर आपेल 'सुणतां पद' ए ललगालल संधि छे. आ बधा संधिओ त्रिकल जातिओमां द्वैतीयीक संधिओ तरीके आवी शके छे. अहीं, चतुष्कलोमां $\frac{\text{लदा}}{\text{दाल}}$गागाल हतो तेवो कोई निषिद्ध संधि नथी. अर्थात् त्रिकल रचनामां दादादाने अवकाश छे. अने तेम छतां कहेवुं जोईए के एक ज पंक्तिमां आ द्वैतीयीकनां एकथी वधारे आवर्तनो शोभतां नथी. आपणे एक एवी पंक्ति दृष्टान्त खातर बनावी जोईए:

युद्धोमां जितनारा पक्षो पण अंते तो
हारेला पक्षोथी अधिकूं सुख ना पेखे.

रचनामां षट्कलनो मेळ प्रतीत थतो नथी. एटले त्रिकल रचनामां आ द्वैतीयीक संधि एक अपवाद रूपे ज आवी शके. पदोमां त्रिकलो अने तेना द्वैती-

बीकोना कलामय संयोगथी अनेक सुन्दर रचनाओ थाय छे ते आपणे आगळ जोईशुं.

आ महीदीप छंदमां लदानां आवर्तनो पण आवे छे ते आपणे उपरना छंदमां 'महीदीप' (लगागाल) शब्दमां जोई शकीए छीए. एथी त्रिकलनां आवर्तनोमां कांई भंगाण पडतुं नथी केम जे दालमां छे तेम ज लदामां पण त्रिकलना ताल माटे प्रथम मात्रा उपलब्ध होय छे. आ उपरथी त्रिकल रचना माटे आपणे दाल बराबर लदा एवुं समीकरण करी शकीए.

आ समीकरण त्रिकल रचनाओ माटे साचुं छे एटलुं ज नहीं पण अन्य रचनाओ माटे पण साचुं छे ए आपणे आगळ जेम जेम प्रसंगो आवता जशे तेम तेम जोईशुं. अत्यार पहेलां आनो एक प्रसंग आवी गयो छे ते अहीं नोंधीए. चतुष्कलना द्वैतीयीक संधिओ, आपणे जोयुं के लदागालदा अने दालगालदा हता अने तेमां पहेली त्रण मात्राओमां लदा अने दाल आवे छे ए उपरना समीकरण प्रमाणे ज छे. अहीं याद राखवुं जोईए के आ समीकरणना बन्ने संधिओमां पहेली मात्राए ताल आवे छे, ए प्रमाणे पहेली मात्राए ताल आवतो होय तो ज ए समीकरण साचुं पडे, कोइ अन्य मात्रा पर ताल आवतो होय त्यारे साचुं पडे नहीं. दाखला तरीके आ द्वैतीयीक संधिमां अंत्य त्रण मात्राओ आवे छे त्यां ए लागु करी शकाय नहीं. कारण के ए त्रण मात्रामां जे गौण ताल छे (जे आपणे चिह्नथी दर्शावता नथी) ते उपान्त्य मात्रा उपर छे, लदागालदा ए प्रमाणे, त्यां उपरनुं समीकरण लगाडवा जईए तो लदागागाल शक्य बने, अने पछी त्यां, आपणे आगळ जोई गया तेम, उपान्त्य मात्रा ढंकाई जाय एटला माटे आपणे महीदीपनी उत्थापनिका दलपतरामथी जुदा पडी नीचे प्रमाणे राखीए:

।   ।   ।   ।   ।   ।   ।
दाल दाल दाल दाल दाल दाल गागा

उपरनी चर्चाथी आपणे प्रथम एम कही शकीए के आ छंद त्रिकलनां आवर्तनोनो छे, अने आपणे दालमां प्रथम मात्राए ताल कह्यो छे ते मुजब अहीं पण मूकवो जोईए. षट्कल क्यांक आवे तो तेने अपवाद तरीके आवतो द्वैतीयीक संधि गणवो. ते उपरांत अहीं जोई शकाशे के आना अंते आवता बे संधिओ खंडित थया छे. तेमां प्लुत मात्रा उमेरतां तेनुं रुप गा‿ गा‿ थाय. अने ए प्रमाणे महीदीपनुं पठन थाय पण छे. पण वधारे रूढ पठनमां बन्ने गुरु बोलाई पछी बे मात्रा प्लुत बोलाय छे. अर्थात् अंत्य गा

चार मात्रानो प्लुत बने छे. बन्ने प्रकारनी प्लुतिओने स्थान आपतां मेळनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

महीदीप { १ दाल दाल दाल दाल दाल दाल गा◡ गा◡
२ दाल दाल दाल दाल दाल दाल गागा —

बीजी पद्धतिए अंते षट्कल आवे ते स्पष्ट छे. दलपतरामे बार मात्राए यति कही छे पण तेने हुं छंदनुं अंग गणतो नथी एटले मूकतो नथी.

आठमा प्रकरणमां त्रिकल जातिछंदोना निरूपणमां में आ बे छंदो पछी दिंडीना स्वरूपनी चर्चा करी हती. अहीं ए तरत हाथमां न लेतां निरूपणनी सरलता खातर प्रथम त्रिकल संधिनां लगात्मक रूपोनुं निरूपण करीश. त्रिकल जातिओनी सरखामणीमां त्रिकलनी लगात्मक रचनाओ वधारे विकास पामेली जणाय छे — छेवट संख्यामां तो वधारे छे ज. 'दलपत पिंगळ'मां आपेली रचनाओमांथी आपणे मुख्य मुख्य जोईए :

समानिका : गाल गाल गाल गा अक्षर ७
दृष्टान्त : रोज गंधदानिका
जो सती समानिका;
द. पि. पृ. ३३

बे पंक्तिओ बस थशे. अहीं गाल अर्थात् जातिसंधि दालनां कुल चार आवर्तनो थयां छे, जेमांना छेल्ला संधिनो अंत्य एक लघु खंडित थयो छे, अने तेथी पंक्तिनो अंत्य गुरु त्रण मात्रानो प्लुत छे. ए रीते त्रिकलनां कुल चार आवर्तनो थई रहे छे. ताल गालनी पहेली मात्रा उपर पडे छे ए स्पष्ट छे. ते पछी प्रमाणिका लईए जेनुं बीजुं नाम नगस्वरूपिणी छे.

नगस्वरूपिणी अथवा प्रमाणिका छंद — अक्षर ८

जरा लगाडि जीवडो,
प्रमाणिकापणूं घडो;
वधे वडाइ विश्वमां
भलूं थशे भविष्यमां. ३३
द. पि. पृ. ३५

आनी उत्थापनिका : लगा लगा लगा लगा

एम थाय, अर्थात् आ लदानुं लगात्मक रूप छे. आमां ताल क्यां आवे? आपणे महीदीप छंदमां एक पंक्तिना प्रारंभमां आवता 'महीदीप' शब्दमां

पहेली मात्रा उपर ताल नांख्यो हतो : लदादाल ए रीते छे. पण दरेक स्थाने ताल क्यां पडे छे ते पठनथी नक्की करवुं जोईए. अहीं ताल स्पष्ट रीते बेकी स्थाने आवता गुरु पर पडे छे. अने तेथी आपणे ताल ए गुरु उपर मूकवो जोईए. ए प्रमाणे उत्थापनिका : लगा लगा लगा लगा एम थशे. अहीं मोतीदामनो दाखलो स्वाभाविक रीते याद आवशे. तेमां दलपतराम जगणनां आवर्तनो निर्देशे छे पण ताल पहेला लघु पछीना गुरु उपर मूके छे, एटले सुधी प्रमाणिकानो दाखलो मोतीदाम जेवो छे, पण तेथी आगळ तेनुं साम्य जतुं नथी. मोतीदाममां निस्ताल लघुने आपणे छूटो करी पछी आदि ताल गालल संधिनां आवर्तनोथी दर्शाव्यो हतो. अहीं एम करवानी जरूर नथी. कारण के अहीं, पठनमां लगानां आवर्तनो संभळाय छे. लने भिन्न करीने गालनां आवर्तनो अवश्य करवां पडतां नथी. एम करवुं होय तो थाय, पण लगानां आवर्तनो थई शकतां होय तो तेने निषेधीने गाल मूकवो ए मने एक निरर्थक प्रक्रिया जणाय छे. अर्थात् सर्वत्र पठनने ज आवा प्रश्नोमां आपणे निर्णायक राखवुं जोईए. अने पठनथी निर्वाह पामती कोई वस्तुनो निषेध करवो न जोईए. अर्थात् बधा संधिओ तालथी ज शरू करवा जोईए एवो नियम करवानी हुं अहीं जरूर जोतो नथी. मोतीदाममां, अने बीजी प्रथम निस्ताल आवता दाबाळी चतुष्कल रचनामां आपणे निस्ताल मात्राओ अलग करीने सन्धिओ शरू करता हता, ते मात्र पठनने वफादार रहेवा ज, निस्ताल मात्राथी संधि शरू न ज करी शकाय एवा कोई सिद्धान्तने लीधे नहीं. आ पछी हुं समानिका–प्रमाणिका जेवुं ज चामर अने नाराचनुं जोडकुं लउं छुं बन्नेनी उत्थापनिका पासे पासे मूकुं छुं :

चामर : गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा

नाराच : लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा

चामरमां गालनां सात आवर्तनो पछी एक गा आवे छे, जे गालनुं खंडित रूप छे. नाराचमां लगानां कुल आठ आवर्तनो आवे छे. एक ज लगात्मक संधिनां आवर्तनोवाळा छन्दोमां उपरना ज सौथी वधारे वपराय छे. तेनाथी घणा ओछा वपराशवाळो छन्द सेनिका जोता जईए.

सेनिका : गाल गाल गाल गाल गाल गा

अहीं छ आवर्तनो छे, छेल्ला संधिनी एक मात्रा समानिका-चामर प्रमाणे लुप्त थाय छे. नीचेनुं दृष्टान्त सेनिकानुं छे. तेना आंतरप्रासनुं वैचित्र्य ध्यान खेंचे एवुं छे:

पत्तिया सणाहगेहरत्तिया
सुत्तिया णिवीलयच्छिवत्तिया।

महापुराण, खंड १, ३, ५. पृ. ४०

आ पछी सारंग लउं छुं:

३५ सारंग छंद — अक्षर ९

नय सहिते नित्य रहे,
सउ जन सारंग कहे;
भणि भणिते भक्ति करे,
भवजळ ते तुर्त तरे. ५०

द. पि. पृ. ३७

आ छंद बहु वपरातो नथी. पण तेमां जुदांजुदां लगात्मक रूपोथी त्रिकलनां आवर्तनो थयां छे ए तरीके ए लीधो छे. 'दलपत पिंगळ'मां छापभूलथी के कोई कारणथी ताल बराबर जणातो नथी ते सुधारीने हुं मूकुं छुं:

| | | |
सारंग: ललल लगा गाल लगा

आ पछी एक वार तो बहु ज लोकप्रिय थयेलो ललित छंद हुं लउं छुं:

५७ ललित छंद — अक्षर ११

| | |, | | |
नर रळी गणं' न्याल हु थयो,
ललित लक्षणे ' ज्ञानमां गयो;
जन जगत्पती ' जो न ते भजे,
न सुख संपती' स्वर्गनी सजे. १०१

द. पि. पृ. ४२

आ छंदनी पादटीपमां लखेलुं छे के 'ललितमां छठ्ठा अक्षर पछी यति आवश्यक छे.'

मेळनी दृष्टिए जोतां आमां स्पष्ट रीते त्रिकलनां जुदां जुदां लगात्मक रूपोथी त्रिकलनुं आवर्तन थयेलुं जणाशे. छंदनुं लगात्मक रूप आपी तेमां संधिनो अंत अल्पविराम मूकी दर्शावतां न्यास नीचे प्रमाणे थशे:

| | |, | | |
ललल, गाल, गा ' गाल, गाल, गा

दरेक यतिखंडमां त्रिकलनां बे आवर्तनो पछी एक गुरु आवे छे. यतिखंडनो अंत्य संधि घणी वार पंक्तिना अंत्यसंधिनी पेठे खंडित थाय छे, ए ध्यानमां आवतां तरत समजाशे के, यतिखंडने अंते आवतो गा ए गालनुं खंडित रूप छे. ए रीते जोतां प्लुतिनी मात्रा उमेरतां आनी जातिछंद तरीकेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे दर्शावी शकाय.

दाल दाल दा⌣ दाल दाल दा⌣

एम करतां पंक्तिमां बेकी आवर्तनो थई रहे छे, एटले आ जातिछंद स्पष्ट रीते त्रिकलनां आवर्तनोनो बनी रहे छे. अने पठन संवादी बनी रहे छे. पण सामान्य रीते ललित छंद आ रीते गवातो नथी. ए उपरनी रीत करतां वधारे प्रलंबित रीते गवाय छे, अने त्यारे तेनी प्लुति लंबाई दरेक खंड त्रिकलनां चच्चार आवर्तनोनो बने छे. नीचे प्रमाणे :

दाल दाल दा⌣ — ⌣' दाल दाल — ⌣

आ रीते प्लुति लांबी टूंकी करीने आ छंद बे रीते गाई शकाय छे. लांबी अने रूढ परंपरा बीजी रीतनी छे. आ बीजी रीतमां यतिखंडने अंते आवतो गुरु छकल बने छे, संगीतनुं आखुं षट्कल ए गुरु पूरे छे. आ बन्ने मतने बर्वेनो संपूर्ण टेको छे. अलबत्त प्राचीन परंपरा प्रमाणे बर्वे आने अक्षरमेळ वृत्तोमां स्थान आपे छे :

"११ ललित

इतर नाम भाविनी, कनकमंजरी, भामिनी, इन्दिरा, शुद्ध कामदा, विबुधवंदिता, राजहंसी

छंद – त्रिष्टुभ. ६६४मुं वृत्त अक्षर ११ (गायनमां मात्रा १६)

माप न र र ल ग उदा० — ललित थाय छे, नाररा लगे
III SIS SIS I S

६ अने ५ अक्षरे यति. आवा वृत्तनी १६ मात्रा थाय छे खरी, पण तेना चार चार मात्राना पृथक् पृथक् खंडको नहीं पडवाथी ६ठ्ठो अने ११मो अक्षर त्रण मात्रा सुधी लंबावी, त्रण त्रण मात्राना छूटा छूटा खंडको पाडी जलद दादरा तालमां गाई शकाय अथवा तो (विलंब) दादरामां गाई शकाय ते माटे ६ठ्ठो अने ११मो अक्षर ६ मात्रा सुधी लंबावी गावामां आवे छे."

गा. वा. पा. पु. १, वि. ३, छंदोगीतविनोद. पृ. १३

बर्वेए इन्दिरा नाम आप्युं छे ते 'भागवत'मां आवतुं गोपिकागीत आ छंदमां छे अने तेमां इन्दिरा शब्द आवे छे ते उपरथी पडेलुं छे:

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रज।
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि। वगेरे.

आनुं ललित नाम नर्मदे पाडेल छे (नर्मकविता पृ. ९).

आ संदर्भमां आपणे कामदा फरी जोई जईए. चतुष्कल रचनाने अंगे ते आपणे जोयुं हतुं. तेनी उत्थापनिका

कामदा: गालगालगा गालगालगा

एवी आपणे त्यां करी हती अने त्यां द्वैतीयीक संधि गालगालगानां बे आवर्तनवाळो आ छन्द गण्यो हतो. पण आ छंद बीजी दृष्टिए जोतां ललितने बहु ज मळतो छे अने तेनी ललित प्रमाणे उत्थापनिका करतां ते त्रिकल रचना बनी शके:

कामदा: गाल गाल गा⌣ गाल गाल गा⌣

अर्थात् तेने त्रिकलना मेळमां लेतां तेना पांचमा अने दसमा स्थानना गुरुने त्रण मात्रानो के विलंबित रीते लेतां

कामदा: गाल गाल गा⌣ — ⌣ गाल गाल गा⌣ — ⌣

एम छ मात्रानो प्लुत करवो जोईए. आटली लांबी प्लुति तो ज थई शके— शोभी शके, जो कामदामां ए स्थाने ललितनी पेठे यति होय. कामदा गुजरातीमां वपरायुं नथी. ए मराठीमां वपराय छे अने 'छन्दोरचना'मां आपेला तेना मापमां यति छे अने तेणे आपेला दृष्टान्तमां पण यति छे:

कृष्ण वस्त्र हें ' भयद घेउनी
अखिल विश्वही ' त्यांत झाकुनी
रमणि संगमा ' हृदयिं उत्सुक
जाय वटमां ' – कुमुदनायक.

छन्दोरचना, पृ. ४०९

पण आ दृष्टान्त, पटवर्धन कहे छे तेम शुद्ध लगात्मक नथी (एजन पृ १८२ ७१०मा छन्द उपरनी टीप), जात्यात्मक छे. बर्वे तेने लगात्मक गणे छे अने तेमां पांचमे अक्षरे यति माने छे. ते कहे छे: "(आ छन्द) ४, ६ के १६ मात्राना कोई पण तालमां गवाशे. आम छे तोपण ३ के ६ मात्राना

कलद दादरा के दादरामां गावानो प्रचार विशेष छे; ने ए तालोमां गाती वखते ५मो अने १०मो अक्षर ६ मात्रा सुधी लंबावीने बोलवामां आवे छे."

गा. वा. पा. पु. १, वि. ३, छंदोगीतविनोद, पृ. ७

आथी विशेष त्रिकलनी कोई लगात्मक रचनाओ जोवी हुं आवश्यक मानतो नथी. त्रिकलनी लगात्मक रचनाओ जोतां एक वात जणाशे के तेना जातिछंदोमां लदा ओछुं वपराय छे, पण तेनी लगात्मक रचनाओमां लगानां आवर्तनो ठीक ठीक आवे छे.

हवे हुं दिंडी लउं छुं. आठमा प्रकरणमां (गत पृ. ३२५) के. ह. ध्रुवनो उपन्यास में नीचे प्रमाणे दर्शाव्यो हतो :

दाल दाल दाल दाल दाल गागा

अने एनी अपूर्णता विशेना मारा तर्को दर्शाव्या हता. अहीं हवे हुं एना मेळनी चर्चा हाथमां लउं छुं.

आ उत्थापनिका अनेक दृष्टिए अपूर्ण छे. दिंडी मूळ मराठी साहित्यनो छंद छे अने सद्गत नरसिंहराव कहे छे के मराठी नमूना उपरथी भोळानाथ साराभाईए एने गुजरातीमां उतारी.[१] उपर जे उत्थापनिका आपी ते प्रमाणे ज भोळानाथ अने बीजा केटलाक गुजराती कविओए दिंडीओ लखी छे. पण ते मराठी मूळ दिंडीथी केटलीक रीते भिन्न छे. अने ए भिन्नता पिंगळनी दृष्टिए जाणवा जेवी छे. आ भिन्नता नरसिंहराव पोते स्वीकारे छे. तेओ कहे छे :

"दिंडीनुं माप नीचे प्रमाणे छे :—

गोडबोलेकृत 'वृत्तदर्पण'मां कह्युं छे :— चरण चार; अंत्य यमक, बब्बे चरणमां अथवा चारेमां सरखो; मात्रानो नियम (वर्णनो नथी); चरणमां १९ मात्रा; नवमी मात्राए यति; प्रथम विभागमां पहेलो त्रण मात्रानो गण (गाल, लगा; अथवा ललल); पछी त्रण गुरु अथवा ६ लघु; अथवा लघु गुरु मळीने ६ मात्रानो गण; बीजा विभागमां, ३ मात्रानो गण, पछी ३ मात्रानो गण, ते पछी बे गुरु.

१. I once thought and still think that dindi (as also abhanga) was first introduced into Gujarati poetry by Bholanath Sarabhai (who wrote his dindis, deliberately on the Marathi model sometime before A.D. 1880). Gujarati Language and Literature Vol II p 267.

वस्तुतः नीचे प्रमाणे स्वरूप छे:—

(I) दाल दाल दाल दाल दाल गा. . . गा

अथवा (II) दाल दादा दादाल दाल गा—गा

अने बन्ने विकल्पमां छेवटना गुरु ते अनुक्रमे छ अने त्रण मात्राना प्लुत छे—तेथी गा. . .गा ने बदले पा. . .पा. . मूकाय.

अर्थात्, नीचे प्रमाणे दिंडीनुं स्वरूप बे विकल्पोमां दर्शावाय:—

दाल दाल दाल दाल दाल गा गा

अथवा दाल दादा दादाल दाल गा गा

(तालस्थान ऊर्ध्वरेखा (।)थी दर्शाव्यां छे.)
पेटा ताल ० संज्ञाथी दर्शाव्या छे. दिंडीनी गेयता विचारतां, वस्तुतः छेवटना बे गुरु ते प्लुत छे, प्रथमनो छ मात्रानो, बीजो त्रण मात्रानो तेथी गा गाने बदले पा६ पा३ एम मूकाय, तो पूर्ण स्वरूप प्रतिबिंबित थाय.

तालव्यवस्था:—४थी, १०मी, १६मी अने २२मी मात्राओ उपर ताल आवे छे (मुख्य ताल); अने १ली, ७मी, १३मी अने १९मी उपर पेटाताल.

(प्लुतदर्शन स्वीकारीने ज तालस्थान ने पेटातालस्थान २२मी अने २१मी मात्राए बताव्यां छे.)

वस्तुतः I वाळो विकल्प II वाळामां अंतर्भाव पामे छे. परंतु पेटातालना दर्शन माटे बे विकल्पो जुदा मूक्या छे. उदा. I विकल्पमां ७मी मात्रा (पेटातालवाळी) त्रीजो दानी प्रथम मात्राए स्पष्ट छे, पण विकल्पमां ए ज ७मी मात्रा दानी बीजी मात्रा स्थाने होई पेटाताल झीले छे. अर्थात् बीजी मात्राउपर पेटाताल होय ते II मां निगूढ कोई स्थळे होय ते I मां प्रथम मात्रानुं स्थान लई प्रगट रहे छे.

नोंध:—गोडबोलेना 'वृत्तदर्पण'मांथी उतारो आप्यो छे ते पछीनो भाग में फलित सिद्धान्त (corollary) रूपे विस्तारथी मूक्यो छे."

बुद्धचरित (आवृत्ति १९४७) पृ. ११९–१२१

अहीं दिंडीना स्वरूप विशे नरसिंहरावे जे कंई कह्युं छे ते साथे हुं सामान्य रीते सहमत छुं. जो के पेटातालस्थान २१मीने बदले १९मीओ कहेवुं जोइए. तेम ज उपर प्रधानगौण तालना दंड अने मींडां करेलां छे

तेमां पण मने मुद्रणदोष जणाय छे. पण ते विषे विशेष लखवानी जरूर नथी, कारण के नीचे में जे स्फुट बद्ध उत्थापनिका आपी छे ते ज तेमने उद्दिष्ट छे तेम हुं मानुं छुं अहीं मात्र एक बे बाबत मारे स्पष्ट करवी जोईए. हुं संगीतना गौणतालने जातिछंदनी चर्चामां खास कारण विना लाववा मागतो नथी. एटले दिंडीना स्वरूपमां हुं एवो निर्देश न करुं. बीजुं, हुं जातिओमां यतिने आगन्तुक मानुं छुं एटले ९मी मात्राए दर्शावेल यतिने हुं छंदनुं अंग न मानुं. अने एम करवाने मने मराठी दिंडीओनुं ज समर्थन छे. पटवर्धन 'छन्दोरचना'मां दिंडीनां दृष्टान्तो आपे छे तेमां सर्वत्र यति नथी. हुं तेमांथी पहेलां बे दृष्टान्तो उतारुं छुं.

(१) घोष ऐका 'ग्यानबा तुकाराम'!
राउळाची ही वाट सुखाराम!
गूढ भक्तीचो दाखवीत लीला।
पहा दिण्डी चालली पण्ढरीला (२६१)

(२) "मणी पडिला दाढेंत मकरतोण्डीं
सुखें हस्तेंचो काढवेल प्रौढीं;
परी मूर्खाचें चित्त बोधवेना
दर्यों कूर्मीच्या पाळवेल सेना." (तुकाराम पृ. २१५८८)
छन्दोरचना पृ. ४१०[२]

अलबत्त गोडबोलेए आपेला दिंडीमां नवमी मात्राए यति छे, 'छन्दःप्रभाकर' पण यति माने छे (छन्दःप्रभाकर पृ. ५६), पण सिद्धान्त जोतां यति आवश्यक नथी अने दृष्टान्त पण एनुं ज समर्थन करे छे एटले आपणे यतिने छन्दना लक्षणमां स्वीकारीशुं नहीं. ए दृष्टिए दिंडीनी प्रधान गौण बन्ने ताळो दर्शावतो उत्थापनिका हुं नीचे प्रमाणे आपुं:

दिंडी: दाँल] दा̍दादा; दा̍ल दाँल; गा̍ – – ; गा̍ ⌣

---

२. पटवर्धन आ छंदने भृङ्गावर्तनी अर्थात् षण्मात्रक संधिनां आवर्तनो वाळो गणे छे. एओ सिद्धान्तथी त्रिकल रचना स्वीकारता नथी, षण्मात्रक ज स्वीकारे छे. अलबत बधी त्रिकल रचनाओनो षण्मात्रक रचनाओमां समावेश करी शकाय, पण तेमां छन्दना स्वरूपनुं पूरेपूरुं विशिष्ट दर्शन थतुं नथी, ए ए योजनानी अपूर्णता छे. तेओ दिंडीनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे दर्शावे छे.

७० दिण्डी ⌣ – / – ⌣ | — — — | ⌣ – / – ⌣ | ⌣ – / – ⌣ | — +

छन्दोरचना पृ. ४०५

अहीं मारे एटलुं उमेरवानुं के अंते आवतुं त्रिकल ते, पछी आवती पंक्तिना त्रिकल साथे जोडाई, एक षट्कल रचे. ए रीते षट्कल तालपरंपरा स्थापित थाय. आ रीते आ, नर्रासहरावे कह्युं छे तेम, संगीतप्रधान रचना छे, अने तेथी ते पदोना वर्गनी छे, पण तेमां मात्राबद्ध संधिओ जातिनी माफक ज सुघड अने सुरेख रीते आवे छे, एटले जातिओमां तेने लई शकाय छे. पदोमां आपणे जोईशुं के घणी त्रिकल अने षट्कल रचनाओमां आ प्रमाणे एक निस्ताल त्रिकल आवी पछी दादराना षट्कलनां आवर्तनो तेमां शरू थाय छे, अने तेथी में उपर अर्धविरामथी दर्शाविल छे तेम षट्कल संधिओ पण अमां दर्शाववा जोईए.

गुजरातीमां आवतां, आ रचनानो एक स्थिर रहेलो षट्कल तूटीने बे त्रिकलोनुं रूप पाम्यो एनुं पिंगलनी दृष्टिए ए महत्त्व छे के एक तालमांथी बे संधिओ निष्पन्न थाय छे तेनो आ स्पष्ट दाखलो छे. अहीं देखातो दादादा गुजरातीमां आवतां दाल दाल बन्यो अने आखी रचना सळंग त्रिकलात्मक बनी. मराठी जाणनार दर्जेए पण ए त्रिकलात्मक रचना ज स्वीकारी छे. तेनुं माप तेओ नीचे प्रमाणे आपे छे.

दाल, दाल दाल; दाल, दाल, गा गा

अने मारां चिह्नानां मूकुं तो नीचे प्रमाणे थाय

लदा / दाल	दादादा	लदा / दाल	लदा / दाल	दागा

अंते बे गुरु जोईए तेने बदले अहीं एक ज गुरु मूकेलो छे ते सरतचूक ज जणाय छे. कारणके पृ. ४०९ उपर दिडोनी चर्चा करे छे त्यां अंते बन्ने गुरु आवश्यक गण्या छे. पण तेमणे प्लुत मात्राओ खोटी रीते दर्शाविली छे. पृ. ३५९ उपर तेओ नीचे प्रमाणे प्लुत मात्राओ मूके छे.

"पहा। दिण्डी चा – । ललो पण्ड – । री ऽऽ ला । ऽऽऽ

छन्दोरचना पृ. ३५९

अवग्रह चिह्न एक प्लुतमात्रा दर्शावे छे. तेमणे अंते आवता बन्ने गुरुने प्लुत गण्या छे खरा पण दरेकनी प्लुति मात्रा होवी जोईए तेटली गणी नथी. उपरनी पंक्तिमां उपान्त्य 'री' छ मात्रानो प्लुत बने छे, अने आखा षट्कलमां ते एक ज अक्षरनो विन्यास होवो जोईए, अने अंत्य 'ला' त्रण मात्रानो प्लुत होवो जोईए, अने तेने पछीना गणमां स्थान मळवुं जोईए. मने स्मरण छे के तेमनी आ सरतचूक महाराष्ट्रीय टीकाकारोए क्यांक बतावी छे.

बर्वे ताल अक्षर नीचे आडो लीटोथी बतावे छे, ते में पण कायम राखेल छे. आ उपर तेओ लखे छे:

"आमां प्रथमनी ३ मात्रा मूकी चोथी मात्राथी मांडी छ छ मात्राए ताल आपी दादरा तालमां गवाय छे; ए ताल गाती वखते उपान्त्य गुरुने कुल ६ मात्रा सुधी लंबाववामां आवे छे, ने छेल्ला गुरुने त्रण मात्रा सुधी लंबावी तेनी साथे आरंभनी त्रण मात्राओ लई तालनो गाळो पूरो कराय छे."

गा. वा. पा. पु. १. वि. २, छंदोगीतविनोद पृ. ९७

गुजरातीमां दिंडीओ सळंग त्रिकलात्मक बनी पण, कान्ते, तेमना घणी बाबतमां पुरोगामी राजाराम रामशंकरे, अने पछीथी नरसिंहरावे पण, मराठी दिंडीओ लखी छे. प्रथम दाखली राजारामनो लउं:—

न्याय मार्ग में योजि प्रजा सर्व,
सज्जनो कर्या सुखी न मने गर्व.
स्वसादृश्य दीधूं बंधुजनोने में
राज्यपालन पण कर्यूं अति प्रेमे.

नागानन्द नाटकनुं भाषान्तर, पृ. १३

पहेली पंक्तिमां दाल पछी दादादा आवे छे, जो के पछीनीमां दालनां सळंग आवर्तनो आवी जाय छे.

कान्तनी दिंडी शुद्ध मराठी दिंडी छे. तेमां सर्वत्र पहेला दाल पछी दादादा आवे छे.

छत्र जेवा बेठा हता पिताजी,
लग्नग्रंथी अभिनव रसाल ताजी;
जनेताओ रहेतां सचित ज्यारे,
ते अमारा दिवसो वही गया रे.

'रमा,' पूर्वालाप, पृ. ८

अहीं नवमी मात्राए यति पळाई नथी.

हवे पंचकल जातिरचनाओ लईए. आपणे आगळ जोई गया के तेनी मुख्य जातिरचनाओनो संधि दालदा छे. मदनावतार के कामिनीमोहनमां आ संधिनां चार आवर्तनो थाय छे. झूलणामां आठ संधिओ आवे छे अने तेना अंत्यसंधिनुं खंडन थवाथी ए आ संधिनो सौथी सुन्दर अने व्यापक छंद बने छे. बर्वे झपताल नीचे प्रमाणे दर्शावे छे:

७ झंपताल, मात्रा १० : १ २ । ३ ४ ५ ६ ७ । ८ ९ १०

गा. वा. पा. पु. १, वि. १, पृ. ८१

पांच मात्राए अर्धताल थई रहे. एटला भागमां मात्राओ बे अने त्रण एवी रीते विभक्त थाय छे. अने तेमां प्रथम मात्रा उपर प्रधान ताल पडे छे. आपणे झूलणामां जोयेलो संधि उपरनी मात्रारचनाने अनुकूल करी समजी शकाय छे. दालदामां प्रधान ताल पहेली मात्रा उपर पडे छे अने दालदाना बे विभागो दा अने लदा करीए तो, तेना विभागो पण झपना मात्राविभागो साथे समान्तर थई रहे छे, मेळमां आवी रहे छे. अने आगळ उपर ज्यारे गौण ताल गणनामां लेवानी जरूर पडशे त्यां एनो फरी विचार करीशु. हाल तो आपणे झूलणानां दृष्टान्तोथी आगळ चालीए:

बीज कडवूं हतूं गर्भ कडवो हतो,
गर्भनूं स्थान पण हतूं एवुं;
हतूं शैशव कटू युवा कडवी हती
वृद्धपणु आवियूं झेर जेवुं.

'लींबोळी' कागवाणी, भा. २जो, पृ. १९

प्रथम चरणमां एक तरफ 'हतूं ए' लदादा छे, तेम ज बीजी पंक्तिमां 'हतूं शै' तेम ज 'युवा कड' बन्ने लदादा छे. प्रश्न ए छे के दालदानां आवर्तनो साथे आ लदादानां आवर्तनो आवी शके? तेथी मेळने हानि थाय?

खरी रीते आ प्रश्न आना करतां जरा मोटो छे. पंचकल बीजना त्रण जातिसंधिओ विकल्पे थाय. आपणे स्वीकारेल दालदानां आवर्तनो पासेपासे मूकी एना सतत प्रवाहमांथी जुदांजुदां जगाएथी संधिनो आदि कल्पी आपणे ए विकल्पो जोईए.

दालदादालदादालदा

पहेले ज अक्षरेथी पंचकल लेतां दालदा मळे छे. बीजे अक्षरेथी लेतां लदादा मळे छे. त्रीजे अक्षरेथी लेतां दादाल मळे छे. ते पछी दालदा फरी आवे छे. एटले के पंचकलना त्रण जाति संधिओ थयाः दालदा, लदादा, दादाल. आ त्रणेय एक ज सळंग पंक्तिमां आवी शके के केम ए प्रश्न आपणे विचारवानो रहे छे. पण ए प्रश्न हाथमां लईए ते पहेलां आ संधिओ एटले लदादा अने दादाल संधिओना छंदो आपणे जोई जईए.

લદાદા સંધિ દાલદા સંધિનાં આવર્તનોવાળા છંદોમાં અપવાદ તરીકે આવે છે, પણ એનાં જ આવર્તનોનો કોઈ જાતિછંદ નથી. દાલદાનો જાતિછંદ પ્રથમ ગમક લઈએ.

૧ ગમક છંદ — માત્રા. ૫. તાલ ૧

કળ બાણ,
પદ જાણ,
તે ગમક
પદ સમક. ૧
ત્રીજી જ,
કળ કીજ,
ત્યાં તાલ,
સંભાળ. ૨

દ. પિ. પૃ. ૭

ઉત્થાપનિકા : દાદાલ

અહીં ત્રીજી માત્રા ઉપર તાલ કહેલો છે તે દાલદાનાં આવર્તનોમાં આવતો તાલ જ છે; દાલદાદાલદા આ શ્રેણીમાં ત્રીજા અક્ષરથી પંચકલ લેતાં દાદાલ મળે, તેમાં તાલ ત્રીજી માત્રાએ જ હોય. આ છંદ તો માત્ર કૌતુક જેવો છે. એનાથી બમણાં આવર્તનો વાળો દીપક વધારે વપરાશમાં આવે છે. તે આપણે જોઈ ગયા. તેની ઉત્થાપનિકા

દીપક : દાદાલ દાગાલ

થાય છે તે આપણે જોયું. અહીં બેકી આવર્તનો છે અને અંતે આવતા ગાલ અક્ષરો છંદના અંતને વિશિષ્ટ રૂપ આપવા આવે છે.

આ ઉપરાંત દલપતરામ એક જળતરણ આપે છે તે જોઈએ:

૮ જળતરણ છંદ — માત્રા ૧૩, તાલ ૩

તેર કળનો જ પદબંધ,
જાણજો જળતરણ છંદ,
પાંચ પાંચે જ વિશ્રામ,
ગુરુ લઘૂ અંતને ઠામ. ૪૬

દ. પિ. પૃ. ૧૦

उत्थापनिका : दालदा दालदा गाल

आ स्वरूपनो खुलासो सरल छे. त्रीजा संधिनी छेल्ली बे मात्रा खंडित करी ते अंत्य होवाथी तेने लगात्मक रूप आपेलुं छे. ए त्रण संधि पछी पण संधिनां बेकी आवर्तनो पूरां करवा त्यां चोथुं आवर्तन अक्षररहित रहे छे, अने ते विरामथी पुराय छे. स्वाभाविक पठन एम ज थाय छे. मने आ छंदमां लांबे सुधी टकी रहेवानी शक्ति जणाती नथी. लांबी पंक्तिना काव्यना मुखबंध तरीके ए आवी शके एम जणाय छे. आने वपरायेलो जोयानुं मने याद नथी. पण आने मळतो एक छंद के. ह. ध्रुव संपादित प्रेमानन्दना मासमां वपरायेलो छे :

वलवले विरहिणी विरह् वाध्ये
मन्मथे मोहनां बाण सांध्ये.
पियु विना अद घडी नव सुहाये
जीव जदुनाथ विरहे रे जाये. ८

प्रेमानन्दकृत मास, पृ. ५

प्रेमानन्दे आने मात्र 'छंद' कहेल छे अने ते देशीओनी वच्चे वच्चे आवे छे. ए पण देशोनी रीते ज गवातो होवो जोईए. छेल्ली पंक्तिमां रे छे ते देशीनी खासियत छे. पण ते सिवाय छंदनुं घडतर देशी जेवुं शिथिल नथी, जाति जेवुं सुघड छे, एटले अहीं लईए. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

दालदा दालदा दालदा गा

अंत्य चोथा चतुष्कलनी त्रण मात्रा खंडित थई छे अर्थात् अंत्य गुरु पांच मात्रानो प्लुत बने छे, बराबर झूलणानुं अंत्य अर्थ छे.

आ पछी पंचकल संधिओनां भिन्नभिन्न स्वरूपोना लगात्मक संधिनां आवर्तनोवाळा छंदो जोईए. तेमां सौथी वधारे परिचित भुजंगप्रयात के भुजंगी छे. उत्थापनिका दलपतराम प्रमाणे करुं छुं.

भुजंगी : लगागा लगागा लगागा लगागा

एनाथी जरा ओछो प्रसिद्ध स्रग्विणी.

स्रग्विणी : गालगा गालगा गालगा गालगा

उपजातिना प्रवाहमां वारंवार छूटक आववाथी प्रसिद्ध थयेलो

ग्राही के विध्वंकमाला } गागाल गागाल गागाल गागा

छेल्ला संधिनो अंत्य लघु खंडित थयेलो छे.

भुजंगीनो अर्ध सोमराजी लगागा लगागा क्यांक वपराय छे. स्रग्विणीनो अर्ध विमोहा गालगा गालगा वपरातो याद नथी. ए ज प्रमाणे विध्वंकमालानो उत्तरार्ध हारी गागाल गागा पण वपरायो याद नथी. ते पछी शैल लईए:

शैल: लगागा लगागा लगागा लगाल

अहीं चोथा पंचकलना अंत्य गुरुने बदले एक लघु मूक्यो छे एटले ए लघुनुं पठन गुरु तरीके थवो. जातिओमां एम थाय छे ए हुं आगळ कही गयो छुं. उपान्त्य गाने त्रण मात्रानो प्लुत करीने पण पंचकल पूरुं करी शकाय. ए पछी दलपतरामे आपेल कंद जोईए.

कंद: लगागा लगागा लगागा लगागा ल

पठन करतां तरत जणाशे के भुजंगीमां एक लघु उमेरवाथी बनेलो आ छंद तद्दन मेळ विनानो छे. चार आवर्तने एक पंक्ति पूरी थाय छे, पंक्तिने लंबाववी होय तो बीजां बे आवर्तनो सुधी लंबाववी जोईए एटले के तेने छ आवर्तनोनी करवी जोईए, अने ए बे आवर्तनो पूरवा एकलो एक लघु अहीं असमर्थ नीवडे छे. ए पछी दल लईए जे दलपतरामे पोते नवो बनाव्यो जणाय छे.

दल: गाललल गाललल गालगा गा

अंत्य गुरु चोथुं पंचकल पूरे छे अर्थात् अंत्य गुरु पांच मात्रानो प्लुत बने छे.

पद्मनी: ललगा ललगा ललगा गागा

अहीं पण अंत्य संधिमां एक मात्रा खंडित थई छे तेथी अंत्य गुरु त्रण मात्रानो प्लुत बने छे.

आ सिवाय बीजा केटलाक 'दलपत पिंगळ'मां आपेला छे पण ते महत्त्वना नथी, एटले लेतो नथी. पण आपणां पिंगळोमां नहीं आवतो एक छंद लउं छुं — अश्वधाटी. आ छंद गुजरातीमां कोई प्रसिद्ध कविए वापर्यो नथी. ए छंदमां रचेला पंडित जगन्नाथना श्लोको संस्कृत जाणनारा शास्त्रीओमां बहु प्रसिद्ध छे. आ छंद दक्षिणमां प्रसिद्ध छे, मराठीमां वपरायो छे, अने पटवर्धन तेनी नोंध ले छे. हुं प्रथम जगन्नाथनो एक श्लोक लउं:

खंजायितोऽधिमति गंजापरोऽपि बत संजायतेऽत्र धनदः
संजाघटीति गुणपुंजायितस्य न तु गुंजामितं च कनकम् ॥
किं जाग्रती जयसि? किं जानती स्वपिषि? सिंजानन् पुरपदे!
तंजापुरेशि! नवकंजाक्षि! साधु तदिदंजातु वा किमु शिवे? १३॥
अश्वधाटी

पटवर्धन आनो न्यास नीचे प्रमाणे आपे छे. हुं मारी लगानी संज्ञामां ते उतारुं छुं.

गागाल। गाललल। गागाल। गाललल। गागाल । गाललल। गा
छ. र. पृ. १९०-१९१

आ रीत पण उपपन्न छे. आ रीते जोतां आमां पंचकलनां छ आवर्तनो थई एक गुरु आवे छे, ते बेकी आवर्तनो पूरां करवा दशमात्रक बने छे, अर्थात् ए गुरु दश मात्रानो प्लुत बने छे. अथवा तेनी पछी विराम आवी कुल दश मात्रानो गाळो त्यां जाय छे. पण अनेक वारनां सांभळेलां पठनोथी मन नीचे प्रमाणेनो न्यास सूझे छे.

गा] गालगा, लललगा; गालगा, लललगा; गालगा, लललगा;

आ रीते पंक्तिना अंत पछी आठ मात्रानो गाळो गया पछी बीजी पंक्तिनो पहेलो गुरु मळतां दश मात्रानो ताल पूरो थई रहे. एम करतां पंक्तिमां रहेला आंतरप्रासो वधारे स्फुट थाय छे, ताल पठन प्रमाणे निर्देशाय छे, अने आपणे अनेक संगीतात्मक रचनाओमां जोयुं छे तेम, छेल्लो एटले चोथो दशकल संधि बे पंक्तिओ वच्चे विभक्त थई बे पंक्तिओ रेणाई जाय छे. संगीत प्रधान होवाथी में पंचकल उपरांत दशकल पण अर्धविरामथी दर्शाव्या छे. आ अश्वधाटी जो के गुजरातीमां नथी आव्यो पण कोण जाणे केम, एमांथी ऊतरी आवी होय एवी एक रचना दलपतराम आपे छे:

८२ लीला छंद — अक्षर १४

तूं भावि जग लाडि, थाक्यो नहीं ज लेश,
लीला विषेज मन, कीधूं सदा प्रवेश;
रे लाभनो न कदि, कीधो ज तें तपास,
दंभी दिठो ज दिल, दीठो न देवदास. १८४
द. पि. पृ. ५२

तालमां छापनी भूल होय के गमे तेम होय एक सरखी तालनी मात्रानी श्रेणी चालती नथी. पहेली पछी छट्ठो, पछी अगियारमी आवे छे त्यां सुधी पंचकलनी श्रेणी चाले छे, पण पछी 'न' उपर ताल आवे छे ते चार मात्राए आवे छे, अने 'ले' उपर आवे छे ते पण चार मात्राए आवे छे. ए ताल प्रमाणे तो एटलो भाग दोहरानो सम यतिखंड "थाक्यो नहीं ज लेश" वंचाय ! कोई रचनामां एक ज पंक्तिमां एम पंचकल साथे चतुष्कलनुं मिश्रण न थई शके. कविनी समज एवी हती, के छापनी भूल छे ते जाणवा साधन नथी. हुं तेनो पंचकलोनो न्यास नीचे प्रमाणे करुं :

गा गालगा, ललगा, गालगा लगाल;

अंत्य ल ने गुरु करतां त्यां एक पंचकल बनी रहे. पछी अश्वधाटीनी पेठे आठ मात्रानो विराम आवो पछीनी पंक्तिनो निस्ताल गुरु तेमां मळी आखु दशकल थाय. छंद सुन्दर नथी लागतो, पण अश्वधाटीनी असर देखाय छे माटे उतार्यो छे. आ पछी हुं पंचकलनी कोई लगात्मक रचना अहीं चर्चवा जेवी महत्त्वनी मानतो नथी.

हवे हुं तालनी चर्चा हाथमां लउं छुं. आपणे दालदा संधिने मुख्य संधि तरीके स्वीकार्यो छे. तो शास्त्रीय पद्धति ए छे के बीजा संधिओने दालदाना प्रवाहमांथी ज निष्पन्न करवा अने ए निष्पन्न थयेला संधिओमां पण ए प्रवाहमां ज्यां ताल आवतो होय ते ज स्थाननो ताल पण राखवो. हुं स्पष्ट करुं :

दालदादालदादालदादालदा

पहेला अक्षरथी शरू करतां दालदा संधि मळे छे, तेमां पहेली मात्राए दालदा एम ताल छे. बीजा अक्षरथी शरू करतां लदादा निष्पन्न थाय छे अने तेमां अंत्य दा उपर ताल छे एटले संधिमां लदादा एम ज ताल राखवो जोईए. त्रीजा अक्षरथी शरू करतां दादाल मळे छे अने तेमां बीजा दा उपर ताल छे, तो दादाल एम ज एमां ताल राखवो जोईए. आ प्रमाणे एकतंत्र व्यवस्था करतां

भुजंगी : लगागा लगागा लगागा लगागा

एम थाय छे. ए प्रमाणे ताल नांखी पठन करतां कशो वांधो आवतो नथी. ए प्रमाणे विध्वंकमाला के ग्राहीमां बीजा दा उपर ताल आवे.

ग्राही के विध्वंकमाला : } गागाल गागाल गागाल गागा

दलपतराम आमां पहेला गा उपर ताल नांखे छे,—पण हुं मानुं छुं, तेमने अक्षरमेळमां आ आवर्तनात्मक रूप समजायुं नहोतुं माटे, बाकी आ ज एटले दादाल संधिना गमक अने दीपक वर्णमां तेओ दादाल ए प्रमाणे ज ताल नांखे छे. के. ह. ध्रुव पण दादाल संधि स्वीकारतां ए ज स्थाने ताल नांखे छे. तेमणे तेने बावाह कहेलो (प. ए. आ. पृ. ३०) छे. पण तेमणे हवावा के भुजंगी विशे आ पुस्तकमां कंई कहेलुं नथी.

अहीं ए स्पष्ट करवुं जोईए के ज्यां लगागा के गागाल ए संधिनां ज आवर्तनो प्रारंभथी शरू थयां होय त्यां ज आ प्रमाणे ताल आवश्यक बने छे. पण कोई बीजा संधिथी शरू थयेला छंदमां वचमां उपरनो कोई संधि आवतो होय तो दरेक संधिए प्रारंभथी चाली आवती तालनी श्रेणी प्रमाणे ताल लेवो जोईए. दालदा लदादा दालदा दालदा एम आवे त्यारे बीजा लदादा संधिए पहेली मात्राए ताल लेवो जोईए. ते ज प्रमाणे दादाल वचमां आवे तो तेणे पण पहेली ज मात्राए ताल लेवो जोईए. दालदा साथे लदादा आव्यानो दाखलो, आपणे पंचकलना निरूपणना प्रारंभमां उतारेला काव्यमां जोई गया हता.

बीज कडवूं हतूं गर्भ कडवो हतो
गर्भनूं स्थान पण हतूं कडवूं

आमां दालदाथी आवर्तनो शरू थाय छे अने पंक्तिने अंते 'हतूं कडवूं' त्यां लदादा गा एम आवे छे. त्यां लदादामां पण चाली आवेली श्रेणी प्रमाणे पहेली मात्राए ज ताल आवे. दादाल माटे नीचेनुं दृष्टान्त मळे छे.

शब्द शीखे खरो सकल विद्या भणे
अध्यात्म ऊचरे आवी ओथ

भक्तिज्ञाननां पदो, पद ४१, न. का. सं. पृ. ४८६

अहीं 'अध्यात्म' ए दादाल छे अने त्यां पण पहेली मात्राए ज ताल पडे छे. ज्यां लदादा के दादालनां आवर्तनो प्रारंभथी ज होय त्यां लदादा अने दादाल एम ताल पडवो जोईए अने तेनां लगागा अने गागाल ए रूपोमां पण ए ज ताल ऊतरी आववो जोईए, एटलुं मर्यादित वक्तव्य अहीं छे.

हवे प्रश्न ए रहे छे के दालदानां अवर्तनोमां लदादा आवे अने दादाल आवे ए बन्नेनी सरखी असर छे? के कंई फरक छे? अहीं आपणे जेम लगालनी खास असर समजवा लावणीना गौण तालनी स्थितिनो विचार कर्यो हतो तेम अहीं पण झपना गौण तालनो विचार करवो आवश्यक छे. अने आ संदर्भमां हुं दालदा संधिनो झप साथेनो आखो संबंध फरी वार विचारी जवा इच्छुं छुं. बर्वेए झप आप्यो छे ते फरी वार जोईए.

झपताल १० मात्रा: १ २ । ३ ४ ५ ६ ७ । ८ ९ १०

पहेलां कही गयो तेम अहीं दसनी अर्ध पांच मात्रा लेतां तेना बे विभागो २+३ एवा स्पष्ट मालूम पडे छे. आपणे झूलणानो जे दालदा संधि लईए छीए तेमां पण दा+लदा एम लेतां उपर प्रमाणे विभागो पडी रहे छे. पण प्रधान अने गौण बन्ने तालो ध्यानमां लेतां केटलीक मुश्केलीओ प्रतीत थाय छे. झप तालमां त्रीजी मात्रा उपर गौण ताल छे. आपणे हमेशा मुख्य संधि पसंद करतां, ताल माटे गुरु अक्षरने अवकाश होय एवी रीते संधिनी घटना करीए छीए. तेने बदले, उपर आपेला झपना निरूपणमां दालदामां गौण ताल मूकतां ते लघु उपर आवशे: दा ल दा ए प्रमाणे. ताल स्थाने गुरु मूकीए तो संधि दा दा ल थशे. आ संधि पण पंचकलनो ज पर्याय छे पण तेमां तालनी व्यवस्था आपणे स्वीकारी छे तेथी भिन्न जणाशे. दादालमां आपणे बीजा दा उपर मुख्य ताल मूकीए छीए, तेने बदले उपरना संधिमां बीजा दा उपर गौण ताल आवशे. आ प्रमाणे जोतां झपतालनी मात्राव्यवस्थामांथी आपणे बराबर दालदा मेळवी शकता नथी. एम करवा माटे आपणे एक बीजी उपपत्तिनुं अवलंबन लेवुं पडशे, जे पण प्रामाणिक छे. दालदानी घटना बे रीते संभवे छे. आ पंचकलनुं पृथक्करण करतां तेमां प्रधान रूपे दाल एवुं त्रिकल बीज जणाशे. आ दालमां गौणतालयुक्त दा उमेरवाथी पंचकल बीज निष्पन्न

थाय छे; दालमां दा उमेरतां दालदा थशे, अने दालनी पूर्वे दा उमेरतां दादाल थशे. बन्ने रूपो पिंगलना संधिओ साथे अभिन्न छे. आमां झपनी मुख्य व्यवस्था, एटले के पांच मात्राना २ अने ३ मात्राविभागो कायम रहे छे. ते उपरांत तालव्यवस्था पण कायम रहे छे: उपर जे झपतालनी मात्राओ ताल सहित बतावी छे तेमां, ए तो कहेवानी जरूर ज नथी के प्रधान तालो बच्चेनुं अंतर पांच मात्रानुं छे, अने एम होय तो पछी गौण तालो वच्चे पण एटलुं ज पांच मात्रानुं अंतर होय. खरा महत्त्वनी वात तो प्रधान गौण बच्चेनुं अंतर छे. झप तालना पूर्वार्धने ज संधि गणी तेनां आवर्तनो करतां नीचे प्रमाणे थाय.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
÷		−			÷		−			÷		−		

अहीं गौण ताल अने प्रधान ताल बच्चेनुं अंतर एक बाजुथी गणतां बे मात्रानुं छे, बीजी बाजुथी गणतां त्रण मात्रानुं छे. दालदा नां आवर्तनोमां पण ए ज अंतर जणाशे.

१	३	४	६	८	९
दा	ल	दा	दा	ल	दा
१		५	७		१०

गौण ताल प्रथम संधिमां चोथी मात्रा उपर छे. तेनी पूर्वनो प्रधान ताल तेनाथी त्रण मात्रा दूर छे, तेनी पछीनो प्रधान ताल तेनाथी बे मात्रा दूर छे. एटले के दालदा अने तेनी ज साथे दादाल बन्नेनी घटना झपतालने समान्तर ज छे. अने तेथी दालदा एवो गौणतालयुक्त संधि आपणे पिंगल माटे प्रमाणभूत गणी शकीए. अने हवे आपणे दालदानां आवर्तनो साथे ते सिवायनां बीजां आवर्तनोनो मेळ जोईए. उपर जे दालदानो प्रवाह आपेलो छे तेमां पहेली अने छट्ठी मात्रा प्रधान ताल माटे उपलब्ध छे. हवे दालदाना प्रवाहमां लदादा भळतां ए ज संख्यानी मात्राओ ए ज रीते उपलब्ध रहे छे:

१	३	४	६	७	९
दा	ल	दा	ल	दा	दा
१		५		८	१०

एने ए ज १ली अने छट्ठी प्रधान ताल माटे, अने ४थी अने ९मी गौण ताल माटे उपलब्ध रहे छे, एटले दालदानां आवर्तनोमां क्यांक लदादा आव-

वाथी मेळने जरा पण विक्षेप थशे नहीं. बोलवामां पण विक्षेप थतो नथी. हवे दालदामां दादाल भळतां शी असर थाय छे ते जोईए.

```
१  ३  ४  ६  ८  १०
दा ल  दा दा दा ल
२     ५  ७  ९
```

अहीं प्रधान ताल माटे १ली अने ६ठ्ठी उपलब्ध छे. गौण ताल माटे ४थी उपलब्ध छे, पण ९मी नथी. उपान्त्य दानी जगाए गुरु आवे तो ९मी मात्रा गुरुनी आगली मात्रा नीचे दबाई जाय. पण आपणे लगालमां जोयुं छे के एटलाथी मेळ तूटतो नथी. मात्र उच्चार उत्कट थाय छे. गागालनो उच्चार पण उत्कट छे. तालथी स्वतंत्र रीते विचारतां पण बे गुरु पछी एक लघु आवतां उच्चार घणो ज उत्कट बने छे. एवी असर करवा ए पर्यायनो उपयोग करी शकाय. पण ए उत्कट होवा छतां दादाल के गागालनां आवर्तनोनो छंद बनाववामां कशो प्रत्यवाय नथी.

```
१  ३  ५  ६  ८  १०
दा दा ल  दा दा ल
२  ४     ७  ९
```

० ।
दादाल संधिने स्वतंत्र संधि लेतां जणाय छे के तेमां गौण प्रधान तालनी एवी व्यवस्था छे के तेना आवर्तनमां बन्नेने खुल्ली अबाधित मात्रा मळी रहे
० । ० ।
छे. माटे ज दादाल के गागालनां आवर्तनोना छंदो मळी रहे छे. हवे
० ।
दादाल-नां आवर्तनोमां बीजा पर्यायो भळतां मेळने शी असर थाय ते जोईए.

```
१  ३  ५  ६  ८  ९
दा दा ल  दा ल  दा
२  ४     ७     १०
```

पहेलांनी पेठे ज १ली ६ठी गौण ताल माटे अने ३जी ८मी प्रधान ताल माटे उपलब्ध छे. अर्थात् मेळ पूरेपूरो सचवाई रहे छे. पण दादाल साथे लदादानो मेळ एटलो सारो भळतो नथी.

```
०  |        ०
१  ३  ५    ६  ७  ९
दा दा ल    ल  दा दा
२  ४          ८  १०
```

अहीं गौण ताल माटे १ली ६ठ्ठी उपलब्ध छे पण प्रधान ताल माटे ८मी उपलब्ध नथी. एटले मेळ बगडे छे. एटले दादालना प्रवाहमां लदादाने अनिष्ट ज गणवो जोईए. दादालना प्रवाहबद्ध कोई छंदमां में लदादा पर्याय जोयो नथी. लदादाना प्रवाहवाळो कोई जातिछंद नथी एटले एनी साथे मेळनो प्रश्न रहेतो नथी, पण तेम छतां उपरनी रीते गणतरी करी जोतां

जणाशे के लदादाना प्रवाहमां दालदा भळतां गौण ताल माटे मात्रा अनुपलभ्य बने छे, अने लदादा साथे दादाल भळतां गौण अने प्रधान बन्ने तालो माटे मात्रा अनुपलभ्य बने छे. आ बधां परिणामो नीचे प्रमाणे संगृहीत करी शकाय.

दालदाना प्रवाहमां लदादानो संपूर्ण मेळ बेसे पण दादाल आवतां गौण तालनी मात्रा दबाय अने रचना उत्कट बने.

दादालना प्रवाहमां दालदानो संपूर्ण मेळ बेसे पण लदादा आवतां प्रधान तालनी मात्रा दबाय एटले एने अनिष्ट गणवो जोईए.

लदादाना प्रवाहमां दालदा आवतां गौण तालनी मात्रा दबाय छे, अने दादाल आवतां गौणप्रधान बन्नेनी मात्राओ दबाय छे, एटले के मेळ तूटे छे.

बधां परिणामोने एक नजरे जोतां जणाशे के त्रिकल संबंधी आपणे जे एक समीकरण कर्युं के दाल = लदा ए ज अहीं प्रवर्ते छे. दालदामां दाल छे ते लदा बनी शके छे. एटले दालदा साथे लदादानो मेळ बेसे छे. ते ज प्रमाणे दादालमां पण दाल छे तेथी तेनी साथे दालदानो मेळ बेसे छे. लदादामां दाल छे नहीं तेथी तेनी साथे कशानो संपूर्ण मेळ बेसतो नथी. अने आ रीते दालदाना मेळनो विस्तार जोतां दालदानुं आपणे दाल + दा एवुं पृथक्करण कर्युं ते बिंबप्रतिबिंब न्याये समर्थित थाय छे. अने तेथी दालदाने जाति छंदोनो प्रकृतिभूत संधि मानवामां कशो वांधो आवतो नथी.

पण अहीं उमेरवुं जोईए के अहीं दालदा, लदादा अने दादाल संधिओ विशे जे कंई कह्युं छे ते पिंगलनी उत्पत्तिनी दृष्टिए कह्युं छे. आपणे दालदा बीजने प्रधान लई तेना तालोने मूळभूत गणी उपर प्रमाणे परिणामो जोयां. पण संगीतनी दृष्टिए त्रणेय संधिओने स्वतंत्र लई शकाय; अने संगीतनी दृष्टिए गमे त्यां ताल मूकी श्रेणी रचवामां कशो दोष आवे नहीं. पण एटलुं कहेवुं जोईए के संधिनुं जे कोई स्वरूप लईए, अने तेमां जे कोई तालव्यवस्था स्वीकारीए तेने पछी वळगी रहीने ज आखी रचनामां तालव्यवस्था करवी जोईए एटलुं पिंगळ माटे आवश्यक छे. सामान्य रीते दालदा के लदादा

दादाल एम ताल मूकी श्रेणी करतां कशो बांधो आवशे नहीं, कारण के पहेली मात्राए ज मुख्य ताल मूकीए तो त्रणेय संधिओने अवकाश मळशे ज कारण के संधिनी पहेली मात्रा हमेशां खुल्ली होय ज. पहेली सिवायनी मात्रा लीधां होय त्यारे ज जोवानुं के तालनी मात्रा उपलभ्य छे के नहीं. अने वधारे झीणवटथी छंदनो अक्षर पारखवो होय तो गौणतालनी मात्रानो पण विचार करवो जोईए. पण ते साथे ए ध्यानमां राखवुं जोईए के पिंगळे पोतानो पक्षपात आपणे प्रकृतिभूत गण्यो छे ते दालदा संधि तरफ बताव्यो छे.

हवे सप्तकल रचनाओ लईए. ए १४ मात्राना दीपचंदी तालमांथी निष्पन्न थई छे. वर्वे दीपचंदी ताल नीचे प्रमाणे आपे छे.

होरी-दीपचंदी: १ २ ३ । ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० । ११ १२ १३ १४

तालना अर्धमां सात मात्राओ आवे अने तेमां पहेला खंडमां दाल आवे छे. अने बीजा खंडमां दादा आवे छे. अर्थात् दालदादा एम संधि निष्पन्न थयो. आ संधिनी श्रेणीमांथी नीचेना संधिओ निष्पन्न थाय

दालदादादालदादादालदादादालदादा

पहेला अक्षरथी संधि लेतां दालदादा, बीजाथी लेतां लदादादा, त्रीजाथी लेतां दादादाल अने चोथाथी लेतां दादालदा अने ए प्रमाणे ज श्रेणीना तालो दरेक संधिमां ऊतरी आवे. अहीं प्रथम संधि दालदादा मळे छे, पण तेना करतां वधारे प्रसिद्ध अने परिचित संधि दादालदा छे जे हरिगीतमां आवे छे.

हरिगीत: दादालदा दादालदा दादालदा दादालगा

अंत्य गुरु पंक्तिनो अंत बतावबा आवे छे. ए साथे दादालदानां पूरां चार आवर्तनो छे. दलपतराम आ छंदमां १४मी के १६मी मात्राए यति कहे छे. अलबत्त यति ए छंदनुं अंग नथी, पण तेनां बे वैकल्पिक स्थानो केम थयां ते जोवा जेवुं छे. १४ मात्राए तो संधिनां बे आवर्तनो थई रहे एटले यति आवी शके ए देखीतुं छे. पण सोळे आवे छे त्यां खरी रीते उत्थापनिका ज

जरा जुदी थाय छे एम कहेवुं जोईए. दादालदाने बदले त्यां पहेली निस्ताल दा जुदो करी पछी दालदादानां बे आवर्तनोए यति आवे छे एवो एनो अर्थ छे. आ प्रमाणे :

दा दालदादा दालदादा दालदादा दालगा

एक एवो मत छे के प्रथम मात्रा उपर ताल आवे ए रीते ज संधि नक्की करवो. हुं एवो कोई सिद्धान्त करवाना मतनो नथी. संधिनुं स्वरूप पठन उपरथी ज दरेक प्रसंगे नक्की करी लेवुं एम हुं मानुं छुं. अत्यार सुधी आपणे संधिओनी ए रीते ज व्यवस्था करी छे अने आद्यमात्रा उपर ताल न होय एवा संधिओ स्वीकार्या छे. आ पण तेवो प्रसंग छे.

अर्वाचीन युगमां हरिगीतनां ठीक ठीक नवां रूपो योजायां छे. सौथी पहेलां नर्मदाशंकरे पंक्तिमां आवतो प्रथम निस्ताल दा काढीने ज रचना शरू करी, जेने आपणे छव्वीसी रचना कही शकीए.

छव्वीसो हरिगीत : दालदादा दालदादा दालदादा दालगा

छव्वीसी अने अठावीसी रचनाओना मिश्रणने नरसिंहरावे विषम हरिगीत कही. नरसिंहरावे एथी आगळ जईने खंड हरिगीतनी रचना करी. तेना सामान्य रूपनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

खंड हरिगीत : दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दालदादा दालगा
दा दालदादा दालगा

अहीं संधि प्रथम मात्राना तालवाळो दालदादा छे अने दरेक पंक्तिमां तेनां बे आवर्तनो छे, पण बीजा संधिनी अंत्य बे मात्राओ खंडित थई छे, जे त्यां विलंबनथी पुराय छे, पण चोथी पंक्ति उपसंहारार्थे लांबी थाय छे तेमां प्रथम निस्ताल दा आवे छे, जे आगली एटले त्रीजी पंक्तिना संधि साथे भळीने आखो संधि बनी रहे छे. तेमणे पोते बीजी पण वधारे वैचित्र्यमय रचनाओ करी छे. सद्गत बाबुराव, कवि न्हानालाल तथा खबरदारे पण आ ज संधिनां जुदोजुदो संख्यानां आवर्तनोवाळी पंक्तिओनी भिन्नभिन्न रचनाओ करी छे, जेनी विगत आपवानी मने जरूर जणाती नथी.

आ पछी आपणे आनाथी अर्ध संधिसंख्यावाळो उधोर लईए. आठमा प्रकरणमां जोई गया तेम दलपतरामना लक्षण उपरथी तेनी नीचे प्रमाणे उत्थापनिका थाय:

उधोर: दादादाल दादागाल

अहीं दलपतराम आ सप्तकलनां दरेक दा उपर एक एम त्रण तालो नांखे छे:

| | |
दा दा दा ल ए रीते. ए देखीतुं ज अनुपपन्न छे. दालदादानी श्रेणीमांथी आपणे आ संधि निष्पन्न करतां तेमां दादादाल ए प्रमाणे ताल नांखेलो, अने एने ज साचो गणवो जोईए. दलपतरामे ज उधोरथी अरधा कंतामां दा दा दा ल एम ताल नांखेलो छे. में आगळ पद्धरीने अंगे कहेलुं के दलपतराम कोई वार गुरुना संभवमात्रथी गुरुना भारने सताल गणवा प्रेराय छे, तेवुं अहीं थयेलुं छे (गत. पृ. ३७७).

हवे सप्तकलनी लगात्मक रचनाओ जोई जईए.

सौथी पहेलां प्रिय ललगालगा पंचाक्षरी आवे छे. पछी

तोमर: ल ल गा ल गा ल ल गा ल

अहीं सप्तकलनां बे आवर्तनो छे, तेमां बीजा संधिनो अंत्य गुरु खंडित थयेलो छे. तेनी मात्राओ उपान्त्य गानी प्लुतिथी पुरवानी छे. पछी

संजुकता: ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा

हंस: ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा

हंसमां त्रण आवर्तनो थाय छे, चोथा आवर्तननो गाळो विरामात्मक रहे छे.

९४ रूपमाळी छंद — अक्षर १७

रास जो जिभ गालथी बकवा कर्यं बहु थाय,
राणि जो शुभ रूपमाळि चिते न भूपति च्हाय;
बोलवो मुख बोल ते करि तोलवंत विचार,
काढवो नहि आकरो अगबुद्धि एक उचार. १९७

द. पि. पृ. ५४–५५

उत्थापनिका : गालगालल गालगालल गालगालल गाल

अहीं गालगाललनां त्रण आवर्तनो छे, अने चोथुं आवर्तन खंडित थई गाल रूप बने छे.

आ रूप प्लुतिओथी पुराई पूरुं सप्तकल बने छे, पण तेम करवानी पद्धतिओ बे छे, एक तो अंते आवता लघुने ज पांच मात्रानो प्लुत करवो ए. पण ते करतां वधारे परिचित पद्धति उपान्त्य गुरुने त्रण मात्रानो करी अंत्य लघुने चार मात्रानो प्लुत करवानी छे. ढाळ नामे प्रसिद्ध सप्तकल देशीओमां अंत्य खंडित संधि घणी वार गाल रूपे आवे छे अने त्यारे मैं कही ते बीजी रीते ए प्लुतिबद्ध थाय छे. 'कादंबरी'मांथी चार पंक्ति लई स्फुट करुं:

ढाळ

गूढ कोटर पत्र छायां जोँई वसमुँ ठाम.
शुक समूह अनेक आवी करि तिहां विश्राम.
पत्र विहुणां पांखडी करि पंखी दरसी पान
दिवस रजनी तिहां रहि ँछि जाणी उत्तम स्थान.

कादंबरी, कडवुं ४

आ अलबत्त सप्तकलनी देशी छे, पण तेमां संधिओ वर्णीशुद्ध छे. तेनी उत्थापनिका

दालदादा दालदादा दालदादा गाल

एम थाय छे अने पठनगानमां अंत्य संधि गाल, गा ᴗ ल ᴗ – आ प्रमाणे उच्चाराय छे. रूपमाळी आ देशी साथे सरखावतां ए देशीनुं ज लगात्मक रूप जणाशे. प्लुतिनी मात्रा बे रीते पूरतां नीचे प्रमाणे थाय

१. गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गाल – –

२. गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ᴗ ल ᴗ –

आ पछी चर्चरी के विबुधप्रिया लईए.

१९ चर्चरी अथवा विबुधप्रिया छंद — अक्षर १८

रास जो जिभ राखवो, जन भाखशे न मुखे भलुं;
चर्चरी चितमां थशे, वळि कष्ट कारण केटलुं;

क्लेशथी लवलेश जो कदि क्रोध अंतर ऊपजे,
नेणमां वळि वेणमां पण शांति सज्जन तो सजे. २०५

द. पि. पृ. ५७

उत्थापनिका: गालगालल गालगालल गालगालल गालगा

अंत्यसंधिमां बे मात्रा खंडित थई छे ए देखीतुं छे. दलपतरामे बार मात्राए अल्पविराम करेलुं छे ते यति दर्शावे छे, एटले जातिओमां होय छे तेवी शब्दान्तसूचक यति त्यां छे, जे छंदनुं अंग नथी. रोळानी पेठे संधिनी अंदर यति आव्यानुं आ पण दृष्टान्त छे. आने मळती पण देशी होय छे, जेमां अंते गालगा आवे छे, पण ते अहीं मूकवानी खास जरूर नथी.

आ पछी झूलणा लईए. झूलणा जाति पंचकल छे, पण आ लगात्मक झूलणा सप्तकल छे.

१०१ झूलणा छंद—अक्षर १९

सज जोभरे सलुणी सदा शुभ वाक्यमांहि मिठाश,
झुलतुं ज बाळक झूलणातणुं हर्खि होय हुल्लास;
नर नारि धारि विचारिने वळि सारि सारि कहेज;
सुणि रंकने वळि राय ते दिल राजि राजि रहे ज. २०७

द. पि. पृ. ५७–५८

उत्थापनिका: ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगाल

आनो अंत्य संधि रूपमाळी जेवो छे अने तेनी पेठे बे रीते तेनुं पठन थाय. प्लुतिनी मात्राओ पूरतां बन्नेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

१. ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल—

२. ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ल गा ल ल गा ⌣ ल ⌣

पहेली पद्धतिमां सप्तकलनी मात्राओ पूरी करवा अंत्य ल त्रण मात्रानो प्लुत बने छे, बीजीमां उपांत्य गा त्रण मात्रानो प्लुत बनतां अंत्य ल गुरु बने छे एटलो रूपमाळी करतां आमां भेद छे. पण आ बधी रचनाओमां खूटती मात्राओ छेल्ला सप्तकलना अंत्य गालमां कोई बीजी रीते पण वहेंचीने प्लुतियोजना करी शकाय. आ पछी गीतक के मुनिशेखर लईए.

१०४ गीतक अथवा मुनिशेखर छंद — अक्षर २०

सजि जो भरो सळगाव बंदुक ताकि ताड निशान तूं
शुभ ए कळा मुनिशेखरे शिखवेलि ते ज समान तूं;
करि क्षत्रि धर्मनुं कर्म ते परमार्थ पूर्ण तुं पामशे,
दळ दुष्टने सुख दीनने दइ जे थकी जश जामशे. २११

द. पि. पृ. ५८

उत्थापनिका: ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा

पूरां चार आवर्तनो थई रह्यां छे. विशेष कंई कहेवानुं रहेतुं नथी.

हवे सप्तकलना चार पर्यायोना अंदरअंदरना संबंधो जोईए. आ संबंधमां सौथी पहेलुं ए कहेवानुं प्राप्त थाय छे के जो के आ संधिमां बे ताल नांखवानी परंपरा छे पण वर्बेए आपेला तालनुं स्वरूप जोतां दालदादा एम एक ज मुख्य ताल छे, ल पछी आवता दा उपरनो ताल गौण छे, अने गौण ताल सामान्य रीते आपणे पिंगलमां लेता नथी. सद्‌गत के. ह. ध्रुवे त्रण सप्तकल संधिओ आपेला छे. तेमां एक प्रधान ताल ज बतावेलो छे. दाहवावा वावाहवा अने वावावाह अने आ ताल परस्पर उपपत्तिवाळा छे. आ रीते:

दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल दा दा दा ल दा दा

त्रीजा अक्षरथी संधि लेतां दादादाल मळे छे, चोथाथी लेतां दादालदा मळे छे. लदादादानां स्वतंत्र आवर्तनोनी कोई जातिरचना मळती नथी एटले ध्रुवे आ संधि आप्यो नथी एम जणाय छे. अने एक ज ताल नांखवाथी पण संधिनां आवर्तनोमां संवादने कशी हानि थवानी नथी कारण के संधिनुं स्वरूप एक बाजु प्रधान तालथी तेम बीजी बाजु लना नियत स्थानथी असंदिग्ध रीते नियत थई जाय छे. छतां परंपराथी बे ताल चाल्या आवे छे तो तेने स्वीकारवामां पण कशो दोष नथी. अने आ बधा पर्यायोना परस्पर मेळो जोवा ए आवश्यक पण छे.

हर कोई एक संधिना आवर्तनप्रवाहथी निष्पन्न थता संवादमां बीजो कोई संधि आवी जाय तो तेनो शी असर थाय ए हवे आपणे जोईए. ए जोवा माटे आपणे गौण तालनुं स्थान ध्यानमां लेवुं पडे छे ते आपणे जाणीए

छीए. आपणे सौथी पहेलां हरिगीतनो संधि दादालदा लईए. एमां संधिनी त्रीजी अने छठ्ठी मात्रा पर ताल पडे छे. आना प्रवाहमां जो दालदादा आवे तो तेथी तालमात्राना स्थानमां कांई विक्षेप आवतो नथी केम जे दालदादा-मां त्रीजी मात्रा अने छठ्ठी मात्रा बन्ने खुल्ली छे, अने तेथी बन्ने तालने पोतानी मात्रा मळी रहे छे, आ प्रमाणे : दालदादा. पण लदादादा संधिमां त्रीजी मात्रा दटायेली छे, जो के छठ्ठी उपलभ्य छे, पण एटलाथी संवादनो निर्वाह थतो नथी. पठन करी जोतां जणाशे के दादालदानां आवर्तनोमां लदादादाथी विक्षेप थाय छे. मात्र संधिओने मूकीने वांचतां पण ए विक्षेप जणाई आवशे. आपणे बन्नेना दाखला लई जोईए :

दादालदा दालदादा दालदादा दादालदा

पठनमां क्यांई विक्षेप आवतो नथी. पण

दादालदा दादालदा लदादादा दालदादा

लदादादा आगळ मेळ तूटे छे. खास दाखलो बनावी जोतां पण एम ज जणाशे.

नरदेव भीमकनी सुता महाभारत मांहि कथी जे

'महाभारत' आगळ मेळ तूटे छे. ते ज प्रमाणे ए प्रवाहमां दादादाल पण नहीं आवी शके कारण के एमां छठ्ठी मात्रा अनुपलभ्य छे. अर्थात् दादालदाने मात्र एक ज संधि दालदादा अनुकूळ पडशे. आपणे कही शकीए के अहीं पण दाल अने लदानुं समीकरण साचुं पडशे. हवे आपणे दालदादा ए संधिना प्रवाहनो विचार करीए. आमां लदादादा सरलताथी भळशे. दालदादामां ताल १ली अने ४थी मात्राए आवे छे. ए बन्ने मात्राओ लदादादामां उपलभ्य छे. आपणे अहीं पण दाल अने लदानुं समीकरण जोईए छीए. पण दादालदा नहीं आवी शके कारण के एमां १ली उपलभ्य छे पण ४थी दटायेली छे. एटले अहीं पण एक संधिने बीजो एक ज संधि संवादी नीकळशे अने बाकीना बे विसंवादी नीकळशे.

ते पछी लदादादा लेवानी जरूर नथी कारण के एनां आवर्तननी कोई जातिरचना नथी, जोके आगळ जोईशुं के पदोमां एनां आवर्तनोवाळी

पुष्कळ रचनाओ आवे छे. पण उपरनी पद्धतिए एनो पण विचार करी जोईए. आमां २जी अने ६ठ्ठी मात्राए ताल छे. आनी साथे त्रणमांथी एक पण संधि संवादी नहीं थई शके कारण के ए त्रणेय संधि दाथी शरू थाय छे जेमां बीजी मात्रा दटायेली छे. तेमांथी दा अंतवाळा बे संधिओ एटले दादालदा अने दालदादामां छठ्ठी मात्रा उपलब्ध छे, पण दादादालमां तो २जी अने ६ठ्ठी बन्ने दटायेली छे. पण सप्तकलोमां आपणे जोयुं तेम बन्ने तालोने पोतानी मात्रा मळी शके तो ज संवाद सचवाय छे, एक पण तालनी मात्रा लुप्त थतां संवाद रहेतो नथी एटले लदादादा साथे कोई बीजो संधि संवादी थई शकतो नथी.

हवे बाकी रह्यो दादादाल. आमां १ली अने ५मी मात्राए तालो छे. दादालदामां पण १ली अने ५मी मात्रा उपलब्ध छे, एटले ए संधि दादादालना प्रवाहमां आवी शके. दालदादा अने लदादादा बन्नेमां पांचमी मात्रा उपलब्ध नथी एटले ए बे संधिओ न आवी शके. अहीं पण दालनुं लदा ए समीकरणथी ज संवादी संधि मळे छे. आ प्रमाणे संवादी के विसंवादी संधिओ दाल लदाना समीकरणथी ज शक्य बने छे. लदादादामां दाल के लदा एक्केय नथी एटले त्यां संवादी संधि मळी शक्यो नहीं. अलबत्त एमां लदा छे, पण समीकरणमां पहेली मात्राए तालवाळो लदा के दाल संधि छे, लदाने समान रूप अशक्य छे.

आगळ दालदामां जोयुं ते रीते आ सप्तकलोनी उपपत्ति विचारी जोईए. आपणी पासे प्रथम मात्राए तालवाळो दादा संधि छे, अने तेवो ज प्रथम मात्राए तालवाळो दाल संधि छे. आ बन्ने जोडतां दालदादा अने दादादाल एम बे रूपो मळे. ए बन्नेमां आपणे उपर स्वीकारेला तालो यथास्थाने ऊतरेला छे. ए रीते आने ए बे संधिओनो बनेलो एक संश्लिष्ट संधि कही शकीए. संश्लेषनी उपपत्ति एवी पण आगळ चाले छे.

दालना पर्यायो अने दादाना पर्यायो उपरना संधिमां मूकतां जे जे रूपो मळे छे ते सघळां सप्तकल साथे संवादी थाय छे. आपणे करी जोईए.

दालदादामां त्यादा कायम राखी दालना पर्यायो गाल, लगा, ललल मूकी शकाशे: जेम के गालदादा, लगादादा, लललदादा ए बधां संवादी रूपो छे. तेवी ज रीते दाल गालल, दालललगा, दाल गागा, दालललललल ए पण संवादी छे. पण दादानांथी आपणे लगाल निष्पन्न करी शकता नथी, तो दादानो जगाए लगाल मूकतां निष्पन्न थतुं रूप संवादी नहीं बने. दाल-लगाल ए दालदादा साथे संवादी नथी.—दालदादा दाललगाल एम भेगुं बोली शकाशे नहीं. तेम ज दाल लगाल ए प्रमाणे ताल नांखीने पंक्ति रची शकाशे नहीं. एक दृष्टान्त बनावीने मूकुं.

देव समस्तनी सभाना सर्व सदस्य आविया छे.
दाल लगा लदा लगागा दाल लगाल दालगा गा

दादागाल के दादादाल, दालदादा साथे संवादी थई शकतुं नथी कारण के अहीं दालनो जगाए दादा आवे छे, ते एनो पर्याय नथी. तेम ज दादानी जगाए आवतो दाल पण एनो पर्याय नथी.

बीजी रीते ए ज संधिसंश्लेष दादादाल तरीके पण मूकी शकाशे. अने त्यां पण दरेक बीजभूत संधिना स्वीकार्य पर्यायो आवी शकशे, अस्वीकार्य नहीं आवी शके. दादाने स्थिर राखी दालना पर्यायो आवी शकशे जेम के दादालगा दादागाल दादाललल. तेम ज दालने स्थिर राखी दादाना पर्यायो मूकी शकाशे. जेम के गालल दाल, गागा दाल, ललगा दाल, लललल दाल. पण दादानी जगाए लगाल नहीं मूकी शकाय. मात्र संधिओनुं पठन पण संवादी नहीं लागे. आपणे मूकी जोईए.

दादा गाल लगाल दाल

ए प्रकारनी पंक्तिओ रची जोतां ए वधारे स्फुट थशे.

सवार सांज उपास्य देव
विशे ज ध्यान अवश्य मेव

शोभतुं नथी. ए उधोर जेवुं जरा पण जणातो नहीं. उधोर प्रमाणे तालनी मात्रा उपलब्ध होवा छतां ए उधोर बनतो नथी. एनुं पठन खटके छे. पछी एवुं खटकतुं ज पठन जोईतुं होय तो उधोरथी अन्य कोई छंद तरीके एने प्रयोजी शकाय ते जुदो प्रश्न. पण आ पृथक्करण अहीं साचुं ठरे छे.

उपर लीधेला संश्लिष्ट संधिओ दादादाल अने दालदादा ए बेमांथी एक्केयमांथी उपरनी पद्धतिए दादालदा के लदादादा एटले के उपरना विशिष्ट तालवाळा संधिओ निष्पन्न नहीं थई शके एटले ए संधिओने स्वतंत्र लई ए ज पद्धतिए तपासी संवादी पर्यायो शोधीए. एम करतां दादालदामां पर्याय आवी शके एवो मात्र एक ज संधि छे दाल एटले दादालदाना संवादी पर्यायो दागालदा, दालगादा, दालललदा एटला ज थई शकशे. तेम ज लदादादा संधिमां पण वच्चमां आवतो दादा मात्र पर्यायवाळो छे एटले तेना संवादी पर्यायो लगागादा, लगाललदा, ललगादा अने ललललदा एटला ज थई शकशे. दादानी जगाए लगाल मूकतां संधि विसंवादी थई जशे. ललगालदा (ताल ध्यानमां राखवाना छे) संधिनां आवर्तनोथी रचना थई शकशे नहीं. ललगालदा ललगालदा ए पठन पण विषम लागे छे. तेनी रचना करी जोईए: 'न कराय ए करवूं पडे' शोभतुं नथी. ए संवादी होवानो भास थाय छे तेनुं कारण के अजाणतां ज आनुं पठन दादालदा जेवुं थई जाय छे: 'न कराय ए करवूं पडे' ए प्रमाणे. बाकी ए लगालवाळो संधि त्यां संवादी बनी शकतो नथी. आम भिन्नभिन्न रीते उपपत्ति जोतां परिणामो बराबर जणाय छे. अर्थात् पृथक्करण साचुं छे.

अने पंचकलमां में जेम छेवटे कह्युं तेम अहीं पण कहेवुं प्राप्त थाय छे के जो के जातिछंदोना प्रयोजन माटे आपणने दादालदा संधि प्रकृतिभूत जणाय छे पण संगीतना प्रयोजनो माटे दादालदा, दालदादा, लदादादा, दादादाल बधा सरखा ज छे, अने संगीतकार तेमां पोतानी कलाने अनुकूल रीते गमे त्यां ताल नांखी तालविस्तार करी शके.

परिशिष्ट क

जातिछंदोनुं परिशिष्ट : डिंगलना छंदो

गया प्रकरणमां जातिछंदोना मेळनी चर्चा पूरी थाय छे. तेमां में गुजरातीमां परंपराथी चाल्या आवता जातिछंदोनो मेळ दर्शाविलो छे. आमां दर्शाविलो मेळ ए प्रकारना सर्व छंदोने लागू पडे छे ए बताववा बे भिन्नभिन्न परंपराना छंदोने हुं टूंकमां जुदां जुदां परिशिष्टमां जोई जवा इच्छुं छुं. तेमांनी एक परंपरा ते डिंगलनी. बीजी ते गझलोनी.

अहीं डिंगलना पिंगलोनी के डिंगल भाषाना स्वरूपनी चर्चा करवानो इरादो नथी. आ प्रकरण माटे एटलुं कहेवुं बस थशे के हिंदीथी भिन्न एक डिंगल भाषा छे, जेमां भाट चारणो कविता करता. अने ए डिंगलना पिंगलने पण डिंगल कहे छे. 'रणपिंगल' भाग ३जामां डिंगलना छंदो आपेला छे अने दृष्टान्तो गुजरातीमां तेम ज डिंगलमां पण आपेलां छे. ए गुजराती दृष्टान्तो मने एटलां सुन्दर नथी लाग्यां एटले एमां घणीखरी जगाए प्रमाणभूत गणेल डिंगलनो ग्रंथ 'रघुनाथरूपक गीतांरो', तेने ज प्रमाणभूत गणी हुं तेनां ज दृष्टान्तो अहीं आपीश. अलबत्त एम करवामां हुं जातिछंदोनो ज क्रम अनुसरीश. जातिछंदोना मेळ विशे मारे जे कंई कहेवानुं हतुं ते में सविस्तर आ पहेलांनां प्रकरणोमां कही दीधेलुं छे एटले अहीं हुं मात्र डिंगलनुं दृष्टान्त, ते उपरथी तेनी उत्थापनिका मूकां, आगळ कही गयेला मेळना सिद्धान्तोथी तेना स्वरूपनो खुलासो करीश, विशेष नहीं. अहीं आपेलां छंदोनां नामो डिंगलनां विशेष नामो छे, ए नामो कोई कोई जातिछंदोमां जुदा अर्थमां आवे छे, तेनाथी तेने भिन्न समजवां. हुं पहेलां थोडशी रचनाओ लउं छुं. प्रथम दुमेल :—

दुमेल

दशरथ नृप भवण हुआ रघुनंदण,
कवसल्या उर दुष्ट निकंदण।
रूप चतुरभुज प्रकटत रीधो,
दरसण निज मातानें दीधो॥

र. रू. गी. पृ. ६०

डिंगलनी एक खासियत अहीं ज नोंधवी जोईए. ते ए के तेमां घणा छंदोमां आद्य द्वालामां[1] एटले कडीओमां बे के त्रण मात्राओ वधारानी आवे छे. ए आद्य कडीओमां ज आवे छे, पछीनी कडीओमां आवती नथी. गीतनो ललकार शरू करवा ए वधारानी मात्रा गद्यनी बोलाती हशे एम हुं मानुं छुं:— जेम जातिछंदोमां आपणे जोयुं के केटलाक रोळाना पठनमां 'एह' एम प्रथम आवी पछी छन्द शरू थतो.

उपरना दुमेलमां पहेला चरणमां बे मात्रा वधारे छे, ते बाद करतां बधां चरणो सोळ मात्रानां, चार चतुष्कलनां छे, अने तेना अंतनुं कोई एक ज प्रकारनुं लगात्मक रूप निश्चित नथी. अंत्य संधि प्रथमनी बे पंक्तिओमां गालल छे, बीजी बेमां गागा छे. आगळ ललगा पण आवे छे. प्रास बब्बे पंक्तिनो छे, ए खास नोंधवुं जोईए कारण के मात्र प्रासना फरकथी डिंगल कविओ छंदने जुदुं नाम आपे छे. आनी उत्थापनिका

दादा दादा दादा दादा[1]
दादा दादा दादा दादा[2]

१ अने २ चतुष्कलोनो प्रास.

आ पछी हुं पालवणी लउं छुं. दृष्टान्त :

पुलियो नेह चाप कंव तोपाणि,
धाम जनक मिलिया रजधाणी।
हतो कठै पोरस कुल हाणी,
अब तै सिया दगंकर आणि॥

र. रू. गी. पृ. १६६

दुमेलमां अने पालवणीमां एटलो ज भेद छे के दुमेलमां बब्बे पंक्तिओनो प्रास छे, पालवणीमां चारेय चरणोनो एक ज प्रास छे. आ प्रासना कारणे दुमेलने अर्धपालवणी पण कहे छे. आमां पण प्रथम पंक्तिमां बे मात्रा वधारे आवे छे. उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी. आ पालवणीना त्रीजा चरणने प्रासमुक्त राखी १–२–४ चरणोनो सळंग प्रास राखतां झडळुपत थाय छे.

१. द्वाला शब्दना सामान्य अर्थ छंद के कडी थाय छे. जुओ 'रूपक' पृ. ५२, ५९. पण क्यांक दल के चरण पण थाय छे (एजन पृ. ६२). पहेलो अर्थ सामान्य होई हुं ए अर्थमां ए शब्द वापरुं छुं. ए शब्द गुजरातीमां रूढ करवा जेवो छे. 'रणपिंगल'मां दवालो शब्द आवे छे. रणपिंगल भाग – ३. डिंगळ पृ – १.

झडनो अर्थ डिंगलमां पद थाय छे. आमां एक पदमां एटले के त्रीजा चरणने अंते प्रास लुप्त छे. माटे तेने झडळुपत कहेल छे.

झडळुपत

डेरा रोपया उत्तर दिस डारण,
मन नहचै लंकेसुर मारण।
बले विचार करे लिवमीवर,
धरे जनम मरजादा धारण ॥

र. रू. गी. पृ. १७८

आमां पण प्रथम पंक्तिमां त्रण मात्रा वधारे आवे एम 'रूपक' कहे छे. पण डेरा शब्दमांथी त्रण मात्रा बाद करीने पाठ थई शके नहीं. एटले हुं आ नियम अने पहेली पंक्तिनो पाठ खोटो मानुं छुं. 'रणपिंगल' पहेली पंक्तिमां बे ज मात्रा वधारे कहे छे, अने पाठ 'डेरा रोपिया उतर दख डारण' आपे छे. (डिंगल पृ. ६९, ७०) तेमां आवतुं माप प्रमाणभूत गणवुं जोईए. तेमां बे मात्रा वधारेनी गणी रा रो,पिया उ, तर दख वगेरे शब्दोनो चतुष्कलोमां पाठ थई शके छे. आ उपरथी डिंगल प्रासने केटलुं महत्त्व आपे छे ते जणाशे. आ पछी ईलोल.

ईलोल

मंदोदर! भोलैं भूलमती,
जल आसी बारध लांघजती।
जल आयर बारध लांघजती
मुँह मडैं भोलैं भूलमती ॥

र. रू. गी. पृ. १६९

एनुं लक्षण एवुं आपेलुं छे के दरेक पंक्तिमां चार चतुष्कलो, छेल्लुं चतुष्कल सगण एटले ललगा, चारेय पंक्तिनो एक सळंग प्रास, अने बीजी पंक्तिना शब्दोनो त्रीजी पंक्तिमां ऊथलो आवे, अर्थात् एमांना केटलाक शब्दो फरीने आवे. पण पठन करतां मालूम पडशे के पहेली बे मात्रा निस्ताल रहे छे, अने पछी ताल शरू थाय छे. उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दा] ।दादा ।दादा ।गालल ।गा

अंत्य गुरु, पछीनी पंक्तिना निस्ताल दा साथे जोडाई चतुष्कल रचे. उपर बताव्यो ते ऊथलो डिंगलना छंदोनुं एक महत्त्वनुं लक्षण छे. घणा छंदोमां ए आवे छे.

आ पछी उमंग लईए.

उमंग

कटिया श्रुतनाक लिया कर में
रचना कह सूपनखा घरमें ।
नारी इक वीर उभै नर में
तिसडी न लखी सुपनंतर में ॥

र. रू. गी. पृ. १३३

'रूपक' सोळ मात्रा, अंतमां गुरु, अने चारेय पंक्तिमां एक ज प्रास एटलुं ज लक्षण आपे छे. पण पठन करी जोतां ईलोलनी पेठे आमां पण पहेलो निस्ताल दा आवे छे तेने जुदो करी उत्थापनिका करवी जोईए. फरक ए छे के ईलोलमां अंते गालल गा आवतुं हतुं, आमां अंते दादा गा आवे छे.

उत्थापनिका : दा] दादा दादा दादा गा

ते पछी सावक अडल लईए :

सावक अडल

दासरथी लिखमण सुत दशरथ,
दोऊ सुणे सिधारे दसरथ।
दीह उचाटी कीधे दशरथ
दीधो प्राण पछाड़ी दशरथ ॥

र. रू. गी. पृ. ११२

आ चार चतुष्कलोनी पंक्तिवाळी षोडशी सादी रचना छे. एनुं विशेष लक्षण मात्र एटलुं ज छे के तेमां एक ज चतुष्कल शब्द चारेय पंक्तिने अंते आववो जोईए. आनो एक बीजो प्रकार पण छे.

निरखे अवासां भर निजर,
नह देखे दशरथ नृप निजर ।
निज देखे नह बंधव निजर,
नर दीठा विलख्या सह निजर ॥

एजन, पृ. ११३

उपर करतां फरक एटलो ज छे के अहीं अंत्य चतुष्कलनी एक मात्रा खंडित थई ए त्रिकल नगण बने छे, अने ए त्रिकल शब्द चारेय पंक्तिने अंते आवे

छे. ए त्रिकलनो अंत्य लघु विलंबाई त्यां चतुष्कलनुं कालमाप पुरुं थाय. प्रथम पंक्तिमां 'अवासां' शब्दमां अ गुरु इष्ट छे. त्यां कदाच 'आवासां' शब्द हशे, अथवा ते पछी आवतो व बेवडो बोलाई अ गुरु थतो हशे.

आ पछी सेलार छंद लईए.

सेलार

तपसीरो रूप धरे अतताई
अडंग कुटी गइ सीत उठाई।
सिवल पुकारी साद सुणीजे
कीजे हो हरि! बाहर कीजे॥

र. रू. गी. पृ. १३५

आ पण चतुष्कल षोडशी रचना छे. दुमेलनी पेठे तेना पहेला छंदनी पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे आवे छे. बीजी पंक्तिमां छन्दनी दृष्टिए 'अडंग'ने बदले 'अडर' पाठ वधारे सारो छे. छेल्ला एटले चोथा चरणमां विधि नामनो शब्दालंकार आवे छे. विधिना स्वरूप विषे विशेष जाणवा मळतुं नथी पण तेनी जरूर पण जणाती नथी. 'रणपिंगल' विधि शब्द न वापरतां केवळ शब्दालंकार शब्द वापरे छे (डिंगल पृ. ७४). आ गीतमां पछीना छंदोनां छेल्लां चरणो 'धीरो रे आयो हूं धीरो।' 'भागो रे नभ मारग भागो।' 'दीजो रे प्रभुनूं सुद दीजो।' अने 'छोडे रे तन सील न छोडे।' ए प्रमाणे आवे छे ए उपरथी एनुं सामान्य स्वरूप जणाई आवशे. आम आवी सादी द्विरुक्तिथी थती असरोने पण डिंगल महत्त्व आपी तेनो नवो छंद बनावे छे. आ पछी सवैयो — डिंगलनो सवैयो लईए.

सवैयो

परहस्त पटे, कर झूंश कटे।
भिदवांण भटे, हदमांण हटे ।
रतकुंभ जगावण राण रटे॥

र. रू. गी. पृ. १९८

डिंगले प्रासे प्रासे पंक्ति गणी छे, पण छेल्ली पंक्तिनुं स्वरूप जोतां एने षोडशी त्रिपदी गणवी मने योग्य लागे छे. गुजरातीमां जे सवैयो रचना प्रसिद्ध छे तेथी आ बहु भिन्न छे. आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

ललगा ललगा' ललगा ललगा।
ललगा ललगा' ललगा ललगा।
ललगा ललगा ललगा ललगा।

मध्य यति तेम ज चरणान्त यति मळी कुल पांच यतिस्थानोनां चतुष्कलोमां सळंग प्रास. गुजरातीमां जातिछंदोमां कोई त्रिपदी रचना नथी, अहीं छे.

आ पछी त्र्यंबको लईए: हुं मारी रीते पंक्तिओ पाडी लखुं छुं.

त्र्यंबको

पूछी मां आगल जाय प्रभा।
पितु बंधु न दिसे अंग प्रभा।
सज–राज न रंग न रंग नरा, गन राज न रंगन राज सभा। १
पुत्तर वर मांगो नृप पासं।
यह सो सुत औ लिय तिण पासं ।
श्रीराघव लिखमण लिखमण राघव राघव लिखमण वनवासं २

एजन, पृ. ११४

डिंगल आने चतुष्पाद रचना गणे छे, में त्रिपाद गणी छे. त्रणेय पादोमां एक सळंग प्रास आवे. पहेली बे पंक्तिओ चार चतुष्कलोनी थोडची रचना, त्रीजी आठनी बत्रीसी रचना, पण तेमां उपर बताव्या प्रमाणे शब्दो फरी फरीने आववा जोईए. आ प्रमाणे शब्दो फरी फरीने आवे एवी डिंगलमां घणी रचनाओ छे. डिंगलमां घणे भागे ललकारीने बोलवाना छंदो आवे छे, अने तेमां मात्र पुरुकित पण पठनथी अक्षर करी शके छे. मूळ प्रमाणे त्रीजी पंक्तिने एक न गणतां बे गणवा जतां बीजा छंदमां यतिभंग थाय, एटले त्यां सळंग पंक्ति ज इष्ट जणाय छे. पठन जोतां आ रचनामां पण पहेली बे मात्रा निस्ताल जाय छे ते दूर करीने दादानां आवर्तनो गणवां जोईए. उत्थापनिका ए रीते नीचे प्रमाणे थाय:—

दा] दादा दादा दादा गा
दा] दादा दादा दादा गा
दा] दादा दादा दादा दादा दादा दादा दादा गा

त्रणेय पंक्तिने अंते एक सळंग प्रास.

डिंगल षोडशीथी वधारे लांबी रचनाओने पण षोडशी तरीके ज निरूपे छे, पण हुं मारा क्रम प्रमाणे निरूपण करीश. अने हवे मारी दृष्टिए जे बत्रीसी रचनाओ छे तेनुं निरूपण करीश. सौथी सादो प्रथम त्रंबकडो लउं छुं:

त्रंबकडो:

अंगद मेलियो सद दूत अपंपर, बल अकलां मजबूत बडालो।
वप सिणगार धूत खल बैठो, रचे सभा अदभूत रढ़ालो॥

र. रू. गी. पृ. १७९

दुमेलमां जेम गीतनी प्रथम कडीमां त्रण मात्राओ वधारे आवे छे तेम अहीं पण त्रण मात्रा वधारे आवे छे. ते पछी दादानां आठ आवर्तनो आवे छे. सोळ मात्राए यति आवे छे. खास उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी. 'अंग' एटलुं गद्यमां बोलो पछी चतुष्कलबद्ध पाठ करतां बराबर सवैयो बत्रीसो जणाशे. बीजी पंक्तिमां 'वप सिण' चतुष्कल पछी 'गार धूत खल' आवे छे ते दालगालदा अष्टकल संधि छे, ते कहेवानी जरूर नथी. डिंगले उपरना छंदने षोडशी रचना गणी छे, अने हुं एने बत्रीसी गणुं छुं एटले, डिंगल प्रमाणेनो चतुष्पाद छंद मारी रीते निरूपतां द्विपाद बने छे. आ परिणाम बधी बत्रीसी रचनामां आवशे. आ पछी हुं छोटो साँणोर लउं छुं:

छोटो साँणोर

एकण दिन अमर सकल मिल आया, करी अरज सांभल करतार!
राज बिना मारै कुण रावण, भूरो कवण उतारै भार।१
इला सखत मंडियो असुरांणों, संकट जीरो अकथ सहां।
दीनानाथ! तूझ बिन दुखरी, किणनै जाय पुकार कहां॥ २॥

र. रू. गी. पृ. ९८

आमां पण काव्यना पहेला छंदमां बे मात्राओ वधारे छे, ते छोडीने छंदनुं पठन करवानुं छे. 'रूपक' त्रण मात्राओ वधारे कहे छे पण ते भूल छे. छोटो साँणोर छंदनां चरणो विकल्पे एकत्रीस मात्रानां अने त्रीस मात्रानां होय छे. एकत्रीस मात्रानां होय त्यारे आठमो संधि गाल आवे, त्रीसनां होय त्यारे आठमो संधि गा आवे. पहेली कडी एकत्रीस मात्रानी गालान्त छे, बीजी त्रीसनी गान्त छे. एम अहीं अंत्य संधिनी एक अने विकल्पे बे मात्राओ खंडित थई छे.

सांणोरना चार प्रकार गणाय छे. तेमांनो पहेलो बेलियो ते ३१सो गालान्त सवैयो छे, अने बीजो सोहणो ते गान्त त्रीसो सवैयो छे. तेनां उदाहरणोनी जरूर रहेती नथी. त्रीजो प्रकार जांगडो छे. ए २८सो चोपायो छे. आपणे दृष्टान्त लईए:

जांगडो साणोर

पड़ियो मुरझाय सेस इल ऊपर सकत राण सुत सांझी।
थरके भाल वन चरां थाणा, मुख कुमलाणां मांझी॥

र. रू. गी. पृ. १९१

प्रथम पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छे ते पछी चतुष्कलो चाले छे. सोळ मात्राए यति छे, ए कहेवानी जरूर नथी कारणके 'रूपक' तो ए यतिखंडने चरण ज गणे छे. अंत्य चतुष्कलमां बे गुरु इष्ट छे, जो के 'रूपक' एने लक्षण गणतुं नथी. आठमुं चतुष्कल आखुं अहीं अनक्षर रहे छे. 'रूपक' आ रचनानुं एक लक्षण कहे छे के आमां क्यांक क्यांक नगण ललल अवश्य आववो जोईए. सांणोरनो त्रीजो प्रकार खुडद साणोर छे. आपणे उदाहरण लईए:

खुडद साणोर

व्याकुल लख सेस विभीषण बोले, कमलापतसूं जोर कर।
धनुधरण धीरज उर धरजै, हिव कीजै उपचार हर॥ १॥

एजन, पृ. १९२

प्रथम कडी के द्वालामां बे मात्रा वधारे छे, बाकी आ २९सो सवैयो छे, जेमां सोळ मात्राए यति छे, अने अंत्य आठमा संधिनी त्रण मात्रा खंडित थई त्यां मात्र एक ज लघु रहे छे. ए अंत्य लघु चार मात्रानो प्लुत बने छे. आ मात्राखंडन आभाणक जेवुं ज छे जेनो अंत्य चतुष्कल संधि एक मात्र लथी पुराय छे. अने आभाणकनी पेठे ज ए अंत्य लना उच्चारणने मदद करवा आगला संधिनी अंत्य बे मात्रा पण बे लघुरूप ले छे. जाति छंदोमां सवैयानुं आभाणक जेवुं स्वरूप गुजरातीमां आवतुं न हतुं, ते अहीं आवे छे. आपणे प्रथम आभाणक आपी पछी खुडद साणोरनी उत्थापनिका मूकीए, जेथी बन्ने सरखावी शकाय.

आभाणक: दादा दादा दादा दादा दालल ल
खुडद साणोर: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दालल ल

बन्ने जगाए अंत्य लघु पछीनी चतुष्कलनी त्रण मात्राओ अनक्षर रहेली छे. 'रूपक,' सुद्ध साणोरनुं स्वरूप आपतां अंते बे लघु मात्रा कहे छे पण तेना उदाहरणमां सर्वत्र उपर प्रमाणे दालल ल आवे छे, अने ए ज खरुं स्वरूप जणाय छे. आ पछी हुं पंखालो लउं छुं:

पंखालो

धरियो पण जनक इसी मन धारे धनक पिनाका चडाय धरैं।
महपत आय सयंबर माहें बसुदा कुंमरी तिको वरैं॥ १॥
तात हूंत इधकी परतिग्या, सांभल बात कहूं सरसाल।
तनमन धार भाल दसरथ तण, में गल राल दई बरमाल॥ २॥

एजन, पृ. ७४

आमां छोटा साणोरनी पेठे त्रीसो अने एकत्रीसो सवैयो विकल्पे आवी शके छे, त्रीसा सवैयानी पंक्ति गान्त होय, एकत्रीसानी गालान्त होय. 'रूपक' साणोरथी आनो भेद बतावे छे के साणोरमां लघु गुरु भेद छे आमां नथी, पण साणोरमां पण ए भेद मात्र अंत्य संधि संबंधी हतो, अने ए तो अहीं पण सचवायो छे. मारा पोताना प्रयोजन माटे मने आटलुं निरूपण पूरतुं लागे छे. आ पछी सिहचलों लईए:

सिहचलों

परगत इम भ्रात चहूं परणीजे, माण किता चा मारिया।
डांणां हूत सजोडा डेरां पाछा बींद पधारिया॥ १॥

एजन, पृ. ८६

पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छे, ते बाद करी आनो मेळ विचारवानो छे. आ कृति प्लवंगमनी पेठे छेल्ला बे संधिओ खंडित थईने बनेली छे, अने प्लवंगमनी पेठे ज तेने अंते प्लुतिबद्ध गालगा आवे छे जेमां प्लुतिनी मात्रा पूरतां ते अष्टकल बनी रहे छे. सुद्ध साणोर जेम खंडित मात्रानी पद्धतिए आभाणकने मळतो छे तेम आ सिहचलों प्लवंगमने मळतो छे. बन्नेने सरखावी शकाय माटे बन्नेनी उत्थापनिकाओ साथे साथे मूकुं छुं:

प्लवंगम: दादा दादा दाल'ल दादा गालगा
सिहचलो: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गालगा

बन्ने जगाए गालगा उच्चारणमां गा॒लगा — थईने अथवा प्लवंगमने अंगे बतावेलो छे तेवो कोई बीजो रीते प्लुति साथे अष्टकल बने छे. प्रसिद्ध गुजराती जातिछंदोमां आने मळती कोई रचना नथी.

आ पछी आने मळती रचना लहचाल लईए :

लहचाल

सुत भ्रात कटे सक घोट वधे धक,
बीस भुजाण बिचारियो जी।
निरखीजां वानर नेम गमुन्नर,
धेख इसों मन धारियो जी ॥ १

एजन, पृ. २१३

पहेली बे मात्रा निस्ताल रही पछी गालल्नां छ आवर्तनो आवी छेल्ले गालगाजी आवे छे. गालगानां आवर्तनोमां क्यांक गागा पण आवी जाय छे. आ अंते आवता गालगाजीने लीधे त्यां गा ⌣लगा – $\frac{\text{जी}}{\text{गा}}$ – एम अष्टकल उपर बीजी चार मात्रानुं चतुष्कल मूकी रचना करी जोवानो प्रथम विचार आवे पण आनुं पठन जोतां हुं आने संख्यामेळमां मूकवा इच्छुं छुं एटले ए प्रकारमां आनो फरी विचार करीश.

आ पछी हुं अमेल लउं छुं. एनो अर्थ मेल एटले प्रास विनानो थाय छे. आखा डिंगलमां आ एक ज प्रासहीन रचना छे. एनुं लक्षण आप्युं नथी पण ए छोटो साणोर अने पंखाला जेवो त्रीसो एकत्रीसो सवैयो छे.

अमेल

सबरी वन मांहि प्रीत सूं सांचो, उवर जठै दरसण अभिलाख।
आश्रम उभै सहोदर आया, त्रिभवण नायक सेस तठै॥ १॥

एजन, पृ. १४१

पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छे, ते जतां बाकी रहेली पंक्ति एकत्रीसा सवैयानी गालान्त छे, बीजी त्रीसानी गान्त छे. आ पछी अरटियो.

अरटियो

एकण दिहाड़ै मुनिराज अजोध्या, कोसक आवण कीधो।
राजाहूत मिले रिषराजा, दो मझ आसण दीधो॥ १॥

एजन, पृ. ६४

छंद शुद्ध २८सो चोपायो छे, विशेष एटलं के अंते बे गुरु जोईए अने 'रूपक' कहे छे के पंक्तिमां क्यांई नगण (ललल) न आवे. प्रथम पंक्तिमां त्रण मात्रा वधारे छे. जांगडो साणोर अने आ अरटियामां फेर एटलो ज छे के अरटियामां नगण न आवे, जांगडामां नगण क्यांक क्यांक अवश्य आवे. उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी. आ पछी अरट लईए :

अरट

इम राज करैं अजनंद आयोध्या नेत बंधी नियतंत।
जंगा जीत तपोबल जालम ओप बडैं अखडंत॥ १

एजन, पृ. ६२

आ सत्तावीसो चोपायो छे. तेने अंते गाल आवे छे. अने गुजरातीमां जेम दोहरामां अने मरहट्ठामां अंते आवता गालमां अंत्य लघुस्थाने घणेभागे अ होय छे तेम अरटमां पण अंत्य लघु स्थाने अ ज आवे छे. पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे होय छे. उत्थापनिका :

अरट : दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गाल

आ पछी हुं झडमुगट रचना लउं छुं :

झडमुगट

तरवर वन सिखर जोवतां सरतर, कर सारंग तुन्नीर कर।
वर लोहा दीठो अंग रवूवर, पर घर पडियो घरण पर॥ १॥

एजन, पृ. १४०

आ रचना सुद्ध साणोरमां अमुक रीतना प्रास मूकवाथी थयेली छे. हुं प्रथम आ रचनानी उत्थापनिका आपुं, तेथी तेनुं स्वरूप दर्शाववुं वधारे सहेलुं पडशे.

लल ललदा दादा दादा दालल' ललदा दादा दालल ल
ललदा दादा दादा दालल, ललदा दादा दालल ल

पहेली बे मात्रा चरणमां वधारानी छे ते दूर करी छंद जोवो जोईए. सुद्ध साणोर पेठे आमां चार यतिखंडो छे. तेमां अंते 'रूपक'ना कहेवा प्रमाण बे लघु—पण मारी दृष्टिए त्रण लघु आवश्यक छे. आ रचनामां विशेष ए छे के बधा यतिखंडोमां पण पहेलुं चतुष्कल ललथी शरू थवुं जोईए, अने ललथी तेनो अंत आववो जोईए, दरेक यतिखंडमां पहेला बे लघु अक्षरो छे ते ज यतिखंडोमां छेल्ला आववा जोईए, अने चारेय यतिखंडोना प्रास

मळवा जोईए. खुडद साणोरमां अमुक अमुक स्थाने दानी जगाए बे लल मूकी, अमुक प्रासरचना करी ए ज आनुं विशेष छे. आ पछी हंसावलो लईए:

हंसावलो

पयधररा मथण जगतरा पालग, सररा अचल संतरा साथ।
वररा दियण जगतरा वच्छल, नररा रूप नमो रघुनाथ॥ ११॥

एजन, पृ. १४८

पहेली बे पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छे ते काढी नांखतां आ गालान्त एकत्रीसा सवैया रचना छे. तेमां विशेष ए छे के तेमां रा (छठीनो प्रत्यय) फरी फरीने आववो जोईए. 'रूपक' कहे छे के आमां उल्लेखालंकार आववो जोईए. ए अलंकारनो अर्थ ए छे के एकने बहुविधे बहुगुणथी वर्णववो. खरुं कहीए तो शब्दोना अमुक रूपना पौनःपौन्यनी आ रीति छे. आने मळतो पाडगत छे ते लईए:

पाडगत

गंगाग्डदि दुहुओडां दल गाजें, ताग्डदि तबल बाजें रिणातूर।
राग्डदि राम रावण जुध रोपे, साग्डदि समाग अडे सजसूर ॥ १॥
भाग्डदि भूत जोगण गण भैरव, आग्डदि अमर अपछर गण आंण।
पाग्डदि प्रबल परचर दुर पेखत, वाग्डदि व्योम सुर छया विमांण।

एजन, पृ. २१६

डिंगलनी पद्धति प्रमाणे पहेला चरणमां वधारानी मात्रा छे, एटले स्वरूप निर्णय माटे हुं बीजी कडी लउं छुं. आ जातिना पठनथी जणाशे के आ चतुष्कल रचना छे, तेमांना रवानुकारी शब्दो दूर राखी वारंवार पाठ करी जोतां जणाशे के ए रवानुकारी अक्षरोथी त्रण लघु बने छे. ए त्रण लघुओथी क्यांक सर्व लघु चतुष्कल बने छे, क्यांक लललगालदा अष्टकल बने छे. हुं छेल्ली पंक्तिमां चतुष्कलो अल्पविरामथी अने अष्टकलो अर्धविरामथी बतावुं:

पाग्डदि प्र, बल पर,चर दुर, पेखत,
वाग्डदि व्योम सुर; छया वि, मांण

पहेला यतिखंडमां लललल, लललल, लललल, गालल एम चतुष्कलो पडे छे. बीजामां लललगाललल; एम पहेलुं अष्टकल आवे छे, पछी लगाल, गाल

एम संधिओ आवे छे. आ रीते गणतां पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छ. 'रूपक' त्रण मात्राओ वधारे कहे छे ते भूल छे. केवळ रवानुकारी शब्दोथी अहीं नवो छंद करेलो छे. बाकी आ गालान्त एकत्रीसो सवैयो छे. आ पछी हुं सतखणों लउं छुं.

सतखणों

आया मृग मार सेसनूं आखे, बंधव! सुणो सबीता ।
दारुण कुटी विडंगी दीसै, सही गमाई सीता ।
रे मन मीता रे मन मीता किण विध कीजिये ॥ १ ॥

एजन, पृ. १३८

पहेली पंक्तिमां बे मात्रा वधारे छे ते बाद करतां आनी पहेली बे पंक्तिओ आंगडो साणोरनी एटले २८सा सवैयानी छे. अने त्रीजी पंक्तिमां छेवटे गालगा छे तेने अष्टकल गणतां ए पंक्ति पण २८सी बनी रहे छे. आ त्रीजी पंक्ति छंदमां रे थी शरू थाय छे अने ते पछी आवता बे शब्दो रे साथे बेवडाय छे. अने पछीनुं वाक्य आखा गीतमां एनुं ए आवे छे. आ पछीना छंदोनी पंक्तिओ नीचे प्रमाणे छे: 'रे रंग खोटे रे रंग खोटे, किण विध कीजिये'॥ 'रे सुध आवै रे सुध आवै, किण०।' 'रे वृत्तधारी रे वृत्तधारी, किण०।' 'रे जणम्हारा' वगेरे. आमां त्रीजी पंक्ति टेकना प्रकारनी छे. आ पछी दीपक लईए: एनुं स्वरूप बराबर समजाय माटे एनी पंक्तिओ हुं मूळमां छे तेथी जरा जुदी रीते लखुं छुं:

दीपक

इसवर सीय सेस चढे रथ ऊपर, तहक सारथी खडे तुरंग
नगर हलक हाले नरनारी
भर धंधो छोड़े घरबारी
मिल तानूं दी सीख उमंग ॥ १ ॥

एजन, पृ. १०९–१०

पहेली पंक्ति (त्रण वधारानी मात्रा बाद करतां) गालान्त एकत्रीसा सवैयानी छे. पछीनी बे पंक्तिओ शुद्ध षोडशी चोपाईनी प्रासबद्ध छे, अने तेमांनी बीजी पंक्तिने छेल्लुं पद एवी रीते मळे छे के ए आखी पाछी ३१सा सवैयानी थई रहे. एटले के ए पंदर मात्रानो सवैयानो उत्तर यतिखंड छे. एक सुन्दर वैचित्र्यमय रचना छे. वधारानी त्रण मात्रा छोडतां उत्थापनिका:

दीपक: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गाल

दादा दादा दादा दादा
दादा दादा दादा दादा
दादा दादा दादा गाल

गालनी साथे गालनो अने वचली बे पंक्तिमां दादा साथे दादानो प्रास मळे. आ पछी चोटियो लईए:

चोटियो

बारें आवरं रिण रोपण बंका, बंधु सुग्रीव बकारें।
ऊठ सुण धूमजधडअधायो, धींग कोध उर धारै।
हूं हिव आवियो पगमांड हकारें॥ १॥
मौने आय अनाहक मार्यो, साम खून बिण लेसा।
जादव बंश देवकी जामण, घर अवतार धरेसा॥
दाखै दसरथ सुत बदलो जद देसां॥ ४॥

एजन, पृ. १५३-५४

पहेलामां त्रण मात्रा वधारे छे एटले ए न लेतां बीजी कडी ज लईए. तो जणाशे के पहेली बे पंक्तिओ २८सा चोपायानी गागान्त छे. तेनी साथे एक टूंकी ए ज प्रासवाळी पंक्ति वळगाडेली छे. डिंगलमां अने रूपकमां आपेला गीतमांथी आ टूंकी पंक्तिनुं माप निश्चित थई शकतुं नथी पण उपर आपेला गीतनी छेल्ली पंक्तिमां पांच चतुष्कलो स्पष्ट छे. त्यां छठ्ठुं विलंबन के विरामक रहे. आ पछी एक घणी ज वैचित्र्यमय रचना लईए चित्तविलास :

चित्तविलास

धनुधारे! रे धनुधारे!
सर एका बाल सिधारे!
महाराजधिराज सुग्रीव मनांरा सारा कारज सारे।
कीधो भूप पुरी केकंधा दोवण दूर विदारे
रे धनुधारे॥ १॥
रघुराजा! रे रघुराजा!
रिष मूक गिडंद दराजा।

चोमास रहे वे भ्रात सुचंगा ताम घटे जस ताजा।
देखे राम पयोधर दामण सीत विरह तन साजा।
रे रघुराजा॥ २

एजन, पृ. १५५–५६

आ जरा अटपटी रचना छे, गेय छे, पण शुद्ध चतुष्कलोनी छे, अने जाति-छंदो जेवा ज तेना संधिओ स्पष्ट छे. हुं नीचे तेने चतुष्कलोमां दादा संधिओमां पृथक्कृत करी मूकुं छुं:

	धनु	धा रे	रे धनु	धा रे	—			
	दा	दादा	दादा	दादा	दा			
	सर	ए का	वाल सि	धारे	रे धनु	धारे	—	
	दा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दा	
महा	राजधि	राजरु	व्रत म	नारा	सारा	कारज	सारे	—
दा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा
कीधो	भूपपु	र के	कंधा	दंडक	दूर वि	दारे	रे धनु	
दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	
						धारे	—	

रघु	राजा	रे रघु	राजा	—		
दा	दादा	दादा	दादा	दा		
रिध	मूकगि	डंद द	राजा	रे रघु	राजा	—
दा	दादा	दादा	दादा	दादा	दादा	दा
चो	मास र	वगेरे				
दा	दादा					

आ प्रमाणे छंदना चतुष्कलोनी व्यवस्था छे. उपरनी उत्थापनिकामां में 'धनुधारे' जुवनी पेठे बेवडेल छे, ते मने पठन करतां आवश्यक जणाय छे. हुं मानुं छूं के त्यां पठन ए रीते थतुं हशे जो के में सांभळेलुं नथी. पण एटलो भाग काढी नाखवो होय तो काढी शकाशे अने 'गारे' पछी बे अनक्षर मात्रा राखो तेने पछीनो लांबी पंक्तिना पहेला निस्ताल दा साथे जोडी उपरनी पेठे ज चतुष्कल रचो शकाशे. बन्ने रीते चतुष्कलो बेकी संख्यानां थई रहेशे. अलबत्त आनो पाठ सांभळ्या विना आ व्यवस्था में करी छे एटले अंशे उपरनी उत्थापनिका अजमायशी गणाय.

निशाणी नामनी केटलीक रचनाओ डिंगल आपे छे, तेमां घणीखरी चतुष्कल रचनाओ छे. आपणे ते लईए:

शुद्ध निशाणी

सिध अजा सामल सलल पावे इक थाला,
तसकर दवे उलूक ज्यूं ऊँगां किरणालां ।
पडीन छेडै पारको विहुवरण विचाला,
ऐसा राज करै अवध दशरथ नृपवाळा ।। १

एजन, पृ. २७०

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दादा दादा दालदा' दादा दादा गा

दूहाना अर्धनी एक पंक्ति छे, तेमां फरक एटलो ज छे के दूहामां अंते गाल आवे छे तेनी जगाए अहीं मात्र गा छे. दूहानो आवो एक प्रकार आपणे जोयो पण हतो (गत पृ. ४१३).

गरवत निसाणी

दढ़ प्रताप आठूंदिसा पसरै अवनी पर ।
हितू कमळ फूले विहद भात चक्र हणभर ।।
नित अरात कहुँ लेर नह तह के दुख तोमर ।
सूरजकुल सूरज तपै बड़ तेत सियावर ।। १

एजन, पृ. २७०

उत्थापनिका :

दादा दादा दालदा' दादा दादा लल

शुद्ध निसाणीनी पेठे ज दोहाना अर्धनी एक पंक्ति अने शुद्ध निसाणीने अंते गा हतो तेनी जगाए अहीं बे लघु छे, एटलो ज फेर. बाकी दूहानो ज मेळ छे.

निसाणी गध्धर

जिण पुर नुपराजे अवरन गाजै केवल मेघ घुरायंदा ।
सब रहे ठिकाणे हुकम प्रमाणे, मारुत मते जलाइंदा ।।
कालाद अराणें भय नहिं आणें भय दुज दीना लायंदा ।
राघव राजिन्दा अवधति नंदा, अैसा राज दिपा यंदा ।। १

एजन, पृ. २७१

आपणे आगळ जोई गयेल आ पद्मावती ज छे. एना ज आंतरप्रासो पण छे. (जुओ गत. पृ. ३१७, ४१८) फरक मात्र एटलो ज के आ निसाणीमां चरणान्ते त्रण गुरु इष्ट गणेला छे.

निसाणी पैंडी

जिण रइयत सात सुखां सरसाई, सातू ईत भीत नहकाई,
निजदल गवण अगम कर दीरघ घेरत नगर अरंदा ह।
षट रित ही सुफल कुसुम वन दरखत, षटही साख उपावै हरषत
बारह मास सदा मन भाया पावस पूर झरंदा है। १

एजन, पृ. २७२

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दा] दादा दादा दादा दादा' दादा दादा दादा गागा
दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गागा गा
दा] वगेरे

पहेली पंक्तिमां पहेलो दा निस्ताल छे. पछी बत्रीसो सवैयो आवे छे जेना छेल्ला त्रण अक्षरो गुरु छे, अने यतिखंडोनो प्रास छे. पछी बीजो पंक्तिमां त्रीसो सवैयो छे, जेनो छेल्लो गा पछीनी पंक्तिनो दा पकडी आखुं चतुष्कल रचे छे. नरसिंहराव 'नूपुरझंकार'मां आ छंदनो प्रयोग करे छे, ते उपर प्रमाणे ज छे, परंतु कंईक सरतचूकथी तेओ उपर आपेली बीजी पंक्तिने सवैयो माने छे. तेमनो छंद जोतां ते उपर प्रमाणे ज नीकळशे.

जो! पांडव कौरव रमण चढावी, चंद्र वंशने बहु दीपावी
लुप्त कर्या निर्वाण विषे सहु उदय अस्त पलटावीने.

नूपुरझंकार, पृ. ८८

बीजी पंक्ति ३० मात्रानी छे, एकत्रीस के बत्रीसनी नथी. पछी एमणे त्रीसी रचनाने पण सवैयो कही होय तो कशुं कहेवानुं रहेतुं नथी.

निसाणी सिर खुली

नाचै मोर निहारे अहिफण ऊपरे,
मूषक सीस न धारैं घात मंजारियां ।
माहोमाह न मारैं बैर बुन्यादरां,
ऐसे तेज अकारें राजैं रघुपति॥

एजन, पृ. २७३

आनी उत्थापनिका करतां ते बराबर प्लवंगम थई रहे छे, पण फरक ए छे के आ निसाणीमां बार मात्राए यति आवे छे, अने बार मात्राना चारेय यतिखंडो प्रासथी जोडेला छे, अने चरणान्त प्रास छे नहीं.

निसाणी सोहणी

फिरैं नचींता ग्वालिया गायाँ सिथ करैं रखवाली।
निधडक एण पिलंग सूं दावालेण लगाकर आली॥
चिडिया आद विहंग वन वार्जां हुत हसें दे ताली।
बधे गरीबाँ बल इथक ऐसी धाक सियावर वाली॥

एजन, पृ. २७४

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय

दादा दादा दालदा' दादा दादा दादा गागा

पहेला यतिखंडमां दोहरानो पहेलो यतिखंड, अने ते पछी चार चतुष्कलो जेमांनुं छेल्लुं गागा.

निसाणी रूपमाला

बामण चार वेदके बकता, आगम दृष्टी ग्यांन धुरंधर।
साहूकार सको धजबंधी दूजी जात अलेप कुरंदर॥
सारा ही सुखपूर विचारैं निदत और नरेस उरंदर।
ऐसी राम प्रभा जिस आगे देखत लागे सहज पुरंदर॥

एजन, पृ. २७४

बत्रीसो सवैयो छे, जेनो छेल्लो संधि गालल रूप ले छे. उत्थापनिकानी जरूर रहेती नथी. चारेयमां अेक ज प्रा उ छे.

निसाणी मारु

धाम धाम जग होम बेद धुन रिष अभिराम ररंदे।
दयावंत अत साह मोम दिल, हित परपीड हरंदे॥
पवन अंबर जिह सुखी अपारां धन गृह पूर धरंदे।
अदल नीत जगजीत अयोध्या रघुबर राज करंदे॥

एजन, पृ. २७५

उत्थापनिका: दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गागा

बते बे गुरुवाळो २८ सो चोपायो अने सळंग प्रास.

निसाणी झींगर

बटतीसूं बंब तणा खितधारी विग्रह रूप बरारा है।
घू नामें आय करै निजराणाँ ले धन जिके धरारा है॥

घर घर का हूंत चहुं चक धूजें दिल खल पड़े दरारा है।
कवसल्यानंद जसी का रैणा ऐसा तेज करारा है।।

एजन, पृ. २७७

उत्थापनिका : दा] दादा दादा दादा दादा' दादा दादा गागा गा

निसाणी दुमिला

दंड धजा के होत दांर धनुबंका धार।
पल छ सास पुणजं पुकार, छंद मदरा सार।।
चोरी परचित हरण नार नर जोरी नार।
ऐसा राज करे उदार कवसल कंवार।

एजन, पृ. २७७-७८

उत्थापनिका : दादा दादा दालगालदा दादा गाल

आवी चार पंक्तिनो एक छंद थाय. तेमां पंक्तनी मध्यमां आवता गाल आगळ शब्दयति, अने ए गाल अने पंक्तिने अंते आवता गाल ए आठेय गालनो एक प्रास. आनु काठुं २३मा गालान्त रोळानुं छे. अने वचमां गाल लाववा माटे बीजो अष्टकल संधि दालगालदा करवो आवश्यक छे.

निसाणी वार

सेवें ससि सूरज इंद सिव ब्रह्मादि ब्रह्म वृंदारका ।
जंपं दुय रसण हजार सूं हरिगुण नित सीस हजारका ।।
कह कह सह थका मंछ कहं पंडत जन वारापार का।
वरणन कर कासूं वरणऊं, कवसलजिह राजकंवार का।।

एजन, पृ. २७८

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

दा] दादा दादा दालदा' दादा दादा दागा लगा

पहेली बे मात्रा निस्ताल छे, ते पछी दूहानो विषम यतिखंड आवे छे अने पछी जेकरीनी एक थोडथी पंक्ति आवे छे, एम करीने एक पंक्ति थाय छे. 'रूपक' अंते गालगा आवश्यक माने छे, जे उपर प्रमाणे बे संधिओमां वहेंचाय छे. आवी रचना मने सुन्दर देखाती नथी पछी पठनमां कोई नवी ज भंगी दाखल थती होय तो कही शकतो नथी.

अहीं चतुष्कल रचनाओ पूरी थाय छे. आ पछी त्रिकल रचनाओ लउं छुं.

डिंगलमां त्रिकल रचनाओ बहु ओछी जणाय छे. सौथी पहेली गोखो लईए:

गोखो

विदेही तणें दिवाण। ईस चाप धरे आण॥
तोड़वा अनेक तांण। ऊठिया करे अपाण॥
राज राव अनैं राण। पिनाक पै धरे पाण॥
हिले होय हीणमान। दई वाण दई वाण॥ १॥

एजन, पृ. ७६

'रूपक' आनुं लक्षण एवुं बांधे छे के दरेक पदमां आठ अक्षरोथी बार मात्रा करवी, अने एवां आठ चरणो करवां. अंतमां गुरुलघु मूकवा. आठेय पदोनो एक सळंग प्रास राखवो. अने अंतनी तूकमां वीप्सा आवे. उपर आठ वर्णोथी बार मात्रा थाय छे ए खरुं पण त्यां दरेकमां त्रिकल संधिनां चार आवर्तनो आवे छे. अंते गुरुलघु गाल कहेलुं छे एटले आने गालनां चार आवर्तनोनो छंद कहेवो योग्य छे. अंत्य त्रिकल सिवाय कोई जगाए गालने बदले लगा पण आवे छे ए स्वीकारवुं जोईए.

उत्थापनिका. गाल गाल गाल गाल

आठने बदले चार पदनो छंद करवाथी अर्धगोखो थाय छे. तेमां पण अंत्य पदमां वीप्सा जोईए (एजन पृ. १३६). बीजी रचना वीरकंठ छे.

वीरकंठ

करां जोड रूपकीस, साम पाय नाम सीस ।
बाघ चाल महावीर, कूदियो किसीस॥
निसाचरां कालनेम, पतीलंक तणो पेम।
माग वीच बणे रह्यो, सदंभां मुनीस॥ १॥

एजन, पृ. १९५

उत्थापनिका नीचे प्रमाणे

गाल गाल गाल गाल, गाल गाल गाल गाल ।
गाल गाल गाल गाल, गाल गाल गाल ॥

आ अर्ध छंद थयो. आना अंत्य गाल साथे बाकीना अर्धना अंत्य गालनो प्रास मळे. अंत्य संधि तरीके गाल ज आवे, ते सिवाय क्यांक लगा आवी शके. आ पछी पंचकल रचनाओ आवे. पंचकलोमां प्रथम बडो सांणोर लईए.

બડો સાંણોર

ભુરા દરસ સર પંડુ મુનુકલા તેવીસ ધર
જુગ વિસમ સપત કલ દુસર જતરેં।
પંચ કલતણી હૈ ચાર ગણ વિષમ પદ,
સામુહેં મેલ ગણ કલા સતરેં ॥૧

એજન પૃ. ૫૦

લદા દાલદા દાલદા દાલદા દાલદા
દાલદા દાલદા દાલદા ગા
દાલદા દાલદા દાલદા દાલદા
દાલદા દાલદા દાલદા ગા

ડિંગળના ઘણા છંદોની પેઠે પહેલા છંદની પહેલી પંક્તિમાં ત્રણ માત્રાઓ વધારે આવે છે. તે સિવાય આ પ્રસિદ્ધ ઝૂલણા જ છે. આમાં પાંચ પાંચ માત્રાના સંધિઓનાં આવર્તનો સ્પષ્ટ છે. ક્યાંક દાલદા સાથે લદાદા વપરાય છે, જે ઝૂલણામાં પણ બને છે.* પછી શુદ્ધ સૈણોર લઈએ:

શુદ્ધ સૈણોર

મગણ આદ ગુર તીન ફલ રમા વિબુધા મહી,
પિતા પિંગલ ગિરા માત તન પીત।
રિષિ કૅસ્યપ અરોહણ કમઠ શૃંગાર રસ,
મગધ પત દુજ વરણ નયણ ત્રિય મીત॥

એજન, પૃ. ૫૨–૫૩

* આ રચના સાદી છે છતાં ડિંગલકાર એનું સ્વરૂપ કેવું ભ્રામક આપે છે, એનો આ છંદ ચોક્કસ દાખલો પૂરો પાડે છે. 'રૂપક' આનું સ્વરૂપ એવું આપે છે કે પ્રથમ પદમાં ૬, ૫, ૫ અને સાત માત્રાઓથી ૨૩ માત્રાઓ, બીજા પદમાં બે વાર પાંચ પાંચ માત્રા પછી ૭ માત્રા, વિષમ પદ એટલે ત્રીજા ચરણમાં પાંચ પાંચ માત્રાના ચાર ગણ થાય છે અને ચોથા ચરણમાં ૧૭ માત્રા રાખવી જોઈએ. (એજન, પૃ. ૫૧) આ લક્ષણની અપૂર્ણતા બતાવવા હું દા અને લ સંજ્ઞાથી ઉપર પ્રમાણે ગણો મૂકી બતાવું છું. પહેલું ચરણ આમ કરી શકાય.

દાદાદા, દાલદા, દાલદા, દાદાલદા

આથી કદી સાંણોરનો મેળ આવી શકશે નહીં. છેલ્લો સાત માત્રાનો ગણ દાદાદાલ મૂકું તો પંક્તિ વધારે વિસંવાદી જણાશે. મેં ઉપર બતાવ્યો તે જ ખરો મેળ છે.

उत्थापनिका:

दाल] दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गाल

प्रथम पंक्तिमां त्रण मात्रा वधारे छे ते जतां पंचकलनां आवर्तनो झूलणानी रीते ज चाले छे, फरक एटलो ज के झूलणामां अंते संधि खंडित थई गा रहे छे त्यां अहीं गाल रहे छे. एमांनो गुरु चार मात्रानो प्लुत थई त्यां पंचकल पूरुं थाय छे. आमां पण लदादानुं मिश्रण छे. आ पछी एक प्रहास के गरवत नामनी पंचकल रचना आपो छे, ते गान्त झूलणा ज छे, सिवाय के पहेली कडीनी पहेली पंक्तिमां त्रण मात्राओ वधे छे. आ पछी मुक्तागृह लईए.

मुक्तागृह

पगां वंद उतमंग मा कनैथी पधारे
पधारे महल को दंड पाणी ।
विदेही सुताने गुणी जेती विगत,
विगत तती पुणो तात बाणी ॥ १

एजन, पृ. १०४

पहेली पंक्तिमां त्रण मात्राओ वधारे छे ते सिवाय आ लदादाना मिश्रणवाळो झूलणा ज छे. विशेषमां पहेली पंक्ति (एटले चार आवर्तननो यतिखंड) नो छेल्लो शब्द पछीनो पंक्तिमां फरी आवे. ते ज प्रमाणे त्रीजी पंक्तिनो छेल्लो शब्द चोथो पंक्तिमां फरी आवे. आ पछी सावझडो लईए.

सावझडो

सुणे वयण अंगद कलह, सुभड सरसाविया,
थरक जलवाल जिम त्रिकुट जण थाविया।
चाल बांधे धुरा दनुज ललचाविया।
अंतवप अकंपन समर सज आविया॥

एजन, पृ. १८३

पहेली पंक्तिमां त्रण मात्रा वधारे छे. ते सिवाय आ रचना कामिनीमोहन के मदनावतार छे, जेमां दरेक पंक्तिमां दालदानां चच्चार आवर्तनो आवे छे. अहीं चारेय पंक्तिमां एक सळंग प्रास छे. बधी पंक्तिना प्रासने अर्थे सावझडो कहेलो छे. (एजन पृ. १८७–८८) आ पछी चोटियाल लउं छुं:

चोटियाल

सुणे सुपनखां वैण चढ़ हांकियां साकुरां,
खर दूंखर त्रिसर पल झाल खांगा,
पूर तन पहरियां ॥
उरस छवता थका आवियां अडाकी,
आखता असुर रघुवीर आगां
कोप लोयण कियां ॥ १

एजन, पृ. १३१

पहेली त्रण मात्रा ववारानो बाद करतां गुर्वन्त झूलणानी पंक्ति आखी आवे छे. ते पछी दालदा दालगा एटली एक लटकती पंक्ति आवे छे. अने पछी फरी वार ए प्रमाणे ज आखो कडो पुरो थाय छे. लांबो झूलणा पंक्तिओ बन्ने प्रासथी संधाय छे ते उपरांत पेलो बन्ने लटकती पंक्तिओ पण प्रासथी संधाय छे. उत्थापनिका :

दाल] दालदा दालदा दालदा दालदा
दालदा दालदा दालदा गा
दालदा दालगा ।

आ अर्ध थयुं.

हवे सप्तकल रचनाओ लईए. तेमां पहेलां प्रथम प्रौढ लईए.

प्रौढ

मगके मुकामां करे मिथुला । आविया अवधेस ।
सुण अतुल साज झलूस सारा । मिले छक मिथलेस ॥ १

एजन, पृ. ८३

आ स्पष्ट रीते बे प्रासबद्ध पंक्तिओनी एक कडीनी सप्तकल रचना छे. पण रूपक तेनो चार पंक्तिओ पाडे छे, अने पहेलीने पांच, चार, त्रण, चार, ए प्रकारे १६ मात्रानो, अने बीजोने त्रण, चार, त्रण ए रीते १० मात्रानी कहे छे. तेना खरा मेळनो उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे :

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा गाल

अंत्य गाल पछी बे मात्राओ अनक्षर रहे छे, जे पछीनी पंक्तिना प्रथम निस्ताल दा साथे मळी आखुं सप्तकल पुरुं करे छे. क्यांक दाल + दादाने बदले लदा-

दादा आवे छे, जेनो खुलासो आगळ जातिछंदोमां आवी गयो छे. बीजो प्रौढ नामनो रचनामां पंक्तिमां प्रथम आवतो निस्ताल दा नथी होतो एटलो ज फरक होय छे. दृष्टांत:

प्रीतकर पुरहूत कार। उठै रघुवर आप।
सहस भग किय चसम सहसा। सकत मेटे श्राप॥

एजन, पृ. ८५

जुदी उत्थापनिका आपवानी जरूर नथी. आ पछी इकखरो लईए.

इकखरो

सुण सेसरे सुण सेसरे, दिलके कई उपदेसरे।
वनवास जावण वेसरे, इम आखियो अवधेसरे॥ १

एजन, पृ. १०७

उत्थापनिका: दादालदा दागालगा । दादालदा दागालगा

आ अर्ध थयुं. दरेक पाद चौद मात्रानुं, दादालदानां बे आवर्तनोनुं, पदान्ते गालगा आवे, अने चारेय पदोनो एक सळंग प्रास. आ पछी हेलो.

हेलो

उठ आय कवसल मात आगें, लुळे सीरथ पाय लागे।
दखै वायक दीण॥
कैंकई बदनाम कीधो, दोष मोटो मनै दीधो।
हुवो सारै हीण॥ १

एजन, पृ. ११६

उत्थापनिका:

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा दालदादा
दलदादा गाल

आ अर्ध थयुं. पहेली पंक्तिमां आंतरप्रास. अने तेने एक टूंकी पंक्ति दालदादा गाल लटकावेली. ए पंक्तिने एवी ज बीजी पंक्ति साथे प्रासथी सांधेली. काव्य जोवाथी प्रास योजना समजाशे. गाल पछी चार मात्रा अनक्षर रहे छे. पहेला छंदनी पहेली पंक्तिमां बे वधारे मात्रा आवे, बाकी बधीमां १४ मात्रा ज आवे. आ पछी भाख लईए.

भाख

आयो भरथ अवध अभंग, मंडे पावडी उतमंग।
रइयत कीध अत उछरंग, इम आवास जाय उमंग॥ १

एजन, पृ. १२२

रूपक एक चोकल अने पछी बे पंचकल करी कुल चौद मात्रा करवानुं कहे छे पण छंद स्पष्ट रीते आपणे उथोर कहीए छीए ते छे.

दादादाल दादागाल

चारेय चरणनो एक प्रास. बब्बे लीटीनो प्रास मळे त्याले अरध भाख कहेवाय. आ पछी धमाल लईए.

धमाल

रावण सखा दिग्गज रूप दंडकवन रमैं,
निरलज सुपनखा तिण नाम गरक अनंग में।
सीतानाथ आगल सार आई विण समैं,
भाल सकाति अदभुत नरन सुचि रत संभ्रमें॥

एजन, पृ. १२८

उत्थापनिका: दादा] दालदादा दालदादा दालगा

आवी चार पंक्तिओ थाय. अंत्य दालगामां बे मात्रा अनक्षर रही छे, ते उपरांत ते पछी आवर्तनो सन संख्यानां करवा त्यां एक सप्तकल जोईए जनो दाल जेटलो भाग अनक्षर रह्यो छे, अने ए दालनी अनक्षर मात्राओ ते पछीनी पंक्तिनां प्रथम आवता निस्ताल दादा साथे जोडाई सप्तकल रचे. ए अनक्षर मात्राओ मूकतां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

दादा] दालदादा, दालदादा; दालगा –, – ⏑
दादा;] दालदादा वगेरे

चारेयमां सळंग प्रास छे. आ पछी भंवर गुंजार लईए.

भंवर गुंजार

हणु मिलत धुर हर दीध सिर हथ, रिंधु बजरंग हुवो समरथ।
चवे रघुवर वयण वनचर, सीत सुध साजै॥
तो करू अरियण तेण कण कण, हरथ मारं विसख हण हण।
विकट पूरूं मनावंछत, गहर गुण गाजै॥ १

एजन, पृ. १५०

उत्थापनिका स्पष्ट छे:

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा दालदादा
दालदादा दालदादा' दालदादा गा

आ अर्ध थयुं. तेमां पहेलो पंक्तिना बन्ने यतिखंडो प्रासथी संधायेला. बीजी पंक्ति चोथी पंक्ति साथे प्रासबद्ध आवे. बीजी पंक्तिमां गा पछी लदा अनक्षर छे, अने ते पछीनी पंक्तिना दा साथे जोडाई सप्तकल रचे. ते पछी कंवार लईए.

कंवार

दिसलंक अंगद आद द्वादस, तहकिया तेखी।
इक अरण सी बिच त्रिसा आतुर, दरि द्रग देखी।। १

एजन, पृ. १६१

उत्थापनिका सरल छे:

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा गा

आवी बे पंक्तिनी एक कडी थाय. विशेष खुलासानी जरूर नथी. आ पछी अठतालो लईए.

अठतालो

काकै कुंभवालें वैंर काजा, सक्रजीत उझेल साजा।
किथण गो खल कुंभ लाजा, जाग ताजा जोस।।
जाय जोगण बंद जाजा, प्रजुण वन्ही करे प्राजा।
वहण आवध होम बाजा, रुपि दराजा रोस।। १

एजन, पृ. २०६–०७

पहेली पंक्तिमां चार मात्रा वधारे छे, ते जतां बाकी दालदादा दालदादा एम बे सप्तकलना यतिखंडो त्रण छे, अने चोथो दालदादा गाल छे. त्यां अर्धकडी थई. प्रासनी योजना जोवी सरल छे. उत्थापनिकानी जरूर नथी. आ पछी काछो लईए:

काछो

रघुपत जगतमिण उपसास राले, भामणी चिहु ओर भाले
तन विचाले जो वरें।
चित लाग चालें गात गालें, घर समालें चोर।।

डूरें दिखाले केंक काले अचल थाले ऊपरें।
दोठा दयाले तेंग ताले वय बडाले वोर॥ १

एजन, पृ. १४५

पहेली पंक्तिमां चार मात्रा वधारे छे एटले ए काढीने ज उत्थापनिकानो विचार करवानो. एम करतां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

दादा] दालदादा दालदादा[1]' दालदादा दालदादा[2] दालदादा[3] दालगा

दा] दालदादा[4] दालदादा[5]' दालदादा[6] गाल

दा] दालदादा[7] दालदादा[8]' दालदादा[9] दालगा

दा] दालदादा[10] दालदादा[11]' दालदादा[12] गाल

दालगा साथे दालगानो प्रास मळे, गाल साथे गालनो प्रास मळे ते उपरांत एकथी १२ सुधीनां स्थानोमां प्रास छे. आ पछी त्रकूटबंध लईए.

त्रकूटबंध

कुल भ्रात मंत्री सुत कटे, उर क्रोध रावण ऊपटे।
मन समझ नहचैं घटे मरणो, सजे घण घमसांण॥
वध ओर वाजत्र वाजिया, सझ रोप बगतर साजिया।
कस कमर बडकर गहर कर, धर धजर आवध सवर धर॥
चढ चले रथ पर ढुर चमर, भड अवर निसचर रिण भंवर।
मिल चहुर मूछां मुहर भर, वज पखर गुघर भिडज वर।
गज घीर फरहर खुल अगर, झुक अतुर लोयण अगनझर।
अर आवियो आराण॥ १

एजन, पृ. २१९

पहेली त्रण पंक्तिनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे :

दा दालदादा दालगा' दा दालदादा दालगा
दा दालदादा लगादादा' दालदादा गाल
दा दालदादा दालगा' दा दालदादा दालगा

आ पछी पण संधिओ तो चार पंक्तिओ सुधी आ ज प्रमाणे चाले छे. पण अमुक असर करवा तेनां लघुबहुल अने लघ्वंत रूपो वपराय छे. अने लगभग दरेक संधिमां प्रास राखेला छे अने ए चार पंक्तिओ पूरी थतां एक टूंकी पंक्ति लटकावेलो आवे छे. दा दालदादा गाल अने उपरनी बीजी

पंक्तिना गाल साथे तेनो प्रास मळे छे. आवी कृति प्रास माटे ज छे. एना प्रासो मूळ छंद उपरथी जोई लेवा. आ पछी चित्तहिलोल लईए.

चित्तहिलोल

ले हुकम सीता खबर लेवण, सकज राघव संत।
कह लंक दिस सज उदवलंघण, हालियो हणमंत।
तो बलवंतजी बलवंत वारध लांघवे बलवंत॥ १

एजन, पृ. १६३

उत्थापनिका:

दा] दालदादा दालदादा' दालदादा गाल–
दा] दालदादा दालदादा' दालदादा गाल
तो दा] गालदादा गालदादा दालदादा गाल

आ उपरथी सप्तकलोनो विन्यास समजाशे अने १थी ५ स्थानोमां सळंग प्रास अने तेमां ३, ४, ५ स्थाने एक ज शब्द उपर छे ते प्रमाणे फरी फरीने आवे अने त्रीजी पंक्ति 'तो' थी शरू थाय. हवे सुवग लईए.

सुवग

लंगरी रिम सेन लाडो, गुमर धारक लाज गाडो।
इल झडे कुंभेण जाडो, झूझ जाडो झूझ जाडो॥ १

एजन, पृ. २०५

उत्थापनिका: दालदादा दालदादा

आवी चार पंक्तिओ, तेमां सळंग प्रास, अने चोथी पंक्तिमां आवे छे तेवी वीप्सा. आ पछी भाखरी लईए.

भाखरी

मिथला महिपतीजो अवनी कीध जिग आरंभ।
तेडे समगतीजी लिख फुरमाण बाहु प्रलंभ॥
कर कर क्रामतीजो खोपे जेथ हय जस खंभ।
नागर नोबतोजो घर घर घुरत द्वार अलंभ।
घर द्वार नोबत घुरत बाजत तोस पट्ट अवरेख।
बंध पोल विसाल तोरण बणे चित्र विशेष॥

व्रत सदन पीत पताक फरकत वरण चहु सुखवेव ।
मथ जनकपुर सुर असुर मानव पखे संभूत पेख ।। १

एजन, पृ. ७०

आ एक सुन्दर रचना छे. तेमां पहेली चार पंक्तिओनो संधिन्यास नीचे प्रमाणे छे:

दादादाल गा—गा ⌣ दादादाल दादागाल

बराबर स्पष्ट थाय माटे एक सरल पंक्तिने उपरना न्यासमां मूकी बतावुं.

ना गर नो व तो – जो ⌣ घर घर घुर त द्दा रअ सं भ
दा दा दा ल गा – गा ⌣ दा दा दा ल दा दा गा ल

पण एक जुदी रीते पण आनुं पठन थई शके.

दादादाल गागा–⌣ दादादाल दादा गाल

अर्थात् मात्र जो एकलो ज पांच मात्रानो प्लुत बने. पछीनी पंक्तिओनी उत्थापनिका सरल छे. आ पछी गजगत लईए:

गजगत

कुंभज कह कहं जो सियवर सुण सहे ।
वंदे पग बहे जो गैलो बन गहे ।।
बन गहे गेलो जेण बिच में रहे राखस रोस में।
तन तुंग नाम कबंध तिणरो करग जोजन कोसमें ।।
सो हुतो गंद्रप श्राप वासव चिके प्राक्रम धारिया।
विणसोस दूर प्रसार बाहां घणां जीव संहारिया ।। १

एजन, पृ. १२५

आनी पहेली बे टूंकी पंक्तिओनी उत्थापनिका भाखरीना बन्ने विकल्पो प्रमाणे ज छे:

जो

दादादाल गा – गा ⌣ दादादाल गा – – ⌣
दादादाल गा – गा ⌣ दादादाल गा – – ⌣

अथवा

जो

दादादाल गागा – ⌣ दादादाल गा – – ⌣
दादादाल गागा – ⌣ दादादाल गा – – ⌣

आ पछी

दा] दालदादा दालदादा दालदादा गालगा

एवी चार पंक्तिओ आवे छे जे हरिगीत जेवी ज छे. तेमां विशेष ए छे के बीजी पंक्तिना छेल्ला थोडा शब्दोनुं, पछीनी लांबी पंक्तिमां सिंहावलोकन थाय.

आ सप्तकल रचनानी एक सिंहचली निसाणी छे ते जोईए.

निसाणी सिंहचली

रघुवंस नायक कीत जिणरी कवण वरणै साज।
कुण साज वरणै कीत जो नर उदध बंधै पाज।।
दध पाज बंधै कवण लावै उतर मारग छेह।
मग छेह उत्तर करै गिणती बूंद सावण मेह।।

एजन, पृ. २७६

उत्थापनिका : दा] दालदादा दालदादा दालदादा गाल

पण आमां विशेष ए छे के आमां सिंहावलोकन थाय छे, एटले के पंक्तिना अंतमां आवता शब्दो ते पछीनी पंक्तिना आदिमां फरी आवे छे. एम आवतां घणे भागे शब्दोनो क्रम ऊलटाय छे.

आ सिवाय 'रूपक' केटलीक कुंडलिया रचनाओ आपे छे ते पण टूंकमां जोई जईए :

झड उलट

आठू दिस वरतै अदल, राघववाळे राज।
सीख समपै सोहडा, कर मन बंछत काज।।
काज मन बंछता पूर सगला किया।
धवल हरि दुरग धन देस कितरा दिया।।
कीध अर निकंटक जीत रावण जिसा।
जमो पग फील जिम, दबे आठू दिसा।

एजन, पृ. २७९

पहेलो दोहरो छे अने ते पछी मदनावतार आवे छे. दोहराना छेल्ला यतिखंडनुं सिंहावलोकन थाय छे, अने दोहराना पहेला शब्दो, मदनावतारने अंते आवी कुंडली थाय छे. आने 'छन्दःकोष' चंदायणो कहे छे अने ते आपणे आगळ जोई गया (गत. पृ. ३३४). आ पछी कुंडलियो राजवट लईए.

राजवट

सियवर राज समापिया, पाट अवध लव पेख।
कुस नैं समप कुसावती, बंधव सुतौं विशेष।।
बंधव सुतौं विशेष, दोय सुत भरत सुदत्तिय।
तक्षक नैं तखसली, पुकर नैं पुक्कर वत्तिय।।
अंसो लिखमण उभय, अँगद नगरी अंगद नै।
चंद्रकेत चंद्रवती, सत्रघण सुतौं सुखद नैं।।
कनवज सुवाह् सत्रुघात कर पति मथुरा इम थापिया।
इण भाँत मंछ कह् आठही सियवर राज समापिया।।

एजन, पृ. २८०

अहीं दोह्रा पछी छप्पो आवे छे, अने पहेलांनी पेठे ज सिंहावलोकन अने कुंडली थाय छे. गुजरातीमां आ रचना जाणीती नथी. 'रूपक' शुद्ध कुंडलियो आपे छे ते आपणो कुंडलियो ज छे, दोह्रारोळानुं मिश्रण. एटले ते अहीं उतारतो नथी. ते पछी दोहाल लईए :

दोहाल

रूपक यह रघुनाथरो, पिंगल गीत प्रमाण ।
कहियो मंछाराम कवि, जोधनगर जग जांण।।
जोधनगर जगजांण वास गूँदी विसतारा।।
बगसीराम सुजाव, जात सेवग कूवारा।।
संवत ठारैं सतक वरस तेसठो बचाणो।
सुकल भादवो दसम वार ससि हर वरताणौं।।
मत अनुसारैं में कह्यो, सुध कर लिमो सुजाण।
रूपक यह रघुनाथरो पिंगल गीत प्रमाण।।

एजन, पृ. २८१-८२

अहीं प्रथम दूहो, अने पछी चार पंक्ति रोळानी आवे छे. अने वच्चे सिंहावलोकन थाय छे. पण अंते रोळा पछी दोह्रा थाय छे, अने प्रथम दोह्रानी पहेली पंक्ति आखी अंत्य दोह्रानी छेल्ली पंक्ति बनी कुंडली रचाय छे. ते पछी कुंडलनो लईए :

कुंडलनी

कीजै तीरथ कोटं, कोटं गोदान ताम दिज्जियकं।
अभय करैं रख ओटं, कर वे विवाह् किन्ना।।

किन्ना व्याहे कोडलो जु किन्याबल लेवै।
माल खजाना मुलक दुर्जां उदके दत देवै॥
राम राम इक तरफ दुवै तरफां सह दीजै।
तऊ न ह्वै सम तूल कोट जो तीरथ कीजै॥

एजन, पृ. २८२

आपणे आगळ जोयुं के 'रणपिंगळ' कुंडलिनो आपे छे, अने तेमां आर्या अने रोळानुं मिश्रण आवे छे. (गत पृ. ३३१) हुं मानुं छुं के आ ते ज कुंडलिनो छे, जो के आर्यानो छेल्लो यतिखंड अहीं शुद्ध ऊतरेलो नथी. 'रूपक' पण अहीं प्रथम आर्या होवानुं ज कहे छे, छतां पिंगळना पुस्तकमां ज आवो भूल जोई आश्चर्य थाय छे. 'रूपक'मां तेनो खुलासो मळतो नथी.

हवे आपणे संख्यामेळ प्रकार जोवानो रह्यो. कवित जेवा छंदो आपणे हिंदीमांथी ज लीधा छे, अने हिंदीमां तेनो बहोळो वपराश छे, पण डिंगळमां तो मने एक ज असंदिग्ध संख्यामेळ रचना मळे छे — सपंखरो. आपणे जोईए :

सपंखरो

अंगा ऊससे सबायो तायो सुणे वैण राणवाला,
बडाळां छोह में छायो चखां चोल ब्रन्न।
कळेसां आघायो लेण रटक्कां सजोर कायं,
कट्टकां रामरै माथे आयो कुंभकन्न॥ १

एजन, पृ. २००

'रूपक' आनुं लक्षण एवुं आपे छे के विषम चरणोमां १६ वर्ण अने समपादोमां १४ वर्ण ए प्रमाणे एक द्वालामां ६० वर्ण होय छे. प्रथम द्वालाना प्रथम पादमां १९ वर्ण होय छे एम कह्युं छे पण गणी जोतां अढार ज थाय छे. आवो भूल, कोण जाणे केम, 'रूपक'मां बे त्रण जगाए थई छे.

आपणे आगळ मुक्तधारा तरीके जेनो नोंध करी तेमां अने आमां कशो फरक नथी. आ संबंधी 'रूपक' एक विशेष नियम एवो आपे छे के आमां सगण (ललगा) भगण (गालल) अने नगण (ललल) न आवे, अर्थात् आ रचनामां कोई पण जगाए बे के वधारे लघुओ भेगा थाय तेनो निषेध कर्यो. आनुं कारण संख्यामेळनो चर्चामां आवो जाय छे. संख्यामेळमां दरेक अक्षर बे मात्रानो थवो जोईए. उच्चारणमां दरेक अक्षरनो ए प्रमाणे उच्चार न करवो होय तो वधारे सारी रीत ए छे के दरेक चतुरक्षर संधिने आठ-

मात्रानो करवो, अने ते एवी रीते के दरेक लघुने बे मात्रानो करवाने बदले लघुने लघु ज बोली तेनी पछी आवता नजीकना गुरुने प्लुत करवो. आ प्लुत दूर न पडी जाय माटे बे के वधारे लघुओ भेगा करवानो निषेध कर्यो. आ युक्तिथी क्यांक पण लघु आवे तो तेनी खूटती मात्रा पूरवा माटे तेनी पछी तरत ज गुरु मळी ज रहेवानो. आ नियम संख्यामेळनुं जे स्वरूप आपणे नक्की कर्युं तेना फलित निगमननो होई, ए स्वरूपना समर्थनरूप बने छे.

आपणां कवितो अने मुक्तधारा करतां लंबाईमां आ छंद अर्धो छे, ए पण नोंधवुं जोईए. बीजा छंदो करतां आ छंदनी भाषामां जोडाक्षरो वधारे आवे छे ते आगळना लघुने गुरु करवाने, जेमके सं. कटकनुं उपर कट्टकां कर्युं छे.

आ पछी बीजो छंद हुं संख्यामेळ तरीके जोवा इच्छुं छुं, ते संख्यामेळ अवश्य छे एम हुं कही शकतो नथी. पठन उपरथी जणाय छे के कदाच ए संख्यामेळ होय. अने एम होय तो उपरना चतुरक्षर संधिना संख्यामेळथी ए भिन्न प्रकारनो छे. एने जातिछंद तरीके हुं एक वार जोई गयो छुं. ए छंद छे लहचाल. एनुं दृष्टान्त आ प्रकरणमां आवी गयुं छे, एटले फरी उतारतो नथी. एना संख्यामेळना पठनमां एनो दरेक अक्षर बे मात्रानो बोलाय छे. अने एना संधिओ चतुरक्षर नहीं पण त्र्यक्षर छे. ए रीते एनुं पठन नीचे प्रमाणे थाय

सुत	भ्रात क	टं सक	पीट ब	धे धक
दादा	दा दा दा	दा दादा	दादा दा	दादादा
	बीस भु	जाण वि	वारियो	जी
	दादा दा	दादा दा	दादा दा	दा
निर	बांजो –	वानर	नें मग	मुन्नर
दादा	दादा दा	दादादा	दादादा	दादादा
	धेख इ	सौं मन	चारियो	जी
	दादादा	दा दादा	दादादादा	दा

जरा विलंबित रीते—धीरे धीरे बोलतां लघुने गुरु करवा पडे छे ते खराब नथी लागतुं. दरेक त्र्यक्षर संधि छ मात्रानो दादादा बने छे अने आठ संधिओनो एक पंक्ति बने छे. आठमा संधिमां चरणान्त जी आवे छे, ते पछीनो पंक्तिना पहेला बे अक्षरो साथे मळी दादादा संधि पूरो थई रहे छे. क्यांक कोई गुरु चार मात्रानो पण बने छे, ते उपर जोई शकाय छे. पछीनामां पंक्तिनो प्रारंभ गुरुथी थाय छे त्यां ए गुरु पण चार मात्रानो बने छे. जेम के चोथा ढालामां

पे–	खे मख	प्रारंभ	खोय अ	डीखंभ
दादा	दा दादा	दादादा	दा दादा	दादादा

ए रीते पहेली गुरु चार मात्रानो बने छे. आ रचनाने संख्यामेळ छंदोमां स्थान मळ्यु नथी. गुजरातीमां ए नवी ज एम नथी, दाखला तरीके आगळ उपर पदोनां हुं जे तोटकनो चालनी रचना लेवानो छु ते शुद्ध अक्षर संख्यामेळ ज छे. ए रागमां गवाय छे ए जुदो प्रश्न छे, पण तेने रागमां न लेतां जो पठन करीए तो ए अक्षर संधिवाळो संख्यामेळ थई रहे छे. अहीं आथी विशेष एनी चर्चा अस्थाने छे. मात्र एटलु के उपरनी रचना अक्षर संधिनो संख्यामेळ छंद होवानो मने संभव जणायो छे, अने माटे तेने हु ए वर्गमां मूकु छु.

अहीं डिंगलनी चर्चा पूरी थाय छे. डिंगलनी विशेषताओ अहींथी जोई जवी होय तो तेनां खास लक्षणो ए कहेवाय के ते जातिछंदोनी ज भंगीओ छे. एनी भंगीओ घणाखरी प्रासवैचित्र्यनी होय छे, तेथी ओछे प्रसंगे सिंहावलोकननी अने एथी ओछे वोप्सानी होय छे. क्यांक क्यांक एमां 'जो' के 'रे' जेवां संबोधनोने नियत स्थान होय छे, अने क्यांक तो अमुक एटले के छठ्ठी विभक्तिना रा प्रत्ययवाळा शब्दोनी पण भंगी होय छे. ए बधी रचनाओ पठनमां असरकारक थाय ए दृष्टिए सर्जाई छे, अने हजी पण एनी ए असर छे. पठनमां, मुशायरामां ए सफळ नीवडे. एथी वधारे अहीं प्रस्तुत नथी. मारो मुख्य आशय तो ऊडती नजरे एने जोई जई, जातिछंदोना सिद्धान्तो त्यां पण लागु पडे छे एटलु बताववानो छे.

परिशिष्ट ख

जातिछंदोनुं परिशिष्ट २ जुं : गझल

आ परिशिष्टमां हु साधारण रीते गुजरातीमां गझलने नामे ओळखाय छे ते छंदोना मेळनी टूंकी चर्चा करवा इच्छुं छुं. खरी रीते गझल ए कोई छंद के छन्दप्रकारनु नाम नथी. दी० ब० कृष्णलाल झवेरी कहे छे : "'गझल' ए छन्दनु नाम नथी. 'गझल' ए काव्यनो एक प्रकार छे. ए मूळ अरबी शब्द छे अने एनो अर्थ प्रेमयुक्त भाषामां अथवा काव्यरूपे बोलवु एम थाय छे. . . . 'गझल'ना मूळ एटले फारसी साहित्यमां गझलना वस्तु संबंधे नीचे मुजब निर्देश करेलो छे.

"प्यार, सौन्दर्य, मननी वेदना, उन्मत्तता वर्णवता शब्दो, वियोगने अंगे पडतां दुःखोनी विगत, प्रेमनुं रुदन, माशूक जोडे एक थई जवा माटेनी फिकर, गाल परना तल तथा जुल्फांनां वखाण, माशूक जोडे मुलाकातनी तीव्र इच्छा, तेम ज सुख-चेननो अभाव, बेचेनी, उजागरो, अंतःकरण बाळी नाखे एवो निःश्वास, दुःखार्त्तनाद, रुदन, अशक्ति अने शरीरना सुकाई जवानुं वर्णन — ए सिवाय बीजुं कांई तेमां होवुं जोईए नहीं. आ रीते आशक-माशूकना वियोगनी यातना, माशूकनो पोताना आशक तरफ बेपरवाई, आशकनी माशूक प्रत्ये मिलन माटे आजीजी अने विज्ञप्ति, कालावाला — के जेनो सेंकडे एक पण वखते स्वीकार थतो नथी, ते तेमांथी निर्दिष्ट थवुं जोईए. आ उपरांत मद्य-दारूना उपासकोनो – पीनाराओनो — आनंद, वसंत ऋतुनुं सृष्टिसौंदर्य, गुलाब अने बीजां फूलोथी भरेला बाग अने तेमां गायन करतां बुलबुल वगेरेनी शोभानां वर्णन पण तेनुं साधन गणाय छे. छेवट डोळघालु संतो अने कहेवाता सूफी दरवेशोनां कारस्तान तथा डोळ, तेमनां पाखंड ने दंभ, तेमनुं बनावटी अने कृत्रिम साधुपणुं — एने उघाडा पाडवा तेम ज तेवा ईसमोने चाबखा मारवा माटे पण 'गझल'नो उपयोग थाय छे." ('गुजराती गझलो' प्रस्तावना पृ. ६,७)

'शाईरी'ना कर्तानो पण ए ज मत छे. तेओ कहे छे: "अरबी भाषामां तो गझल एटले 'स्त्रीओथी वातो करवी' एम छे, पण पिंगळशास्त्रीओए एनी समजूती नीचे प्रमाणे आपी छे. "गझल ते पद्योनुं नाम छे के जेमां प्रेम, मोह, रूप, सुन्दरता, प्रेमनुं दीवानापणुं, मोज, आशा, डर, रझामंदी, खुशी, गमी, पानखर, फूल, पतंगियुं, मजनु, लयला वगेरे शब्दो वडे प्रेम विषयोनां वर्णन थाय, अथवा बोधक आशाओ करवामां आवे." ('शाईरी' भाग १–२. पृ. ६९) पण आ विषयनी कविताओ फारसी उर्दूमां जे अमुक छंदोमां गवाई ते गझल कहेवावा लागी, अने तेमांनी जे जे गुजरातीमां ऊतरी ते पण गझलो कहेवाई. गुजरातीमां अर्वाचीन युग पहेलां पण कोईकोई जैन कविओए गझलो लखी छे, अने दयारामे पण गझलरेखता लख्या छे. पण गुजरातीमां तेनो पहेलो शोख लगाडनार मस्त कवि बालाशंकर छे. तेना अनुसरणमां मणिलाल नभुभाईए गझलो लखी छे अने पछी कलापीए गझलोने बहु लोकप्रिय करी, अने अत्यारे पादपूर्ति साथे गझलोनो पण मुशायरो थाय छे. गुजरातीमां गझलोना थोडा ज प्रकारो ऊतर्या छे, अने तेमां छंदनी दृष्टिए केटलाक प्रयोगो तथा फेरफार थया छे, एटले गझलोना मेळनुं स्वरूप जाणवुं जरूरनुं छे.

मूळ 'गझल'मां कोई विषयनुं सळंग निरूपण थतुं नहीं. "गझलनी खासियत ए छे के दरेक बेतमां भिन्नभिन्न भावना के लागणी दर्शावाय छे: कोई एक अमुक विचार, भाव या लागणी एक ज बेतमां समाई जाय छे, तेनी पछीनां बेतमां तेने खेंचवामां आवती नथी; मतलब के आखी गझल एक ज भावनुं दर्शन करावती नथी, परंतु तेमां जुदीजुदी भावनाओ एकत्र थयेली जोवामां आवे छे." ('गुजराती गझलो', प्रस्तावना पृ. ८) "गझलनी कडीओ एवी होवी जोईए के एक कडीने बीजी कडी साथे जोडाण होवुं न जोईए. एक गझलने मेना पोपटनी कहाणी, के कौमी जुस्सो, के मात्र छाज्यामां पूर्ण करवी न जोईए. कहाणी किस्साओ, के छाज्यां माटे रूबाई, मुसद्दस, के कत्अ होवा जोईए." ('शायरी' भा. २, पृ. ६९–७०) पण गुजरातीमां आ मर्यादा सचवाई जणाती नथी. अलबत्त गुजरातीमां पण कहाणीओ के किस्साओ गझलोमां जवल्ले ज लखायां छे, पण एक ऊर्मिकाव्यमां आवी शके तेवी भावनी सळंगता आपणी गझलोमां आवे छे. जेम के कलापीनी 'सनमनी शोध'नी गझल ख्रिस्ती प्रार्थनाना सळंग भावनुं काव्य छे. 'आपनी यादी'नो पण भाव सळंग छे. अने छतां बन्नेमां गझलना जेवा उछाळा पण छे. एटले भावसळंगताने आपणे गझलनो दोष नहीं गणीए.

दी० ब० कृ० मो० झवेरी कहे छे के गझलना एक 'काव्यनी पांच सत्तर या ओगणीस बेतनी संख्या राखवामां आवे छे.' ('गुजराती गझलो' पृ. ६) पण आ बंधन पण आपणी गझले स्वीकार्युं नथी. आपणी गझल बेतनी कोई संख्या आवश्यक मानती नथी, ए पोतानी ऊर्मिना प्रकटीकरण माटे जोईए तेटलो विस्तार करे छे.

गझल ए द्विदल छंद छे, ते बब्बे पंक्तिओनी कडी के बेतोनी बनेली होय छे. बेतना दरेक चरणने मिसरा कहे छे. 'शाईरी'ना कर्ता, आ चरणने तूक पण कहे छे. बे मिसरा के तूकनी एक कडी माटे 'शेअ्र' एवुं नाम छे, जेना उपरथी कवि शायर कहेवाय छे, अने पिंगळ शाईरी कहेवाय छे. गझलना स्वरूपनुं वर्णन करवा पहेलां हुं एक टूंकी गझल उतारुं छुं जेथी दृष्टान्त आपी वर्णन करवुं सहेलुं पडे.

खपना दिलासा शा ?

जतां मदफन तरफ घरथी बजववा ढोलतासा शा ?
बजवबा ढोलतासा शा ? उजवबा आ तमाशा शा ?
थतां पहेलां अमे मुजने हतुं ना कोई ओळखतुं,
कबर आगळ हवे मारी फूलो, साकर पतासां शां ?

गयो रमनार वेचाई सदानी बेनसीबीने;
पछीथी नाखवा तेनी उपर शतरंजपासा शा?
बीजाने काज तो एके हतो हरगिझ मुकायो ना—
कहो, तोतानी हालत पर पछी मुकवा निसासा शा?
दमे आखर पतलियाने कहो छो शुं तमे आवी?
न आप्यो प्रेम तो मुजने — हवे खपना दिलासा शा?

गुजराती गझलो पृ. ११३

कुल पांच कडी के बेतनुं आ काव्य छे. फारसी छंदोमां प्रास बहु महत्त्वनुं स्थान भोगवे छे, अने प्रास उपर घणी झीणवट भरी तेमां चर्चा छे. उपरना दृष्टान्तमां जणाशे के पहेली कडीनां बन्ने चरणो के तूको एक ज प्रासथी संधायां छे. पछीनी कडीओमां एम थतुं नथी, पण पछीनी दरेक कडीनी बीजी पंक्ति, पहेली कडीनो प्रास झीलती जाय छे, एम पहेली कडीनो प्रास कडीए कडीए सळंग चाले छे. आ रीते प्रासनी दृष्टिए पहेली कडी, पछीनी कडीओथी जुदी पडे छे. आने शाईरीमां 'पूर्वकडी' कहेली छे. आवी पूर्वकडीओ कोई गझलमां एकथी वधारे पण होय अर्थात् पहेली बे त्रण के थोडी कडीओमां बधां दलो के तूको पहेली कडीनी पेठे ज एक ज सळंग प्रासवाळां होय. उपरनी गझलमां छेल्ली बेतमां कविए पोतानुं तखल्लुस गूंथेलुं छे. ए फारसी कविओनो रिवाज हतो. ए छेल्ली कडीने 'शाईरी'मां 'पूर्णकडी' कहेली छे.

अहीं में उपरनी कडीओमां प्रासनो निर्देश करेलो छे, पण फारसी पिंगल तेनुं पृथक्करण करी तेना बे विभाग दर्शावे छे, काफीयह् के सादी रीते बोलतां काफिया अने रदीफ. उपरनी गझलमां प्रासवाळी दरेक पंक्तिमां छेवटे एक ज शब्द आवे छे 'शा' (के 'शां'). ए आ गझलनो रदीफ छे. अने रदीफ पहेलां गझलनो काफिया आवे छे. 'शाईरी'मां आ रदीफने तूकान्त कहेल छे. तेना कर्ता कहे छे : "तूकान्तमां मात्र एकना एक ज अक्षरो एक ज स्वरूपे होवा आवश्यक छे, अर्थो साथे संबंध नथी. एक ज स्वरूप साथे तेना ते ज अक्षरो होय, पण तूकान्त आगळना शब्दो एवा जोडवामां आवे के तूकान्तना अर्थ बदलाई जता होय तोये वांधो नथी. तूकान्तनुं होवुं ए आवश्यक नथी. पण साधारण रीते तूकान्त होय तो ठीक लागे छे. तूकान्त नानामां नानो एक अक्षरी पण थई शके छे, जेम के छे यां, थी, ने वगेरे. तूकान्त गमे तेटलो मोटो पण थई शके छे :

अदा पण तमारी अति मन पसंद
जफा पण तमारी अति मन पसंद

ઉપલી કડીમાં અદા, જફા, પ્રાસો છે, બાકી બધા શબ્દો તૂકાન્ત છે. તૂકાન્ત જેટલો લાંબો હશે, તેટલો નિભાવવો કઠિન થઈ પડશે." (શાઈરી ભા.૨, પૃ. ૬૪–૬૫)

આ ઉપરથી સમજાયું હશે કે કાવ્યમાં આપણે જેને ટેક કે ધ્રુવ કે ધ્રુવખંડ કહીએ તે રદીફ છે. પણ એટલું વિશેષ કે રદીફ કડીનો અંદર જ સમાઈ ગયેલો હોય છે ત્યારે ટેક કે ધ્રુવ કે ધ્રુવખંડ ઘણા વાર કડી બહાર લટકાવેલો હોય છે. અને બીજું એ કે પ્રાસબદ્ધ શબ્દનો પ્રત્યય પણ છૂટો હોય તો તે પણ રદીફ ગણાય.

જે મઝા મળતી સનમની યાદમાં
તે મઝા ક્યાંથી મળે ફર્યાદમાં

આમાં 'માં' રદીફ છે. રદીફ પહેલાં કાફિયા આવવો જોઈએ તે 'યાદ' અને 'ફર્યાદ'માં આવી જાય છે. પ્રાસની ચર્ચામાં આપણે આ જ આવશ્યકતા જુદા શબ્દોમાં સ્વીકારી છે: એ રીતે કે ચરણને અંતે એક ને એક પ્રત્યય કે શબ્દ આવતો હોય તો એને બાદ કરી તેની આગળ પ્રાસ મેળવવો જોઈએ. (જુઓ ગત પૃ. ૩૫૧) આ ઉપરાંત ફારસી પિંગળોમાં રદીફ કાફિયા વિશે જે ઝીણવટ વાળી ચર્ચા કરી છે, તેમાં ઊતરવાની જરૂર નથી, ગુજરાતીમાં લખાતી ગઝલોને માટે તો નથી જ.

ગુજરાતી ગઝલલેખકોએ રદીફ કાફિયાના આ બધા નિયમો પાળ્યા નથી. પૂર્વકડીની બન્ને તૂકો રદીફ કે કાફિયા વાળી હોવી જોઈએ, અને પછીની દરેક બેતની બીજી તૂકે એને ઝીલવો જોઈએ એ નિયમ ઘણાએ પાળ્યો નથી. બાલાશંકર કવિ, જેને ફારસી સાહિત્યનો સારો અભ્યાસ હતો તે પણ સર્વત્ર એક સરખી રીતે રદીફ કાફિયા પાળતા નથી. તેમની 'ખબર લે' ગઝલમાં તેમણે બન્ને પાળેલ છે.

ઉતારના કંઈ પ્યાર એ, દિલદાર ખબર લે;
ગમખ્વાર જિગર ખ્વારની, કંઈ યાર ખબર લે.
ગુલિસ્તાનમાં હેરાન છે, મસ્તાન આ બુલબુલ;
ભર પ્યાર નથી યાર, વફાદાર ખબર લે.

ગુજરાતી ગઝલો, પૃ. ૧૯

અહીં પહેલી કડીમાં બન્ને ચરણો પ્રાસબદ્ધ છે. તેમાં 'ખબર લે' રદીફ છે અને 'દિલદાર- યાર'થી કાફિયા રચાય છે, પછીની કડીમાં એ રદીફ કાફિયા કડીની બીજી પંક્તિમાં ઝિલાય છે, અને આખી ગઝલમાં એ પ્રમાણે સળંગ

थाय छे. दरेक कडीने अंते 'खबर ले' आवे छे अने तेनी आगळ 'समजदार', 'खबरदार', 'निगहदार', 'सरदार', वगेरे शब्दोथी काफिया रचाय छे. पण एनी ज एक बीजी गझलमां आ नियमो पळाया नथी. 'दीठी नहीं!' गझल जोईए.

बलिहारी तारा अंगनी, चंबेलीमां दीठी नहीं;
सख्ताई तारा दिलनी, में वज्रमां दीठी नहीं;
मन म्हारुं एवुं कुंळुं, पुष्पप्रहार सहे नहीं;
पण हाय! तारे दिल दया, में तो जरा दीठी नहीं.

गुजराती गझलो, पृ. १

अहीं 'दीठी नहीं' रदीफ छे. ते बीजी कडीमां ऊतरेलो छे. अने आखी गझलमां पण ऊतरेलो छे. पण रदीफ पहेलां पहेली कडीमां पण काफिया नथी, अने आखी गझलमां काफिया छे ज नहीं. मणिभाई नभुभाईनी 'अमर आशा'मां रदीफ अने काफिया बन्ने सचवाया छे:

कहीं लाखो निराशामां अमर आशा छुपाई छे;
खफा खंजर सनमनामां रहम ऊंडी लपाई छे.
जुदाई जिंदगीभरनी करी रो रो बधी काढी;
रही गइ वस्लनी आशा अगर गरदन कपाई छे.

एजन, पृ. ३१

'छे' रदीफ छे अने 'छुपाई-लपाई-कपाई' आगळ जतां 'कमाई' वगेरेथी काफिया थाय छे. पण बालाशंकरनी पेठे ज एमणे पण क्यांक मात्र रदीफ ज साचवेल छे. पण कलापीए तो क्यांक क्यांक बन्नेमांथी कशुं ज साचव्युं नथी. जेमके:

हमारा राह

कटायेलुं अने बूठुं घसीने तीक्ष्ण तें कीधुं;
कर्युं पाछुं हतुं तेवुं, अरे! दिलबर हृदय मारूं.
गमीना जाम पी हरदम धरी माशूक! तने गरदन्!
न खंजरथी कर्या टुकडा! न जामे ईश्क पायो वा!
पछी बस मस्त दिल कीधुं, उघाडी चश्म में जोयुं;
सितमगर तोय तुं मारो, खरो उस्ताद छे प्यारो!

आमां रदीफ नथी काफिया नथी तेम आपणो प्रास पण नथी. प्रास विनानी कविता फारसीमां बिलकुल नथी एम नथी. 'शायरी'ना कर्ता "सामान्य

कडी" विशे कहे छे: "कोई पण वजन सहित बे तूकोनी कडी थाय छे. सामान्य अथवा सादी कडीनी बन्ने तूको सप्रास होती नथी. उदाहरण:

प्रेम मुज् उरथी कदी जूदो पडी शकतो नथी,
बाळवयथी ए दयाहिण तो गळानो हार छे.

"शार", शाईरी भा. २. पृ. ७२

आनो अर्थ हुं एम समजुं छुं के ज्यारे कोई एक ज कडी छुट्टा मुक्तक तरीके कहेवामां आवे त्यारे तेने प्रासनी जरूर नथी. अने गझलनुं स्वरूप जोतां आ अपवाद स्वाभाविक छे. कारण के रदीफ अने काफिया बन्ने सळंग गझलना दरेक बेतमां मूर्त थतां लक्षणो छे. ए लक्षण एक ज तूकमां अनवकाश बने छे. पण सळंग चालती गझलमां तो प्रास आवश्यक छे, गणवो जोईए.

गझलना छंदो, हुं आगळ बतावीश एम जातिछंदोना जेवा, आवृत्तसंधि छंदो छे. जातिछंदोमां में कारणो आपी दर्शाव्युं छे के तेमां चरणान्त बताववा प्रास आवश्यक छे. एटले गझलमां पण प्रास आवश्यक गणवो जोईए. गझलनी रीत प्रमाणे तेमां पूर्व कडीनो प्रास, पछीनी कडीओमां अंते सळंग राखवाथी एक प्रकारनी सुंदर भंगी बने छे. तेमां पण गझलना मूळ नियम प्रमाणे जो एक बेत के कडीने बीजी कडी साथे अर्थनो संबंध ज न होय तो तो सळंग प्रास आवश्यक गणवो जोईए, कारण के सळंग प्रास न राखीए तो पछी ए गझलने सळंग एक कृति राखनार बीजी कोई वस्तु रहेती नथी. पण एम न होय, अने एक ज भाव के ऊर्मिनी गझल होय तोपण आपणा जातिछंदोनी पेठे गझलमां पण कडीए कडी स्वतंत्र प्रासवाळी होय तो तेमां हुं कशुं खोटुं जोतो नथी. एवी गझलो गुजरातीमां लखाई पण छे. मणिभाई नभुभाईनी 'निराशा ए ज छे आशा' (गुजरातनी गझलो पृ. ३३) गझलमां एवा प्रासो छे, जो के क्यांक क्यांक बहु निष्प्राण प्रासो छे, क्यांक प्रासो नथी. अर्थात् गुजराती कवितामां गझलना मूळ सळंग प्रासने बदले आवतो दरेक कडीनो स्वतंत्र प्रास जाति-छंदोना मेळने अनुकूळ होवाथी आपणे स्वीकारी लेवो जोईए. एक भाषानी कवित्वरीति बीजी भाषामां जतां कंईक फेरफारो अवश्य थाय, तेवो आ एक गुजरातीमां थयेलो फेरफार आपणे स्वीकारवो जोईए.

आपणे आगळ जोयुं के गझलमां सळंग भाव होतो नथी. सळंग भाव के कथन माटे रूबाई मुसद्दस के कत्अ्‌ नो प्रयोग थाय छे. आ विशिष्ट रचनाओ पण प्रासनी भंगीथी थता भिन्नभिन्न बंधो छे. ते आपणे अहीं ज जोई लईए.

कतअ् नामना बंधमां पहेली त्रीजी तूको निष्प्रास होय छे, बीजी चोथी सप्रास होय छे. जेम के

आ तो विख्यात छे बळवान बहादुर शूरा
जाते आझाद रही खोलता पर्वशनां बंद
रंगे, रूपे, कदे, शोभाए, मनोहरतामां
सअदीया रोझे अझल हुस्न बतुकर्दं दादंद
"शार", शायरी भा. २, पृ. ७२

रुबाईमां पहेली बीजी अने चोथीमां एक ज प्रास होय छे त्रीजी प्रास बहारनी होय छे. जेमके :

हर्गिझ् बतर्ब शर्बते आबे न खूरम्
ता अझ् कफे अन्दोह् शराबे न खूरम्
नाने न झनम् बर नमके हेच कसे
ता अझ् जिगरे खुश्त कबाबे न खूरम्.
हकीम खैयाम

मुसद्दसमां पहेली चार पंक्तिओ एक ज प्रासमां होय छे, अने ते पछी बे स्वतंत्र प्रासनी आवे छे. एम छ पंक्तिनो एक बंध थाय छे. मोटा मोटा कविओए इतिहासो आ बंधमां वर्णवेला छे. उदाहरण :

कदमने कियामतनी चाले उठावी,
पलकमां हझारो फसादो, जगावी
फकत नैनथी नैनने को मिलावी,
उडावी गयो मुज हृदयने चुरावी
निराधार मुजने बनावी लुटारो,
थयो एक पळवारमां गुम ठगारो.
"वहूशी" रांदेरी

हवे आपणे अरबी-फारसी छंदोनी घटना जोईए. छंदोना घटक अवयवो तरीके अमुक अमुक शब्दो, नक्की थयेला छे. आ शब्दो बे प्रकारना छे; मूळ शब्दो जेने 'अर्कान' कहे छे ते, अने तेमांथी ऊपजेला शब्दो जेने 'फुरू-आत' कहे छे ते. मूळ शब्दो (१) फऊलुन् (२) फाइलुन् (३) मुस्-तफ्इलुन् (४) मफाईलुन् (५) फाइलातुन् (६) मुतफाइलुन् (७) मुफाअल-तुन् (८) मफ्ऊलातु. ए प्रमाणे आठ छे. आ शब्दो अमुक अमुक मापना अक्षरोना गुच्छोना संकेत तरीके स्वीकाराया छे. ए संकेतोने नीचे प्रमाणे

आपणा लगात्मक संकेतोमां उतारी शकाय. फऊलुन् = लगागा, फाइलुन् = गालगा, मुस्तफ्इलुन् = गागालगा, मफाईलुन् = लगागागा, फाइलातुन् = गालगागा, मुतफाइलुन् = ललगालगा, मुफाअलतुन् = लगाललगा, मफ्ऊलातु = गागागाल. फऊलुन् लगागा अने फाइलुन् गालगा स्पष्ट रीते पंचकल छे, बाकी बधा सप्तकल छे. मुस्तफ्इलुन (गागालगा) अने मफाईलुन (लगागागा) उपरांत मुतफाइलुन (ललगालगा) अने मफाअलतुन् (लगाललगा) भिन्न शब्दो तरीके स्वीकाराया छे ए बतावे छे के आ शब्दो लगात्मक रूपना छे, तेमां मात्रामेळी परिवृत्ति शक्य होत तो पछीना बेनो पहेला बेमां ज समावेश थात. एटले एक मूळ सिद्धान्त तरीके आपणे फारसी गझलोना आ घटक अवयवोने लगात्मक मात्रामेळी संधिओ समजवा जोईए.

में आगळ कह्युं के आ अर्कानमांथी भिन्नभिन्न प्रक्रियाओथी नवा शब्दो सिद्ध करवामां आवे छे जेने फुरूआत कहे छे. आ प्रक्रियाओ 'जिहाफ'ना सामान्य नामथी ओळखाय छे. दाखला तरीके फऊलुन् शब्दमांथी नीचे प्रमाणे आठ शब्दो सिद्ध कराय छे: १ फऊल २. फऊल् ३. फअल् ४. फालुन् ५. फअ् ६. फाअ ७. फऊलान ८. फअ्लान. आने 'रणपिंगल' विकृतगणो कहे छे, जे नाम हुं पण स्वीकारी लउं छुं. कोई कोई वार जुदा जुदा अर्कानमांथी एकनो एक विकृत गण सिद्ध करवामां आवे छे. जेमके उपर आपेलो फअ् फाइलुन्मांथी पण सिद्ध करवामां आवे छे. 'रणपिंगले' बधा अर्कानमांथी कुल ११६ विकृतगणो सिद्ध थता बताव्या छे. आपणे ए बधा जाणवानी जरूर नथी. ए बधाय उर्दूमां वपराता पण नथी. आपणा प्रयोजन माटे अमुक गण विकृत गण छे अने ते अमुक मूळ शब्दमांथी सिद्ध थयो छे ते जाणवानी जरूर नथी. छंदना स्वरूपना निरूपणमां जे कोई गण के गणो वपराया होय तेनुं लगात्मक रूप जाणीए ए ज जरूरनुं छे.

अरबी फारसी छंदोनुं एकम एक कडी के बेत छे, अने तेना स्वरूपनिरूपणमां आखो बेतनुं स्वरूप निरूपाय छे. संस्कृत समवृत्तोनी पेठे तेना एक ज चरण के तूकनुं स्वरूप निरूपातुं नथी, पण बे तूकनुं निरूपाय छे, अने तेनुं कारण एवुं जणाय छे के तेनी बीजी तूक कोई वार पहेलीथी भिन्न होय छे.

छंदोनुं सादामां सादुं स्वरूप ते एक बेतमां उपर आपेला अर्कानना आठ, छ के त्रण आवर्तनोनुं छे. सौथी वधारे प्रचलित रूप आठ आवर्तनोवाळुं छे. एटले के एक तूक के पंक्तिमां एक शब्दनां चार आवर्तनोवाळुं छे. फारसी पिंगलमां अर्कान उपरथी छंदोनां नामो पडेलां छे. उपर आठ अर्कान आप्यां

તેમાંના સાતનાં આવર્તનોથી સાત છંદો બને છે. 'શાઈરી'માંથી જ આ કોઠો હું ઉતારું છું. આ કોઠામાં આવર્તન સંખ્યા તે એક પંક્તિની સમજવી.

	નામ	આવર્તન સંખ્યા	અર્કાનનો શબ્દ
૧	મુતકારિબ	૪	ફઊલુન્ (લગાગા)
૨	મુતદારિક	"	ફાઇલુન્ (ગાલગા)
૩	રજઝ	"	મુસ્તફ્ઇલુન્ (ગાગાલગા)
૪	હઝજ	"	મફાઈલુન્ (લગાગાગા)
૫	રમલ	"	ફાઇલાતુન્ (ગાલગાગા)
૬	કામિલ	"	મુતફાઇલુન્ (લલગાલગા)
૭	વાફિર	"	મુફાઅલતુન્ (લગાલલગા)

આઠમો શબ્દ મફ્ઊલાતુ (ગાગાગાલ) તેનાં ચાર આવર્તનોનો કંઈ છંદ બનતો નથી. બીજાના મિશ્રણમાં માત્ર તે વપરાય છે. ૧લો મુતકારિબ તે બરાબર ભુજંગી છે. બીજો મુતદારિક 'દલપત પિંગલ'માં નોંધેલો સ્રગ્વિણી છે. ત્રીજો રજઝ તે હરિગીતના દાદાલદાના ગાગાલગા એવા લગાત્મક રૂપનો સપ્તકલ સંધિનો છંદ છે. એ પછીના બધાય, સપ્તકલ સંધિનાં ભિન્નભિન્ન લગાત્મક રૂપોનાં આવર્તનોવાળા છંદો છે. એક વાત તરત ધ્યાનમાં આવે છે કે આપણી ગુજરાતી ભાષામાં સપ્તકલ છંદો બહુ ઓછા છે, ત્યારે ફારસી અરબીમાં સપ્તકલ છંદોનો જ વિશેષ કરીને વિકાસ છે. ગુજરાતી ગઝલો ઘણોખરો આ સપ્તકલોની જ છે, જો કે બીજા પ્રકારો પણ કોઈ કોઈ મળી આવે છે. મુતકારિબની એક સુઘડ રચના પતીલની આ નીચે દૃષ્ટાન્ત તરીકે ઉતારું છું:

નહીં આશના આશનાથી જુદો છે,
ખુદાનો ન બંદો ખુદાથી જુદો છે.
લડે જંગ આ ને કરે હુકમ પેલો
સિપાહી નહીં પેશવાથી જુદો છે.
ભરાયા કટોરા શરાબે શિરાઝી,
કરે જેમ ગુર્બા કરે તેમ ગાઝી;
ગુનો શાહનો ના ગદાથી જુદો છે,
ખુદાનો ન બંદો ખુદાથી જુદો છે.

પ્રાસ જરા વધારે જટિલ છે, પણ સંધિ ફઊલુન્ લગાગા સ્પષ્ટ છે. ફાઇલુન્ ગાલગાનો કોઈ ગઝલ મારા ધ્યાનમાં નથી. રજઝના ગુજરાતીમાંથી ઘણા દાખલા મળી શકશે. રજઝમાં મુસ્તફ્ઇલુનનાં એટલે ગાગાલગાનાં ચાર આવર્તનો આવે.

हूं जाउं छूं हूं जाउं छूं त्यां आवशो कोई नहीं
सो सो दिवालो बांधतां त्यां फावशो कोई नहीं.

बराबर गागालगानां चच्चार आवर्तनो छे. गझलमां घणे सुधी बराबर आ लगात्मक संधि सचवाय छे. कोई जगाए गुजरातीमां न सचवायो लागे, गुरुनी जगाए बे लघु लागे, पण त्यां घणुंखरुं उच्चारणफेर होय छे. जेमके आ गझलमां ज आगळ:

आ चश्म बुरजे छे चड्युं आलम बधी नीहाळवा,
ते चश्म पर पाटो तमे बींटी हवे शकशो नहीं.

'आ चश्म बुर' एमां गागालगाना छेल्ला गानी जगाए 'बुर' छे. पण त्यां बे लघु नथी, कारण के फारसी प्रमाणे अहीं बुर् एवो उच्चार इष्ट छे. एवी ज रीते 'ते चश्म पर'मां 'पर्' उच्चार छे, अने ए उच्चार गुजरातीना साधारण उच्चारणथी बहु दूर नथी, कारण के 'पर'नो अंत्य 'अ' द्रुत बोलाय छे, अने प्रो. ठाकोर तो आने 'पर्' उच्चारी गुरु गणवाना मतना छे. ए ज रीते 'शक्शो' उच्चार थाय छे. अने एम बन्ने तूकमां लगात्मक उच्चारण सचवाय छे. पण आ संधिवाळी बीजी अनेक गजलो जोतां एक गुरुनी जगाए बे लघुना दाखला मळी आवे छे. 'ईश्कनो बंदो' गजलमां

ते एक टीपूं लाख दुनिया वेचतां ना ना मळे.

'ते एक टी' 'पूं लाख दुनि' एमां बीजा संधिमां संधिना छेल्ला गुरुनी जगाए 'दुनि' आवे छे एने बे लघु गण्या विना छूटको नथी. अने 'प्रेमथी तुं शुं डरे'मां

दइ घास कर रसभर अने एवुं थतां तूं शूं डरे?

एमां 'रसभर अने' एक संधिमां पांच लघु भेगा थई गया छे. तेमां पहेला चार गागानी जगाए छे. एम आपणा कविओ आ संधिओने हमेशां लगात्मक ज राखता नथी. क्यांक क्यांक तेनां मात्रामेळी रूपोथी चलावी ले छे. अने संधिओ स्वरूपे मात्रामेळी छे एटले एने दोष गणी काढवो न जोईए. अलबत्त एटलुं स्वीकारवुं जोईए के आवी छूट बहु लेतां गझलनुं मूळ सौन्दर्य ओछुं थया विना रहेतुं नथी. 'शाईरी'मां कर्ताए आ छूटने वाजबी गणी छे. आ रजझ छंदना ज दृष्टान्तमां 'समजू जने समजी जई अभिमानने वणसाडवो' ए डाह्याभाई धोळशाजीनी पंक्ति तेमणे स्वीकारी छे. (शाईरी भा. १, पृ. २७) आमां 'सम', 'अभि' अने 'वण' त्रणेय लघु द्विको गुरुनी जगाए छे.

आपणे फारसी उच्चारण विशे थोडो विचार कर्यो तो साथे साथे ए पण अहीं ज नोंधी लईए के ऊर्दूमां 'ए' अने 'ओ' ह्रस्व अने दीर्घ बन्ने छे. गुजरातीमां कविओ घणी जगाए ए बन्ने स्वरोने ह्रस्व पण प्रयोजे छे, अने आपणा उच्चारणमां ए कढंगुं जणातुं नथी एटले गुजरातीमां पण छंदनी आवश्यकता प्रमाणे ए बन्ने स्वरोने ह्रस्व के दीर्घ लई शकाय. गुजरातीमां तो गमे त्यारे ह्रस्वने दीर्घ अने दीर्घने ह्रस्व गणवानी छूट पण छे ज.

हवे हझज लईए. तेनो शब्द मफाईलुन् लगागागा छे. जातिछंदोमां आ स्वरूपनो कोई छंद नथी, जो के दालदादाना आदेश तरीके लदादादा आवे छे. पण गझलोमां लगागागानां आवर्तनोवाळी गझलो पुष्कळ रचाय छे. 'सरस्वतीचंद्र'नी प्रसिद्ध गझल 'दिवां छोडी, पितामाता' ए हझज छे. कलापीनी पहेली गझल 'फकीरी हाल' 'अये उल्फत्! अये बेगम' प हझज छे. मणिलालनो प्रसिद्ध गजल 'कहीं लाखो निराशामां' पण आ ज छे. वधारे दाखलानी जरूर नथी.

रमल प्रकारनो शब्द फाइलातुन् गालगागा छे. एनां चार पूर्ण आवर्तनोवाळी गुजरातीमां कोई गझल मन मळती नथी. एटले 'शाईरी' भा. १मां तेना दृष्टान्त तरीके एक पंक्ति आपेली छे ते उतारुं छुं:

हुं कहुं हिम्मत धरी के मुज हृदयनी चोर तुं छे.

आमां 'मत' अने 'मुज' एक गुरुनी जगाए आवे छे, एटलो तफावत रहे छे ते सहेज नोंधुं छुं.

आ पछी कामिल आवे छे जेमां मुतफाइलुन् ललगालगानां चार आवर्तनो आवे. बराबर आ मापनी गझल मळवी मुश्किल छे कारणके आपणा लेखको गझलोनुं लगात्मक रूप बराबर साचवता नथी, अने जरा मात्रामेळी परिवृत्तियो थानुं दादाल्दा रूप थई जवानो संभव बहु प्रबळ छे. पण 'शाईरी'ना कर्ताए बताव्या प्रमाणे आवृत्तसंधि अक्षरमेळ गीतक के मुनिशेखर छंद बराबर आ ज मापनो छे. दलपतरामनुं दृष्टान्त बराबर बंध बेसी रहे छे:

सजि जो भरी सळगाव बंदुक ताकि तोड निशान तूं
शुभ ए कळा मुनिशेखरे शिखवेल ते ज समान तुं.

मस्त कवि बालाशंकरनी 'हरिप्रेमपंचशी'नी पहेली गझलना नमूनानी पंक्ति उपर कहेल कामिल छे:

गई यक ब यक् जों हवा पलट् नों तों दिल्में अपनें करार यह्

श्री उमाशंकर आ मूळ पंक्तिने नझोरनी ओळखावे छे. ते बराबर कामिल छे. पण तेना नमूना पर लखायेली बालाशंकरनी पंक्तिओमां एनुं लयात्मक रूप सचवायुं नथी.

बलिहारि तारा अंगनी चंबेलिमां दीठी नहीं.

'बलिहारि ता' ए ललगालगा बराबर छे, पण पछीना संधिओ गागालगामां सरी पडे छे.

आ पछी छेल्लो प्रकार वाफिर, मुफाअलतुन् लगाललगानां चार आवर्तनोनो आवे. 'शाईरी'मां आनी पंक्ति मळती नथी. एटले एनुं दृष्टान्त हुं 'रणपिंगळ'मांथी उतारूं छुं:

सदाचरणे सदा सुख छे, दुराचरणे नकी दुख छे;
रखावट राखवी ठिक छे, रखावट ए रुडो रुख छे.

रणपिंगळ भा. ३, पृ. ६१

गुजरातीमां शुद्ध स्वरूपनी आ गझल मळवी मुश्केल छे.

आ बधा छंदो आवृत्तसंधि छे. तेमनो मेळ संधिनां आवर्तनोनो छे ए स्पष्ट छे. अने फारसी पिंगळनां आ वर्णन मुख्य छे ए जोतां आटला उपरथी पण गझलोनो मेळ मात्रामेळो छे एवुं कहेवामां कशुं साहस नथी. पण आ सिवायना फारसी छंदो पण मात्रामेळना धोरणे ज विस्तार पामे छे, एना पण पुष्कळ दाखला मळी रहे छे. तेमांना केटलाक जोईए:

आपणे लगागानां चार आवर्तनोवाळो मुतकारिब जोई गया. ते पछी 'शाईरी'मां (२) मुतकारिब मक्सूर छंद (१२ अक्षरी) आवे छे.

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल
लगागा लगागा लगागा लगाल

बराबर आ ज मापनो 'दलपतपिंगळ'मां चौल छंद मळी आवे छे:

थया याजको ते थयो धारि धीर,
वसो चौलमां के नदीनीर तीर.

अहीं अंत्य संधि स्पष्ट रीते एक मात्रा जेटलो खंडित थयो छे. ए पछी 'शाईरी'मां ११ अक्षरी (३) मुतकारिब आपेलो छे:

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फअल्
लगागा लगागा लगागा लगा

करुं याद तारी हमेशां खुदा
नथी कोइ तारा विना किब्रिया

अहीं छेल्लो संधि वळी वधारे खंडित थाय छे. तेनी अंत्य बे मात्रा अनक्षर बने छे. आ पछी दशाक्षर (४) मुतक़ारिब नीचे प्रमाणे आवे छे :

फअ्लुन् फऊलुन् फअ्लुन् फऊलुन्
गागा लगागा गागा लगागा
तुज् नामनी हूं माळा जपूं छूं
पापी थकी हूं तौबा करुं छूं.

पठन करतां मालूम पडशे के अहीं गागालनां आवर्तनो छे अने बीजा अने चोथा संधि, बन्नेनी अकेक मात्रा खंडित थयेलां छे.

गागाल गागा⌣ गागाल गागा⌣

विष्वंकमाला के ग्राही अने आमां एटलो ज फेर छे के ग्राहीमां मात्र चोथा संधिनी ज एक मात्रा खंडित थयेली छे. तेनो बीजो संधि अखंड छे.

ग्राही : गागाल गागाल गागाल गागा⌣

कदाच अहीं शंका थाय के मूळ संधि लगागाने स्थाने बीजा ज संधि गागाल मूकीने छंदनो मेळ दर्शाववो ए प्रामाणिक छे? खरुं प्रमाण तो पठन छे, अने पठनमां जे थतुं होय ते दर्शाववुं ते अप्रामाणिक होई शके नहीं. पण खास तो ए कहेवानुं छे के फारसी पिंगलनो परिभाषामां अेक ज नामना छंदमां एम बीजो संधि करी जवानां घणां दृष्टान्तो छे. आ पछीनो (५) मुतक़ारिब छंद (१४ अक्षरो) एवो छे.

फअ्लुन् फाअफऊलुन् फअ्लुन् फाअफऊलुन्
गागा गालल्गागा गागा गाललगागा

आमां स्पष्ट रीते चतुष्कल संधिनां गागा अने गालल रूपनां कुल छ आवर्तनो छे. आथी ज कोई पण एक शब्दने आपणे संधि गणी शकता नथी. शब्दो गोठवतां पठननांयी कोई जुदो ज संधि नीकळी आवे छे. आमां पण फऊलुन् आवे छे एटले एने मुतक़ारिब कह्या छे पण छंदनो मेळ ए पंचकल फऊलुन्ने अवलंबतो नथी. एटले के कोई अमुक शब्दना नामनो छंद ए ज शब्दना पिंगलसंधिनां आवर्तनोनो छे एम कहो शकाशे नहीं अने माटे ज आपणे माटे बधां फारसी नामो जाणवानी हुं अगत्य जातो नथी. छंदनो मेळ

જોઈ લઈએ એટલે બસ. એક ૧૧ અક્ષરી (૬) મુતકારિબ બરાબર દોધક છે:

ફાઅફઊલ ફઊલ ફઊલુન્
ગાલલગાલ લગાલ લગાગા
=ગાલલ ગાલલ ગાલલ ગાગા

દૃષ્ટાન્તની જરૂર રહેતી નથી. ૧૧ અક્ષરી (૭) મુતકારિબ અસ્રમ છંદ તે બરાબર વિધ્વંકમાલા જ છે:

ફઅ્લુન્ ફઊલુન્ ફઊલુન્ ફઊલુન્
ગાગા લગાગા લગાગા લગાગા
=ગાગાલ ગાગાલ ગાગાલ ગાગા⌣

દૃષ્ટાન્તની જરૂર નથી. આ પછી (૮) મુતકારિબ અસ્રમ છંદ (૨૦ અક્ષરી)।

ફાઅફઊલુન્ ફાઅફઊલુન્ ફાઅફઊલુન્ ફાઅફઊલુન્
ગાલલ ગાગા ગાલલ ગાગા ગાલલ ગાગા ગાલલ ગાગા

આ દોધકની બેવડી પંક્તિ બરાબર છે. (૯) મુતકારિબ અસ્રમ છંદ (૨૦ અક્ષરી, ૧૬ શબ્દો):

ફઊલુન્ ફઅલ્ ફઊલુન્ ફઅલ્ ફઊલુન્ ફઅલ્ ફઊલુન્ ફઅલ્
લગાગા લગા લગાગા લગા લગાગા લગા લગાગા લગા

અહીં લગાગાલગા દ્વૈતીયીક અષ્ટમાત્રક સંધિનાં ચાર આવર્તનો છે અથવા દરેક સાત સંધિ લગાને લગા—ગગાને આખો રચનાને લગાગાનાં આવર્તનની ગણી શકાય. તે પછી (૧૦) મુતકારિબ ૨૦ અક્ષરી લઈએ:

ફઅ્લુન્ ફઊલુન્ ફઅ્લુન્ ફઊલુન્ ફઅ્લુન્ ફઊલુન્ ફઅ્લુન ફઊલુન્
ગાગા લગાગા ગાગા લગાગા ગાગા લગાગા ગાગા લગાગા

મેળની દૃષ્ટિએ આ નીચે પ્રમાણે થાય:

ગાગાલ ગાગા⌣ ગાગાલ ગાગા⌣ ગાગાલ ગાગા⌣ ગાગાલ ગાગા⌣

આગળ આ પ્રકાર આવી ગયો છે એટલે વિશેષ કહેવાની જરૂર નથી.

(૧૧) મુતકારિબ મક્બૂઝ ૨૦ અક્ષરી:—

ફઊલ ફઅ્લુન્ ફઊલ ફઅ્લુન્ ફઊલ ફઅ્લુન્ ફઊલ ફઅ્લુન્
લગાલ ગાગા લગાલ ગાગા લગાલ ગાગા લગાલ ગાગા

आ स्पष्ट रीते चतुष्कल संधिनां आवर्तनो छे. दृष्टान्तनुं पठन करतां ए विशेष स्पष्ट थशे.

न पूछ सहचर कें हाल शा छे, विचित्र हुं पेच तावमां छुं
न चेन पामुं न जीव जाये, अजब् तरहना अजाबमां छुं.

अकानिमां कोई चतुष्कल शब्द नथी. बधी चतुष्कल रचनाओ आ रीते सिद्ध थाय छे.

(१२) मुतक़ारिब २२ अक्षरी

फाअ फऊल फऊल फऊल फऊल फऊल फऊल फअल्
गाल लगाल लगाल लगाल लगाल लगाल लगाल लगा

मेळनी दृष्टिए आमां आवर्तनो गाललनां छे. नीचे प्रमाणे:

गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गा

अंत्य आठमा संधिना बे लघुओ अनक्षर रह्या छे.

हवे (१३) मुतक़ारिब १८ अक्षरी लईए:

फअ्लुन् फअ्लुन् फाअफऊलुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फाअफऊलुन्
गागा गागा गाललगागा गागा गागा गाललगागा

स्पष्ट रीते गागा अने गालल एम चतुष्कलना बे पर्यायोनां आवर्तनो छे. आ पछी (१४) मुतक़ारिब मुज़ाअफ् १८ अक्षरी लईए.

फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फाअफऊलुन् फाअफऊलुन् फअ्लुन्
गागा गागा गागा गाललगागा गाललगागा गागा

मेळनी दृष्टिए:

गागा गागा गागा गालल गागा गालल गागा गागा.

हवे (१५) मुतक़ारिक १५ अक्षरी:

फअ्लुन् फअ्लुन फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्
गागा गागा गागा गागा गागा गागा गागा गा

अंत्य आठमा संधिनो अंत्य गुरु अनक्षर छे.

हवे (१६) मुतदारिक १२ अक्षरी लईए:

फाइलुन् फाइलुन् फाइलुन् फाइलुन्
गालगा गालगा गालगा गालगा

आ आपणो स्त्रग्विणी ज छे.

(१७) मुतदारिक २४ अक्षरी

फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन् फइलुन्
ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा ललगा

तोटकथी बेवडी लांबी एक पंक्ति छे.

(१८) मुतदारिक ८ अक्षरी:—

फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन् फअ्लुन्
गागा गागा गागा गागा

आवृत्तसंधि लगात्मक विद्युन्माला छे.

(१९) मुतदारिक १२ अक्षरी. ते उपरना संधिनां छ आवर्तनोनो छे.

हवे (२०) हझज आवे छे. सोळ अक्षरी हझज आपणे जोई गया छीए. तेना विकारो लईए. तेमां प्रथम (२१) हझज १४ अक्षरी:

मफ्ऊल् मफाईल मफाईल फऊलुन्
गागाल लगागाल लगागाल लगागा

मेळनी दृष्टिए आनो नीचे प्रमाणे संधिविन्यास थाय:—

गा] गाललगा गाललगा गाललगा गा—

त्रिकल अने षट्कल संधिनां आमां आवर्तनो छे. पहेलो गा निस्ताल छे अने पछी गाललगानी पहेली मात्राथी षट्कल ताल शरू थाय छे. चोथा आवर्तनमां गा छे ते चार मात्रानो प्लुत छे, अने पछीनी पंक्तिना पहेला गा साथे मळी षट्कल रचे छे. उदाहरणनुं पठन करतां ए मालूम पडशे।

सो वार गुनह् गार खतावार तमारो—
पण लाख वखत् यार परस्तार तमारो—

कोई अर्कान्ना शब्दथी त्रिकल के षट्कल रचना थती नथी, ते अर्कान उपरथी बांधेला गणोथी थाय छे. आ पछी लईए

(२२) हझज ११ अक्षरी:—

मफाईलुन् मफाईलुन् फऊलुन्
लगागागा लगागागा लगागा

त्रीजा संधिनी छेल्ली बे मात्रा अनक्षर छे. 'शाईरी'मां तेनुं नीचे प्रमाणे दृष्टान्त छे :

मने तूं ओळखे छे झार छूं हूं
महब्बतनी कथानो सार छूं हूं.

आ छंदनी एक गझल गूजराती गझलिस्तानमां मळे छे.

पितानी फोजना साचा सिपाई
पिताना जंगमांहे झूझनारा

गूजराती गझलिस्तान, पृ. १६२

आ गझलमां आगळ जतां रदीफ के काफिया आगळ चलाव्यो नथी. अने एक कडीमां स्वतंत्र प्रास पण घणी जगाए नथी. पछी (२३) हझज १२ अक्षरी लईए :

मफाईलुन् मफाईलुन् मफाईल
लगागागा लगागागा लगागाल

चोथो संधि लुप्त थयो छे अने त्रीजा संधिनी एक मात्रा खंडित थई छे. हुं मानुं छुं उपान्त्य गाने त्रण मात्रानो प्लुत करीने ए मेळवी लेवाय छे. दृष्टान्त :

न समजे प्रेमना जे मर्मने झार
महब्बतनो कहेवाये खतावार.

(२४) हझज १६ अक्षरी

मफाइलुन् मफाइलुन् मफाइलुन् मफाइलुन्
लगालगा लगालगा लगालगा लगालगा

'शाईरी' कहे छे तेम आ बराबर नाराच छे. दृष्टान्तनी जरूर नथी.

(२५) हझज अखब छंद १४ अक्षरी :—

मफ्ऊल मफाईलुन् मफ्ऊल मफाईलुन्
गागाल लगागागा गागाल लगागागा

पठनमां एनो मेळ नीचे प्रमाणे छे :

गा] गाललगा गागागा, गाललगा गागा

પહેલી બે નિસ્તાલ માત્રા ગયા પછી ષટ્કલનાં આવર્તનો ચાલે છે. પંક્તિના અંતે ગાગા આવે છે, તે પછીની પંક્તિના નિસ્તાલ ગાને મેળવી એક ષટ્કલ બને છે. આગળ આવી ગયેલ હઝજ ૧૪ અક્ષરીનો અને આનો મેળ એક જ છે. પઠન માટે 'શાયરી'ની બે પંક્તિઓ ઉતારું છું:

હૂં નૈન થકી નૈનો અય્ યાર મિલાવીને
બર્બાદ થયો આજે સર્વસ્વ ગુમાવીને

હવે રજઝના પ્રકારો લઈએ. (૨૬) રજઝ મત્વી ૧૬ અક્ષરી:

મુફ્તઇલુન્ મુફ્તઇલુન્ મુફ્તઇલુન્ મુફ્તઇલુન્
ગાલલગા ગાલલગા ગાલલગા ગાલલગા

'શાઈરી'નું જ દૃષ્ટાન્ત લઈએ:

ઝાર તણા હાલ થકી આપ ખબરદાર નથી
ચેન નથી ઊંઘ નથી દર્દ તણો પાર નથી.

સ્પષ્ટ રીતે ત્રિકલબદ્ધ ષટકલોનાં આવર્તનો છે.

હવે (૨૭) રજઝ ૧૬ અક્ષરી:

મુસ્તફ્ઇલુન્ મુસ્તફ્ઇલુન્ મુસ્તફ્ઇલુન્ મુસ્તફ્ઇલુન્
ગાગાલગા ગાગાલગા ગાગાલગા ગાગાલગા

'શાઈરી'એ નીચેનું દૃષ્ટાન્ત આપ્યું છે. સપ્તકલનાં ચાર આવર્તનો છે. દૃષ્ટાન્ત:

કાયા કલેવર કારમૂં છે ગંદકીનો ઘાડવો
સમજૂ જને સમજી જઈ અભિમાનને વણસાડવો

આ પછી 'શાઈરી' (૨૮) રજઝ મત્વી આપે છે. આ પણ સોળ અક્ષરનો છે. અને તેથી ઉપર આવેલા રજઝ મત્વીથી તેને જુદો બતાવવા તેઓ તેને ૧૬ અક્ષરી બી કહે છે. ન્યાસ:

મુફ્તઇલુન્ મફાઇલુન્ મુફ્તઇલુન્ મફાઇલુન્
ગાલલગા લગાલગા ગાલલગા લગાલગા

દૃષ્ટાન્ત: નીચ મળે ન ઊંચથી, પુન્ય મળે ન પાપથી
ખાક જુદી હવા થકી તેજ મળે ન આપથી

હાફિઝની પ્રસિદ્ધ ગઝલ જેને સદ્ગત ન્હાનાલાલે 'અકબરશાહ'માં ઉતારી છે તે આ સંધિઓની છે:

मुत्रबें खुश्नवा बगो ताझें व ताझें नौ बनौ
बादयें दिलकुशा बजो ताझें व ताझें नौ बनौ
बरझें हयात कम् खुरी गर न मुदाम मय् खुरी
बादें बखुर् बयादें ऊ ताझें व ताझें नौ बनौ

स्पष्ट रीते त्रिकलबद्ध षट्कलनां आवर्तनो छे.

हवे रमल लईए. (२९) रमल सोळअक्षरी नीचे प्रमाणे छे:

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन्

आने विषे वधारे कहेवानी जरूर नथी आ पछी जरा क्रमभंग करीने ३०माने बदले ३१मो रमल मह्शूफ पंदर अक्षरी लउं छुं:

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
गालगागा गालगागा गालगागा गालगा

चोथा संधिनो अंत्य गुरु अनक्षर थयो छे. खरी रीते आ ज गुजरातीमां वधारे वपरायो छे. छोडी दीधेलो ३०मो रमल पंदर अक्षरी हवे लउं छुं:

फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
गालगागा ललगागा ललगागा ललगा

आनुं दृष्टान्त 'शाईरी'मां नीचे प्रमाणे आप्युं छे:

उन्मतो कां न करे शोर सरंजाम नथी
मुल् नथी बाग नथी रंग नथी जाम नथी.

आ पछी ३२ रमल मज्नून १४ अक्षरी छे ते उपरना जेवो ज छे, फेर मात्र छेल्ला शब्दमां छे. उपरना ३०मानो अंत्य शब्द ललगा छे, हवे आवे छे तेमां गागा छे:—

फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फअ्लुन
गालगागा ललगागा ललगागा गागा

दृष्टान्तः याद तारी न कदी आह! विसारी दिलथी
बेवफा तें न करी कद्र अमारी दिल्थी

आ छेल्ला बे प्रकारनी गजलनुं पठन में सांभळ्युं नथी. अने केवळ अक्षर-विन्यासथी कोई संधिनां आवर्तनो असंदिग्ध रीते प्रतीत थतां नथी.

आ पछी आपेलो (३३) रमल मजनून १६ अक्षरी पण आने ज मळतो छे:

फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलात
गालगागा ललगागा ललगागा ललगाल

दृष्टान्त : आह् पर् आह् करी आह् बडे आग लगाव
पारकी आश तजी आप बळे नाम दिपाव.

आनुं पण पठन में सांभळ्युं नथी अने उपरना छंद करतां आने विशे विशेष कशुं चोकस रीते कही शकतो नथी. पण बन्नेनो मेळ मने एक ज देखाय छे. आना अंत्य संधि करतां उपरनानो अंत्य संधि वधारे खंडित छे एटलो ज फेर छे. आनी पछी (३४) रमल मकसूर सोळ अक्षरी आवे छे, ए स्पष्ट रीते सप्तकलनां आवर्तनोनो छे. उत्थापनिका :

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलात
गालगागा गालगागा गालगागा गालगाल
मूळ उत्पादिक् तणा अस्तित्वमां गुम् छे हवास
कोण समजे कय्स लय्लामां हतो कोनो निवास

(३५) रमल छंद ११ अक्षरी :

फाइलातुन् फाइलातुन् फाइलुन्
गालगागा गालगागा गालगा

चोथुं सप्तकल आखुं लुप्त थयुं छे अने तूकना छेल्ला सप्तकलनी बे मात्राओ पण खंडित थई छे. दृष्टान्त :

प्रेमपंथे जे मिटावे जातने
ते ज समजे प्रेम केरी वातने

(३६) रमल १२ अक्षरी

फाइलातुन् फइलातुन् फइलात
गालगागा ललगागा ललगाल

दृष्टान्त : सत्य विण कोइ नथी नेक विचार
सांचने आंच नथी एक लगार

आ प्रकार पण में सांभळ्यो नथी. अने अक्षरन्यास उपरथी मने कोई संधिनां आवर्तनो प्रतीत थतां नथी.

(३७) रमल मजनून छंद ११ अक्षरी

फाइलातुन् फइलातुन् फइलुन्,
गालगागा ललगागा ललगा

दृष्टान्त : मूर्ख मानी न बनावो मुजने
पाठ जूठा न भणावो मुजने.

आ रचना उपरना जेवी छे, मात्र तेनी छेल्ली एक मात्रा खंडित थई छे. आनो पण मेळ हुं बतावी शकतो नथी.

(३८) रमल मश्कूल छंद १६ अक्षरी

फइलात फाइलातुन् फइलात फाइलातुन्
ललगाल गालगागा ललगाल गालगागा

दृष्टान्त : समजी गयो हवे हूं परिणाम दिल्लगीनुं
मरवा विना कशुं ए नथि ठाम दिल्लगीनुं.

पठन उपरथी समजाशे के आनो मेळ नीचे प्रमाणे छे :

लल; गाल गाल; गागा लल; गाल गाल; गागा
सम; जीग योह्; वे हूं परि; णाम दिल्ल; गीनुं
मर; वावि नाक; शुं ए नथि; ठाम दिल्ल; गीनुं —

पहेली बे मात्रा निस्ताल छे. पछी गालगालरूपे एक षट्कल आवे छे. पछी गागालल, आवी फरी गालगाल, आवी अंते गागा आवे छे जे पछीनी पंक्तिना ललने मेळवी लई षट्कल रचे छे. सुंदर षट्कल रचना छे. अने आपणी घणीखरी षट्कल रचनाओमां बने छे तेम तेनी पहेली बे मात्रा निस्ताल गया पछी तालबद्ध षट्कलो शरू थाय छे. रमलनो मूळ शब्द सप्तकल छे, पण तेने राखीने बीजा विकारी शब्दो वडे थयेली रचना त्रिकल षट्कलना मेळवाळी छे. बीजे पण आवुं आपणे जोयुं छे.

(३९) रमल १४ अक्षरी :

फाइलात फाइलुन् फाइलात फाइलुन्
गालगाल गालगा गालगाल गालगा

दृष्टान्त : हूं कहूं विलाप कर् मन कहे सबूर कर्
प्रेम राहमां कदी धैर्यने न दूर कर्.

दलपतरामनो समानिका छंद छे अने त्रिकल-षट्कलनो मेळ छे. प्लुतिचिह्न मूकतां उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

गाल गाल गाल गा ‿ गाल गाल गाल गा ‿

(४०) रमल मह्ज़ूफ छंद १५ अक्षरी. पहेलां आ ज नामनो एक छंद आवी गयेलो छे तेथी आने Bनुं चिह्न करेलुं छे. न्यास :

फाइलात फाइलात फाइलात फाइलुन्
गालगाल गालगाल गालगाल गालगा

दृष्टान्त : रोज रोज राजिने रमो ज राग रंगमां
चामरो चलावि चित्त मोहि मोरचंगमां

दलपतरामना चामरनु दृष्टान्त अहीं बेसी रहे छे. छेल्लो गा त्रण मात्रानो प्लुत छे, ए प्लुति गणतां आमां गालनां आठ आवर्तनो छे.

आ पछी कामिल आवे छे. 'शाईरी' (४१) कामिल २० अक्षरी नीचे प्रमाणे आपे छे :

मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् मुतफाइलुन्
ललगालगा ललगालगा ललगालगा ललगालगा

में आगळ कह्युं तेम दलपतरामनो लगात्मक गीतक छंद बराबर आनुं दृष्टान्त बनी रहे छे.

आ पछी (४२) बसीत १४ अक्षरी आवे छे :

मुफ्तइलुन् फाइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
गाललगा गालगा गाललगा गालगा

दृष्टान्त : वात मिलननी सनम् हाल नहीं तो नहीं.
आज नहीं तो नहीं काल नहीं तो नहीं.

स्पष्ट छे के अहीं षट्कलनां आवर्तनो छे. विषम षट्कलो गाललगानां बनेलां छे. सम गालगानां बनेलां छे ज्यां अंत्य गा त्रण मात्रानो प्लुत छे. गालगा ऽ ए रीते.

(४३) मुज़ारिअ् छंद १४ अक्षरी

मफ्ऊल फाइलातुन् मफ्ऊल फाइलातुन्
गागाल गालगागा गागाल गालगागा

दृष्टान्त : आनंदनो ज़मानो आनंदमय् हवा छे
फस्ले बहार आवी चारे तरफ् घटा छे.

अहीं षट्कलोनां आवर्तनो थाय छे, नीचे प्रमाणे :

गा गालगाल गागागा गालगाल गागा

पहेलो गुरु निस्ताल छोडी आवर्तनो शरू थाय छे, अंत्य गागा पछीनी पंक्तिनो गुरु पकडी षट्कल बने छे. आगळ आवी गयेल ३८मो रमल मख्बून सोळ अक्षरी अने आ बन्नेमां मेळ एक ज छे. फेर मात्र एटलो ज छे के अहीं पहेलो निस्ताल गुरु छे तेनी जगाए रमलमां बे लघु आवे छे. पठन तद्दन एक सरखुं छे.

(४४) मुझारिअ् अख्रब छंद १४ अक्षरी :

मफ्ऊल फाइलात मफाईल फाइलुन्
गागाल गालगाल लगागाल गालगा

दृष्टान्त : कामिल गणाय सर्व तर्ह् हर् कमालमां
तेनी मिसाल थै न शके कोइ ह्लालमां.

आनो मेळ नीचे प्रमाणे छे :

गा] गालगाल गाललगा गालगाल गा

अहीं पण पहेलो गुरु निस्ताल छे. ते पछी षट्कलो शरू थाय छे. अंत्य गुरु चार मात्रानो प्लुत छे, जे पछीनी पंक्तिना गुरु साथे मळी एक षट्कल रचे छे.

(४५) मुझारिअ् छंद १५ अक्षरी :

मफ्ऊल फाइलात मफाईल फाइलात
गागाल गालगाल लगागाल गालगाल

दृष्टान्त : वारूं हझार वार जो पामूं हझार जीव
पर्वर्दिगार आप मने तूं हझार जीव

संधिन्यास : गा] गालगाल गाललगा गालगाल गाल

उपर माफक ज पहेलो गुरु निस्ताल छे. पछी षट्कलो शरू थाय छे. छेल्लो गाल पठनमां गा॰ल थई चार मात्रानो बने छे अने पछीनी पंक्तिना गुरुने मेळवीने षट्कल बने छे.

(४६) मुज्तस् छंद १६ अक्षरी :

मफाइलुन् फअलातुन् मफाइलुन् फअलातुन्
लगालगा ललगागा लगालगा ललगागा

दृष्टान्त : खरीद लाज करे छे सुजात ताज गुमावी
मझा मनावतो मूरख् कजात लाज गुमावी

अहीं स्पष्ट छे के षट्कलोनां आवर्तनो छे. एकी स्थाने लगालगा छे, बेकी स्थाने ललगागा.

(४७) मुन्सरिह् छंद १५ अक्षरी :

मफ्तइलुन् फाइलुन् मफ्तइलुन् फाइलात
गाललगा गालगा गाललगा गालगाल

दृष्टान्त : ईश्क तणी ल्हाय छे चेन मळ ना लगार

आ पण षट्कलो ज छे. एटलुं के बीजा षट्कलनी छेल्ली एक मात्रा अनक्षर रही छे.

(४८) सरीअ् छंद १२ अक्षरी :

मफ्तइलुन् मफ्तइलुन् फाइलात
गाललगा गाललगा गालगाल

दृष्टान्त : रंग नथी ढंग नथी ज्यां लगार
प्रेम नथी सार नथी त्यां लगार.

अहीं पण षट्कलो छे, चोथुं अनक्षर रह्युं छे.

(४९) सरीअ् ११ अक्षरी :

मुफ्तइलुन् मुफ्तइलुन् फाइलुन्
गाललगा गाललगा गालगा

दृष्टान्त : वायु हवे मौत तणो वाय छे
प्राण विना प्राण हवे जाय छे.

अहीं पण उपरनी पेठे त्रण षट्कलो छे, फेर एटलो ज के छेल्ला षट्कलनी अंत्य एक मात्रा अनक्षर रही छे.

(५०) खफीफ छंद १० अक्षरी

फाइलातुन् मफाइलुन् फअ्लुन्
गालगागा लगालगा गागा

दृष्टान्त : आग दिल्नी बुझाव तो जाणुं
दिल् थकी दिल् लगाव तो जाणुं.

आ पण में साभळ्यो नथी अने एनो मेळ न्यासमां स्पष्ट थतो नथी.

'शाईरी'मां आ रीते कुल पचास छंदो आपेला छे. पण आमां बधा सम-छंदो ज छे, एटले के वेतनी बन्ने तूको एक सरखी ज छे. पण गझलोमां असम तूको पण होई शके छे. तेनुं स्वरूप जोवा माटे हुं थोडा.दाखला 'रणपिंगल'मांथी लई नीचे उतारुं छुं :

३१२ बहरे मुत्कारिब मुसम्मन अरूज़ सालिम, ज़र्ब मकसूर.

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन्
फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल
लगागा लगागा लगागा लगागा
लगागा लगागा लगागा लगाल

दृष्टान्त : तमारे तमारी भली रीति सांबी
भले को लबाडी लवे लक्ष वात.

अहीं बीजी तुकनो छेल्लो शब्द एक मात्रा जेटलो खंडित थयो छे. आ पछीना ३१३ मा छंदमां ए ज प्रमाणे बीजी तुकनो छेल्लो शब्द फअल् एटले लगा बने छे, अर्थात् वळी एक मात्रा वधारे खंडित थाय छे. ते पछी ३१४ मा छंदमां ए ज स्थाने मात्र फअ् गा आवे छे. अर्थात् मूळ पंचकल लगागा-नी जगाए मात्र एक गुरु ज रहे छे, त्रण मात्राओ कपाय छे. ('रणपिंगल भाग. ३. पृ. ३००—३०२) एक ज विशेष दाखलो आपुं छुं. ४०मा छंदमां बन्ने पंक्तिओ मुतफाइलून् एटले ललगालगानां त्रण आवर्तनोनी छे. ४१मा छंदमां नीचे प्रमाणे छे :

मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् मुतफाइलुन्
मुतफाइलुन् मुतफाइलुन् फइलातुन्
ललगालगा ललगालगा ललगालगा
ललगालगा ललगालगा ललगागा

दृष्टान्त : प्रभुने भजो मळने तजो शुभता सजो,
ममता तजो दृढता सजो दृढबाबा.

अर्थात् बीजी पंक्तिना छेल्ला सप्तकलनी एक मात्रा खंडित थई. ४२मा छंदमां बीजी पंक्तिनो छेल्लो शब्द फइलुन् ललगा बने छे. अर्थात् सप्तकलनी त्रण मात्राओ अनक्षर बनी बाकी चार मात्राओ रही (एजन, पृ. ६०–६२). आटला दाखला बस थशे. गुजरातीमां आ प्रकारना छंदो बहु विरल छे.

आ सर्व दाखला उपरथी जणाशे के फारसी छंदो के गझलोनो मेळ जातिछंदोनो मेळ छे. अने तेनो न्यास मूळ लगात्मक छे, जो के गुजरातीमां तेनुं लगात्मक रूप शिथिल बने छे. 'शाईरी 'ना छंदोमां थोडानो मेळ बतावी शकतो नथी. पण तेनुं कारण तेनुं पठन हुं जाणतो नथी ते छे. पण ते छंदोने पण पासे पासे मूकी सरखावी जोतां ते जातिछंदो होय एवुं निगमन स्पष्ट बने छे. हुं नीचे ए बधाने पासे पासे मूकी बतावुं छुं.

(३०) फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
(३२) फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फअ्लुन्
(३३) फाइलातुन् फइलातुन् फइलातुन् फइलात
(३६) फाइलातुन् फइलातुन् फइलात
(३७) फाइलातुन् फइलातुन् फइलुन्
(५०) फाइलातुन् मफाइलुन् फअलुन्

३०, ३२, ३३, ३६, ३७ ए बधामां पहेलो शब्द गालगागा सप्तकल छे. बीजो ललगागा षट्कल छे. ३०, ३२, ३३ मां त्रीजो पण ललगागा छे. ए त्रण रचनाओमां, चोथा संधिमां जे त्रण रूपो आवे छे, फइलात ललगाल फइलुन् ललगा अने फअ्लुन् गागा, एमां पहेलामांथी बीजुं एक मात्रा खंडित थईने थयेलुं छे, अने फअ्लुन् ए ललगानो ज पर्याय छे. ३६-३७-५० मां ए ज त्रण रूप त्रीजा शब्द तरीके अंते आवे छे. ५० मां फइलातुनने बदले आवतो मफाइलुन् ललगागाने बदले लगालगा छे, अर्थात् रूपान्तर ज छे. एटले आमां मेळ बतावी शकतो नथी छतां आमां थता फेरफारो जातिछंदोना ज लाक्षणिक फेरफारो छे एमां शंका नथी. अर्थात् आपणे कही शकीए के फारसी छंदो लगात्मक रूपना संधिवाळा जातिछंदो छे. अने गुजरातीमां एना संधिओमां लगात्मक रूप शिथिल बने छे.

अंते आपणे थोडी गुजराती गझलो लई तेनुं स्वरूप अने तेमां आवतुं शैथिल्य के फेरफारो जोई जईए. तेने माटे हुं दी. ब. कृष्णलाल झवेरी संपादित 'गुजराती गझलो' पसंद करुं छुं. एक एक गझलनो न्यास हुं लगात्मक रूपमां आपतो जईश.

१. अहा पूरी; खीँली चंदा;
लगा गागा; लगा गागा
शीँतळ मधुरी; छेँ सुख कंदा;
लगा गागा; लगा गागा

२. बलिहारीँ ता; रा अंगनी; चंबेलीँमां; दीठी नहीं;[1]
गागा ल गा गागालगा गागालगा गागालगा

पण गुजराती गझलोमां क्यांक आ मूळ शब्द पण गझलनी वचमां फरी जाय छे. जेमके आ गझलमां

बागमां अनूरागमां के पुष्पना मेदानमां
गालगा गा गाल गा गा गालगा गा गालगा

---

१. सद्‌गत बालाशंकरे आ गझलनी राह "गइ यक् बयक्, जोँ हवा पलट्, नाँ तोँ दिलमें मे, रेँ करार है." ए पंक्ति आपी छे. फारसी लघुगुरु जोतां ए पंक्ति मुतफाइलुन् (ललगालगा)नां आवर्तनोनी छे. बालाशंकरनी कवितामां पहेलो संधि 'बलिहारिता' ए प्रमाणे छे, पण पछीना संधिओ ए प्रमाणे नथी. एटले के कर्ताए ललगालगा अने गागालगा वच्चे भेद मान्यो नथी एम प्रतीत थाय छे.

आमां गालगागानां त्रण आवर्तनो पछी अंते गालगा आवे छे. आवुं घणी वार बने छे. फारसी गझलोना नियमो प्रमाणे आ दोष गणाय. पण आमां फेरफार थईने पण संधि सप्तकल ज रहे छे ए रीते जातिछंदना स्वरूपने ए फेरफार हानि करतो नथी, अने तेथी गुजरातीमां एने अपनावी शकाय. ते साथे ए पण कहेवुं जोईए के एक ज पंक्तिमां एक ज संधिमां भिन्नभिन्न लगात्मक रूपोनुं मिश्रण नथी ज थतुं एम नथी. गाललगा अने ललगागानां मिश्रणोवाळी घणी पंक्तिओ मळशे. तेवी ज सप्तकलना मिश्रणवाळी पंक्तिओ पण छे. दाखला तरीके 'रणपिंगल' भा. ३ ना ३४५ मा छंदनुं स्वरूप नीचे प्रमाणे छे:

३४५ : मुस्तफ्इलुन् फाइलातुन् मुस्तफ्इलुन्
गागा लगा गालगागा गागालगा अने

३४६ : फाइलातुन् मफाईलुन् फाइलातुन्
गालगागा लगागागा गालगागा

आमां मिश्रणो छे. पण एक वार पहेली पंक्तिमां के मेळमां जे स्वरूप नक्की कर्युं ते पछीथी बदलावी शकातुं नथी. पण गुजरातीमां मेळवाळुं रूप आपणे बदल्याना केटलाक दाखला छे, अने ते जातिमेळने हानि करता नथी, ए तरीके आपणे तेनुं समर्थन करी शकीए.

३. आ गझलमांथी दाखला माटे सरल बेत पांचमी लउं छुं:

करुं, गान, गोरुं, वान, घुंघट, मां न, राखि, ए
गा गाल गाल गाल गाल गा ल गाल गा
पुर, वार, करूं, प्यार, निगह्, दार, खबर् ले
गा गाल लगा गाल गाल गाल गाल गा

अहीं क्यांक गाल अने क्यांक तेनो पर्याय लगा आवे छे तेने उपर कह्युं तेम दोष न गणवो जोईए.

४. कोई पण बेत बराबर बेसती नथी. पण आखी गझलमां रदीफ 'छे हरी हरी' गाल गाल गा छे, एटले ए त्रिकलनां ज आवर्तनो गझलमां छे एम हुं मानुं छुं. एम लेतां पंक्तिनुं पठन नीचे प्रमाणे करवुं जोईए:

आज आंखो थकें यार्नी छेह् रीह् री
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा
मति आंख्डीं जादु गारियें छेह् रीह् री
लगा गाल गाल गाल गाल गाल गा

अने तेम छतां कोई पंक्ति संतोषकारक जणाती नथी.

५. अहि बेकदर् दुनियातणी दरकार नहि हममस्तने
लल गालगा ललगालगा ललगाल गा ललगालगा

पण आगळ जतां ललगालगानी जगाए गागालगा क्यांक आवे छे.

माशूक तारी बेकदर भरीँ ईश्कनी खाराइथी
गागाल गागा गालगा लल गालगा गागालगा

वगेरे.

६. जिगर्नो या,र जूदो तो, बधो संसा,र जूदो छे.
लगा गा गाल गागा गा लगा गागाल गागा गा

७. मधुर मधुरी, आंखडीनीँ क,टाक्ष ते क्यम, वीसरे
गाल गागा गालगागा गाल गा गा गालगा

पण चोथी पंक्ति :

दरियाइ मो,जे रड्वडचो, हुं दुःख तो क्यम वीसरे
गागाल गा गा गा लगा गा गाल गा गागा लगा

संधि गागालगा थाय छे अने तेनां पूरां चार आवर्तनो थाय छे.

८. बस् द, ईश, गाळ, कहीँ श; कंइक, मर्म, वाणीँ, मां
वात, हुक्म, मां क, रीश, याँर न, अर्ज, दार, लगार्

गाल के लगानां आवर्तनो छे. पहेली पंक्तिमां छेल्ला आवर्तननी जगाए एक गुरु ज मात्र छे. बीजी पंक्तिमां पूरां आठ आवर्तनो छे. ए रीते असम पंक्तिवाळी बेत छे.

९. अगर ते या, र शीराझी, महारुं मं, न मेळावे
लगा गा गा ल गागागा लगा गा गा लगागागा

१०. हृदय, कोष, मांहीँ, प्रेम, रत्न, लावीँ, नेघ, युँ
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा
सम, पंण क,युँ त,ने अ,मूल्य, में र,ळी र,ळी
लगा गाल गा लगा ल गाल गा लगा ल गा

पण अंदर घणी पंक्तिमां अनियमितता आवे छे.

११. उडो नादा,न मन बुलबुल, रहो गुलशा, रमां ना ना
लगा गागा लगा गा गा लगा गागाल गा गा गा

१२. दिल शुं दिल ला,ग्या पछी खें, चें तुँ शुं खी, जाइने
गा ल गा गा गा लगा गा गा ल गा गा गालगा

१३. कहीं लाखो, निराशामां, अमर आशा, छुपाई छे
लगा गागा लगागागा लगा गागा लगागा गा

१४. आसुडां मा, रां लुवे ए, मूरती को, कोण छे
गालगा गा गा लगा गा गालगा गा, गाल गा

१५. अहा हूं ए, कलो दुनिया, बियाबामां, सूंनो भटकूं,
लगा गा गा लगा गा गा लगागागा लगा गागा

१६. कहीं तूं जा,य छे दोरी, दगाबाजी, करी किस्मत्
लगा गा गा

१७. खतम् अय् द, र्ददिल थै जा, न तारुं को,इ छे अहि यां,
लगा गागा लगा गा गा ल गागा गाल गा गा गा

१८. छेल्ली कडी

चाक, दिल् बे, हाल, आ म,णीतुं, आय, ना वि, षे
गाल, गा ल गाल गा ल गाल गाल गा ल गा
अहा॑ स, नम् ह, वे भ, ला॑ दिल्, मां म, कान, देन, दे
गा ल गा लगा लल गा गा ल गाल गाल गा

घणी पंक्तिओ अनियमित छे. उपरनी छेल्ली कडी सरलमां सरल छे. अने मेळ ए प्रमाणे जणाय छे.

१९. २०. दिधां छोडी, पितामाता, तजी व्हाली, गुणी दारा
लगा गागा

२१. कटायेलूं, अने बूंठूं, घसीने ती,क्ष्ण तें कीधूं
लगागागा

२२. अ रे रे ऊ, डतूं खंजर्, दिले झूंटी, हुलाव्यूं में
लगागा गा

२३. अरे ते बा,गमां तुं पर, नझर में फक्,त कीधी ती,
लगा गा गा

२४. हुं जाउं छूं, हुं जाउं छूं, त्यां आवशो, कोई नहीं
गा गाल गा

२५. तूं यार क्यां, दुश्मन् कयो, जाणूं नहीं
गा गाल गा, गागा लगा गागा लगा

त्रण ज आवर्तनोवाळी पंक्ति छे.

२६. साकीं जे शरा, ब मने दिधो, दिलदारने, दीधो नहीं
ल ल गा लगा, ल लगा लगा, ललगालगा, गागा लगा

आखा काव्यमां ललगालगा सळंग सचवातुं नथी. गागालगा आवी जाय छे.

२७. पेदा थयो, छूं ढूंढवा, तूं ने सनम्
गागा लगा, गा गालगा, गा गा लगा

त्रण ज आवर्तनो.

२८. आ आतशे, तापे तपे,लो हूं बळे,लो बावरो,
गा गालगा

२९. ज्यां ज्यां नझर्, मारी ठरे, यादी भरी, त्यां आपनी
गा गा लगा
माशुकोना, गालनी ला,ली महीं ला,ली अने
गालगागा गालगा गा, गा लगा गा, गा लगा

एम संधिओ बदलाय पण छे.

३०. अमे जोगी
लगा गागा

३१. जो इश्कना, तो शूं खुदा
गा गालगा गा गा लगा

३२. चोगानमां आलम तणा
गागालगा गागा लगा

३३. मिट्टी हतो ते आपनो
गागा लगा गा गालगा

३४. थाक्यो तमारी राहमां
गागा लगा गा गालगा

३५. आवूं कहो क्यां अेकलो
गागा लगा गा गालगा

३६. फकीरीमां सबीरीमें
लगा गागा लगागागा

३७. सदा मन मस्,त तूं मां रहे
लगा गागा ल गागा गा

३८. बन्यो हूं प्रे,मनो बंदो
लगा गागा लगागागा

३९. अरे जा शूं अवाये नहि
लगा गा गा लगागा गा

४०. वगर तूं हा,र हैयाना
लगागागा लगागागा

४१. वगर हूं कां,इ भावे नहि
लगागागाल गागा गा

४२. मिठा हसवा महीं सच्चाइ
लगा गागा लगा गा गा

४३. जग छो गमे ते कहो तने
गा गा लगा गा गा लगा

४४. निगाह् तुजनी, अरे!
लगा गा गा

४५. कतल् आशक्नें करवाने
लगा गा गा ल गागागा

४६. अहा शा आज वर्षावे ४७. तने हूं जोउं छूं चंदा
लगा गा गाल गागागा लगा गागा लगा गागा

४८. नव सूँझे उ,पाय, कँ डोँ,लाय, मारि, किस्ती
गा ल गाल गाल गा ल गाल गाल गागा

*

अन्य दशा जोइ डरत
गाल लगा गाल लगा
धिमे धिमे गती करत्
लगा लगा लगा लगा

क्यांक क्यांक उच्चारमां छूट लेवी पडे छे. पण छंदनुं माळखुं आ ज छे.

४९. देँवेँ दी,धि दया, करि के,वि मने,
लल गा ल लगा ललगा ल लगा
अहीं मू,ति मनो,हर मा, शुकनी
लल गा ल लगा लल गा ललगा

५०. शरद पू,नमनी, रढिया,ळि सदा
ल ल गा ललगा ललगा ल लगा
मनेँ सां,भरेँ आ,पणि रा,त सखी'
ल ल गा लल गा लल गा ललगा

५१. क्यां छे मजा
गा गा लगा

५२. अ]खंड एक धार अजब् को वही रही
ल]गाल गाल गाल गाल गा ल गाल गा
खु]लीखु, दाइ, त्यांजु दाइ को न हीं रही
ल]गाल गाल गाल गाल गा ल गाल गा

५३. तॉरों था, पर था, मनेँ मा,रि रह्या
लल गा लल गा लल गा ल लगा

५४. खूब् करी जो, इल्मनी सो,दागरी हा,जी गयो;
गा लगा गा गालगा गा गालगा गा गा लगा

---

२. नं. ४९ अने ५० तथा कविश्री न्हानालालनी 'एक ज्वाला जले तुज नेननमें' ए त्रणेय गझलो एक ज छंदनी छे.

५५. मौंरा॑ पा,ये॑ आँ अं,तर मे,लुं थयुं,
लल गा ल ल गालल गा ल लगा

५६. कदी तलवारनी धमकी
लगा गागा लगा गा गा

५७. आनो न्यास बे रीते थई शके छे.
दुर दिल्थी, सहुं संसा,र करूं के, न करूं
लल गागा, लल गागा, ललगागा, ललगा
हृदें॑मां आ, पनुं आगा, र करूं के, न करूं
लल गागा, लल गागा, ललगागा, ल लगा
तमें॑ कहशो, कें॑ जफा मा,रीं॑ वफाने, बदले
लल गागा, ल लगा गा, ल लगागा, ललगा
कहों॑ नेअय्, सन म्हूं प्या,र करूं के, न करूं
लल गागा, लल गागा ल लगागा, ललगा

कोई कोई लीटी जरा जुदी रीते पण बेसी शके छे.

हृदे, मां॑आ, पनुं, ऑगा, रक रूं के, न करूं
लगा लगा लगा लगा ललगा गा ललगा
कहो, नें॑ अय्, सनम्, हूं प्या, र करूं के, न करूं
लगा लगा लगा लगा ललगागा ललगा

पण बीजी बधी ए प्रमाणे बेसी शकती नथी. बन्ने पद्धतिमां अनियमितता तो मळे छे ज.

५८. आंखोथीं॑ व्हे छें॑, धारा तो,य जिगर् बळे छे
गा]गाल गाल, गागा गा,गाल गा ल गागा

५९. बीजी कडी:
इश्के शरा, बीनी मजा, जोवा हवे, तैयार छूं
गागा लगा गागा लगा गागा लगा गागाल गा

६०. तज्यों में राह्
लगा गा गा

६१. शूं मजा फकि,रोथि ढांको, गर् न मुखडूं, आपनूं
गा लगा गा गाल गागा गा ल गागा, गालगा

६२. खुदाएं॑ पाक खोलियुं न सीब आज रात्
लगा ल गाल गा लगा लगा ल गा ल गा ल

६३. नथी उल्फत्, तमारी पा,स पण् नफ्रत्, तो ँ छे के नैं,
लगा गागा, लगागागा, ल गा गागा, ल गा गा गा

६४. अमारा ला,ख च्हानारा
लगागा गा, ल गागागा

६५. लपाई प्रेमनी
लगागागा

६६. लख्यूं तें प,त्रमां प्यारा
लगा गा गा

६७. आ प्रेम ए,वी वस्तु छे
गा गाल गा गा गालगा

६८. शब्द, सनम्, आप,शे ? पु,छूं स,नम् जि,वाडशे ?
गाल लगा गाल गा ल गा ल गा ल गाल गा
दिल्थि, दिल् द,बाव,शे तुं, गोद,मां मु,वाडशे
गाल गाल गाल गा ल गाल गा लगालगा

६९. यां'रों कोइ छे, दर पर अहीं, हाजर बिरा,दर या नहीं
ल ल गालगा, लल गा लगा, गा गा लगा, लल गा लगा

अर्थात् गागालगाने ज संधि गणवो जोईए. ललगालगा सळंग चालतो नथी.

७०. जनमूना जो,गिडा छईए
लगागागा लगागागा

७१. गा गा तुं ब,बंत दम् बदम्
गा गा लगा, गा गा लगा

७२. प्रभू परख्या, हृदे जेणे
लगा गा गा, लगा गागा

७३. कहूं हूं शूं
लगा गा गा

७४. व्यथाओ, जीँवननी, अदा थइ, गई
लगागा लगागा लगा गा लगा

७५. रंगो वसंतना छे, मुज दागदार दिल्मां
गा]गा लगालगागा गा गालगाल गागा

७६. संताइ र्'हे,शे क्यां सुधी
गागाल गा, गा गा लगा

७७. विश्व व्यापी, छे छतां सं, ताय छे
गाल गा गा गा लगा गा,गालगा

७८. देह रूपे, चेतनाना, हाथमां
गालगागा, गालगागा, गालगा

७९. जतां मदफन, तरफ घरथी
लगा गागा लगा गा गा

८०. हता जे का,फिआळाओ, महीं साथे, थनारा
लगा गा गा ल गागागा लगा गागा, लगागा

अंत्य सप्तकलनी बे मात्राओ अनक्षर रही.

८१. नहीं आ,शना आ,शनायी, जुदो छे
लगा गा,लगा गा,लगा गा, लगा गा

८२. दयानी दृ,ष्टि मारा पर
लगागागा लगागागा

८३. छे]रंग ए ज,गत्नो ज्या,रे हवा फरे छे
गा]गाल गा ल, गागा गा,गाल गालगागा

८४. मने आ गझल बेसती नथी.

८५. व]न्वेषि, प्रेम, रूप,नों पर्, दा उ,ठावी ँ जा
गा]गाल गाल गाल ल गा, गाल गाल गा

८६. अनुभवथी, बधूं मळशे
लगागागा लगागागा

८७. प्रणय लगनी
लगा गागा

८८. अन्य माटे ँ खून आपि जे अहींथि जाय छे
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा

८९. नवूं जीवन, बनावा चा,ह
लगा गागा लगागा गा

'गूजराती गझलिस्तानमां'थी बे त्रण नोंधवा जेवा प्रकारो लउं छुं:

गझल १४६मी पृ. १४१

परवा नहीं, को दाद या, फिरियाद ना, सूणे
गागा लगा गागालगा गागाल गा, गागा
जालिम जहां,थी काम हूं, बेकारने, शूं छे
गागा लगा, गा गालगा, गागालगा, गा गा

छेल्ला संधिनी अंत्य त्रण मात्रा अनक्षर थई छे.

गझल १७३मी पृ. १६२

पितानी फो,जना साचा, सिपाई
लगागा गा,लगा गागा, लगागा

गझल २१८. पृ. २११

खुदा सौ, खलक्ना पण, अकीलो, तमारो छुं
लगा गा लगा गा गा, लगागा, लगागा गा
तमारे, घणा जण पण, प्रथम तुं, अमारो छुं
लगागा लगा गा गा, लगा गा, लगागा गा

प्रथम लगागागानो अंत्य गा चार मात्रानो थई आखुं सप्तकल बने छे. आ एक ज दाखलो एवो छे जेमां प्रथम संधिनी मात्रा अनक्षर बने छे. एटले अंशे गझल संगीत अने देशीना प्रकारमां पडे छे. आ उपरांत हुं कान्तनी एक गझल नीचे उतारुं छुं.

गान विमान

सखी ए दूर मानसनां मने सपनां भासे :
हवे थाक्यो, बनी लाचा,र पल्वलना, वासे !

गझलनी रीते आखी गझलमां काफिया सळंग चाले छे. एटले ए गझल छे एमां शंका नथी. तेनो संधिन्यास नीचे प्रमाणे छे :

लगागागा, लगागागा, लगागागा, गागा

मने श्री ज. ए. संजाणाए कहेलुं के फारसी पिंगलमां आवी कोई गझलनो उल्लेख नथी. फारसी गझलमां एमना शब्दने हुं प्रमाण मानुं छुं — अने ए सिवाय पण एमनुं पिंगलनुं ज्ञान घणुं ऊंडुं अने विस्तृत छे, एटले हुं स्वीकारुं छुं के फारसी पिंगलमां आ छंद नथी. तेम छतां आनो न्यास जोतां आ गझल मेळनी दृष्टिए निर्दोष छे, पठन करतां मने सुन्दर जणाई छे. तेना छेल्ला सप्तकलनी त्रण मात्रा खंडित थई छे. उपर 'गझलिस्तान'नी १४६मी गझल उतारी छे तेमां पण छेल्ला सप्तकलनी त्रण मात्रा खंडित थई छे. छतां बेना पठनमां एक सूक्ष्म भेद छे. 'गझलिस्तान'नी गझलनुं सप्तकल गागालगा छे, अने तेनी अंत्य त्रण मात्रा ऊडी जतां गागा रहे छे, तेमां अंत्य गुरु प्लुत बने छे. प्लुति, संधिने अने पंक्तिने अंते आवे छे. उपर कान्तनी गझलमां, ए अंत्य लगागागा सप्तकलनी आदिनी एक अने अंतनी बे एम मळीने त्रण मात्रा खंडित थाय छे. तेथी आगला सप्तकलना गुरुने त्रण मात्रानो प्लुत करवो पडे छे. आ भंगीथी गझलना पठनमां एक सुन्दर चमत्कार आवे छे. खंडित मात्रा मूकतां न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

लगागागा, लगागागा, लगागागा ⏑ गागा —

आथी उपान्त्य सप्तकलनो अंत्य अक्षर गुरु होय ए इष्ट छे.

कलापीए पण आ ज मापनी गझल लखी छे जे कान्तनी असरनी ज जणाय छे :

दिलनी वात :

दिले कैं वा,त छूपेली, सखी तुंथी, कहेवी !
हृदय अर्प्यूं, जुदाई त्यां, सखी राखे, केवी !

अने कवि न्हानालालनी गझल :

भरेला विश्वमां आ दिल्,नां सिंहासन्, खाली

अकबरशाह, अं. २, पृ. ५४

ए पण आ ज मापनी छे, अने संभव छे के एमणे पण कान्तनी गझलना नमूना उपर ज आ लखी होय.

उपर में बने तेटलां दृष्टान्तो लीधां छे, एटला माटे के गुजराती गझलनो आखो झोक स्पष्ट थाय. उपरनां दृष्टान्तोमांथी स्पष्ट थयुं हशे के घणांखरां दृष्टान्तो सप्तकलनां ज छे. अने गझलो पण सप्तकलनी ज ओछामां ओछा दोषवाळी छे. सप्तकल सिवायनी घणीखरी गझलो बहु ज अनियमितताबाळी छे, जो के एम होवानुं कशुं कारण नथी — सिवाय के ते प्रकार उपरनुं अप्रभुत्व अथवा ते प्रकारना स्वरूपना अस्पष्ट अने शिथिल संस्कारो.

उपरनां दृष्टान्तोथी ए पण स्पष्ट थयुं हशे के गझलोए गुजरातीमां पोतानी रीते प्रगति विकास के फेरफार कर्या छे. गझलनी वस्तुनी बाबतमां तो फेरफार थया ज छे, पण तेना बाह्य कलेवरमां पण थया छे. गझलना रदीफ काफिया घणाखराए पाळ्या नथी. घणा गझललेखको ए जाणता पण नहीं होय. पण में आगळ कह्युं तेम जातिछंद तरीके एमां प्रास पळाय तो बस छे. वळी गझलना मापमां जे शब्दो अपाय छे ते लगात्मक रूपना छे, तेने बदले गुजरातीमां तेना जात्यात्मक संधिओ ज वपराय छे ए पण महत्त्वनो फेरफार छे. अने तेथी जे गुजराती गझलोनां मापो आप्यां छे तेमां दरेकने मूळ शास्त्रगत माप साथे मेळववानो प्रयत्न कर्यो नथी. कारणके लगात्मक रूप छोड्या पछी एम करवामां झाझो अर्थ रहेतो नथी. एटले में तेनो जात्यात्मक मेळ बतावीने ज संतोष मान्यो छे. वळी फारसी भाषानी खासियतने लीधे फारसी पारिभाषिक शब्दना बीबामां गुजराती शब्द मूकवो ए पण भाषा पर एक प्रकारनो अत्याचार छे, जो के क्यांक क्यांक में मात्रा गणवी सहेली पडे माटे एम करेलुं छे.

आ प्रकरण बंध करतां फारसी पिंगलना, हुं जेने मेळ कहुं छुं तेवा, मेळना अभ्यास माटे मने नीचेना प्रश्नो विचारवा जेवा जणाय छे ते तरफ अंगुलिनिर्देश करुं छुं :

(१) फारसी पिंगलना लगात्मक पारिभाषिक शब्दोनुं स्वरूप केटले अंशे अरबी-फारसी भाषाने आभारी छे?

(२) गझलोमां पंक्तिनी अंदर यति एटले जातिछंदोमां आवती शब्दान्त यति जेवुं कंई छे के नहीं? होय तो क्यां क्यां?

(३) 'शाईरी'नी प्रस्तावनामां लेखके एक कोयडो मूक्यो छे जेने हुं नीचेना शब्दोमां मूकुं:

फऊलुन् फऊलुन् फऊलुन् फऊल्

अने ए ज लगात्मक रूप आपता

फऊलुन् मफाईलु मुस्तफ्इलान्

ए बन्ने न्यासमां एक ज लघुगुरुक्रम छे, तो बन्नेमां फेर शो? मने मारी रीते काम करतां नीचेनो प्रश्न थयेलो

आंखोथि व्हे छ धारा तो ये जिगर् बळे छे
गा गा ल गा ल गागा गा गा लगा लगागा

आने माटे

मफ्ऊल फाइलातुन् मफ्ऊल फाइलातुन्

एम थई शके अने

मुस्तफ्इलुन् फऊलुन् मुस्तफ्इलुन् फऊलुन्

एम पण थई शके. फारसी पिंगलनी दृष्टिए बन्ने चाले? बन्ने न चाले तो बेमांथी एक ज पंक्ति पसंद करवानुं कारण शुं? 'शाईरी'मां पहेली मफ्ऊल० आपी छे—बीजी नथी आपी.

४ अने आ प्रश्न पण विचारवानो रहे छे: गझलोमांथी रदीफ काफिया छोडी दईए, तेना संधिनुं लगात्मक रूप छोडी दईए, कडीएकडीए बदलाता भावोने बदले सळंग निरूपण लावीए, तो पछी सामान्य जाति-छंदमां—कहो के हरिगीतमां अने दादालदानी गझलमां फेर शो रह्यो? गझलनी लाक्षणिकता शी? दरेक बेने वाक्य पूरुं थवुं जोईए एने गझलनुं लक्षण कही शकाय? अथवा एक प्रकारनी मस्ती के बेपरवाना भावने लक्षण कही शकाय?

आ प्रश्नोनी चर्चा मारा पुस्तकनी योजनामां आवती नथी. मारा पुस्तकने अंगे मारे एटलुं ज बताववानुं छे के गुजरातीमां आवेली गझलनो मेळ जात्यात्मक छे. मूळ मेळमां संधिओ लगात्मक हता ते गुजरातीमां शिथिल बनेला छे. उपरना प्रश्नो फारसी पिंगलरचनाओना विशिष्ट प्रश्नो छे, जे तरफ तद्विदोनुं मात्र ध्यान दोरुं छुं.

१२

संख्यामेळ छंदो अने अनुष्टुप : मेळनी दृष्टिए

आ प्रकारने संख्यामेळनुं नाम एटला माटे आप्युं छे के आ छंदोना स्वरूपमां अमुक अक्षरसंख्या आववी जोईए एटलुं ज सामान्य रीते आवश्यक गणाय छे. लघुगुरु विशे अनियम प्रवर्ते छे. गुजरातीमां आ प्रकारना बे छंदो छे, घनाक्षरी अने मनहर. कवित ए एमनुं सामान्य नाम छे. आपणे प्रथम दलपतरामे आपेलां बन्नेनां परंपरागत लक्षणो जोईए :

१२२. घनाक्षरी छंद अक्षर — ३२

चरण चरण मध्य, वरण बत्रीस वसे,
विश्राम विश्राम ठाम अक्षर ज्यां आठ आठ;
घणो तो आनंदकंद, छंद ते घनाक्षरी छे,
एम छंदशृंगार पिंगळमां लखेल पाठ;
अंते गुरु लघु आण, कां तो जोड लघु जाण,
विश्वपतिने बखाण, ठरावीने ठीक ठाठ;
चारे चरणोमां वर्ण, एकसो अठ्ठावीस छे,
अर्ध छंदमां तो चार उपर शोभीत साठ. २३६

द. पि. पृ. ६५

आना स्वरूप विशे सौथी पहेलां ए जोवानुं के लखवामां आनी आठ पंक्तिओ थाय छे पण वास्तविक रीते ए चार चरणोनो ज छंद छे. चरणो जातिओनी पेठे प्रासबद्ध छे, ए प्रास सळंग छे एटलुं विशेष छे, अने तेथी चारेय चरणो स्पष्ट देखाई आवशे. चरण लांबुं बत्रीस अक्षरनुं होवाथी सोळ सोळ अक्षरनी पंक्ति सामान्य रीते लखाय छे. आखा छंदमां ए रीते १२८ अक्षरो थाय. दलपतराम कहे छे के आठ आठ अक्षरे विराम एटले यति आवे अने अंते प्रास आवे. लघुगुरुनो कोई नियम नथी. आगळ कहे छे के अंते गुरु लघु आवे अने उपरना दृष्टान्तमां तेम छे. पण ते उपरांत दलपतराम जोड लघु — बे लघु पण मूकवानो विकल्प बतावे छे. उपरना दृष्टान्तमां तेम तेनी पछी आवता दृष्टान्तमां पण दलपतरामे जोड लघु आपेला नथी. पण आ आखो संख्यामेळ प्रकार मूळ हिंदीमांथी गुजरातीमां

क्तरी आव्यो छे, अने हिंदीमां ते खूब खेडायो छे, तेमां चरणान्ते बे लघुवाळो प्रकार मळी आवे छे. हुं दृष्टान्त खातर उतारुं छुं:

भरत सदाही पूजे पादुका उते सनेम
इते राम सीय बंधु सहित सिधारे बन।
सूपनखा कै कुरूप मारे खलझुंड घने
हरी दससीस सीता राघव बिकल मन।
मिले हनुमान त्यों सुकंठ सों मिताई ठानि
बाली हति दीनों राज्य सुग्रीवहि जानि जन।
रसिक बिहारी केसरी कुमार सिंधु लांघि
लंक जारि सीय सुधि लायो मोद बाढ़ो तन।

छन्दःप्रभाकर, पृ. २१८

'छन्दःप्रभाकर'मां तो घनाक्षरीमां अंते लघुगुरु आव्यानो पण दाखलो छे ते उतारवानी जरूर जोतो नथी. दलपतरामे आठ आठ अक्षरे यति कही छे पण 'छन्दःप्रभाकर' सोळ सोळ वर्णे यति कहे छे: "सोलह सोलह वर्णोंके विश्राम से ३२ वर्ण होते हैं।" (एजन) पण एक बीजी आवी ज बत्रीशी रचनाने 'छन्दःप्रभाकर' आठ आठ अक्षरे यतिवाळी गणे छे. (जुओ ८ विजया (३२ वर्ण) पृ. २२०) आ पछी मनहर लईए. प्रथम दलपतरामनुं लक्षण जोईए:

मनहर छंद अक्षर ३१

अक्षर जो एकत्रीश, धारी धारीने धरीश,
सीमाडे गुरु सर्जीस, ते पदे तमामने;
आवे वर्ण आठ आठ, पठतां पवित्र पाठ,
करावी विश्राम ठाठ, ठीक गणी ठामने;
गुरु लघु गणितथी, नियम ते मध्य नथी,
शीखीने सजो सुखथी हैये राखी हामने;
सारो छंद सुखधाम, नकी मनहर नाम,
रची दलपतराम, करो शुभ कामने. २३४

आमां चरणान्त प्रास उपरान्त दरेक पहेला त्रण यतिखंडोमां सळंग आंतर प्रास छे जे शोभानो छे, छन्दनुं अंग नथी. उपरनी घनाक्षरी रचना साथे सरखावतां आमां फेर एटलो ज छे के आमां बत्रीसने बदले एकत्रीस अक्षरनुं चरण थाय छे, अने चरणने अंते गुरु आवे छे. बाकी बन्नेमां आठ अक्षरे यति कहेली छे. मनहरमां

અંત્ય ગુરુની આવશ્યકતા સિવાય આ છંદમાં ગુરુલઘુનો કશો જ નિયમ નથી એમ કહેલું છે અને એ લક્ષણ ઘનાક્ષરી અને મનહર બન્નેનું છે. દલપતરામ અક્ષર-સંખ્યા પ્રમાણે છંદોના ક્રમ રાખે છે એટલે એમના પિંગલમાં મનહર પહેલો આવ્યો ત્યાં એમણે એ લક્ષણ કહ્યું, તે પછીથી આવતા ઘનાક્ષરીમાં પણ સમજી લેવાનું. દલપતરામે તાલનાં સ્થાનો કહ્યાં નથી, પણ બન્નેમાં પહેલા અક્ષરથી શરૂ કરી પછી ચાર ચાર અક્ષરે તાલ મૂક્યો છે, એટલે ચાર ચાર અક્ષરે તાલ છે એમ સમજવાનું. એ સ્થિતિ ઉપરથી આપણે કહી શકીએ કે આ આવૃત્તસંધિ મેળવાળો છંદ છે, અને તેનો સંધિ ચતુરક્ષર છે. આમાં જે યતિ કહી છે તેમાં આપણે દલપતરામ અને 'छन्दःप्रभाकर' વચ્ચે તો ફરક દીઠો, પણ કે. હ. ધ્રુવે, પોતે નવા પ્રયોજેલા વનવેલી છંદના સ્વરૂપની ચર્ચા કરતાં આમાં યતિ આવશ્યક નથી એમ બતાવેલ છે. આપણે એમનું વક્તવ્ય સવિસ્તર જોઈએ :

"કવિત સરખા માપનાં ચાર ચરણનો અક્ષરબંધ છે. તે ઘનાક્ષરી અને મનહરની સામાન્ય સંજ્ઞા છે. ઘનાક્ષરી છંદના ચરણમાં ચતુરક્ષર સંધિનાં આઠ આવર્તન આવે છે. છેલ્લો એટલે કે આઠમો સંધિ ત્રણ અક્ષરનો લેવાથી મનહર છંદનું ચરણ નીપજે છે. આથી ઘનાક્ષરીને બત્રીસું અને મનહરને એકત્રીસું કવિત કહેવું પ્રાપ્ત છે. છેલ્લા સંધિમાં એક અક્ષરની ન્યૂનતાને લીધે એકત્રીસું કવિત અંતે ગુરુ માત્રા લે છે. બીજા છંદોની માફક કવિત પ્રાસબદ્ધ છે. તેના પ્રત્યેક ચરણને અંતે યતિ એટલે વિરામ છે. ચરણની અંદર આઠમે, સોળમે અને ચોવીસમે અક્ષરે યતિ છે કે નહિ, તેનો નિર્ણય નીચેનાં કવિ દલપત-રામનાં કવિતો જ કરી આપશે.

ઘનાક્ષરી

પાઈ પાઈ પ્રેમપાન પ્રથમ તેં પુષ્ટ કર્યો;
પછી પીડા પમાડી વિજોગપાન પાઈ પાઈ.
ધાઈ ધાઈ ભેટવાને આવતો હું તારે ધામ;
ધીરે રહી સામો ઊઠી આવતો તું ધાઈ ધાઈ.
ગાઈ ગાઈ ગીત તને રીઝવતો રૂડી રીતે;
ગુજારું છું દિવસ હું હવે દુઃખ ગાઈ ગાઈ.
'ભાઈ, ભાઈ' કહીને બોલાવતો તું ભાવ ધરી;
ભલો મિત્રતાનો ભાવ ભજવ્યો તેં, ભાઈ ભાઈ !

(ટીપ) પ્રસ્તુત ઘનાક્ષરી કવિત 'ફાર્બસ વિરહ'માંથી આપ્યું છે.

मनहर

भूतळना लोके एक समे इन्द्रभुवनमां
जने जुदी जुदी भेट भावथी धरावी छे.
ग्रीके तो ईसपनीति, आरबे नाईट, इंग–
लीशे शेक्सपीयरनी पोथी परठावी छे.
हिंदुओए होंश धरी पंचतंत्र तणी पोथी
धरी ते तो इंद्रने अधिक भली भावी छे.
कहे दलपतराम, बीजा सौनी बंध करी
हिंदुओने हमेशनी पाघडी बंधावी छे.

(टीप) प्रस्तुत मनहर कवित 'दलपतकाव्य'ना 'फार्बसविलास'मांथी लीधुं छे.

प्रथम उदाहरणमां पहेला चरणना चोवीसमा अक्षरे अने चोथा चरणना आठमा अक्षरे विराम लेतां 'विजोग' अने 'बोलावतो' पदना कडका थई जाय छे; अर्थात् त्यां यति इष्ट नथी. तेवी ज रीते द्वितीय उदाहरणमां बीजा चरणना सोळमा अक्षरे विराम लेतां 'इंग्लीश'—ना कडका थाय छे; एटले त्यां पण यति घटती नथी. एकत्रीसा बत्रीसा कवितमां बे संधिए यति घणी वार मूकेली जोवामां आवे छे, ते आंतर प्रासनी पेठे शोभा सारूं ज छे. . . ." (साहित्य अने विवेचन भाग १. पृ. ११४–१५)

उपरनां दृष्टान्तो अने तेना स्वरूपनी चर्चामांथी नीचेनां लक्षणो प्रतीत थाय छे. कवितना बन्ने प्रकारो अमुक संधिनां अमुक संख्यानां आवर्तनोथी थयेला छे. कवितना अंत्य संधिनो अंत तरफनो भाग लगात्मक रूप ले छे. घनाक्षरी पूरी बत्रीसी रचना छे, अने तेना अंत्य संधि खंडित थई तेमांथी मनहर थयेलो छे. तेमां सामान्य रूपे आठ आठ अक्षरे यति कहेली छे, पण पिंगलकार दलपतरामे पोते ए यति पाळी नथी. आ बधां लक्षणो जातिओनां विशेष लक्षणो छे. फरक मात्र ए छे के जातिओना संधिओ अमुक संख्यानी मात्राना होय छे त्यारे कवितना संधिओमां मात्रानी नियत संख्या नथी पण अक्षरनी नियत संख्या छे. के. ह. ध्रुव कहे छे तेम ते चार अक्षरनो बनेलो—चतुरक्षर संधि छे.

आ प्रमाणे अक्षरनी संख्याथी कवितनुं माप थतुं होवाथी परंपराना पिंगलकारो तेने अक्षरमेळमां मूके छे. दलपतरामे तेने अक्षरमेळमां मूकेलो छे. 'छन्दःप्रभाकरे' तेने वर्णमेळमां मूक्यो छे. पण बाकीनां बधां ज लक्षणो तेनां जातिमेळनां छे. अक्षरमेळनुं एटले वृत्तोनुं मुख्य लक्षण ए छे के एमां संधि-

ओनुं आवर्तन होतुं नथी अने त्यां लघुगुरुनो क्रम स्थिर होय छे. कवितमां संधिओनुं आवर्तन छे अने लघुगुरुनो नियम नथी. लक्षणोनुं महत्त्व जोतां आ प्रकार वृत्तो करतां जातिओने विशेष मळतो छे.

आ प्रकारना छंदोनुं पठन जोतां मने ए जाति ज जणाय छे. आमां लघु-गुरुनो क्रम नथी ए साचुं पण अहीं दरेक अक्षर बे मात्रानो पठाय छे, अने एम थईने एनो संधि नियत संख्यानी मात्रानो एटले आठ मात्रानो थई रहे छे. घनाक्षरीना अंत्य संधिनो एक अक्षर खंडित थतां त्यां गुरु आवश्यक बने छे तेनुं कारण पण ए गुरु प्लुत थई खंडित अक्षरनी बे मात्रा पूरी शके ए छे. मने बराबर याद छे के हुं गुजराती शाळानां नीचलां धोरणोमां भणतो त्यारे अमने महनरनुं पठन दरेक अक्षर बे मात्रानो थाय ए रीते ज शीखवता अने ए अमने बहु कंटाळा भरेलुं लागतुं. दाखला तरीके अमने नानपणमां नीचेनी पंक्तिओमां

> गमे तेम रमे कोई समे मन भमे त्यारे
> दया तजी दमे प्राणीने परोवी शूळमां

'ग मे ते म र मे' ए दरेक अक्षर एक सरखो लांबो बे मात्रानो बोलावता'. 'छन्दोरचना'ना कर्ता पटवर्धन पण आ प्रकार विशे आ ज कहे छे. ते आ रचनाप्रकारने छन्द एवुं पारिभाषिक नाम आपे छे, अने अभंग ओवी घनाक्षरीने ए वर्गमां मूके छे. "मराठींतील अभङ्ग, ओवी, घनाक्षरी' इत्यादिकांची रचना छान्दस आहे." (छ. र. पृ. ५१४) अने ए रचनाना मात्रामाप विशे कहे छे: "छन्दांत प्रत्येक अक्षर, मग ते दिसायला लघु असलें तरी गुरु उच्चारायचें आणि गुरुच समजायचें असते. सारींच अक्षरे गुरु म्हणजे द्विमात्रक मानायचीं हा छन्दाचा मूलभूत नियम असल्यामूळे छन्दांतील पद्य-गण हा चार अक्षरांचाच असतो. लघु अक्षरच नाही म्हणून लगक्रमाचा प्रश्नच उद्भवत नाही. म्हणून छन्दास लगत्वभेदातीत अक्षरसंख्याक पद्य म्हणतात." (छ. र. पृ. ५१२-१३.) भावार्थके छन्दमां प्रत्येक अक्षर, पछी ते देखवामां लघु होय तो पण, गुरु उच्चारवानो अने गुरु ज समजवानो छे. बधा ज अक्षरो गुरु एटले बे मात्राना मानवानो आ छन्दोनो मूळभूत

१. भाट चारणो आ छंद ए ज रीते नथी पठता. तेओ अर्थ प्रमाणे टुकडा करी अनुकूळ पडे तेवी रीते, एटला टुकडामां आवेला लघुने लीधे खूटती मात्राओ एक के वधारे गुरुओने लगाडी आठ के बार के सोळ अक्षरोमां बमणी मात्राओ करी ले छे. एम पठतां छंदनुं पठन स्वाभाविक अने छटादार थाय छे.

२. महाराष्ट्री पिंगलोए आपेला घनाक्षरीना लक्षण माटे जुओ परिशिष्ट.

नियम होवाथी छंदोमां पद्यगण (अष्टकलसंधि) चार अक्षरोनो ज छे. लघु अक्षर ज नथी एटले लगक्रमनो प्रश्न ज उद्भवतो नथी. अर्थात् छन्द एटले लगत्वभेदथी अतीत अक्षरसंख्यानुं पद.

आ रीते कवित संपूर्ण जातिछंद थई रहे छे. ते चतुरक्षर संधिओनां आवर्तनोनो बनेलो छे, अने तेमां सामान्य रीते दरेक चतुरक्षर संधि आठ मात्रानो थाय छे. आ आठ मात्रा दरेक अक्षरने बे मात्रानो बोलीने करीए, के अर्थने अनुकूल रहीने, आठ के बार के सोळ अक्षरना खंडमां, लघु बोलाता अक्षरो जेटली मात्राओ तेमां आवता गुरुओमां उमेरीने बोलीए, एम गमे ते रीते करी शकीए. आ प्रमाणे होवाथी कवितनी उत्थापनिका जाति-छंदो जेटली चोकस रीते नहीं आपी शकीए. छतां बहु ज सादा रूपमां नीचे प्रमाणे आपी शकीए :

घनाक्षरी दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा दादा';
दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा दादा';

मनहर दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा दादा';
दादा दादा; दादा दादा'; दादा दादा; दादा गा—;

अहीं दरेक दा माटे अकेक अक्षर लघु के गुरु आवे छे एटलुं विशेष लक्षण समजवानुं.

कविश्री खबरदारे आ रचनामां थोडो फेर करी एक नवो छंद उप-जाव्यो छे तेने तेमणे मुक्तधारा कह्यो छे. आमां मनहर करतां एटलो ज फरक छे के मनहरनो अंत्य संधि जे त्र्यक्षर छे तेने तेमणे वधारे खंडित करी द्व्यक्षर कर्यो छे अने ते हमेशां गाल रूपमां आववो जोईए अने आ लघु ते अस्वरित अ ज होवो जोईए एम ठरावेल छे. आ दरेक प्रक्रिया जाति-छंदमां आवी गयेली आपणने परिचित प्रक्रिया छे. अंत्य संधिनो खंडनव्यापार ए तो परिचित छे, अने सत्तावीसा चोपायामां अंत्य संधि गाल बने छे ते पण परिचित छे. अने दोहराना अंत्य संधि गालमां अंते अकार आवे छे ए पण आपणे सर्वत्र जोयेलुं छे. विशेष शुं, आ छंद डिंगलमां वपराई गयो छे ते आपणे डिंगलना प्रकरणमां जोई गया (गत पृ. ५०८). आ सिवाय तेओ ताल विशे केटलुंक कहे छे ते आपणे बधा छंदो विशे अन्यत्र चर्चवाना छीए त्यां चर्चीशुं. अहीं तेनुं एक दृष्टान्त बस थशे. कलिकानी प्रस्तावनामां २३० मी कडी तेमणे छंदना दृष्टान्त तरीके उतारी छे ते ज लईए :

નવીન વિ । ચારને હું । લાવતો કો । કવિ જેમ
કળામાં વીં । ટાતો તેને । દેવા અવ । તાર,
કલ્પનાનાં । વાદળોમાં । ઊડતો તે । ધૂમી વળી
વીજળી શી । કવિતાને । શોધી લાવે । બ્હાર;
પ્રિયા, મારા । પ્રેમને હું । એમજ હું । લાવતો આ
આશામાં વીં । ટાતો તારાં । ગાતો ગુણ । ગાન.
નવનવા । તરંગોના । રંગોને ઊ । ડાવી જગે
મોંઘા તારા । સૌંદર્યની । કરાવું પિ । છાન.

આમાં નિશાનીઓ ખબરદારે આપ્યા પ્રમાણે કાયમ રાખી છે. તેમાં ઊભી લીટી તાલની છે તે દલપતરામના તાલ પ્રમાણે જ છે તે સ્પષ્ટ છે. અક્ષર નીચે લીટી કરી છે તે ખબરદાર જેના ઉચ્ચારણને 'શાન્ત' કહે છે તેવો 'અ' છે. ઉપર કહ્યું તેમ એની ચર્ચા હું આગળ ઉપર કરવાનો છું.

આ કવિતને મળતો એક છન્દ બંગાળીમાં છે જેને પયાર કહે છે. તેમાં દરેક પંક્તિમાં ચૌદ અક્ષર આવે છે અને આઠમે યતિ આવી પંક્તિના ૮+૬ અક્ષરોના ભાગ પડે છે. પ્રવાહી પયારમાં કવિઓ ઇચ્છા મુજબ ૪, ૬, ૮, કે ૧૦ અક્ષરે યતિ મૂકે છે. (સંક્ષિપ્ત ભાષાપ્રકાશ બાંગલા વ્યાકરણ–સુનીતિકુમાર ચટ્ટોપાધ્યાય, પૃ. ૩૫૭–૯) પયાર છંદ બે પંક્તિએ પૂરો થાય છે. અર્થાત્ અહીં દરેક પંક્તિમાં ચતુરક્ષર સંધિઓનાં ત્રણ આવર્તનો થાય અને ચોથો સંધિ ખંડિત થઈ ત્યાં માત્ર બે અક્ષર જ રહે. આ છંદ આપણા કવિઓ ક્વચિત્ વાપરે છે. શ્રી ઉમાશંકરના 'આતિથ્ય'માંથી થોડી પંક્તિઓ મૂકું છું. એ કાવ્ય સદ્ગત રવીન્દ્રનાથના એક કાવ્યનો મૂળ છંદમાંથી જ અનુવાદ છે, એટલે દૃષ્ટાન્ત તરીકે એ ખાસ ઔચિત્ય ધરાવે છે.

બલિષ્ઠોને ચરણે ના ચિત્ત મારું ઝૂકે,
બલ આપો દીનને ના હીન ગણી મૂકે.

वीर्य आपो, चित्तने हुं जेथी शकुं राखी
नित्य तणी तुच्छताथी ऊंचे ने एकाकी.
वीर्य आपो, चरणे तमारे नामी शिर,
अहर्निश पोताने हुं राखी शकुं स्थिर.

'बल आपो, नाथ !' आतिथ्य, पृ. ४२

श्री उमाशंकरे ८मा अक्षरे यतिनो नियम ५मी पंक्तिमां पाळयो नथी. आपणां कवितोमां आवा नियमो नथी. आ छंदो वधारे खेडातां एना मेळनी झीणवटना नियम स्पष्ट थई शके.

'छन्दोरचना' घनाक्षरी साथे अभंगने गणावे छे. अभंग मूळ मराठी रचना छे, पण ते घणां वरसोथी गुजरातीमां प्रवेश पामी छे. तेने प्रथम गुजरातीमां लावनार भोळानाथ साराभाई छे, जेमणे प्रार्थनानां केटलांक भजनो अभंगमां रच्यां छे. गुजरातमां प्रार्थनासमाज स्थापायो ते पहेलां मुंबईमां ते स्थपायेलो अने मुंबईमां अभंगो गवाता एने लीधे ए छंद प्रार्थनाओमां आव्यो एम हुं मानुं छुं. प्रथम गुजरातीमां जे अभंग ऊतरी आव्यो छे तेना स्वरूप विशे अत्यार सुधीमां शुं कहेवायुं छे ते जोईए. 'पद्यरचनाना प्रकार'ना लेखमां के. ह. ध्रुव कहे छे :

"अपभ्रंश काळना उत्तर भागमां ज्यारथी अर्वाचीन साहित्यनो आरंभ लेखी शकाय, तेवामां अक्षरबंध पुनरुज्जीवित् थाय छे. ए रचनानां अर्वाचीन वृत्तो आवृत्त संधिनां छे. . . . आवर्ती अक्षरबंध खेडयानुं मान हिंदीने अने मराठीने छे. ए रचनामां त्रण प्रकारना संधि अत्यारसुधीमां वपराटमां आव्या छे; एकाक्षर, द्वयक्षर, ने चतुरक्षर. नीचेना अभंगमां पहेला बे संधिनां उदाहरण छे :—

अभंग

पापवासनाओ थाय ज्यारे क्षय,
पामशे उदय पुण्य वृत्ति. अभंगमाळा

अहिं पहेलां त्रण चरणो द्वयक्षर संधिनी त्रण आवृत्तिनां बनेलां छे. छेल्ला चरणमां एकाक्षर संधिनी चार आवृत्ति छे. प्रत्येक संधिना आरंभमां जोर पडे छे." (साहित्य अने विवेचन भा. २. पृ. ३००) आगळ जतां आ ज अभंगने अनुलक्षीने तेओ कहे छे, "अहीं प्रत्येक चरणनो उपान्त्य अक्षर प्लुत छे." पछी उमेरे छे, "प्लुत उच्चारणनो काळ संगीतमां त्रण मात्रानो ठेरव्यो छे." (एजन, पृ. ३०६)

के. ह. ध्रुव कहे छे के प्लुत उच्चारणनो काळ संगीतमां त्रण मात्रानो ठेरव्यो छे. पण संगीतमां तो एथी वधारे मात्राना प्लुतो पण आवे छे.

अने मात्राना मेळ माटे तो मात्रानी संख्या कोईक रीते मेळवी आपवी जोईए. तेमांनुं कशुं अहीं कर्युं नथी, अने शास्त्रना प्रमाणथी आणे के निर्णयने आखरी बनाव्या छे. आपणे कवितनी मात्राओ नक्की करी जेम तेनुं स्वरूप नक्की कर्युं तेम आनुं पण करवुं जोईए.

उपर आपणे जेनुं दृष्टान्त आप्युं ते अभंगनां पहेलां त्रण चरणो छ छ अक्षरोनां छे, चोथुं चरण चार अक्षरोनुं छे. आ प्रकारने 'वृत्तदर्पण'कार मोटो अभंग कहे छे. तेनी प्रासरचना उपरथी ते तेना पेटा प्रकारो पाडी बतावे छे. ए पण जोवा जेवा छे.

अभंग तुकारामाचे

काय वाणू आतां ।। नपुरे ही वाणी ।। मस्तक चरणी ।। ठेवीयेला ।।१।।
थोरींव सांडिली ।। आपुली परिसें ।। धन्य केले कैसें ।। लोखंडासी ।।२।।

बे दृष्टान्तो बस थशे. आमां बीजा चरणनो त्रीजा साथे प्रास छे. पहेलुं अने छेल्लुं प्रासमुक्त छे. घणा अभंगोमां प्रास मात्र अंत्याक्षरनो ज होय छे, उपान्त्य स्वर सुधी जतो होतो नथी.

हवे प्रासनी बीजी पद्धतिवाळा अभंगो जोईए.

अभंग तुकारामाचे

पंढरीस जावें ।। जीवन्मुक्त व्हावें ।। केशवा भेटावें ।। जीवलगा ।।१।।
जन हे सुखाचे ।। दिल्या घेतल्याचे ।। बा अंतकाळींचें ।। नाहीं कोणी ।।२।।

अहीं अंजनीनी पेठे सरखी संख्याना अक्षरवाळां त्रण चरणो सळंग प्रासवाळां छे, चोथुं छूटुं छे.

हवे 'वृत्तदर्पण'कारना नाना अभंगो[१] जोईए. ए संबंधी ते कहे छे: नाना अभंगने बे चरणो होय छे. तेमांना प्रत्येक चरणने आठ आठ अक्षरो होय छे. क्वचित् पहेला चरणने छ अक्षरो होय छे. बन्ने चरणोमां प्रास होय छे. हवे उदाहरणो जोईए.

अभंग तुकारामाचे

जरी व्हावा तुज देव ।। तरी सुलभ उपाव ।। १ ।।
करी मस्तक ठेंगणा ।। लागें संताच्या चरणा ।। २ ।।
भावें गावें गीत ।। शुद्ध करोनियां चित्त ।। ३ ।।
तुका म्हणे फार ।। थोडा करीं उपकार ।। ४ ।।

एक बीजुं आ नाना अभंगनुं ज दृष्टान्त जोईए:

---

१. अभंगना अनेक प्रकारो माटे आ प्रकरणनुं परिशिष्ट जुओ.

अभंग तुकारामाचे

देवा पायीं नाहीं भाव ।। भक्ति वरी वरी वाव ।।
समर्पिला नाहीं जीव ।। जाणावा हा व्यभिचार ।। १ ।।

वृत्तदर्पण पृ. ४२, ४३

आ उपरथी जणाशे के आठ आठ अक्षरना चरणवाळा पण अभंगो हता.

पठनमां आ अष्टाक्षर अभंगो कवितना जेवा ज जणाय छे. अर्थात् तेना पठनमां दरेक अक्षर बब्बे मात्रानो बने छे. तेमां अर्थ प्रमाणे टुकडा करी लघुनुं लघु पठन करी कोई पासेना गुरुमां मात्रा मेळववानुं शक्य नथी. वळी एनुं चरण एटलुं टूंकुं छे के तेना अर्थ प्रमाणे टुकडा पण न पडी शके. आ रीते आ अभंग पण चतुरक्षर संधिनां बब्बे आवर्तनोना चरणवाळो थई रहे छे, अने तेना दरेक संधिनो अकेक अक्षर बब्बे मात्रानो बने छे. अर्थात् ए चतुरक्षर संधि अष्टमात्रक बनी रहे छे. एनी उत्थापनिका बहु ज सादी थाय :

दादा दादा; दादा दादा;
दादा दादा; दादा दादा;

एम आ अष्टाक्षर चरणवाळो अभंग दादानां आवर्तनोनो होय छे. संगीत-प्रधान होवाथी तेना अष्टकल संधिओ पण बताव्या छे. आ अभंगने ज हुं मूळ प्रकृतिभूत संपूर्ण अखंडित अभंग मानुं छुं.

आपणे सौथी पहेलो उतारेलो अभंग, आना संधिओ खंडित थई बनेलो छे. पठनगानमां ए एम ज बोलाय छे.

पाप वासना – ओ –

थाय ज्यारे क्ष – य –

पामशे उ द – य –

पु – ण्य – वृ – त्ति –

के. ह. ध्रुवे आना स्वरूप विशे जे कह्युं छे, तेनुं चोकस रूप उपरनी उत्थापनिकामां मळी रहे छे. उपरनो ज अभंग आपी तेओ कहे छे : "अहि पहेलां त्रण चरणो द्व्यक्षर संधिनी त्रण आवृत्तिनां बनेलां छे. छेल्ला चरणमां एकाक्षर संधिनी चार आवृत्ति छे. प्रत्येक संधिना आरंभमां जोर पडे छे." वळी आगळ जतां कहे छे : "अहि प्रत्येक चरणनो उपान्त्य अक्षर प्लुत छे. प्लुत उच्चारणनो काळ संगीतमां त्रण मात्रानो ठेरव्यो छे."

(साहित्य अने विवेचन भा. २. पृ. ३०० अने ते पछी ३०६) पहेलां त्रण चरणोना प्रारंभमां बब्बे अक्षरे एक दादा संधि थतो होवाथी त्यां द्व्यक्षर संधि छे एम कह्युं. ते दरेकना आदिमां दादानो ताल पडे छे ए देखीतुं छे. चोथा चरणमां दरेक अक्षर चतुष्कल संधिनी मात्रा पूरे छे एटले स्वाभाविक रीते छुट्टो बोलाय छे एटले त्यां एकाक्षर संधि कह्यो. पहेली त्रण पंक्तिओमां उपान्त्य अक्षर चार मात्रानो बने छे एटले एने प्लुत कह्यो — जो के संगीत-शास्त्रनो आश्रय लई तेने ३ मात्रानो कह्यो जे खोटुं छे. अने ए पंक्तिओमां अंत्य अक्षर पण चार मात्रानो प्लुत छे ए वात, ए अक्षर अंत्य होवाथी चरणान्त ललकार गणी के गमे तेम गणी तद्दन छोडी दीधी. बर्वे पण अभंगना आ बन्ने प्रकारो — अभंग मोटो अने नानो बन्ने आपे छे, अने में उपर बतावी ते प्रमाणे ज अक्षर मात्रानी व्यवस्था करे छे. षडक्षर चरणवाळा अभंगमां पहेला चार अक्षरोनी दरेकनी जेटली मात्रा गणे छे, तेना करतां बमणी मात्रा पांचमा छठ्ठानी गणे छे. अंत्य चतुरक्षर चरणमांना दरेक अक्षरनी पण बमणी मात्रा गणे छे. बर्वे अभंगने एक तालमां बेसारे छे एटले ए दरेक अक्षरनी बे ने बदले एक मात्रा गणे छे, पण प्रमाण में उपर आप्युं ते प्रमाणे साचवे छे. (गायन वादन पाठमाळा पु. १. वि. ३. पृ. ४९–५१)

एटले अभंगनुं स्वरूप आपणे एवुं कहीए के एनां चारेय चरणमां आठ आठ अक्षरो आवे तो ए घनाक्षरी जेवी ज रचना गणाय. चरणनो दरेक अक्षर बे मात्रानो थाय छे अने ते रीते दरेक चरणमां दादा संधिनां चच्चार आवर्तनो थाय. तेना अंत्य संधिओने खंडित करतां गुजरातीमां ऊतरी आवेल प्रकार निष्पन्न थाय. तेमां पहेलां त्रण चरणो छ छ अक्षरोनां थाय, तेमांना पहेला चार अक्षरो ते दादा दादा बने, अने पछी रहेल अकेक अक्षर प्लुत थई अकेक दादा चतुष्कलने पूरे. एटले के छमांना अंत्य बे अक्षरो चच्चार मात्राना प्लुत थाय. आ अभंगनुं चोथुं चरण चार ज अक्षरनुं होय छे, अने तेथी दरेक अक्षरे अकेक दादा चतुष्कल पूरवानुं होय छे. आ स्वरूप स्पष्ट थया पछी के. ह. ध्रुव प्रमाणे एकाक्षर संधिओ मानवानी जरूर रहेती नथी कारण के ए तो आपणे पिंगलमां स्वीकारेलो प्लुत छे, जेमनी व्यवस्था प्लुतिमात्रासंख्या आपी करवानी होय छे. आ रीते अभंगो पण कवित जेवी ज जातिरचनाओ छे. तेमां जाति जेवा ज नियतमात्रासंख्याना संधिओ छे, संधिओनां नियत मात्रासंख्यानां आवर्तनो छे, चरणनो अंत बताववा प्रास होय छे, चरणना अंत्य संधिओ खंडित करी नवी टूंकी रचनाओ करेली होय छे,

एम बधी रीते आ संख्यामेळ छंदो जातिना प्रकारना छे. तेमां फेर मात्र एटलो ज छे के तेमां संधिनी मात्राओ पूरवानी पद्धति जुदी होय छे. सामान्य रीते जातिछन्दोना संधिनी मात्राओ अक्षरनी मात्राओथी पुराय छे. त्यारे आ संख्यामेळ छंदोमां बब्बे मात्रा अकेक अक्षरथी — पछी ते अक्षर गुरु होय तेम लघु पण होय — पुराय छे. आ संधि आपणे जोया ते प्रकारोमां तो

। । ।

दादा के दादा दादा; छे एटले के तेमां कोई लघु मात्राने स्थान नथी, एटले संधिमां ज लघु आवे तो केवी रीते मात्रानी व्यवस्था करवी ए प्रश्न ऊभो थतो नथी. जातिछंदोथी आनुं निरूपण अहीं जुदुं कर्युं छे पण अंते तो तेनो समावेश आपणे जातिछंदोमां ज करवानो छे. परंपराथी आने अक्षरमेळ गणवामां आवता, ते प्रकार साथे आने कशो संबंध नथी, तेम छतां आ प्रकारमां कालमात्रा साथे अक्षरमात्रा मेळववानी एक जुदी ज पद्धति अहीं अनुसराय छे ए रीते आ प्रकारनुं महत्त्व छे.

आपणे अहीं सुधी जोई गया के अनुष्टुपनो आपणे अनावृत्तसंधि अक्षरमेळवृत्तमां अंतर्भाव करी शकता नथी. आ वृत्तोमां अमुक अमुक संधिओ आवे छे, अने एमां लघुगुरुनां स्थानो नियत होय छे. अनुष्टुपमां वधारेमां वधारे आठ अक्षरोमांथी त्रण के चार स्थानोमां ज लघुगुरु नियत थया छे अने तेमां पण घणा अपवादो छे. वधारेमां वधारे आपणे भिन्नभिन्न प्रकारना अनुष्टुपोने एक उपजाति जेवो प्रवाह गणीए, अने ए प्रवाहनुं नाम अनुष्टुप कहीए एटलुं करी शकीए, एम में प्रकरण ७ मां कहेलुं छे (गत पृ. २९१). पण ए मने संतोषकारक लागतुं नथी. प्रसिद्ध उपजाति नियत छंदोमांथी थयेली छे अने तेमां मूळ छंदथी फेरफारवाळी पंक्तिओ भळे छे तेमांनी घणीएक तो कोई मळता छंदनी होय छे, एम थईने उपजाति थाय छे. अनुष्टुपमां पहेलेथी ज कोई प्रकृतिभूत छंद होय अने पछी तेमां फेरफार थई बीजा बीजा छंदो थया छे एम बतावी न शकीए त्यां सुधी आने उपजातिओ मानी शकाय नहीं एटले आपणे आ संख्यामेळ प्रकारना मेळनी दृष्टिए तेनो विचार करी जोईए.

अनुष्टुपनुं एक लक्षण संख्यामेळने बहु ज मळतुं छे : ते ए के संख्यामेळमां चरणना अक्षरोनी संख्या नियत होय छे. अलबत्त वृत्तोमां पण अक्षरसंख्या नियत होय छे, पण तेनां बीजां महत्त्वनां लक्षणो अनुष्टुपमां नथी एटले वृत्तोमां एनो अंतर्भाव न थई शक्यो तो पछी तेने माटे संख्यामेळ प्रकार ज विचारवानो रहे छे. अलबत्त मात्र नियत अक्षरसंख्याथी कोई छंद संख्यामेळ थई जतो नथी; ए नियत संख्यामांथी, आपणे उपर जोयुं

तेम जातिछंदोना संधिओ निष्पन्न थवा जोईए. एटले आपणे मुख्यत्वे संधिनी शक्यता जोवानुं रह्युं.

आ माटे 'रघुवंश'ना पहेला सर्गना बधा अनुष्टुपोने लगात्मक रूपे उतारी मारी समक्ष राखी तेनो में अभ्यास कर्यो. पहेला सर्गमां कुल ९४ अनुष्टुपो छे, अनुष्टुपोनां चार चरणोमां विषम अने सम चरणो भिन्न प्रकारनां छे, एटले एनुं एकम श्लोकार्ध गणवो जोईए. ९४ अनुष्टुपोनी श्लोकार्धनी पंक्तिओ ए रीते १८८ थाय. आ बधी पंक्तिओमां एक वात तरत नजरे चडे छे, अने ते ए के दरेक श्लोकार्धने अंते लगालगा आवे छे. संस्कृत पिंगलो आ स्थानना नियताक्षरोनो विचार करतां अंत्य अक्षरनो विचार नथी करतां, तेनी पहेलाना त्रण अक्षरोनो विचार करे छे, अने त्र्यक्षर गणोनी परिभाषामां त्यां जगण लगालने आवश्यक गणे छे (गत पृ. १४२). पण तेथी में अहीं सूचवेला लक्षणने हानि नथी थती, कारणके अंत्य स्थाने लघु आवे तो पण ते पदान्तना नियमथी गुरु करी शकाय छे. अने त्यां गुरु आवश्यक छे एमां तो कोई शंका ज नथी. उपरना १८८ श्लोकार्धमां मात्र २४ पादोमां अंते लघु छे, जे प्रमाणमां घणी ओछी संख्या छे. पण आ गुरुने तो में आगळ जणाव्युं तेम एक अणधारी दिशाएथी समर्थन मळे छे. व्यंजनान्तने गुरु गणवो जोईए एम कहेतां 'वृत्तरत्नाकर'नो विद्वान टीकाकार नारायण भट्ट कहे छे के एम न गणीए तो 'तनुवाग्विभवोऽपिसन्' ए पादमां अंत्य 'सन्' गुरु न थई शके. मारी दृष्टिए आ युक्ति अनुपपन्न छे (जुओ गत पृ. २४), पण एथी एटलुं अवश्य फलित थाय छे के नारायण अनुष्टुपना अर्धने अंते गुरु आवश्यक माने छे. आ उपरथी आपणे एटलुं असंदिग्ध निगमन काढी शकीए के अनुष्टुपमां श्लोकार्धे लगालगा आवश्यक छे.

लगालगा चतुरक्षर गुच्छ छे. जातिओमां अने संख्यामेळमां पण अंत्य संधिने लगात्मक करवानी रूढि जाणीती छे. एटले आ अेक बाबतमां आ लक्षण संख्यामेळमां प्रतीत थाय छे. आ उपरथी आपणे साधारण रीते विषम चरणना अंतमां चतुरक्षर गुच्छ छे के नहीं ते जोवाने दोराईअे. ए पादमां पण पिंगलकारोए अंत्याक्षर छोडी ते पहेलांना त्रिकने माटे यगण लगागा इष्ट गणेलो छे (गत पृ. १४१). सम चरणना उपमानना आधारे, अने पादने अंते संस्कृत-पिंगलमां सर्वत्र अंते गुरु आवे छे ए धोरणे, विषम पादने अंते पण आपणे गुरु आवश्यक गणवो जोईए. एटले विषम पादना छेल्ला चार अक्षरो लगागागा थया. विषमपाद समपाद करतां वधारे छूटवाळो छे, एटले आ अंत्य स्थाने विषमपादमां ५३ जेटला लघुओ आवे छे. एटलुं ज नहीं,

पिंगलकारोए आपेला त्रिक लगागामां पण अपवादो आवे छे. पण आ अपवादो मात्र एकतानतामां भंग करवा ज आवता होय एटला ज छे. आ १८८ श्लोकार्धमां लगागानी जगाए गालल मात्र ४ वार, ललल ७ वार, अने गागागा ७ वार आवे छे. आ फेरफार आवे छे त्यां पण ते क्यांई एक ज श्लोकना बन्ने श्लोकार्धमां आवतो नथी, अने एकंदर आखा श्लोकपूरमां दूर दूर वेरायला आवे छे. दाखला तरीके गालल १२क, ३१क, ७१क, ८१कमां आवे छे. ललल १६, २३, ३०, ३४, ५३, ६०, ६१ ए श्लोकोमां आवे छे. गागागा २०, २५, २९, ३९, ८७, ९१, ९३ ए श्लोकोमां आवे छे. अर्थात् आ अक्षरगुच्छो मात्र अपवाद तरीके एकतानता टाळवा श्लोकना पूरमां आवे छे अने अपवाद रूपे छे. आ सर्व उपरथी विषमपादनुं प्रकृतिभूत अंत्य चतुष्क आपणे लगागागा गणवुं जोईए.

आ उपरथी एक तर्क थाय छे: संख्यामेळ छंदो चतुरक्षर संधिना आपणे जोया छे. तेमां दरेक अक्षर बे मात्रानो बोलाय छे. वळी तेमां चरणने अंते संधिनी मात्राओ खंडित कराय छे, घनाक्षरीमां अंत्य चतुरक्षर संधिना छेल्ला बे अक्षरो गाल अथवा लल बने छे, मनहरनो अंत्य चतुरक्षर संधि गुर्वन्त त्र्यक्षर बने छे, अभंगमां पहेलां त्रण पादना अंत्य चतुरक्षर संधिओ द्वयक्षर बने छे. तो ए रीते आपणे कही शकीए के अनुष्टुप चतुरक्षर संधिनो छे अने तेना विषम चरणना चतुरक्षर संधिओ लगागागा बने छे, अने समचरणना चतुरक्षर संधिओ लगालगा बने छे. आ चतुष्को दरेक अष्टकल बनी रहे एने माटे विषम चरणमां लगागागाने अंते एक मात्रानी प्लुति के विराम आवे अने समचरणने अंते आवता लगालगा पछी बे मात्रानी प्लुति के विराम आवे.

अने अहीं एक वस्तु याद करवा जेवी छे. में आगळ (गत. पृ. १५०–५१) कह्युं छे तेम 'वृत्तवार्तिक' अनुष्टुपनो न्यास एना बहुलतम गुरुना रूपमां ज आपे छे. नीचे प्रमाणे :

गागागागा लगागागा । गागागागा लगालगा ।।

एना ए अनेक भेदो स्वीकारे छे, पण मूळ लक्षण आ प्रमाणे ज आपे छे. आने ज प्रकृतिभूत लक्षण गणीए तो अनुष्टुप चतुरक्षर संधिनो गणी शकाय, अने ए संधिने कुल आठ मात्रानो गणी शकाय, अंत्य चतुरक्षर संधिओमां, विषम पादमां एक मात्रा खंडित थई लगागागा रूप थयुं, सममां बे मात्रा खंडित थई लगालगा रूप थयुं. विषममां अंत्य लगागागानी

जगाए गागागागा आव्यानां दृष्टान्तो आपणे उपर नोंध्यां, तेथी मूळ प्रकृतिने कशी हानि थती नथी. ए खंडितनी जगाए त्यां अखंडित रूप आवे छे एम थयुं. दरेक चरणमां ज्यां ज्यां आद्य चतुरक्षर गागागागानी जगाए लघुमिश्रित चतुष्को आवे त्यां लघुने लीधे खूटती मात्रा पासेमां पासेना गुरुना विलंबनथी मेळवी लेवाय. आ मेळववुं सुलभ पडे ते माटे पादना आद्य चतुरक्षर संधिओमां वचला बन्ने लघुनो निषेध कर्यो छे, जेथी विलंबन करवानो गुरु अक्षर दूर न पडी जाय. आद्य चतुरक्षर संधिओमां आदिथी दूरमां दूर गुरु ललगामां बीजो आवे, अने एना वडे आगला लघुनी मात्रा मेळवी लेवी तद्दन सहेली पडे. अलबत्त लगागागानी जगाए ललगा पण अपवाद रूपे आवे छे. पण त्यां त्यां आगला चतुष्कोमां अंते गुरु आवी गयेलो होय छे. अर्थात् पहेला चतुष्कनी खूटती मात्राओ ए चतुष्कनो अंत्य गुरु ज पूरी करी ले छे. पछीना चतुष्कने पोतानी खूटती मात्राओ ज पूरी करवी रहे छे जे अंत्य गुरु सहेलाईथी करी शके. अंत्य ललगानां दृष्टान्तो 'रघुवंश'मांथी ज मूकुं. 'भीमकान्तैर्नृपगुणैः' (रघुवंश १, १६)मां पहेला चतुष्कमां एक ज मात्रा खूटे छे ते अंत्य गुरु विलंबनथी पूरी शके छे. घणांखरां अंत्य ललगा चतुरक्षरवाळा पादोमां आगलो चतुरक्षर संधि गुरुप्रधान होय छे. उपर 'भीमकान्तै' एमां त्रण गुरु अने एक लघु छे. सात ज एवा दाखला छे, ते बधामांनी गुरुनी संख्या आपुं. १६, २२, ३०, ५३ ए श्लोकोमां पहेला चतुष्कमां त्रण गुरुओ छे. श्लोक ३४ अने ६१मां चार गुरुओ अर्थात् आखुं चतुष्क गुरुओनुं छे. एक मात्र ६०मा श्लोकमां 'उपपन्नं ननु शिवं' एमां ललगागा ललगा छे, तेमां पहेला चतुष्कलमां बे ज गुरुओ छे. पण ए गुरुओ पण चतुष्कमां अंते आवे छे, एटले विलंबनथी ए चतुष्कनी आठ मात्रा पूरी करवाने समर्थ छे. आ ज दृष्टिथी 'रघुवंश'नो चोथो सर्ग ऊडती नजरे जोई गयो तो तेमां ज्यां ज्यां प्रथम चरणमां बीजुं चतुष्क ललगा छे त्यां सर्वत्र आगला चतुष्कना अंतमां गुरु छे. तेमां एवा प्रयोगो ८८ श्लोकोमां त्रण ज छे. 'वंगानुत्खाय तरसा' (३६क) 'उत्कलादर्शितपथः' (३८ग) 'इन्द्रियाख्यानिव रिपून्' (६०ग). पहेलामां पहेलुं चतुष्क गागागागा सर्वगुरु छे, बीजामां गालगागा छे, तेमां एक ज लघु छे अने अंते गुरु छे, त्रीजामां पहेलुं चतुष्क पाछुं गागागागा सर्वगुरु छे. आ उपरथी आपणे नियम करी शकीए के बीजा चतुष्कमां ज्यारे पहेला त्रणेय लघु आवे त्यारे आगलुं चतुष्क गुर्वन्त होय छे, जेथी ए चतुष्कनी खोट पछीना चतुष्क उपर चडती नथी. अने आपणे साथे साथे ए पण नोंधवुं जोईए के विषम पादमां ज्यारे बीजा चतुष्कमां पहेला त्रण लघु होय त्यारे पादान्ते गुरु होय ज छे, पादान्ते

गुरुने बदले लघु आवी शके छे ए विकल्प आ प्रसंगे निरवकाश बने छे. आने पण आपणे महत्त्वनो नियम गणवो जोईए.

बधा श्लोको जोतां एक बीजो पण नियम करी शकीए. अनुष्टुपमां क्यांई — कोई पण स्थाने — त्रणथी वधारे लघुओ भेगा थई शके नहीं. पहेला चतुष्कनी अंदर तो आ कदी न बनी शके कारणके तेनी मध्यनुं बीजुं अने त्रीजुं स्थान बन्ने लघुथी पूरी शकातुं नथी. एटले वधारेमां वधारे लघु मूकतां तेनां बे ज रूप थई शके लगालल ललगाल. अने एनी अंदर तो बेथी वधारे लघुओ भेगा थई शकता नथी. तेम ज समपादनुं अंत्य चतुष्क तो लगालगा नियत ज छे, तेमां तो बे लघु पण भेगा थई शकता नथी. पहेला पादनुं चतुष्क सामान्य रीते लगागागा छे तेमां तो एक ज लघु छे, पण अपवाद रूपे ते लललगा थई शके छे. ते प्रसंगे 'रघुवंश'ना पहेला अने पांचमा सर्गमां जोयुं तेम बीजा चतुष्कमां ज्यारे आदिमां त्रण लघुओ होय छे त्यारे आगलुं चतुष्क गुर्वन्त होय छे, बहुशः तो गुरुबहुल होय छे. एटले त्रणथी वधारे लघु भेगा थवानो संभव मात्र पहेला चतुष्कना अंत्य लघुओ बीजा चतुष्कना आदि लघुओ साथे मळीने चार लघुओ भेगा थाय तो ज ऊभो थाय. पण एवुं क्यांई आ बे सर्गोमां बन्युं नथी. पहेला चतुष्कने अंते वधारेमां बधारे लघुओ भेगा थई शके लगालल के गागालल रूपमां अने तेनी पछी जो ललगागा आवे तो ज त्यां चार लघुओ भेगा थाय. पण आपणे उपर जोई गया तेम त्यां कदी ललगागा* आवतुं ज नथी. त्यां सामान्य रीते लगागागा आवे छे, अने तेना अपवादमां, आपणे उपर जोयुं तेम, गाललगा लललगा अने गागागागा ज आवे छे. आ पैकी गाललगा अने गागागागा आवतां तो लघुनी संख्या बेथी वधवानो ज नथी. अने लललगा आवे छे त्यारे

---

* कोई पिंगळ ए स्थाने ललगा एटले ललगागानुं चतुष्क स्वीकारतुं नथी. 'छंदःसूत्र'मां एने स्थान नथी पण तेनो टीकाकार हलायुध तेनुं एक उदाहरण आपे छे: "सकारेणा(।।ऽ)पि क्वचिद्विपुला दृश्यते। यथा — जिते तु लभते लक्ष्मीं मृते चापि वरांगनाः। क्षणविध्वंसिनि काये का चिन्ता मरणे रणे।।" अहीं त्रीजा चरणनो न्यास ललगागा ललगागा एवो थाय छे. अर्थात् आ सविपुला अनुष्टुप छे अथवा कहो के आनुं अंत्य चतुष्क ललगागा छे. पण तेनी पूर्वना चतुष्कने अंते गुरु छे, एटले अहीं पण चार लघुओ भेगा थवा पामता नथी. हलायुधना शब्दो जोतां ए पण आ प्रयोगने विरल मानतो जणाय छे. अने हलायुध तो बधी विपुलामां चोथो गुरु होय छे एवो आम्नाय टांके छे (गत पृ. १४७) एटले सविपुलामां ललगागा पहेलां गुरु होय ज.

तो पहेलुं चतुष्क गुर्वन्त होय छे ए हमणां जोयुं. एटले ए पण अनुष्टुपनो एक फलित नियम गणवो जोईए के तेमां क्यांई एक पादमां चार लघुओ भेगा थवा पामता नथी. आ लक्षण अनुष्टुपमां संख्यामेळनो संवाद होवानो आपणे विचार करीए छीए तेने अंगे महत्त्वनुं छे. चार लघुओ भेगा थई जाय तो तेनी खूटती मात्राओ पछी गुरुमां उमेरतां मुश्केली पडे. सामान्य रीते तो अनुष्टुपमां बेथी वधारे लघुओ भेगा थता नथी. त्रण लघुओ कां तो बे चतुष्कलोना अंत्य अने आदि मळीने थाय, कां तो बीजा चतुष्कना आदिमां अपवाद रूपे थाय. अंत्य चतुष्क लललगा होय त्यारे ते एक ज चतुष्क होवाथी तेना गुरुमां त्रण मात्राओ उमेरी पठन करवुं सुकर छे. प्रयोगथी तेनी खातरी करी शकाशे. बे संधिओ वच्चे ज्यारे त्रण लघुओ भेगा थाय त्यारे त्यां लगालल लगागागा के लगालल लगालगा चतुष्को होय. आ संयोगमां चतुरक्षर अष्टकल मात्रासंधिनो पेटासंधि द्व्यक्षर चतुष्कल संधि प्रथम छूटो बोलाय छे. एटलामां पहेला लघु अक्षरनी खूटती मात्रा पूरवी सहेली पडे छे. ते पछी लललगा एक चतुरक्षर संधि बनी रहे छे, अने तेमां पण अंत्य गा लंबाईने खूटती त्रण मात्राओ पूरी दे. अंते गागा के लगा आवे तेने खूटती मात्राथी उच्चारवुं सुकर छे ए देखीतुं छे. आ बधा उपरथी एटलुं फलित थाय छे के अनुष्टुपमां क्यांई त्रणथी वधारे लघुओ भेगा थता नथी, अने एनुं कारण अनुष्टुपना पादमां आठ अक्षरस्थानो छे त्यांना बधा अक्षरो मळी सोळ मात्रा करवी सहेली पडे ए छे. गुजराती मनहरमां जेम दरेक अक्षर, लघु पण गुरु बोलाई बे मात्राओ करी कुल मात्राओ पूरी थाय छे तेवुं संस्कृतमां शक्य नथी. एटले संस्कृतमां लघुओ पठनमां लघु ज रहे अने एने लीधे अक्षरथी बमणी मात्रा थवामां जे मात्राओ खूटे ते ते पछीना गुरुने प्लुत करी मेळवी लेवी जोईए. मनहरमां आ पद्धति पण अखत्यार थाय छे. अने संख्यामेळमां मुख्य संधिओ चतुरक्षर अने पेटा संधिओ द्व्यक्षर होय छे एटले कां तो द्व्यक्षर संधिने अंते अथवा तो चतुरक्षर संधिने अंते गुरु जोईए ज.

आ उपपत्ति साची होय तो अनुष्टुपने संख्यामेळमां मूकी शकाय. घनाक्षरी-मनहरनी माफक ज अनुष्टुप पण आठ मात्राना चतुरक्षर संधिओनो बनेलो गणाय, अभंग — खास करीने नाना अभंगनी पेठे तेमां पण बे चतुरक्षर संधिओनुं एक पाद थाय. आगळ कह्युं तेम दरेक पादनो अंत्य संधि खंडित छे, अने विषमनो एक मात्राखंडित अने समनो बे मात्राखंडित ए संधि होवाथी अनुष्टुप अर्धसमवृत्त बने छे. पादमां ज्यां ज्यां लघु आवी शके त्यां त्यां ए लघुनुं उच्चारण लघुनुं ज रहे अने एनी खूटती एक मात्रा ते पछी आवता गुरुनी प्लुतिथी पुराय. आ एनुं स्वरूप थयुं.

अने आ विशेष संभवित ए रीते बने छे के, अनुष्टुप गुरुप्रधान छंद छे. में 'रघुवंश'ना जे पहेला सर्गनुं लगात्मक न्यास मूकी पृथक्करण करेलुं छ त्यां स्पष्ट जणाई आवे छे के पादमां गुरुनी संख्या वधारे होय छे. पहेला सर्गमां कुल ९४ श्लोको एटले १८८ विषम चरणो छे तेमां ए अष्टाक्षरी विषमचरणोमां मात्र ३ गुरु आव्या होय एवो एक ज दाखलो छे. चार गुरुनां २९ चरणो, पांच गुरुनां ६५, छ गुरुनां ७६, अने सात गुरुनां १७ विषम चरणो छे. आ आंकडा अनुष्टुपने गुरुप्रधान दर्शाववा पूरता सबळ छे. समचरणमां अंत्य चतुष्क लगालगा नियत होवाथी आठमांथी चार अक्षरोमां गुरुनी संख्या अरधनी एटले बेनी नियत थई गई होवाथी आ चरणमां विषम चरण जेटला गुरुओ आवी शकता नथी. तेम छतां एकंदर आखा छंदने गुरु-प्रधान गणवो पडे एटला गुरुओ तेमां छे. १८८ सम पादोमां त्रण गुरु अक्षरनां २५ पादो छे, चारनां ८५, पांचनां ५५ अने छनां २३ पादो छे. एटले समचरण पण गुरुप्रधान छे. एटले अनुष्टुप एकंदरे गुरुप्रधान बने छे. पादमां अक्षरनी बमणी मात्राओनी नजीक सहेलाईथी जई शकाय एटला माटे गुरुनी संख्या आवडी मोटी छे.

अनेक लक्षणोथी अनुष्टुप आ संख्यामेळमां पडतो जणाय छे छतां आ हजी मारो तर्क छे. ए सिद्धान्त क्यारे थाय के ज्यारे संगीत सिवाय (बे त्रण संगीत स्वरो चाले) एनुं विधिपुरःसर प्रवाहबद्ध पठन थतुं होय, अने तेमां सूक्ष्मकालमापक यंत्रथी आपणे साबीत करी शकीए के अनुष्टुपनुं दरेक चरण १६मात्रा ले छे त्यारे. एवा यंत्रनुं प्रमाण न मळे त्यांसुधी आ तर्क रहे अने कोई तेने न स्वीकारे ए एटलुं ज संभवित छे. पण ए न स्वीकारवुं होय तो एनुं बीजुं परिणाम स्वीकारवुं जोईए के अनुष्टुपनुं पठन एक सरखो समय नथी लेतुं अने छतां तेमां संवाद छे, ए संवाद अनावृत्तसंधि वृत्तोनो नथी, पण कदाच, मिश्रोपजाति गणाता छन्दःप्रवाहने मळतो छे, जेमां भिन्न भिन्न छन्दनां चरणो भळीने एक प्रवाह् बंधाय छे, पण तेमां मिश्रोपजाति जेवा भिन्नभिन्न छन्दो नहीं बतावी शकीए, तेम ज अनुष्टुपनुं कोई मूळ प्रकृति-भूत स्वरूप पण नहीं बतावी शकीए. ए वांधो हमेशां रहेवानो. एने मिश्रो-पजाति जेवो छन्दःप्रवाह् गणवो होय तो समपादान्ते लगालगा आवे छे, ए एक तत्त्व एमां पण कायम छे, ए नोंधवुं जोईए. जोके मात्र एटला एक लक्षणथी कोई समाक्षर पंक्तिओ छन्द बनी शके नहीं, जेम ओवी, मात्र प्रासथी छन्द बनी शके नहीं तेम. छेवटे आ एक छन्द अत्यार सुधीना आपणे पूर्ण अपूर्ण निर्णीत करेला मेळना बधा नियमोने सौथी वधारे कष्टकर नीवडे छे. एनी सादाई अने एनी विशाळता ज, नियमशोधनने सौथी वधारे प्रतारक नीवडे छे.

परिशिष्ट १

मराठीमां घनाक्षरीनुं स्वरूप

उपर घनाक्षरी संबंधमां मराठी 'छन्दोरचना'नुं समर्थन लीधुं तो मराठीमां घनाक्षरी ते ज आपणो घनाक्षरी छे के केम ते जोवुं जोईए. मराठीमां अतिप्रसिद्ध 'वृत्तदर्पण' जोतां प्रथम एवी असर थाय के मराठी घनाक्षरी, आपणा घनाक्षरीथी तद्दन भिन्न छे. घनाक्षरीनुं लक्षण ते नीचे प्रमाणे आपे छे:

"घनाक्षरी छंद ओवी प्रमाणे छे; पण तेवा चार मळीने एक घनाक्षरी थाय छे. घनाक्षरीनां सोळ चरण थाय छे; चार चरण मळीने तेनुं पाद थाय छे; प्रत्येक पादना पेटामां चार चरण. तेमां पहेलां त्रण चरणोमांना प्रत्येकमां आठ अक्षर थई १२ मात्रा थवी जोईए. अने चोथा चरणमां सात अक्षरो थई ११ मात्रा थवी जोईए, एवो प्रायः नियम छे. दरेक पादमां त्रण त्रण चरणोनो यमक अने प्रत्येक पादना चोथा चोथा चरणोनो यमक थवो जोईए." ('वृत्तदर्पण' पृ. ४६.) आनो अर्थ ए थाय के गुजराती घनाक्षरीना अष्टाक्षर यतिखंडने अहीं चरण गण्युं अने तेवां त्रण चरणोने सळंग प्रासवाळां कर्यां. चोथा चरणनो प्रास ए तो सळंग घनाक्षरीनो ज प्रास छे. 'वृत्तदर्पण'ना दृष्टान्तथी ज स्पष्ट करवा प्रयत्न करूं.

घनाक्षरी वामनाची

अहो कैकेयी हें काय।। केलें तुवां हाय हाय।।
न म्हणवे तुज माय।। जन्मोजन्मीं वैरिणी ।। १ ।।
सर्व जगदभिराम।। वना धाडिला तो राम।।
केलें विख्यात कुनाम।। कीं हें पतिमारिणी ।। २ ।।
तुझ्या वधें न अधर्म।। तुज मारावें हा धर्म।।
परि निंदील हें कर्म।। राम पापकारिणी ।। ३ ।।
नाहीं तरीं प्राण आज्य।। तुझें घालोनियां प्राज्य।।
जाळानियां सामराज्य।। दाखवितों करणी ।। ४ ।।

पठन करतां आनुं पठन गुजराती मनहर जेवुं ज थशे. मनहरमां आवा ज आंतरप्रासो आ ज स्थाने चरणमां आवे छे, ए आपणे उपर आपेला मनहरना दृष्टान्तमां जोयुं, जो के ए छन्दनुं अंग नथी अलंकार छे. अने अष्टाक्षर यति-

खंडनी १२ मात्रा अने सप्ताक्षरनी ११ मात्रा कही छे, पण ए नियम पळायो नथी. 'सर्वजगदभिराम'नी दस ज मात्राओ थाय छे. एटलुं ज नहीं आगळ (वृत्तदर्पण पृ. ४७) उपर आपेला मोरोपंतना दृष्टान्तमां चोथुं चरण जे सात अक्षरनुं होय छे, तेमां एक जगाए छ जेटला गुरुओ छे. 'पीतां चावें जा परी.' मोरोपंतना एक बीजा उदाहरणमां ए चरण 'झालें तेव्हां सक्षण' छे तेमां पण बे ज लघु छे, पांच गुरु छे. पठन एकधारुं गुजराती मनहर जेवुं ज दरेक अक्षरने सरखो बे मात्रानो करतुं चाल्युं आवे छे. एटले अहीं घनाक्षरी ते आपणो मनहर ज छे. अलबत अहीं ओवीना उल्लेखथी गोटाळो थवा संभव छे, कारणके ओवी तो अक्षरसंख्या के मात्रासंख्यामां बन्नेमां अनियत छे. पण 'वृत्तदर्पण' ओवीने उपर प्रमाणे नियतरूप आपी तेने घनाक्षरीनुं अंग गणे छे. ~~पण~~ ते खोटुं छे. अने सद्‌गत राजवाडेए एनुं स्पष्ट खंडन करेलुं छे. ते कहे छे के गोडबोलेना 'वृत्तदर्पणमां' जे घनाक्षरी छापेला छे, तेमां अक्षरोनुं लघुगुरुत्व असल पोथीमां जोईने छपावेल नथी. आजकाल गद्यने शुद्ध करी लखवाना नियम प्रमाणे छापेलुं छे. तेथी करीने तेनुं छंदस्त्व विना कारण भ्रष्ट थयेलुं जणाय छे.

पिंगलना घनाक्षरीनुं लक्षण रामदयालूए 'वृत्तचंद्रिका'मां आ प्रमाणे आपेलुं छे:—

> विचारचर्चा गल्योर्गणानां
> न यत्र, भूपै १६ स्तिथिभि १५ र्यतिर्गुरुः ।।
> अंते धरापावक ३१ वर्णपादा
> समीरिताऽसौ फणिना घनाक्षरी ।।

पादमां ३१ अक्षरो अने सोळमा अक्षर पर यति, एटलो ज निर्बंध (नियम) आ घनाक्षरीमां छे. मराठी घनाक्षरीना पाठमां यति प्रत्येक ८मा अक्षर पर होई, प्रत्येक अक्षरद्वंद्वमां एक अक्षर घन एटले दीर्घ थतो जणाय छे. संस्कृत घनाक्षरीमां गुरुलघुनो निर्बंध नथी. त्यारे ते लक्षण जो मराठी घनाक्षरीने लगाडीए तो गुरुलघु मात्रानी भांजगड नहीं जेवी थाय छे.

रामदयालूए बत्रीस अक्षरोनी घनाक्षरी पण कहेली छे. पण तेनो प्रचार मराठीमां अद्यापि नथी. (राजवाडे कृत 'मराठी छंद' पृ. ८)

उपर 'वृत्तदर्पण'मांथी आपेलां दृष्टान्तोमां कोई कोई पंक्तिमां एकांतरे गुरु आवे छे, पण तेनो नियम नथी. हुं तो मानुं छुं के आमां छंदनी दृष्टिए एटलुं ज प्रस्तुत छे के गुरुओ लघुनी नजीक ज होवाथी

लघुने लघु राखी शब्दने के खंडने अक्षरथी बमणी मात्रानो करवाने खूटती मात्रा पासेना गुरुमां सहेलाईथी उमेरी शकाय छे. बाकी में उपर जणाव्युं ते प्रमाणे आ घनाक्षरी ते आपणो मनहर ज छे. तेने ओवी साथे गूंचमां नांखवानी जरूर नथी.

परिशिष्ट २

ओवी अने अभंग

मराठी पिंगलो ओवीनुं निरूपण करे छे. गुजराती पिंगलोए हजी सुधी ओवीनो पिंगलोमां समावेश कर्यो नथी. आपणामां बहु ओछा कविओए ओवी लखी छे. नर्मदाशंकरे थोडी लखी छे (नर्म कविता, आवृत्ति ४थी, पृ. ७८७) अने नरसिंहरावे 'बुद्धचरित'मां किसागोतमीमां थोडी पंक्तिओ ओवीनी लखी छे. हुं पोते एने पिंगलमान्य छंद गणतो नथी, छतां तेने अपायेला महत्त्वने लीधे मारे तेनुं स्वरूप टूंकमां पण दर्शाववुं जोईए, अने एने मान्य न करवानां कारणो रजू करवां जोईए.

'वृत्तदर्पण'मां ओवीनुं लक्षण नीचे प्रमाणे आपेलुं छे:—

"ओवीने चार चरण होय छे. त्रण चरणोने अंते यमक होय छे, चोथाने होतुं नथी. पहेलां त्रण चरणोमां आठ आठ अक्षरो अने छेवटना चरणमां सात अक्षरो होवा जोईए. आ मुख्य नियम, परंतु शब्द अर्थ एना अनुरोधमां कवि वधारे ओछा अक्षरो मूके छे.

उदाहरण ओवी ज्ञानदेव

जो सर्वां भूतांचे ठायीं ।। द्वेषातें नेणेचि कांहीं ।।
आप पर जया नाहीं ।। चैतन्य पैं जैसे ।।

वृत्तदर्पण पृ. ४५

आमां उपर कहेलुं माप बराबर छे. जे ओवीथी घनाक्षरी बन्यानुं 'वृत्तदर्पणे' कहेलुं ते आ ओवी. अलबत्त एमां मनहरना एक चरण जेटली ज नियतता छे. 'रणपिंगले' पण ओवीनुं आ ज लक्षण अने घनाक्षरी साथेनो तेनो संबंध कह्यो छे ते 'वृत्तदर्पण'ने आधारे ज होय एम जणाय छे. नरसिंहराव आ बन्नेनी नोंध करी, कहे छे : "रणछोडभाई घनाक्षरी अने ओवीने एकरूप ठराववा जाय छे. परंतु हजी संभवे तो मनहर जोडे एकता संभवे. ने ते पण ओवीनी शिथिलता, तेमां यमकनी योजना, इत्यादि जोतां लयभेद स्पष्ट छे. पद्य करतां गद्यनुं स्वरूप (लयत्यागने संबंधे) हेमां छे; ओवी जेणे उच्चाराती सांभळी

हशे, अने अंत्य अक्षरो विलक्षण रीते लेवाता सांभळ्या हशे, तेने ओवीनुं स्वतंत्र स्वरूप, हेनी अतन्त्रताने लीधे ज, स्पष्ट जणाशे. 'ज्ञानेश्वरी'मांथी उदाहरण आप्याथी आ वात स्पष्ट कांईक थशे :

जैसीं अवघी चि नक्षत्रें वेंचावीं। १२
ऐसी चाड उपजेल जें जीवीं। ११
तें गगनाची बांधावी। ८
लोथ जेवीं॥ ४ अध्याय २०,–२५९
जैसें शाखांसी फूल फळ। ९
एकि हेळां वेटाळुं म्हणिजे सकळ। १३
तरि उपडुनियां मूळ। ९
जेवीं हातीं घेणे॥ ६ एजन, २६१
तेवीं माझे विभूति विशेष। १०
जरीं जाणों पाहिजेत अशेष। ११
तरीं स्वरूप एक निर्दोष। १०
जाणिजे माझें॥ ५ एजन, २६२

ओवीना पिता ज्ञानेश्वर*नी आ ओवीओमां स्पष्ट रीते चोथां चरणो सात अक्षरनां नथी, चार, पांच अने छ अक्षरनां छे; ते यथासंभव लंबावीने लहेकाववानां छे."

*(टीप) श्री श्लोक वामनाचे, अभंग वाणी प्रसिद्ध तुकयाची।
ओवी ज्ञानेशाची, किंवा आर्या मयूरपंताची॥
ए प्रसिद्ध मराठी गीति सुविदित छे."

बुद्धचरित, (आवृत्ति १ ली) टिप्पण, पृ. ७९–८०

नरसिंहराव मात्र चोथा चरणनी अक्षरसंख्यानो अनियम नोंधे छे, पण आगल्यां त्रण चरणोमां पण अक्षरसंख्या एकसरखी नथी. में दरेक चरण सामे अक्षरसंख्या नोंधी छे.

पण ओवीनी अनियमितता आथी पण वधारे छे. राजवाडेए 'मराठी छंद'मां ओवीनी लांबी चर्चा करी छे. तेमां प्रथम पंदरमा शतकना भीष्माचार्यनुं ओवीनुं लक्षण उतारेल छे, अने पछी तेनी भूमिका उपर ओवीना स्वरूपनी चर्चा करी छे. आ लक्षण नीचे प्रमाणे छे :

(१३) गायत्रीछंदापासौनि धृतिपर्यंत।
(१७) ग्रंथ वोवीयांचे तीन चरण जाणावे मिश्रित।

(१२) प्रतिष्ठेपासोनि जगतीपर्यंत।
(५) चौथा चरण ॥४२७॥ ज्ञानखंड, मार्गप्रभाकर

राजवाडे आ विशे कहे छे: "आ ओवीनो अर्थ आ प्रमाणे: पहेलां त्रण चरणो गायत्रीथी मांडीने धृतिपर्यंतना कोई पण छंदनां होय, अने चोथुं चरण प्रतिष्ठाथी मांडीने जगतीपर्यंतना कोई पण छंदनुं होय. एटले पहेलां त्रण चरणो षडक्षरी वृत्तथी अष्टादशाक्षरी वृत्तपर्यंतना कोई पण वृत्तनां होय अने चोथुं चरण चतुरक्षरी वृत्तथी द्वादशाक्षरी वृत्त पर्यंतना कोई पण वृत्तनुं होय. एटले, पहेलां त्रण चरणोमां ६थी १८ अने चोथा चरणमां ४थी १२ पर्यंत अक्षरो होय. ज्ञानेश्वरनां केटलांक ओवीचरण पांच अक्षरनां मळी आवे छे अने चोथुं चरण त्रण अक्षरनुं मळे छे, एटले में ओवीनुं लक्षण एवुं बांध्युं छे के ओवीनां पहेलां त्रण चरण सुप्रतिष्ठा (५) थी मांडीने धृति (१८) छंद पर्यंतना कोई पण छंदनुं होय अने चोथुं चरण मध्यमाछंद (३)थी मांडीने जगती छंद (१२) पर्यंतना कोई पण छंदनुं होय. मात्र तेमां एक वात लक्षमां राखवी जोईए के, प्रायः चोथा चरणना अक्षरो पहेला त्रणेय चरणोमां सौथी कमी अक्षरनुं जे चरण होय तेना अक्षरोथी वधारे अक्षरोवाळुं न आवे. आ बधानो इत्यर्थ ए के ओवीनां त्रण चरणो सुप्रतिष्ठाथी धृति पर्यंत जेटलां कोटयवधि वृत्तो छे ते वृत्तोनां होय छे, अने चोथुं चरण मध्यमाथी जगती पर्यंत जे लक्षावधि वृत्तो छे ते वृत्तोनुं होय छे.

ओवी बे प्रकारनी होय छे, समचरणी अने विषमचरणी. समचरणी ओवी ते के जेनां पहेलां त्रण चरणोमां सम एटले सरखी संख्याना अक्षरो होय; अने विषमचरणी ओवी ते के जेनां पहेलां त्रण चरणोमां विषम अक्षरो होय." (मराठी छंद पृ. २०–२१) आ पछी सम अने विषम ओवीओना पेटा विभागो पाडे छे ते मने नोंधवानी जरूर लागती नथी. ते पछी राजवाडे 'ज्ञानेश्वरी'मांथी समचरणी ओवीओनां दृष्टान्तो आपे छे. षडक्षरी ओवीथी शरू करे छे:

अउं नमो आद्या। वेदप्रतिपाद्या॥
जय स्वसंवेद्या। आत्मरूपा॥ १॥ —अध्याय १

आ पछी सप्ताक्षरी, अष्टाक्षरी, नवाक्षरी, दशाक्षरी, एकादशाक्षरी, द्वादशाक्षरीनां दृष्टान्तो आपे छे. आथी वधारे अक्षरोनी समचरण ओवीओ ज्ञानेश्वरीमां नथी एम कही पछी विषमचरणी ओवीनां दृष्टान्तो आपे (एजन, पृ. २१–२२) छ. उपर नरसिंहरावे एवां आपेलां छे एटले हुं बीजां दृष्टान्तो लेतो नथी.

विषमाक्षरी ओवी विशे राजवाडे एक नियम कहे छे. एक चरण पंचाक्षरी होय तो बीजां चरणो षडक्षरी अथवा अष्टाक्षरी होय छे. अष्टाक्षरी चरण होय तो बीजां बे चरणो नवाक्षरी अथवा सप्ताक्षरी होय छे. एटले के एकथी त्रण पर्यंत प्रत्येक चरणनुं न्यूनाधिक्य होय छे. आ करतां वधारे न्यूनाधिक्य होय तो वधारे अक्षरो घणे भागे काढी नांखीने बीजां चरणो मळतां करी लेवाय छे. (एजन पृ. २४)

हुं आने राजवाडेनो तर्क मानुं छुं. ए प्रमाणे न्यूनाधिक्य करवानुं कारण ए एवुं आपे छे के 'ज्ञानेश्वरी'मां ओवी छंद छे. दसमी कलममां पंचाक्षर चरणात्मक अभंगथी द्वादशाक्षर चरणात्मक अभंगपर्यंत अभंगना सुप्रतिष्ठादि प्रकारो कह्या छे ते ज प्रकारो ओवीना छे. अर्थात् सुप्रतिष्ठा अभंग प्रमाणे ज पंचाक्षरात्मक ओवी बोलाय छे. एटलुं ज के जेम अभंगमां चरणनो उपान्त्य प्लुत बोलाय छे, तेम ओवीमां अंत्य अक्षर प्लुत बोलवानो होय छे.

आनो अर्थ ए थयो के राजवाडे ओवीना चरणोने अभंग प्रमाणे सम करवा इच्छे छे. तेम करवा ते पोते ओवीना शब्दोने छोडी देवानुं कहे छे ए तो विलक्षण छे ज पण तेथी पण वधारे विलक्षण ए छे के तेओ ज्यां अक्षरो न्यून होय त्यां वेदपठनमां थाय तेवी स्वरभक्ति करवा कहे छे. 'फांके' शब्दने तेओ 'फआंके' करे छे. अने 'आठवो' शब्दना अंत्य 'वो'ने तोडीने 'आ+उ' करे छे. "आ स्वरच्छेदनो प्रकार वैदिक ऋचाओना छन्दःप्रस्तारमां करे छे." एम प्रमाण आपे छे. (मराठी छंद, पृ. २४–२५)

आ प्रतीतिकर लागतुं नथी. आ साचुं होत तो राजवाडेए पंदरमा शतकना भीष्माचार्यनुं जे ओवीनुं लक्षण उतार्युं छे तेनां चरणोमां ज आटली बधी न्यूनाधिकता न होत. एटले हुं मानुं छुं के ओवी मूळ तो एक प्रकारनुं सप्रास गद्य छे. तेने चरणबद्ध करनार तत्त्व एक मात्र प्रास छे. तेमां त्रण चरणो एक ज प्रासनां होय छे, अने चोथुं टूंकुं प्रास विनानुं होय छे. आथी ओवीमां छन्दोनां एकमो पडी शके छे. तेमां प्रथम तो चरणोनी अक्षरसंख्यानो कशो ज नियम नहोतो एम हुं मानुं छुं, सिवाय एटलो ज के प्रास बहारनुं चोथुं चरण आगलां कोई चरणथी वधारे लांबुं न होई शके. पण जेम जेम तेनो वपराश वध्यो तेम तेम बधां चरणोमां अक्षरसंख्या सरखी करवानुं वलण ऊभुं थयुं. ए अमुक ललकारथी बोलाती, अमुक स्वरोथी गवाती ए खरुं पण एम तो महाराष्ट्रना हरिबुआओ गद्य पण गाय ज छे, अमुक आरोहअवरोहथी बोले छे. आटलां ज लक्षणोथी हुं ओवीने पिंगलमान्य छंद कही शकतो नथी. राजवाडे तेनां चरणोमां आवता जे कोटयवधि छंदोनी

वात करे छे ते छन्दस्तत्त्व नहीं समजवानुं परिणाम छे. ते ओवीमां वेदकालीन छन्दनी सरलता सादाई विशाळता जुए छे, पण वेदकाळमां पण आपणे बीजा प्रकरणना परिशिष्ट १ मां जोई गया तेम पांचथी वधारे छंदो नहोता. ए छंदोने कोटयवधि कहेवानी प्रथा तो पछीथी पिंगलना गणितकोए ऊभी करेली माया छे. आपणा पिंगले बे ज प्रकारना छंदो मान्य कर्या छे. एक अनावृत्त-संधि अक्षरमेळ, जेमां भिन्न प्रकारना संधिओ कोई गूढ रीते भेगा थई एक संवादी पंक्ति रचे छे ते. बीजा जातिछंदो जेमां अमुक मात्राना संधिनां अमुक संख्यानां आवर्तनो होय छे. आनी बहारनो आपणे कोई छंद जाणता नथी. ओवीनो उपरना कोई प्रकारमां अंतर्भाव थई शकतो नथी. ते मात्र अमुक प्रकारनुं प्रासबद्ध गद्य छे. राजवाडे उपरनी ज चर्चामां एक स्थळे (मराठी छंद पृ. २५–६) 'ज्ञानेश्वरी'नुं ज प्रमाण आपीने कहे छे ते साचुं छे. आ ओवी नामनो जे बंध छे ते गवाय छे पण खरो, अने केवळ गद्य प्रमाणे — सयमक गद्य प्रमाणे वंचाय छे पण खरो. एने गद्य ज गणवुं जोईए.

राजवाडे अभंगनां अनेक दृष्टान्तो आपी अभंगना पण पुष्कळ प्रकारो बतावे छे. अंते कहे छे: चतुरक्षरी चरणोथी द्वादशाक्षर चरणो पर्यंतनां उदाहरणो अने लक्षणो उपर आप्यां छे. केटलाक अभंगोमां चरणोमां तेर के चौद अक्षरो मळी आवे छे. परंतु एवां चरणो विरल. चौद अक्षरोथी वधारे अक्षरो अभंगनां चरणोमां आवता नथी. सारांश, चतुरक्षरी वृत्तोथी चतुर्दशाक्षरी वृत्तो पर्यंत जेटलां लक्षावधि वृत्तो छे ते सर्व अभंग छे. एटलुं ज के अभंगत्व मेळववा माटे वृत्तोनुं चोथुं चरण ऊनाक्षर होवुं जोईए. ओवीने पण आ ज सिद्धान्त वत्तोओछो लागु पडे छे (मराठी छंद पृ. १८).

आगळ जतां कहे छे: अभंगमां चार के साडा त्रण चरण एक साथे बोलाय छे ते समग्रने चतुष्क (मूळ मराठी चौक) कहे छे; ओवीमां दरेक चरण निराळुं बोलाय छे. अभंगमां चरणनो उपान्त्य अक्षर लंबावीने प्लुत बोलाय छे. ओवीना चरणनो अंत्य अक्षर प्लुत बोलाय छे. प्रायः अभंगनां सर्व चतुष्को एक ज छंद होय छे. दरेक ओवी स्वतंत्र होवाथी एक ओवीने बीजी ओवी साथे छंदोदृष्टिए कांई संबंध होतो नथी. अभंग सर्व प्रकारे छंदोमय छे. ओवीनुं वलण पद्यनी अपेक्षाए गद्य तरफ विशेष छे. प्रायः अभंगनां चतुष्कनां पहेलां त्रण चरणोमां नियमित अक्षरो आवता लागे छे. ओवीमां अक्षरोनो नियम न होय तो चाले. पहेलां त्रण चरणोमां यमक साध्यो एटले काम पत्युं. एटले ओवी सयमक गद्य छे (एजन, पृ. १९).

आ प्रमाणे ओवी अने अभंगमां प्रथम सरखी ज अनियमितता हती एम जणाय छे. फरक मात्र प्रास मेळववानी पद्धतिनो हतो. अभंगमां ओवी प्रमाणे प्रास आवी शके छे. पण ते सिवाय पहेला बीजा चरणनो, तेम ज बीजा त्रीजा चरणनो प्रास आवी शके छे, एटलुं अभंगमां विशेष वैचित्र्य छे. आवो विकास जोतां नरसिंहरावनो तर्क के ओवीमांथी ज अभंग थयो ए उपपन्न जणाय छे (बुद्धचरित टीका पृ. ८१). ओवीनां पदो धीमे धीमे समता मेळवतां गयां अने तेमांथी छेवटे अभंगनी सफाईदार रचना थई. पण आ एक ऐतिहासिक तर्क छे, तेनी साथे पिंगळने खास संबंध नथी. पिंगळ, ओवीने छंद न कहेवानां अने अभंगने छंद कहेवानां कारणो आपे एटले एनुं काम पूरुं थाय छे. ओवी गद्य छे, तेमां कोई छांदस माप नथी — मेळ नथी. अभंगने जे अर्वाचीन स्वरूप मळ्युं छे, अने जे स्वरूप गुजराती साहित्ये स्वीकार्युं छे तेमां माप छे, मेळ छे, मेळनुं तत्त्व मनहर जेवा चतुक्षर संधिओ छे, जेमां दरेक अक्षर बे मात्रानो छे, अने षडक्षर अभंगमां बीजो संधि खंडित थयेलो छे. ओवी अने अभंगना पठनमां एक भेद राजवाडेए बताव्यो ते साचो छे अने मुद्दानो छे. ए भेद ते ए के ओवीमां अंत्य अक्षर ज प्लुत थाय छे. अभंगमां उपान्त्य प्लुत थाय छे. (हुं उमेरीश के अंत्य पण एवो ज प्लुत थई त्यां अष्टकल रचाय छे.) आ फरकनुं कारण खास ए के ओवीमां जे कांई स्वरोनो आरोह् अवरोह् आवी शके ते मात्र गद्यना ललकारना प्रकारनो ज आवे, अने अंत्य प्लुति पंक्तिनो अंत दर्शाववा आवे, ए तालमात्राबद्ध न होई शके, अभंग — नियत संख्याक्षर अभंग, तालबद्ध संगीतनी भूमिका थाय छे, अने तेथी तेनी प्लुति ते तालनी कालमात्रा अमुक विशेष पद्धतिए पूरवा आवे छे, अने छ अक्षरोमांना, छेल्ला बे अक्षरो चारचार मात्राना प्लुतो बने छे, — अंत्य चरणना चार अक्षरो पेठे ज.

१२

देशी के पद

गेय होवा छतां जे पद्यरचनाओ पिंगलना अधिकारमां आवे छे तेनो हुं देशी के पदमां अंतर्भाव करवा इच्छुं छुं. प्राचीन गुजरातीमां आवती पद्यरचनाओ देशीना नामे ओळखाय छे. एटले आपणे प्रथम देशीनो अर्थ स्पष्ट करीए.

संस्कृत साहित्यमां अने संगीतनां संस्कृत पुस्तकोमां आ देशीनो उल्लेख मळे छे. संस्कृत पुस्तकोमां 'रामायणना' बालकांडमां लवकुशे ऋषियोनी सभामां रामायण गायुं एवुं वर्णन छे (सर्ग, ४ श्लोक ३६. नि०) अने त्यां छेल्ला श्लोकमां ते 'मार्गविधानसंपदा' गायुं एवो उल्लेख छे. त्यां तेना उपरनी तिलक नामनी टीकामां मार्गनो अर्थ करतां लख्युं छे: "गानं द्विविधं। मार्गो देशी चेति। तत्र प्राकृतावलंबी गानं देशी। संस्कृतावलंबी तु गानं मार्गः।" अर्थात् गान बे प्रकारनुं छे. मार्ग अने देशी. तेमां प्राकृतने अवलंबतुं गान ते देशी. संस्कृतने अवलंबतुं गान मार्ग. मार्गनो अर्थ अहीं आपणे जेने उस्तादी गायन कहीए छीए तेवो छे. अने उस्तादी नहीं एवुं जुदा जुदा देशमां प्राकृत जनोमां गवातुं ते देशी एवुं तात्पर्य जणाय छे. संगीत उपर प्राचीनतम ग्रंथ ते 'भरतनाट्यशास्त्र' छे. अलबत्त एनो मुख्य विषय नाटक छे, पण नाटकनुं एक अंग संगीत छे, तेथी तेमां संगीत विशे पण घणुं आवे छे. तेमां मार्ग अने देशी ए भेद आवतो नथी. पण ते पछीनां संगीत उपरनां पुस्तकोमां आ भेदनो स्वीकार आवे छे. संगीतनुं प्राचीनतम प्रसिद्ध पुस्तक लोचननी 'रागतरंगिणी' छे. तेमां विषयनी प्रस्तावनामां ज आवे छे:

मार्गदेशी विभेदेन गीतं तु द्विविधं मतम् ।

मार्गस्तु गन्धर्वादिगीतगतयः देश्यश्च तत्तद्रागाश्रितास्तास्तास्तत्तद् देशगीत-गतयः इह तु मार्गाभावान्नोदाहृताः . . . . . (उत्तर हिन्दुस्तानी संगीतनी संक्षिप्त ऐतिहासिक समालोचना, पृ. ८)

अहीं ग्रन्थकार संगीतना मार्ग अने देशी एवा बे प्रकारो कहे छे. मार्गने गान्धर्व पण कह्यो छे, जेने अन्यत्र पण समर्थन मळतुं आपणे जोईशुं. देशी

ए मार्गना भिन्न रागोने आश्रये भिन्नभिन्न देशोमां ते ते रागनी रूढ थयेली भिन्नभिन्न गति के गतो छे. ग्रन्थनो विषय मार्गसंगीत छे एटले तेमां देशी गीतोनां उदाहरणो आप्यां नथी. आ पछीनो संगीतनो एवो ज प्रतिष्ठित अने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'संगीतरत्नाकर' छे. तेना प्रथम स्वराध्यायमां ज कहेलुं छे:

गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते ।। २१ ।।
मार्गो देशीति तद्द्वेधा तत्र मार्गः स उच्यते ।।
यो मार्गितो विरंच्याद्यैः प्रयुक्तो भरतादिभिः ।। २२ ।।
देवस्य पुरतः शंभोर्नियताभ्युदयप्रदः ।।
देशे देशे जनानां यद् रुच्या हृदयरंजकम् ।।
गानं च वादनं नृत्यं तद् देशीत्यभिधीयते ।। २२ ।।

संगीतरत्नाकर, पृ. ६

गीत वाद्य अने नृत्य ए त्रण संगीत कहेवाय छे. तेमां गीत बे प्रकारनुं, मार्ग अने देशी. जेने ब्रह्मा वगेरेए इछ्यो अने भरत वगेरेए शंभुनी आगळ प्रयोज्यो अने जे अवश्य अभ्युदय आपनारो छे, ते मार्ग. जुदा जुदा देशोमां लोकोनी रूचिने लीधे जे हृदयरंजक बनेलुं छे ते गान वादन अने नृत्य देशी कहेवाय छे. आगळ चोथा प्रबन्धाध्यायमां पण आ ज कहे छे:

रंजकः स्वरसंदर्भो गीतमित्यभिधीयते ।।
गान्धर्वगानमित्यस्य भेदद्वयमुदीरितम् ।। १ ।।
अनादिसंप्रदायं यद् गन्धर्वैः संप्रयुज्यते ।।
नियतं श्रेयसो हेतुस्तद् गान्धर्वं जगुर्बुधाः ।। २ ।।
यत्तु वाग्गेयकारेण रचितं लक्षणान्वितम् ।।
देशीरागादिषु प्रोक्तं तद् गानं जनरंजनम् ।। ३ ।।

संगीतरत्नाकर, चतुर्थाध्यायः, प्रथम भाग, पृ. २७१

रंजक स्वरसंदर्भने गीत कहे छे. तेना बे भेदो होय छे, गान्धर्व अने गान. गन्धर्वोथी प्रयोजातुं अनादि संप्रदायवाळुं अने निश्चय श्रेयना हेतुभूत जे छे तेने गान्धर्व कहे छे, अने जे लक्षणयुक्त जनरंजन करनारुं गीत देशी रागो वगेरेमां वाग्गेयकारोए प्रयोजेलुं होय तेने गान कहे छे. टीकामां कल्लिनाथ आ गान्धर्वने ज मार्ग कहे छे अने स्पष्ट करे छे के वेदनी पेठे गान्धर्व संगीत अपौरुषेय छे अने देशी पौरुषेय छे. तेनो रचनार वाग्गेयकार कहेवाय छे:

वाच्यं गेयं च कुरुते यः स वाग्गेयकारकः ।।

एजन, अध्याय ३, श्लो. २, पृ. २४३

अर्थात् वाणी अने गीत बन्नेनो रचनार ते वाग्गेयकार. आपणा प्रेमानन्द वगेरे वाग्गेयकारो हता. अत्यारना कविओ पण गीत लखे त्यारे वाग्येयकार ज गणाय.

आ बधामांथी एटलुं फलित थाय छे के संस्कारेलुं उस्तादी शास्त्रीय संगीत ते मार्ग अथवा गान्धर्व. अने ते सिवायनी भिन्नभिन्न देशोमां रूढ थयेली जे गाननी गतो ते देशी.

उपर एवुं गृहीत करेलुं जणाय छे के देशीओ सर्व मार्गसंगीत उपरथी भिन्नभिन्न देशमां रूढ थयेली ते ते रागनी गतो छे. पण आ एक श्रद्धाथी ऊभी करेली मान्यता छे. खरुं तो अनेक स्थाने जे संगीत प्रचलित होय छे तेमांथी संस्कारीईने ज संगीतशास्त्र रचाय छे. पंडित ओंकारनाथ स्पष्ट कहे छे के "शिष्ट संगीतनुं आरंभस्थान लोकसंगीतमां छे. . . . मारां घणां वर्षोनां अनुभव अने चिंतन पछी कहुं छुं के शिष्ट संगीतनां मूळ लोकसंगीतमां रहेलां छे" (नवरात्र महोत्सव, लाठी, शिष्ट संगीत अने लोकगीत, पृ. ३३) आ मत ज वास्तविक जणाय छे. लोकप्रचलित वस्तुमांथी ज संस्कारीने अलग करेली वस्तु पछी पवित्र के दैवी मनाय छे. भाषामां आ व्यापारनुं बीजुं उदाहरण मळी रहे छे. आपणे संस्कृत भाषाने दैवी गीर्वाणगिरा कहीए छीए. पण ए लोकभाषाने ज संस्कारीने रचायेली छे. संस्कृत शब्दनो ए ज अर्थ छे. पण पछी ए ज मूळभूत गणाई अने तेनाथी भिन्नने देश्य गणी. तेम अहीं पण थयुं छे. अर्थात् देशी गणाती घणी गतो शास्त्रीय संगीतनी सामग्रीरूप हशे. ते साथे ए पण स्वीकारवुं जोईए के, जेम संस्कृत शब्दोमांथी केटलाक तद्भवो थया छे, तेम शास्त्रीय रागोमांथी भिन्नभिन्न देशमां भिन्नभिन्न गतो रूढ थई हशे. अने ते पण देशी ज गणाय. आ तो देशीना मार्ग साथेना संबंधनी चर्चा थई. आपणा प्रयोजन माटे तो आपणे एटलुं ज प्रस्तुत छे के दरेक प्रांतमां, अथवा आपणा प्रयोजन माटे भाषामां, अमुक अमुक गतो के ढाळो रूढ थया होय छे, जेमां साहित्य लखाय छे, अने एवा ढाळोमां लखेला साहित्यना गीतप्रकारने देशी कहे छे.

पण संगीत ए देशीना स्वरूपनी एक ज बाजु छे. एनी बीजी बाजु ते पद्यरचना छे. ए देशी गतमां रचायेलुं साहित्य पाछुं पद्यरचना पण होवुं जोईए. अने एम होवाथी देशीने पिंगलगत स्वरूप पण होय छे. आ रीते देशी ए अमुक अमुक रूढ स्वर रचनामां गवाती रूढ पद्यरचना छे.

आ देशीओ आपणा प्राचीन साहित्यमां देशी, ढाळ, पद, गरबी, त्रुटक एम अनेक नामे ओळखाय छे. प्राचीन गुजराती छंदोना ८मा प्रकरणमां

बताव्युं छे के त्रुटकनो ढाळमां समावेश थाय छे. अने ढाळो देशीओ तरीके पण ओळखाय छे. एवी ज रीते गरबीओ पहेलां पद तरीके ओळखाती अने पदो देशीओ पण कहेवातां. आवी रीते आ बधा प्रकारोनो समावेश देशी शब्दमां थई शके एम छे छतां आ विशाल वर्गने माटे हुं देशी अने पद एवुं संयुक्त मथाळुं इच्छुं छुं, तेनुं कारण ए छे के पद शब्द अत्यारे वधारे विस्तृत अर्थमां वपराय छे, अने ते विस्तृत अर्थनी पद्यरचनानुं स्थान पण अहीं ज छे. जूना गुजराती साहित्यमां, हुं कही गयो तेम, पद शब्द देशीनो पर्याय हतो. पण अत्यारे देश्य रागना अभिप्राय विनानुं कोई गेय काव्य होय तेने पण पद कहे छे. पद शब्द अहीं तेना मूळ विशाळ अर्थमां वपराय छे : पद एटले गेय पद्यरचना. अने ए ज अर्थमां ए शब्द वपराय छे ए इष्ट छे. पद्यरचना न होय एवां गीतो मात्र गीत कहेवावां जोईए, जेना दाखला हुं प्रकरण ९ मां आपी गयो छुं (गत पृ. ३५०-५३).

छंदोना बे मुख्य विभागो, संस्कृत वृत्तो अने जातिछंदो. त्रीजा संख्यामेळ छंदोनो में अंते जातिछंदोमां ज समावेश कर्यो छे. ते उपरांत देशी अने पदोने पण में एक स्वतंत्र प्रकार गणेलो छे. पण जातिछंदो अने देशी अने पदो वच्चे पण कोई मूलगत भेद नथी. एटलुं ज नहीं बहु ज सरखापणुं छे. बन्नेना मेळनो पायो संधिओनां आवर्तनो छे. बन्ने वच्चे जे कांई भेद छे ते ए छे के देशीओ अने पदोमां गेयता वधारे आगळ पडती छे. आने लीधे बन्ने वच्चे जे मुख्य मुख्य तफावतो निष्पन्न थाय छे ते नीचे प्रमाणे गणावी शकाय.

जातिछंदोमां सामान्य रीते कालमात्राओ, लघु बराबर एक मात्रा अने गुरु बराबर बे मात्रा ए धोरणे पुराती हती. क्यांक क्यांक प्लुति आवती तो ए प्लुतिनी मात्रासंख्या अने छंदमां तेनुं स्थान नियत हतां. आ धोरण देशीओमां शिथिल थाय छे. अने जातिछंदोमां जे छूटी छवाई नियत छूटो हती ते बधी अतन्त्र रीते अहीं भोगवाय छे. ए अतन्त्रतानी पण एटली सामान्य मर्यादा छे, के अक्षरविन्यासमांथी संधिओ प्रतीत थवा जोईए. एम न थाय त्यारे कृति पिंगल बहार जाय.

आ कृतिओ गेयताप्रधान होवाथी घणी जगाए पिंगलना संधिओनी वच्चे आखा संगीतना संधिओ आवे छे. आपणे दिंडीमां जोयुं के तेनी पंक्तिमां प्रथम दाल आवी पछी दादादा आवे छे. जातिछंदोमां आ षट्कलनुं स्थान नियत हतुं ते देशीओमां अनियत थाय छे, अने केटलीक तो आखी देशीओ षट्कलना ज अक्षरविन्यासवाळी होय छे.

उपरनां बन्ने लक्षणो दाखलाथी तरत स्पष्ट थशे. पहेलां एक लोकगीतनी गरबी उतारुं छुं.

नंद एक समे गाय गोतवा गया जो;
जता जाणीने श्याम साथे थया जो.
मेघ वरसे वरसे ने मेघनी झडी जो,
दिवस आथम्यो ने सांझ तो स्हेजे पडी जो.
नंद कहे छे के शो उपा कीजिये जो
शरी कृष्ण संघाते नव लीजिये जो.

साभळेलुं

पठनथी जणाशे के आ तालनां आवर्तनोवाळी गरबी छे. तेमां प्रथम ताल आवी पछी एक दादादा आवे छे—दिंडीनी पेठे. त्रीजी पंक्तिमां 'जाणीने' चोथीमां 'वरसे वर' ते ज प्रमाणे पांचमीमां 'कहे छे के' अने छेल्लीमां 'कृष्ण सं' दादादा छे. अंते गागा छे ते गा⌣गा⌣ थई कुल आठ आवर्तनो थाय छे. अने छतां आ शुद्ध महीदीप नथी. आमां प्रथम ताल निस्ताल जई, पछीथी ताल साथे षट्कलो शरू थाय छे. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

दाल] दादादा; दाल दाल; दाल गा⌣; गा⌣
दाल;]

अंत्य गा⌣ पछीनी पंक्तिना ताल साथे जोडाई एक षट्कल रचे, अने ए रीते आ चार षट्कलनी रचना छे. तेमां क्यांक क्यांक तालनी जगा एक गुरु ज पूरे छे, जेम के

जता जाणीने श्याम सा⌣ थेय या⌣ जो⌣ तेम ज
नंद कहे छे के शो⌣ उपा कीजि ये⌣ जो⌣

उपली लीटीमां 'सा' त्रण मात्रानो प्लुत छे. नीचलीमां 'शो' त्रण मात्रानो प्लुत छे. एवी ज रीते केटलीक जगाए लघुने गुरु ने केटलीक जगाए गुरुने लघु थवुं पडे छे.

दिवस] आथम्यो ने; सांझ तो स्हे; जे पडी⌣; जो⌣
अहीं 'ने' अने 'तो' लघु थाय छे. अने

शरी] कृष्ण सं; घाते नव; लीजि ये⌣; जो⌣

एमां 'ष्ण' अने 'व' बन्ने लघुने गुरु करवा पडे छे. आ छूटो जातिछंदोमां हती ज, पण अहीं वधारे संख्यामां आवे छे. अंत्य प्लुतोने नियत स्थान छे, ते

जातिछंदोनुं ज लक्षण छे, पण पंक्ति वच्चे आवेला 'सा' अने 'शो' ए प्लुतोने नियत स्थान नथी. पण आ अनियम छतां पंक्ति वांचतां तरत ज त्रिकलो जीभे चडे छे एटले आ लोकगीत पद्यरचना पण छे ज.

बाल जोडकणां अने धूनो पण गान अने ताल साथे अर्धगीतमां गवाय छे. अने तेवी रचनाओ पण देशीओ जेवी छूटो भोगवे छे.

रा ⌣ म, लक्ष्मण; जा ⌣ नकी — ;
जे बो,लोहनु; मा ⌣ नकी — ;

'रा' त्रण मात्रानो प्लुत छे. एक लांबं जोडकणं आ छूटनां स्वरूपो अने बहुलता बताववा नीचे उतारूं छुं.

एक् कोठामां; बतरी कोठा;
तेमां रंमे; नाना मोटा;
नाने मोटे; नांखी गोळी;
भागी रे हर;णांनी टोळी;

हर्ण खा ⌣ य; हेराफेरा
भाग्या रे दि;ल्हीना डेरा
दिल्ही ऊपर; आ ⌣ ण मा ⌣ ण;
भागी रे सो;नानी मा ⌣ ण;
मा ⌣ ण ऊपर; मो – ती – ;
बीबी आवे; रो – ती – ;
बिबीनां होंथमां; थो – को –;
फोड मियांनो; हो – को – ;
होकानां बे; का ⌣ चलां – ;
सोनानां बे; मा ⌣ छलां — ;

आटली बधी छूट छतां पठनना प्रवाहमां मात्राना उच्चारणमां क्यांय भूल नथी आवती. बाळको पण ए बोली शके छे, ए बतावे छे के ते ते पद्यरचनामां आवी आवी छूटो बहु स्वाभाविक रीते गोठवाई जाय छे. आने भाषानी एक प्रकारनी लवचिकता कही शकाय अने कुशळ कवि तेनो सुंदर उपयोग करी शके छे. जेम के दयारामनी दाणलीलानी गरबी :

मारग मूकोनी कहुं छुं व्हाला क्यारनी जो
मने रोकी राखी छे कोण वारनी जो.

मारे माथे मटूकी महीतणी तपे जो
वेळा वीत्या पछी गोरस मारुं नहीं खपे जो.

दयारामरससुधा, पृ. ३४

आ गरबी आगळ आपेली लोकगीतनी गरबी 'नंद एक समे०' ए ज ढाळनी छे. दाल] दादादा; दाल दाल; दाल गा ⌣ गा ⌣ तेमां आगळ जतां नीचेनी बे पंक्तिओ आवे छे:

आघा र्‌हो अडशो मां गिरधारि घेला मा थशो जो
जे कांई भाळो छो ते अर्थ न्हैं सरे कशो जो.

त्रिकलोमां ते नीचे प्रमाणे गवाय छे:

आँघाँ र्‌हों] अड्शों मॉं गिर्; धारि घेंला; मा थशो ⌣; जो ⌣
जें कांइ;] भाळों छों ते; अर्थ न्हैं स; रे कशो ⌣; जो ⌣

लघुनां चिन्हो उपरथी जणाशे के केटला बधा गुरुओने लघु करवा पडे छे. बीजी पंक्तिमां 'कांई' एक गुरु बोलाय छे. अहीं कविए 'आघा र्‌हो अडशो मां' ए भाव बताववा गुरुओने लघु कर्या छे, गुरुओने दबावी लघु करवाथी तेना प्रत्याघातनो धक्को अनुभवाय छे अने ए अर्थने पोषे छे. पण अणघड रचनारने हाथे आ छूटथी रचनामां केवळ कुरूपता आवे छे ए पण साचुं छे. अने आवी छूट स्वच्छंदथी वपराय तो अंते संधिओ ओळखाय पण नहीं, अने रचनानी छांदसता ज नाश पामे. वळी आने लीधे ज भाषानी जोडणीमां अतंत्रता पण आवे.

आपणे जोयुं के देशीओ पदोमां संगीतनुं प्राधान्य होय छे. आथी संगीतनां केटलांक लक्षणो पद्यरचनामां ऊतरी आवे छे. तेमां सौथी महत्त्वनुं ए छे के संगीतमां स्थायी अने आंतरो एवा बे भाग होय छे तेमांना स्थायीने मळतो अथवा एना उपरथी ऊतरी अवेलो ध्रुव के टेक एवो एक भाग केटलीक देशीओमां के पदोमां होय छे. स्थायी, आंतरा पछी फरी वार गावानो होय छे, अने आंतरा विभाग फरी वार आवे तो तेनी पछी फरी वार गावानो होय छे, तेम ध्रुव दरेक कडीए कडीए फरी वार गावानी होय छे. पद के देशीमां मात्र ध्रुव के टेकनो ज निर्देश करेलो होय छे, आंतरानो निर्देश होतो नथी, पण ए आंतरानी अनेक पंक्तिओथी ज पद्यरचनानुं मुख्य काठुं बंधाय छे अने तेने ज कडी गणवामां आवे छे. ९मा प्रकरणमां आपेला 'सद्‌गुरु०' पदमां प्रथम बे पंक्तिओ स्थायी के ध्रुवनी छे, अने पछीनी १थी ४ संख्या आपेली कडीओ दरेक आंतरो छे, जेनी पछी ध्रुवपंक्ति फरी फरीने बोलाय

छे. आ ध्रुवनो आवी रचना साथेनो संबंध आपणे टूंकमां समजवा प्रयत्न करीए.

ध्रुवनी व्याख्या एवी कराय छे के देशी के पदमां नियत अंतरे पाठनो अनेक वार आवतो, एक ने एक भाग. हवे केटलीक देशीओमां ध्रुवनी पंक्तिओ अने आंतरानी पंक्तिओ एक ज संगीतनुं एकम रचे छे. बीजी रीते कहीए तो ध्रुवकडीथी जे संगीतनुं एकम रचाय छे, ते ज एकम, पछी आवती दरेक कडीथी रचाय छे. आ ध्रुवनो एक प्रकार थयो. बीजा प्रकारमां ध्रुवथी संगीतनुं एक सादुं एकम बने छे, पण पछीनी कडीमां ए संगीत वधारे पासावाळा संगीतनुं एक पोसुं बने छे—एक अंश बने छे. दाखलाथी वधारे स्पष्ट करुं. प्रेमानन्दनी दाणलीलामांथी बे दाखला तरत सरखावी शकाय एवा मळे छे ते लउं छुं.

कडवुं ९मुं — राग खट

मूक्या पिंडारिया प्रेरी, राधाने, लीधी घेरी;
हृदेमां रोश आणी, बोल्या पछे चक्रपाणी. १
लटके पाग मांडे, पोतानी हठ न छांडे;
एनी जो हठ मूकावुं, तो दाणी नाम कहावुं. ७
वडतां वाय जो वहाणुं, सहुने वाज आणुं.
प्रभुनो रोश जाणी, राधाजी बोल्यां वाणी ८

बृ. का. दो. १, पृ. १०९–१०

कडवुं १२मुं राग खट

कृष्ण : घूतारी घूमटा वाळी रे, आंज्या विना आंखडी काळी रे;
जाओ क्यां आप्या पाखी रे, राधाने रोकी राखी रे.
वडतां वाये वहाणुं रे, सहुएने वाज आणुं रे—टेक

ऊंची ने अलबेलडी रे, मुख घणुं गुमान;
जोबनियानुं जोर जणावे, हुं उतारुं अभिमान घृ. आं.

एजन, पृ. १११

९मा कडवानी कडी जे रीते गवाय छे ते ज रीते १२मा कडवानी टेक पंक्तिओ गवाय छे. टेक पंक्तिओमां मात्र एक रे वधारे छे ते पद्यरचनामां के संगीतमां कशो तफावत नथी करतो. बधी पंक्तिओ दादादा एवा षट्कल संधिनी छे.

मु]क्या पि–; डारिया; प्रेरी–; ––
दा] दा दादा; दादादा; दादादा; दादा
रा;]धाने–; ली–धी; घेरी–; ––
दा]दादा दा; दा दादा; दादादा; दा दा
हृ]दिमां–; रो–श; आणी–; ––
दा]दादादा; दादादा; दा दा दा;
बो]ल्या प छे; च–क; पाणी–; ––
दा]दा दा दा; दादादा;

पंक्तिनो पहेलो अक्षर छोडीने षट्कलनो ताल शरू थाय छे. अने त्रीजा षट्कलनो छेल्लो अक्षर ए षट्कलने पूरुं कर्या पछी आगळ चार मात्रा पूरे छे, जे पछीनी पंक्तिना पहेला निस्ताल अक्षरने भेळवी दई आखुं षट्कल पूरुं करे छे. एम आखी पंक्ति चार षट्कलनी बने छे, जे प्रासथी अने अंत्य संधिथी पछीनी पंक्ति साथे जोडायेली होय छे. १२मा कडवानी पण ध्रुवनी पंक्तिओनो आ ज न्यास छे.

धू] तारी–; घूमटा; वाळी–; रे–
दा] दादादा; दादादा; दादा दा; दादा
आं]ज्या विना; आंखडी; काळी–; रे–
दा]दा दादा; दादादा; दादा दा; दादा

बे पंक्तिओ बस थशे. हवे आ पछीनो आंतरो लईए. नीचे दादादा नथी लखतो.

ऊंची–; ने अल; बे–ल; डीरे–; मुख ष; णुंगु–; मा––; ––ज्न;
जोबनि; यानुं–; जोर ज; धावेहुं;
ऊता–; रुं अभि; मान घू; तारी–;
घूमटा; वाळी–; रे–आं; ज्या विना;
आंखडी; काळी–; रे––

आ गरबी घणाए सांभळी हशे. तेमां आंतराथी, संगीत तार स्वरो तरफ जाय छे, अने पछी नीचे ऊतरी टेकने पकडी लई एक आखी अनेक पासांवाळी संगीत आकृति रचे छे. केवळ संगीतकृतिओमां स्थायी अने आंतरानो आवो ज संबंध होय छे. ध्रुव अने आंतरामां एकनी एक ज संगीत आकृतिनुं आवर्तन थाय, एने पद्यरचनामांथी देशी करवानी पिंगलकृत सादामां सादी युक्ति गणवी जोईए.

पिंगलनी ध्रुवोमां बीजी पण केटलीक खासियतो छे. केटलीक ध्रुवोनी संगीतनी स्वतंत्र एकमो बनती ज नथी, ए आखी पंक्तिने वळगीने ज रही शके छे, अने पंक्ति अने ध्रुव बन्ने भेगां मळीने ज एक आकृति रची शके छे. देशीओमां घणी ध्रुवो आवी ज छे. आने आपणे ध्रुवखंड कहीशुं: जेम के

जगतनुं सुख झाकळनुं छे पाणी रे, जाणी ले.
वणशी जातां वार नहीं सत वाणी रे, जाणी ले.

बृ. का. दो. १, पृ. ७२१

आखी पंक्ति प्लुति सहित ३२ मात्रानी रचना छे. अने दरेक पंक्तिने अंते 'रे–जाणी ले–' बार मात्रानो ध्रुवखंड आवे छे. ए ध्रुवखंडनुं स्वतंत्र अस्तित्व नथी, भाषा अने अर्थनी दृष्टिए नथी. पण अहीं प्रस्तुत ए छे के संगीतनी दृष्टिए पण एनुं स्वतंत्र अस्तित्व नथी. क्यांक आवा ध्रुवखंडो, एकी अने बेकी, पंक्तिओमां जुदा जुदा आवे छे, तेने आपणे बेवडा ध्रुवखंडो कहीशुं:

कारतक मासे केम गया छो मूकी रे रसियाजी!
प्राणजीवनप्रभु! शी वाते हुं चूकी रे रंग रसियाजी.
चूकी छुं पण दासीदोष समावो रे रसियाजी
मारा सम, जो मनमां कांईक लावो रे रंग रसियाजी.

दयारामरससुधा, पृ. १०३

अने पछी बधी पंक्तिओमां ए ध्रुवखंडो ज वाराफरती आव्या करे छे. अहीं पहेलीमां 'रे रसियाजी' अने बीजीमां 'रे रंग रसियाजी' बेवडा ध्रुवखंडो छे.

संगीतना एकममां ध्रुवखंड क्यां मूकवो केवडो मूकवो ए कविनी विवक्षा उपर आधार राखे छे.

चंद्रभागा ने चंद्रावळी रे लोल,
चंपक लता छे चारुरूप, व्रजवासणी रे लोल,
ताळी देतां वागे झांझर झूमखां रे लोल.
ललिता, विशाखा, व्रजमंगळा रे लोल,
माधवी ने मालती अनूप व्रजवासणी रे लोल,
ताळी देतां वागे झांझर झूमखां रे लोल.

दयारामरससुधा, पृ. २१

अहीं दयारामे बीजी पंक्तिमां 'व्रजवासिणी रे लोल' एटलो ध्रुवखंड, अने ते पछीनी त्रीजी पंक्ति आखी ध्रुवनी मूकी छे. अर्थात् त्रण पंक्तिनी कडीमां दोढ पंक्ति ध्रुवनी छे.

ध्रुवखंडनां टूंकामां टूंकां स्वरूपोमां क्वचित् एक ज अक्षरनां मळे छे. जेम के

आज मने आनंद वाध्यो अति घणो मा!
गावा गरवा छंद बहुचर माततणो मा!

बृ० का० दो० २, पृ. ६८७

अहीं 'मा' ए एकाक्षर ध्रुवखंड छे. ध्रुवखंड पंक्तिमां अमुक ज जगाए आवे एवो कोई नियम नथी. ते अंते आवे तेम आदिमां पण आवे, मध्यमां पण आवे. अलबत्त ए ज्यां आवे त्यां संगीतनी दृष्टिए शोभवो जोईए. उपरना दाखलामां ध्रुवखंड पंक्तिने अंते छे. पण

परमेश्वरीने पाये पडी हो बहुचरी, कहुं कळीजुगनां कर्म;
अकल नथी कांई एवडी हो बहुचरी, शक्ति राखजो शर्म

बृ० का० दो० १, पृ. ६८९

अहीं 'हो बहुचरी' ए ध्रुवखंड पंक्तिनी मध्यमां छे अने

साहेलडी हे! श्यूं कहिये वारोवार, जाणो छो मुज मन-वातडी हो लाल.
साहेलडी हे! करुणानी नजरे बोलाव, तो टळे मुज मन भ्रांतडी हो लाल

आनंदकाव्यमहोदधि, १, पृ. १२८

अहीं ध्रुवखंडो आदि अने अंत एम बन्ने स्थाने जुदा जुदा छे. आदिमां 'साहेलडी हे' अने अंते 'हो लाल' एम छे. कोई कोई वार पंक्तिनो अंत बेवडाय छे त्यारे पण ध्रुव जेवी असर थाय छे. पहेलां एक सादा ध्रुवखंड-वाळो दाखलो लईए:

लालजी कारतक महिने रथ जादवराये खेडियो हो लाल
व्हेला आवजो महाराज!
लालजी चांखडियेथी रडघाखडघा पण घणी खमा हो लाल
व्हेला आवजो म्हाराज!

अहीं 'व्हेला आवजो म्हाराज' ए ध्रुवखंड छे. नीचेनो ढाळ उपर जेवो छे, जो के उपरनी षट्कलनी एटले विलंबित अने नीचेनी ढाळ द्रुत चतुष्कल छे एटलो फेर छे.

देखी कामिनी दोय के कामे व्यापियो रे
के कामे व्यापियो रे
वळी घणो धनलोभ के वाध्यो पापियो रे
के वाध्यो पापियो रे.

अहीं कोई एक ज खंड फरी फरीने आवतो नथी. पण पंक्तिनो ज अमुक भाग बेवडाय छे. तेथी ध्रुव जेवी ज असर थाय छे. छतां आने ध्रुव न कहेवी जोईए. एने एक पंक्ति दोढवानी खास भंगी गणवी जोईए.

आ ज जगाए ए पण नोंध लईए के देशीओ अने पदोमां रे, जो, लोल, लो, जी, होजी, के, रेके, जेवां तानपूरकोनो छूटथी वपराट थाय छे. आमांनां केटलांकनो कांई अर्थ थतो हशे पण अत्यारे तो ए सर्व पूरक तरीके ज आवे छे. पण ते सिवाय तेनी छंद विशेनी केटलीक खास असर छे ते जोवा जेवी छे. आवां तानपूरको पंक्तिने अंते आवे त्यारे अंतनां द्योतक बने छे. पंक्तिनी मध्यमां ते गमे त्यां केवळ मात्रा पूरवा आवे छे, त्यारे छंद साथे एने कशो संबंध होतो नथी, पण ए कोई कोई वार देशीनी पंक्तिमां अमुक नियत स्थाने आवे छे त्यारे तेना स्थानथी त्यां शब्दान्त यति थई छंदनी एक भंगी बने छे. हमणां उपर ज आपणे 'देखी कामिनी०' देशी जोई तेमां 'के' अने 'रे' बंने छंदमां अमुक स्थाने आवे छे, अने बंने ए जगाए पंक्तिमां शब्दान्त यतिनुं काम करे छे. पण आ करतां पण विशेष खूबीथी ए पंक्तिनी अंदर प्लुत बनी छंदनी विचित्र भंगीओ रचे छे. हुं दृष्टान्तथी स्पष्ट करूं : मीरांबाईनुं गीत :—

मुखडानी माया लागी रे मोहन प्यारा

एक पंक्ति बस थशे. आ सप्तकल रचना छे अने तेनो न्यास नीचे प्रमाणे छे.

मुखडानी, माया लागी, रे-- मो, हन प्यारा,
लदादादा, ल दादादा, लदादादा, लदादादा,

अहीं 'रे' नी पहेलां चरणनुं अर्ध आवे छे, बे सप्तकलो पूरां थाय छे, अने पछी आवता 'रे' ने लीधे त्यां शब्दान्त यति आवे छे—पण विशेष ए छे के ए 'रे' सप्तकलनी पांच मात्राओ पूरे छे अने तेथी पछीना शब्दनो पहेलो अक्षर बे मात्राने स्थाने आवे छे. अर्थात् छेल्ला सप्तकलनो पहेलो द्विमात्रक अक्षर 'रे' साथे भळीने सप्तकल रचे छे, अने त्यां जो एकथी वधारे अक्षरनो शब्द होय (अने घणी वार एवुं ज बने छे, जेम अहीं बन्युं छे) तो ए शब्दना बीजा अक्षर उपर पछी ए सप्तकलनो ताल पडे. अर्थात् एक ज शब्द बे सप्तकलो वच्चे वहेंचाय. आ बधाथी एक घणी सुन्दर भंगी रचाय छे. गीतोनो आवो आखो एक प्रवाह बतावी शकाय जे अर्वाचीन युग सुधी चालेलो छे :

પ્રેમનીશ, લકછાઈ, રે – – ગ,ગને આજ,
લદાદાદા, લદાદાદા, લદાદાદા, લદાદાદા,

અહીં 'રે – –ગ'થી ત્રીજું સપ્તકલ બને છે, 'ગગને'ના બીજા અક્ષર ઉપર તાલ પડે છે, અને 'ગગને' શબ્દ બે સપ્તકલો વચ્ચે વહેંચાય છે.

ઉપરના મીરાંબાઈના ભજનમાં અને 'પ્રેમની૦' રચનામાં એ પણ નોંધવા જેવું છે કે મનહર કે કવિતમાં જેમ ચતુરક્ષર સંધિઓ આવે છે અને તેમાંનો દરેક અક્ષર લઘુ હોય કે ગુરુ હોય પણ દાદાદાદા અષ્ટકલનો એક દા પૂરે છે, તેમ અહીં પણ ચતુરક્ષર સંધિ આવે છે, અને તેના અક્ષરો લઘુ હોય કે ગુરુ પણ યથાક્રમ લદાદાદાનાં સ્થાનો પૂરે છે. 'મુખડાની' તેમાં 'મુ' લ, 'ખ', દા 'ડા' દા, અને 'ની' દા અનુક્રમે પૂરે છે. તેવી જ રીતે 'માયા લાગી'નો દરેક અક્ષર લદાદાદાનાં ચાર સ્થાનો યથાક્રમ પૂરે છે. અને તેમ કરવામાં અક્ષર લઘુ કે ગુરુ હોય તેનો ભેદ રહેતો નથી. પણ મનહર જેટલી અવ્યભિચારી રીતે અહીં ચતુરક્ષર સંધિઓ આવતા નથી. ક્યાંક એક દાની જગાએ બે લઘુઓ આવી વધારે અક્ષરોનું સપ્તકલ પણ બને છે. નીચેની લોકગીતની કડીમાં એનો દાખલો મળી રહે છે:

કાળી કુબજા, કામણગારી, વશકીધા, વનમાળી,
લદા દાદા લદાદાદા લદાદાદા લદાદાદા
હવે અમે, નથી ગમતાં, રે – –ઓ ઘવજી –
લદાદાદા લદાદાદા લદાદાદા લદાદાદા

મીરાંબાઈના ભજનમાં 'રે મોહન પ્યારા' ધ્રુવ હતી, અને તેનો છેલ્લો સપ્તકલ આખો અક્ષરોથી પુરાતો હતો. અહીં છેલ્લા સપ્તકલની અંત્ય બે માત્રા અનક્ષર રહે છે એટલો ફેર છે. આખી કડીમાં કેટલાંક સપ્તકલો જેવાં કે 'વશકીધા' 'વનમાળી' ચતુરક્ષર સંધિઓથી પુરાય છે. પણ એ અવ્યભિચારી નિયમ નથી. 'કાળી કુબજા' સપ્તકલમાં 'કુબ' બે લઘુ મળીને એક દ્વિકલ થાય છે અને તે જ પ્રમાણે 'કામણગારી' અને 'નથી ગમતાં'માં પણ બને છે.

દેશીના સંગીતની ઘણી વ્યાપક અને એક રીતે પઠનમાં મૂલગામી એવી એક બીજી અસર એ છે કે ઘણી ચતુષ્કલસંધિ રચનાઓ પઠનમાં ષટ્કલ અને સપ્તકલ બને છે, અને ત્યારે મૂળ ચતુષ્કલ સંધિઓ કેવી રીતે વિશેષ સંખ્યાની માત્રાવાળા સંધિઓ બને છે એ પણ કૌતુકપ્રેરક વિષય છે. આનો સૌથી વધારે પ્રસિદ્ધ દાખલો ચોપાઈ છે. ચોપાઈ ચાર ચતુષ્કલ સંધિઓની હોય છે. એ જ ચોપાઈ ઘણી વાર ત્રિતાલી ચોપાઈ તરીકે કે ઓખાહરણની ચોપાઈ તરીકે ગવાય

छे त्यारे षट्कल बने छे. उदाहरण माटे हुं प्रथम नरसिंहरावनी एक चोपाई लउं छुं. चोपाईनी पंक्तिओ उतारतां ज साथे साथे अल्पविरामथी चतुष्कलो छूटां पाडुं छुं.

जातुं, ए ऋषि, जनने, याच,
औषध, कंई तुज, बाळक, काज;
एह सु,णी का,ले तुज, पास,
आवी, हुं धरी, म्होटी, आश.

बुद्धचरित, पृ. २५

त्रिताली चोपाई षट्कल रचना छे अने उपरनी चोपाई एमां गवातां तेना अक्षरोनो विन्यास नीचे प्रमाणेनां षट्कलोमां थाय छे:

जातुं] ए ऋषि, जनने –, याच –, –
दादा] दादादा दादादा, दादादा, दा
औषध] कंई तुज, बाळक, काज –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
एहसु] णीका –, लेतुज, पास –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा
आवी] हुं धरि, म्होटी –, आश –, –
दादा] दादादा, दादादा, दादादा, दा

पहेली चार मात्राओ निस्ताल जई, पछी प्रथम मात्रा पर ताल साथे षट्कलो शरू थाय छे. त्रण षट्कलो पूरां थया पछी एक कालमात्राद्विक वधे छे ते पछीनी पंक्तिनी प्रथम चार मात्राओ लईने आखुं षट्कल बनी रहे छे. एम आ रचना चार षट्कलनी छे. हवे आ कालमात्रानां षट्कलो अक्षरोथी पूरवानी प्रक्रियामां एवुं बने छे के चोपाईनुं पहेलुं चतुष्कल निस्ताल चतुष्कल पूरे छे, अने पछीनां अक्षर-चतुष्कलो कालमात्रानां षट्कलोने पूरे छे. चोपाईना त्रिकलनो छेल्लो अक्षर प्लुत बनी ए षट्कलने पूरवा उपरांत पछीनुं द्विकल पण पूरे छे, चोपाईनो ए लघु छ मात्रानो प्लुत बने छे. चतुष्कलोमां गागा होय तो ते गागा — बने छे, जेमके 'म्होटी' 'णीका'; गालल होय तो तेनो दरेक लघु गुरु बनी गागागा बने छे. जेमके 'हुं धरि' 'बाळक' 'ए ऋषि'; ललगा होय तो पहेला बे लघु, लघु ज रही द्विकलने पूरे छे अने छेल्लो गुरु चार मात्रानो प्लुत बने छे, जेमके 'जनने'; चतुष्कल सर्वलघु होय तो तेना प्रथम बे लघु लघु ज रही, पहेला द्विकलने पूरे छे, अने पछीनो दरेक लघु गुरु बने छे जेमके 'कंई तुज'. पण चोपाईमां चतुष्कलोनी जगाए लदागालदा के दालगालदा आवे छे

ત્યારે ભાષાને અનુકૂળ હોય એ રીતે કાલમાત્રાઓ પુરાય છે. અને ચતુષ્કલ રચનામાં લગાલ અહીં પણ વિક્ષેપ કર્યા વિના રહેતો નથી. શામળની પંક્તિઓ નીચે ઉતારું છું તે ઉપરથી એ જણાશે.

સિધપુર, નામે, સુંદર, ગામ,
નારસિંહ રા; જાનું, નામ,
વસે એક બ્રા; હ્મણ મ્હા, મતી,
પતિવ્ર,તા તે,ને ઘેર, સતી.

આનાં ષટ્કલો નીચે પ્રમાણે પુરાશે.

સિધપુર]	નામે –,	સુંદર,	ગામ –, –
દાદા]	દાદાદા,	દાદાદા,	દાદાદા, દા
નાર]	સિંહ રા,	જાનું–,	નામ –, –
દાદા]	દાદાદા,	દાદાદા,	દાદાદા, દા
વસે]	એક બ્રા,	હ્મણ મ્હા –,	મતી –, –
દાદા]	દાદાદા,	દાદાદા,	દાદાદા, દા
પતિવ્ર]	તાતે –,	ને ઘેર,	સતી –, –
દાદા]	દાદાદા,	દાદાદા,	દાદાદા, દા

મૂળના દાલગાલદા કે લદાગાલદા સંધિઓ સિવાયના બધા જ સંધિઓ એના એ જ રહ્યા છે, અને આપણે આગળ જોઈ ગયા તે જ યોજના પ્રમાણે અક્ષરો કાલમાત્રાને પૂરે છે. 'નારસિંહરા' ને બદલે 'અચલસિંહરા' હોત તો 'અચ' લઘુ જ રહી બાકીનો લઘુ લ ગુરુ બની ત્યાં ચારમાત્રાનો થાત

અર્થાત્ લલલલનું લલગા–બનત અને તેમ જ એ 'અ͞ચલ' ગાલલ પણ બની શકે. 'પતિવ્ર, તાતે –' એ ષટ્કલો ઉચ્ચારમાં સુન્દર લાગતાં નથી. તેનું કારણ અહીં શબ્દ-ભંગ કુરૂપ થાય છે તે છે, અને કંઈક અંશે 'પતિવ્ર' જગણ છે એ પણ છે. એને

'પ͞તી] વ્રતાતે, નેઘેર', એમ કરીને સુધારી શકીએ. એમ સુધારવાની સગવડ છે કારણ કે 'તાતે' પછી એક દ્વિકલ અનક્ષર રહેલું હતું તે પુરાઈને, 'નેઘેર' ચતુષ્કલ અવિક્ષિપ્ત રહી શકે છે; પણ એમ દર વખત ન પણ બને. દાખલા તરીકે

ઊનાળે ઊંડાં જળ જાય
નદી સરોવર જળ સૂકાય

આ પંક્તિઓમાં પંક્તિ બીજીમાં 'નદીસ રો͞વર' એમ જ કરવું પડે છે. 'નદીસ' લગાલ સુંદર નથી પણ પહેલું ચતુષ્કલ 'નદી' કરીએ તો પછી 'સરોવર'

शब्द पछीना षट्कल माटे अगवड भरेलो नीवडे छे, जो के ए पण 'सरोँवर' एम करीने चलावी शकाय. वक्तव्य ए छे के कोई वार चतुष्कलोने षट्कलोमां वहेंचतां शब्दभंग तरफ ध्यान आपवुं पडे छे. चतुष्कल करतां षट्कल रचना विलंबित होवाथी शब्दभंग वधारे कुरूप लागे छे एम हुं मानुं छुं.

अक्षरचतुष्कलो षट्कलोमां पडतां मात्रानो अवकाश वधे छे अने तेथी कोई कोई वार कवि ए अवकाशने अक्षरमात्राथी अथवा कोई तानपूरकथी पण पूरे छे. अने त्यारे ए त्रिताली चोपाई, मात्रामेळचोपाईनां चतुष्कलोमां समावी शकाय नहीं. नरसिंहरावनी नीचेनी पंक्तिओ त्रिताली चोपाईनी छे:

एवुं राणीनुं सौंदर्यपूर, एवो प्रेम एनो भरपूर
एवुं], राणीनुं सौंदर्य पूर – –
दादा] दादादा दादादा दादादा दा
एवो] प्रेम ए नोभर पूर – –
दादा] दादा दा दादादा दादादा दा

त्रिताली चोपाईमां शब्दो बराबर बेसी रहे छे. पण अहींना षट्कल संधिओ 'राणीनुं' 'सौंदर्य' 'प्रेम ए' चतुष्कलोमां ठांसीने भरतां शब्दोच्चार कठोर थाय छे:

एवुं, राणिनुं, सौंदॅर्य, पूर,
एवो, प्रेम एँ,नो भर,पूर

कर्णकठोर लागे छे, अने छतां आ षट्कल रचना पण रहे छे चोपाई, अने एने चोपाई गणवामां एक सगवड पण छे.

आ चोपाईनी पेठे ज चंद्रावळा पण षट्कल तालमां गवाय छे — तेनी रचना आखी चतुष्कलनी छे छतां. आ चतुष्कल चोपाई सप्तकलमां पण ऊतरी शके छे, अने त्यारे पण मूळ चतुष्कलो ज विशेष मात्राओ लई सप्तकलो रचे छे.

मूळ चतुष्कल, तेनो षट्कल, अने सप्तकल विस्तार सहेलाईथी सरखावी शकाय माटे एक जुदी ज पंक्ति लई त्रणेयनी उत्थापनिका नीचे आपुं छुं:

चाल्यो, श्याम र,जनिमां, चाल्यो
मार्ग, ज्योति अ,नुपनो, झाल्यो.

षट्कल :

चाल्यो] श्यामर; जनिमां – ; चाल्यो – ; –
दादा] दादादा; दादादा; दादादा;
मार्ग;] ज्योतिश; नृपनो –; झाल्यो –; –
दादा;] दादादा; दादादा; दादादा;

सप्तकल :

चाल्यो] श्या⌣मर; जनि⌣मां –; चा⌣ल्यो –; – ⌣
दादा] दाल दादा; दाल दादा; दाल दादा; दाॅल
मार्ग] ज्यो ⌣ तिश; नृप⌣नो –; झा⌣ल्यो –; – ⌣
दादा] दाल दादा; दालदादा; दालदादा; दाल

अहीं सप्तकलनो विस्तार षट्कल विस्तारने बहु ज मळतो छे. षट्कलो चालु थाय छे त्यांथी षट्कलनुं पहेलुं द्विकल अहीं त्रिकल बने छे एटलो ज फेर पडे छे. षट्कलनां बाकीनां बे द्विकलो एम ते एम रहे छे. चतुष्कलोनी साथे सरखावीने बोलवुं होय तो एम केहवाय के ज्यांथी सप्तकलो शरू थाय त्यां दरेक चतुष्कलनी पहेली द्विकल त्रिकल बने छे, अने बीजी द्विकल चतुष्कल बने छे.

चोपाईनी पेठे दोहरो पण षट्कलमां अने सप्तकलमां गवाय छे, अने त्यारे मूळ चतुष्कलोनो विस्तार उपर जणाव्युं ते ज प्रमाणे थाय छे. नरसिंहरावे 'महाभिनिष्क्रमण' काव्यना प्रारंभमां 'वैदर्भी वनमां वलवले' ए चालनी देशीमां थोडी कडीओ आपी छे. एमांनी केटलीक कडीओ दोहरानी छे :

नाथ समीप सूँती हती, मृदु शय्यामां जेह;
अर्ध ऊठीँ त्यां राणीँए, तजीँ प्रावरणे देह.

आ शुद्ध मात्रामेळ रचनानो दोहरो छे, अने नरसिंहरावे तेने प्रेमानन्दनी वैदर्भी वाळी देशीमां गावा लखेलो छे. आ देशी केटलाकने मते षट्कलनी छे, केटलाकने मते सप्तकलनी छे. आपणे बन्ने रीते जोईए. आ देशी गवाय छे ते रीते हुं नीचे अक्षर संधिओ मूकुं छुं.

नाथ स, मीप सू, ती हती, – मृदु श, य्यामां –, जे –⌣ह,
दादा दा, दादादा, दा दादा, दा दा दा, दादा दा, दादा दा,
अर्ध ऊ, ठीत्यां –, राणीए, – तजि प्रा, वरणे –, दे – ⌣ह, नाथ०
दादादा, दादा दा, दादादा, दा दा दा, दादादा, दादा दा

कुल छ षट्कलनी रचना बने छे. आनी विशेषता ए छे के दोहराना पहेला यतिखंडनुं दालदा आवी गया पछी एनो छेल्लो अक्षर पछीना एक द्विकल जेटलो लंबाय छे. चोकसाई खातर ध्यान दोरवानुं के 'मृदु' अने 'तजि' बन्नेमां लघुओ लघु ज बोलाय छे, अने अकेकुं द्विकल ज पूरे छे. एने वधारे सादी रीते नीचे प्रमाणे करी शकाय जो के ए एटलुं सुन्दर नथी लागतुं.

. . . . तीहृती, – मृदु, शय्यामां, ...

पण ए पछीना दलमां एम करवुं फावतुं नथी. एम करवा जतां आम थाय:

. . . . राणीए, — तजी, प्रावरणे . . .

दादादा

'प्रावरणे' शब्द आखो एक षट्कलमां बेसाडतां शोभतो नथी. अने आम करवाथी मूळ चतुष्कलो भांगे छे.

हवे ए ज दोहरानां चतुष्कलोनो सप्तकलोमां विनियोग करी जोईए.

ना⌣वस, मी⌣पसू, ती⌣हृती,– ⌣मृदुश, य्या⌣मां –, जे⌣⌣–⌣ह,
अ⌣पंऊ, ठी⌣त्यां –, रा⌣णीए,– ⌣तजिप्रा, वर⌣णे –, दे⌣⌣–⌣ह.

दालदादा, दालदा दा, दालदादा,दाल दादा, दालदादा, दालदादा

आ तालान्तरव्यापारनी प्रक्रिया टूंकमां कहेवी होय तो एम कहेवाय के दरेक चतुष्कलना पहेला द्विकलने त्रिकल करवो अने बीजा द्विकलने चतुष्कल करवो. 'मृदु' 'तजि' ए चारेय लघु ज रहे छे ए ध्यानमां राखवुं जोईए.

आपणे आगळ जे अनेक चतुष्कल रचनाओ जोईशुं तेमां घणी आ प्रमाणे तालान्तर करे छे—मुख्यत्वे षट्कलमां जाय छे. आ प्रमाणे चतुष्कलो षट्कल अने सप्तकलमां जतां जोयां छे पण पंचकलमां जवानां दृष्टान्तो जोयां नथी.

देशीओमां एक विशेष लक्षण ए छे के तेमां एक ज कडीमां क्वचित् अमुक स्थाने ताल बदलाय छे, अने ते अमुक सुधी चालीने, पछी पाछो मूळ ताल आवे छे. आ प्रकरणमां आपणे प्रेमानन्दनी दाणलीलानी जे गरबी जोई तेमां आवती आंतरानी लांबी पंक्तिओ अमुक सुधी चतुष्कलमां पण गवाय छे. हुं न्यासथी ते स्पष्ट करुं.

ऊंची, ने अल; बे⌣ल, डी रे; मुखे घ,णुं गुं; मा –, –⌣न;
जोबनि, यानुं; जोर ज, थावे:

ऊता—; रुं अभि; मान घू; तारी—;
घूमटा; वाळी—; रे—आं; ज्या विना;
आंखडी; काळी—; रे— —

अहीं उपर जणाव्या प्रमाणे 'ऊंची. . . जणावे' एटलो भाग त्वरित चतुष्कलोमां गवाय छे, अने पछी 'ऊतारुं'थी पाछो षट्कल ताल चाले छे. आगळ जोईशुं के धीरानी प्रसिद्ध काफीओमां पण आंतरानी दोढ पंक्ति त्वरित चतुष्कलमां चाले छे, अने पछी रचना चालु सप्तकलोमां गवाय छे.

देशीओमां अने पदोमां संगीतनी असरने लीधे एक बीजुं बहार पडतुं लक्षण तेमां ए होय छे के मात्रामेळ छंदोना जेवी सम कडीबद्ध पंक्तिओ तेमां होती नथी. तेमां बे प्रकारनी असमता जणाय छे. दरेक पंक्तिमां संधिसंख्या एक सरखी होती नथी, एटले के पंक्तिओ लांबी टूंकी होय छे. अने कडी बे च पंक्तिनी के समसंख्य पंक्तिनी होवी जोईए एवो नियम पण रहेतो नथी. पंक्तिनी लंबाईनुं अने पंक्तिनी संख्यानुं नियामक संगीत बने छे. संगीतना आरोह अवरोह, वळांक, के सरखापणुं बतावववाना चिह्न तरीके घणी वार प्रास जुदी जुदी जगाए आवे छे. ते उपरांत शोभा तरीके तो आवे ज छे. एक दाखलो लईए.

अण तेडयां जातां रे नंदने आंगणे,
वण कराव्यां करतां घरनां काम जो;
एवे रे मिषे जई मळतां मावने,
पलके पलके करती हुं परणाम जो.
ओधवजी संदेशो कहेजो शामने — ध्रुव.

बृ० का० दो० १, पृ. ७७६

रचना स्पष्ट रीते प्लवंगमनी छे. ध्रुव साथे कडी पांच पंक्तिनी थई. अने प्रासो प्रारंभथी नजीक नजीकनी बब्बे पंक्तिए आववाने बदले बीजी अने चोथीमां आव्या. अने प्रास पछी 'जो' तानपूरक आव्यो. ए प्रास अने तानपूरक, ए बे पंक्तिओनी संगीतगत रचनासमानता दर्शावे छे. एथी वधारे अटपटो दाखलो लईए: पंक्तिओ उतारतां ज हुं अष्टकलोनां अर्धविरामो करुं छुं:

मोंरुं] मन मोह्युं—; वांसलडीने; शब्दे कानड; का—ळा
हुं तो;] घेली थई—; मारा घरमां; नथीं गमतुं म्हारां; वा—ला—
तुज;] अवर उपर ए; वाजे छे

मुणि;] अंतर मारुं; दाझे छे
ऍनो ;] शब्द बगनमां; गाजे छे
म्हारुं;] मन मोह्यु–; वांसलडीने; शब्दे कानड; का–ळा–

दयारामरससुधा, पृ. ७

पहेली बे प्रासबद्ध पंक्तिओमां संगीतगत समानता छे. ते पछी बे प्रासबद्ध टूंकी पंक्तिओमां पण समानता छे. ए पछीनी पंक्तिना मध्यमां आवतो 'गाजे छे'नो प्रास शोभानो छे, जो के अर्थदृष्टिए 'वाजे छे,' 'दाझे छे'ना अर्थने पुष्ट करे छे, एटले के त्यां ए प्रास अर्थने पुष्ट करवा आवे छे. आ प्रासवैविध्य लगभग असंख्य प्रकारनुं छे. एनुं वैविध्य बताववा अेक बीजो दाखलो लउं : ए पण दयारामनुं ज पद छे.

कामण] दीसे छे अल; बेला तारी; आं⌣खमां–; रे–
भोळुं;] भा⌣खमां–; रे–कामण;
मंद हसीने; चितडुं चोर्युं;
कुटिल कटाक्षे; काळज कोर्युं;

अदपडियाळी; आंखे झीणुं; आं⌣खमां–; रे–कामण;

आनी प्रासरचना गया पद साथे सरखाववा जेवी छे. पहेली पंक्तिनो उत्तरार्ध अने पछी तेनी साथे दोडाती अरधी पंक्तिमां संगीतनी समानता छे, अने बन्ने वच्चे प्रास पण छे. पछीनी बे टूंकी पंक्तिओ प्रासबद्ध छे, अने ते एक संगीतनुं संपुट रचे छे. ए पछीनी पंक्तिने पेली बे टूंकी पंक्तिओ साथे अर्थनो के संगीतनो संबंध नथी तो प्रास पण नथी. बन्ने दष्टिए ते प्रथमनी पंक्तिओ साथे जोडायेली छे, तो एनी साथे एने प्रास छे. आम मूळ मात्रामेळ रचनामां नहोती एवीन वी ज खूबीओ आ देशीओ अने पदोमां आवे छे अने ए एटली बधी सूक्ष्म अने संख्याबंध छे के तेनुं मात्र दिग्दर्शन ज करावी शकाय. आ छेल्ली बे रचनाओ देशी करतां पद तरीके वधारे ओळखाय छे. अत्यारे तो आवी रचनाने पद ज कहे छे.

मात्रामेळ रचनाओ साथे सरखावतां देशीओ अने पदोमां अनेक छूटो के शिथिलताओ छे, (जो के ते स्वच्छंद नथी) अने तेथी कोई पण देशीना संधिओ शोधवा माटे आखी देशीनुं वारंवार पठन करी तेनी आदर्श पंक्ति शोधी काढी पछी ते प्रमाणे तेनी उत्थापनिका करवी जोईए. दाखला तरीके प्रेमानन्दनी नीचेनी पंक्तिओ लईए :

म्हेते वजाड्यो शंख, समर्यां वनमाळी;
लागी हसवा चारे वर्ण, मांहोमांहे दे ताळी:
केसर तिलक विशाळ भाले कीधां छे;
कोईए नानां बाळ केडे लीधां छे.
कोई जोवा ठाली छाब अवळा ऊठे छे
कोई वहुवारु लजवाळ नणदी पूठे छे.

मात्र मात्राओ गणतां आ देशीना संधिओ हाथ आवशे नहीं, अने अजमायश माटे जुदा जुदा कल्पोने लेतां, साचा संधि शोधतां घणी वार लागशे, पण अनेक वार पाठ करतां आमां

केसर तिलक विशाळ भाले कीधां छे

ए पंक्ति आदर्शपंक्ति जणाशे. अने पछी बधी पंक्तिओनो न्यास ए प्रमाणे करतां मुश्केली नहीं जणाय. आ आदर्श पंक्ति लघु गुरुनां उच्चारणमां सरळ चाले छे अने तेमां बे ज जगाए प्लुतिनी मात्रा जणाशे-- नीचे प्रमाणे:

केसर, तिलक वि;शा॰ळ, भाले; कीधां, छे–;
कोइएं, नानां; बा॰ळ, केडे ; लीधां, छे–;

पंक्तिने अंते बे मात्रा प्लुतिनी आवे छे, ते, आपणे जोई गया तेम, बधा आवृत्तसंधि छंदोनी सामान्य खासियत छे. वचमां 'शा॰ळ' एम एक मात्रा प्लुतिनी आवे छे, ते अर्ध पंक्तिए आवती आ देशीनी एक भंगी छे. ए जगाए कविए गा॰ल संधि मूकशे छे अने क्यांक क्यांक ए स्थाने प्रास पण मेळव्यो छे. आनो संधि अलबत्त चतुष्कल अने अष्टकल छे, अने रचना रोळानी छे ए देखीतुं छे. आटलुं स्पष्ट थतां आपणे आखी देशीनो न्यास करी शकीशुं:

म्हेते व,जाड्यो; शं॰ख, समर्यां; वनमा,ळी
लाँगीँ;] हसवा, चारे; व॰र्ण, माँहोँमाँहेँ; दे ता,ळी–;
केसर, तिलक वि;शा॰ळ, भाले; कीधां, छे–;
कोइएं, नानां; बा॰ळ, केडे; लीधां, छे
कोँईँ;] जोवा, ठाली; छा॰ब, अवळा; ऊठे, छे
कोँईँ;] वहुवा रुलज; वा॰उ, नणदी; पूठे, छे

आमां क्यांई स्वच्छन्द नथी. बधा संधिओ बराबर चाल्या आवे छे. अने कोई कोई पंक्तिओमां आदिमां आवतां द्विकलो अने तेमां गुरुओने लघु करवा

पढे छे ते पंक्तिओनो वेग वधारे छे, महेतानी मश्करी करवा चढेली नागराणीओना उत्साहनो वेग बतावे छे. आम देशी अर्थने अनेक रीते पोषे छे, अने शोभावे छे.

आपणे जोई गया छीए के जातिओमां चतुष्कल रचनाओमां अष्टकल संधि क्यांक क्यांक आवे छे, तेम ज त्रिकल रचनाओमां क्यांक षट्कल संधिओ आवे छे; आपणे ए पण जोयुं के मूळ चतुष्कल रचना ज्यारे षट्कल देशी बने छे त्यारे तेना बधा ज कालमात्रा संधिओ त्रिकल विनाना केवळ षट्कलो दादादा बने छे. अर्थात् अहीं अर्धतालमात्रानो नहीं पण पूर्णतालमात्रानो संधि पद्यरचनामां वपरायो छे. अहीं आपणे एवा दाखला मात्र अष्टकलना अने षट्कलना जोया. ते सिवायना दस मात्राना झप तालना अने चौद मात्राना दीपचंदीना एवा संधिओ पद्यरचनामां आवे छे खरा? आनो जवाब मात्र 'हा' के 'ना'थी आपी शकाय एवो नथी. हुं एक दाखलाथी आ वस्तुस्थितिनुं पृथक्करण करवा प्रयत्न करुं छुं. नीचेनी पंक्तिओ घणी ब्राह्मण नातोमां जनोईने प्रसंगे स्त्रीओ गाय छे.

बडवा काने कडी हाथे वींटी हीरे जडी रे
बडवो जै बेठो छे दादाजीने खोळे चडी रे

आ गीत नीचे प्रमाणे दशमात्रामां गवाय छे.

बडवा –] काने कडी –; हाथे वींटी–; हीरे जडी–; रे –
दादा दा] दादा दादा दा; दादा दादादा; दादा दादादा; दादा
बडवो –] जै बेठो छे–; दादा जीने –; खोळे चडी–; रे –
दादादा;] दा दादा दादा; दादा दादादा; दादा दादादा; दादा

प्रथम दादादा पछी दशकलो शरू थाय छे. दरेक दशकलमां दादा अने दादादा एवा विभागो जणाई आवे छे. प्रथम दादादा बाद करतां, पछी त्रण दशकलो आवे छे, अने अंते आवतो 'रे' दादा बनी पछीनी पंक्तिना दादादा साथे जोडाई आखुं दशकल रची ले छे. वळी पिंगलना पंच मात्रक दालदा संधिमां आपणे जोयेलुं के तेमां दालदा (। ०) ए प्रमाणे पहेलो मुख्य अने बीजो गौण ताल छे. ए तालोथी पांच मात्राओ ३+२ एम विभक्त थती हती. उपरना गीतमां बराबर तेनी ज बमणी मात्राओ ४+६ एम ऊलटे क्रमे विभक्त थयेली देखाय छे. वळी दशकलोमां अंत्य बे मात्रा दरेक दशकलमां अनक्षर छे. एम घणी रीते आ रचना पिंगलनी संधिविन्यासपद्धतिने मळती, एनी

ज खूबीवाळी छे. छतां हुं आवी रचनाओने पिंगलमां मूकवाने बदले पिंगलना अने संगीतना संयुक्त सीमाडानी गणुं. एम करवानुं मुख्य कारण ए छे के पंक्तिना अक्षरो जोतां तेमां दत्राकलनी कल्पना थई शकशे नहीं. गमे तेटली वार रटण करतां पण ते दत्राकलोमां पडशे नहीं. एटले एने शुद्ध पिंगलनी गणतां वांधो आवे छे. अने तेम छतां तेनी भंगीओ एवी छे के एक वार गवाया पछी तेने पूर्णतालसंधिमां मूकतां तेनी खूबीओ जाणी शकाय. एटले आवी रचनाओनां केटलांक दृष्टान्तो हुं देशीओ अने पदोनुं निरूपण पूरुं थई रह्ये एक परिशिष्टमां मूकीश.

१४

समसंख्यसंधिबद्ध पंक्तिओनी देशीओ

गया प्रकरणमां आपणे जोयुं के संगीतथी जातिछंदोनां सामान्य लक्षणोमां अनेक फेरफारो थाय छे. तेमां एक फेरफार ए के रचनानी पंक्तिओमां आवता संधिओनी संख्या बधी पंक्तिमां एक सरखी रहेती नथी. आ दृष्टिए जोतां जे पद्यरचनाओनी पंक्तिओमां संधिओनी संख्या एक सरखी रहेती होय ते रचनाओ मात्रामेळ छंदोनी नजीकमां नजीकनी गणाय. एटले आ प्रकरणमां जे रचनाओमां पंक्तिमां आवता संधिओनी संख्या एक सरखी ज होय एवी रचनाओ लईशुं. आ रचनाओ घणी खरी बे प्रासबद्ध पंक्तिओनी कडीवाळी हशे. पण तेमां अपवाद पण आवशे. कारण के कोई कोई रचनाओमां बे पंक्तिना प्रासो नथी होता, एने बदले एमां एक आंतर प्रास होय छे, जे एक पंक्तिनुं व्यक्तित्व, स्वतंत्रपणुं बतावतो होय छे.

अहीं पण रचनाओनुं निरूपण हुं जातिछंदोना प्रकारोने क्रमे ज करीश. सौथी पहेलां आपणे चतुष्कल रचनाओ जोईए अने तेमां प्रथम षोडशी रचनाओ जोईए. चोपाई ज चतुष्कल रचनाओमां सौथी टूंकी छे. कोई कोई एथी टूंकी रचनाओ मळे छे पण ते अंतखंडित चोपाईनी ज देशीओ छे. ए टूंकमां प्रथम जोई जईए.

ढाल ऊलालु

जीभ सरि समुखि होई
कोडि वरस कवि जोई

जैन गुर्जर कविओ १, पृ. ५७

दादा दादा दागा एवी आनी उत्थापनिका थाय. अर्थात् चोथुं चतुष्कल अहीं अनक्षर रह्युं छे. आ ऊलालु जेवी ज आंदोलनी रचना पण छे:

थाई थुमणि थोर
दोलई दीहर दोर,
कंचण चूडी ए
रणकइ रूयडी ए.

आपणा कविओ, पृ. ३३४

अहीं प्रथम बे पंक्तिओ दादा दादा गाल छे. अने ते पछीनी बे दादा दादा $\frac{\text{ए}}{\text{गा}}$ छे; एटले त्रीजुं चतुष्कल पण एक मात्रा जेटलुं खंडित थयुं छे, अने द्वितीयार्धमां तो त्रीजुं चतुष्कल पण मात्र एक तानपूरकथी पुरायुं छे. आ रचनानो वपराट विरल छे. नरसिंह चातुरीमां ढाळना मुख तरीके बे पंक्तिओ वापरे छे ते उपरनाने मळतो ज छे.

आजनी, रजनी, जी : सांभळ, सजनी, जी

नरसिंह महेता कृत काव्यसंग्रह, पृ. १२०

आ रचना चतुष्कलमां बेसी रहे छे पण कदाच षट्कलोमां गवाती हशे.

आजनी; रजनी; जी– –; सांभळ; सजनी; जी– –; ए प्रमाणे.

जूनां काव्योमां शलोका आवे छे, तेनो अक्षरदेह आ चोपाई जेवो ज जणाय छे. जेम के अभराम कुलिना शलोका :

सरस्वती माता ब्रह्मानी बेटी,
बुध्यनी दाता विद्यानी पेटी
गणपत देवना चर्ण आराधुं
मान मागीने विद्या हुं साधुं. १

मोटा सूबानां करूं वखाण;
समजी लेजो चतुर सुजाण.
दल्लीनो बादशाह मेहमद शाह जीवो;
नवखंडमां प्रगटयो छे दीवो. २

सौमां शिरोमण गुजरात थापी.
हेमदखानने सुबागरी आपी.
राज भोगवे करे कलोल
शेहेरमां बीत्या मसवाडा सोळ. ३

गुजराती मुगला चतुर सुजाण
त्रण्ये भाईनां करूं वखाण
वडा ते वीरो सुजातखान
तेने पादशाहनां अति घणां मान. ४

बुद्धिप्रकाश, २३, पृ. १९४ सने १८७६

घणी वार देशी कोई मात्रामेळ रचनानी घणी ज नजीक चाले छे अने त्यारे ते ते रचनानी देशी तरीके ओळखाय छे. आ संदर्भमां तोटकनी चाल एनो सारो दाखलो छे. तोटक जो के मूळ लगात्मक छे, पण मेळनी दृष्टिए षोडशी जातिरचना छे. तेना उपरनी देशी तेने घणी मळती छे :

पुरुषोत्तम पंकजनेत्र नमो,
परिपूरण ब्रह्म पवित्र नमो;
रवि कोटिकलावर रूप नमो,
भगवान सुरासुर भूप नमो.

बृ. का. दो. १, पृ. ५५१

अहीं 'नमो'नो ध्रुवखंड अने ते पहेलां आवतो प्रास ए देशीनां लक्षणो छे. जो के ते उपरांत ते देशीमां गवाती तो हशे ज. उपरनी रचना शुद्ध तोटक छे. अने गावामां पण शुद्ध चतुष्कलोमां गाई शकाय एवी छे. पण आपणे आगळ जोईए :

भणे इन्द्र मुनीन्द्र उपेन्द्र नमो,
करुणावर श्री हरिचंद नमो;
सच्चिदानंद श्री अविनाशी नमो,
कमळावर वैकुंठवासी नमो.

एजन.

तोटक जेवी लागती पण आ रचना चतुष्कल रचनाथी दूर गयेली छे. अने तेनो अक्षरविन्यास जोतां ते षट्कलोमां गवाती हशे एम जणाय छे. जरा विलंबित लये तोटकना प्रवाहमां गातां ज स्वाभाविक रीते षट्कलोना प्रवाहमां पडी जवाशे. षट्कलोमां तेनो न्यास नीचे प्रमाणे थाय :

भणे] इन्द्र मु;नीन्द्रउ; पेन्द्रन; मो
करु;] णावर; श्री अवि;नाशी न;मो
सच्चि] दानन्द; श्री अवि; नाशी न; मो
कम] ळावर; वैकुंठ; वासीन; मो

आ पंक्तिओ शुद्ध तोटकमां पठी ज नहीं शकाय. अने छतां एने तोटक साथे संबंध छे ए स्पष्ट छे. खरुं तो एम बने छे के तोटकनो मूळ ५्यक्षर संधि अहीं षट्कल बनतां, मनहर जेवी एक नवी संख्यामेळ रचना बने छे; मनहरमां आठ मात्रानो चतुरक्षर संधि आवे छे, अहीं छ मात्रानो

त्र्यक्षर संधि आवे छे. बन्नेमां पछी लघुगुरुनो भेद रहेतो नथी, दरेक अक्षर द्विमात्रक बने छे. डिंगलमां जोयेलो लहचाल (गत पृ. ४८६, ५०९–१०) आवो त्र्यक्षर रचना छे. उपर जेनां तोटकनी चालनां अवतरणो आवी गयां ते ज कवि आगळ जतां तोटकनुं नाम आप्या विना गोडी गुर्जरीनी देशी आपे छे ते पण तोटकनी देशी ज जणाय छे.

राग गोडी गुर्जरी

वर] आपी व;ळया चतु;रानन; जो,
पछे] भूपनुं; फूल्युं–; तनमन; जो;

एजन, पृ. ५५९

आ पण उपर बताव्या प्रमाणेनां षट्कलोमां चालतुं मालूम पडशे. अहीं सर्वलघु चतुष्कल 'तनमन'मां पहेला बे लघु पठाशे अने म अने न गुरु पठाशे. आ हुं मात्र अनुमानथी कहेतो नथी. अमारी (प्रश्नोरा नागर ब्राह्मणनी)नातमां आवी तोटकनी चाल षट्कलोमां गवाती में सांभळी छे. तेमांथी थोडी पंक्तिओ उतारुं:

दरबार तज्या दुरयोधनना,
मधुसूदन आदर मान विना,

विदुरनो भाव, लखनार मडडाकर नागर पृ. १५

आ शुद्ध तोटक छे पण ते षट्कलोमां गवाय छे. दरेक ललगा चतुष्कलना लघुओ, गवातां गुरु बने छे अने ताल ललगाना गा उपर आवे छे. गागागा ए रीते. अहीं सळंग ललगा छे पण ए षट्कल छे तेथी कवि बे लघु मूकवानी दरकार करतो नथी. आनी पछीनी पंक्तिओमां व ए प्रतीत थशे:

जळहळे गोख आकाशथी जाळियां,
सुंदिर मंदिर मेडीने माळियां,
नवरंगी चित्रामण जे नाळियां,
जडया काच लीला ते भोंये डाळिया

एजन, पृ. १६

आमां बे लघुवाळो ललगा संधि क्यांक ज देखाशे. 'जळहळे'मां 'जळ' लघु पठाय छे, अने 'ह' अने 'ळे' बन्ने गुरु पठाय छे. घणाखरा त्र्यक्षर संधिओ छे, अने तोटकनी षट्कल चाले गवाय छे. क्यांक तो त्र्यक्षरने बदले चतुरक्षर अने द्व्यक्षर संधिओ पण आवे छे:

भिक्षुकोनी पेठे विदुर पेट भरे,
ते कृष्ण तणी नोकरी शूं करे?

एजन, पृ. २६

पंक्तिओना षट्कल संधिओ नीचे प्रमाणे पडे छे:

भिक्षुको, नी पेठे, वीदुर पे,ट भरे
दादादा, दादादा, दादादा, दादादा
ते–कृ, ष्ण तणी, नोकरी, शूं करे
दादादा, दादादा, दादादा, दादादा

'वीदुरपे' एमां चार अक्षरे षट्कल थाय छे, अने 'ते–कृ' मां बे अक्षरे षट्कल थाय छे. आगळ उतारेल गोडी गुर्जरीनी बधी अनियमितता आमां आवे छे. काठुं तोटकनुं छे.

आ ज षट्कलविधान गालल संधिनां आवर्तनोवाळी रचनामां पण बने छे. न्हानालालनी 'विलासनी शोभा' काव्यमां आवती गीतरचना आ प्रकारनी छे. तेनी पहेली चार पंक्ति षट्कलोमां गवाय छे ए रीते उतारुं छुं:
ओ सखि!, ओ मुज, देजि प,धारो–, आ वन,नो निर,खो महि,मा––
तेज त,णां भरि,यां सुस, रोवर, तेजस, त्यां कम,ळो उघ,ड्यां––
तेजने, मांडव, तेजनां, पुष्पो–,तेजनुं, मंदिर, रस नुं व,डूं– –
तेजनी, वेलोनु, लावेनु, लोनिज, अन्तर, म्हालंध, झोलेच,ढ्युं––

केटलांक काव्यो, भाग० २, पृ. ५३

आ काव्य षट्कलोमां उपर प्रमाणे गवाय छे.' आ संबंधी कवि पोते कहे छे: "गुजराती पिंगळमां बावीश अक्षरना अक्षरमेळ बावीसा सवैया जाणीता छे, ए आ ढाळनुं शुद्ध बंधारण मानी शकाय. ते सवैयाने मात्रामेळ कर्ये, तेमां ये क्य्हांक क्य्हांक मात्राओ वधार्ये पण आ ढाळनुं रूप साधी शकाशे."

एजन, टीका. पृ. ११

अहीं कहेलो बावीसो सवैयो ते दलपतपिंगलनो मदिरा छे:

| | | | | | | |
गालल गालल गालल गालल गालल गालल गालल गा अक्षर २२ उपरनी गरबी बावीसो सवैयो छे एम कह्युं छे ते यथार्थ छे. पण ते शुद्ध अक्षरमेळ होय तो तेने मात्रामेळ कर्या पछी पण तेमां क्यांक क्यांक मात्राओ वधारी न शकाय ए सिद्धान्त कविना ध्यानमां नथी. खरी रीते उपरनी रचना मूळ चतुष्कलनी पण देशी थतां षट्कलमां पडे छे. अने दरेक मूळ चतुष्कल षट्कल

थवाने लीधे तेमां मात्रा वधारी शकाय छे. पहेली बे पंक्तिमां सर्वत्र चतुष्कलो ज छे, एक 'धारो' सिवाय बधां गालल पण छे पण पछी त्रीजी पंक्तिथी ज मूळ गाललमां मात्राओ वधवा मांडे छे, अने आखी गरबीमां पण पछी मात्रा वधीने थयेलां षट्कलो ज आवे छे.

आ देशीने अंगे थतो चतुष्कलनो विकार के विस्तार हिंदी पिंगल 'छन्दःप्रभाकर'ना ध्यानमां पण छे. सवैयाना लगात्मक छन्दो आपतां मत्तगयंद (इन्द्रविजय)नुं स्वरूप आपी ते लखे छेः

"सवैयाओंमें अर्थात् मदिरा, चकोर, मत्तगयन्द, सुमुखी, किरीट, प्रभृति वृत्तोंमें बहुधा गुरुलघुका क्रम ठीक न मिलनेके कारण विद्यार्थियोंको भ्रम होता है कि यथार्थमें यह सवैया है वा कोई विशेष मात्रिक छंद है। इसका एक उदाहरण नीचे देते हैं यथा—

आई भले हौं चली सखि यानमें पाई गोविंदके रूपकी झांकी
यह भगणके लिये इस प्रकार पढ़ा जायगा।
आइ भले हु चली सखि यानम पाइगु विंदक रूपकि झांकी

छन्दःप्रभाकर, पृ. २०३

'प्रभाकर' अहीं भाषा पर अत्याचार करीने पण शब्दोने मूळ गालल रूपमां ठांसवा मागे छे. पण एम करवानी जरूर नथी. खरी वात तो ए छे के ए गालल रूप षट्कल बन्युं छे अने तेथी वधारे मात्राने अवकाश मळे छे. आथी गाललनुं जे नवुं स्वरूप बने छे तेनो प्रख्यात दाखलो गंगनुं नीचेनुं काव्य छे.

ताराकी ज्योतमें चन्द्र छूपे नहि
सूर छूपे नहि बादर छायो।
चंचल नारीको नैन छूपे नहि
दाता छूपे नहि मांगन आयो।
रन चढ्यो रजपूत छूपे नहि
प्रीत छूपे नहि पीठ दिखायो।
कहे कवि गंग सुणो शाह अक्बर
कर्म छूपे न भभूत लगायो।

आमां व्यक्षर संधिनां बीजां केटलांक रूपो मळी रहेशे. 'ताराकी,' 'नारीको' गागागा छे. 'रन च' ललल छे. 'ज्योतमें,' 'नैन छू' गालगा छे. पठन करतां मालूम पडशे के आमां मूळ गालल रूप नष्ट थई तेनी जगाए त्र्यक्षर

दादादा बीज आवेलुं छे. रचना बधी रीते मनहर जेवी थई गई छे. फेर मात्र एटलो के मनहर चतुरक्षर संधिनी रचना छे, अने उपरनी त्र्यक्षर संधिनी रचना छे. बाकी बन्नेमां चारेय पंक्तिओमां सळंग प्रास छे, (हिंदी पिंगल प्रमाणे सवैयामां चारेय पंक्तिमां सळंग प्रास जोईए) बन्नेमां दरेक पंक्तिमां संधिनां सात आवर्तनो आव्या पछी आठमुं खंडित थाय छे. आ प्रमाणे आ मूळ चतुष्कलनुं षट्कलीकरण घणां नवां रूपोनुं निष्पादक बने छे.

आ रीते ललगा अने गालल बंनेमांथी षट्कल त्र्यक्षर संधि निष्पन्न थाय छे. पण बंनेमां एक फेर रही जाय छे ते ए के ललगामांथी निष्पन्न थता संधिमां छेल्ला गा उपर ताल आवे अने गाललमांथी निष्पन्न थता संधिमां पहेला गा उपर ताल आवे. अहीं आ ललगा अने गालल संधिनी देशीओनुं प्रकरण पूरुं करी मूळ षोडशी जातिओनी देशीना ढाळो उपर जईए.

आपणा कविओनी घणी देशीओ चोपाईनी छे. कडवाना मुखबंधमां घणी वार चोपाईनी रचना आवे छे. 'कांदबरी'नी पंक्तिओ:

अति ऊंचुं ने शाखा प्रूढ जी
वनकलि ढांकि कोटर गूढजी.

अति] ऊंचुं ने; शाखा –; प्रूढ –; जी
वनकलि;] ढांकि–; कोटर; गूढ –; जी

आ प्रमाणे षट्कलो आवे. पण गावामां नीचे प्रमाणे अक्षरविन्यास कराय छे, अने ए वधारे खूबीवाळो छे.

अति] ऊंचुंने; शाखा –; – प्रूढ; जी
वनकलि;] ढांकी –; कोटर; – गूढ; जी

अहीं त्रीजा षट्कलनो ताल अनक्षर मात्रा उपर पडे छे अने गावामां ए भंगी सुंदर लागे छे. घणी देशीओमां आपणे आ खूबी जोईए छीए.

हवे एक बीजो प्रकार लईए:

राग गरबी

शोभा शी कहुं रे रूडी,
वरणन करतां जाय चित्त बूडी;
हरिवर जोया रे रंगमां,
मोहि हुं तो रसियाजीना अंगमां १

बृ. का. दो. १, पृ. ८०१

चतुष्कल तालनी ज रचना छे. न्यास नीचे प्रमाणे:

शोभा, शी कहुं; रे–, रूडी;
वरणन, करतां; जाँयचित, बूडी;
हरिवर, जोया; रे–, रँगमां;
हूं तो, रसिया; जीना; अँगमां;

देशीनी खासियत ए छे के तेमां विषम पंक्तिमां पंक्तिना अर्ध एटले एक अष्टकल पछी चार मात्रानो रे आवे छे.

न्हानालालनी गरबी

मुखदुख आवे रे–स्हेजो
मार्जोंना चरणकमलमां रहेजो

उपर प्रमाणे ज छे. न्हानालाले घणी जगाए ए रीते स्वामीनारायण संप्र-दायना ढाळोनो उपयोग कर्यो छे.

लग्नगीतनी नीचेनी पंक्तिओ पण आगाळी [illegible] चोपाईनी ज देशी छे.

एक झारा उपर झारी रे
ए तो कन्या थै अमारी रे

गावामां नीचे प्रमाणे संधिओ पडे छे:

एक, झारा; ऊपर, झॉरी रे;
एतो, कन्या; थै अ, मॉरी रे;

देशीओमां आम घणी वार गुरुओने टूंका करेला होय छे.

अहीं चोपाईनी देशीओ पूरी करी आपणे रोळानी देशीओ लईए:

पद राग गरबी

हरिजन साचा रे जे उरमां हींमत राखे;
विपते वरखी रे कदि दीन वचन नव भाखे. १
जगनुं सुखदुख रे माइक मिथ्या करी जाणे;
तनवन जातां रे अंतरमां शोक न आणे. २
पर उपकारी रे जन प्रेम नियममां पूरा;
देहिक दुखमां रे दाझे नहि साधू शूरा. ३

बृ. का. दो. ३, पृ. ६८१

कृति बहु ज सफाईवाळी छे. चतुष्कलो सुंदर रीते चाल्यां आवे छे. आ देशीनुं एक लक्षण ए छे के पहेलां बे चतुष्कलो पछी द्विकल रे आवे छे. रोळामां अगियारमी मात्राए यति आवती हती. अहीं रोळानी ९मी अने १०मी मात्रा 'रे' थी बने छे. आवी जरा फेरवाळी बीजी रचना लईए.

गरवा छंद

केशव कृपानिधान अरजी उरमां आणो;
भक्तप्रिय भगवान जीवदया मन जाणो. १
सेवकने सनमान, करिने सोंपो कामुं,
दास हुं ठरी दुकान नित्य लखुं निज नामुं. ६
रडता राजद्वार पंडित थइने पक्का;
देवडिए छडिदार सहि ले तेना धक्का. २३

बृ. का. दो. १, पृ. ७४६–४७

उपर जेवी सफाईवाळी अने जरा वधारे खूबीवाळी आ रचना छे. चतुष्कल विन्यासथी ए वधारे स्पष्ट थशे.

केशव, कृपानि, धा॒न, अरजी; उरमां, आणो;
भक्त, प्रिय भग; वा॒न, जीवद; यामन, जाणो;

बृ. का. दो. १, पृ. ७४६

त्रीजुं चतुष्कल सर्वत्र गा॒ल आवे छे, अने बन्ने पंक्तिओनो ए मध्यसंधि प्रासथी जोडायेलो छे. अने आगळ जोयेली

गरवा छंद

आज मने आनंद वाध्यो अती घणो मा;
गावा गरबाछंद बहुचर माततणो मा.
रसना जुग्म हजार ते रटने हार्यो मा;
ईशे अंश लगार लै मन्मथ मार्यो मा.

बृ. का. दो. २, पृ. ६८७–८८

आ पण उपर जेवी सुघड सुरेख रचना छे. फेर मात्र एटलो छे के आमां 'मा' शब्द ध्रुवखंड तरीके आवे छे.

आ बन्ने रचनाओ मूळ रोळाथी केवी रीते जुदी पडे छे ते जरा जोईए. रोळा अने आ रचना, बन्नेनो न्यास पासे पासे मूकीए.

रोळा : दादा दादा दाल'ल दादा दादा दादा
गरबो दादा दादा गा⌣ल' दादा दादा दादा

रोळाना त्रीजा चतुष्कलमां यतिने लीधे साधारण रीते दाल तो आवतुं हतुं अने ते पछी एक लघु आवी चतुष्कल पूरुं थतुं हतुं. अहीं ए यति आगळना दालनुं ज गा⌣ल करी आखुं चतुष्कल बनाव्युं, अने ए गालान्त खंडोनो एक मध्यप्रास बनाव्यो. पठन करी जोतां आ नवी भंगी आ ज रीते अस्तित्वमां आवी एम लागशे. पण आम थवाथी दादा दादा गाल एक यतिखंड बने छे अने ते दोहराना उत्तर यतिखंड जेवो ज देखाय छे. अने छतां एम नहीं कही शकाय के उपरना गरबा छंदमां पूर्व यतिखंड ए दोहरानो उत्तर यतिखंड छे.

हवे बीजी जातनी देशीओ लईए :

थाळ

कारेलां कडवां रे रूडी रसपोळी
हरि हेतें जमाडुं रे घींमां झबकोळी
अळवीने सूरण रे मेथीनी भाजी
कढीने कूरज रे तरत करी ताजी
राइनां अथाणां रे गंगाजळ झारी
प्रेमीजन कहे छे रे ए छे बहु सारी

बृ. का. दो. २, पृ. ६९७

चतुष्कलोनो न्यास नीचे प्रमाणे छे.

का] रेलां, कडवां; रे—, रूडी; रसपोळी
हरि;] हेतेंज, माडुं; रे–, घींमां, झबकोळी

अहीं पहेली बे मात्राओ निस्ताल छे, ते पछी चतुष्कलो चाले छे. बीजुं चतुष्कल पूरुं थया पछी एटले प्रारंभथी गणतां दस मात्रा थया पछी चार मात्रानो प्लुत 'रे' आवे छे, अने तेनुं स्थान नियत छे, तेथी ते देशीनुं लक्षण बने छे. क्वचित् आ 'रे' ओछी मात्रानो होय तो पण चाले—ज्यां सुधी एनुं स्थान नियत होय त्यां सुधी. जेम के

अवि]नाशी, आवो; रे–, जमवा; कृष्ण ह, रि
श्री;] धर्म भक्तिसुत; रे⌣ज, माडुं; प्रीत क, री

बीजी पंक्तिमां 'रे' त्रण मात्रानो छे, एटला अपवादथी देशीनुं लक्षण बदलाई जतुं नथी.

आनाथी जरा भिन्न दाखलो लईए:

राग गरबी

सती नारनुं साधन रे, के हरिवरने गमवा;
सती देह दमे छे रे, के रसिया संग रमवा. १
लगनी दृढ लागी रे, के श्यामळिया संगे;
सती रसवस थै छे रे, के रसियाने रंगे. ४

बृ. का. दो. २, पृ. ६३३

सती] नारनुं, साधन; रे-कें, हरिवर; ने गम,वा
सती;] देहद, मे छे; रे-कें, रसिया; संग रम,वा

एम चतुष्कलो पडी रहे छे. छतां रचना त्रिताली चोपाईनी पेठे षट्कलमां पण स्वाभाविक रीते पडी शके छे.

सती] नारनुं; साधन; रे–के; हरिवर; ने गम; वा
दादा दादादा दादादा; दादादा दादादा; दा दादा; दा

सती;] दे ह द; मेछे –; रे –के; रसिया–; संगरम; वा
दादा; दादादा; दादादा; दादादा; दा दादा; दादादा; दा

आ बन्नेमां गाई शकाय छे पण नीचेनी षट्कलोमां ज लेवाशे. हठथी चतुष्कलोमां नांखवा जतां शोभशे ज नहीं.

पद राग गरबी

व्हाले मोरली लीधी छे हाथ वजाडे छे घेरी रे;
आवी ऊभा छे जमुनाने तीर पीतांबर पेरी रे. ३
व्हाले पेर्या छे फुलडांना हार बांध्या छे बाजु रे;
एने ल्हेके छे कानो मांय कुंडलिया काजु रे. ४
व्हाले मृगलां पमाड्यां मोह वंसीने नादे रे;
हरि गाय छे सुंदर गीत मधुरा सादे रे. ५
हरिने हेते करीने हाथ झाल्यानो हेवा रे;
सखी ब्रह्मानंदनो नाथ रमवा जेवा रे. ६

बृ. का. दो. १, पृ. ७९१

उत्थापनिका:

व्हाले] मोरली; लीधीछे; हाथव; जाडेछे; घेरी –; रे
दा दा] दादादा दादादा दादादा दादादा दादादा दा

आवी] ऊभाछे; जमनाने; तीरपी; तांबर; पेरी –; रे
दादा] दादादा; दादादा; दादादा; दादादा दादादा; दा
हरिने] हेतेक; रीने –; हाथझा; ल्यानो –; हेवा –; रे
सखी] ब्रह्मा –; नंदनो; ना–थ; रम वा–; जेवा–; रे

अंते द्विकल 'रे' आवे छे, अने ते पछीनी पंक्तिना निस्ताल चतुष्कल साथे जोडाईने षट्कल बने छे ए देखीतुं छे. पण बीजी कदाच तरत ध्यानमां न आवे एवी खूबी ए छे के त्रीजा षट्कलमां दरेक पंक्तिमां गाल आवे छे. आने रोळानी ज भंगी गणवी जोईए. रोळामां त्रीजा चतुष्कलमां दाल' आगळ शब्दान्त यति आवतो एवी ज रीते अहीं त्रीजा षट्कलमां आवे छे. एम थवाथी पंक्ति त्रिताली चोपाई जेवी जणाय. जेम के

म्हाले मोरली लीधी छे हाथ
आवी ऊभा छे जमनाने तीर
हरिने हेत करीने हाथ

उपरनी पंक्तिओ त्रिताली चोपाई जेवी छे, पण ए उपरथी त्रिताली चोपाईनी पंक्ति आ देशीना बंधारणमां छे एम कहेवुं यथार्थ नथी. पठन करतां स्पष्ट जणाशे के जेम त्रिताली चोपाई षट्कलोमां वहेती तेम ज आ रोळा षट्कलोमां वहे छे. चोपाई करतां रोळा लांबो छे, एटले चोपाईनी पंक्तिना अंत आगळ शब्दान्त आवतां चोपाईनी पंक्ति जोवी होय तो जोवाय पण एम करवाने बदले एम कहेवुं ज योग्य छे के अहीं रोळामां अमुक स्थाने गाल आवे छे एवी भंगी छे. अहींना गाल आगळ षट्कल पण पूरं थतुं नथी. पछीना षट्कलनो आद्याक्षर गाल साथे जोडाय छे: 'हायव' 'तीरव' ए प्रमाणे. पण छेल्ली पंक्तिमां 'नाथ' आखुं षट्कल पूरं छे त्यां पण एने चोपाईनी पंक्ति कहेवी अप्रामाणिक छे. जेम चोपाईमां गाल आवे छे ए एक षोडशी रचनानी भंगी छे, तेम अहीं मध्यमां गाल आवे ए एक रोळानी भंगी छे. बन्नेमां भंगीनी प्रक्रिया एक ज छे. जेम आ प्रकरणमां आगळ आपेला गरबाछंदना यतिखंडो दोहराना उत्तर यतिखंडो जेवा छे, छतां त्यां दोहरानो यतिखंड नथी तेना जेवुं ज आ छे. कवि न्हानालालनी प्रसिद्ध गरबी

मारां नयणांनी आळस रे न निरख्या हरिने जरी;
एक मटकूं न मार्यूं रे न ठरियां झांखी करी.

केटलांक काव्यो – भा. २. पृ. ९६

उपरना ज काठानी छे:— [सहेलाईथी समजाय तेवां लघुनां गुरुकरणो चिह्नित कर्यां नथी.]

मारां] नयणांनी; आळस; रे—न; निरख्या—; हरिने जे; री

एक;] मटकुं न; मार्युं—; रे—न; ठरियां—; आंखी कें; री

रोळामां ध्रुवखंड आवतो होय, अने ए ध्रुवखंड बाद करतां बाकी चोपाईनी पंक्ति ज रहेती होय त्यारे ए देशीमां चोपाईनुं काठुं वधारे बहार पडतुं देखाय, जेम के

वागी स्वयंवरमां हाक, ते नळ आव्यो रे;
भागां भूप सर्वनां नाक, ओ नळ आव्यो रे.
जाणे उदयो नैषध भाण, ते नळ आव्यो रे;
अस्त थया सौ तारा समान, ओ नळ आव्यो रे.

बृ. का. दो. १, पृ. १५१

वागी] स्वयं—; वरमां; हा—क; ते नळ; आव्यो—; रे

भागां;] भूपस;र्वनां—; ना—क; ओ नळ; आव्यो—; रे

ध्रुवखंड अर्थनी दृष्टिए तरत अलग पडी जाय छे एटले बाकीनी पंक्ति अलग जोवानो प्रसंग मळे छे. छतां संगीतनी दृष्टिए ध्रुवखंड साथेनी आखी पंक्ति ए ज रचनानुं एकम छे. रचती वखते पण कवि मनमां चोपाई रचीने ध्रुव खंडो वळगाडी देतो हशे एम मने लागतुं नथी. रचना दरमियान ध्रुवसहित आखी पंक्तिने ए गणगणतो हशे एवी मारी कल्पना छे. तेम छतां कवि पण आ चोपाईनी पंक्ति जोई शके एम हुं मानुं छुं. अत्यारनो कवि तो अवश्य जोई शके. रचनाव्यापार वखते ते ए भाग विशे सभान होय, अने तेथी ए भागने चोपाईनी दृष्टिए पण साथे साथे सुघड करतो जाय ए शक्य छे. एटले आ रचनाने रोळामां आवती चोपाईनी भंगी कहेवी होय तो कही शकाय. पण ए रचना तो रोळानी ज छे. नरसिंहनुं एक रोळानुं पद जोईए:

पद २ जुं

वृंदावनमां माननी मध्ये मोहन राजे;
कंठे परस्पर बाहुलडी धून नेपूर वाजे. १
काला कृष्ण त्यां संचरे, नाद निर्घोष थाय,
मंडप मांहे मलपतां, व्हालो वांसळी वाय. ५
ताळी देतां तारुणी, झांझरनो झमकार,
कटि किंकिणी रणझणे, घुघरीना घमकार. ७

धन रे धन ए सुंदरी, धन शामळवान,
नरसैंयो त्यां दीवी धरी रह्यो, करे हरिनुं गान. ८

नरसिंह मेहेताकृत काव्यसंग्रह, पृ. १८७–८८

आनां षट्कलो नीचे प्रमाणे पडे :

वंद्रा–; वनमां–; मा–न;नी मध्ये; मोहन; राजे–;
कंठेप; रस्पर; बाहुल; डी धून; नेपुर; बाजे–;

मंडप; मांहे–; मल–पं; तांव्हालो; वांसळी; वाय–;
ताळी–; देतां–; ता–रु; णी झांझर; नोझम; कार–;

कटि–; किंकिणी; रण–झं; णे घुघरी; नाधम; कार–;

धन रे–; धन ए–; सुं–दं; रीधन; शामळ; वान–;
नरसैंयों; त्यां दीवी; धरीर; ह्योकरे; हरि नुं–; गान–;

षट्कलोमां अक्षरनी वहेंचणी कोई क्यांक जुदी रीते पण करे, पण गवातां एकंदर आ रीते अक्षरो वहेंचाय. हवे आ देशी वांचतां अंदर केटलीक पंक्तिओ दोहरानी जणाय छे. उपरना अवतरणमां ५ अने ७ संख्यावाळी कडीओ दोहरानी लागे. तो प्रश्न ए थाय छे के आ देशीने दोहरानी देशी गणी शकाय? आ आखी कृति जोतां तो तेमां दोहरो अकस्मातथी आवतो जणाय छे. दोहराना अर्धनी मात्राओ २४ थई रहे छे. एटले दोहरो रोळा जेवो देखाय ए संभवित छे. पण आ आखी कृति दोहराना नमूना पर थई नथी ज. १ली अने ८मी कोई रीते दोहरामां बेसे तेवी नथी. एटले आने दोहरानी नहीं पण रोळानी ज देशी कहेवी जोईए. छतां तेमां त्रीजा षट्कलमां दालदा आवे छे, अने अंते गाल आवे छे ते दोहराना जेवी भंगी छे एटलुं स्वीकारवुं जोईए. आगळ जोई गया तेम केटलीक देशीओमां ध्रुवखंडो बाद करतां बाकीनी खंडित पंक्तिओ वधारे दोहरा जेवी जणाय छे. जेम के :—

पछी सुदामाजी बोलिया, सुण सुंदरी रे;
हुं कहुं ते शिख मान, घेली कोणे करी रे;
जे निर्म्युं छे ते पामिये, सुण सुंदरी रे;
विधिए लखी वृद्धिहाण, घेली कोणे करी रे.

बृ. का. दो. १, पृ. २४२

षट्कलोमां अक्षरविन्यास नीचे प्रमाणे थाय :

पछी सु;दामोजी; बो–लि; यासुण; सुंदरी; रे––;
हुं कहुं; ते शिख; मा–न; घेली को; णे करी; रे–

जे;] निर्म्युं–; छे ते–; पा–मि; ये सुण; सुंदरी; रे
विधि;] ए लखी; वृद्धि–; हा–ण; घेली को; णे करी; रे

आमां दोहरानी भंगी वधारे सारी रीते प्रतीत थाय छे. आमां ध्रुवखंडो बाद करतां विषम पंक्तिने अंते दालदा अने समपंक्तिने अंते गाल एकधारं चाल्युं आवे छे, अने प्रास गालना ज मळे छे, ए बन्ने लक्षणो दोहरानां ज छे. तेम छतां आखी पंक्ति रोळानी छे, ए तरफ दुर्लक्ष न करवुं जोईए. मने पठनसमये त्यां अमुकभंगीविशिष्ट रोळा ज मूर्त थाय छे. अलबत्त आगळ आवा प्रसंगे कह्युं हतुं तेम रचनार रोळा साथे साथे दोहरा तरफ पण सभान रही रोळाना काठामां दोहरो पण उतारे ए संभवित छे. एवो एक दाखलो मळी पण रहे छे. अने ते पण एक प्राचीन कविमांथी :

कडवुं ३२. राग रामग्री

वचन प्रभुनां सांभळी मन वाळीए जी
चरणे कर्या प्रणाम बोल्युं पाळीए जी
एक अमारी वीनती मन वाळीए जी
साचुं सुणीए स्वाम बोल्युं पाळीए जी

बे नळाख्यान, पृ. ५७

नहीं ध्रुवखंडो बाद करतां शुद्ध दोहरो रहे छे :

वचन प्रभुनां सांभळी, चरणे कर्या प्रणाम
एक अमारी वीनती, साचुं सुणिये स्वाम.

आपणे षट्कलोनो न्यास जोईए.

वचन प्र;भूनां–; सां–भ; ळी मन; वाळीए; जी – –;
चरणे–; कर्या प्र;णा–म; बोल्युं–; पाळीए; जी – –;

दोहरानी भंगीथी सम विषम पंक्तिओना अंतोमां वैविध्य आव्युं, एकमां अंते गालगा बीजीमां अंते गाल आव्युं, तेथी बेवडा ध्रुवखंडोने स्थान मळ्युं. अने ते ध्रुवखंडो पण भिन्नभिन्न लंबाईना. बन्नेमां छेल्लुं षट्कल 'जी'नुं छे. उपान्त्य षट्कल गालगा प्रासबद्ध छे. तेनी आगळ विषमपंक्तिमां षट्कलनी छेल्ली बे द्विकलो ध्रुवखंडना आद्य बे अक्षरो पूरे छे. त्यारे सम पंक्तिमां ए आखुं षट्कल ध्रुवखंडना आद्य बे गुरु अक्षरो पूरे छे, एम अनेक रीते वैविध्य आवे छे. प्राचीन कविओए आ भंगीने खूब विकसावी छे. जैन कविओए आ दोहराने अणीशुद्ध राखवा काळजी राखी छे :

ढाल : वाडी फूली अति घणी मन भमरा रे : ए देशी १५ मी.

भव नाटिकमां जोयतां चित्त चेतोरे !
एक जीव बहु भाव चतुर चित्त चेतोरे.

आ. का. म. १, पृ. २३४

अलबत्त आने षट्कलमां तो लई ज शकाय. पण आ एटलुं सुघड छे के तेने चतुष्कलोमां पण लई शकाय.

भव ना, टिकमां; जो॰य, तां चित; चेतो,रे—;
एक जीव बहु; भावच, तुर चित; चेतो, रे—;

अहीं दोहरानो रोळाना अंगमां विनियोग थतां तेमां विषम यतिखंडोमां दालदामां अंते आवती बे प्लुत मात्राओ अहीं अनवकाश बनी जाय छे.

आपणे मात्रामेळ छंदोमां जोयुं के प्लवंगम ए रोळानी ज प्लुतिबद्ध रचना छे. ए प्लवंगम पोते ज देशीओ तरीके वपराय छे. दलपतरामे प्लवंगमनुं लक्षण आप्या पछी दाखला आप्या छे तेमां नीचेनो दाखलो पण आप्यो छे :

माटे मारा मित्र, विचारो वात रे,
पापी मटी पवित्र, बनो भलि भात रे;
जीवननुं फळ जाणि, भजो भगवान रे,
अंतर प्रीती आणि, धरो नित ध्यान रे.

द. पि. पृ. १५

आमां अंते गालगा आवे छे अने तेना अंत्य गाने स्थाने तानपूरक 'रे' आवे छे, जे देशीनुं लक्षण छे. आमां अगियार मात्राए यति मूकी छे अने तेने लीधे त्यां गाल आवे छे, अने गालान्त खंडो पाछा प्रासथी सांध्या छे. छतां आ गाल ते बराबर गरबा छंदना गाल जेवो नथी केम जे गरबा छंदनो गाल उच्चारणमां गा॰ल छे.

प्रसिद्ध 'ओधवजी संदेशो कहेजो श्यामने' ए देशी शुद्ध प्लवंगमनुं दृष्टान्त छे. आपणे तेनुं एक आधुनिक दृष्टान्त लईए :

सुरतानी वाडीना मीठा मोरला !
ऊछळता शा उरसागर उल्लास जो !
निर्झरती सौभाग्य सुहागन ज्योत्स्निका :
नयणे झळके नमणुं निर्मळ हास जो;
सुरतानी वाडीना मीठा मोरला !

संधिओ बरावर प्लवंगमना छे. तेमां देशीनां तत्त्व एटलां छे के तेमां एक पंक्ति टेकनी छे, अने अंते आवता गालगामां छेल्ला गानी जगाए सम पंक्तिओमां जो आवे छे अने ए जो पहेलांना गालनो प्रास छे. एटले प्रास पण समपंक्तिनो ज छे. कडी चारने बदले पांच पंक्तिओनी छे अने तेमां छेल्ली पंक्ति ए पहेली पंक्तिनुं टक तरीकेनुं पुनरावर्तन छे.

प्लवंगम ए रोळानी पंक्तिना अंत्य संधिओना खंडनथी थाय छे, एटले बन्नेमां कालसंधिओ सरखा ज छे अने तेथी बन्नेना मिश्रणनी रचना शक्य बने छे. एवी एक रचना आपणने अर्वाचीन साहित्यमां मळे छे: कवि न्हानालालना 'घण'मां.

ऊग्यो सूरज जो लीलुडा वनमां रे
ऊग्यो ऊग्यो सरवर–गिरिवरने तटे
जाग्यां घोर घटामांनां पंखेरू रे
जाग्यां जाग्यां मेना, पोपट, मोरला.

विषम पंक्ति रोळानी छे अने तेमां छेल्ला चतुष्कलनी जगाए तानपूरक रे– आवे छे. बीजी पंक्ति शुद्ध गालगाना प्लवंगमनी छे. आश्चर्यनी वात छे के आखा काव्यमां क्यांई प्रास आवतो नथी. आ मिश्रण एक रीते रोळा अने प्लवंगमनी समानतानो पुरावो छे.

हवे सवैयानी रचनाओ लईए.

आवी बत्रीसी रचनाओ थोडी ज मळशे कारण के देशीओ गावा माटे छे अने तेथी तेने अंत तरफ ललकार माटे प्लुतिनो अवकाश जोईए छे. नीचेनी कृति त्रीशी देशी छे.

राग गरबानो

पडवे, ब्रह्मा, पास पु,कारी, वसुधा, सुरभी, रूप ध,री –,
सुर सर, वे शं,कर अज, आदि, आव्या, ज्यां अवि,नाश ह, री –

सफाईबंध चतुष्कलो आवे छे. डाकोरना रणछोडजीनो प्रसिद्ध गरबो आ ज ढाळनो छे:

चॉलो नें जैं, यें रें दें व, दरशन, करवा, डॉकों रमां, ठॉकों र वि,राजे,छे–,
दीना,नाथ द,याळ दॉं,मोदर, दरशन,थी दुख, भागे, छे–,

पहेली पंक्तिमां एक साथे सात दीर्घने लघु करवा पडे छे. प्रसिद्ध 'वैष्णव-जन'नुं पद पण त्रीशी रचना छे.

वैष्णव, जन तो, तेने, कहिये, पीड प,राई, जाणे, रे–
परदुः,खे उप,कार क,रे तोँय, मन अभि,मान न, आणे रे,–,

हवे एक बीजी प्रसिद्ध ढाळ लईए :

वैशंपायन ऍणिपेँरेँ बोल्या सुज जनमेजय राय जी
विस्तारी तुजने संभळावुं भारतनो महिमाय जी

चतुष्कलो करवामां कशुं विशेष नथी पण आना अंतना अक्षरो नीचे प्रमाणे गवाय छे ते ध्यानमां राखवा जेवुं छे :

भारत, नो महि, मा–, यजी,

परंपराथी आ रीते ज गवाय छे. 'जी' अंतवाळी घणी ढाळोमां आ प्रमाणे ज प्लुतिओ आवे छे. बधारे तानपूरकोवाळा दाखला लईए :

महाकाळीनो गरबो

मा तुं पावानी पटराणी के काळी काळिका रे लोल.
मा तारो डुंगरडे छे वास के चडवुं दोहलुं रे लोल.
बृ. का. दो. २, पृ. ६९६

न्यास :

मा तुं] पावा,नी पट;राणीँ के,काळो; का⌣ळि, कारे; लो⌣ल,
मा तोँरोँ;] डुंगर,डे छे; वास केँ, चडवुं; दो⌣ह, लुंरे; लो⌣ल.

पहेला चतुष्कल पछी तालबद्ध अष्टकलो शरू थाय छे. बरावर मध्ये एटले चोथा चतुष्कलमां छेल्ला लघु तरीके 'के' आवे छे. अन्त्य चतुष्कल लो⌣ल आवे छे. ते पछीनी पंक्तिना चतुष्कल साथे मळी अष्टकल रचे छे. लो⌣ल पहेलां द्विकल 'रे' आवे छे जे उपान्त्य चतुष्कलमां भळे छे. तेम ज छेल्लेथी त्रीजा चतुष्कलमां गा⌣ल आवे छे. आ बधानां गरबामां नियत स्थानो छे.

हवे ध्रुवखंडोवाळी देशीओ जोईए :

वड सासु घणुं भारे माणस बोल्यां परम वचंन वहुजी
वडोँ वहुवर तमेँ कांइ न जाणो म्हेता वैष्णव जंन वहुजी

छेल्लुं चतुष्कल ध्रुव छे. तेनी पहेलां गा⌣ल आवे छे : 'चं⌣न', 'जं⌣न'.

ए बळिया साथे बाथ, नाथ केम भीडो रे जादवजी;
हुं कहुं छुं तमारी दासी, नासीने हींडो रे जादवजी. २
बृ. का. दो. १, पृ. ६९

उत्थापनिका :

ए] बळिया, साथे; बाथ नाथ कें'म; भीडो रे–; जादव,जी,
हुं;] कहुं छु त,मारी; दासि नासिने; हींडो रे–; जादव,जी

'रे जादवजी' ध्रुवखंड छे अने उपर प्रमाणे संधिओमां व्यापे छे. वचला अष्टकलमां आवती प्रास सांकळी, अंत्य ध्रुवखंड वगेरे देशीनां खास लक्षणो स्पष्ट छे.

जगत,नुं सुख; झाकळ,नुं छे; पाणी, रे–; जाणी, ले–;
वणशी, जातां;.वार न,हीं सत; वाणी,रे–; जाणी ले–;

'रे जाणी ले' ध्रुवखंड छे. आ पंक्तिमांथी 'जाणी' काढी नांखतां बाकीनी पंक्ति रोळानी जणाय छे पण एटला माटे आ रचनाना अंगमां रोळा छे एम कही शकाशे नहीं. आ ज जातनी एक बेवडा ध्रुववाळी पंक्तिओ जोईए :

कारतक मासे मेली चाल्या कंत रे व्हालाजी;
प्रीतलडी तोडीने आण्यो अंत म्हारा व्हालाजी.

बृ. का. दो. १, पृ. ८३६

कारत, मासे; मेली, चाल्या; कं ⌣ त, रे–; व्हाला, जी–;
प्रीत ल,डी तो;डीने, आण्यो; अं ⌣ त, म्हारा; व्हाला, जी–;

आमां बेवडा ध्रुवखंडो छे. 'रे–; व्हाला,जी–;' अने 'म्हारा; व्हाला, जी–;' बन्ने छेल्लां त्रण चतुष्कलो रोके छे.

ए तो बळिया साथे बाथ हो रे हठीला राणा;
ते तो जोईने भखिये नाथ हो रे हठीला राणा. ४

ए तो, बळिया; साथे, बा ⌣ थ; हो–, रे– ⌣ ह;ठीला, राणा;

बृ. का. दो. १, पृ. ७०

लटकाळा तारे लटके रे लेरखडा हुं लोभाणी;
वांसलडी केरे कटके रे चितडाने लीधुं ताणी.

बृ. का. दो १, पृ. ७८९

लट] काळा, तारे; लटके रे–; ले रख,डा हुं; लोभा,णी
वां;] सलडी, केरे; कटके रे–; चितडा, ने ली; धुंता,णी

चोथुं चतुष्कल आखुं 'रे–'थी पुरायुं छे, अने त्यां पडता यतिखंडो प्रासथी जोडाया छे.

फ्हेरोने पीतांबर लाल पलवटडी तमे वालोजी
जुवती जनने मोह्या रे लाल लडसडती गते चालोजी

'लाल'नो 'ला' त्रण मात्रानो प्लुत होई ए ध्रुवपद शब्द आखुं चोथुं चतुष्कल रोके छे. पछीनी पंक्तिमां ध्रुव जरा मोटुं बने छे अने तेथी आगलुं चतुष्कल जरा विक्षिप्त थाय छे:—

जुवती, जनने; मोँह्या रेँ, ला⌣ल;

एम थाय छे, अने ए जाणी जोईने करेलुं जणाय छे कारण के 'रे' काढी नाख्यो होत तो गुरुने टूंकाववो पडत नहीं. देशीकारो एम घणी वार जाणी जोईने रचनामां अमुक स्थाने लचक मूकवा गुरुने लघु करे छे.

जतने जाळव्युं रे जोबन भूधर भेट करेश;
जो हरि नहीं मळे रे, म्हारा पापी प्राण तजेश. ८
बृ. का. दो. १, पृ. ११

उत्थापनिका:

जतने, जा⌣ळ; व्युं–, रे–; जोवन, भूधर; भेट क,रे⌣श;
जो हरि, न्हैं⌣म; ळे–, रे–; म्हारा, पापी; प्राण त, जे⌣श;

'जाळव्युं' 'न्हैंमळे' ए अष्टकलव्यापी गालगा छे, जे चतुष्कल जाति-रचनाओमां अनेक जगाए आवे छे. घणुंखरुं ते अंतमां आवे छे, जेम के प्लवंगममां अने पदोमां—'सद्गुरु०' (गत पृ. ३४७) जेवी रचनाओमां; अहीं विशेष ए छे के ए गालगारे पंक्तिना पूर्वार्धमां आवे छे. बे बीजां दृष्टान्तो जोईए.

वळतां व्हालमां रे नचाव्यां ललचाव्यां लोचन

वळतां, व्हा⌣ल; मां–, रे⌣न; चाव्यां ललचा; व्यांलो, चं⌣न;

अहीं मध्यमां आवता 'रे' नी मात्रा घटी छे, पण तेवुं घणी वार देशीओमां थाय छे. तेथी रचना बदलाती नथी.

सज्जन सांभळो रे हरिनी बाळ लिला कँ गाशुं.
दयारामरससुधा पृ. २५ अने ५३

अहीं आपणे सवैयानी देशीओ बंध करीए अने तेनाथी टूंकी चोपायानी देशीओ लईए.

प्रथम २८सा चोपायानुं एक प्रसिद्ध अने सुंदर संगीतवाळुं लोकगीत लईए:

राजल पाणी ग्यांतां अमे सैयर पाणी ग्यांतां
माधवपुरनो मारग अमने वेरी थैने लाग्यो.
तारा हाथनी आंगळियो राजल हाथनी आंगळियो
जाणे चोळा मगनी फळियो राजल चोळा मगनी फळियो
(सांभळेलुं)

आटलुं बस थशे. 'माधवपुरनो०' ए पंक्ति शुद्ध २८सा चोपायानी छे. बीजी पंक्तिओ पण चोपायानी छे ज पण तेमां देशीनां लक्षणो छे जे नीचेनी उत्थापनिका उपरथी स्पष्ट थशे.

राजल, पाणी; ग्यांतां – अमें; सैयर पाणी; ग्यांतां – –;
माधव, पुरनो; मारग अमने; वेरी थैने; लाग्यो–

तॉरॉ;] प॒॒॒नी आं;गळियो राजल; प॒॒॒नी आं;गळियो –
जॉणें;] चोळा मगनी; फळियो राजल; चोळा मगनी; फळियो

पहेली पंक्तिमां बीजा अष्टकलमां प्लुति गोठवाई छे ते ध्यानमां लेतां पंक्ति अठ्ठावीसा चोपायानी थई रहे छे. चोपायामां अंत्य चतुष्कल अनक्षर छे तेनी कालमात्रा मूकतां रचना बत्रीसी थई रहे छे. माधवपुरवाळी पंक्ति तो पहेलां कह्युं तेम चोपायानी छे ज. पण तेना अंत्य सातमा चतुष्कल पछी बे ज मात्रा अनक्षर रहे छे, ते पछीनी पंक्तिनी आद्य बे मात्रा साथे मळीने आखुं अष्टकल पूरुं करे छे. बधी पंक्तिओ पछी ए प्रमाणे ज पूरी थाय छे. 'तारा' अने 'जाणे' बब्बे मात्रानां ज छे. पठनभेदे कोई पहेली पंक्तिमां प्लुति घटाडी 'अमे' त्रण मात्रानुं पण करे, 'ग्यांतां‿अमे;' ए प्रमाणे.

प्लवंगममां अंते जेवी गालगानी भंगी आवे छे तेवी भंगी चोपायाना पूर्वार्धमां आवती एक रचना जोई छे ते नीचे उतारुं छुं.

नारी कुंजरनी वसु, पहेर्यां साथल धासें रे;
ते तो मारू धावळां, प्हेरे केम तमासें रे; ४
देववसन प्हेरे वहू, नजर न आवे तेई रे;
मेंदे मूक्यां मोदसों, पासे मूक्यां लेई रे. ५
आ. का. म. १, पृ. १०

उत्थापनिका :

रे
दादा दादा गा‿लगा – दादा दादा दादा गा –

पठनमां चोपायानी देशी जणाशे, पण पूर्वार्धमां दोहरानी भंगी छे.—दोहरानो ज यतिखंड छे.

जाति प्रकारनो चोपायो २८सो अने २७सो होय छे पण देशीओमां २६सो चोपायो पण मळे छे. रचना सादी छे, हुं चतुष्कलो अने अष्टकलोमां पंक्तिओ मूकुं छुं.

जाते, छो अति; रसिया, रे जग; जीवन, काना; रे –, – – ;
तमो माँ, रे मन; वसिया, रे जग; जीवन, काना; रे –, – –;

बृ. का. दो. ३, ७७७

कोई पाठभेदे बीजी पंक्तिनो प्रारंभ 'तमोँ मा' एम पण करे. पण मने ए पाठ सुन्दर नथी लागतो. अने में अनेक लोकगीतो देशीओ सांभळी छे तेनी परंपरा जोतां पहेलो पाठ मने सारो लागे छे. आवा पठनभेदो तेम छतां होई शके अने दरेक जगाए ते हुं नोंधीश पण नहीं. आ देशीनी एक विलक्षणता ए छे के पंक्तिमां अर्धथी वधारे लांबो ध्रुवखंड छे, जे बहु विरल होय छे, छव्वीस मात्रानी पंक्तिमां पहेलां त्रण चतुष्कलो ज स्वतंत्र छे, बाकीनो भाग ध्रुवमां जाय छे.

आवी ज एक भिन्न प्रकारनी रचना लईए :

पछे गुरुजीए तेडियो रंगीला कूंवर रे;
लइ मस्तक मूक्यो हाथ रंगीला कूंवर रे.
एकला गाम नव चालिये रंगीला कूंवर रे;
काम पडे जो कोट रंगीला कूंवर रे. १५

बृ. का. दो. १, पृ. ५६३

उत्थापनिका :

पछे गु,रुजियेँ; पू–छि,यूं रं; गीला, कूंवर; रे –, –

लई;] मस्तक, मूक्यो; हा –, थ रं; गीला, कूंवर; रे –, – –
ऍकला, गॉम नव; चा–लि, ये रं; गीला, कूंवर; रे –,– –

काम प,डे जो; को–,ट रं; गीला, कूंवर; रे –, – –

अंत्य 'रे' साथे छव्वीस मात्रा थाय छे. आमां चोपाया साथे दोहरानी भंगी छे, पण पठन दोहरा प्रमाणे नथी, चोपाया प्रमाणे छे. दोहरामां 'पूछियुं' पछी बे मात्रा अनक्षर रहे ते अहीं 'रं' थी पुरायेली छे. तेम ज दोहरामां अंत्य लघु लघु ज बोलाय छे, अहीं ते गुरु बने छे.

एक जगाए रासामां मळी आवती प्रतीक पंक्ति जोवा जेवी छे ते नीचे उतारुं छुं:

केशर, वरणो; हो–काढ क; सूंबो, मारा; ला– –ऽल;

पंक्ति सुंदर छे अने बीजी रीते पण गाई शकाय पण उपरनी रीत सादी छे ते में स्वीकारी छे.

प्लवंगममां अंत तरफ आवती भंगी एटले अष्टकलव्यापी गालगानी भंगी जेवी भंगी चोपायामां पण एक जगाए जोई छे ते नीचे उतारुं छुं.

जो जो करम अघोर के कपि मनस्यूं रडे रे;
धिक धिक मयणविकार के सुरजरने नडे रे
त्रिया एह स्वभाव के कोइनी नहीं रे,
आ संसार असार के धर्म करो सही रे.

आ. का. म. ३. १३५

उत्थापनिका:

जो जो, करम, अ; घोर कें,कपि मन; स्यूं–रडे–; रे–, – –;

अहीं अंत्य गालगा अष्टकलव्यापी छे.

मात्रामेळ छंदोनी चर्चामां आपणे जोयेलुं के दोहरो ए खंडित चोपायानुं एक स्वरूप छे. ए क्रमे चालतां हवे आपणे दोहरानी देशीओ जोईए. आगला प्रकरणमां में बतावेलुं छे के चतुष्कल रचनाओ केवी रीते षट्कल बने छे अने त्यां दोहरो षट्कल अने सप्तकल बने त्यारे तेनुं केवी रीते पठन थाय छे, एटले ए बाबत अहीं फरी लखतो नथी. मात्र एटलुं स्मरण कराववुं बस थशे के 'नळाख्यान'मां आवती 'वैदरभी वनमां वलवले' ए देशी अने तेनी जोडेनी 'भूली भमे छे रे भामिनी' ए बन्ने देशीओ दोहराने मळती छे, अने ते षट्कलमां तेम ज सप्तकलमां सुंदर रीते गवाय छे. अहीं तो हवे केटलाक जैन कविओए शुद्ध दोहरानुं काठुं लई तेनी आसपास ध्रुवो के बीजां अंगो लगाडीने देशीओ करेली छे ते जोईशुं.

जो माणस करि लेखवो तो मत जाओ छंडि, लालरे;
जास्यो तोही राखशुं बाळक जिम रा मंडि, लालरे.

आ. का. म. १, पृ. ३२

अहीं शुद्ध दोहराने अंते 'लालरे' ध्रुवखंड लगाडेलो छे, ते पांच मात्रानो छे अने तेथी उत्तर यतिखंड पूरी सोळ मात्रानो थई रहे छे. एटले

दोहराना अंत्य यतिखंडनो खंडित थयेलो भाग अहीं ध्रुवथी पुराय छे. एक बीजी कृति लईए:

ईतना दिन हुं जाणती रेहां, मिलस्यें वार बे चार; मेरे नंदना,
हवे वच्छ मेळो दोहिलो रेहां, जीवन प्राण-आधार, मेरे नंदना
एजन, पृ. ४५

मध्य ध्रुवखंड 'रेहां' अने अंत्य ध्रुवखंड 'मेरे नंदना' बाद करतां रहेता अक्षरपिंडनुं काठुं दोहरानुं जणाशे. अने छतां तेमां कोई कोई चतुष्कलोमां मात्रा वधेली जणाशे. 'वारबे' 'हवे वच्छ' 'प्राण आ' संधिओमां चारथी वधारे मात्राओ आवे छे, तेने चतुष्कलमां नांखतां उच्चारण बगडे छे, अने पठन करतां आ रचना सहेलाईथी षट्कलमां पडी जती जणाय छे. एना ध्रुवखंडो पण षट्कलमां ज स्थान अने अवकाश पामी शके छे, एटले आ दोहरानी षट्कलनी देशी छे: हुं षट्कलो जुदां लखुं छुं.

ईतना⌣; दिन हुं⌣; जाण तीरें; हां – –; मीलस्ये⌣; वारबे⌣; चारमेरें;
नंदना⌣;

हवे वछ; मे⌣ळो⌣; दोहिलो रें; हां – –; जी⌣वन; प्रा⌣णआ; धारमेरें
नंदना⌣;

आवी दोहरा उपरथी करेली देशीओनां घणां दृष्टान्तो जैन कविओनी कृतिओमां मळे छे, पण आ रचना अत्यारे आपणने परिचित नथी एटले ए बधी अहीं लेतो नथी.

अहीं चतुष्कलनी देशीओ बंध करी हवे त्रिकलनी देशीओ उपर आवीए. आमां सौथी प्रथम ए कहेवानुं के मात्र त्रिकलो आवे एवी मात्रामेळ रचनाओ पण विरल छे, महीदीपमां पण षट्कलो आवे छे, तो षट्कलो विनानी देशीओ अशक्य होय एमां आश्चर्य नथी. देशीओना सामान्य प्रास्ताविक प्रकरणमां आपणे षट्कलमिश्र त्रिकल रचनानी गरबीओ जोई छे: 'नंद एक समे०' अने 'राधे रूपाळी०'. अहीं केटलीक लोकगीतनी गरबीओ जरा जोईए:

चंड मुंड चपटीमां चोळया रे
आज दैतोने रणमां रोळया.

उत्थापनिका:

चंड, मुंड; चप,टीमां; चोळया –; रे⌣
आज;] दैतोने; रण मां⌣; रोळया –,– – –;

अंत्य तानपूरक 'रे'नी पहेलां बे गुरु आवी आखुं षट्कल पूरे छे. एनुं स्थान नियत छे एटले ए गरबीनुं लक्षण छे. ते सिवाय घणांखरां त्रिकलो आवे छे. पण 'दैतोने' षट्कल छे. घणी त्रिकल गरबीओमां जोयुं छे के पहेला त्रिकल पछी तरत एक षट्कल आवे छे. अहीं पण बीजी पंक्तिमां एम बनेलुं छे. एक बीजी कृति लईए:

बॉळा रेशमीं ते आंगलां बिराजे जो
नवा नतियामां[1] घूघरी गाजे जो

उत्थापनिका:

बॉळा] रेश, मिते; आंग, लांबि; राजे –; जो ⌣
नवा;] नतिया मां; घूघरी ⌣; गाजे–; जो ⌣

उपरनी कृतिने बहु मळती आ गरबी छे. दरेक पंक्तिने अंते त्रिकल 'जो' आवे छे, जे पछीनी पंक्तिना त्रिकल साथे मळी जई षट्कल रचे छे अर्थात् पहेला त्रिकल पछी ताल सहित षट्कलो आवे छे, जेमांनुं पहेलुं कोई वार त्रिकलबद्ध न होतां षट्कल होय छे. बाकीमां त्रिकलो आवे छे. क्यांक एक प्लुत गुरुथी त्रिकल बने छे:

हवे वधारे अटपटी त्रिकल देशीओ लईए:

चिक्षुर आव्यो क्षुर धार असि हाथमां रे लोल;
नाथ न्होणो जेम खूंट कुदे साथमां रे लोल.
रथ किंकणी अनेक घोर घमकती रे लोल;
धजा फरफरे ने कलश कांति चमकती रे लोल.

बृ. का. दो. २, पृ. ७३८

उत्थापनिका:

चिक्षुर] आव्यो क्षुर; धार, असी; हाथ,मांरें; लोल
नाथ;] न्होणो जेंम; खूंट, कुदे; साथ,मां रें; लोल

वगेरे. न्हानालालनी 'भेदना प्रश्न'नी गरबी आ ज ढाळनी छे:

म्हें तो कंकुए लींप्युं म्हारुं आगणुं रे लोल;
कोई भेदु आवो तो भेदने भणुं रे लोल
मारी आंखे अदृश्य आंसुडां वहे रे लोल:
विधि जोई जोई कां हसी रहे रे लोल;

---

१. 'नतियो' ए शंकु आकारनी बाळकने पहेराववानी टोपी छे. जुदा जुदा रंगनी त्रिकोणाकार पट्टीओथी ए शंकु आकार बनेलो होय छे.

न्यास :

म्हैंतो] कंकु,ए ळीँ;प्यूं⌣, म्हारुँ; आंग,णुं रेँ;लोल
कोइ;] भेदुआ;वो तोँ, भेद; ने भ;णूं रेँ; लोल

म्हारीँ;] आंखे अ;दृश्य, आंसु; डांव, हेरेँ; लोल
विधी;] जोई जोँ; ई⌣, कांह; सीर; हेरेँ; लोल
दाल] दादादा; दालदाल; दालदाल; दाल

आथी पण वधारे लांबी, वधारे अटपटी अने वधारे सुंदर एक बीजी गरबी लईए.

ब्रह्मा विष्णु ने सुरराय, नामी शीश सकल देवता रे
माना सुंदर जश गाय, शरण आव्या चरण सेवता रे.
पाहि पाहि जगत मात पाहि पाहि भुवनेश्वरी रे
पाहि दानव कुळ घात, पाहि पाहि विश्वंभरी रे

बृ. का. दो. २, पृ. ७५०

न्यास : ब्रह्मा] विष्णु, ने सुर; राय, नामि; शीश, सकल; देव, ता ⌣; रे⌣,
मॉंना;] सुंद,रजश; गाय, शरण; आव्यॉं,चरण; सेव, ता⌣; रे ⌣,
पाहि;] पाहि, जगत; मात, पाहि; पाहिभुव; नेश्व, री ⌣; रे ⌣,
पाहि;] दान, वकुळ; घात, पाहि; पाहि वि; श्वं भ,री ⌣; रे ⌣

बृ० का० दो० २, पृ. ७५०

रचना घणी लांबी कुल दस त्रिकलोनी छे. पहेलां चार त्रिकलो बे वार गवाई पछी पंक्ति आगळ चाले ए रीते गवाती में सांभळी छे. उपाड घणो जोरवाळो छे. चार त्रिकले यति पडी त्यां थता यतिखंडो अहीं प्रासथी जोडाया छे, एम कृतिमां बेवडा प्रासो छे. दादादानुं कोई नियत स्थान अहीं जणातुं नथी, पण 'पाहिभुव' अने पाहिवि' षट्कलो छे. एक पंक्तिमां पहेला त्रिकल पछी दादादा आवे छे :

दीन शरणागत देव त्राण त्र्यंबिका गौरी करो रे
दीन] शरणागत; देव, त्राण; त्र्यंबि, कॉंगौ; रीक,रो ⌣; रे ⌣
दाल] दादादा; दालदाल; दाललदा; दालदाल; दाल

में सांभळेली आवी ज रचना नीचे प्रमाणेनी छे :

नमुं] गणपतिने; पाय नमुं; गणपतिने; पाय भोँळा; शीव शंकर; नेन मूंरेँ; लोल

आथी पण वधारे लांबी रचना मळी आवे छे :

सुणो कृष्ण तणी वाण छे प्रमाण रे ताण पडी मेली रे;
भजो चैतन्य अखंड तजो सर्व विषय कामना घेली रे. १
शोक दुःख थये सुखेथी आनंद रे मंनमां न आणो रे;
रागद्वेष बीक वहेम काम क्रोध रे शत्रु करी जाणो रे. २

बृ. का. दो. ३, पृ. ६१६

सुणो] कृष्ण, तणी; वाण, छे प्र; माण, रे ⌣; ताण, पडी; मेली–; रे ⌣

भजो;] चैंत,न्य अ̄; खंड, तजो; सर्वं, विषय; काम, ना ⌣; घेली–; रे ⌣
शोक;] दुःख, थये; सुखे, थिआ; नंद, रे ⌣; मंन, मांन; आणो–; रे ⌣
राग] द्वेष, बीक; व्हेम, काम; क्रोध, रे ⌣; शत्रु, करी; जाणो –; रे
कुल बार त्रिकलो छे. अंते 'रे' नियत छे, पण वच्चमां 'रे' आवे छे तेने नियत स्थान नथी. एटले ए छंदनुं अंग नथी.

जरा जुदी रचना तरीके न्हानालालनी एक गरबी लईए:

मने पाछुं आणी ने पेलुं आपो रे प्राण म्हारुं पारेवुं;
पेली पुण्ये हो! बांधेली पांख: प्राण म्हारुं पारेवुं;
मणिफूल जेवी कलगी नचवतुं, रे प्राण म्हारुं पारेवुं;
लावो मीठी ए नेहभरी आंख, प्राण म्हारुं पारेवुं.

के. का. २, पृ. ३७

उत्थापनिका:

मने] पाछुं आ; णीने पेलुं; आपो रे; प्राण मारुं; पा ⌣ रे⌣; वुं ⌣
पेँली;] पुण्ये हो; बांधेली; पां ⌣–ख; प्राणमारुं; पा ⌣ रे ⌣; वुं ⌣
पहेलुं त्रिकल छोड्या पछी सताल षट्कलो शरू थाय छे तेमां पहेलुं त्रिकल विनानुं षट्कल छे, ते पछी आवतुं षट्कल पहेली पंक्तिमां त्रिकलबद्ध छे, पण बीजीमां नथी, ते पछी एटले त्रीजुं वळी पहेली पंक्तिमां त्रिकल विनानुं षट्कल छे, अने बीजी पंक्तिमां त्यां प्लुतिबद्ध गाल (गा ⌣–ल) आवे छे ते आ रचनानी विशिष्ट भंगी छे. चोथुं षट्कल त्रिकलबद्ध छे अने त्यांथी ध्रुवखंड शरू थाय छे जेनो अंत उपर आप्या प्रमाणे आवे छे. आ कृतिमां षट्कलो वधारे छूटथी आवे छे. सम पंक्तिमां गाल आवे छे, पण तेने दोहराना गाल साथे कशो संबंध नथी. ए आ देशीनी एक भंगी छे.

भोजा भगतना चाबखा, उपर जेवी ज त्रिकल–षट्कल मिश्र रचना छे.

मूरखो रळी रळी कमाणो रे माथे मेलसे मोटो पाणो.
धाईधूतीने धन भेळुं कीधुं कोटीध्वज कहेवाणो;
पुण्यने नामे पा जें न वावर्यो अधवचथी लूंटाणो. मूरखो०

बृ. का. दो. १, पृ. ८२६

उत्थापनिका :

मूरखो‿; रळीरे; ळी‿क‿; माणो‿रे; मा‿थे‿; मेलसे‿; मो‿टो‿;पाणो–;

–––; धाईधू; तीने धन; भे‿ळुं‿; की‿धुं‿; को‿टी‿; ध्वजकहे‿; वाणो –

–––; पुण्यने; ना‿मे‿; पाजें न; वावर्यो‿; अधवच; थी‿लूं‿; टाणो –

मूरखो ‿; रळीरे . . . . . . पहेली पंक्ति प्रमाणे.

आमां केटलांक षट्कलो त्रिकलबद्ध छे अने केटलांक त्रिकलरहित छे. पण विशेष ए छे के दरेकनुं स्थान नियत छे. स्थान विशे टूंकमां कही शकाय के पंक्तिना प्रारंभथी बीजुं षट्कल त्रिकलरहित छे. एटले ध्रुवमां 'रळीरे' त्रिकलरहित छे अने आंतरानी बंने पंक्तिनुं पहेलुं अनक्षर षट्कल पछीनुं बीजुं पण त्रिकलरहित छे. ते उपरांत ध्रुवना अंतनुं अने आंतरानां बधां प्रासनां षट्कलो पण त्रिकलरहित छे. आंतरानी पहेली पंक्ति ध्रुवरहित छे छतां आखी रचना समसंख्य संधिबद्ध छे, कारण के ध्रुवपंक्ति अने आंतरानी दरेक पंक्तिमां संधिसंख्या सरखी छे. ते साथे ए नोंधवा जेवुं छे के आंतरानी पंक्तिनुं पहेलुं षट्कल अनक्षर जाय छे, पण तेने गणनामां लेवुं जोईए अने एम करतां संधिसंख्या सरखी थई रहे छे. अत्यार सुधी आपणे संधिसंख्या ए ज रीते गणता आव्या छीए. एक बीजी बाबत तरफ ध्यान खेंचवा जेवुं छे ते ए के सामान्य रीते मात्रामेळ छंदोमां पंक्तिने अंते अनक्षर संधिओ आवे छे. अहीं पंक्तिना प्रारंभमां अनक्षर संधिओ आवे छे. आ विलक्षण जणाय पण तेमां आश्चर्य जेवुं कशुं नथी कारण के रचना संगीतप्रधान छे, अने संगीतमां एकम आखुं सळंग छे, तेमां पंक्तिभेद होतो नथी. एटले ए अनक्षर विभाग जे पहेलो देखाय छे ते बीजी रीते कहीए तो आगली पंक्तिनी पछी ज आवे छे. आपणे तेम छतां एवी रीते पंक्तिओ पाडी शकीशुं नहीं कारण के एम करवा जतां ध्रुवना पहेला शब्द 'मूरखो'नी व्यवस्था बराबर थई शकती नथी. अनक्षर विभाग पंक्तिने अंते आणवानो आग्रह राखवो होय तो नीचे प्रमाणे उत्थापनिका आपवी पडे: (मात्र षट्कलो बतावीश)

मूरखो;
रळीर; ळी क; माणो रे; माथे; मेलसे; मोटो; पाणो; ---;
थाईयू; तीने धन; भेळुं; कीधुं; कोटी; ध्वज के; वाणो;---
पुण्यने; नामे; पाजेन; वावर्यो; अधवच; थीलुं; टाणो; मूरखो
रळीर; ---

आवी रीते उत्थापनिका आपतां अनक्षर संधिओ पंक्तिने अंते स्पष्ट देखाशे. आंतराना ए अनक्षर विभागमां ज ध्रुवनुं पहेलुं षट्कल कलम थई रोपाय छे ए खूबी वधारे स्पष्ट थशे. पण एम करवा जतां ध्रुवनो मात्र एक पहेलो शब्द पंक्तिमांथी टाळीने तेनी स्वतंत्र पंक्ति बनाववी पडशे, अने ए पण विलक्षण ज लागशे. खरुं तो आ संगीतना प्राधान्यनुं परिणाम छे अने अहीं पण आपणे पिंगलना सादा स्वरूपने वळगी रही उत्थापनिका घटावीए ए योग्य छे. हवे नीचेनुं पद लउं :

रे शिर साटे नटवरने वरिये, रे पाछां ते पगलां नव भरिये रे शिर०
रे अंतर दृष्टि करी खोळयुं, के इहापण झाझुं नव डोळयुं,
ए हरि सारु मायुं घोळयु, रे शिर०

बृ. का. दो. १, पृ. ७९५

आम पहेली दृष्टिए आनी पंक्तिओ वधारे ओछी संख्याना संधिओनी जणाय पण संगीतना एकम तरफ ध्यान राखी उत्थापनिका करतां पंक्तिओ समसंख्य संधिओनी जणाशे. रचना षट्कलमां गवाय छे अने हुं षट्कलोमां ज उत्थापनिका करुं छुं :

रे] शिरसाटे; नटवर; ने वरी;ये-
रे;] पाछां ते; पगलां-; नव भरी;ये-
रे;] शिर साटे; नटवर; ने वरी;ये-
रे;] अंतर; दृष्टि क;री खो-;यूं-
के;] इहापण; झाझूं-; नवडो-; ळयूं-
ए;] हरिसा-;रु मा-; थूं घो-;ळयूं-
रे;] शिर साटे; - - - - - -

आ ज पद आटली सरलताथी सप्तकलमां पण गवाय छे, त्यारे उपरनो दरेक षट्कल संधि एनो ए ज रहे छे, अने तेमां दरेकमां बीजी मात्रा पछी

एक मात्रा उमेराय छे, अने ए रीते सप्तकल बने छे. वधारानी मात्रा सर्वत्र ⌣ चिन्हथी हुं बतावीश.

रे] शिर⌣साटे; नट⌣वर; ने⌣वरी; ये⌣ –

रे;] पा⌣छां ते; पग⌣लां– ; नव⌣भरी; ये⌣ –(टेकनी पंक्ति फरी लखतो नथी)

रे;] अं⌣तर; दृ ⌣ष्टि कर; री⌣जो –; यूं⌣ –

के;] इहा⌣पण; झा⌣वूं –; नव⌣डो – ; ळपूं⌣ –

ए;] हरि⌣सा –, रू⌣मा –; यूं⌣वो –; ळपूं ⌣ – (टेक नथी लखी)

सप्तकल रचनामां संधि लघुथी शरू थाय त्यारे लदादादा संधि अने गुरुथी शरू थाय त्यारे दालदादा संधि वपरायो छे ते स्पष्ट छे. आ प्रमाणे :

शिर⌣साटे; नट⌣वर; ने⌣वरी; ये⌣ –
लदा दादा; लदादादा; दालदादा; दालदा

आ बन्ने संधिओ एक ज रचनामां भळी शके एवा छे ए आपणे सप्तकलना जातिछंदोनी चर्चामां जोई गया छीए (गत पृ ४७३).

अहींथी सप्तकल रचनाओ ज हवे लईए. जातिछंदोमां त्रिकल पछी पंचकल आवता हता पण पंचकलनी स्पष्ट देशीओ बनी नथी. प्रेमानन्दे भुजंगी छंदनी देशीओ लखी छे, ते मात्र वधारे शिथिल करेलो भुजंगी ज छे. तेमां देशीओनां बीजां कोई खास लक्षणो नथी. अलबत्त पिंगल अने संगीतना समान अधिकारनी भूमिमां दशकल रचनाओ आवे छे ते आपणे ते संबंधीना परिशिष्टमां जोईशुं. एटले हवे सप्तकलनी देशीओ लईए.

सप्तकलनी देशीओमां सौथी पहेली ढाळनी रचना स्मरणमां आवे छे. आ रचना एटली बधी प्रसिद्ध छे के अहीं मात्र तेनुं एक ज दृष्टान्त आपीश.

धरा जीती, घर थकीरा, खडग तणि पर, तापि
मंत्रीनिं ते, राज सोंपी, भोगवी सुख, आपि ४५
यौंवन जाणी, प्रीत आणी, राणीं बहु अति, रम्य
तजी व्रीडा, करि क्रीडा, अप्सरानीं अ, गम्य ४६
कादंबरी, पृ. ३६

में पाठमां ज सप्तकलो दर्शावतां अल्पविरामो करेलां छे ते उपरथी आनुं सामान्य स्वरूप दालदादा दालदादा दालदादा गाल छे ए स्पष्ट थशे.

क्वचित् तेमां लदादादानुं मिश्रण थाय छे, जे संवादने प्रतिकूळ नथी. संगीतना जे ताल उपरथी आ संधि निष्पन्न थयो छे, एटले के दीपचंदी ताल ते संगीतमां जरा कठण अने अटपटो गणाय छे पण गुजरातने ते बहु फावी गयो छे. अने अभण स्त्रीओ आ तालनां लोकगीतो अने अभण बावा आ तालनां भजनो बहु आसानीथी गाय छे. नीचेनी लोकगीतनी पंक्तिओ सप्तकलनी छे:

जोगीडापणुं रे शिवजी तमारुं में जाण्युं रे
जटामां घालीने कोने आवुं क्यांथी आण्युं रे

जोॅगीडाप, णुं रे शिवजी, तमारुं में, जॉण्युं रे –
लदादादा, ल दा दा दा, लदा दादा, ल दा दादा
जटामां घा,लीॅने कोने, आॅवुं क्यांथी, आॅण्युं रे –

नरसिंह महेतानां, झूलणामां न होय एवां घणां भजनो आवी रचनानां होय छे. एनुं नागदमननुं पद आ जातनी रचना छे.

जल कमल छांडी जाने बाला स्वामी अमारो जागशे;
जागशे तने मारशे मने बाळहत्या लागशे.
नरसिंह मेहताकृत, काव्यसंग्रह, पृ. ४६३

जल] कमल छांडी, जानेॅ बाला, स्वाॅमीॅ अमारो, जागशे –
दाल दादा, दाल दादा, दा लदादा, दालदादा

परभातियां पण आ संधिरचनानां होय छे:

माता रे जॅ, सोॅदा हरिने, घूॅमॅण घा, लेॅ – – –
ल दा दादा, ल दा दादा, लदादा दा, लदादादा
एजन, पृ. ४६५

तेम ज

जाॅगो रे जशोॅ, दाॅना जीवन, व्हाॅणेलां वा, यां – – –
लदा दा दा, लदा दादा, लदा दा दा, ल दादादा

ए ज प्रमाणे

भोॅळी रे भर,वाॅडण हरि ने, वेचवा चा, ली – – –
ल दा दा दा, लदा दा दा, दालदा दा, लदादादा

छेल्लां त्रण दृष्टान्तोमां जेमां एक ज अक्षर आखुं सप्तकल पूरे छे त्यां ए अक्षर लघु थईने सप्तकल पूरे छे एम मानवानी जरूर नथी. एनी नीचे लखेलो ल ए त्यां पारिभाषिक ल छे. ए अक्षर आखुं सप्तकल पूरे छे एटलो ज अर्थ छे. बाकी आवी घणी रचनाओमां गुरु पण लघुनुं स्थान साचववा लघु बने छे, ए उपरनां दृष्टान्तोमां जोयुं हवे. एक वधारे अटपटी रचना लईए.

सरस्वती छंदनी चाल

श्री गुरु प्रतापे गाईए किरपा ते साधु जंन,
परिब्रह्म मारो आतमा मारुं मंन ते अरजुन्न.
अरजुन सुणो गीतासार, पांडव मानजो निर्धार,
संसार सुं सरसो रहेने मंन मारी पास,
संसारमां लेपाय नहि ते जाण मारो दास. अरजुन

उत्थापनिका :

श्री] गुरु प्रतापे, गाइए किर, पातें साधुं, जंन्न
दालदादा, दाल दा दा, दा ल दादा, दालदा
परि,] ब्रह्म मारो, आतमा मारुं, मंन ते अर,जुन्न
दा, दाल दादा, दालदा दा, दालदादा, दाल

अरजुन] सुणो गीता, सार पांडव, मानजो निर, धा ‿ र
दादा, लदा दादा, दाल दादा, दा लदादा, दालदा

सं] सार सुं सर, सो रहे ने, मंन मारी, पा ‿ स
दा, दाल दा दा, दालदादा, दाल दादा, दालदा
सं] सारमां ले, पाय नहि ते, जाण मारो, दास
दा, दालदादा, दाल दादा, दाल दादा, दाल
अरजुन] सुणो गीता, ...
दादा, लदादादा . . . .

आंतरो अने ध्रुवो बधी पंक्तिओनी संधिसंख्या सरखी ज छे. सप्तकलोनी बहु सुंदर पासादार रचना छे.

एक जरा जुदा ढाळनी गरबी लईए :

कानूडो रे कानूडो रे जमनाजीने आरे पाणीडां वारे रे बेनी कानूडो
" " " " ओचितो आवे, आवीने बोलावे रे " "
" " " " फोडे जळनी हेलुं, बोले कालुं घेलुं रे " "

" " " " वृंदावनमी वाटे बाझे महिने माटे रे " "
" " " " ढोलरियो थै डोले, जेम तेम बोले रे " "
" " " " ब्रह्मानंद कहेली, कीधी मुने घेली रे " "

बृ. का. दो. २, पृ. ८१५

बब्बे पंक्तिनी कडी नथी, पण दरेक पंक्ति स्वतंत्र छे. एवुं होय त्यारे सामान्य रीते पंक्तिनी अंदर आंतरप्रास होय छे ते आमां छे. आनो न्यास :

कॉनूडोरे, कानूडोरे, जमनाजीने, ऑ रे पॉणीडां, वॅरिरे बेंनीं, कॉनूडो–
लदादादा, लदादादा, लदादादा, ल दा दा दा, लदादा दा, लदादादा,

ओ–चितो, ऑवि ऑवीं नेंबों, लॉवे रे बें नीं,
दालदादा, लदा दा दा, लदा दा दा

दरेक पंक्तिमां कुल छ सप्तकलो छे. पंक्तिना आदिमां अने अंतमां एम बन्ने छेडे ध्रुवखंडो छे. प्रारंभनो ध्रुवखंड पहेलां बे सप्तकलो रोके छे. अंतनो ध्रुव खंड पांचमा सप्तकलनां छेल्लां बे द्विकलो अने छेल्लुं छठ्ठुं सप्तकल आखुं रोके छे. आंतर प्रासनी खूबी एवी छे के चोथा अने पांचमा सप्तकलोनां आद्य लदामां ए आवे छे. आ कृतिमां केटलीक पंक्तिओमां गुरुओने ठांसी ठांसीने भरेला छे एवुं जणाशे. 'ओचितो०' ए पंक्तिमां एक ज सप्तकलमां पांच गुरुने लघु करवा पडे छे, ते हुं मानुं छुं भावनी घनता अने त्वरा माटे छे. ए ज ढाळनुं एक बीजुं वैराग्यनुं गीत छे तेमां एवुं गुरुनुं भरतर नथी :

जावुं छे रे जावुं छे, जावुं छे नेदान, भज भगवान, रे जीव जावुं छे.
जावुं छे रे जावुं छे रे, रेवानुं छे कांनुं, मानी लेजे साचुं, रे जीव जावुं छे.
जावुं छे रे जावुं छे रे, माल धन मेली, ठालुं ठेली, रे जीव जावुं छे.

कीर्तनसंग्रह, पृ. ७६, ७७.

आमां उपरना करतां रचना बहु ज सरल अने प्रसन्न प्रवाहवाळी जणाशे.

१५

असमसंख्यसंधिबद्ध पंक्तिओनी देशीओ

एवी केटलीक देशीओ मळे छे जेमां संगीतना प्राधान्यने लीधे, दरेक पंक्तिमां संधिओनी संख्या सरखी न होय, अर्थात् ओछीवत्ती संख्याना संधिओ पंक्तिओमां होय. अहीं पण आपणे रचनाओ बने त्यां सुधी गया प्रकरणना क्रमे ज लईशुं.

सत्यभामानुं रूसणुं

जाण्युं जाण्युं हेत तमारुं जादवा रे लोल;
हेत ज होय तो हैडामां वरताय जो;
अमे तमारी आंखडिये अळखामणां रे लोल,
वालप होय तो नयणामां झळकाय जो.

बृ. का. दो. १, पृ. ८३९

चतुष्कल रचना छे. न्यास :

जाण्युं, जाण्युं; हेत त,मारुं; जा ⏑ द, वारे; लो –, – ⏑ ल;
हेत ज, होय तो; हैडा, मां वर; ता ⏑ य, जो –;
अमे त,मारी; आंखडि, ये अळ; खा ⏑ म, णांरे; लो –, – ⏑ ल;
वालप, हो॑य तो; नयणा, मां झळ; का ⏑ य, जो – ; ध्रुव

पहेली पंक्तिमां एटले के विषम पंक्तिमां चार अष्टकलो एटले आठ चतुष्कलो छे, बीजीमां एटले सममां त्रण अष्टकलो छ चतुष्कलो छे. पहेली पंक्ति ३२सी छे, बीजी २४सी, प्लवंगमनी, 'ओधवजी संदेशो०' देशीनी छे.

जरा जुदा ढाळनी पण आने मळती बीजी देशी लईए :

सजनी श्रीजी मुजने सांभर्या रे,
हैडे हरख रह्यो उभराय;
नेणे आंसुनी धारा वहे रे
विरहे मनडुं व्याकुळ थाय.
सजनी श्रीजी मुजने सांभर्या रे.

बृ. का. दो, १, पृ. ८०१

आनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

सजनी] श्रीजी, मुजने; सां ⌣ भ,र्यां रे ⌣;
हैडे, हरख र;ह्यो उभ, रा ⌣ य;
नेणे, आंसु;नी धा, रा ⌣ व; हुँ रे ⌣,
विरहे; मनडुं, व्याकुळ; था ⌣ य,
सजनी; श्रीजी, मुजने; सां ⌣ भ,र्यां रे ⌣;

आ पांच पंक्तिओनो एक संगीत एकम बने छे. एमां एकी पंक्तिओमां पांच चतुष्कलो छे, अने बेकीमां चार छे. बधी एकी पंक्तिओ एक ज ढाळथी गवाय छे, अने बेकी पंक्तिओ तेनाथी जुदा पण एक ज ढाळमां गवाय छे. छतां तेमां एक भेद छे. पहेली अने त्रीजी पंक्ति एक सरखी गवाय छे पण पहेलीमां पहेलुं चतुष्कल मूक्या पछी अष्टकल ताल शरू थाय छे, अने त्रीजीमां पंक्तिना प्रारंभथी ज अष्टकल ताल शरू थाय छे, बन्ने बेकी पंक्तिओमां पण एवो ज भेद छे. बीजी पंक्तिमां पंक्तिना प्रारंभथी ज अष्टकल ताल शरू थाय छे. चोथीमां पहेला चतुष्कले आगली पंक्तिना चतुष्कल साथे संधायेलुं अष्टकल पूरुं थई, पंक्तिना पहेला चतुष्कल पछी अष्टकल शरू थाय छे. आ भेदनुं कारण ए छे के पहेली पंक्तिमां पांच एटले के एकी संख्यानां चतुष्कलो छे. तेनी आगळ आवी गयेली 'जाण्युं जाण्युं हेत०' वाळी देशीमां एम नथी थतुं कारण के दरेक पंक्ति बेकी संख्यानां चतुष्कलोनी छे. उपरना 'सजनी०' गीतमां चार पंक्तिए बेकी चतुष्कल संख्या (१८) थई रहे छे एटले त्यां 'सजनी०' पंक्तिनी ध्रुव मूकीने छंदनो एकम पूरो कर्यो छे, अने त्यां ध्रुव पंक्तिनो मूळ ताल एनो ए ज रहे छे. ध्रुवने पहेली बे पंक्तिओ पछी मूकी होत तो ए ध्रुवमां तालव्यवस्था त्रीजी पंक्ति जेवी करवी पडत. एम एक ज ध्रुव पंक्तिने जुदा जुदा तालमां मूकवी पडे ए संगीतनो दोष गणाय. एटले आवी असमसंख्यसंधि पंक्तिओमां ध्रुवपंक्ति एक सरखा तालवाळी आवे एने माटे संभाळ राखवी जोईए. पण कोई कोई लोकगीतोमां आ तालनी चीवट एटली बधी रखाई होती नथी. त्यां अष्टकल ताल एक सरखी गवाती पंक्तिओमां पण फरतो रहे छे. पण लोकगीत तेनी दरकार करतुं नथी. नीचेनी प्रसिद्ध देशी एवा प्रकारनी छे :

सोनला गेडि रे रूपला दडूलो रे
कान कुंवर गेडीदडे रमवा जाय
झाडवे चडीने दडूलो दोटोवियो रे
जई पड्यो जळ जमनानी मांह्य

• • •

कां तो तारी माताए तुजने मारियो रे
कां तो तारे दादे दीधी गाळ
कां तो तारे भेरुए तुजने भोळव्यो रे
कां तो तारे घरडे नार कजात.

पंक्तिओ सांभळेली ते प्रमाणे लखी छे. गीत गवातां तेनां नीचे प्रमाणे चतुष्कलो पडे छे.

सोँनला, गेँडिरे; रुपलाँ द,डूऽड;लोँ रेऽ, १
काँनकुंवर्; गेँडिदडेँ, रमवा; जाऽय, २
झाँडवे; चडिने, दडुलोँ दोँ; टाऽवि, योँरेऽ; ३
जैं पड्योँ, जळ जम; नानी, मोऽह्य; ४
काँ तोँ ताँरीँ, माँताँए; तुजने, माऽरि; योरेऽ, ५
काँ तोँ ताँरेँ; दादे, दीधी; गाऽळ, ६
काँ तोँ ताँरेँ; भेँरुए, तुजने; भोऽळ, व्योँरेऽ; ७
काँ तोँ ताँरेँ, घरडे; नार क, जाऽत; ८

आमां 'सजनी*' देशीनी पेठे ज एकी पंक्तिमां पांच चतुष्कलो पडे छे, बेकीमां चार. आम एकी संख्या आववाथी एकी पंक्तिओ एक ज रीते गवातां छतां तेनां अष्टकलो एक ज जगाए आवतां नथी. पंक्ति १ अने ५मां प्रारंभथी अष्टकल शरू थाय छे; पंक्ति ३ अने ७मां पहेलुं चतुष्कल छोडीने अष्टकलनो प्रारंभ थाय छे. पंक्ति २ अने ६मां पहेला चतुष्कल पछी अष्टकल शरू थाय छे: पंक्ति ४ अने ८मां प्रारंभथी ज अष्टकल शरू थाय छे. सामान्य दृष्टिए जोईए तो बब्बे पंक्तिओनी कडी पडे छे, अने छतां दरेक कडीमां अष्टकल एक ज रीते शरू नथी थतुं. कोई पण कडीथी शरू करवा जतां विमासणमां पडीए के ए कडीमां अष्टकल ताल क्यांथी शरू करवो. 'सजनी*' देशीमां आ वांधो नहीं आवे कारण के पांच पांच पंक्तिना एकमो ध्रुवथी नक्की थई गया छे, अने दरेक एकम एक सरखो ज गवाय छे. 'सोनला*' गीतमां पण जो चारचार पंक्तिए पांच चतुष्कलनी ध्रुव आवत तो आ मुश्केली न रहेत. पण लोकगीते संगीतनी सफाई तरफ एटलुं ध्यान आप्युं नथी. पण तालनी आ अस्थिरता छतां, चतुष्कलनो प्रवाह चाल्या करे छे, एटले गवातां तेनो दोष देखातो नथी. संगीतनी दृष्टिए आने माटे एम कहेवाय के आमां तालव्यवस्था दूषित छतां, लय सचवाई रह्यो छे. आ जातनी गरबीओ नरसिंहमां छे. नरसिंहनी चार पंक्तिओ लईए:

मोरलीँनेँ वाँळोँ रे बाँई माँरेँ मन वस्योँ रे

सुंदर मुखडुं श्याम वदन;
मोर मुगट रे वा'ला'जी'ने' शोभतां' रे
कुंडळ झळके हरिने करण
मोरलीने वाळो रे बाई मारे मन वस्यो रे.

नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह, पृ. ४०४

गावामां अने तालमां पण बराबर 'सोनला*' गरबीने आ मळती छे. फेर मात्र एटलो छे के चार पंक्तिए ध्रुव आवे छे एटले ताल पांच पांचना एकममां एक सरखो चाल्या करे छे. नरसिंह महेताना संग्रहमां आ ढाळनी गरबीओ एवी रीते छपाई छे के ए आ गरबीना ढाळनी छे एवो संशय पण न जाय. छापवामां पंक्तिओनी एवी व्यवस्था राखवी जोईए के जेथी बने त्यांसुधी ढाळनुं सूचन थाय—छेवट पंक्तिओ तो बराबर देखाय.

पंक्तिओमां विषमसंख्य संधिओ होय त्यारे तालव्यवस्था केवी रीते थाय छे ते स्पष्ट करवा 'सजनी*'ना ढाळनी ज पण जरा जुदा बंधवाळी एक रचना न्हानालालनी आ नीचे लउं छुं. कदाच न्हानालालने ए रचनानो ढाळ उपरनी 'सजनी*' रचना उपरथी ज सूझ्यो हशे, कारण के सजनी रचना स्वामिनारायण संप्रदायना कविनी छे. कवि उपर ए संप्रदायनां काव्योनी घणी असर छे.

जगत उतारी दिव कर देवने' रे:
साचवजो ए प्राणविराम जो!
भींजे दानसमय अम आंखडीं' रे
नथि अपशुकन घडी अभिराम जो
ल्यो, ने करजो जतन अधीकडुं रे

'धर्मरायना पार्षदने'—केटलांक काव्यो भा. २

आ गरबी गवातां तेनां चतुष्कलबद्ध अष्टकलो नीचे प्रमाणे पडे छे:

जगत उ,]तारी, दिव कर; दे‿व, ने'रे‿;
साचव, जो ए; प्राण वि,रा‿म; जो–,
भींजे; दान स,मय अम; आं‿ख, डीं'रे‿;
नथि अप,शुकन घ;डी अभि, रा‿म; जो–
ल्यो ने; करजो, जतन अ,धी‿क, डुं रे‿;

'सजनी*'नो ज ढाळ छे, पण एक तफावत छे. 'सजनी*'मां एकी पंक्ति, पांच चतुष्कलनी हती, बेकी चारनी हती; अहीं एकी तो पांचनी ज छे

पण बेकी पण पांचनी होवाथी, बव्वे पंक्तिए संधिओनी संख्या सम(१०) थई रहे छे, एटले बधी एकी पंक्तिओनां अने बधी बेकी पंक्तिओनां अष्टकलो एक सरखां ज चाले छे. 'सजनी॰' अने ते पछी अहीं सुधी लीघेली बधी ज गरबीओमां एकी पंक्तिना छेल्ला बे संधिओ गा⌣ल, लगा⌣; एक सरखा आवे छे अने तेमां विशेष ए छे के अंत्य लगा⌣ना आद्य लनी जगाए सर्वत्र गुरु छे जेने लघु बोलवानो होय छे. एथी गावामां एक जातनी लचक आवे छे, ते सुंदर लागे छे. 'सोनला गेडी॰' लोकगीतमां घणा गुरुओने लघु करवा पडे छे. न्हानालालनी रचनामां पण घणी कडीओमां एम करवुं पडे छे पण में एवी ओछामां ओछी छूटवाळी कडी दृष्टान्त माटे पसंद करी छे. आ प्रमाणे गुरुओने लघु करवा पडे छे छतां गावामां कशी कढंगता आवती नथी, क्यांक एक प्रकारनी उच्चार-विलक्षणताथी —लचकथी त्यां गीत सुंदर पण लागे छे. एक बीजी चतुष्कल रचना लउं छुं जेमां उपर करतां वधारे लांबी प्लुति आवे छे:

माता जसोदा झुलावे पुत्र पारणे;
झूले लाडकडा पुरुषोत्तम आनंदभेर;
हरखी निरखीने गोपीजन जाये वारणे,
अति आनंद श्रीनंदाजीने घेर. माता॰

दयारामरससुधा, पृ. १२

परंपरा प्रमाणेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे छे:

माता] जसो,दा झू; लावे, पुत्र; पा–,–र; णे–,
झूले;] लाडक, डा पुरु; षोत्तम, आनंद; भे⌣र,
हरखी;] निरखी, ने गो; पीजन, जाये; वा–,–र; णे–,
अती;] आनं,दश्री; नंदा, जीने; घे⌣र,
माता;] जसो,दा झू; लावे, पुत्र; पा–,–र; णे–

आमां एकी पंक्ति आठ चतुष्कलोनी छे अने बेकी छ चतुष्कलोनी छे. बन्नेमां चतुष्कलोनी संख्या बेकी छे अने अष्टकल ताल एक सरखो बधी पंक्तिओमां चाले छे. अलबत्त पहेली पंक्तिमां प्रारंभथी अष्टकल शरू थतुं नथी, पण पहेलुं चतुष्कल छोडीने थाय छे, पण बधी पंक्तिओमां संधिसंख्या बेकी होवाथी पछी दरेक पंक्तिमां, एकी बेकी बधी ज पंक्तिओमां पहेलुं चतुष्कल छोडया पछी अष्टकलो शरू थाय छे. एकी पंक्तिने अंते गा–, –गा; गा– आवे छे ए देखीती भंगी छे. तेवी ज रीते बेकीमां गा⌣ल आवे छे. गीत प्रसिद्ध छे.

उपर आपेली 'सोनला गेडी॰'नुं लोकगीत षट्कलमां पण गाई शकाय :

सोन, ला⌣; गेडि, रे⌣; रूप, ला द; डू⌣, –ड; लों रे,–⌣;

कान, कुंवर; गेडि, दडे; रम,वा⌣; जा⌣–य;

आमां दरेक पंक्तिमां षट्कलो आखां आवी जाय छे, पहेलीमां पांच, बीजीमां चार, एटले दरेक पंक्ति षट्कलथी शरू थाय छे, अने तालव्यवस्थामां कशी भांजगड करवी पडती नथी.

आपणे त्रिकल षट्कल रचनाओमां ज हवे आगळ चालीए. प्रथम एक त्रिकलषट्कल देशी लईए जे ढाळमां 'सजनी॰'ने कंईक मळती छे.

सहु कोई भावे भजो भगवानने रे,
मारुं कह्युं करोनी भ्रात;
ए वण सार नहीं संसारमां रे,
मन जोजो विचारी वात. सहु कोई॰

बृ. का. दो. १, पृ. ५८६

सहु को] भावे भ; जो⌣भग; वानने⌣; रे⌣
दा ल] दा दा दा; दाल लदा; दाल दाल; दाल

मा रुं; कह्युं क; रो⌣नी⌣; भ्रात
लदा; दा दादा; दाल दाल; दाल

एँवण; सारन; हीं⌣सं⌣; सारमां⌣; रे⌣
दाल; दादादा; दाल दाल; दाल दाल; दाल

मन; जो जो वी; चा⌣री⌣; वात,
लदा; दादादा; दाल दाल; दाल

सहुको; भावे भ; जो⌣भग; वान ने⌣; रे⌣–⌣

घणी त्रिकल षट्कल रचनाओमां बने छे तेम अहीं प्रथम एक ताल बहारनुं त्रिकल आवी, पछी षट्कल ताल शरू थाय छे. तेमां पण विशेष ए छे के पहेला त्रिकल पछी एक त्रिकलरहित षट्कल ज आवे छे, अने पछी त्रिकलबद्ध षट्कलो आगळ चाले छे. आ प्रकारनी घणी रचनाओमां एम बने छे. उपरनी रचनामां पहेली पंक्तिमां तालरहित त्रिकल पछी कुल त्रण षट्कलो आवी अंते एक त्रिकल आवे छे, अने बीजी पंक्तिमां प्रथम तालरहित त्रिकल आवी पछी बे षट्कलो आवी अंते एक त्रिकल आवे छे.

ए रीते बेकी पंक्तिमां एक षट्कल ओछुं छे. दरेक पंक्तिना अंतमां एक दाल आवे छे जे पछीनी पंक्तिना पहेला दाल साथे जोडाई षट्कल बने छे. एम दरेक पंक्ति पछीनी पंक्ति साथे रेणाई जाय छे. ध्रुवनी पंक्ति ए ज रीते आगली साथे रेणाई जाय छे. काव्य ध्रुवथी पूरुं करवु होय, त्यारे अंत्य दालने ज लंबावीने षट्कल पूरुं करवु जोईए. आ ज प्रकारनी एक बीजी रचना छे:

कर प्रभु संगाथे दृढ प्रीतडी रे,
मरी जावुं मेली धनमाल;
अंतकाळे सगुं नहीं कोईनुं रे.

बृ. का. दो. १, पृ. ७९६

उत्थापनिकानी जरूर नथी. एक बीजी प्रसिद्ध गरबी लईए:

आजनी घडी रे रळियामणी
हां रे म्हारा व्हालाजी आव्यानी वधामणी जी रे आजनी०
हां रे सोहागेण पूरोनी साथिया
हां रे घेर मलपता आवे ते हरि हाथिया जी रे आजनी०

उत्थापनिका:

आजनी घ; डी रें रळी; यामणी⌣;

हां रें म्हा॑रा; व्हाला॑ जी॑आ; व्यानी व॑; धामणी⌣; जी रे–; आजनी आवी ज एक प्रसिद्ध गरबी:

आंनद सागर ऊलटयो रे लोल
श्री वसुदेव देवकीने द्वार जो
आठम भादरवा वदी रे लोल
रोहिणी नक्षत्र बुधवार जो
प्रगटया श्रीकृष्ण मन भावता रे लोल.

घोळ पदसागर भा. १, पृ. ४१९

उत्थापनिका:

आनंद; सा⌣गर; ऊलटयोरें; लो⌣ल

श्री] वसुदेव; देवकी॑ने; द्वार जो⌣;

आठम; भा⌣द र; वावदी रें; लो⌣–ल;

रोहिणी न;क्षत्र बुध; वार जो ⏑;

प्रगटया श्री;कृष्णमन; भावतारें; लो⏑–ल;

दयारामनी 'गरबे रमवाने गोरी नीसर्यां रे लोल' ए गरबी आ ज ढाळनी छे. ध्रुवना दृष्टान्त तरीके आपणे ए गरबी १२मा प्रकरणमां जोई गया. हजी दयारामनी एक त्रिकल–षट्कल गरबी लउं छुं:

श्याम रंग समीपे न जावुं, मारे आज थकी श्यामरंग समीपे न जावुं.
जेमां काळाश ते तो सौ एकसरखुं,
सर्वमां कपट हशे आवुं. मारे आज थकी श्यामरंग समीपे न जावुं
कस्तूरी केरी बिंदी तो करूं नहीं.
काजळ ना आंखमां अंजावुं, मारे आज थकी श्याम रंग समीपे न जावुं.
द. र. सु. पृ. १७

उत्थापनिका :

श्याम रंग;समीपेन;जावुं मारें! आज थकी;श्याम रंग;समीपेन;जा⏑वुं⏑;
जेमांका; ळाश तें तो; सौ⏑एक; स⏑रखुं⏑;
सर्वमां⏑;कपट हशे;आवुं मारें;आज थकी;श्याम रंग;समी पेन;जा⏑वुं⏑;

प्रथम एक नानी वात नोंधी लईए. पहेली पंक्तिमां 'जावुं' बेवार आवे छे. तेमां प्रथम 'जावुं' त्रिकल छे, अने अंत्य 'जावुं' षट्कल छे. प्रास आखा काव्यमां सळंग छे, एकनो एक प्रास चाल्यो आवे छे, अने ते पहेली पंक्तिना पहेला 'त्रिकल 'जावुं' साथे मळे छे. सामान्य रीते ध्रुवखंड आखो लखातो नथी, तेनो पहेलो शब्द मात्र प्रतीक तरीके लखाय छे. पण ए ध्रुवखंड मळीने ज संगीतनो एकम बने छे माटे ध्रुवखंडनी आखी पंक्ति में लखी छे. अने पंक्तिओ परंपरा प्रमाणे न पाडतां, संगीतना आखा एकमना अवयवो प्रमाणे पाडी छे. गावामां 'सर्वमां॰' 'काजळ॰' ए पंक्तिओ पहेली 'श्याम रंग॰' पंक्ति साथे समान्तर स्वरे गवाय छे, माटे लखवामां पण तेने ए ज स्थान आपेलुं छे. 'जेमां काळाश॰' 'कस्तूरी॰' ए पंक्तिओ आंतरा पेठे आरोहथी गवाय छे, ते में जुदी पाडीने बतावी छ. ए रीते आमां लांबी पंक्ति सात षट्कलोनी थाय छे, अने टूंकी पंक्ति चार षट्कलोनी थाय छे. अने एम वारा फरती आवती पंक्तिओमां गरबी आगळ चाले छे. एक बीजी लोकगीतनी गरबी लईए :

शरद पूनमनी रातडी ने
कांई चांदो चडयो आकाश रे

आवेल आशा भर्यां रे
वनरा ते वनना चोकमां
कांई नाचे नटवर लाल रे
आवेल आशा भर्यां रे

न्यास :

शरद् पू;नमनी ⌣; रा⌣–त; डी नें
कांइ;] चांदो च;ड्यो ⌣आ⌣;काश रे⌣;
आ⌣वेल; आशा भ;र्यां रे–;
वनराते; वनना ⌣; चो⌣–क; मां ⌣
कांइ;] ना⌣चे⌣; नटवर; लाल रे⌣
आ⌣वेल; आशा भ;र्यां रे–;

पहेली अने चोथी पंक्तिमां आखुं त्रीजुं षट्कल मात्र गाल रोके छे ए गरबीनी भंगी छे. षट्कलो बहु सुंदर रीते वहेंचायेलां छे. पहेली बे पंक्तिओमां दरेकमां त्रण षट्कलो अने एक त्रिकल छे छतां पिंगल दृष्टिए भेद छे के पहेली पंक्ति सताल षट्कलोथी शरू थई तेमां त्रण षट्कलो पछी एक त्रिकल आवे छे, ज्यारे बीजी ताल बहारना त्रिकलथी शरू थाय छे अने त्रण षट्कलो ते पछी आवे छे. अलबत्त एम थवाथी पहेलीनुं अंत्य त्रिकल बीजीना आद्य त्रिकल साथे जोडाई त्यां आखुं षट्कल बनी रहे छे. पंक्तिओमां कोई जगाए प्रास नथी. प्रासनी अपेक्षा दर कडीए आवती आखी पंक्तिव्यापी ध्रुवथी संतोषाय छे.

उपरनी रचनाओमां कडीओ बब्बे पंक्तिओनी नथी, कोई कोई विषम-पंक्तिओनी छे, ते तरफ ध्यान गयुं हशे. देशीओमां केटलीक त्रिपदीओ होय छे. प्रबन्धोमां त्रिपदीओ मळे छे.

कडवुं ११ मुं — राग परजियो त्रिपदबंध

रोतो देखी प्रजानो साथ रे,
प्रभावती घसे छे हाथ रे;
केम पेणामां पडशो नाथ, विधाताए शुं लख्युं रे. १
वारे चडजो देव मोरार रे,
रूवे सुधन्वानी नार रे;
जाय घरमां ने आवे बहार, भूली जेम मरघली रे. २

बृ. का. दो. ३, पृ. ७४

न्यास :

रीतो] देखी प्र;जानो–; साथ–; रे

प्रभा;] वती घ; से छे–; हाथ–; रे

केम;] पेणामां; पड्यो–; नाथ वि;चाताए: शुं लख्युं;– – –; रे

आखी रचना त्रिकल विनानां षट्कलोनी छे. विशेष चर्चानी जरूर नथी. आपणां खायणां पण एक शिथिल प्रकारनी रचना छे ते साधारण त्रण पंक्तिओमां लखाय छे :

पाणी भरूने ओढणी मारी फरके
पादरे टोपी झळके
के मारा वीरनी

घणां खायणांमां, मात्र अक्षरविन्यास तरफ जोतां, चतुष्कल के त्रिताळी चोपाई जेवां चतुष्कलो जणाय छे.

पाणीँ भ,रूने, ओढणीँ, मारी, फरके
पादरेँ, टोपी, झळकेँ
केँ, मारा, वी ‿ र,नी –

एम वांचतां चतुष्कलो तरत जणाई आवे छे. पण खायणां षट्कलोमां लांबे सूरे गवाय छे. अने जो के लखवामां त्रण पंक्तिओ आवे छे पण गावामां बीजी त्रीजी पंक्ति भेगी करी गवाय छे एटले ए बे पंक्तिने एक लखवी वधारे प्रामाणिक छे :

पाणी भ;रूने–; ओढणी; मारी–; फरके–;

पादरे; टोपी–; झळकेके; मारा–; वीरनी‿;

खायणां अनेक रीते गवातां सांभळ्यां छे. गुजरातमां उपरनी रीते गवाय छे. काठियावाडमां नीचे प्रमाणे गवातां सांभळ्यां छे : [गुरुचिह्नो नथी मूकतो.]

पाणी भ; रूने–; ओढणी; मारी–; फरके–; जो– –;
पादरे; टोपी–; झळकेके; मारा–; वीरनी ‿; – – –;

अर्थात् पहेली पंक्तिमां एक प्लुत 'जो'नुं षट्कल वधे छे. अने बीजीमां एक अनक्षर षट्कल वधी बन्ने पंक्तिओमां कालसंधिओ सरखा थई रहे छे.

क्यांक ए अनक्षर षट्कल पछी 'खायणां' शब्द अति त्वरित बोलाई नवा षट्कलनी बाकीनी मात्राओ शून्य रहे छे:

बीरनी⌣; – – –; खाँयणां ⌣ ⌣;

अर्थात् आखो शब्द बे मात्रामां बोलाई पछी चार मात्रा अनक्षर तेम ज शून्य रहे छे. एम थाय त्यारे बीजी पंक्ति पहेली करतां एक षट्कल जेटली वधारे लांबी थाय. आ रचनामां कडीने अंते आवतो गालगा, अने 'फरके' 'झळके'नो प्रास तेनी खासियत गणाय.

हवे वधारे अटपटी रचनाओ लईए. तेमां प्रथम मात्र ध्रुवने लीधे पंक्तिओ नानी मोटी थती होय तेवी रचनाओ लईए.

राजकाज मूकीने पडतां नाखि नजर ज्यां पुगे नहीं
दरियापारे गिरियो पाछळ राजरमत संताई रही बालक म्हारां
भणकार

प्रासबद्ध बे पंक्तिओ त्रीसो सवैयो छे, बन्ने पंक्तिओ सरखी छे पण बीजी पंक्तिने अष्टमात्रक ध्रुवखंड लागेलो होवाथी पंक्तिओ असमसंख्य संधिनी बनी छे. एक बीजी रचना लईए:

फूलना पेरी रे जामा फूलना पेरी
फूल्यो रसिक सुजाण जामा फूलना पेरी टेक
फूलनो मूगट कुंडळ फूलनां छे कान
ओढी उपरणी फूलोनी शोभे वालो भीने वान जामा०

उत्थापनिका:

फू⌣लना पे; री रे जामा; फू⌣लना पे; री – – –;
फूल्यो रसिक सु; जा⌣ण जामा; फू⌣लना पे; री – – –;
फू⌣लनो मू; ग⌣ट कुंडळ; फू⌣लनां छे; का – – ⌣न;
ओढि उपरणि फु; लोनी शोभे; वालो भीने; वा⌣न जामा;
फू⌣लना पे; री – – –;

आ रचना बत्रीस मात्रानी पण चोपायानी देशी छे. ध्रुवने लीधे ध्रुवयुक्त पंक्ति एमां लांबी बने छे. चोपाया पछी दोहरानो वर्ग आवे. दोहरा विशे हुं आगला प्रकरणमां कही गयो छुं एटले अहीं तो मात्र ध्रुवने लीधे दोहरानी देशी असमसंख्य संधिवाळी थती होय एवा दाखला ज जोवाना रहे. एवा दाखला में गयां प्रकरणमां कह्युं हतुं तेम जैन कवियोमां विशेष आवे छे जे अत्यारे

बहुपरिचित नहीं होवाथी ते लेतो नथी. पण एक ध्रुवकडी बहु सुन्दर छे, अने सांभळ्या विना पण समजी शकाय एवी सादी छे ते उतारुं छुं:

कपुर हुवै अति ऊजलो रे, वलिय सुगन्ध विलास
तो पण भमरो केतकी रे, जाये लेण सुवास
हे सजनी! जेह्सुं लागो रंग

अंत्य वळगण अने वचमां आवतो तानपूरक 'रे' काढी नाखतां काठुं स्पष्ट रीते दोहरानुं थई रहे छे. तेनी षट्कल उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय.

कपुर हु;वै अति;ऊजलो; रे – –; वलियसु; गन्धवि; ला – –; – –⏑स;
तो पण; भमरो–; केतकी; रे – –; जाये–; लेणसु; वास हो; सजनी–;
जेह्सु; लागो –; रं – – ; – –⏑ग;

विशेष कहेवानी जरूर नथी.

हवे वधारे अटपटी रचनाओ लईए. तेमां प्रथम नर्मदाशंकरनी लावणी लईए:

जय जय गरवी गुजरात
दीपे अरुणुं परभात
जय जय गरवी गुजरात
ध्वज प्रकाशशे झळळ कुसुंबी प्रेमशौर्य अंकीत
तुं भणव भणव निज संतति सहुने प्रेमभक्तिनी रीत
ऊंची तुज सुंदर जात
जय जय गरवी गुजरात

आवी कृति शुद्ध चतुष्कल-अष्टकल रचना छे; उत्थापनिका:

जय] जय गर,वी गुज; रा –,⏑त
दी;] पे अरु,णुं पर; भा–,⏑त
जय;] जय गर,वी गुज; रा –,–⏑त;
ध्वज प्रकाशशे; झळळ कु,सुंबी; प्रेम शौर्य अं; की –, ⏑त
तुं;] भणव भ,णवनिज; संतति, सहुने; प्रेम भक्तिनी; री –,⏑त
ऊं;] ची तुज, सुंदर; जा –, ⏑त
जय;] जय गर,वी गुज; रा –, –⏑त;

बधी लांबी चतुष्कल रचनाओमां आंतरे आंतरे वैविध्य माटे $\frac{\text{दाल}}{\text{लदा}}$ गालदानो द्वैतीयीक संधि आववो जोईए, ते अहीं आवे छे ए नोंधवा जेवुं छे. मणिलाल नभूभाईनी प्रसिद्ध लावणी आने मळती ज छे:

प्रिये रे ते ते क्यम विसराय?
घडी घडी चमकि चित्त उभराय.
अंग तव मार्ग गमन न खमाय;
श्रमित वळि लुलित मुग्ध देखाय;
आलिंगन आथियीलथी चांपुं ते धरी प्रेम,
चूंथायेली मृणालि सरखां दुर्बळ दीसे तेम,
एम मम उर धरि ज्यां ऊंघाय–प्रिये रे०
प्रियेरे] ते ते, क्यम विस; राय
घ,डीघडि; चमकि चित्त उभ; राय
अंग तव; मार्ग ग,मन नख; माय
श्र,मितवळि; लुलित मुग्ध दे; खा–,–⌣य;
आलि,गन अथि; थी⌣ल,थी–; चांपुं, ते धरि; प्रे–,–⌣म;
चूंथा,येली; मृणालि, सरखां; दुर्बल, दीसे; तेम
एम मम; उर धरि, ज्यां ऊं; घाय
प्रिये रे; ते ते, क्यम विस; रा–,–⌣य;

आनां अष्टकलोनी गोठवण 'जय जय गरवी गुजरात' करतां जरा भिन्न छे. अने चतुष्कलो करतां अष्टकलो ज वधारे आगळ पडतां छे. खरुं तो लावणी मूळ ताल ज छे, अने पछी ए तालवाळी रचनाने ए नाम लगाडवामां आव्युं छे. अने लावणी ताल अष्टकल ज छे.

नर्मद अनेक प्रकारनी लावणीओ लखे छे. एक सादामां सादी:

कहां गयूं कनेथी म्हारुं रमकडुं प्यारुं
शुं थयूं हतूं शूं थायुं हवे दिल हार्यूं
नर्मकाव्य, पृ. ७२८

न्यास:

कहां] गयूं कनेथी; म्हारुं, रमकडूं; प्यारुं,–
शूं;] थयूं ह,तूं शूं; थायुं ह,वे दिल; हार्यूं,––;

आनाथी वधारे अटपटी :

जो नि हरणी पेली त्यांह, ऊंट वहु ज्यांह, एकली झूरे;
नव खाय झांखरां तेह, ऊंचि ते नूरे

एजन, पृ. ७२८

न्यास :

जोनि] हरणी, पेली; त्यांह ऊंट वहु; ज्यांह एकली; झूरे, –
नव;] खाय झांखरां; तेह ऊंचि ते; नूरे – – ;

आवी पंक्तिओ आवी गया पछी वधारे टूंकी आवे छे.

शीं कान लाळीं ते स्होय !
मुख रांक डाह्युं शूं होय !
शी आंख आंखने जोय !
मने जोइ झट्ट जइ मांह्य हसी शरमाय, हरख छे ऊरे –– नव०
शी] कान लाळिते; स्होय⌣, –
मुख;] रांक डाह्युं शूं; होय⌣, –
शी;] आंख आंखने; जोय⌣, –
मनें;] जोइ झट्ट जइ; मांह्यह, सीशर; मायह, रख छे; ऊरे,–नव; खाय०

लांबी पंक्तिओनी अंदर आंतर प्रास छे. अने ते प्रास, आगळ छेल्ला प्रकरणमां 'कानूडो रे०' वाळी गरबीमां जेम अडोअड आवेलां बे सप्तकलोना प्रारंभमां आवता लदानो प्रास हतो तेम, अहीं पण बे अडोअड अष्टकलोमां अष्टकलोना प्रारंभमां आवता गालनो ज छे. नर्मदाशंकरे वीरसिंह काव्यमां जे नवो छंद योजेलो छे ते आ लावणीमांनी लांबी पंक्तिनो ज विस्तार छे :

वीरवृत्त

शुभ प्रभात श्रावणमास। पाणिनो भास। एवुं आकाश। दीपतुं स्होय
मधि प्रकाशतो त्हां सूर्य। स्वेतने रक्त। सृष्टि आसक्त। थई रहि जोय

नर्मकविता पृ. ४३२

न्यास नीचे प्रमाणे थाय, अने ए आपतां कवितामां आपेला दंडो काढी नाखवा पडशे :

शुभ] प्रभात श्रावण; मास पाणिनो; भास एवुं आ; काश दीपतुं; स्होय –
मधि;] प्रकाशतो त्हां; सूर्य स्वेतने; रक्त सृष्टि आ; सक्त थई रहि; जोय – – ;

'जोनि हरणी०' करतां अहीं एक अष्टकल वधारे छे एटलो ज फरक छे. प्रास एनो ए ज छे. हवी एक जुदा प्रकारनी लावणी जोईए :

देश दुःखथी जे जन दाझे, शंख सुणी ऊठे,
जसद शुभ शंख सुणी ऊठे,
शंख सुणी ऊठे रे तेहपर प्रभु पण झट त्रूठे.—९
नर्मकविता पृ. ५०२

उत्थापनिका :

देश दुःखथी; जे जन, दाझे; शंखसु, णीऊ; ठे˘
ज, सद शुभ; शंखसु, णीऊ; ठे–,––;
शंखसु, णीऊ; ठे˘ रे तेह पर; प्रभु पण झट त्रू;ठे–,––;

पठन गानमां आ रचना बहु प्रबल छे. आमां पुनरावर्तित थता शब्दोना उपयोगथी कुशळ कवि घणी प्रबल असर उपजावी शके. अहीं जे प्रासो, पुनरावर्तनो, अने प्लुतिओ दर्शावी छे ते सर्व आ छंदनी अंगभूत छे. त्रीजी पंक्तिमां 'ठे˘' लघु थाय छे एने पण छंदनी भंगी ज गणवी जोईए.

आ पछी मराठी चालनी साखी लईए. आ रचना मराठीमांथी आवी छे. मराठीमां आ नामनी बे रचनाओ छे, जेमांथी पहेली ते शुद्ध चोपायो छे. तेने आपणे आ साखीने नामे ओळखता नथी. आपणे ए नाम वधारे जटिल रचनाने आपीए छीए. आ रचनाने कान्ते लोकप्रिय करी छे पण तेनो पहेलो प्रयोग तेमना साहित्यमित्र राजाराम रामशंकरे करेलो छे. आपणे प्रथम एमनु ज दृष्टान्त लईए.

साखी (मराठी चालनी)

शिरा तणां मुखमांथी वहे आ शोणितनी बहु धारा
भक्ष्य योग्य घणुं दिसे हजी आ मांस देहमां मारा
बेठो शूं थाकी, नहि तुज तृप्ति दिसे पाकी

आखी रचना चतुष्कल—अष्टकलनी छे. उत्थापनिका :

शिरात,णां मुख; मांथी, व्हे आ; शोणित, नी बहु; धारा,––;
भक्ष्ययोग्य घणुं; दिसे ह, जीआ; मांस देहमां; मारा,
बेठो; शूं था,की–; नहि तुज, तृप्ति दि;से पा,की–;––––;

पहेली पंक्ति २८सा चोपायानी छे, अने तेनुं आखुं आठमुं चतुष्कल प्लुतिथी पुराई पूरी बत्रीस मात्रा थई रहे छे. बीजी पंक्ति पण पहेली साथे प्रासथी बंधायेली चोपायानी ज छे, पण तेना छेल्ला चतुष्कल पछी प्लुति नथी आवती, पण ए चतुष्कल त्रीजी पंक्तिना पहेला चतुष्कल साथे जोडाई त्यां

अष्टकल पूरुं थाय छे. एटले के त्रीजी पंक्तिमां 'बेठो;' आगळ अष्टकल पूरुं थयुं. ते पछीना अष्टकलनी अंत्य बे मात्रा अनक्षर रहे छे, जे में — करी दर्शावेली छे. ते पछी पंक्तिनुं बीजुं अष्टकल आवे छे, अने ते पछी एक अष्टकल आवे छे, ते ए पंक्तिना पहेला अष्टकल जेवुं प्लुतिबद्ध अने एनी साथे प्रासथी जोडायेलुं होय छे. 'शूंधा, की –;' अने 'से पा, की – ;' ए प्रमाणे. ए पछी एक आखुं अष्टकल अनक्षर रहे छे. त्रीजी पंक्तिमां ए रीते अंते कुल दस मात्रा अनक्षर रहे छे. बीजी रीते कहीए तो, पहेली पंक्ति चोपायानी अने एक अनक्षर चतुष्कल मळी बत्रीस मात्रानी. बीजी पंक्ति चोपायानी, अने त्रीजी पंक्तिना पहेला चतुष्कल साथे बत्रीस मात्रानी. ए चतुष्कल बाद करतां, बाकीनी त्रीजी पंक्ति, कुल दस मात्रानी प्लुति साथे बत्रीस मात्रानी. आ रचनाना प्रासो अने प्लुतिओ एनी विशेषता छे. कहेवानी भाग्ये ज जरूर रहे छे के बीजी पंक्ति अने त्रीजी पठनगानमां सळंग बोलाय छे.

आ पछी आपणे कान्तनी रचना लईए जेमां उपर करतां थोडो फेर छे.

मानस सर

अंतर उछळ्युं हो! सहसा धैर्य गळ्युं हो!
क्षोभ थयो वृत्तिमां अतिशय तरंग जब्बर चाले;
मानस सर मारूं डोळायूं, खूब चलित जल हाले
स्थानक न मळ्युं हो! सहसा धैर्य गळ्युं हो.

पूर्वालाप, पृ. ४३

उत्थापनिका :

अंतर] उछळ्युं हो –; सहसा, धैर्य ग;ळ्युं हो, – –; – – – –;
क्षोभ थ,यो वृ;त्तीमां, अतिशय; तरंग, जब्बर; चाले, – –;
मानस, सरमा; रूं डोळायूं; खूब च,लित जल; हाले,
स्थानक;] न मळ्युं हो –; सहसा, धैर्य ग;ळ्युं हो – –; – – – –;

आमां पण पूर्व दृष्टान्तनी पेठे ज चोपायानी प्रासबद्ध पंक्तिओ आवे छे. पण तेना प्रारंभमां तेमणे त्रीजी पंक्ति जेवी ज पंक्ति मूकी मुखबंध करेलो छे. अने ए मुखबंधमां त्रीजी पंक्ति जेवो ज प्रास, अने प्रासना स्थळे प्लुति मूकी छे. वळी प्रारंभमां मूकेली पंक्तिना प्रथम प्लुतिबद्ध अष्टकल पछीनो भाग ध्रुव करेलो छे, अने ए एटले के पहेली छेल्ली पंक्तिना अंगनुं छेल्लुं चतुष्कल अनक्षर करेलुं छे. एटले के अंत्य पंक्ति पछी बार मात्रानी प्लुतिथी बत्रीस मात्राओ थाय छे.

सद्‌गत बर्वेए आ रचना आपी छे पण तेओ अनक्षर रहेली मात्रा गणतरीमां एटले के न्यासमां बतावता नथी एटले एनो अहीं उल्लेख करतो नथी. पण उपर आपेलुं मारुं निरूपण एनी साथे सरखावी शकाय एवुं छे.

सद्‌गत मेघाणीए आ ज रचना प्रसिद्ध 'कोईनो लाडकवायो' काव्यमां योजेली छे पण तेमां चोपाया पछी आवती पंक्तिना बंधमां थोडो फेर करेलो छे. आपणे जोईए :

एवी कोई प्रियानो प्रीतम आज चिता पर पोढे
एकलडो ने अणबूझेलो अगनपिछोडी ओढे
कोईना लाडकवायाने
चूमे पावकज्वाला मोढे.

आनी उन्यापनिका नीचे प्रमाणे थाय :

एवी, कोइ प्रि;यानो प्रीतम; आज चि,तापर; पोढे,--;
एकल,डोने; अण बू,झेलो; अगन पि,छोडी; ओढे
कोँइना; लाडक, वाया; ने -चूमे; पावक, जवाला; मोढे,--;

मराठी चालनी साखीमां त्रीजी पंक्तिमां पहेला चतुष्कल पछीना अष्टकलने अंते बे मात्रानी प्लुति आवती तेने बदले अहीं बीजा अष्टकलना पहेला चतुष्कलमां आवे छे. अने ए प्लुतिबद्ध संधि साथे त्रीजी पंक्तिनो आंतर प्रास आववाने बदले त्रीजी पंक्ति पहेली बे चोपायानी पंक्तिओ साथे प्रासथी जोडाय छे. आ रचना पण सुन्दर छे. आम आ मराठी चालनी साखीने पण अनेक रीते विकसावी शकाय.

आनी पछी नवलरामे योजेलो मेघ छंद लउं :

एक कुबेर तणो गण रक्षण रोज करे फुल बाग
जे गुणवंत सुजाण चतुर रसरंगी प्रेमी अथाग
संगीत रूप सलूणो
निज पत्नी पद्मिनी नारनुं पाळे व्रत प्रेमे
छे सहज सुगम रहेवुं सदा प्रीतिना नेमे.

मात्र सादा पठन उपरथी ज समजाशे के पंक्तिओ चतुष्कलोमां बहु सरल रीते वहे छे : बीजी पंक्ति दोढायेली छे ते सळंग गवाय छे.

एक कु,बेर त;णो गण, रक्षण; रोज क,रे फुल; बा-,-⏑ग;
जे गुण,वंत सु;जाण च,तुर रस;रंगी, प्रेमि अ;था⏑ग, संगित;
रूपस, लूणो;--,-

निज;पत्नी, पद्मिनी; ना ⌣ र, नूं पा;ळे व्रत, प्रेमे;––,–
छे; सहज सु,गम रे; वूं ⌣ स,दाप्री; तीना, नेमे; ––––;

पण गावामां जेम केटलीक चतुष्कल रचनाओ षट्कलोमां गवाय छे तेम आ पण षट्कलोमां शरू थई अंत सुधी षट्कलोमां गवाय छे. षट्कलोमां तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय: (खास जरूर होय त्यां ज गुरुचिह्न मूकुं छुं.)

एक कु;बेर त;णो गण; रक्षण; रोज क;रे फुल; बा––; ––⌣ग;

जे गुण; वंत सु; जाण च; तुररस; रंगी–; प्रेमी अ; –थाग; संगीत;
रूपस; लूणो–;–

निज;पत्नी–, पद्मिनी;– नार; नूंपा–; ळे व्रत; प्रेमे–; –

छे–; सहजसु; गमरे–; वूं–स; दाप्री–; तीना–; नेमे–;

पण आवी आंतरावाळी रचनाओ कोई वार बे भिन्न तालोमां गवाय छे तेम आ पण गाई शकाय तेवी छे. बीजी पंक्ति 'तुर रस'; सुधी चतुष्कल–अष्टकलमां चाली पछीथी षट्कलोनो प्रवाह चाले एम पण गाई शकाय. प्रेमानन्दनी दाणलीलानी गरबीमां एम थाय छे ए हुं कही गयो छुं.

नरसिंहनी एक बहु ज प्रसिद्ध कृति लउं:

नागर नंदजीना लाल
रास रमंतां मारी नथडी खोवाणी
काना जडी होय तो आल
रास रमंतां मारी नथडी खोवाणी.
नानी नानी नथडी ने मांही घणेरां मोती
नथडीने कारणे हुं नित्य फरूं छुं जोती जोती जोती नागर०

घोळपदसागर, भा. १, पृ. ५२८

न्यास:

नागर] नं⌣द, जीना; ला–,–⌣ल;
रा–, सर; मन्तां, मारी; न⌣थ,डीखो; वाणी,
काना; जडी, होंय तो; आ–,–⌣ल; रा–,सर;
मन्तां, मारी; न⌣थ,डीखो; वाणी,––;
नानी, नानी; न⌣थ, डीने; मांहि घ,णेरां; मोती,––;
न⌣थ,डी ने;का⌣र,णे हुं; नित्य फ,रूं छुं; जोती, जोती;जोती नागर;

आखी चतुष्कल रचना छे. अने प्लुतोनो न्यास बहु खूबीथी कर्यो छे. आनाथी वधारे जटिल एक बीजी रचना नरसिंहनी ज लईए :

जमो तो जमाडुं रे जीवन मारा टेक
वालाजी मारा, सोव्रण थाळ भरी लावुं
कांई मोतीडे वधावुं रे जीवन मारा

नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह, पृ. ५६६

न्यास :

जमो, तो ज;माडुं, रे–; जी–,वन; मारा,–

वा;लाजी मारा; –सो व्रण; था ⌣ळ भरी; लावूं,–

कैं; मोती डे व;धावूं रे–; जी–, वन; मारा,– –;

आखी कृति चतुष्कलमां वहे छे. रचना अटपटी छे, पण गवातां बराबर आ रीते ज आ ज प्लुतबद्ध अक्षरन्यासथी गवाय छे. बीजी पंक्तिमां पहेला अष्टकल पछीना अष्टकलमां पहेली बे मात्रा अनक्षर रहे छे, अने ए उपर रचनानो ताल पडे छे, अने ते पछी गा ⌣ ल चतुष्कल आवे छे, ए बधी आ रचनानी भंगीओ छे. पण खरी रीते जोईए तो बधा प्रकारनी रचनाओनी बधी भंगीओ गणावी शकाय एम नथी. मात्र दिग्दर्शन थई शके.

प्रकरण १२मामां 'मारुं मन मोह्युं०'' अने 'कामण दीसे छे' कृतिओ आपी छे जे विशेषे करीने पद कहेवाय छे ते घणांखरां असमसंख्यसंधिनी पंक्तिवाळां होय छे. एनी अनेक रचनाओ मळे छे ते बधी अहीं उतारवी शक्य नथी. एटले आगळ चालीए.

हवे षट्कल रचनाओ लईए. तेमां प्रथम हुं दयारामनी एक सुंदर गरबी लउं छुं :

पाधरे पंथे जा!
नेण नचावता नंदना कूंवर पाधरे पंथे जा!
सुंदरी सामुं जोई विठ्ठल वांसलडी मां वा
गुमानी पाधरे पंथे जा!
आव ओरो एक वात कहुं तुने कानमां कानूडा!
शीद हठीला अटके? हुं तो तारी छुं सदा, गुमानी पाधरे पंथे जा

दयारामरससुधा, पृ. ८१

आ षट्कल संधिओनी रचना छे. उत्थापनिका:

नेणन; चावता; नंदना; कूंवर; पाधरे; पंथे –; जा – – ; – – – ;
सुंदरी; सामु – ; जो – ई; विट्ठल; वांसल; डीमां–; वा –गु;
मानी–; पाधरे; पंथे –; जा – –; – – –;

पहेली पंक्तिमां 'जा' आवे छे ते ज स्थाने बीजी पंक्तिमां 'वा' आवे छे. पण ए 'वा'ना ज षट्कलमां ध्रुवनो पहेलो अक्षर स्थान मेळवे छे. अहीं ध्रुव गरबीना प्रारंभमां 'पाधरे पंथे जा' एम आपेल छे पण त्यां खरी रीते ध्रुवपंक्ति नीचे प्रमाणे जोईए:

पाधरे पंथे जा गुमानी पाधरे पंथे जा

उत्थापनिका:

पाधरे; पंथे –; जा – गु; मानी –; पाधरे; पंथे –; जा – –; – – –;

घणी ध्रुवोमां, आ प्रमाणे प्रथमना शब्दो फरी अंत तरफ आवे छे त्यारे वचमां थोडा बीजा शब्दो होय छे, तेवी आ पण छे. आगळ जोयेली 'श्याम रंग०' अने 'फूलना पेरीने०' एवी ध्रुवो छे. एवी ध्रुवोमां आंतरा पछी ध्रुवखंडनो मध्यभाग जोडाय छे. जेमके उपरनी ध्रुवमां 'गुमानी' थी ध्रुवखंड जोडाय छे.

हजी दयारामनी एक त्रिकल-षट्कलबद्ध अति प्रसिद्ध पण अति जटिल रचना लउं:

चाल व्हेली अलबेली प्यारी राधे!
तने तारो कान बोलावे,
तने घनश्याम बोलावे;
तने तारो पियु बोलावे, सरस समय साधे साधे. प्यारी राधे.
एम कही पति अति रतिस्मृति करावी;
सजाव्या शृंगार जेमतेम समजावी;
लावी ललिता पटराणीने पधरावी
सोंपी श्याम, सोंपी श्याम, सुंदर श्याम करी प्रणाम,
वळी वाम कुंजधाम पुरणकाम निगमधाम,
थो विश्राम ते गुणग्राम कथे आम दयाराम
हर्ष वाधे, वाधे, प्यारी राधे.

दयारामरससुधा. पृ. ७४

उत्थापनिका :

चाल] व्हेली अल; वेलि प्यारि; रा ⌣ धे ⌣; –
तने॑ तॉरो॑;] कहॉन बो॑लॅवि; –
तने॑ घन;] श्यॉम बो॑लॅवि; –
तने॑ तॉरो॑;] पियु बो॑लॅवि; सरस समय;
साधेसा; धे प्यारी; रा ⌣ धे ⌣; – ⌣

एम;] कहि पति अति; रति स्मृति क; रा – –; धी ⌣
सजा;] ब्या शृंगार; जे॑मते॑म सम; जा – –; धी ⌣
लावि;] ललिता पट; राधिने॑ पथ; रा – –; धी ⌣
सोंपि;] श्याम सोंपि; श्याम सुंदर; श्याम करि प्र; धाम
वळी;] वामकुंज; धाम पुरण; काम निगम; धाम

शो॑वि] श्राम ते॑ गुण; श्राम कथे; आम दया; राम
हर्षः] साधेवा; धेप्यारी; रा ⌣ धे ⌣;

घणी अटपटी रचना छे. दयारामे टूंका प्रासो नांखी तेने वधारे अटपटी करी छे. छतां पठनगानमां सुंदर छे. दलपतरामे अने नर्मदाशंकरे बन्नेए आनी नकल करी छे.

हवे हुं देवी अने पदोमां सप्तकल रचनाओ लउं छुं. सप्तकल संधि दीपचंदी तालमांथी आवेलो छे, अने ए ताल साधारण गायक माटे अघरो गणाय छे पण गुजरातमां तो अनेक लोकगीतो भजनो सप्तकल रचनामां बहु आसानीथी गवाय छे.

मन मतवालो प्यालो चाखियो
प्यालो प्रेमहूंदो पीधो रे
जरा रे मरण वाको गम नहीं
सदगुरु शबदे सिधायो रे मन मतवालो०
अमर वरसे ने अभयुं भरे
भींजे धरणी आकाशा रे
अटल कुमारी प्यालो भरी दीये
बोल्या लछमण दासा रे मन मतवालो०

(स्मरणमांथी)

उत्थापनिका :

मन मत, वालो प्यालो, चा⌣खियो, ⌣ –
लदा दादा, लदा दा दा, दाल दादा, लदा

प्यालो, प्रेम हूंदो, पीयोरे–
दादा, लदादादा, ल दादादा
जरारे म, रण बाको, गम नहीं,⌣–
लदा दा दा, लदा दादा, लदा दादा, लदा
सदगुरु, शबदे सि, धायोरे–,
दा दा, लदा दा दा, लदा दादा,
मन मत, वालो प्यालो, चा⌣खियो,⌣–––
अमर वर, से⌣ने अभ, यूँ⌣भँ रे,⌣–
भीजे, धरणीआ, कॉंशा रे–,
अटलक, मॉरी प्यालो, भरी दीये,⌣–
बोल्या, लछमण, दॉंसा रे–
मनमत, वालो प्यालो, चा⌣खियो,⌣–––

भजनोमां घणी वार 'हे जी' आवे छे ए अहीं पण आवे छे. ते प्रारंभमां 'चाखियो' पछी आवे छे अने त्यारे ए सप्तकल नीचे प्रमाणे पुराय छे:

चा⌣खियो, ⌣–
हेँ जि प्यॉलोँ

अर्थात् 'हेँ जि' उमेरातां पछीना गुरुओ लघु थाय छे. एक बीजुं गीत लउं:

बन गया फकीर मेरे दाता बन गया फकीर जी
अखंड धारा अमर वरसे स्वात्यूं वरसे नीरजी
देवी देवता मेळे मळिया गुणपती गंभीर मेरे दाता०
सात समुदर खारा भरिया तेमां मीठी एक वीरडी
डुंगर माथे देरी दीठी दीठो घडनारो पीर मेरे दाता०

उत्थापनिका:

बन गया⌣फ,कीर मेँरेँ दॉंतॉं, बन गया⌣फ,कीर जी–,
अखँड धारा, अमर वरसे, स्वॉत्यूं वरसे, नीरजी–,
देँवी देँवता, मेँळे मळिया, गुणपती गं,भीर
मेँरेँ दॉंतॉं, बन गया⌣फ, कीर जी–
सात समुदर, खॉरा भरिया, तेँमां मिठि ऍक, वीरडी–
डुंगर माथे, देँरी दीठी, दीँठो घडनॉरोँ, पीर
मेँरेँ दॉंतॉं, बन गया⌣फ, कीरजी–

क्यांक दालदादा अने क्यांक लदादादा संधि आवे छे ते सहेलाईथी जोई शकाश. आमां भजननी ढबे क्यांक 'रे' भळे छे. एम थाय त्यारे आसपासनी मात्राओ घटे छे, जेमके 'देँवीँ रेँ देँवता', 'मेँळेँ रेँ मळिया'. एवी ज रीते 'भाई' पण भळे जेमके 'अखँड धाँराँ भाँई', सातेय अक्षरो लघु. आपणे 'श्यामरंग०' 'फूलना पेरी०' वगेरेमां ध्रुवमां जोयुं हतुं तेम अहीं पण ध्रुवमां आदिना शब्दो अंतमां फरी आवे छे अने वचमां थोडा शब्दो मुकाय छे, अने ए वचमां मुकायला शब्दोथी ज ध्रुवखंड अंतरानी पंक्ति साथे जोडाय छे. आ प्रक्रिया एटली रूढ छे के एक नाटकमां मश्करीनी रचना सांभळेली तेमां पण ए ज पद्धति छे. रचना सप्तकल छे, अने हास्यनी कृति पण सप्तकलमां आवी शके छे ए आ उपरथी जणाशे, जो के हास्य ऊंचा प्रकारनुं नथी.

होको वालो लागे भाई भाई होको वालो लागे
चलम तो चतुराई करेने होको हरिनी काया
खलेचीमां हाथ ज नांख्यो जाणे गंगाजीमां नाया भाई०

उत्थापनिका :

होँको वालो, लाँगे भाँइ भाँइ, होँको वालो, लाँगे – –,
चलम तो चतु,राँइ करेने, होँको हरिनी, काँया – –,
खलेचीमां, हाँथ ज नाँख्योँ जाँणेँ, गँगाजीमां, नाँया
भाँइ भाँइ, होँको वालो, लाँगे – –

बराबर 'बन गया फकीर'नी ज आ रचना छे. 'हाथज०' वाळा सप्तकलमां सात अक्षरो छे, अलबत्त आ बधा लघु ज छे, अने तेमां पांच गुरुओने लघु करवा पडे छे. एथी हास्य ठीक पोषाय छे एम मने लागे छे. हवे हुं धीरानी काफी नामे ओळखाती रचनानो दाखलो लउं छुं. एमां आंतरो अथवा आंतरानो अमुक सुधीनो भाग चतुष्कल छे, बाकी आखी रचना सप्तकल छे. आ काफीओ पण पद कहेवाय छे.

संत मळे साचारे अगमनी ते खबर्युं करे
भावे भेटुं तेने रे, सरवे मारां कारज सरे संत०
उलटी सरिता चडी गगन पर दिण वादळ वरसाय
विना आभ ते विजळी चमके, गेबी गरजना थाय
धीरे धीरे वरसे रे, वरसीने अभर्युं भरे. संत०

उत्थापनिका :

सँ॑त मळे, सा॒‿चा–, रे‿––, अगमनी ते, खबर्यूँ‿क, रे‿––,

भाँवे भेटुं, ते‿ने–, रे‿––, सेँवें मारां, काँरज‿स, रे‿––,

घणे भागे आटली ध्रुव गवाया पछी अंते हो‿––, जी‿––, एम आवे छे. आंतरानी रचना चतुष्कल छे, अर्थात् ताल बदलाय छे तेने माटे होजीवाळां बे सप्तकलोनी जरूर पडे छे. प्रथम, आखो आंतरो चतुष्कलमां लउं छुं :

उलटी, सरिता; चढी ग, गनपर; विण वा, दळ वर; सा –,–‿य;
विना आभ ते; विजळी, चमके; गेबि ग, रजना; था‿य, ⌢

धी] रे‿धीरे, वरसे –, रे‿––, वरसीने, अभर्यूँ‿भ, रे‿––,

सँ॑त मळे, ...

उपरना आंतरानो अंत्य शब्द 'था‿य' बोलाईने पछी ध्वनिरहित विराम आवे छे. अने पछी पाछां सप्तकलो चाले छे अने तेनी साथे ध्रुवपंक्ति जोडाई जाय छे. ए आखो आंतरो साखी कहेवाय छे एम स्मरण छे, अने ते दरमियान तबलां बंध रहे छे. पण घणी वार ए आखो आंतरो चतुष्कलमां नथी चालतो, बीजी पंक्तिना अर्ध पछीथी सप्तकलमां सरे छे. आ प्रमाणे :—

गे‿बी ग॑, रज॑ना –, था‿य॑
धी,] रे‿धीरे, ...

आखी रचना बहु चमत्कारवाळी अने सुंदर छे. आनी भंगीओ तरत ध्यानमां आवे एवी छे. ध्रुवनुं बीजुं सप्तकल घणे भागे बे ज गुरुओथी आखुं भराय छे, अने ते पछीनुं त्रीजुं 'रे'थी भराय छे, क्वचित ज तेमां पछीना शब्दना एकाद अक्षरने स्थान आपवुं पडे छे. अंत्य सप्तकलमां पण एक ज गुरु आवे छे. उपान्त्य सप्तकलनी एक खासियत पण ध्यान आपवा योग्य छे. 'खबर्यूँ‿क' 'कारज‿स' अने 'अभर्यूँ‿भ' त्रणेयमां अंते लघु छे अने तेनी पहेलां त्रण मात्रानो प्लुत गुरु छे. एम आ रचनामां खूबीदार भंगीओ छे. में क्वचित ज आमां अपवादो जोया छे.

आटलाथी आवी रचनानुं दिग्दर्शन थई जशे एवी आशाथी आ प्रकरण पूरुं करुं छुं.

परिशिष्ट ग

देशीओ अने पदोनुं परिशिष्ट

प्रकरण १४मां में कह्युं के केटलीक रचनाओ एवी होय छे के तेना अक्षरविन्यास उपरथी सामान्य रीते संधिओ प्रतीत थाय नहीं, पण एक वखत गातां संभळया पछी तेना संधिओ पाडी शकाय अने तेनी उत्थापनिकामां देशीओ जेवी ज खूबीदार भंगीओ जोई शकाय. आमां में मुख्यत्वे दशकल अने चौदकल रचनाओनो उल्लेख कर्यो हतो. आगलां प्रकरणोमां षट्कल रचनाओनो एक वर्ग तरीके में देशीओमां समावेश कर्यो हतो. पण एनो अर्थ एवो नथी के षट्कल रचनाओ बधी ज गातां सांभळया विना मात्र अक्षरविन्यासथी पकडी शकाय छे. अर्थात् केटलीक षट्कल रचनाओ पण आ परिशिष्टनो विषय बने छे अने तेने हुं पहेली लईश. नीचे कवि न्हानालालनुं एक लग्नगीत उतारुं छुं :

सूरज ऊग्यो रे केवडियानी फणशे :
के व्हाणेलां वाये नवलां रे.
सूरज ऊग्यो रे मणि माणेकनी टशरे;
के व्हाणेलां वाये नवलां रे.

आ गीत न्हानालालनुं छे पण ते मूळ एक लोकगीत उपरथी लीधेलुं छे अने तेनी आ कडीमां तो बहु थोडो फेरफार कर्यो छे. ए लोकगीत प्रसिद्ध छे अने नीचे प्रमाणे षट्कलमां गवाय छे. गीत, उपर, चार लीटीमां छे पण गवातां ते बे लीटीनुं ज बने छे, जेनी दरेक पंक्ति ध्रुवबद्ध छे. नीचे प्रमाणे :

सूरज] ऊग्यो–; रे के–; वडियानी; फणशेके; व्हाणे–; लांवाये; नवलां–; रे

सूरज] ऊग्यो–; रे मणिमा; णेकनी; टशरे के; व्हाणे–; लांवाये; नवलां–; रे

केवळ अक्षरविन्यास जोतां तेनी षट्कल रचना हाथमां नहीं आवे. अलबत्त जेणे सांभळयुं हशे ते तरत षट्कलने पकडशे, पण नहितर नहीं पकडाय. पण पकडाया पछी आ गीत एक पिंगल कृति होय एवी रीते ज उत्थापनिकामां पडी जशे. आपणे जोई गया तेवी घणीखरी षट्कल रचनाओ पेठे ज पहेली बे द्विकल मात्राओ पछी तालबद्ध षट्कलप्रवाह चाले छे. बीजा षट्कलमां 'रे', चोथामां 'के' अने अंते 'रे'नुं स्थान निश्चित छे. आखी रचना षट्कलनी छे, तेमां त्रिकलो आवतां नथी. एवी रचना पकडवी वधारे अघरी

छे. क्यांक पण त्रिकल नजरे पडे तो त्रिकल षट्कल बन्ने पकडाय छे, अने गरबीओ अने लोकगीतो घणां दादरा तालमां होय छे ए संभारीने त्रिकल षट्कलनो प्रयोग स्वाभाविक रीते वांचनार करे, पण त्रिकलरहित षट्कल पकडवुं वधारे अघरुं छे. सरखाववा माटे एक गीतनी लीटी लउं छुं.

वडताल गामने गोंदरे हिंडोळो आंबानी डाळ

आमां 'वडताल' गालगाल तरत नजरे पडे छे. अने तेने लीधे 'हिंडोळो' 'आंबानी' षट्कलो पण नजरे पडे छे. बाकीनां 'गामने⌣' 'गोंदरे⌣' त्रिकलबद्ध षट्कलो तरत प्रतीत थाय छे. पण त्रिकलरहित षट्कलो एम पकडातां नथी. बीजुं लग्नगीत अमारी नातमां गवातुं अहीं लउं छुं:

पीळो पीळो ते वानो में सुण्यो
पीळो हळदरनो छोड
सोय रे वानो में निरखियो
गोरा किया भाई रे तमने पिठडां करीश
ज्यम रे साजनियां संतोखशे
दुरिजन दुरिजन रे हरने डाबले पाय
दशमनियां रे दाझे वळे
रातो रातो ते वानो में सुण्यो, वगेरे

सात पंक्तिनी पीळा वानानी एक कडी छे. पछी राता वानानी एवी ज बीजी कडी शरू थाय छे. गीत गवातां षट्कल संधिओ नीचे प्रमाणे पडे छे.

पीळो] पीळो ते; वानो–;–में सु;ण्यो
पीळो; हळदरनो; छो–⌣ड;
सोँय रेवा; नो में–;–निरखी; यो
गोरा; किया भाँइ; रे तमने; पिठडां कँ; री–⌣श;
ज्यमरे सा; जनियां सं;–तोखँ; शे
दुरिजन; दुरिजनँ; रे हरने; डाबँले; पा–⌣य;
दशमँनी; यांरे दा;–झे वँ; ळे
रातो]

बहु खूबीथी अमुक अमुक पंक्तिने अंते संधि अधूरो राखी पछी आवती पंक्तिना आदि शब्दथी आखुं षट्कल रचेलुं छे. गवातां ताल शोधनारने मुश्केली पडे पण

गानारांने में बहु सरलताथी ताल साचवी अर्थात् संधि साचवी गातां सांभळयां छे. अमुक अमुक स्थाने अनक्षर मात्राओ उपर ताल पडे छे अने तेथी कृति बहु खूबीवाळी जणाय छे.

उपर आपेलां बन्ने लग्नगीतो में सप्तकलमां पण गवातां सांभळयां छे. षट्कल अने सप्तकल वच्चे मात्र एक ज मात्रानो फेर होवाथी आम थवुं सहेलुं छे. बन्नेनी सप्तकल उत्थापनिका नीचे टूंकमां आपुं छुं.

सूरज] ऊ⌣ग्यो –; रे⌣के –; वडीयानी; फणघे के; व्हा ⌣ णे –; लां⌣वाये;

नवलो –; रे ⌣

सूरज; ऊ⌣ग्यो –; रे ⌣ मणिमा; णे⌣कनी; टशेरे के; . . . .

हवे 'पीळो॰' नी उत्थापनिका :

पीळो] पी ⌣ ळो ते, वा ⌣ नो –,– ⌣ में सू; ण्यो ⌣

पीळो, हळदरनो, छो ⌣ – ड,

सोय रे वा; नो ⌣ में–; – ⌣ निरखी, यो ⌣

गोरा, किया भाई, रे ⌣ तमने, पिठडां के, री⌣ – या,

ज्यम रे सा,जनीयां सं, – ⌣तोख, यो ⌣

दुरिजन, दुरीजन, रे⌣ हरने, डा⌣ बले, पा ⌣ – य,

दशमनी, यां ⌣ रे दा,– ⌣ झे बळे ⌣

रातो]

एकी पंक्तिमां अंते अधूरो रहेतो संधि, ए ज पंक्तिमां अनक्षर मात्राथी शरू थतो उपान्त्य संधि, बेकी पंक्तिमां मात्र गालथी पुरातो आखो अंत्य संधि, ए बधी आ गीतनी भंगीओ छे.

नीचेनुं बाळगीत पण षट्कल रचना छे :

चकली तारा खेतरमां में झींझवो वाव्यो
झींझवे चडी जोउं रे कोई मानवी आवे
लीली घोडी पीळो चाबखो कीया भाई आवे
घूघरियाळी व्हेल्यमां केई बा आवे
खोळामां बावन बेटडो धवरावती आवे
दूधे भरी तलावडी नवरावती आवे.

तेनी उत्थापनिका :

चक्कली; तारा –; खेतरमां ; – मैं –; झीझवो; वाव्यो –;
झीझवे; चंडी –; जोउं रे; – कोई; मानवी; आवे –;
लीलीघो; डीपीळो; चावल्लो; – की –; घाभाई; आवे –
घूघरी; याळी –; व्हेल्यमां; – के – ; ई बा – ; आवे –
खोळामां; बावन; बेटडो; – धव; रावती; आवे –
दूधेभ; रीत –; लावडी; – नव; रावती; आवे –

आनी एक भंगी अंत्य द्विकल अनक्षर ए तो सादी अने तरत पकडाय एवी छे पण वधारे सुंदर भंगी तो चोथा षट्कलनुं प्रथम द्विकल अनक्षर रहे छे अने एना उपर ज ताल आवे छे ए छे. उपर प्रमाणे उत्थापनिका कर्या विना आ गीतनी ए खूबी पकडवी अघरी छे. कोई कोई वार आखांने आखां षट्कलो अनक्षर आवे छे. अने एवी रचनाओ गवाती सांभळ्या विना पकडवी अशक्य छे. हुं नीचे बे पंक्तिओ उतारुं छुं.

कानूडा कानूडा तें तो शूं कीधुं जो गोरस पीधुं गोरी गायनुं
नाथने कारण घउंनी छे पोळी जो घीए झबोळी ल्यो नाथ पीरसुं.

उपरनी बे पंक्तिमां अंत्य प्रास नथी, अर्थात् आ प्रासबद्ध कडी नथी. दरेक पंक्ति छुट्टी छे, अने तेमां आंतरप्रास आवे छे. पंक्ति घणी लांबी छे, पण तेमां अनक्षर प्लुत षट्कलो मूकतां ते घणी वधारे लांबी छे ते जणाई आवशे. ए घोडिया गीत छे, जेमां लांबां प्लुत उच्चारणोने स्वाभाविक रीते स्थान मळे छे.

कानूडा; कानूडा; तें तो शूं; – – –; कीधुं जो; – – –; गोरस; – – –;
पीधूं –; गोरी–; गायनूं; – – –;
नाथने; कारण; घौंनी छे; – – –; पोळीजो; – – – ; घी ए झ; – – –;
बोळी –; ल्योना ⌣थ; पीरसूं; – – –;

कुल बार षट्कलो गवाय छे, तेमां चार षट्कलो अनक्षर छे. आ प्लुत षट्कलो कृतिनुं अंग छे. कारण के बाळकने ऊंघाडवाना प्रयोजन माटे ते आवश्यक छे. आमां पहेलां बे षट्कलो 'कानुडा ⌣', एम करीने त्रिकलबद्ध करी शकाय. पण आखी रचना जोतां ए कृतिनुं अंग नथी एम समजावुं.

पंचकलनी तो देशीओ ज नथी मळती. पण दशकलनी देशीओ मळे छे. अने अक्षरविन्यास उपरथी ए पकडाय एवी नथी, ए नीचेना दाखला उपरथी तरत समजाशे. अमारी नातमां–ब्राह्मणनी घणीखरी नातोमां–जनोईमां बडवानुं नीचेनुं गीत गवाय छे. हुं बे ज पंक्तिओ उतारुं छुं:

बडवा काने कडी हाथे वींटी हीरे जडी रे
बडवो जै बेठो छे दादाजीने खोळे चडी रे.

अक्षरविन्यास जोईए तो रचना स्पष्ट रीते चतुष्कलनी जणाशे पण ए दशकलमां गवाय छे. तेनी उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय:

बडवा –] काने कडी –; हाथे वींटी –; हीरे जडी –; रे –
दादादा] दादा दादादा; दादा दादादा; दादा दादादा; दादा

बडवो –; जै बेठो छे –; दादाजीने –; खोळे चडी –; रे –
दादादा; दा दादा दादा; दादादादादा; दादा दादादा; दादा

पहेलां त्रण द्विकलो पछी पांच द्विकलनी परंपरा शरू थाय छे. अंते चतुष्कल 'रे' आवे छे जे पछीनी पंक्तिनां त्रण द्विकल साथे जोडाई दशकल रचे छे. रचनानी एक खासियत ए छे के दरेके दरेक संधिमां पांचमुं द्विकल अनक्षर छे, ते आगळना अक्षरनी प्लुतिथी बनेलुं होय छे. पंचकल संधिना, बे मात्रा अने त्रण मात्रा (के त्रण मात्रा अने बे मात्रा) एवा बे अवयवो छे, दा-लदा के दाल-दा एम. तो अहींयां पांच द्विकलो त्रण अने बे के बे अने त्रणमां वहेचायेलां छे. काने, कडी –; हाथे, वींटी –; ए प्रमाणे. एक बीजुं गीत लउं छुं जे अमारी नातमां कन्या बोळावती वखते गवाय छे.

लीलूडा ते वांसनी वांसळी शेरीए गाजंती जाय रे
गरवा ते बापनी बेटडी केई बेन सासरे जाय रे.

गवातां आनी पंचद्विकल उत्थापनिका नीचे प्रमाणे थाय छे:

लीलूडाते –; वां – सनी –; वां –सळी –; शे – रीये –; गा –जं – – ;
ती – – – –; जा – यरे – ;

गरवाते – ; बा – पनी – ; बे – टडी –; केई बेन – ; सा – स – – ;
रे – – – –; जा – यरे – ;

परंपरा प्रमाणे उपर प्रमाणे गवाय छे. दरेक लघु द्विकल तो छे ज, जो के बधी जगाए गुरुनां चिह्नो कर्यां नथी. आमां पण दरेक दशकल संधिनुं छेल्लुं

द्विकल अनक्षर रहे छे. हजी एक बीजी रचना लउं. ए पण लग्नगीत ज छे, अने केटलीक नातोमां गवाय छे.

डोलीडा डवूक्या लाडी चालो आपणे घेर रे
ऊभां र्‌हो तो मांगु मारा दादाजीनी शीख रे
हवे केवी शीख रे लाडी हवे केवा बोल रे
परण्यां एटले प्यारां[1] लाडी चालो आपणे घेररे

उत्थापनिका :

डोलीडा ड–; वूक्या लाडी–; चालो आँपणे–; घे–रे–;
ऊभां र्‌होतो–; मागुं मारा–; दादाजीनी–; शी–खरे–;
पर्‌ण्यां एट्‌ले–; प्यारां लाडी–; चालो आपणे–; घे–रे–;

दरेक दशकल संधिमां छेल्लुं द्विकल अनक्षर छे. 'चालो आपणे' संधिमां पांच अक्षरो छे, दरेकने द्विकल राखी दशकल करी शकात, पण तेम न करतां 'आप' बन्ने लघु बोलाई पांचमुं द्विकल अनक्षर राखेलुं छे. 'परण्यां एटले' ए संधिमां छ अक्षरो छे छतां द्रुत अक्षरोने खोडा करीने पण छेल्लुं द्विकल अनक्षर करेलुं छे. आम करवामां भाषाना साधारण उच्चारण उपर कशो अत्याचार थतो नथी,—गीतनी विलंबित गतिने लीधे, हुं धारुं छुं. हजी एक बीजी आवी ज दशकल रचना लउं छुं. ए पण लग्नगीत छे :

मांडवडे कांई ढाळो ने वाजोठी– १
के फरती मेलावो कंकावटी
तेडावो कँ आशापरीना जोशी– ३
के आज मारे लखवी छे कंकोतरी
बंधावो मारा कीया भाईने छेडे– ५
के जाय मारां केई बेनने नोतरे
बेनी रे तमे सूतां छो के जागो– ७
तमारे मैयर पगरण आदर्यां

---

१. 'प्यारां'नो अर्थ 'पारकां' एवो छे. एक दूहामां पण आ शब्द आ अर्थमां आवे छे

घोडांने घी पाते, कामळ करगरिये नहीं
चमकी दी चडथे, प्यारां पोतानां करे

उत्थापनिका :

मांडि ⏑ व] डे कॉंइ डाळो –; ने बाजोठी ⏑ कें;
दादादा] दा दा दादादा; दा दा दा दा दा;

फरती मेला –; वोकंकाव –; टी –
दादा दादादा; दादादादादा; दादा
तेडा –; वो कैं आशा –; परिना जोषी ⏑ के";
दादादा; दा दा दा दा दा; दादा दादा दा;
आॅज मॉरिं लखवी –; छे कंकोत –; री –
दा दा दादादा; दादादादादा; दादा
बंधा –; वो मॉरॉं कीया –; भॉइने छेडे ⏑ कें;
दादादा; दा दा दादादा; दा दा दादादा;

जॉय मॉरॉं केई –; बेंनने नोत –; रे –
दा दा दादादा; दादा दादादा; दादा
बेनी –; रे तमें सूतां –; छो के जागो ⏑ त;
दादादा; दा दा दादादा; दा दा दादादा

मारे मँय ⏑ र; पगरण आदि –; यां –
दादा दादादा; दादा दादादा; दादा

आमां पण नियम तरीके जोईशुं तो दरेक संधिमां पांचमुं द्विकल अनक्षर ज रहेतुं जणाशे. तेमां थोडा अपवादो देखाय छे तेनो ज मात्र विचार करीए. पहेली त्रीजी अने पांचमी पंक्तिमां अंत्य संधिमां आखुं द्विकल अनक्षर नथी होतुं, तेमां उपान्त्य मात्रा अनक्षर होय छे, पण अंत्य मात्रा पंक्तिना 'के' थी पुरायेली होय छे. पण आ 'के' तो तानपूरक छे, संगीतनुं अंग छे, एटले एने खरी रीते हुं अनक्षर द्विकलनो अपवाद नथी गणतो. पछी अपवाद तरीके मात्र ७मी पंक्ति रहे छे जेमां छेल्ली मात्रा तानपूरक नहीं पण पछीनी पंक्तिना शब्दनो आद्य अक्षर ले छे. आ एक ज अपवाद आखी कृतिमां छे, तेने अंग्रेजी कहेवत प्रमाणे, नियमसमर्थक अपवाद गणुं छुं. एटले आ गीतमां पण पांच द्विकलसंधिनो छेल्लो द्विकल अनक्षर रहे छे. एक बीजी बाबत पण लक्षमां राखवा जेवी छे. आ गीतमां पहेलां त्रण द्विकलो पछी दशकलपरंपरा शरू थाय छे, अने उत्थापनिका आपतां में ते चोकसाईथी बतावेलुं छे. पण जो ए सरत न राखीए, अने आदिथी ज पंचद्विकल संधि गणवा मांडीए तो, संधिना अंतनो अनक्षर द्विकल अछतो थई जशे, ध्यानमां

नहीं आवे. एटले के उत्थापनिका घटावतां आ संभाळ हमेशां आवश्यक समजवी जोईए. पहेली पंक्तिमां 'कांई' पांचमीमां 'भाई' बन्ने अकेक गुरु छे, पण ते दर्शाववा कोई खास संज्ञानो उपयोग करवाने बदले में बन्ने अक्षरो लघु करी एक गुरु साधेलो छे.

में आ परिशिष्टमां प्रारंभमां कह्युं के षट्कलने जातिछंदोमां स्वीकारेलुं छे छतां केटलीक रचनाओमां ते गवाया विना पकडी शकातुं नथी, अने तेथी ते प्रकारनी रचनाओ आ परिशिष्टमां पडे छे. ए ज वात सप्तकल माटे पण खरी छे. केटलीक सप्तकल रचनाओ गवाया विना पकडाय तेवी नथी. अने तेथी तेनो एक दाखलो, चौदकल रचनाओमां प्रवेश कर्या पहेलां जोता जईए. आ दाखलो पण लग्नगीतनो छे.

मोर जाजे ऊगमणे देश
मोर जाजे आथमणे देश
वळती जाजे रे वेवायुने मांडवे हो राज
किया वेवाई सुतो छुं के जाग
किया वेवाई सुतो छुं के जाग
किया भाई वरराजाए सीमाडा घेर्या माणाराज

गीत सप्तकलमां नीचे प्रमाणे गवाय छे.

मो॑र जाजे, ऊ॒गमणे, दे॒–॒श
लदा दादा, दालदादा, दाल दादा
मो॑र जाजे, आ॒थमणे, दे॒–॒श
लदा दादा, दाल दादा, दालदादा
वळतीजा, जे॑ रे वे॑वा॑यु॑ने॑, मां॑डवे॑ हो, रा॒–॒ज
लदादादा, ल दा दा दा, लदादा दा, दाल दादा
किया वेवाँइ, सुतो छूं के, जा॒–॒ग,
लदा दादा, लदा दा दा, दाल दादा,
किया वेवाँइ, सुतो छूं के, जा॒–॒ग,
लदा दादा, लदा दा दा, दाल दादा,
किया भाँइवर, राँजाँएँ सिमाँडा, घे॑र्यामाणा, रा॒–॒ज.
लदा दा दा, लदा दा दा, लदा दादा, दाल दादा,

गीत बहु प्रसिद्ध छे. गीतमां आवता 'मोर जाजे' 'ऊगमणे' 'आथमणे' वगेरे चतुरक्षर संधिओ सप्तकलनी सूचना करे, अने एम थाय तो

उत्थापनिका कदाच गीत सांभळ्या विना पण करी शकाय, पण बाकीना संधिओमां ह्रस्व दीर्घनी छूट एटली बधी छे के संधिओ प्रतीत न थाय.

हवे हुं चौदकल रचनाओ लउं छुं. प्रथम एक लग्नगीत लउं छुं जे घणी नातोमां गवाय छे.

दादाने आंगण आंबलो
आंबो घेर गंभीर जो
एक पांदडलुं में तोडियुं
दादा गाळ मां देश जो
लिलुडा ते वननी चरकलडी
ऊडी जाशुं परदेश जो
आजे दादाना देशमां
काले जाशुं परदेश जो

उत्थापनिका :

दादाने, आं‿गण, आंब –, लो –
दादादा, दादादादा, दादादा, दा दा

आंबो, घेरगं, भी‿र जो –,
दादा, दादादा, दादा दादा,

एकपां, द‿डलूंमें, तोडी –, यूं –
दादादा, दादादादा, दादादा, दादा
दादा, गाळमां, दे‿श जो –,
दादा, दादादा, दादा दादा,

लिलुडाते, व‿ननी –, चरक‿ल, डी –
दादादा, दादा दादा, दादा दा, दादा
ऊडी, जाशुं पर, दे‿श‿जो –,
दादा, दादा दा, दादा दादा,

आजेदा, दा – ना –, देश –, मां –
दादादा, दादा दादा, दादादा, दादा
काले, जाशुंपर, दे‿श जो –,
दादा, दादादा, दादा दादा,

दशकलमां जेम आपणे पांच द्विकलोमां बे अने त्रणना संधिओ बताव्या, तेम अहीं सात द्विकलोमां पण संधिओ पडे छे. दालदादा अने दादालदामां सप्तकल संधि जेम त्रण अने चार अने चार अने त्रण मात्रामां वहेंचातो हतो तेम अहींयां सप्तद्विकल संधि त्रण अने चार के चार अने त्रण द्विकलोमां वहेंचाय छे. आ उत्थापनिका जोवाथी तरत समजाशे के सप्तद्विकलो पंक्तिओमां केवी रीते विभक्त थयां छे.

आ जातनी देशीओ पण घणी छे, अहीं तेनुं दिग्दर्शन मात्र करवानो उद्देश छे.

परिशिष्ट घ

'प्रवाही छंद' के सळंग पद्यरचनाना प्रयत्नो

आपणे अंग्रेजी साहित्यना परिचयमां आव्या ते साथे तेना अनेक प्रकारोना प्रयत्नो अने प्रयोगो करवाना आपणा साक्षरोने कोड जाग्या. तेमां अंग्रेजीमां जेने 'एपिक' (epic) काव्यो कहे छे, जेने माटे आपणे 'वीररस महाकाव्य' नाम योजेलुं छे ते रचवाना पण कोड जाग्या. कवि नर्मदाशंकर घणी बाबतोमां नवा जमानाना कोड मूर्तिमन्त करे छे. ते पोताना 'वीरसिंह' काव्य नीचेनी टीपमां कहे छे: "ज्यारथी मने समजायुं के हवे हुं कोई पण विषयनी कविता करवामां फावीश त्यारथी मने एवो बुट्टो ऊठेलो के जिंदगीमां एक मोटी वीररस कविता तो करवी ज." आ बुट्टी सिद्ध करवा आगळ विचार करतां ते कहे छे: "पछी वृत्तना विचारमां पड्यो."

अंग्रेजीमां एपिक महाकाव्यो जे छंदमां व्यापक रीते लखाय छे तेने अंग्रेजीमां 'ब्लॅंक वर्स' कहे छे. महाकाव्यने माटे गुजरातीमां पण 'ब्लॅंक वर्स'नुं काम आपी शके तेवी कोई पद्यरचना जोईए एम समजातां अनेक कविओए तेना प्रयत्नो कर्या. पिंगळमां आपणे आ प्रयत्नोने पण पिंगळ दृष्टिए जोई जवा जोईए.

अहीं अंग्रेजीमां 'ब्लॅंक वर्स' कोने कहे छे, अने काव्यरचनामां ते केवी रीते उपयोगी के अर्थवाहक थाय छे ते प्रथम जोवुं जोईए. एने विशेनी 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका'ए आपेली व्याख्या हुं प्रथम उतारुं छुं.

Blank verse, the unrhymed measure of iambic decasyllable adopted in English epic and dramatic poetry. The epithet is due to the absence of the rhyme the ear expects at the end of successive lines.

'ब्लॅंक'नो वाच्यार्थ 'खाली' एवो थाय छे. 'ब्लॅंक वर्स' एटले 'खाली पद्यरचना'. खाली शब्द अमुक अपेक्षित वस्तुनो अभाव दर्शावे छे. 'एनसाइक्लोपीडिया' कहे छे के कवितानी एक पछी एक आवती पंक्तिओने अंते कान जे प्रासनी अपेक्षा राखे छे ते आमां नथी माटे आ पद्यरचनानुं नाम ब्लॅंक एवुं पडेलुं छे. तेना स्वरूप विशे ते कहे छे के ते दशाक्षरी होय छे, अने तेमां अमुक संधिनां आवर्तनो आवे छे. आ संधि एक लघु अने एक गुरु एवा क्रमे बे अक्षरोनो बनेलो होय छे. अर्थात् आ पद्यरचनानी पंक्तिमां ए संधिनां पांच आवर्तनो आवेलां होय छे. आपणे जातिछंदोमां जोई गया के प्रास के तुकांत शब्दप्रवाहमांथी पंक्तिओने छूटी पाडी आपे छे. ए प्रास काढी नांखवाथी शब्दप्रवाह पाछो अबाधित वहेवा मांडे छे. एपिक कवितानो, महाकाव्यनो विषय, जेम महान व्यक्तिओ, महान कार्यो, महान बनावो, महान अने उदात्त विचारो, होय तेम तेनी शैली अने तेनी भाषा पण महान अने उदात्त होय छे, अने तेने माटे घणी वार लांबां वाक्यो आवे. सप्रास रचनाओमां पंक्तिओना छेडा आवे, त्यां लांबां वाक्योने एमां वहेवामां विघ्न आवे, अने तेथी प्रासनो लोप करीने अंग्रेजी काव्ये सळंग रचना साधी. पण अंग्रेजी ब्लॅंक वर्सनुं सामर्थ्य मात्र आटला उपर आधार राखतुं नथी. अंग्रेजी कविता गवाती नथी, ते बोलाय छे, ते पाठ्य होय छे, गेय होती नथी. आ लक्षणने लीधे ते निष्प्रास बनतां महान वाक्यो अने प्रबळ शब्दप्रवाहने धारण करवा समर्थ थाय छे. एटले ब्लॅंक वर्सनुं काम आपनार पद्यरचना अगेय पण होवी जोईए. आ लक्षण अंग्रेजी विवेचन उल्लेखे नहीं पण आपणे पहेलेथी ज ए ध्यानमां राखवुं जोईए.

'ब्लॅंक वर्स'ना स्वरूप विशे अंग्रेजी विवेचक सेन्ट्सबरी शुं कहे छे ते जोईए. ए एनां त्रण लक्षणो आपे छे. (१) the overrunnig of the line. एटले के वाक्यनुं एक पंक्तिमांथी उभराईने बीजीमां वहेवुं. (२) the variation of the pause एटले यतिने पंक्तिमां यथेच्छ स्थाने मूकवानी सगवड अने (३) the employment of the trisyllabic feet. एटले त्र्यक्षर संधि के बीजनो प्रयोग.[1]

1. Manual of English Prosody.

आमांनां पहेलां बे लक्षणो महाकाव्यमां महावाक्यो आवे एम आपणे कह्यु तेनी सगवड माटे ज छे. ज्यां सुधी प्रास होय त्यां सुधी पंक्तिने अंत छे, अने ते अंत आगळ वाक्यने विरमवानी जरूर पडे ज. प्रास जतां वाक्य पंक्तिना अंतने वटीने पण आगळ जवु होय त्यां सुधी जई शके. पण ए ज रीते वाक्यने जवु होय त्यां सुधी जईने पछी अर्थाधीन विराम पण लेवो पडे. एटले जे स्थाने विरमवु होय त्यां विरमवानी पण तेने सगवड जोईए. अर्थात् पद्यरचनामां यथेच्छ यति मूकवानी सगवड पण होवी जोईए. त्रीजुं लक्षण अंग्रेजी कविताना स्वरूपने लगतुं छे, जो के तेमां रहेलो सिद्धान्त सर्व सळंग पद्यरचनाने लागु पडे छे. आगळ जोई गया तेम ब्लॅंक वर्स रचना लघु-गुरु घटित संधिनां आवर्तनोनी बनेली छे, पण एवां एक सरखां आवर्तनोथी रचना कंटाळाजनक थई जाय, तेमां वैविध्य आणवा तेमां त्र्यक्षर संधिनी छांट आवती होय छे तेनो अहीं उल्लेख करेलो छे.

आपणा विवेचकोमां प्रो. बळवंतराय ठाकोरे सौथी पहेलां विचारपूर्वक सळंग पद्यरचनानो प्रयोग कर्यो अने एनुं विवेचन पण कर्यु. तेमना प्रमाणे गुजराती ब्लॅंक वर्सनां लक्षणो आ प्रमाणे तारवी शकाय. (१) अगेयता. (२) सळंगता के अखंडितता जे सेन्ट्स्बरीना पहेला लक्षण साथे संबंध धरावे छे, (३) यतिस्वातंत्र्य, जे सेन्ट्स्बरीनुं बीजुं लक्षण छे, अने (४) अभावात्मक लक्षण के ए रचना एकविध थई क्लेशकर थवी न जोईए.

अर्थात् प्रो. ठाकोरे सेन्ट्स्बरीनां लक्षणोमां एणे नहीं कथेल अगेयतानो उल्लेख कर्यो अने तेने प्रथम स्थान आप्युं. अने आपणे पण आपणी कसोटीमां एने मुख्य महत्त्व आपवुं जोईए.

आ अगेयतानो ख्याल आधुनिक ज छे, अंग्रेजी कविताना संसर्गजन्य छे. ए पहेलां आपणे आगळ जोई गया तेम संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश गुजराती सर्व कविता गवाती ज. आ अगेयतानो ख्याल नर्मदने हतो. ते एक जगाए लखे छे: "हुं बोल्यो के हमारी प्राकृत कविता अंग्रेजी प्रमाणे सादी रीते नथी बोलाती पण कंईक गवाय छे. . . ."[२] नवलराम आ दृष्टिए नीचेनो अभिप्राय आपे छे ते पण नोंधवा जेवो छे. "आपणी भाषामां कविता बोलाती नथी पण गवाय छे. एक दोहरो पण रागडा ताण्या विना आपणे बोलता नथी. कविता बोलवी ज ए शुं ते आपणामां थोडा समजता हशे. . . . आ रीति संपूर्णपणे अंग्रेजीमां प्रवर्तमान छे—तेमां तो कविता वांचती वेळा

२. मारी हकीकत, पृ. ८९

राग जरा पण काढवो ए अति निंद्य गणाय छे. पण आपणे जे आंक भणनार पण राग काढे छे त्यारे ज राजी थईओ छईए, तेने परभाषानो काव्य संबंधी आवो विरागी नियम शा कामनो? . . . छंदोबद्ध कवितामां पण एक वृत्तनां काव्योवाळी भाषानी पदवीए पहोंचतां हजी गुजरातीने वार छे, अने ते वखत आववा पहेलां अवश्यनुं ए छे के कविता गावानी रीत जई आपणामां ते बोलवानी रीत पडवी जोईए."[1] आ तेमनो लेख १८८२नो छे.

आ प्रकारनी रचना माटे जुदा जुदा लेखकोए जुदां जुदां नामो आप्यां छे. प्रो. बलवंतराय ठाकोर जेमणे आनी सौथी पहेली चर्चा करी तेमणे चर्चानुं मथाळुं 'सळंग/अगेय पद्यरचना' एवुं करेलुं. एक शब्द नहीं पण वर्णनात्मक शब्दगुच्छ ए एने रूढ थवामां विघ्नकर छे, नहितर 'ब्लॅंक वर्स'नो बधो अर्थ आमां बराबर आवी रहे छे. तेमणे पाछळथी चर्चामां 'प्रवाही' छंदनो उल्लेख करेलो छे ते नाम अत्यारे वधारे रूढ थतुं जाय छे. प्रवाही छंद एटले भाषाना प्रवाहित्वने अविघ्न धारण करवाने समर्थ छंद एवो हुं करुं. सद्गत के. ह. ध्रुव, पद्यरचनानी ऐतिहासिक आलोचनामां आने अबद्ध छंद कहे छे : "मेळना झराथी छूटतो पद्यरचनानो प्रवाह निबद्ध होय; अथवा तो अबद्ध होय. अमुक मापनी पंक्तिओनां जूथमां के जूथोमां प्रसरतो प्रवाह ते निबद्ध. मापसर रचायली पंक्तिने चरण, पद के दल कहे छे; अने चरण के दलना जूथने छंद नाम आपे छे. चरणोनी संख्याना बंधन वगर छूटथी पसरती पद्यरचना ते अबद्ध. इंग्रेजीमां स्पेन्सरकृत Faerie Queene पोपकृत Iliad ए काव्यो निबद्ध पद्यरचनानां छे; अने मिल्टनकृत Paradise Lost तथा टेनिसनकृत Princess अबद्ध रचनामां छे." (प. ऐ. आ पृ. १५) टूंकामां कहेवुं होय तो श्लोकबद्ध के कडीबद्ध ते निबद्ध अने जेमां श्लोक के कडी पडती नथी ते अबद्ध. आ शब्द पण सारो छे. अंग्रेजी ब्लॅंक शब्दनी पेठे ए पूरेपूरो अभावात्मक छे, पण प्रवाही शब्द जेटलो ते रूढ थयो नथी. कविश्री खबरदार आने 'अखंड पद्यरचना' कहे छे. ए पण सारो प्रयोग छे जो के रूढ थयो नथी.

आ प्रकरणमां ब्लॅंक वर्सने माटे जे जुदा जुदा प्रयत्नो थया छे ते आपणे जोईशुं. तेमां ब्लॅंक वर्स होवाना दावा विना थयेला प्रयोगो पण जोईशुं. आमांना घणाखरा प्रयोगो आपणा पिंगळमां आवी गयेला छंदोना ज छे अने तेथी आ छंदोने पण आपणा पिंगळना प्रकारोना अनुसंधानथी जोवा वधारे अनुकूळ पडशे. पण आ प्रयत्नोमां सद्गत कविश्री न्हानालालनो अपद्यागद्य

१. नवलग्रंथावलि (शाळोपयोगी आवृत्ति) भा. २, पृ. २२६–२७

के डोलनशैलीने नामे ओळखातो प्रयत्न पिंगळना छंदो बहारनो छे. ए वाहन रीते, आपणे समजीए छीए तेवो कोई छंदनो नथी, तेने पहेलो लईशुं.

छंद विशेनो एमनो अभिप्राय स्फुट करवा आपणे प्रथम जरा छंदोनी भूमिका जोई जईए. पूर्व अने पश्चिम बन्नेनी विवेचन-मीमांसा प्रमाणे काव्य एटले वाङ्मयसर्जन गद्यमां होई शके. दाखला तरीके 'कादंबरी' ए काव्य ज छे. पण काव्यकलानी कोई गूढ आवश्यकता पूरी पाडवा काव्यने क्यारेक गद्यथी इतर कोई खास वाहननी जरूर पडे छे, अने त्यारे काव्य पद्यमां वहे छे. आवुं वाहन ते छंद छे, जे आ पुस्तकनो विषय छे. कविश्री आ वाहनने पण स्वीकारे छे, अने तेमनां केटलांय काव्यो आ मतनुं समर्थन करे छे. पण काव्यनी ए विशिष्ट आवश्यकता माटे छन्द सिवायनुं पण वाहन होई शके अने तेमनी डोलन के अपद्यागद्य शैली ए प्रकारनुं वाहन छे एवो एमनो दावो छे. 'इन्दुकुमार' भा. १लानी प्रस्तावनामां तेओ कहे छे: "ए खरुं छे के उछळतुं धसमसतुं के धीर गंभीर रसनुं झरणुं मनुष्य हृदयमां फूटे छे, त्यारथी ज कंईक अनेरा आंदोलने डोलतुं ते वहे छे. . . अस्फुट कल्पना स्फुट थाय, वाणीथी पर भाव वाणीमां ऊतरे, अने रस रूपी आत्मा कविता देहे अवतरे, त्हेनी साथे ज देहनी सुन्दरतानी पेठे, वाणीनुं डोलन पण जन्मे छे." डोलन ए तेमणे अंग्रेजी Rhythm (संवाद) माटे प्रयोजेलो शब्द छे. एमनी शैलीना विरोधीओ पण अहीं सुधीनी एमनी मीमांसा कबूल करे छे ए कहेवानी भाग्ये ज जरूर होय. पण, तेओ आगळ कहे छे : " वाणीनुं ए डोलन सौन्दर्यना अने कलाना महानियम प्रमाणे रचावुं घटे छे, कारण के अर्थनी आंतर सुन्दरतानी वाणी तो बाह्य मूर्ति छे. सौन्दर्य अने कलानो परमनियम Symmetry[४] समप्रमाणतानो छे, एक ज अवयवनी पुनरुक्ति-परंपरानो नथी. सुन्दर एक फूल[५] के सुन्दर एक चित्र अनेक अणसरखी पांदडीओ के रेखाओनुं बनेलुं बहुधा होय छे; एवी ज रीते अनेक अणसरखा चरणरूप अवयवो गूंथाई एक सुन्दर काव्य पण बने. . . . . आरसनी चोरस गोळ के त्रिकोण लादीनी हारो वडे कलाविधायक सुन्दर फरसबन्दी बनावे

४. कविना वक्तव्य माटे आ अंग्रेजी शब्द सारो नथी — ऊलटो भ्रामक छे. सिमेट्रीमां तो एक ज आकार के अंगनी पुनरुक्ति होई शके छे.

५. आ दृष्टान्त पण बराबर नथी. घणां खरां फूलोमां पांदडीओ एक ज आकारनी के सरखा आकारनी होय छे. अणसरखी पांदडीओवाळां फूलोने पण वच्चे लीटी दोरीने एवी रीते द्वि-भागी शकाय के जेथी जमणी अने डाबी बाजूना आकारो बराबर सरखा थई रहे. आने ज सिमेट्री कहे छे. वधारे पारिभाषिक शब्द कहेवो होय तो bilateral symmetry.

छे, पण त्हेमां ज सकल सुन्दरतानो समावेश थवानो दावो कोई करतुं नथी. आकाश पाटे प्रकृतिनो कलानायक वारंवार जे नवरंग अद्‌भुत फरसबन्दी मांडे छे ते कंईक ओर अणसरखां रंगशकलोनी होय छे. तेम ज कवितामां पण वाणीनी गोळ के चोरस तक्तीओनी परंपरा के पुनरुक्तिमां वाणीनो सर्वसौन्दर्य डोलननो समावेश थई जतो नथी; अने कुदरतने वधारे मळता अणसरखा सौन्दर्यडोलनवाळी वाणीने माटे स्थान रहे छे. . . . एटले वाणीनुं डोलन एकसरखुं नियमित – Regular होवुं जोईए एम पण सिद्ध थतुं नथी. कविताने आवश्यक वाणीनुं डोलन अणसरखुं Irregular होय त्हो पण जो रसने अनुरूप होय तो, सौन्दर्यना तेम ज कलाना महानियमानुसार ज ते छे." वाणीनुं नियमित डोलन काव्यनुं वाहन थई शके ए कोटि कविने मान्य छे एमां संदेह रहेतो ज नथी. प्रश्न एटलो ज रहे छे के नियम विनानी कोई रचना छंद जेटलुं ज काव्यनुं वाहन थई शके के केम ?

कवि पोते आने छंद कहेता नथी. तेओ पोते ज कहे छे "साचे ज मारी शैली अपद्य छे: अगद्य छे: अपद्यागद्य छे. एने छंद में भाख्यो नथी ने सदाये उच्चार्युं छे के ए गद्य नथी." आटला उपरथी ज एमनी शैली आ पिंगलना अधिकारनी बहार जाय छे. एटले ए संबंधी कशुं कहेवानुं अहीं प्रस्तुत नथी. मात्र एटलुं उमेरीश के कविनां पोतानां विधानो उपरथी पण कही शकाय के अछान्दस रचना काव्यनुं विशिष्ट वाहन थई शके नहीं. पोतानी घडतर कथामां पराजयना उच्चारणमां तेओ कहे छे: "अने चोथुं: आजे त्रीस त्रीस वर्षोना अनुभव अंते कबूलत आपुं छुं. . . हुं शोधवा गयो महाछन्द, ने नांगर्यो जईने डोलनशैलीना शब्दमंडलमां. महाछंदने आरे में पगलुंये माडयुं नथी." वळी कहे छे: "डोलनशैली ए वीसमी सदीनी प्हेली पच्चीसीनी गुर्जर साहित्यनी हार अने जीत. ए महाछंद नथी, एटली एनी हार छे; एनाथी वधारे रसवाहि छंद शोधाशे त्यारे ए हारशे, एटली एनी जीत छे." आ कबूलतमां कवि ए पण कबूल करे छे के कविता माटे जे जोईए छे ते तो छंद ज. एओ पोते शोधवा तो गया हता छंद ज, अने हजी पण महाछंदनी जरूर छे एटलुं ए स्वीकारे ज छे. एटले आ चर्चा आ पुस्तकना अधिकारनी नथी. कवि कहे छे तेम ए अपद्य छे. मात्र एटलुं विशेष हुं उमेरीश के तेओ आने अगद्य माने छे पण हुं एने रागयुक्त गद्य गणुं छुं.[६]

---

६. आने विशेनी विशेष चर्चा माटे जुओ मारो लेख 'अर्वाचीन काव्य साहित्यमां सळंग अगेय पद्यरचना (ब्लॅंक वर्स)ना प्रयत्नो.'
वार्षिक व्याख्यानो–२, पृ. ९९–१२०

अपद्यागद्य शैलीने आम टूंकमां पतावी हुं विषयनी चर्चानी सगवड खातर प्रथम मात्रामेळी संधिथी निष्पन्न करेला सळंग छंदोना प्रयत्नो लईश. आमां मुख्यत्वे कटाव अने रामछंद आवे छे. पण ए बे पहेलां संस्कृत पिंगलोना दंडको जोई जवा जोईए.

आपणे जोई गया के संस्कृत पिंगलोमां समवृत्तोनुं वर्गीकरण वृत्तोना अक्षरोनी संख्याने अवलंबीने करेलुं होय छे. ते प्रमाणे एक अक्षरथी छव्वीस अक्षरो सुधीनां वृत्तोने भिन्नभिन्न नामो आपेलां होय छे. छव्वीसथी वधारे अक्षरोवाळां वृत्तो दंडक कहेवाय छे. दंडकनुं स्वरूप एवुं छे के तेमां प्रथम छ लघु अक्षरो आवे छे अने पछी गालगानां सात के वधारे आवर्तनो एक चरणमां आवे छे. एवां चार सरखां चरणोथी एक वृत्त थाय छे. गालगानां आवर्तनोनी संख्या संबंधी कोई खास नियम जणातो नथी. 'वृत्तरत्नाकर'नी टीकामां नारायण भट्ट ९९९ अक्षर सुधीना दंडको होई शके एम कहे छे. अहीं मारे खास कहेवानुं ए छे के सत्तावीस अक्षरथी ओछी संख्याना दंडकना स्वरूपनी रचना एक मळी आवे छे, ते जोतां हुं अनुमान करुं छुं के ओछी संख्याना पण दंडको हशे, पण १ थी २६ सुधीनी संख्यानां समवृत्तोनां नामो पाडी दई तेथी वधारे अक्षरोनी संख्यावाळां वृत्तो माटे ज दंडक नाम रूढ करेलुं होवाथी आ नानी कृतिओने दंडक कही नथी. दाखला तरीके 'रघुवंश'मां आवतो नीचेनो श्लोक :

रघुपतिरपि जातवेदोविशुद्धां प्रगृह्य प्रियां

रघुवंश, १२, १०४

श्लोक आखो लखवानी जरूर नथी. अहीं मल्लिनाथे वृत्तनुं नाम आपेलुं नथी. पण 'शिशुपालवध'मां आ ज वृत्त आवे छे अने त्यां मल्लिनाथ तेने महामालिनी कहे छे. पिंगलना 'छन्दःसूत्र'मां छेल्ला गाथा प्रकरणमां तेने नाराचक कहेलो छे. गमे ते नाम आपो पण आ स्पष्ट रीते दंडकनी ज रचना छे :

न्यास : लललललल गालगा गालगा गालगा गालगा

पहेला छ लघु छे अने पछी गालगानां चार आवर्तनो छे. हुं मानुं छुं के आ पहेला छ लघु ललकारनी आद्य गति मेळववाना प्रयोजनथी आवे छे, बाकी आखी रचना गालगानां आवर्तननी ज छे. अर्थात् आ रचना मात्रामेळ पंचकल संधिना गालगा एवा लगात्मक रूपनां आवर्तनोनी छे. संस्कृत साहित्यमां दंडको घणे भागे पांडित्यप्रदर्शन माटे आवे छे.

गुजराती पिंगलो आ रचनानो उल्लेख करतां नथी. पण आपणा साहित्यमां एक जगाए आ रचनानो प्रयोग थयो छे. सद्गत छोटालाल

नरभेराम भट्ट 'शान्तिसुधा' काव्यमां अनेक छंदोना प्रयोगो कर्या छे तेमां दंडक पण आवे छे:

निरखि निरखि पेठा मुनि बागना भागमां, मार्ग रूडो निहाळी,
बनी वाड बे पास गूलाबनी, सड्क वच्चे रही, कैंक क्यारा निहाळ्या
रुडा छोडना बेय पासे, सिच्या पाणिये, अमृते जाणिये, नीक रूडी
करी, बीक राखी खरी, ठीक ठामे ठरी माळिये, भाळिये, कैंक चंमेलि
चंपो अने मोगरो, कैंक दाडीम अंजीर जातिफळो, कैंक बादाम
नारिंग लींबूडि छे, कैंक अक्षोट ने जमरुखी रूडि छे, कैंक
बेली चडी शोभती मांडवे, कैंक नाची रही छे लता तांडवे,
कैंक हार्यो दिसे केळ केरी वडी, जेम पंखा धरी ऊभि साहेलडी.[७]

आ दंडकमां आवर्तन लेतो पंचकल संधि गागाल छे ए ध्यानमां आव्युं हशे. गालगाने बदले गागालनां आवर्तनो पण आवी शके तेमां नवाई नथी. अने आगळ जई कही शकीए के बाकी रहेल लगात्मक संधि लगागामां पण आवी शके.

सळंग रचनानी अपेक्षाए आ रचना कंटाळाजनक छे ते तरत नजरमां आव्युं हशे. अने कदाच ए कंटाळो ओछो करवा ज कवि अहीं तहीं प्रासो मूके छे—पहेलां अनियमित आंतरे, अने 'कैंक चंमेलि चंपो अने मोगरो' ए स्थानथी तो गालगा गालगा गालगा गालगा एम चार गालगानां आवर्तनोनी प्रासबद्ध पंक्तिओ ज अंत सुधी चाले छे. पहेलां छ लघुओ पछी गागाल संधि शरू थाय छे पण पठन करतां जणाय छे के कर्ता तरत ज गालगानां आवर्तनोमां सरी पडे छे, जे दंडकनी दृष्टिए अनियमितता गणाय. पण आपणे तो ए ज जोवानुं छे के आ रचना लंबाण सहन करी शके एवी नथी. अने तरत ज भुजंगीना ढाळमां सरी पडे छे अर्थात् अगेय रही शकती नथी.

आ पछी आपणे रामछंदनी चर्चा हाथमां लईए. प्रथम तेनुं दृष्टान्त उतारुं छुं:

जय थजो जय थजो
ज्यां वस्या
आर्य संस्कारनी पिमळ प्रसरावता
परशु निज स्कंध पर निरंतर धारता
प्रलयकालाग्निसम अरिदल विदारता
रूद्र अवतार भडवीर विप्रेन्द ते

---

७. शान्तिसुधा, पृ. २७५

राम भार्गव वडा —
शत्रुने मारता, मित्रने तारता,
प्रेमने शौर्यनां सूत्र स्वीकारता
कर्महीं न जगतने परम कर्तव्य निष्कामनो पाठ — शिखवाडता
विष्णुना अंश योगीन्द्र गरुडध्वज
कृष्ण यादवपति —

आनी स्वतंत्र चर्चा करवा पहेलां कविश्री खबरदारे अखंड पद्य रचना तरीके आनी चर्चा करी छे ते जोईए. 'गुजराती कवितानी रचनाकळा' नां भाषणोनी चोथी रचनामां 'अखंड पद्य'ना प्रयोगोमां तेओ नीचेनी पंक्तिओ प्रथम उतारे छे :

सरयूना तट उपर पूर्ण अत्यंत धनधान्यथी,
वृद्धि पामेल उत्तरोत्तर नित्य आनंदमय
देश कोशल महा, त्यां वसे अयोध्या
नामनी लोकविख्यात जे नगरी
मनु मानवेंद्रे स्वहस्ते ज निर्मी हती.
*   *   *

गोठव्यां हाट चहुटां बहु सुन्दर विभागमां
अटारी उच्च पर सहज फरफर थती. . . .

गुजराती कवितानी रचनाकळा, पृ. १६५

खबरदार आ फकरा विशे लखे छे: "आ रचनामां 'दालदा' बीज बे पंक्तिमां बे वखत भांगी पड्युं छे. जुओ :

वृद्धि पा । मेल उत् । तरोत्तर । नित्य आ । नंदमय ।
देश को । शल महा । त्यां वसे । अयोध्या ।

अहीं पहेली पंक्तिमां त्रीजा संधिमां 'दालदा'ने बदले 'लदादा' — 'तरोत्तर' — गूंथणी थई छे अने लय तूटे छे. बीजी पंक्तिमां चोथा संधिमां 'अयोध्या' शब्द समायो छे ते पण 'लदादा' बीजनो छे. बीजी बे पंक्तिओ पण जोईए :

गोठव्यां । हाट चहु । टां बहु । सुंदर वि । भागमां
अटारी । उच्च पर । सहज फर । फर थती. . .

अहीं पहेली पंक्तिमां चोथा संधिमां देखावमां पांच मात्रा अने 'दालदा' बराबर लागे छे, पण 'सुंदर वि' एम बोलतां 'सुंदर' शब्दनी छेवटनी श्रुति

'र' पर मोटो भार तालनो आवे छे, अने तेथी ए शब्द घणो कढंगो संभळाय छे. . . . . बीजी पंक्तिमां पहेला ज संधिमां पाछो 'अटारी' शब्द आव्याथी 'दालदा' बदले 'लदादा' बीज वापर्युं छे. ने उघाडो लयभंग थाय छे. कदी एम कहीए के अंग्रेजी अखंड पद्यमां पण तालनुं परिवर्तन एक बे संधिमां थई शके छे, पण अंग्रेजी छंद मात्रामेळ नथी. गुजराती मात्रामेळमां अने ते पण 'दालदा' बीजना संधिमां आवुं परिवर्तन कदी नभे नहीं. 'दादा' 'दादा' बीजमां 'दालदालदा' जेवुं परिवर्तन चाली शके, केमके त्यां लय नभी शके छे, 'दालदादालदा' मां 'लदादादालदा' के ''दालदालदादा' करतां त्रण 'दा' साथे थाय छे. . . . . एटले आवा बीजमां, जे मात्रा पर ताल पडे त्यां ताल शुद्ध सचवावो ज जोईए. नहीं तो रचना लंगडी थई जाय छे. वळी रा. मनहररामे प्रत्येक पंक्तिना संधि एक सरखा राख्या नथी, पण पंक्तिनी गमे तेटली स्वैच्छिक लंबाई राखी छे, अने गमे तेटला संधि तेमां समाव्या छे. लयने नियममां राखवा पंक्तिमां संधिनी संख्या एकसरखी रहेवी जोईए, तो ज एक पंक्तिमांथी उभराईने बीजी एक के अनेकमां कविना विचार – भाव – कल्पना आदि समाववानी छूट मळी कहेवाय. 'अखंड पद्य' माटे आ रामछंदनी योजना सफळ थई शकी नथी." (एजन, पृ. १६६)

अहीं खबरदारनो पहेलो वांधो ए छे के रामछंदमां दालदानो प्रवाह छे ते क्यांक क्यांक लदादा बीज आववाथी विक्षिप्त थाय छे. आगळ पंचकल रचनाना स्वरूपनी चर्चामां ए संधिनां त्रणेय लगात्मक स्वरूपोनी संवादितानी हुं चर्चा करी गयो छुं. त्यां में बतावेलुं छे के लदादा संधि दालदा साथे तद्दन संवादी छे. ए चर्चा अहीं फरी न करतां मात्र एटलुं ज कहीश के प्राचीन काव्योमां पण दालदा साथे लदादानुं मिश्रण थतुं. आगळ तेना दाखला आप्या छे पण अहीं फरी एक आपुं :

लोकनी लाज मरजाद ते परहरो,
नीरभे थैने हरि गुण गावो;
मनना मनोरथ पूरशे मावजी,
तजी संसार वैकुंठ जावो.

नरसिंह महेताकृत काव्यसंग्रह, पृ. ४८४

आखो प्रवाह दालदानो छे अने तेमां 'तजीसं' लदादा छे. पंचकल रचनानी चर्चामां में कहेलुं छे के दालदा साथे दादाल एटलो संवादी नथी जो के ते पण नरसिंहनां भजनोमां आवे छे :

ग्रंथ गरबड करी, वात न करी खरी,
जेहने जे गमे, तेने पूजे;
मन कर्म वचनथी आप मानी लहे,
सत्य छे ए ज मन एम सूजे.

एजन, पृ. ४८५

अहीं दालदाना आवर्तनप्रवाहमां 'मनकर्म' ए दादाल छे. ए केंक विक्षेपक छे ए पठनमां ज वरताय एवुं छे पण ए पण आवी शके छे. एटलुं ज नहीं, हुं आगळ जईने एम कहेवा इच्छुं छुं के लांबी सळंग रचनामां आवा विक्षेपक संधिओ ऐकविध्य टाळवा आवश्यक छे. अंग्रेजीमां ए प्रमाणे भिन्न प्रकारना संधिओ आवे छे. पण श्री खबरदार कहे छे के अंग्रेजी रचना मात्रामेळ नथी एटले ए दाखलो काम न आवे. पण हुं मानुं छुं के अंग्रेजीनो दाखलो अहीं उपपन्न छे. जे ऐकविध्य टाळवानुं जरूरी छे, ते ऐकविध्य संधिना आवर्तनथी थाय छे. अंग्रेजी रचनामां संवाद जातिछंदोनी पेठे संधिनां आवर्तनोथी निष्पन्न थाय छे. तो त्यां जेम संधि बदलाववानी जरूर ऊभी थाय छे तेम अहीं पण संधि बदलाववानी जरूर ऊभी थाय छे ज अने दालदामां लदादा संधि संवादने साचवीने विविधता लावे छे ते इष्ट छे. वळी छेल्लेथी बीजी पंक्तिमां 'सुन्दर वि' एवो संधि आवे छे. त्यां ते 'सुन्दर' शब्दना 'र' अक्षर पर आवता तालनो वांधो ले छे. एमनुं कहेवुं छे के 'र' उपर मोटो ताल आवे छे अने ए तालथी उच्चारण कढंगुं थाय छे. प्रथम तो ए के 'र' उपर ताल छे ते पिंगलनो ताल नथी, सामान्य पिंगलो एनो उल्लेख करतां नथी. हुं एना पर ताल मानुं छुं पण ते गौण छे अने ए गौण तालथी कशुं वांधा भरेलुं कढंगापणुं आवतुं नथी. खरुं तो त्यां जे विलक्षणता जणाय छे ते 'विभाग' शब्द बे संधिओ वच्चे वहेंचाई गयो छे तेनी छे. सुंदर वि । भागमां; ए रीते. आवी विलक्षणता पिंगल ऐकविध्य टाळवा प्रयत्नपूर्वक आणे छे ते में आर्या अने गीतिनी चर्चामां बतावेलुं छे. ए रचनामां पहेला दलमां छठ्ठुं चतुष्कल ज्यारे लललल होय त्यारे पहेला ल आगळ यति आवे छे, अर्थात् त्यां एक शब्द पांचमा अने छठ्ठा चतुष्कलो वच्चे वहेंचाय छे. अने अखंड रचनामां ऐकविध्य टाळवा आ युक्ति पण उपयोगमां लेवा जेवी छे. श्री खबरदारनो छेल्लो वांधो ए छे के रामछंदमां दरेक पंक्तिमां संधिनी संख्या एक सरखी नथी. खरी रीते आ वांधो सळंग रचनानी सामे लई शकाय नहीं. आपणे जे वेळा प्रास लोपी कडी तोडीए छीए, ते साथे ज पंक्तिनो बंध पण तूटे ज छे. जातिछंदोनो प्रवाह स्वरूपथी ज सळंग छे, अने तेने प्रासथी आपणे पंक्तिमां बांधता हता, ए प्रास तूटतां ए प्रवाह तेना मूळ स्वरूपनो एटले

सळंग थई रहे छे ज. पछी एने अर्थ प्रमाणे लांबी टूंकी पंक्तिओमां लखवामां कशो दोष नथी. श्री खबरदार कहे छे के पंक्ति अणसरखी करवाथी एक पंक्तिनो अर्थप्रवाह उभराईने बीजी पंक्तिमां जई शकशे नहीं. पण नहितर एकसरखी लखाती पंक्तिओमां पण जेने पंक्ति गणीए छीए ते खरेखर पंक्ति छे ज नहीं, नजरथी वांचतां पंक्ति छे, पण पठन करतां के सांभळतां पंक्ति नथी ज, पंक्तिनो अंत त्यां श्रवणमां आववानो नथी. शेक्सपियरनां नाटको भजवाय छे त्यारे, ते केवळ अर्थने अनुकूळ रीते ज बोलाय छे. त्यां पंक्ति होती नथी. अंग्रेजी ब्लँक वर्स पंक्तिओमां लखाय छे ते तो एक मात्र रूढि छे, ब्लँक वर्सना मूळ प्रासबद्ध स्वरूपनो अनावश्यक साचवी राखेलो अवशेष छे. वक्तृत्व कळा शीखववानां पुस्तकोमां घणी वार पंक्ति छोडीने ब्लँक वर्स गद्यमां ज लखाय छे. अहीं वर्स एटले पद्यरचनानुं जीवातुभूत तत्त्व पंक्ति के संधिनी संख्या नथी, पण आवर्तन पामतो संधि पोते ज एक मात्र छे.

आ प्रमाणे रामछंद विशे श्री खबरदारे दर्शावेला वांधा हुं स्वीकारतो नथी अने छतां ते ब्लँक वर्सनुं काम आपी शके एम हुं मानतो नथी. अने तेनुं अेक ज मुख्य कारण के ते जोईए तेवो अगेय नथी. दाखला अने तेना बीजा बे पर्यायो सहेलाईथी झूलणाना ढाळ के लढणमां पडी जाय छे. अने ते घणी मोटी ऊणप छे. पण ते सिवाय आ छंदनुं सामर्थ्य स्वीकारवा जेवुं छे. अुदात्त भावोने लांबा समय सुधी वहेवानी एनी शक्ति छे. परभातियांमां आ संधिनी रचनाओ पुष्कळ आवे छे, अने त्यां आपणे जोईए छीए के धीर-गंभीर रीते प्रौढ भावोने वाणीमां टकाववानी एनामां ताकात छे. वळी केटलांक प्राचीन काव्योमां झूलणा रणांगणोनां अने लडाईनां वर्णनोमां पण वपरायेलो जोवामां आवे छे, जे एनी ए दिशानी शक्ति पण दर्शावे छे. अने हुं मानुं छुं के पूरो ब्लँक वर्स थया विना ए एपिक काव्योमां वापरी शकाय खरो.

आ पछी आपणे कटाव लईए. कटावने कोई पिंगले छंद तरीके स्वीकार्यो नथी. प्रागर्वाचीन काव्यमां कोई कविए तेने प्रयोज्यो नथी. अर्वाचीन युग पहेलां ते मात्र बालजोडकणांमां ज देखाय छे. नर्मदाशंकरे तेने आगगाडी काव्यमां (नर्म० कविता पृ. १८६) अने पछी 'शाकुन्तल'ना अनुवादमां वापर्यो. कदाच ते दाखला उपरथी मणिभाई नभुभाईए तेने 'उत्तररामचरित'ना अनुवादमां वापर्यो.

आ छंद लांबां सळंग वर्णनो माटे अनुकूळ छे, कारण के तेमां प्रास नथी. ते मात्र बे चतुष्कलोनो अथवा तेना द्वैतीयिक अष्टकलनो सतत अविराम

प्रवाह छे. माटे ज कदाच पिंगलोए एने स्वीकार्यो नहीं होय, कारण के पिंगलो पाद विना पद्य अशक्य गणतां. आपणे मणिभाईनुं दृष्टांत जोईए :

कोको ठामे स्निग्ध रम्य ने नयन हसावे, वळि को काळी,
वळि को भूरी, कोको ठामे रूप भयंकर धारी कर्कश
देतीं श्वास बहु ठामे ठामे वळी भरेली झम झम
झम झम व्हेतां झरणो तेना शब्दे, दिशा रूंपाळी;
पणे जणाये तीर्थ पुण्यनां, आश्रम ऋषिना; पर्वत
पेला डोकां करता, सरिता धीमी उछळी व्हेती; अरण्य
व्होळां मध्ये न्हानां रमणीय लीलां उपवन दीसे;
एवा एवा विविध प्रदेशो परिचित मुजने दृष्टे आवे;
दीसे दीसे सत्य दंडका अरण्य आजे! कोको ठामे०"

वर्णननुं प्राबल्य अने प्रौढि तरत जणाई आवे एवां छे. साथे साथे ए पण नोंधवा जेवुं छे के अहीं दरेक पंक्तिमां संधिओनी संख्या सरखी नथी, मारा मत प्रमाणे एनी जरूर पण नथी. आ रचना सळंग छे. पण तेनी सामे मारो मुख्य वांधो ए छे के कटाव अष्टकल रचना छे, तेनो ताल बहु जोरदार छे अने तेथी तेमां आठ आठ मात्रानां चोसलां पडी जाय छे, आठ आठ मात्राए अल्पविराम के अल्पतरविराम मूकवुं ज पडे छे. प्रो० ठाकोर तेम छतां आ रचनानी सळंग छंद तरीके हिमायत करे छे. 'आपणी कविता समृद्धि'मां गोवर्धनराम त्रिपाठीनुं लांबुं काव्य 'वृष्टि पछी कुदरतनुं सौंदर्य' मूकी टिप्पणमां एनी रचना विषे लखे छे : "श्री रामनारायणे कटावना गुणदोष आपणा युगमां थयेला वृत्तविकासनी चर्चा करतां सारा चर्च्या छे.[८] पोते ए रचना अजमावी अजमावी तेना परिचयी थशे तो हुं धारुं छुं के रचनानी गुणवत्ता एमने वधारे आकर्षशे. ('आपणी कविता समृद्धि' १९३९नी आवृत्ति २, पृ. १२२) १९४६नी आवृत्तिमां लखे छे : "एमनी आ कृति गुजराती कविता अने तेनी 'blank verse' (ब्लॅंक वर्स)नां बळ वैविध्य समृद्धि, कटावमां पूरेपूरां खीली शके छे ते बतावी आपनार ए प्रथम पहेला कवि छे. मुक्त लयशक्तिनो आ कृति एक उत्कृष्ट नमूनो छे." (एजन, बीजी आवृत्तिनुं त्रीजुं मुद्रण, पृ. १३७) आपणे समृद्धिमां उतारेल ए काव्यनो अंत भाग जोईए.

---

८. 'अर्वाचीन काव्य साहित्यमां सळंग पद्यरचना' ए लेखनी चर्चा अहीं अभिप्रेत छे, जेनो आ प्रकरणमां में आ पहेलां उल्लेख करेलो छे.

पडी रह्यो ए मेघ एटले शां खेचरनां
टोळे टोळां स्वतंत्र थातां, स्वसुख केरा
अंक विशे फरि कलोलथी कोलाहल करतां
आवे पाछां! हर्षप्रमत्त वनीने आवे,
एक बीजाने आंटीवाळे, उडे उपर ने
नीचे पाछां! चक्रगति करि रास रमी गित
गाइ मनोहर. आणि मुक्यूं वृंदावन आजे
विष्णुपदमां शूं आ पाछूं!
अहो, व्हणे पण
जो ने अधिक ज कौतुककर्षी थाय शूं पेलूं?
स्नेहविष्णुरुप — कृष्णमुकुट — शिखिकलाप केरी
कमान सुंदर! आछी आछी दिवसदीप सम
प्रथम भासती!
वध्यो ज प्रकाश! वध्या वळि रंग!
विलासि बन्या रतिमूढ कराकर सूर्यतणा
जलदोदरमां प्रसरी नव रूप ग्रहे अति सुंदर:
नाम कहे जग 'अंबुदचाप' व्हने पण लागति
स्नेहकमान विंटी सउ भूमि अने नभने
लइ लेति स्वगोळ विशे जयिनी
मन जो! मन जो!
रतिरंग करे इतरेतर शूं बहु आज सहू: . . . . .

आटलुं बस थशे. अहीं पण मने तो स्पष्ट अष्टकल मात्रानां चोसलां पडी जतां जणाय छे, क्वचित् सोळमात्रानुं चोसलुं पडे छे; तालनो धडको एटलो प्रबल छे के रचना एम धडके धडके थंभती ज चाले. अने ए चाल पण लांबी फलंग नथी, खदता घोडा जेवी टूंकी चाल छे. रामछंद करतां आ चाल वधारे टूंकी छे, रामछंदना जेवां आनां प्रलंब आंदोलनो नथी. अमुक जातनां वर्णनकाव्यो, जेमां वेगी कार्य बताववानुं होय तेमां आ रचना शोभे एवी छे. त्रिभुवन गौरीशंकर व्यासनां बालकाव्योमां आनो सारो प्रयोग थयो छे. उपरना काव्यमां अंत तरफ लगाल के (पहेलो ल कापी नांखतां) गालगनां आवर्तनो आवे छे, आणवां पडयां छे तेने पण हुं तो कटावनी मर्यादा गणुं छुं.

आ ज वर्गमां प्रो. ठाकोरे शरु करेल गुलवंकी अने प्रवाही हरिगीत आवे. गुलवंकी विषे तो प्रो. ठाकोरे पण कदी ब्लॅंक वर्सनो दावो कर्यो नथी.

आपणे अहीं चर्चेली बधी रचनाओमां एनुं पगलुं सौथी टूंकुं छे. हरिगीतनो संधि लांबो छे, एनां लगात्मक रूपोनुं वैविध्य वधारे, पण एमां बे ताल आवे छे जे एने संगीत तरफ वहेलुं धकेले छे. तेम छतां प्रवाही छंद तरीके एना अनेक प्रयोगो थया छे, केटलाक खरेखर सुंदर थया छे. मात्र एटलुं ज के एमांना कोईने ब्लॅंक वर्सनुं स्थान आपी शकाय नहीं. अने एटलुं विशेष नोंधवुं जोईए के आ प्रयोगोमां लगभग बधे ज पंक्तिओमां संधिसंख्या अर्थ प्रमाणे ओछीवत्ती राखवामां आवेली होय छे.

आवी अर्थ प्रमाणे संधिओनी ओछीवत्ती संख्यावाळी पंक्तिओनी रचनाने हमणां 'परंपरित' एवुं नाम मळ्युं छे, जेम के परंपरित झूलणा, परंपरित हरिगीत. ए रीते गुलबंकी रचना परंपरित समानिका के प्रमाणिका छे. आवी रचनाओमां क्यांक पंक्तिने छेडे आखो संधि पूरो करेलो होतो नथी त्यां विरामथी संधि पूरो करी मेळ साचवीने आगळ चालवुं जोईए, एटलुं प्रसंगवशात् कहेवानुं प्राप्त थाय छे. जेमके :

जुवो उघाडुं आ कमाड, जाव ज्यां रुचे;
स्वल्प बिंदु ये दयानुं ना खपे हुंने.

भणकार, पृ. १९

लगात्मक न्यास : लगा लगा लगा लगा लगा लगा लगा
गाल गाल गाल गाल गाल गाल गा

पहेली पंक्तिमां लगा आव्युं. बीजी लगाथी शरू नथी थती पण गालथी थाय छे, एटले लगानां आवर्तनो अविच्छिन्न राखवा पहेली पंक्ति पछी एक ल जेटलो विराम लेवो जोईए. अर्थात् लगा ⌣एम करीने मेळ साचववो जोईए.

एवी ज रीते परंपरित हरिगीतमां पण जेम के :

तूं जगतनूं आश्चर्य छे.
जगतमां छे ताज, ने छे ताज जेवां कंक कँ,
तूं तो परंतू ताजनो ये ताज छे.

एनो न्यास : दा] दालदादा दालदा
दालदादा दालदादा दालदादा दालदा
दा] दालदादा दालदादा दालदा

पहेली पंक्तिमां अंते दालदा आवे छे. बीजी पंक्तिमां पहेलो संधि दालदादा छे तेनी साथे तेनो मेळ बेसाडवा पहेली पंक्तिने अंते एक दा पूरतो विराम लेवो जोईए. एम विरामोथी एक ज संधिनां सळंग आवर्तनो करवां जोईए. उपर रामछंद कह्यो ते परंपरित झूलणा गणाय.

आवी परंपरित रचनाओमां संधिना पर्यायो आववा, के पंक्तिमां संधि-संख्या अणसरखी होवी ए दोष नथी, पण जातिछंदोना संधिओ मूळ संगीतना ताल साथे संबंध धरावे छे अने तेथी उपरना प्रयोगोमां क्यांक संधिताल प्रबल होई विक्षेपक नीवडे छे, क्यांक संधिनी टूंकी चाल विक्षेपक निवडे छे, तो क्यांक संधिताल रचनाने संगीत तरफ घसडी जाय छे. छतां आ बधा प्रयोगोनुं पोतपोतानी मर्यादामां महत्त्व छे, अने तेना प्रयोगो चालु रहेशे, अने रहे ए इष्ट छे. मात्र एटलुं ज के तेने ब्लॅंक वर्स गणी नहीं शकाय.

हवे आपणे अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो साथे संबंध धरावती रचना लईए. पण ते पहेलां कोई पण प्रकारमां निःसंदेह जेने मूकी शकातो नथी ते अनुष्टुप लईए. बीजां वृत्तोनी पेठे अनुष्टुप पण गवातो पण बधां वृत्तोमां अनुष्टुप सौथी ओछो गेय छे एम कही शकाय. विशेष तो ए छे के आपणां महाकाय पुराणोमां अनुष्टुप खूब वपरायो छे, खेडायो छे, एटले गुजराती एपिक माटे आपणे एने कोई रीते नाकाबेल न ज कही शकीए. सळंग रचना तरीके गुजरातीमां एना बहु प्रयोगो नथी थया. प्रो. ठाकोरे दुकाळ वर्णनमां अनुष्टुपनो व्यापक प्रयोग कर्यो छे, काव्यनो उपाड घणो असरकारक अने जोम-वाळो छे, पण तेमां वाक्यो लगभग सर्वत्र श्लोकान्ते पूरां थाय छे, अने आगळ जतां श्लोकोनां विषम सम बधां चरणोमां लगागागा आवे छे त्यां रचना, अनुष्टुप साथे जरा पण मेळ न खाय तेवी गझलमां, ऊतरी पडे छे, अने अनुष्टुपनुं सर्व प्रौढत्व खोई बेसे छे. एने प्रवाही अनुष्टुपनुं भयस्थान गणवुं जोईए. वळी अनुष्टुपना स्वरूपना अटपटा नियमो सामान्य पिंगलोमां प्रसिद्ध न होवाथी, अने तेमां गमे तेवी छूट लई शकाय छे एवा सामान्य अभिप्रायथी एवा थोकबंध प्रयोगो थाय छे जेमां अनुष्टुप तद्दन कथळी जाय छे, बेडोळ बनी जाय छे. अनुष्टुप विशे आ ग्रंथमां लांबी चर्चा करी छे एटले एना स्वरूप विशे अहीं विशेष कहेतो नथी. आ संदर्भमां मात्र एटलुं ज कहीश के अनुष्टुप बहु ज समर्थ रचना छे, लांबां वर्णनो अने सर्व रसो धारण करवानी एनी शक्ति छे, लांबा वाक्योच्चयो तेम ज टूंकां मुक्तको, के तीव्र वाक्छटाने वहन करवानी एनी शक्ति छे. एपिक के वर्णनकाव्यना सिसृक्षुए ए रचना ध्यानमां राखवा जेवी छे.

हवे अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो, जेने आ संदर्भमां हवे हुं 'वृत्तो' कहीश, तेनो विचार करीए. पहेलुं तो ए के, श्लोकबंध तूटतां, केटलीक यतिओ निर्बळ गणातां, बधां ज वृत्तो, सयतिक अयतिक बन्ने, प्रवाही वाक्यरचना माटे प्रयोजायां छे. अने कुशळ रचयिताओने हाथे रचना तद्दन सफल थई छे. आ वृत्तोने वाहन करवामां कविताने एक मोटो फायदो ए थाय छे के वृत्तो सहेलाईथी

प्रौढिने पोषे छे, विषयने गौरव आवे छे. सद्गत नवलरामे मेघदूतना भाषान्तर माटे छंदनी पसंदगीनी चर्चा करतां कह्युं छे के संस्कृत वृत्तो प्रौढिने पोषे छे; छतां तेमणे वृत्तबद्ध मेघदूत माटे गेय मेघछंद योज्यो तेनुं कारण तेमना कहेवा प्रमाणे ते समये संस्कृत छंदोनो लोकोने परिचय नहोतो, अभ्यास नहोतो ए हतुं. ए कारण अत्यारे रह्युं ज नथी, एटले संस्कृत वृत्तो प्रवाही रचना तरीके काममां आवी शके छे अने आवे छे, ए योग्य छे. सॉनेटना गांभीर्य माटे वृत्तो ज अनुकूळ गणायां छे ते योग्य छे, अने तेमां अनेक रचयिताओ चरणान्ते ऊभरातां वाक्यो लखे छे, एटले ए संबंधी विशेष कहेवानुं नथी.

पण आ बधां वृत्तो ब्लॅंक वर्सनुं काम आपी शके? कविश्री न्हानालाले मान्युं के सद्गत गोवर्धनरामे संस्कृत वृत्तोमां अंत्यप्रास छोडी दई, गुजरातीमां ब्लॅंक वर्स दाखल कर्यो (साहित्यमंथन पृ. १२३–२४). पण प्रथम विचारीए के एटलुं करवाथी रचना ब्लॅंक वर्स बने? दृढ यतिवाळी रचनाओ मंदाक्रान्ता, मालिनी, स्रग्धरा, शिखरिणी वगेरेमां मध्ययति आडी आव्या विना न ज रहे. वळी ए बधी रचनाओमां आवती लांबी लघुनी अक्षरावलिओने लीधे वाक्यरचना गद्यनी निकट चाली न ज शके. ए लघुओनुं पठन एटलुं त्वरित थाय छे ए लघुओ वच्चे अर्थयति मूकी न ज शकाय. अर्थात् यथेच्छ यति तेमां शक्य नथी. ए बधामां ह्रस्वदीर्घनां स्थानो एटलां दृढ छे के ह्रस्वदीर्घनी छूट लेतां पण वाक्यने सरल चलावी शकाय नहीं. एटले आ छंदो, भले प्रवाही वाक्योने धारण करे, तो पण ब्लॅंक वर्स बनी न शके.

ब्लॅंक वर्सने माटे प्रो० ब० क० ठाकोरे पृथ्वीने समर्थ गण्यो अने तेना प्रयोगो करी बताव्या त्यारथी वर्णनकाव्यो माटे अनेक कविओए एने सळंग रचना तरीके वापर्यो छे. ए जोतां हवे एनी हिमायत करवानी जरूर रही नथी. पण श्री खबरदार घणा समयथी पृथ्वीनी ए शक्ति स्वीकारता नथी. आपणे एमनो मत जोई तेनी चर्चा करीए. पृथ्वी सामे तेमनो सौथी मोटो वांधो ए छे के तेमां शब्दोनुं उच्चारण अगुजराती थई जाय छे. हुं तेमणे आपेलुं अवतरण ज लउं छुं :

अने । त मुख जे । स्फुरे । स्फुरणमां । ज जी । वी रहे,
विचा । र अभिला । ष गा । न रति ते । तणा । भास्कर
भजे । उर उमं । ग थी । सरल दी । न शिशु । भावथी
अने । क युग दे । शना । अगण म्हा । नुभा । वो रहने.

श्री खबरदार कहे छे: "गुजराती वाग्व्यापारने नियमे शब्दनी छेल्ली लघु श्रुति तो द्रुत, जाणे व्यंजन जेवी बोलाय छे. तेम ज शब्दांगमां पण गुरु पछीनी लघु श्रुति द्रुत बोलाय छे. . . .उपरना उदाहरणमां बीजी पंक्तिना 'विचार'नो 'र', 'अभिलाष'नो 'ष', 'गान'नो 'न', 'भास्कर'नो 'र' ए बधा अक्षरो शुद्ध रीते द्रुत ज उच्चाराय छे. तो पछी आ छ संधिमां चार श्रुतिओ आखी बोलाय तो गुजरातीना उच्चार कढंगा थाय ने तेम थतां श्रवण कठोर बने तो नवाई नथी. त्रीजी चोथी पंक्तिमां ग, न, क, श ए श्रुतिओ पण पूरा भार साथे बोलवी पडती होवाथी ते कर्कश थई जाय छे, अने उच्चार तूटे त्यां लयभंग पण थाय."[१] आ वांधो जो साचो होय तो गुजराती माटे बधां ज वृत्तो प्रतिकूल गणाय. कारण के वृत्तोमां लघुनां अनेक स्थानोमांथी घणी जगाए शब्दान्त अ आवी जवानो. पण आ वांधो वृत्तो उपरांत जातिछंदोने पण लागु न पडे? जातिछंदोमां पण लघुनां नियत स्थानो होय छे, एटलुं ज नहीं नियत स्थान न होय त्यां पण लघुओ वपराय ज छे.

ओ ईश्वर् तूं एक् छे
सरज्यो तें संसार्

आ दोहरामां 'एक' अने 'संसार'मां आवता लघुओनां स्थानो पिंगल-नियत छे. पण ते सिवाय पण श्व र स र लघुओ आवे छे. आमांना बन्ने 'र' श्री खबरदार कहे छे तेवा साधारण वातचीतमां द्रुत बोलाय छे, पण उपरनी काव्यपंक्तिओमां तो पूरा लघु बोलाय छे. 'ईश्वर'ना बन्ने लघुओ अने 'सरज्यो'ना बन्ने लघुओ सरखा बोलाय छे अने सरखो काल ले छे. एटले आ वांधो साचो होय तो कोई पण कविता लखाय नहीं. खरुं तो में पहेला प्रकरणमां कह्युं तेम गुजराती बोलाती भाषामां कोई बे स्वरो एक सरखो वखत लेता नथी, कोई गुरु कोई लघुथी बमणो समय लेतो नथी. कवितामां पडती भाषा एटले अंशे पोतानुं नैसर्गिक उच्चारण खुवे ज छे. अने नहितर पण पठन थतां काव्यनुं उच्चारण गद्य करतां वधारे धीमुं होय ज छे. एटले ए वांधाने हुं वाजबी गणी शकतो नथी. अने श्री खबरदार पोते स्वीकारे छे तेम पृथ्वी तेना जूना नाम 'विलंबितगति' प्रमाणे विलंबित रीते पठाय छे एटले तेमां पूरुं यतिस्वातंत्र्य छे. ए रीते आ वृत्त ब्लॅंक वर्सनी एक आवश्यकता पूरी पाडे छे.

---

१. गुजराती कवितानी रचनाकला, पृ. १६९–१७०

श्री खबरदारनो बीजो वांधो प्रो. ठाकोर पृथ्वीने अगेय कहे छे ते सामे छे. तेओ कहे छे : "कोई पण समर्थ संगीतकार गमे तेवी गद्य पंक्तिने पण अमुक राग-तालमां बेसाडी गाई बतावशे, पछी तेम करतां तेना केटलाक स्वरोने लंबावशे या टूंकावशे. एम छे तो पद्यनी नियमित लयमां लखायेली पंक्तिओ तो कदी अगेय बने ज नहीं." (एजन, पृ. १७३) पण अहीं अगेय शब्द तेना मात्र यौगिक अर्थमां वपरायो नथी. संदर्भ उपरथी तरत जोई शकाशे के 'अगेय'नो अर्थ अहीं, लांबुं पठन करतां पण जे रचना गावानी आवश्यकता ऊभी थती नथी, जे कोई पण प्रकारना संगीतमां सरी पडती नथी एवी. ब्लॅंक वर्सनी मुख्य आवश्यकता ए छे के तेनुं गद्यनी पेठे पठन शक्य होवुं जोईए. पछी गद्य पण गाई शकाय छे ते अर्थमां आ रचना पण गाई शकाती होय तो तेनो वांधो नथी. पृथ्वीना पठनमां गावानी आवश्यकता आवती नथी, अने तेथी ते गेय नथी. आ लक्षण ब्लॅंक वर्सने माटे आवश्यक छे के केम ते विशे श्री खबरदार स्पष्ट हा के ना कहेता नथी. तेओ एम मानता जणाय छे के एवुं अगेय पद्य गुजरातीमां होई शके ज नहीं. तेओ आ ज संदर्भमां आगळ कहे छे के : "कविताने गद्य जेवी बोलवा ज मागो तो बोली शकाशे . . . . पण तेम करतां पण अमुक पंक्तिओ अनेक वार बोलातां पद्यमांनुं तालतत्त्व अने तेनुं नियमित सुस्वरत्व तो पाठक के श्रोता आगळ छतुं थया वगर रहेवानुं नथी. अने आखरे तेथी कवितानी गेयता प्रत्यक्ष थवानी ज" (एजन, पृ. १७३–७४). अलबत्त तालतत्त्वने लीधे गेयतामां सरी पडाय तो गेयता आवी जवानी. पण अहीं श्री खबरदारनी ध्यान बहार ए वात रही जाय छे के अनावृत्तसंधि वृत्तोमां तालतत्त्व छे ज नहीं. अने तेवी तालतत्त्वानुगामी गेयता तेमां आवी जवानी नथी. ए दृष्टिए पृथ्वी ब्लॅंक वर्सनुं काम आपवाने लायक छे. तेना अनेक अखतरा थया छे अने ते बधा ज बतावे छे के लांबां वाक्योने धारण करवाने ते समर्थ छे.

अने छतां पृथ्वी ब्लॅंक वर्सनुं पूरेपूरुं काम आपी नहीं शके. ब्लॅंक वर्स अंग्रेजीमां बे काम करे छे. एक, एपिक एटले वीररस काव्यमां ते सळंग रचना तरीके वपराय छे, अने बे, नाटकमां पात्रोनी उक्तिमां वपराय छे. पृथ्वी एपिक माटे लायक छे, अत्यार सुधी तेनो जे सफळताथी उपयोग थयो छे ते सर्व एपिकमां ज थयो छे. पण नाटकमां ते सफळ थई शकतो नथी. एक तो, एना संधिओमां आवतां लघुगुरुनां निश्चित स्थानोने लीधे, तेमां वाक्य गद्यनी सरलताथी आवी शकशे नहीं. ए संधिओने अनुकूळ थवा वाक्य-रचनाने मरडावुं पडशे ज. अने बीजुं, पृथ्वीनो मेळ आवर्तनात्मक नथी, तेमां आदि मध्य अने अंत छे, एटले तेमां वाक्य गमे त्यांथी शरू करी गमे त्यां

पूरुं करतां तेनो मेळ अखंड आवी शकशे नहीं. प्रो. ठाकोरे पृथ्वीमां यतिस्वातंत्र्यना उदाहरण तरीके नीचेनी पंक्तिओ आपी छे :

वहे वखत। प्राक्तन स्मरण सूर जागे वधे
खिले। उर निमन्त्रता अचुक एक त्हारा भणी

अलबत्त दंडनी निशानी करेली जगाए यति आवी शके छे. ए रीते ए दृष्टान्त साचु छे. पण बे यतिचिन्होनी वच्चेनुं वाक्य एकलुं वांचवा आप्युं होय तो तेमां पृथ्वीनो मेळ वरताशे नहीं. "प्राक्तन स्मरण सूर जागे वधे खिले" एटलुं ज वाक्य वांचतां पृथ्वीनो मेळ तेमां प्रकट देखाशे? हुं मानुं छुं नहीं देखाय. पंक्तिओमां ए वाक्य जे स्थान भोगवे छे ते स्थान दर्शावीने मूकतां — आ रीते —

प्राक्तन स्मरण सूर जागे वधे
खिले। उर निमन्त्रता अचुक एक त्हारा भणी

ए पृथ्वी छे एम जाण्या पछी पण, खंडनी आगळनो भाग पृथ्वीमां बेसाडीने वांचतां ज मेळ हाथ आवशे, ते सिवाय नहीं आवे. अने 'खिले' आगळ वाक्य बंध करीशुं तो मेळ अधूरो रहेलो जणाशे. ए मेळनुं एकम पंक्तिना आदिथी अंत सुधी बोलतां ज व्यक्त थाय छे. नाटकने माटेनी सळंग पद्यरचना तो वाक्य गमे त्यांथी उपाडी गमे त्यां पूरुं करतां पण मेळ सचवाई रहे एवी जोईए. अंग्रेजी ब्लॅंक वर्स रचना एवी छे. एटले पृथ्वी बधी रीते ब्लॅंक वर्सनुं काम आपी नहीं शके. एपिकमां पृथ्वी सळंग पद्यरचना तरीके चाली शकशे, नाटकमां नहीं चाले.

जातिछंदोना संधिओ अने अनावृत्तसंधि वृत्तोना संधिओथी बनती सळंग रचनाओने जोतां एम जणाय छे के जातिछंदोवाळी रचनाओ प्रास काढवाथी सळंग तरत थई शके छे, पण तेनो संधि संगीतना तालमांथी निष्पन्न थयेलो होवाथी ते रचना थोडे जई संगीतमां सरी पडे छे, ए एनी अपूर्णता छे. त्यारे कोई पण अनावृत्तसंधि वृत्तने सळंग करतां मुश्केली ए आवे छे के एना संवादनुं एकम पंक्तिना आदिथी शरू थई अंते यति आवे छे त्यां पूरुं थाय छे. जातिछंदोवाळी रचनाओ स्वरूपतः अनंत आवर्तनवाळी होई सळंग हती, तेने प्रासथी ज आपणे कडीबद्ध करी हती ते प्रास नीकळी जतां पाछी सळंग बनी रहे छे. वृत्तोमां पंक्ति प्रासथी बंधाती नहोती. पण, लघुगुरुना स्थिर क्रमवाळा अमुक अमुक संधिओना नियत न्यासथी बंधाती हती, प्रास विना पण तेमां पंक्तिने आदि ने अंत छे ए एनी विशेषता छे, खूबी छे, एटले वृत्तोनी प्रवाही रचनामां मेळनुं एकम व्यक्त थवा पंक्तिनो अंत व्यक्त थवो

ज जोईए. वृत्तोमां आपणे जोई गया के तेमां खरो विराम श्लोकार्ध एटले बे पंक्तिए आवे छे, एटले सामान्य रीते वृत्तोनी पंक्तिओ बे सुधी सळंग करी शकाय. अने ए मुश्किल नथी कारण के सत्तर अक्षरना पृथ्वीमां बे पंक्तिए पूर्णविराम नहीं तो अर्धविराम अने अर्धविराम नहीं तो अल्पविराम आणवामां मुश्केली आवे नहीं. एटले एपिक माटे सळंग पद्यरचना तरीके पृथ्वी आवी शके. पण तेनी लघुगुरुना स्थिरक्रमवाळी रचनाने लीधे अने तेना मेळना एकमना आदिथी अंत सुधीना विस्तारने लीधे ते नाटकने आवश्यक ब्लॅंक वर्स बनी शके नहीं. नाटकना ब्लॅंक वर्स माटे आपणे हजी अन्यत्र जोवुं रह्युं.

जे कारणोथी पृथ्वी जेवी रचना नाटकोचित सळंग पद्यरचना नथी थई शकती ते ज कारणोथी अनुष्टुप पण न थई शके. अनुष्टुपने अमुक चोकस वर्गमां हजी निःशंकपणे हुं मूकी शकतो नथी, पण एक वात नक्की छे के तेना संवादने पण आदि अने अंत छे. अनुष्टुप अर्धसम वृत्त छे, तेमां विषम चरणनो छेल्लो चतुरक्षर संधि घणेभागे लगागागा आवे छे अने सम-चरणनो छेल्लो चतुरक्षर संधि लगालगा आवे छे. हजीकेय लगागागा पूर्ण नियत नथी पण श्लोकार्ध लगालगा तो कोई पण वृत्त जेटलुं स्थिर छे. एटले एना श्लोकार्धनो अंत दृढ छे. लांबां वर्णनकाव्योमां ए चाले पण नाटकनी उक्तिओमां ए अंत नडे. नाटकने माटे श्रीमती हंसा बहेने आ छंद वापर्यो छे, पण तेनुं परिणाम मने अनुष्टपना लाभमां जतुं जणातुं नथी,—एमनो प्रयत्न समर्थ छे छतां. एक टूंको दाखलो लउं :

ओफेलिया : ना जाणुं हुं पिता मारा! शुं मारे तो विचारवुं.
पोलोनियस : वाह! हुं शीखवीश ए, तुं तो छे बाळकी खरी
जो माने दान आवांने खरा सिक्का. नथी खरा
सिक्का ए. मूल्य आंकवुं घटे तारुं विशेष तो.
नहीं तो—बस वाक्य आ हांफे लंबाणथी अने
तूटे प्हेलां करूं पूरूं—मने मूर्ख ठरावशे.

हॅमलेट, पृ. २७

आमां पंक्ति वच्चेथी शरू थई पंक्ति वच्चे पूरां थतां वाक्यो छे. ते स्वतंत्र वांचवा आप्यां होय तो तेने अनुष्टुपमां बेसाडतां बहु वार लागशे. "तुं तो छे बाळकी खरी, जो माने दान आवांने खरा सिक्का." आ वाक्य सम चरणथी शरू थाय छे एटले कदाच बेसे. पण "नथी खरा सिक्का ए." आ वाक्य बेसाडतां बे त्रण प्रयत्नो अवश्य करवा पडे. "मूल्य आंकवुं घटे तारुं विशेष तो." ए वाक्य पण तरत नहीं बेसे. एटले आ रचना नाटकने अनुकूळ न

पडी शके. आपणां पुराणो अनुष्टुपमां लखायां छे, अने तेवी रीते महाकाव्य अनुष्टुपमां लखी शकाय पण नाटकने माटे ए रचना अनुकूल नहीं पडे.

नाटकनी उक्तिओ माटे हुं के. ह. ध्रुवना वनवेलीने समर्थ गणुं छुं. ते मनहर घनाक्षरीना चतुरक्षर संधिनां आवर्तनोनो बनेलो छे. ए संधिमां लघुगुरुनो कोई क्रम नथी एटले वाक्यरचनाने कोई लघुगुरुस्थान साचववा के अमुक मात्राओ पूरी करी आपवा मरडवानी जरूर पडती नथी. वाक्य-रचना गद्यना क्रमने यथेच्छ अनुसरी शके छे, तेटली ज भावने आवश्यक हरकोई वाक्यभंगीने पण धारण करी शके छे. वळी तेमां वाक्यो गमे तेटलां लांबांटूंकां आवी शके छे, अने वाक्यो पंक्तिमां गमे त्यांथी शरू थई गमे त्यां पूरां थतां तेना मेळने हानि थती नथी. मूळ रचनाना प्रास काढी नांख्याथी तेमां पंक्ति पण रहेती नथी, जो के सामान्य रीते तेमां संधिनां चार आवर्तनोनी एटले सोळ अक्षरनी पंक्ति पडाय छे. आनो मेळ आवर्त-नात्मक छे एटले तेमां यतिनो प्रश्न रहेतो नथी. मनहर घनाक्षरी लांबी परंपराथी अर्थने अनुसरीने गेयता विना, पठाता आव्या छे. नवलराम कवित बोलवी शुं कहेवाय तेना दाखला तरीके "हिन्दुस्ताननी कविता भाट चारणो बोले छे तेनो विचार" करवा कहे छे. रमणभाई पण कवितने वीररस-काव्यने उचित गणे छे. "मिल्टनना वाक्योच्चय (period)नी कल्पना गुजराती भाषामां बतावવी बहु अघरी छे. . . . तथापि आ प्रकारना वाक्यो-च्चयनुं उदाहरण आपवानो एक निर्बल प्रयत्न करीशुं" कही तेओ प्रेमानन्दना ओखाहरणना लडाईना वर्णनने निष्प्रास कवितमां मूके छे:

अनिरूद्ध बारीएथी जोई रह्यो हाथमां तो
भोगळ लीधेली ने अळगी करतो पीठे
खेंचती ओखाने,—रोती जे कालावाला करती.
तेना भणी वळी बोल्यो, 'महिला! तुं घेली छे,
क्षत्रिओ युद्धमां जता रोकाया कदी सुण्या छे?
घननुं गर्जन थये केसरीए फाळ ना
भरी एवुं कदी बन्युं छे? तथा मोंवर वागे
ने नाग त्यां डोले नहीं एवुं कदी जोयुं छे?

कविता अने साहित्य वॉ. १ लुं, पृ. १६७

अर्थात् आ मनहर के कवितने के. ह. ध्रुव पहेलां पण आपणा समर्थ विवेचकोए अगेय गण्युं छे, पाठ्य गण्युं छे, वाक्योच्चय माटे योग्य गण्युं छे.

आनी सामे श्री खबरदारनो वांधो नीचे प्रमाणे छे: "ए निबंधमां तेमणे जणाव्युं हतुं के वनवेलीमां यति नथी, ताल नथी, प्रास नथी, मात्र

चतुरक्षर संधि छे. अने प्रत्येक पंक्तिमां एवा चार चार संधि छे; आवी रचना जेने आपणे शुद्ध पद्यरूपे ओळखीए तेवी, तेने पद्यरूप कहेवाय नहीं. अने ए माटे में . . . उल्लेख कीधो ज हतो के "वनवेली"मां "मात्र अक्षरगणना सिवाय बीजुं कशुं नियामक तत्त्व ना होवाथी हुं तेने पद्यमां के छंदमां गणतो नथी." (गुजराती कवितानी रचनाकळा" पृ. १६७–१६८.) अलबत के. ह. ध्रुवे वनवेलीनो पुरस्कार करता निबंधमां कहेलुं के तेमां ताल नथी, मात्र चतुरक्षर संधि छे. (साहित्य अने विवेचन भा. १, पृ. ११७) पण हुं पूछुं छुं के वनवेलीनो चतुरक्षर संधि जे मनहरमांथी लीधेलो छे ते सताल के निस्ताल होवा संबंधी श्री खबरदार पोते शुं माने छे? तेओ तो कबूल करे छे ज के "'कविता' नी रचनामां चतुरक्षर संधि छे; पण एनो लय तो प्रत्येक संधिनी पहेली तथा त्रीजी श्रुति पर अनुक्रमे मुख्य अने गौण ताल आव्याथी ने राख्याथी ज सधाय छे." (गुजराती कवितानी रचनाकळा पृ. १६८) तो पछी वनवेलीमां ए ताल छे एम मानीने तेओ वनवेलीने अखंड रचना तरीके स्वीकारता शा माटे नथी? हुं पण मानुं छुं के मनहरना चतुरक्षर संधिमां पहेला अने त्रीजा अक्षर उपर अनुक्रमे प्रधान अने गौण ताल छे. अने ए ताल ए ज वनवेलीनुं पद्य तरीकेनुं जीवातुभूत तत्त्व छे. भले के. ह. ध्रुवे ए न स्वीकार्युं पण आपणे ए स्वीकरता होईए तो एने मानीने वनवेलीनुं महत्त्व स्वीकारवुं जोईए. अने तालने न स्वीकारतां छतां के. ह. ध्रुव कहे छे के "एना बंधना सरखापणाने माटे एक बाबतनी सावधानी राखवी इष्ट छे. प्रत्येक पूर्णवाक्यनो आरंभ एमां एकीना अक्षरथी थवो जोईए छे. एम करवाथी गमे ते वाक्य वांचतां अथवा उतारतां घटनामां वैषम्य आवतुं नथी." (साहित्य अने विवेचन भा. १, पृ. १२०) अहीं वाक्यारंभ चतुरक्षर संधिना पहेला के त्रीजा अक्षरथी करवा कह्युं तेनुं कारण ए ज छे के वाक्यना प्रारंभनो प्रयत्न, पद्यना ताल साथे मेळमां आवे. अने आ मेळ मात्र वाक्यना प्रारंभे ज होय एटलुं हुं बस मानतो नथी. श्री खबरदार साथे सहमत थई हुं कहुं के वनवेलीमां संधिनो प्रधान ताल शब्दना आदि उपर आवे ए इष्ट छे कारण के गुजरातीमां शब्दनो आद्याक्षर हमेशां सप्रयत्न होय छे, अने एम न बने त्यां ताल शब्दनी अंदर पण गुरु अक्षर, जे तालक्षम होय छे, तेना पर पडे एम थाय तो सारुं. आवी सूचना के. ह. ध्रुवनी चर्चामां स्पष्ट रूपे नथी पण तेमना वनवेलीना नमूनामां ताल बराबर ए ज रीते सळंग सचवायो छे. हुं आ नीचे वनवेलीनी १३ पंक्तिओ उतारुं छुं अने तेमां चतुरक्षर संधिना आद्याक्षर पर तालदर्शक टूंको दंड करुं छुं.

मारा सउ शहेरी बंधुओ ने मित्रो! सांभळिये.
सीझरना शबने हुं दाह देवा आव्यो छुं: हुं
गुण गावा नथी आव्यो. गुण तो मुआनी गते
मुआ वांसे जाय छे; ने अवगुण एकला ज
अहियां गवाय छे; तो सीझरनूं पण एम
भले थाय. महत्तानी मूरती जे ब्रूटस, ते
सीझरने लोभी कहे छे. खरेखर, एम ज जो
होय, तो ते शोचनीय दोष हतो; अने तेनो
दंड पण मरनारे घणो भारे भर्यो छे ज.
एने विशे मयतना प्रसंगे हूं बे ज बोल
बोलवा ऊभो छूं, मने ब्रूटसनी ने बीजानी
परवानगी मळी छे. ब्रूटस, खरेज सारा
माणस छे; ने एवा ज सारा एओ सरवे छे.

उपरनी १३ पंक्तिओमां बावन चतुरक्षर संधिओ आवे तेमां शब्दना आद्याक्षर पर ताल न पडतो होय एवा दाखला 'मुआनी' (पं. ३) 'गवाय छे' (पं. ५) 'ऊभो' (पं. ११) 'परवानगी (पं. १२) एटला चार ज छे. अने ते दरेकमां ताल दीर्घ अक्षर उपर पडे छे. पण मारे आथी आगळ जईने एम कहेवानुं के आम लांबे अंतरे ताल क्यांक छूटो छवायो शब्दना आद्याक्षर पर न पडे त्यां एकाद ताल तिरोहित रहे तो पण सामान्य प्रवाहने वांधो न आवे. "मने ब्रूटसनी ने बीजानी परवानगी मळी छे." एम तालव्यवस्था करीए तो तालमां क्षति न आवे. 'ने' अव्यय होई लघु प्रयत्न छे तेना पर ताल न नांखीए तो पण वांधो न आवे. नियमित मात्रामेळमां पण चतुष्कल ताल क्यांक तिरोहित थतो आपणे जोयो छे. आम करवाथी पठन गद्यनी वधारे समान्तर चाली शके छे, अने तालनुं स्पंदन जीवन्त रहे छे. आ उपरांत हजी एक छूट वनवेलीना बंधारणमां अंतर्गत रहेली छे. मनहरमां आठमा चतुरक्षर संधिने स्थाने त्र्यक्षर संधि आवतो अर्थात् एक अक्षरनी कालमात्राओ विरामथी पुराती. वनवेली सळंग छे, तेमां चरणो नथी, पण तेमां पण ज्यां

वाक्य पूरुं थाय त्यां एटले वाक्यान्ते अक्षर के एथी पण नानो संधि मूकी शकाय अने ए रीते वाक्यान्ते आवश्यक पूर्णविराम लई शकाय. वाक्यान्ते आखा चतुरक्षर संधिना काल जेटलो विराम तो लई ज शकाय ए कहेवानी जरूर नथी.

आ रीते श्री खबरदारनी दृष्टिथी विचार करतां पण जणाशे के के. ह. ध्रुवनी वनवेली श्री खबरदारनी अखंड रचनानी बधी आवश्यकताओ पूरी पाडे छे.

वनवेली विशेनुं मारुं वक्तव्य पूरुं करुं ते पहेलां हजी एक वात कहेवानी रहे छे. संख्यामेळ छंदोना प्रकरणमां हुं कही गयो के मनहर के कवितनो जे चतुरक्षर संधि छे ते कालमात्रानी दृष्टिए अष्टकल छे. अर्थात् ए चतुरक्षर संधि आठ कालमात्रा रोके छे. जूना समयमां कवितना पठनमां दरेक लघु के गुरु गमे ते बब्बे मात्रा रोके ए रीते उच्चारातो अने एम आठ मात्रा थई रहेती. माटे ज तेमां लघुगुरुनां नियत स्थान नथी एम कहेवाय छे. पण त्यां में कहेलुं के आ आठ मात्रा आम दरेक अक्षरने बे मात्रानो करी पूरी करवी ए कढंगुं छे, कंटाळाजनक छे, संधिमांना ज गुरुने योग्य रीते लंबावी खूटती मात्रा पूरवी ए खरी रीत छे. ए ज दृष्टिने आगळ लंबावी हुं एम पूछुं के नाटकनी उक्तिओनुं पठन एवी रीते न करी शकाय के चार आठ के सोळ अक्षर सुधीमां अर्थने आवश्यक विराम मूकी ए खूटती मात्रा पूरी दईए? आ न ज थई शके एवुं मने नथी लागतुं. पण आ काम आ दृष्टिवाळा नटोए करी जोवुं जोईए. जो एम थई शके तो हुं मानुं छुं के वनवेलीनी ए एक मोटामां मोटी सिद्धि गणाय. पण आ तो मात्र मारी कल्पनानी वात छे. कुशल पठनकोविदोए ए करी जोवुं जोईए.

वनवेलीनो प्रतिस्पर्धी छंद श्री खबरदारनो 'महाछंद' छे. आ महाछंद एक रीते भ्रमरावळी छंद छे जेमां ललगानां पांच आवर्तनो आवे छे. अंग्रेजी ब्लॅंक वर्स पंचावर्तनी छे एटले एमणे ललगानां पांच आवर्तनो लीधां छे. आ ललगा संधि अहीं ए ज सादे रूपे आवतो नथी. श्री खबरदार कहे छे के हिंदीमां ललगा के गाललनां आवर्तनोवाळा लगात्मक सवैयामां संधिमांना लघु स्थाने गुरु पण आवे छे. तेम ज कविश्री न्हानालाले आ ज ललगा रचना उपरथी करेली देशीमां—'विलासनी शोभा'ना काव्यमां—लघुनी जगाए गुरु मूकेलो छे. ते प्रमाणे आ महाछंदमां यथेच्छ लघुने स्थाने गुरु आवी शके. एटले लघु-गुरु दृष्टिए तेमां नियत मात्र एटलुं ज के ललगामां अंत्य गा उपर ताल पडे छे त्यां गुरु जोईए, ते सिवाय लघुगुरु संबंधी कशो नियम आवश्यक नथी. अने आ महाछंदमां तेमणे एक काव्य कर्युं छे अने तेमांथी लांबा उतारा तेमणे 'गुजराती कवितानी रचनाकळा'ना चोथा व्याख्यानमां आपेला छे (पृ. १८०, १८५–१९५).

एक वात अहीं श्री खबरदारने पूछवानुं मन थाय छे. बीजी अनेक रचनाओ तालबद्ध होई गेयतामां सरी पडे छे एम कही बीजा रचयिताओनी ते ते रचनामां तेमणे दोष बताव्यो छे. तेमनी पोतानी रचना पण तालबद्ध तो छे ज. त्यारे तेमां गेयताना दोषनुं शुं थयुं? 'वनवेली'मां ए दोष एमणे एक प्रकारनी पाशयुक्तिथी बताव्यो. के. ह. ध्रुव कहे छे के वनवेलीमां ताल नथी, तो ते पद्य ज नथी, माटे ते अखंडपद्यरचना नथी. पछी पोतानो अभिप्राय आपे छे के वनवेलीमां ताल छे, एक नहीं पण बे ताल छे, एक प्रधान अने एक गौण, माटे ते गेयरचना छे, माटे ते अखंड पद्यरचनाने लायक नथी. अने पोतानी रचनाना ताल विशे ते कशुं कहेता ज नथी. पण एमना तालनी दृष्टिए एमनी रचनानी पण परीक्षा करवी ज जोईए. खरुं तो ललगा अने गालल संधिमां लघुने स्थाने गुरु आवे छे ते केवी रीते आवे छे ते प्रथम जोवुं जोईए. आ संबंधी में आगळ लंबाणथी अनेक दृष्टान्तो आपी जणावेलुं छे के चतुष्कलसंधि रचनाओ विलंबित रीते गवातां दरेक चतुष्कल षट्कल बने छे. तेथी ललगा अने गाललमां लघु स्थाने गुरु आवी शके छे. (पृ. ५९९-६०१ अने पृ. ६०२-०३) आ रीते आ प्रक्रिया पोते संगीतनी ज छे, अने श्री खबरदारनां लांबां उदाहरणोनां अनेक वारनां पठनोना संस्कारना पृथक्करणथी हुं कहुं छुं के आ रचनाओ सहेलाईथी संगीतमां ऊतरी जाय छे—वनवेली करतां वधारे सहेलाईथी. पण संगीतमां न ऊतरवा दईए तो पण तेनो ताल कटाव जेवो भारे छे अने तेथी गद्य वाक्यो ताले ताले ठोकराय छे. तेनो संधि पण टूंको छे अन तेथी तेना पठनमां प्रलंबता आवती नथी. ए सघळी बाबतमां वनवेलीनी लायकात वधे छे. पण विशेष तो घणा लांबा समयथी कवित अने मनहरनुं अगेय पाठ्यताथी पठन करवानी परंपरा छे तेनो सघळो लाभ वनवेलीने मळे छे, ललगा के गालल रचनाने एवो कोई लाभ मळतो नथी. में आगळ वनवेलीना फकरा आपेला छे. अहीं श्री खबरदारना छंदमांनी थोडी पंक्तिओ नीचे उतारुं.

अहो भक्तिनो आनंद तो कंई ऑर ज छे!
अने नाचनी आ अपरंपार लीला वधी
नहीं को पण आत्मा कदी निज कोटि जीभे!
जगमां पूरी गाई शके; प्रभुनी करुणा,
कंई लाख झरा सरिता अने धोघ रूपे
चिरकाल अखंड आ विश्वे वही रही छे.

. . .

बधे विश्वमां आपणे ऊडी फरी वळिये
अने नाथनी आज्ञानुं पालन नित्य करी,
बधी सृष्टिनां चक्रोतणी गति साचवियें,
तोय नाथनी शक्तिनो पार नथी जडतो.

गुजराती कवितानी रचनाकळा, पृ. १८९

पठन करतां दरेक ताल वाक्यरचनाने विक्षेप करे ए रीते थडकाय छे. संगीतस्वरोनो प्रयोग न करीए तो पण आ रचना जे ढाळमां साधारण रीते गवाय छे ते रागनुं अनुसंधान सतत राखवु पडे छे. मारो तो एवो पण अनुभव छे के ए रागना मनमां उद्भावन विना आ रचनाना तालनो प्रारंभ ज करी शकातो नथी. एटले वनवेली जेवी होवा छतां आ रचना वनवेली जेटली कार्यकर नीवडे एम हुं मानतो नथी. आ गेय छे, एनी चाल टूंकी छे, अने तालनो थडको वधारे विक्षेपकारक छे.

वधा मात्रामेळ संधिओमां आ दादादादा अने दादादा एटले के अष्टमात्रक अने षण्मात्रक संधिओमांथी बनेला आ चतुरक्षर अने त्र्यक्षर संख्यामेळ संधिओ ज मात्र सळंग पद्यरचना माटे काम आपी शके. सप्तमात्रक अने पंचमात्रक संधिओमांथी पण चतुरक्षर अने त्र्यक्षर संधिओ बनी शके. ए जातनुं वलण आपणे 'मुखडानी माया लागी' ए गीतमां अने एना जेवां बीजां गीतोमां आगळ जोयुं छे (गत पृ. ५८६). ए गीतमां आगळ पण एवा ज चतुरक्षर संधिओ आवे छे: मुखडुं में, जोयुं तारुं, सर्व जग, थयुं खारुं, वगेरे. त्यां चतुरक्षर संधिना अक्षरो अनुक्रमे लदादादानी मात्राओ अनुक्रमे पूरे छे, लने स्थाने गुरु होय तो ते लघु थाय छे, अने दाने स्थाने लघु होय तो ते पण गुरु थाय छे. आ ज प्रक्रिया पंचकलना बीजमां पण थाय छे पण तेना दाखला आपतो नथी. पण प्रक्रिया अमुक अमुक गीतोमां रूढ थाय तो पण एनो चतुरक्षर के त्र्यक्षर संधि सळंग पद्यरचनानुं काम न आपी शके कारण के तेमां लघु आवे छे अने त्यां पठन लचक खाय जे प्रवाही रचनाने अनुकूळ नथी. अर्थात् आ जातना प्रयोगोमां मात्र चतुरक्षर दादादादा अने त्र्यक्षर दादादा ए ज काम आपी शकशे.

आखा प्रश्नने समग्र रीते जोतां एम जणाय छे के आपणा साहित्यमां सळंग रचना तरीके कोई एक ज छंद कदाच न वपराय. अनेक कविओ जुदा जुदा छंदो वापरे, अने वर्णन अने नाटक बन्नेने माटे पण भिन्नभिन्न छंदो

वपराय. नाटकने माटे हजी सुधीना बधा प्रयत्नोमां मने सौथी कावेल वनवेली छंद ज जणायो छे. पण तेना पण खूब प्रयत्नो थवानी जरूर छे. विस्तृत प्रयत्नो विना एनी खरी कसोटी थई शके नहीं. वनवेलीमां अनेक रीते नवा नवा प्रयत्नो थई शके एवा मने तर्को थाय छे, पण ए प्रयोगो थाय नहीं ते पहेलां एने विशे अहीं कहेवु बहु फलदायी नथी. अने लांबां वर्णनकाव्यो, महाकाव्यो, वीररस काव्योने माटे हुं मानु छुं अनेक छंदो वपराशे. एने माटे वनवेली बहु वपराशे एवु मने जणातु नथी. एने माटे संस्कृत साहित्यमां नीवडेला अनुष्टुपने माटे मोटुं क्षेत्र छे एम हुं मानुं छुं. पृथ्वीने माटे तो हवे कदाच भलामणनी पण जरूर रहशे नहीं, तेणे पोतानु क्षेत्र नक्की करी लीधुं छे. पण आ उपरांत हुं वसन्ततिलकाने पण आ क्षेत्रने माटे तक छे एम मानुं छुं. तेमां लांबां लघुगुरुनां गुच्छो नथी. तेमां लघुगुरुनी संख्या एकसरखी छे. ते मधुर छे तेम ज भारक्षम पण छे, सतत चाली शके तेवो छे. साधारण रीते गुजरातीमां लांबा प्रवाहनो निर्वाह करवा १६नी नजीकनी संख्याना अक्षरोनां वृत्तो आवे छे. अनुष्टुप (अर्ध), पृथ्वी, मंदाक्रान्ता, शिखरिणी, मनहर, कवित, श्री खबरदारनो महाछंद ए बधामां अक्षरसंख्या १६ के तेनी नजीकनी छ. वसंततिलका १४ अक्षरनो छे, घणो ज नजीक छे. पण आ बधामां आपणे त्यां मिश्रोपजातिने नामे जे छंदोमिश्रणो प्रवाही छंद तरीके प्रयुक्त थवा माड्यां छे, ते कदाच सळंग रचनाना दावा विना, घणुं मोटुं क्षेत्र कबजे करी ले तो ना नहीं. हवे तो आ मिश्रणमां ११थी मांडीने गमे तेटली लांबी रचनाओ— पृथ्वी सुधीनी आव्याना दाखला छे. छंदमां एक पंक्ति छंदना संवादनुं एकम छे एम गणतां, गमे ते छंदनी पंक्ति, अने घणी जगाए यतिखंडमां पण स्वतंत्र मेळ छे एम गणतां, यतिखंड पण आ मिश्रणमां आवी शके छे. ए रीते आ मिश्रणना वैविध्यनो पार नथी. तेमां अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ साथे आवृत्तसंधि लयात्मक छंदो पण आवे छे. आ सर्वथी वाक्यभंगीने माटे पुष्कळ अवकाश रहे छे. अलबत्त आ छंदोवैविध्यने माटे वाचकवर्ग हजी जोईए तेवो पावरधो थयो नथी. गुजरातीमां हवे कविसंमेलनो थाय छे, कविओ पोतानां काव्यो गाई बतावे छे, पठन करी बतावे छे, एवा प्रयोगो वधतां श्रोतावर्गने पण आ वैविध्यनो अभ्यास थई जाय ए बनवाजोग छे. बाकी कविताना खरा रसियाओने तो आ वविध्य समजवुं अने प्रयोजवुं सहज-साध्य थई गयुं छे.

अलबत्त आ आखुं क्षेत्र हजी प्रयोगनी ज दशाए छे. एनुं भविष्य विशाल छे अने कौतुकाकर्षी छे.

बे शब्दो उपसंहार रूपे

बधा छंदो अने छंद:प्रवाहोने समग्रताथी जोतां उपसंहार रूपे मने एक बात कहेवा जेवी लागे छे ते ए के छन्दनी पठनपद्धति बदलातां छन्दोविकासनी नवी दिशा ऊघडे छे. भारतवर्षना प्राचीनमां प्राचीन छंदो वैदिक छंदो छे. एने में आ पुस्तकमां विषय कर्या नथी. पण तेमांथी संस्कृत वृत्तो एटले के अनावृत्तसंधि वृत्तो विकस्यां छे ए स्पष्ट छे. आ विकासनां बधां कारणो आपणे जाणता नथी, पण वैदिक भाषा उदात्त-अनुदात्तादि स्वरो साथे पठाती हती, ते स्वरो, पछीनी संस्कृत भाषामांथी लुप्त थया, ए पठनपद्धतिना फरकने नवा वृत्तविकासनुं एक कारण हुं मानुं छुं.

उपर कह्यां ते संस्कृत वृत्तो संगीतना अमुक अमुक स्वरोमां पठातां, अने ए वृत्तोनुं एकम श्लोक हतुं अने श्लोकनां चरणो अने यतिखंडो तेनां अंगो अने उपांगो हतां. पठनमांथी अर्वाचीन कालमां संगीत नीकळी जतां, अने सळंग पठनपद्धति अस्तित्वमां आवतां श्लोकबंध छूटी गयो, अने सळंगतानी दिशाए वृत्तोनां मिश्रणो थयां, वृत्तोना बंधारणमां फेरफार थया. वळी वृत्तो ए कृत्रिम रीते योजेला मगणादि अक्षरगणोथी घडायां नथी, पण लघुगुरुओनां भिन्नभिन्न संयोजनोथी थयेला संधिओ तेना घटको छे ए समजातां, एक नवी दिशाए वृत्तोनो विकास थवो शक्य छे, जो के आ संधिओनी स्पष्ट समजण के स्वीकार विना, एना अवलंबनथी संस्कृत वाङ्मयमां पण वृत्तविकास थयो छे ए आपणे जोई गया (प्रकरण ७).

आ वृत्तोथी तद्दन स्वतंत्र छंद:प्रवाह जाति छंदोनो छे. ए छंदोनो प्राण नियतसंख्य मात्रासंधि छे. ए प्रवाह संस्कृत छंदोमां भळतां, लगात्मक मात्रा-मेळी छंदो अस्तित्वमां आव्या, अने संस्कृत साहित्यमां तालबद्ध छन्दोगाननो प्रवेश थयो; एनी देखादेखी, अनावृत्तसंधि अक्षरमेळ वृत्तो, जे गवातां छतां स्वरूपत: तालहीन हतां, तेने तालबद्ध गानमां ढाळवानो प्रयत्न मौलाबक्षे कर्यो (पृ. २९६). आवा प्रयत्नो मौलाबक्ष पहेलां पण थया होय ए अत्यंत संभवित छे, अने तेनो पुरावो कदाच संगीतशास्त्रनां पुस्तकोमांथी मळी आवे.

आ पुस्तकमां आवता मात्रामेळ छंदो, संख्यामेळ छंदो, अने पद के देवी ए सर्वना प्राणभूत संधिओ एक ज होवाथी, आ त्रणेय जाति छंदोमां

स्वाभाविक रीते अंतर्भाव पामे छे. पण त्रणेयमां पठनपद्धति भिन्न छे अने मात्रागणनानी पद्धतिओ भिन्न छे तेथी ए त्रणेयनो विकास भिन्नभिन्न रीते थयो छे—थाय छे.

मात्रामेळ रचनाओ भिन्न भिन्न संधिओनां भिन्न भिन्न संख्यानां आवर्तनोने अवलंबीने विकसी. आ संधिओ संगीतना तालमांथी निष्पन्न थया होवाने लीधे तुकान्तप्रास आवश्यक बनतां, ए प्रासना अवलंबने आंतरप्रासनी हिकमतथी छंदो नवी दिशाओ विकस्या. अने संगीतना अनुसंधानने लीधे मात्राओनी प्लुतिथी पण एक नवीन विकासरेखा आलेखाई.

जेम संस्कृत वृत्तो संगीतरहित थई, तेमांथी सळंग रचनानी दिशाए वृत्तो विकस्यां, तेम मात्रामेळ रचनाओमांथी पण संगीत नीकळी जतां, अमुक आवर्तनोनो पंक्तिबंध तूटतां, परंपरित रचनाओ शरू थई. आनो विकास हजी चालु छे.

पद अने देशीओ, मात्रामेळ रचनाथी बहु भिन्न नथी. मात्रामेळ रचनाना नियमो तेमां शिथिल थाय छे, अने बीजी बाजु रचना संगीतप्रधान बने छे. एटलो ज फेर छे. अत्यारे संगीतनी दृष्टिए अनेक नवा प्रयोगो थाय छे पण तेनी पिंगळबाजु जोईए तेवी विकसती नथी. केटलाक प्रतिभाशाळी कविओ सहज सूझथी नवी रचनाओ करे छे पण घणा तो हलकां गीतोनी नकलथी भाषा पिंगल अने संगीत त्रणेयने बगाडे छे.

संख्यामेळ छंदोमां पण मात्रामेळ संधिओ ज छे, ए जोई गया. पण एनी पठनपद्धति अंग्रेजी ब्लेंकवर्सने अनुकूळ कराय छे ए एना विकासनी नवी दिशा छे. अने ए दिशानी शक्यता घणी मोटी छे. नवां नाटकोमां अने तेमां नहीं तो शेक्सपियरनां नाटकोनां भाषान्तरोमां एनो प्रयोग थवो संभवित छे. में आगळ बताव्युं तेम सप्तकल संधिना चतुरक्षर संधिनी हजी अपूर्णरूढ संख्यामेळ रचनाओमां क्यांक क्यांक एक गुरुनी जगाए बे लघु आवे छे, तेम वनवेली जेवी संख्यामेळ रचनामां पण, अलबत्त विरल स्थाने, एक गुरुनी जगाए बे लघु मूकी शकाय के केम, अने ए दिशाए विकास शक्य छे के केम ते जोवानुं रहे छे. अनुष्टुप, जे मारी दृष्टिए संख्यामेळ होवानो घणो संभव छे, तेमां पुराणोना कर्ताओए पादमां क्वचित् नव अक्षरो मूक्या छे, अने अर्वाचीन युगना अनुष्टुपोमां पण एवा दाखला कदाच मळी आवशे. मेळ साचवीने एम करी शकाय एमां मने संदेह नथी. वळी आपणी मात्रामेळ कविताओमां क्वचित् पद्य बहार पंक्तिना प्रारंभमां एकबे गद्यना शब्दो आवे छे (प्राचीन गुजराती छंदो पृ. १६४). असाना

छप्पामां अखानुं नाम एम क्यांक पद्य बहार रही गयेलुं जोवा मळे छे. 'वळी' 'अने' 'पण' जेवां अव्ययो एम गद्यमां बोली अथवा अनुक्त राखी कवितानो अर्थ घणी वार करवो पडे छे. जेम के

नंदनंदनी वांसलडी रे, विरहतणो भंडारजी
मन हीसे छे हरि मळवाने पण पीडे लोकाचार वेणु वाजे छे.
(दशमस्कंध, कडवुं ६२ मुं)

अहीं 'पण' शब्द पद्य बहारनो छे. आ बधी हिकमतो वनवेलीने काम लागे के नहीं ए जोवानुं रहे छे. कविने आ दिशामां घणा अखतरा करवाने क्षेत्र बहोळुं छे, अने एम आपणा पिंगळने पण दायके दायके नहीं तो जमाने जमाने कंईक उमेरवानुं, कंईक नवी व्यवस्था करवानुं रहेशे. पिंगळ बंधियार विषय नथी, पण भाषानी पेठे, काव्यनी पेठे, विकासशील विषय छे.

सूचि

[छंदना नाम पछी फूदडी मूकी छे, विशेष नामो जाडा अक्षरमां छापेलां छे, अने पुस्तकनुं नाम एकवडां अवतरण चिह्नोमां मूकेलुं छे.]


CENTRAL ARCHAEOLOGICAL
New Delhi
LIBRARY

Gujarati >< Metres